प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना (भाग-२)
(कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक-२ खण्ड-८)

गजेन्द्र ठाकुरक जन्म भागलपुरमे सन् १९७१ मे भेलन्हि आ आइ काल्हि ओ दिल्लीमे रहै छथि।

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना (भाग-२)
(कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक-२ खण्ड-८)

गजेन्द्र ठाकुर

श्रुति प्रकाशन, नई दिल्ली

Prabandh-Nibandh_Samalochna (Part-2): KurukShetram Antarmanak-2 Vol.VIII : A collection of papers-essays and criticism in Maithili by Gajendra Thakur first published in 2012 by M/s Shruti Publications, India

कवर फोटो: मैथिली पदावलीक समानान्तर परम्पराक महाकवि विद्यापति, चित्र: पनकलाल मंडल -पनक लाल मण्डलकें विदेह सम्मान -चित्रकला लेल -भेटल छन्हि।)

संस्कृत आ अवहट्टक विद्यापति ठक्कुरः, मैथिली पदावलीक विद्यापति ठाकुरसँ भिन्न आ परवर्ती (चित्र: मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कोलकाता। ई संस्था ऐ चित्रक चित्रकारक नाम अखन धरि गुप्त रखने अछि। ओइ समयमे ने मिथिलामे पाग रहै आ नहिये भयावह मोंछ आ क्लीन सेव दाढ़ी केर परम्परा रहै।)

दाम: १०००/- टाका

पहिल संस्करण : 2014

ISBN : 978-93-80538-54-9

श्रुति प्रकाशन :रजिस्टर्ड ऑफिस-दूरभाष.११०००८-नई दिल्ली ,न्यू राजेन्द्र नगर ,भूतल ,२१/८ :) -फैक्स ५८-२५८८९६५६ (०११)०११२५८८९६५७(

Website:http://www.shruti-publication.com

e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor : Pallavi Distributors, Ward no- 6, Nirmali (Supaul), मो.-957245.4.5, 9931654742

Prabandh-Nibandh_Samalochna (Part-2): KurukShetram Antarmanak-2 : A collection of papers-essays and criticism in Maithili by Gajendra Thakur

अनुक्रम

चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक ''वेटिंग फॉर गोडो'', हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक ''द बर्थडे पार्टी'', बादल सरकारक बांग्ला नाटक ''एवम् इन्द्रजीत'' आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक ''नो एण्ट्री: मा प्रविश''

विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण
राजदेव मण्डलक अम्बरा
मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल झा'रूदारक' गीत आ झारू - ''हमरा बिनु जगत सुना छै''

मुन्नाजीक ''माँझ आंगनमे कतिआएल छी''

मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह ''प्रतीक''

रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह ''रथक चक्का उलटि चलै बाट''

उमेश मण्डल जीक ''निश्तुकी'' कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रहक दोसर संस्करणक मादेँ
उमेश पासवानक कविता संग्रह ''वर्णित रस''

सुजीतक जिद्दी

विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज

संतोष कुमार मिश्र- ‘‘एना किए..?’’ आ ‘‘पोसपुत’’

मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी

दूर्वाक्षत

छुतहर / छुतहर घैल/ छुतहा घैल

साहित्यमे लोक-तत्व: गाथा/ नृत्य/ नाटक

स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र ‘‘यात्री’’

हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली

मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त

भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान

डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)

अभिनय पाठशाला

दोहा/ रोला/ कुण्डलिया

रामलोचन शरणक मैथिली राम चरित मानस

मैथिली नाटक/ फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ

चारिटा अंग्रेजी नाटक- डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन एगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल आ स्ट्राइफ

मैथिली लेल समीक्षाशास्त्रक सिद्धांत

बूच जीक कविताक -*मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक , नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो* अध्ययन

विदेशी पूँजी निवेशक भाषापर (मैथिली सहित) प्रभाव

दूषण पंजी

रमेश नारायणक ''पाथरक नाव'' २. विनोद बिहारी वर्माक ''बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)''

अन्तर्जाल अपराध- आ तकरा पकड़बाक विधि

अंतर्जाल आ मैथिली

स्व. श्री हरिमोहन झा (१९०८-१९८४)

जगदीश प्रसाद मण्डल

प्रेमशंकर सिंह
विदेहक लोगो:: विद्यापति:उगना ::मिथिला:मैथिली

मिथिला आ संस्कृत

8.8|| गजेन्द्र ठाकुर

जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोष

इन्फॉरमेशन सोसाइटी, सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान

अन्हारक विरोधमे -अरविन्द ठाकुर

हाथी चलए बजार- देवशंकर नवीन

नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन

मैथिलक वर्तमान समस्या

मिथिलासँ पड़ाइन

मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव

सिक्किम यात्रा (यात्रा वृत्तान्त)

शब्द विचार

कम्प्यूटर आ मैथिली

मैथिली नाटक आ आधुनिक रंगमंच

मैथिलीक किछु नव पोथी

सगर राति दीप जरयक इतिहास- कथाक कथा

विदेह सम्पादकीयसँ

कथा वाचन- लेखन पाठशाला (बाल कथाक विशेष संदर्भमे)

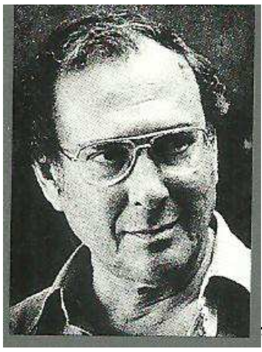
चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"

[नो एण्ट्री: मा प्रविश २००८ ई. मे छपल आ साहित्य अकादेमी पुरस्कार लेल एकर चयन २०१०, २०११ बा २०१२ मे नै भऽ सकलै। आब ई पोथी मैथिली साहित्य लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार लेल उपलब्ध नै रहत। ऐ तरहक आनो उदाहरण रहल अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश क मैथिली साहित्य आ विश्व साहित्य मध्य स्थान नीचाँक आलेखमे निरूपित कएल जा रहल अछि।]

....

"वेटिंग फॉर गोडो" दू अंकीय ट्रेजी-कॉमेडी अछि। सैमुअल बैकेट द्वारा ई 1952 ई. मे फ्रेंच भाषामे लिखल गेल आ एकर पहिल प्रदर्शन पेरिसमे 1953 ई. मे भेल। एकर

अंग्रेजी संस्करणक प्रदर्शन लंदनमे 1955 ई. मे भेल आ अंग्रेजी संस्करण 1956 ई. मे प्रकाशित भेल।

हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक ‘‘द बर्थडे पार्टी’’ कैम्ब्रिजमे 1958 ई. मे मंचित भेल आ 1960 ई. मे प्रकाशित भेल।

बादल सरकारक बांग्ला नाटक ‘‘एवम् इन्द्रजीत’’ 1962 ई. मे लिखल गेल आ ई 1965 ई. मे कलकत्तामे मंचित भेल।

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क ''नो एण्ट्री: मा प्रविश'' 2008 ई. मे ई-प्रकाशित आ फेर ओही बर्ख प्रकाशित भेल। 19 फरबरी 2011 केँ कुणालक निर्देशनमे कालिदास रंगालय, पटनामे ई डेढ़ घण्टाक नाटक मंचित भेल।

फ्रेंच, अंग्रेजी, बांग्ला आ मैथिलीक ई चारू नाटक पोस्ट-मॉडर्न नाटकक श्रेणीमे गानल जाइत अछि। जखन सैमुअल बैकेटक ''वेटिंग फॉर गोडो'' देखि कऽ लोक सभ घुरल रहथि तँ हुनका लोकनिकेँ एकटा विचित्र अनुभवसँ साक्षात्कार भेल छलन्हि। ऐ नाटकमे मात्र पाँचटा पात्र अछि- एस्ट्रागोन, व्लादीमीर, लकी, पोजो आ एकटा छौड़ा। एकटा कण्ट्री रोडपर साँझमे एकटा गाछ लग एस्ट्रागोन एकटा ढिमकापर बैसल अछि आ अपन जुत्ता दुनू हाथसँ निकालबाक प्रयास कऽ रहल अछि आ अपस्याँत अछि, आ थाकि जाइए। व्लादीमीर संगे ओकर गपक प्रारम्भ होइ छै, एम्हर ओम्हरक फुसियाँहीक नमगर गपशप होइ छै। पोजो आ लकी अबैए। पोजो बुझाइए मालिक अछि आ लकी दास। दासो तेहेन जकरा गर्दनिमे नमगर रस्सा पोजो लगेने अछि। पहिने लकी अबैए, फेर रस्सा पकड़ने पोजो। लकी बड़का बैग, एकटा फोल्डिंग स्टूल, एकटा पिकनिक बास्केट आ ग्रेटकोट उघने अछि। पोजो लग चाबुक छै। लकी आदेशपालक अछि। मालिकक गप मानि फेर सभ बोझ उठा कऽ ठाढ़ भऽ जाइए। एस्ट्रागोन आ व्लादीमीरकेँ ओकर बोझा उघनाइ नीक नै लगै छै। मुदा पोजो जखन कहै छै जे ओ ओहने

छै तँ एस्ट्रागोन पोजोकेँ आततायी बुझै छै। एस्ट्रागोन लकीक नोर पोछैए तखन ओकरा लकी मुक्का मारै छै। पोजो कहै छै जे तोरा कहलियौ ने जे लकीकेँ अनचिन्हार लोक पसिन्न नै छै। आ एस्ट्रागोन आ व्लादीमीर ओतऽ की कऽ रहल अछि? ओ दुनू गोटे कोनो गोडो नाम्ना व्यक्तिक बाट जोहि रहल अछि।

पोजो आ लकी चलि जाइए। एस्ट्रागोन आ व्लादीमीर लग एकटा छौड़ा अबै छै आ कहै छै जे गोडो आइ नै आबि सकता, काल्हि एता। फेर एम्हर-ओम्हरक फुसियाँहीक गपशप होइए आ ओहो छौड़ा चलि जाइए। तखने मंचपर सँ बिजली चलि जाइ छै आ फेर राति भऽ जाइ छै, चन्द्रमा उगल छै। व्लादीमीर आ एस्ट्रागोनक गपशप शुरू होइ छै। फुसियाँहीक गपमे किछु अर्थपूर्ण गपशप सेहो होइ छै। दुनू गोटे जेबाक निर्णय करै छथि मुदा हिलै नै छथि। पहिल अंकक पर्दा खसैए।

दोसर अंक, वएह समए आ स्थान। व्लादीमीरकेँ सभ किछु मोन छै मुदा एस्ट्रागोन बिसरि गेल अछि। एस्ट्रागोन कहैए जे ओ सभ किछु तुरत्ते बिसरि जाइए बा कहियो नै बिसरैए। ओकरा किछु-किछु मोनो पड़ै छै। पोजो आ लकी अबैए। पोजो आन्हर भऽ गेल अछि, लकी ओहिना बोझा उघने अछि। रस्सा सेहो छै मुदा किछु छोट। पोजो आ लकी खसि पड़ैए। पोजो सहायता लेल कहैए मुदा एस्ट्रागोन आ व्लादीमीर गपशप करैए।

एस्ट्रागोन व्लादीमीरकेँ पहिल अंक जेकाँ ‘‘दीदी’’ कहैए। व्लादीमीर बाजैए जे ‘‘हमरा सभकेँ फुसियाँहीक गपशपमे समय नै बर्बाद करबाक चाही।’’ पोजोक ‘‘सहायता’’क आर्तनाद नियत अंतरालपर

बेर-बेर होइ छै। मुदा तइपर एस्ट्रागोन आ व्लादीमीर ध्यान नै दैए। पोजो आब सहायता लेल सए फ्रैंक, फेर दू सए फ्रैंकक लालच दैए। व्लादीमीर ओकरा उठबैले जाइए, प्रयासमे अपनो खसि पड़ैए आ सहायताक पुकार करैए। फेर किछु गपशपक बाद व्लादीमीरकेँ उठेबाक प्रयासमे एस्ट्रागोन खसि पड़ैए। व्लादीमीर पोजोकेँ मारैए, पोजो घुसकुनिया दैए। तखन व्लादीमीर ओकरा ताकैए, कहैए- आबि जो, तोरा नोकसान नै पहुँचेबौ।

एस्ट्रागोन आ व्लादीमीर उठबाक प्रयास करबाक सोचैए आ उठि जाइए। एस्ट्रागोन कहैए- उठनाइ बच्चाक खेल सन हल्लुक अछि आ व्लादीमीर बजैए- ई मात्र आत्मशक्तिक प्रश्न अछि। पोजो सहायता लेल कहैए। दुनू पोजोकेँ उठबैए, फेर छोड़ैए, पोजो खसि पड़ैए। फेर दुनू ओकरा उठबैए आ पकड़ने रहैए। किछु कालमे कने छोड़ि कऽ जाँचैए मुदा जखन पोजो खसऽ लगैए तँ पकड़ि लैए। पोजो सेहो बुझा पड़ैए जे काल्हिक घटना बिसरल सन अछि। ओ कहैए जे ओ एक दिन सुति कऽ उठल तँ अपनाकेँ आन्हर पेलक, ओ कहैए जे ओकरा लगै छै जे ओ अखनो सुतले तँ नै अछि। ओ लकीक विषयमे पूछैए। लागैए जे कोना ओ दुनू खसल, से ओकरा मोन नै छै। पोजो कहैए जे लकीक गर्दनिक रस्साकेँ जोरसँ खीचू बा मुँहपर जूतासँ मारू तँ ओ उठि जाएत। व्लादीमीर एस्ट्रागोनकेँ कहैए जे ओकरा लेल बदला लेबाक नीक अवसर छै। एस्ट्रागोन पुछैए (ओकर स्मृति घुरै छै!) जे जँ लकी अपन रक्षा करए तखन? तइपर पोजो बाजैए जे लकी कखनो अपन रक्षा नै करैए। मुदा एस्ट्रागोन नै व्लादीमीर लकीकेँ पएरसँ मारऽ

लगैए मुदा अपने ओकरा चोट लागि जाइ छै। घटनाक्रमसँ लगै छै जे पोजो आब अपनासँ ठाढ़ भऽ गेल अछि।

पोजो जे लकीकेँ कोनो हाटमे बेचैले लऽ जा रहल अछि, केँ ने काल्हिक किछु मोन छै आ नहिये काल्हि आजुक किछु मोन रहतै। ओ लकीकेँ उठैले कहैए आ लकी उठि जाइए आ अपन बोझ उठा लैए। पोजो अपन चाबुक मांगैए। लकी सभ बोझ राखैए, आ चाबुक पोजोक हाथमे दऽ कऽ सभ बोझ उठा लैए। पोजो रस्सा मांगैए, लकी सभ बोझ राखि रस्सा पोजोकेँ पकड़ा कऽ सभ बोझ उठा लैए!

लकी आ पोजो चलि जाइए। ओ छौंड़ा अबैए। ओ व्लादीमीरकेँ अल्बर्ट कहि सम्बोधित करैए। व्लादीमीर पुछै छै जे की ओ ओकरा नै चिन्हलक, की ओ काल्हि नै आएल छल। छौड़ा कहैए जे आइ ओ पहिल बेर आएल अछि। संदेश वएह छै, गोडो आइ नै आएत मुदा काल्हि अवश्य आएत। व्लादीमीर पुछैए जे ''गोडो'' करैए की? तँ छौड़ा कहैए जे गोडो किछु नै करैए। व्लादीमीर पुछैए जे छौड़ाक भाए केहन छै। तँ उत्तर भेटै छै , ओ दुखित छै। व्लादीमीर पुछैए जे की काल्हि ओकर भाए आएल छलै- तँ से छौड़ाकेँ नै बुझल छै। छौड़ा उत्तर दैत कहैए जे गोडोकेँ दाढ़ी छै आ ओ कारी नै गोर छै। छौड़ा (पहिल अंक जकाँ) पुछैए जे ओ गोडोकेँ की जा कऽ कहतै। व्लादीमीर कहैए- जा कऽ कहू जे तोरा हमरा सभसँ भेँट भेलौ। व्लादीमीर छौड़ापर छड़पैए मुदा ओ पड़ा जाइए। सूर्यास्त होइ छै। चन्द्रमा देखा पड़ै छै।

एस्ट्रागोन कहैए जे जँ दुनू गोटे अलग भऽ जाए तँ ई दुनू लेल नीक हेतै। जँ काल्हि गोडो नै एतै तँ ओ दुनू गोटे रस्सासँ लटकि जाएत (व्लादीमीर कहैए) आ जँ एतै तँ बचि जाएत। व्लादीमीर लकीक हैटमे ताकैए, हिलबैए, फेर पहिरैए। दुनू जेबाक निर्णय करैए मुदा कियो नै हिलैए। पर्दा खसैत अछि।

....

हैरोल्ड पिंटरक तीन अंकीय नाटक छन्हि **"द बर्थडे पार्टी"**।

पीटे, मेग, स्टैनले, लुलु, गोल्डबर्ग आ मैककान एकर पात्र छथि।

पहिल अंक- मेग पीटेकेँ जलखै दैए, पुछैए जे स्टेनली उठलै आकि नै। स्टेनली अबैए, ओकरो मेग जलखै दैए। पीटे काजपर चलि जाइए। मेग आ स्टैनलेमे अंतरंग गप होइए, हँसी मजाक होइए। पीटे मेगसँ कहने रहै जे दू गोटे एतै आ किछु दिन ओकरा घरमे रहतै। ओकर घर सूचीमे (बोर्डिंग हाउसमे) छै। स्टैनली ई सुनि पूछ-पाछ करै छै, ओ चिंतित भऽ जाइए। स्टैनली कहैए जे ओकरा पेरिसमे नाइट क्लबमे पियानो बजेबाक नोकरीक ऑफर आएल छै। फेर एथेंस, कॉन्सटेनटिनोपल, जाग्रेब, व्लादीवोस्टक सेहो, ई सम्पूर्ण विश्वक दर्शनबला नोकरी अछि। पुछलापर ओ कहैए जे ओ संपूर्ण विश्व, संपूर्ण देशमे पियानो बजेने अछि। एक बेर ओ कंसर्ट सेहो केने रहए। फेर ओ कहैए जे पहिल कंसर्टमे ओ स्थानक पता हरा देलक आ नै पहुँचि सकल। दोसर कंसर्टमे जखन ओ पहुँचल तँ स्थलपर ताला लागल रहै। मेगक इच्छा नै छै जे स्टेनली कतौ जाए।

स्टेनलीकेँ लागै छै जे ओ दुनू गोटे ककरो खोजमे अछि। लुलुक अबाज अबैए। मेग खरीदारीक झोरा लऽ कऽ बहरा जाइए, कियो ओकरासँ मिसेज बोल्स सम्बोधित कऽ गप करै छै। लुलु अबैए आ स्टैनलीसँ गप करैए। लुलु बहराइए तँ गोल्डबर्ग आ मैककेन अबैए। मैककेन गोल्डबर्गकेँ नैट कहि सम्बोधित करैए। स्टैनली चोरा कऽ पहिनहिये बहरा जाइए। मेग अबैए, गोल्डबर्ग ओकरा मिसेज बोल्स कहि सम्बोधित करैए आ अपनाकेँ गोल्डबर्ग आ संगीकेँ मैककेन कहि परिचय दैए। गपशपक क्रममे गोल्डबर्ग पुछै छै जे ओइ रहनिहारक नाम की छै आ ओ की करैए। मेग कहैए जे ओकर नाम स्टैनले वेबर छै आ ओ एक बेर कंसर्ट देलक मुदा केयरटेकरक गलतीसँ रातिमे ओ ओतै बन्द रहि गेल आ भोर धरि बन्द रहल। आ फेर ''टिप'' लऽ कऽ ट्रेन पकड़ि एतऽ आबि गेल। तखने मेग कहैए जे आइ ओकर ''बर्थडे'' छिऐ। आ फेर ''बर्थडे पार्टी'' निर्धारित होइ छै 9 बजे। लुलुकेँ सेहो बेरू पहर नोति देल जेतै। तीनू बहराइए आ स्टैनली खिड़कीसँ ताकैए। मेग अबैए। स्टैनली ओइ दुनूसँ आशंकित अछि। नाम पुछैए तँ मेग नाम बिसरि जाइए आ ओकरा गोल्ड.. मोन पड़ै छै तँ स्टैनली मोन पाड़ै छै- गोल्डबर्ग। मेग पुछैए जे की स्टेनली ओकरा चिन्हैए तँ स्टैनली गुम्म रहैए। फेर स्टैनली कहैए जे आइ ओकर बर्थडे नै छिऐ। मेग ओकरा लेल बच्चाक ड्रम उपहारमे अनने अछि आ तकर बदलामे ओ स्टैनलीसँ चुम्मा मांगैए।

अंक 2 मे स्टैनली आ मैक्कानक गपशप भऽ रहल छै। स्टैनली बाहर जाए चाहैए। ओ मैक्कानकेँ कहै छै जे ई बोर्डिंग हाउस नै छी, नहिये कहियो रहै। पीटे आ गोल्डबर्ग अबैए। गोल्डबर्ग पीटेकेँ मिस्टर बोल्स कहि सम्बोधित करैए। पीटेक गेलाक बाद स्टैनली

कहैए जे ऐ घरक लोकक सुंघबाक शक्ति चलि गेल छै तँ ओ गोल्डबर्ग आ मैक्कानक खतरा नै चीन्हि पाबि रहल छथि, हुनका सभक प्रति ओकर (स्टैनलीक) जिम्मेवारी छै।

मैक्कान ओकरासँ चश्मा छीनि लैए। मैक्कान आ गोल्डबर्ग ओकरासँ पुछैए जे ओ किए अपन पत्नीक हत्या केलक। ओ नाम बदलने अछि आ चरित्रहीन अछि, स्त्रीकेँ दूषित करैए।

झगड़ा शुरू होइ छै। मुदा झगड़ा रुकलाक बाद (प्रायः मेगकेँ नै बुझल छै) मेग पार्टी ड्रेसमे अबैए। सामान्य गप होइ छै।

लुलु अबैए, गोल्डबर्ग ओकरा कोरामे बैसबैए। लुलुक पुछलापर जे ओकरा तँ होइ छलै जे ओ ''नैट'' छी, गोल्डबर्ग कहै छै जे ओकर पत्नी ओकरा ''सिमे'' कहि बजबै छै।

पार्टीमे खेल शुरू होइए, आँखिमे पट्टी बान्हि कऽ। मिसेज बोल्सकेँ लुलु स्कार्फसँ आँखि बान्हैए। ओ जकरा छू देत तकरा आँखिपर पट्टी बान्हल जाएत। ओ मैक्केनकेँ छुबैए। फेर स्टैनली छुआइए। ओकर चश्मा लेल जाइ छै। स्टेनलीकेँ पट्टी बान्हल जाइ छै। मैक्केन स्टेनलीक चश्मा तोड़ि दैए। मैक्केन ड्रमकेँ स्टेनलीक रस्तामे राखैए, ओ खसि पड़ैए आ मेगक गर्दनि दबबऽ चाहैए, मैक्केन आ गोल्डबर्ग बचबै छै।

अन्हार पसरैए।

स्टैनलीकेँ अबैत देखि लुलु बेहोश भऽ जाइए। स्टैनले लुलुकेँ टेबुलपर राखैए। मैक्कानकेँ टॉर्च भेटै छै। ओ टेबुल आ स्टैनलीपर टॉर्च बाड़ैए।

अंक 3: पीटे आ मेगमे गप होइ छै। मेग स्टैनलीक विषयमे पीटेसँ पुछैए। लुलु अबैए, गोल्डबर्गसँ पुछैए जे ओकर पिता बा एडी (ओकर पहिल प्रेमी) की सोचत जँ ओ ई सुनत। ओ कहैए जे गोल्डबर्ग अपन दुष्ट पियास तृप्त केलक, ओ लुलुकेँ से सभ सिखेलक जे एकटा युवती तीन बेर बियाहल जेबाक बादे सीखत। गोल्डबर्ग कहैए जे ओ ई केलक कारण लुलु ओकरा ई करऽ देलक।

लुलु जाइए।

मेगक अनुपस्थितिमे गोल्डबर्ग आ मैक्कान स्टेनलीकेँ लऽ जाइए। पीटे ओकरा छोड़ैले कहैए। गोल्डबर्ग आ मैक्कान पीटेकेँ सेहो संगमे चलैले कहैए, कारमे जगह छै। पीटे स्थिर रहैए। पीटे असगरे रहि जाइए, मेग अबैए। पुछैए, ओ सभ गेल? पीटे कहैए- हँ। स्टेनलीक विषयमे मेग पुछैए- ओ सुतले अछि? पीटे कहैए- ओ सुतल अछि।

-सुतऽ दियौ।

मेग पुछैए- की ई नीक पार्टी नै छल तँ पीटे कहैए- ओ बादमे आएल।

पर्दा खसैए।

....

बादल सरकारक "एवम् इन्द्रजीत"।

"एवम् इन्द्रजीत" मे लेखक, काकी, मानसी, अमल, विमल, कमल, इन्द्रजीत आ इन्द्रजीतक पत्नी (नाटकमे बादमे) दोसर मानसी पात्र अछि।

अंक 1- लेखक एकटा नाटकक खोजमे अछि। ओकर काकी ओकर खेनाइ-पिनाइ छोड़ि लिखैत रहबापर तमसाएल छै। मानसी पुछैए जे ओ पढ़त जे किछु ओ लिखलक। लेखक कहैए, ओ किछु नै लिखलक। मानसी ओकरा प्रयास करैले कहै छै। लेखक दर्शकमेसँ चारिटा बादमे आबैबलाकँ स्टेजपर बजबैए, अमल, विमल, कमल। चारिम अपन नाम निर्मल कुमार कहैए। लेखक कहैए- ई नै भऽ सकै छै, अपन असली नाम बताउ। ओ कहैए- इन्द्रजीत राय। अमल, विमल, कमल एवम् इन्द्रजीत। मानसी (असली नाम दोसर मुदा लेखक कहैए मानसीये) ओकर ममियौत बहिन छिऐ। ओ ओकरासँ प्रेम करैए, परम्परा तोड़ऽ चाहैए।

अंक 2- बादमे ओकरा लागै छै जे की जँ ई प्रेम सफल भइयो जेतै तँ ओकरा उत्तर भेटतै? नै ने। ओ लंदन सेहो जाएत। मृत्यु चाहैए, नै कऽ पाबैए। लेखक द्वारा नामित इन्द्रजीतक मानसी अविवाहित अछि, हजारीबागमे पढ़बैए।

मुदा अमल, विमल, कमलक विपरीत इन्द्रजीत लीखपर नै चलैए। अलग किछु करऽ चाहैए। काका, जकरा ओ माए कहैए, खाइले

कहै छै आ मानसी लिखैले। मुदा जखन एक बेर मानसी लेखककेँ खाइले कहि दैए तँ लेखक दुखी भऽ जाइए, नै, अहूँ? नै।

मुदा फेर मानसीकेँ गलतीक भान होइ छै, ओ ओकर लेखनक विषयमे पुछैए। लेखक चिंतित अछि, ई इन्द्रजीत वास्तविकताकेँ नै मानैए, कोनो प्रतिबद्धता ओकरामे नै छै। मुदा मानसी से नै मानैए।

ओ सपना तँ देखैए ने।

इन्द्रजीत लंदनसँ कोलकाता घुरैए, एकटा दोसर स्त्रीसँ बियाह करैए, ओकरो नाम मानसी छिऐ (इन्द्रजीत एकरा मानसी कहैए, पहिलुका मानसी जेकरा लेखक मानसी कहैए ओ इन्द्रजीतक ममियौत छिऐ, जकरासँ इन्द्रजीत प्रेम करैए मुदा ओ भाएक रिश्तासँ ओकरासँ बियाह नै करैए जे लोक की कहतै, आ इन्द्रजीत लेखककेँ कहैत रहैए जे ओकर नाम मानसी नै छिऐ।)

इन्द्रजीत बुझऽ लगैए (मानसीकेँ ओ कहैए) जे व्यक्तिक भिन्नताक मात्र भ्रम अछि। स्वप्न स्वप्न अछि ओ वास्तविकता नै बनि सकैए। मानसी, मानसी, मानसी, सभ मानसी, जेना अमल, विमल, कमल। लेखक पूछैए तँ इन्द्रजीत कहैए- अमल, विमल, कमल एवम् इन्द्रजीत (सेहो!)।

लेखकक यात्राक कोनो लक्ष्य नै, कोनो उद्देश्य नै, फुसियाँहीक यात्रा जकर कोनो कारण नै। लेखक इन्द्रजीतकेँ कहैए, हमरा सभकेँ जीबाक अछि, चलबाक अछि, कोनो धर्मस्थल नै तैयो तीर्थयात्रा करबाक अछि।

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क "नो एण्ट्री: मा प्रविश"

प्रथम कल्लोल: ई नाटक ज्योतिरीश्वरक परम्परामे कल्लोलमे (हुनकर वर्ण रत्नाकर कल्लोलमे विभक्त अछि जे नाटक नै छी, धूर्त-समागम जे ज्योतिरीश्वर लिखित नाटक अछि- अंकमे विभक्त अछि) विभाजित अछि। चारि कल्लोलक विभाजनक प्रथम कल्लोल स्वर्ग (बा नरक) केर द्वारपर आरम्भ होइत अछि। ओतऽ बहुत रास मुइल लोक द्वारक भीतर प्रवेशक लेल पंक्तिबद्ध छथि। कियो पथ दुर्घटनामे शिकार भेल बाजारी छथि तँ संगमे युद्दमे मृत भेल सैनिक आ चोरि करऽ काल मारल गेल चोर, उचक्का आ पॉकिटमार सेहो छथि। ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागममे जे अति आधुनिक अब्सर्डिटी अछि से *नो एण्ट्री: मा प्रविश* मे सेहो देखबामे अबैत अछि। प्रथम कल्लोलमे जे बाजारी छथि से, पंक्ति तोड़ि आगाँ बढ़ला उत्तर, चोर आ उचक्का दुनू गोटेकेँ, कॉलर पकड़ि पुनः हुनकर सभक मूल स्थानपर दऽ अबै छथि। उचक्का जे बादमे पता चलैत अछि जे गुण्डा-दादा थिक मुदा बाजारी लग सञ्च-मञ्च रहैए, हुनकासँ अंगा छोड़बाक लेल कहैए। मुदा जखन पॉकेटमार बाजारी दिससँ चोरक विपक्षमे बजैए तखन उचक्का चक्कू निकालि अपन असल रूपमे आबि जाइए आ पॉकेटमारपर मारि-मारि कऽ उठैए। मुदा जखन चोर कहै छनि जे ई सेहो अपने बिरादरीक अछि जे छोट-छीन पॉकेटमार मात्र बनि सकल, ओकर जकाँ माँजल चोर नै, आ उचक्का जेकाँ गुण्डा-बदमाश बनबाक तँ सोचिओ नै सकल, तखन उचक्का महराज चोरक पाछाँ पड़ि जाइ छथि, जे बदमाश ककरा कहलँह। आब पॉकेटमार मौका देखि पक्ष बदलैए आ उचक्काकेँ कहै छन्हि जे अहाँकेँ नै हमरा कहलक। संगे ईहो कहैए जे चोरि तँ ई तेहन

करऽ जनैए, जे गिरहथक बेटा आ कुकुर सभ चोरि करै काल पीटैत-पीटैत एतऽ पठा देलकए आ हमर खिधांश करैत अछि, बड़का चोर भेला हँ। भद्र व्यक्ति चोरक बगेबानी देखि ई विश्वास नै कऽ पबै छथि जे ओ चोर थिकाह। तइपर पॉकेटमार, चोर महाराजकेँ आर किचकिचबै छन्हि। तखन ओ चोर महराज ऐ गपपर दुख प्रकट करै छथि जे नै तँ ओइ राति ऐ पॉकेटमारकेँ चोरिपर लऽ जइतथि आ ने ओ हुनका पिटैत देखि सकैत। एम्हर बजारी जे पहिने चोर आ उच्क्काकेँ कॉलर पकड़ि घिसिया चुकल छला, गुम्म भेल सभटा सुनै छथि आ दुख प्रकट करै छथि जे एकरा सभक संग स्वर्गमे रहब, तँ स्वर्ग केहन हएत से नै जानि। आब बजारी महराज गीतक एकटा टुकड़ी ऐ विषयपर पढ़ै छथि। जेना धूर्तसमागममे गीत अछि तहिना *नो एण्ट्री: मा प्रविश* मे सेहो, ई ऐ स्थलपर प्रारम्भ होइए जे ऐ नाटककेँ संगीतक बना दैए। ओम्हर पॉकेटमारजी सभक पॉकेट काटि लै छथि आ बटुआ साफ कऽ दै छथि। आब फेर गीतमय फकड़ा शुरू भऽ जाइए मुदा तखने एकटा मृत रद्दीबला सभक तंद्राकेँ तोड़ि दैए, ई कहि जे यमालयक बन्द दरबज्जाक ओइ पार, ई बटुआ आ पाइ-कौड़ी कोनो काजक नै अछि। आब दुनू मृत भद्र व्यक्ति सेहो बजै छथि, जे हँ दोसर देसमे दोसर देसक सिक्का कहाँ चलैत अछि। आब एकटा रमणीमोहन नाम्ना मृत रसिक भद्र व्यक्तिक दोसर देसक सिक्का नै चलबाक विषयमे टीप दै छथि, जे हँ, ई तँ ओहिना अछि जेना प्रेयसीक दोसराक पत्नी बनब। आब ऐ गपपर घमर्थन शुरू भऽ जाइए। तखन रमणी मोहन गपक रुखि घुमा दै छथि जे दरबज्जाक भीतर रम्भा-मेनका सभ हेती। भिखमंगनी जे तावत अपन कोरामे लेल एकटा पुतराकेँ दोसराक हाथमे दऽ बहसमे शामिल भऽ गेल छथि, ईर्ष्यावश रम्भा-मेनकाकेँ मुँहझड़की इत्यादि

कहै छथि। मुदा पॉकेटमार कहैए जे भीतरमे सुख नै दुखो भऽ सकैए। ऐपर बीमा बाबू अपन कार्यक स्कोप देखि प्रसन्न भऽ जाइ छथि। आब पॉकेटमार इन्द्रक वज्र पर रुपैय्याक बोली शुरू करैत अछि। ऐ बेर बजारी तन्द्रा भंग करैत अछि आ दुनू भद्र व्यक्ति हुनकर समर्थन करैत कहैत अछि, जे ई अद्भुत नीलामी अछि, जे करबा रहल अछि से पॉकेटमार आ ओइमे शामिल अछि चोर आ भिखमंगनी, पहिले-पहिल सुनल अछि आ फेर संगीतमय फकड़ा सभ शुरू भऽ जाइत अछि। मुदा तखने नंदी-भृंगी शास्त्रीय संगीतपर नचैत प्रवेश करै छथि। आब नंदी-भृंगीक ई पुछलापर जे दरबज्जाक भीतर की अछि, सभ गोटे अपना-अपना हिसाबसँ स्वर्ग-नरक आ अकास-पताल कहै छथि। मुदा नंदी-भृंगी कहै छथि जे सभ गोटे सत्य कहै छी आ क्यो गोटे पूर्ण सत्य नै बजलौं। फेर बजैत-बजैत ओ कहऽ लगै छथि, कियो चोरि काल मारल गेला (चोर ई सुनि भाऽ लगै छथि तँ दु-तीन गोटे पकड़ि सोझाँ लऽ अनै छन्हि!) तँ कियो एक्सीडेन्टसँ, आ ऐ तरहेँ सभटा गनबऽ लगै छथि, मुदा बीमा-बाबू कोना बिन मृत्युक एतऽ आएल छथि से हुनको लोकनिकेँ नै बुझल छन्हि ! बीमा बाबू कहै छथि जे ओ नव मार्केटक अन्वेषणमे आएल छथि ! से बिन मरल सेहो एक गोटे ओतऽ छथि! भृंगी नंदीकेँ ढ़ेर रास बीमा कम्पनीक आगमनसँ आएल कम्पीटिशनक विषयमे बुझबैत छथि ! एम्हर प्रेमी-प्रेमिकामे घोंघाउज शुरू होइ छन्हि, कारण प्रेमी आब घुरि जाए चाहै छथि। रमणी मोहन प्रेमीक गमनसँ प्रसन्न होइ छथि जे प्रेमिका आब असगरे रहती आ हुनका लेल मौका छन्हि। मुदा भृंगी ई कहि जे एतऽसँ गेनाइ तँ संभव नै मुदा ई भऽ सकैए जे दुनू जोड़ी माय-बाप (!) केँ एक्सीडेन्ट करबाए एतै बजबा लेल जाए। मुदा अपना लेल माए-

बापक बलि लेल प्रेमी-प्रेमिका तैयार नै छथि। तखन नंदी भृंगी दुनू गोटेक विवाह गाजा-बाजाक संग करा दै छथि आ कन्यादान करै छथि बजारी।

दोसर कल्लोल: दोसर कल्लोलक आरम्भ होइत अछि ऐ आभाससँ, जे कियो नेता मरलाक बाद आबएबला छथि, हुनकर दुनू अनुचर मृत भऽ आबि चुकल छथि आ नेताजीक अएबाक सभ कियो प्रतीक्षा कऽ रहल छथि, दुनू अनुचर छोट-मोट भाषण दऽ नेताजीक विलम्बसँ एबाक (मृत्युक बादो!) क्षतिपूर्ति कऽ रहल छथि, गीतक योग दऽ। एकटा गीत चोर नै बुझै छथि मुदा भिखमंगनी आ रद्दीबला बुझि जाइ छथि, तइपर बहस शुरू होइए। चोरकेँ अपनाकेँ चोर कहलापर आपत्ति छन्हि आ भिखमंगनीकेँ ओ भिख-मंग कहैए तँ भिखमंगनी ओकरा रोकि कहैए जे ओ सरिसवपाहीक अनसूया छथि, मिथिला-चित्रकार, मुदा दिल्लीक अशोकबस्ती आबि बुझलन्हि जे ऐ नग्रमे कला-वस्तु कियो नै किनैए आ तखन चौबटियाक भिखमंगनी बनि रहि गेली। चोर कहैए जे मात्र ओ बदनाम छथि, चोरि तँ सभ करैए। नव बात कोनो नै अछि, सभ अछि पुरनकाक चोरि। तकर बाद नेताजी पहुँचि जाइ छथि आ लोकक चोर, उचक्का आ पॉकेटमार हेबाक कारण समाजक स्थितिकेँ कहै छथि। तखने एकटा वामपंथी अबे आ ओ ई देखि क्षुब्ध छथि जे नेताजी चोर, उचक्का आ पॉकेटमारसँ घिरल छथि। मुदा चोर अपन तर्क लऽ पुनः प्रस्तुत होइए आ नेताजीक राखल ‘‘चोर-पुराण’’ नामक आधारपर बजारी जी गीत शुरू कऽ दै छथि।

तेसर कल्लोल: आब नेताजी आ वामपंथीमे गठबंधन आ वामपंथी द्वारा सरकारक बाहरसँ देल समर्थनपर चरचा शुरू भऽ जाइए।

नेताजी फेर गीतमय होइ छथि आकि तखने स्टंट-सीन करैत एकटा मुइल अभिनेता विवेक कुमारक अएलासँ आकर्षण ओम्हर चलि जाइत अछि। टटका-ब्रेकिंग न्यूज देबाक मजबूरीपर नेताजी व्यंग्य करै छथि। वामपंथी दू बेर दू गोट गप- नव गप कहि जाइ छथि, एक जे बिन अभिनेता बनने कियो नेता नै बनि सकैत अछि आ दोसर जे चोर नेता नै बनि सकैए (ई चोर कहैत अछि) मुदा नेता सभ तँ चोरि करबामे ककरोसँ पाछाँ नै छथि। तखने एकटा उच्च वंशीय महिला अबै छथि आ हुनकर प्रश्नोत्तरक बाद एकटा सामान्य क्यूक संग एकटा वी.आइ.पी.क्यू बनि जाइए। अभिनेता, नेता आ वामपंथी सभ वी.आइ.पी.क्यूमे ठाढ़ भऽ जाइ छथि ! ई पुछलापर जे पंक्ति किए बनल अछि (?) तइपर चोर-पॉकेटमार कहै छथि जे हुनका लोकनिकेँ पंक्ति बनेबाक (आ तोड़बाक सेहो) अभ्यास छन्हि।

चतुर्थ कल्लोल: यमराज सभक खाता-खेसरा देखि लै छथि आ चित्रगुप्त ई रहस्योद्घाटन करै छथि जे एक युग छल जखन सोझाँक दरबज्जा खुजितो छल आ बन्न सेहो होइ छल। नंदी भृंगी पहिनहिये सूचित कऽ देलन्हि जे सोझाँक दरबज्जा स्वप्न नै, मात्र बुझबाक दोष छल। दरबज्जाक ओइ पार की अछि तइ विषयमे सभ कियो अपना-अपना हिसाबसँ उत्तर दै छथि। चित्रगुप्त कहै छथि जे सभक वर्णनक सभ वस्तु छै ओइपार। नंदी-भृंगी सूचित करै छथि जे ऐ गेटमे प्रवेश निषेध छै, नो एण्ट्री केर बोर्ड लागल छै। आहि रे ब्बा! आब की हुअए ! नेताजीकेँ पठाओल जाइ छन्हि यमराजक सोझाँ, मुदा हुनकर सरस्वती ओतऽ मन्द भऽ जाइ छन्हि। बदरी विशाल मिश्र प्रसिद्ध नेताजी, केर लतारनाइ शुरू होइ

छन्हि, असली केर बदला सर्टिफिकेट बला कम कऽ लिखाओल उमरिपर। पचपन बरिख आयु आ शश योग कहैए जे सत्तरि सँ ऊपर जीता, से ओ आ संगमे मृत चारू सैनिककेँ आपिस पठा देल जाइए। दूटा सैनिक नेताजीक संग चलि जाइ छथि आ दू टा अनुचर सेहो जाए चाहैए। मुदा नेताजीक अनुचर सभक अपराध बड़ भारी, से चित्रगुप्तक आदेशपर नंदी-भृंगी हुनका लऽ, कराहीमे भुजबाक लेल बाहर लऽ जाइ छथि तँ बाँचल दुनू सैनिक हुनका पकड़ि कँ लऽ जाइ छथि आ नंदी-भृंगी फेर मंचपर घुरि अबै छथि। तहिना तर्कक बाद प्रेमी-प्रेमिका, दुनू भद्र पुरुष आ बजारीकेँ सेहो त्राण भेटै छन्हि, ढोल-पिपही संग हुनका बाहर लऽ गेल जाइए। आब नन्दी जखन अभिनेताक नाम विवेक कुमार उर्फ...बजै छथि तँ अभिनेता जी रोकि दै छथि, जे कतेक मेहनतिसँ जाति हुनकर पाछाँ छोड़ि सकल अछि, से उर्फ तँ छोड़िए देल जाए। वामपंथी गोष्ठीकेँ अभिनेता द्वारा मदति केर विवरणपर वामपंथी प्रतिवाद करै छथि। हुनको पठा देल जाइ छन्हि। वामपंथीक की हेतन्हि, हुनकर कथामे तँ ने स्वर्ग-नर्क अछि आ ने यमराज-चित्रगुप्त। हुनका अपन भविष्यक निर्णय स्वयं करबाक अवसर देल जाइ छन्हि। मुदा वामपंथी कहै छथि जे हुनकर शिक्षा आन प्रकारक छलन्हि, मुदा एखन जे सोझाँ घटित भऽ रहल छन्हि तइपर कोना अविश्वास करथु? मुदा यमराज कहै छथि जे- भऽ सकैए, जे अहाँ देखि रहल छी से दुःस्वप्न हुअए, जतऽ पैसै जाएब ओतऽ लिखल अछि नो एण्ट्री। आब यमराज प्रश्न पुछै छथि जे विषम के, मनुक्ख आकि प्रकृति? वामपंथी कहै छथि जे दुनू, मुदा प्रकृतिमे तँ नेचुरल जस्टिस कदाचित् होइतो छै मुदा मनुक्खक स्वभावमे से गुन्जाइश कतऽ? मुदा वामपंथी राजनीति एकर (समानताक, सुधार केर) प्रयास करैए। तइपर हुनका संग चोर-

उचक्का आ पॉकेटमारकेँ पठाओल जाइए, ई अवसर दैत जे हिनका सभकेँ बदलू। चोर कनेक जाएमे इतस्ततः करैए आ ई जिज्ञासा करैए जे हम सभ तँ जाइए रहल छी मुदा ऐसँ आगाँ ? नंदी-चित्रगुप्त-यमराज समवेत स्वरमे कहै छथि- नो एण्ट्री। भृंगी तखने अबैए, अभिनेताकेँ छोड़ने। यमराज कहै छथि - मा प्रविश। भृंगी नीचाँमे होइत चरचाक गप कहैत अछि, जे एतुक्का निअम बदलल जेबाक आ कतेक गोटेकेँ पृथ्वीपर घुरऽ देल जेबाक चरचा सर्वत्र भऽ रहल अछि। यमदूत सभ अनेरे कड़ाह लग ठाढ़ छथि, कियो भुजऽ लेल कहाँ भेटल छन्हि (मात्र दू टा अनुचर छोड़ि)। आब कियो नै आबऽ बला बचल अछि, से सभ कहै छथि। चित्रगुप्त अपन नमहर दाढ़ी आ यमराज अपन मुकुट उतारि लै छथि आ स्वाभाविक मनुक्खक रूपमे आबि जाइ छथि! मुदा चित्रगुप्तक मेकप बला नमहर दाढ़ी देखि भिखमंगनी जे ओतऽ छली, हँसि दै छथि। भृंगी उद्घाटन करै छथि जे भिखमंगनी हुनके सभ जेकाँ कलाकार छथि ! कोन अभिनय ! तकर विवरण मुहब्बत आ गुदगुदीपर खतम होइए, तँ भिखमंगनी कहै छथि जे नै, ऐ तरहक अभिनय तँ ओतऽ (देखा कऽ) भऽ रहल अछि। ओत्तऽ रमणी मोहन आ उच्चवंशीय महिला निभाक रोमांस चलि रहल अछि। मुदा निभाजी तँ बजिते नै छथि। भिखमंगनी यमराजसँ कहै छथि जे ओ तखने बजती जखन ऐ दरबज्जाक तालाक चाभी हुनका भेटतन्हि, बुझती जे अपसरा बनबामे यमराज मदति दऽ सकै छथि, ई रमणीक हृदय थिक एतौ नो एण्ट्री ! यमराज खखसै छथि, तँ चित्रगुप्त बुझि जाइ छथि जे यमराज ''पंचशर''सँ ग्रसित भऽ गेल छथि! चित्रगुप्तक कहला उत्तर सभ कियो एक कात लऽ गेल जाइ छथि मात्र यमराज आ निभा मंचपर रहि जाइ छथि। यमराज निभाक सोझाँ- सुनू ने निभा...

कहि रुकि जाइ छथि। सभक उत्साहित केलापर यमराज बड़का चाभी हुनका दै छथि, मुदा निभा चाभी भेटलापर रमणी मोहनक संग तेना आगाँ बढ़ै छथि जेना ककरो अनका चिन्हिते नै होथि! ओ चाभी रमणी मोहनकेँ दऽ दै छथि मुदा ओ ताला नै खोलि पबै छथि। फेर निभा अपने प्रयास करऽ लेल आगाँ बढ़ै छथि मुदा चित्रगुप्त कहै छथि जे ई मोनक दरबज्जा थिक, ओना नै खुजत। महिला ठकै लेल चाभी देबाक (!) गप कहै छथि। सभ कियो हँसी करै छन्हि जे मोन कतऽ छोड़ि एलौं ? तइपर एकबेर पुनः रमणी मोहन आ निभा मोन संजोगि कऽ ताला खोलबाक असफल प्रयास करै छथि। नंदी-भृंगी-भिखमंगनी गीत गाबऽ लगै छथि जकर तात्पर्य यएह जे मोनक ताला अछि लागल, मुदा ओतऽ अछि नो एण्ट्री। मुदा ऋतु वसन्तमे प्रेम होइछ अनन्त आ करेज कहैत अछि मैना-मैना। तँ एतहि नो एण्ट्री दरबज्जापर धरना देल जाए।

उत्तर आधुनिक भावप्रधान निरर्थक (एबसर्ड) नाटक: *एन एटेण्डेन्ट गोडो* क सैमुअल बेकैट द्वारा स्वयं फ्रेंचसँ अंग्रेजीमे अनुवाद कएल गेल ‘‘वेटिंग फॉर गोडो’’ शीर्षकसँ आ उपशीर्षक ‘‘अ ट्रेजिकॉमेडी इन टू एक्ट्स’’ सेहो जोड़ल गेल जे फ्रेंच संस्करणमे नै छल। ट्रेजीकॉमेडी माने ट्रेजेडी आ कॉमेडीक मिश्रण। एकर कथानकसँ स्पष्ट भऽ गेल हएत जे एकर मुख्य पात्र ‘‘गोडो’’ ऐ नाटकमे छैहे नै, दोसर ओ भावक दृष्टिसँ सेहो नाटकक मुख्य तत्व नै छै। नाटकक मुख्य तत्व छै ‘‘वेटिंग’’ माने बाट तकनाइ। भाषा, स्टेज, बाजब, चुप्प रहब, चलबाक तरीका, ई सभ ऐ नाटकक अभिन्न अंग छिऐ। देश-कालमे भागैबला बनजारा जीवनशैलीक लोक सभ अछि एकर मुख्य पात्र। बिनु बजने शारीरिक भावसँ अभिनय करैबला ‘‘माइम कलाकार’’ जेकाँ ऐ नाटकक पात्र अभिनय करै छथि।

नाटकमे प्लॉट आ संतुलनक नव परिभाषा ई नाटक गढ़ैए। आधुनिक थियेटरकेँ ई नाटक नव युगमे प्रवेश करबैए। ब्रिटेनक ''म्यूजिक हॉल'' थियेटर मे संगीत हास्य रहै छलै जइमे जीवनक निराशा ''क्रॉस-टॉक''सँ बेकेट आ राजनैतिक-सामाजिक आतंककेँ हैरोल्ड पिन्टर हास्य रूपमे देखबै छथि। ''नो एण्ट्री: मा प्रविश'' सेहो स्वर्क (बा नरक) क द्वारपर आरम्भ होइए जतऽ ओना तँ सभ मृत लोक पंक्तिबद्ध छथि मुदा एकटा जीवित व्यक्ति सेहो छथि! उचक्का बाजारी लग सञ्च-मञ्च रहैए! प्रेमी-प्रेमिकाक ओतऽ बियाहो भऽ जाइ छै! नेताजी मृत्युक बादो विलम्बसँ एबा लेल अभिशप्त छथि! वामपंथी ओतौ बाहरसँ समर्थन दै छथि! वी.आइ.पी. क्यू सँ ओतौ त्राण नै भेटै छै! मुदा जइ दरबज्जाक बाहर लोक पंक्तिबद्ध छथि से एक युगमे खुजितो छल आ बन्न सेहो होइ छल, ई रहस्योद्घाटन चित्रगुप्त करै छथि! माने आब ई नै खुजत तखन इन्तजारी कथीक? नन्दी-भृंगी कहैए जे सोझाँक दरबज्जा स्वप्न नै, मात्र बुझबाक दोष छल! अभिनेता विवेक कुमार अपन ''सरनेम'' पुछल गेलापर कहै छथि जे कतेक मोश्किलसँ तँ जाति हुनकर पाछाँ छोड़लक अछि से उर्फ तँ छोड़िये देल जाए। वामपंथीक कथामे ने स्वर्ग-नर्क होइ छै आ नहिये यमराज-चित्रगुप्त, मुदा एतुक्का परिस्थिति देखि कऽ ओ अविश्वास कोना करथु? मुदा यमराजे हुनका कहै छथिन्ह जे सम्भव जे ई दुःस्वप्न हुअए। यमदूत सभ कड़ाह लग अनेरे ठाढ़ छथि कियो भूजैले भेटिते नै छन्हि, चित्रगुप्तक मेकप बला दाढ़ी देखि भिखमंगनीक हँसलापर भृंगी कहै छथि जे भिखमंगनी सेहो हुनके सभ जेकाँ कलाकार छथि। मोनक दरबज्जा मोन छोड़ि एलापर कोना खुजत?

फ्रेंच नाटक ''वेटिंग फॉर गोडो'', हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक ''द बर्थडे पार्टी'', बादल सरकारक बांग्ला नाटक ''एवम् इन्द्रजीत'' आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'क मैथिली नाटक ''नो एण्ट्री: मा प्रविश'' पुरान नाटक जेकाँ परिभाषित आरम्भ आ अन्तक परिधिसँ अलग अछि। ई कतौ सँ शुरू भऽ जाइत अछि, कतौ खतम भऽ जाइत अछि। *एवम् इन्द्रजीत* मे लेखक पात्र ताकि रहल अछि, आ अनचोक्के ओ दर्शक दीर्घाकेँ सम्बोधित करैत चारिटा देरीसँ आएल दर्शककेँ मंचपर बजा लैए आ ओकरा नाटकक पात्र बना दैए। चारिम पात्र ओकरा प्रिय छै, ओ निर्मल नै ''इन्द्रजीत'' छी। ओ अलग अछि, इन्द्रकेँ जीतैबला ऐतिहासिक पात्र अछि। ओ अमल विमल, कमल जेकाँ लीखपर नै चलत। मुदा अन्त जाइत जाइत इन्द्रजीत सेहो अमल, विमल, कमल *एवम् इन्द्रजीत* भऽ जाइए।

हैरोल्ड पिन्टरक ''द बर्थडे पार्टी''क प्रारम्भमे तेहेन समीक्षा भेल जे हुनकर लेखकीय जीवन समाप्त हुअए पर आबि गेल। मुदा एकर पुनर्पाठ एकरा क्लासिक बना देलक। किछु रहस्य, किछु आतंककेँ ओ सम्पूर्ण नाटकमे बनेने रहला, हास्य कथ्यकेँ आर मजगूत केलक। स्टैनले की अछि, छल बा बनऽ चाहैत अछि? की ओ स्त्रीकेँ दूषित करैए, बा ओ अपन पत्नीक हत्या केलक? मुदा मेग तँ ओकरा पसिन्न करै छै? ओकर पहिल आ दोसर कन्सर्ट, के तकर बाधक बनलै? की ओ झूठ बजैए बा वर्तमान सामाजिक आ राजनैतिक परिभाषासँ अलग व्यवहारक अछि? ओ मेगकेँ मोकऽ चाहैए मुदा तैयो किए मेग ओकरा पसिन्न करै छै आ सामाजिक आ राजनैतिक शक्ति ओकरा किए आ कोना उठा कऽ लऽ गेल जाइत रहै छै, जकर सिपाही गोल्डबर्ग (गोल्डबर्गक लुलुक संग रहस्यमय व्यवहार) स्वयं आदर्श उपस्थित नै कऽ पबै छथि।

सुन्न-मसान सड़कक कातक माटिक ढिमका आ पत्रहीन नग्न गाछ ''वेटिंग फॉर गोडो'' क स्टेज छिऐ, ताला लागल दरबज्जाक बाहरक स्थल/ मण्डप ''नो एण्ट्री: मा प्रविश''क स्टेज छिऐ तँ ''एवम् इन्द्रजीत''मे दर्शक दीर्घा, सएह स्टेज बनि जाइए। ''द बर्थडे पार्टी''मे घरक कोठली स्टेज छिऐ मुदा पिन्टर एकर पात्र स्टैनले कें डेरीडाक ''विखण्डन'' पद्धतिसँ कखनो खण्ड कऽ दै छथि तँ कखनो फेरसँ जोड़ि दै छथि। लोक बा दर्शक ओकरासँ ईर्ष्या करऽ लगैए, खने सहानुभूति करऽ लगैए खने घृणा करऽ लगैए, मुदा स्टैनली गोल्डबर्ग आ मैक्कानक सोझाँ जखन निर्बल बुझि पड़ैए तँ दर्शक ओकरा संग अपनाकेँ देखैए, जेना ओ ''एवम् इन्द्रजीत'' मे इन्द्रजीत संग अपनाकेँ देखैए। ''वेटिंग फॉर गोडो'' मे जखन लोक गुलाम संग अपनाकेँ देखैए तखने सहानुभूति देखेलापर, चमेटा पड़लापर ओ हतप्रभ रहि जाइए। ''नो एण्ट्री: मा प्रविश'' मे भिखमंगनी ईर्ष्यावश रम्भा-मेनकाकेँ मुँहझड़की कहैए! पॉकेटमार इन्द्रक वृजपर रुपैय्याक बोली लगबैए। नन्दी-भृंगी कहैए जे सभ गोटे सत्य छी मुदा क्यो गोटे पूर्ण सत्य नै बजलौं। ''एवम् इन्द्रजीत''मे इन्द्रजीतक हाल सिसीफस सन छै। शापित ग्रीक मिथक सिसीफस, संगमरमरक पाथरपर चढ़बा लेल अभिशप्त, आ जखने ओ चोटीपर पहुँचैए आकि पाथर फेर गुरकि कऽ ओकरा नीचाँ आनि दै छै। मनुक्खक काज आ जीवन निरर्थकतापर आधारित अछि। मनुक्ख असफल होइले अभिशप्त अछि, इन्द्रजीत जेकाँ? आकि ''नो एण्ट्री: मा प्रविश''क स्वर्ग-नरक, यमराज-चित्रगुप्तक अमान्यता देखलाहा गपकेँ देखि बदलत? मुदा तखन यमराजे कहै छथि जे देखलाहा गप दुःस्वप्न भऽ सकैए? ''वेटिंग फॉर गोडो'' ईश्वरक इन्तजारी नै छिऐ, बेकेट स्वयं कहै छथि जे

इन्तजारी ''गॉड''क नै ''गोडो''क भऽ रहल अछि, ओना क्रिस्टियेनिटी ''मिथोलोजी'' अछि से ओ तकर प्रयोग करै छथि। अस्तित्ववादी विचारधारा, मनुक्ख आ ब्रह्माण्ड सभ निरर्थक अछि, अबसर्ड अछि।

विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण

समानान्तर परम्पराक विद्यापति आ पाग

विद्यापतिक संस्कृत ग्रन्थमे ठक्कुर विद्यापति कृता लिखल अछि/ आ ओ विद्यापति ब्राह्मण छथि। हमर उद्देश्य मैथिली बला विद्यापतिसँ अछि... हुनका किए पाग पहिरा कऽ "हम्मर विद्यापति" बना लेल गेल... ई तखन नै भेल जखन बिदापत नाचक माध्यमसँ आठ सए बर्ख गएर ब्राह्मण समुदाय विद्यापतिकेँ जिएने रखलक, मुदा तखन भेल जखन बंगाल विद्यापतिकेँ आ गोविन्ददासकेँ अपन बना लेलक आ बंगालेक विद्वान राजकृष्ण मुखोपाध्याय सर्वप्रथम १८७५ ई.मे कहलन्हि जे विद्यापति मिथिलाक भाषाक कवि छथि आ बंगालेक नगेन्द्रनाथ गुप्त सर्वप्रथम कहलन्हि जे गोविन्ददास सेहो मिथिलाक भाषाक कवि छथि आ जखन ई तथ्य सोझाँ उठल तँ पहिने तँ सगर बंगाल हुनकापर मार-मार कऽ उठल आ बादमे मानि गेल। राजकृष्ण मुखोपाध्याय जइ विद्यापतिकेँ मिथिलाक कहने रहथि ओ पदावलीक विद्यापतिक सन्दर्भमे छल, संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुरः केँ बंगाल कहियो अपन नै कहने छल। फेर मिथिलाक विद्वानकेँ सोह एलन्हि आ विद्यापतिक संस्कृत ग्रन्थ, गोविन्ददास नाम्ना आ विद्यापति नाम्ना पञ्जीमे उपलब्ध विवरण दऽ विद्यापति ठाकुर

आ गोविन्ददास झा (!!!) निकालल गेल- रमानाथ झाक पञ्जीक सतही ज्ञान आ सीमित दृष्टिकोण नोकसान पहुँचेलक। फेर अनचोक्के पाग पहिरा कऽ विद्यापति (मैथिली बला, संस्कृत बला नै) केँ "हम्मर विद्यापति" कट्टर ब्राह्मण वर्ग द्वारा बना लेल गेल। किछु गोटे ज्योतिरीश्वरक भातिज कहि विद्यापतिकेँ सम्बोधित करऽ लगला!! ज्योतिरीश्वरक संस्कृत धूर्तसमागम नाटक आ संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक गोरक्षविजय नाटक मध्य देल मैथिली गीत सेहो पदावलीक पुरान परम्पराक द्योतक अछि आ ऐ दुनू लेखकपर मैथिली पदावलीक प्रभाव देखबैत अछि। संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति मुस्लिम आक्रमणक, जनौ आ मन्दिर भ्रष्ट हेबापर दुखी अछि मुदा पदावली तँ सर्वहाराक हर्ष, उल्लास आ संघर्ष अछि; ओइ तरहक हाक्रोस ओतऽ नै, कारण हुनका समएमे तँ मुस्लिम मिथिलामे रहबे नै करथि।
मुदा कवीश्वर ज्योतिरीश्वर आ आर बहुत रास कवि पञ्जीमे उपलब्ध छथि। आ जे नामक अन्तर विद्यापतिमे आबि जाइ छन्हि (जखन कि सभ काज प्लानिंगसँ भेलै तैयो एकटा सबूत बचि गेलै) से ज्योतिरीश्वरमे किए नै अबैए।

बंगाल किए जाइ छी, पूर्णियाँमे ग्रामदेवताक पूजामे हम गेल छी आ राम ठाकुर (भगवान)केँ देवता रूपमे ढेपाबला खेतमे हम देखने छी, कियो जोति देने रहै।

मिथिलासँ छत्तीसगढ़ मध्य प्रदेशमे गेल रहथि- मध्य प्रदेशसँ राज्यसभा सांसद प्रभात झा कहि रहल छला, जे बरही (काष्ठकार) मिथिलासँ गेला तँ मैथिली भाषी हेबाक कारण लोक हुनका झाजी

कहऽ लागल, आ ओ सभ आब झा टाइटिल रखै छथि, प्रभात झा कैंपेनिंग कऽ देलखिन्ह आ एक वोटसँ केण्डीडेट जीति गेलै। बंगालक मालदह जिलामे ४-५ गाममे मैथिल ब्राह्मणक टाइटिल ओझा छै, आ अलीगढ़मे मैथिल ब्राह्मण (ब्रजस्थ मैथिल)क शर्मा।

पञ्जीमे कतेक विद्यापतिक विवरण उपलब्ध अछि: १.पनिचोभ सँ विद्यापतिसुत रमापतिक विवाह विद्यापतिक- माता(देवदासी)-दूषण पंजी २.महो केशवो सुत म.म.पा० गोविन्द सुता महो लक्ष्मीनाथ म.म. विद्यापति म.म. दामोदर ३.महामहो विद्यापति गंगोली सँ मानकुढ़ वासी कविराज गणेश्वर ४.घोसोतसँ म.म. गोविन्द सुता म. लक्ष्मीधर म.म. विद्यापति ५.राजपण्डित म.म. उ. विद्यापति ६.करमहासँ देवनाथ सुत कवि विद्यापति ७.गुणपति सन्तति-पठोङगी)।। विद्यापति-पुडरीक-मछदी। केशव-अमरावती।८.।। सिंहाश्रम सँविद्यापति द्यौ० भागीरथ सुतौ कुलेश्वर: ९.सिधूक: ए सुता देल्हन विश्वनाथ श्रीनाथा: सिंहाश्रम सँ विद्यापति दौ।। १०.मिश्र जयदेव (७६/०६) सुता नगवाड़ घोसोत सँ महामहोपाध्याय विद्यापति दौ ११.महामहोपाध्याय गोविन्द सुता महामहो लक्ष्मीनाथा परनामक (२०९/०५) ठकरू म० म० उपा० विद्यापति १२.द्यौ०।। एवम् ठ० विद्यापति मातृक चक्रं।।१३.महोमहोपाध्याय विद्यापति सुता अनिरूद्ध अनन्त अच्युता: एकहरा सँ काशी दौ १४.सदु०सुपे सुतौ दामोदर: ए सुतौ डालूक: पवौलीसँ गोढि दौ डालू (३४/०६) सुतो विद्यापति १५.सुता शिरू पदम लाखू गादूका: एकहरा सँ श्री कर सुत चान्द दौ खौआल सँ भूले द्यौ० मधुसूदन सुता उमापति (८४/०१) विद्यापति १६.मुसै सुता खौआल सँ डालू सुत विद्यापति दौ भण्डारिसम सँ शुभे द्यौ० ठ० १७.सोदरपुर सँ छोटाई दौ (२८/०८) बसाउन सुता पशुपति विद्यापति १८.कल्याण सुता करमहा सँ विद्यापति दौ

१९.जालय सँ रामेश्वरसुत महिघर दौ यमुगाम सँ गेणाई द्वौ० विद्यापति सुतो भगीरथ: २०.हरखू गोविन्दा सक० गुणे सुत विद्यापति दौ सुरगन सँ होरे द्वौ० २१.कृष्णपति सुता मुरारि विद्यापति प्रजापति टकबाल सँ रामकर दौ।।२२.कविन्द्र पदांकित म० म० उ० रघुनाथा करमहा सँ विद्यापति दौ २३.सुतो विद्यापति माण्डरसँ यग्यपति दौ २४.तल्हनपुर सँ गढ़वय द्वौ. विद्यापति २५.यशु सुतो रविपति रूद्रपति विद्यापति चन्द्रपति २६.नरउन सँ विद्यापति दौ २७.रविपति सुतो कृष्णपति विद्यापति घुसौत सँ होरे दौ।। २८.विद्यापति सुता बेलउँच सँराम दौ २९.गुणे सुत गौरीपति विद्यापति लक्ष्मीपति कुलपतिय: दरि० दिवाकर दौ ३०.महिपति झाक मातामह कवि कोकिल विद्यापति ठाकर) दामोदर सुतो पाँसदु. हरिदेव: नरउनसँ माङनि दौ ३१.गणपति सुतो कवि कोकिल राजपण्डित म० म० उपा० विद्यापति: ए सुतौ हरिपति धनपति।। ३२.महामहोपाध्याय विद्यापतिसुता हृषिकेश ३३.हरपति सुता विद्यापति काशी दामोदरा:३४.रतिपति सुता सोदर० विद्यापति दौ ३५.विद्यापति प्रपौत्र पौत्र हरिश्वर धनेश्वर सुतो गोन्दूक पालीसँ ज्ञानदौ।।३६.विद्यापति द्वौ. वेणी सुतो रविनाथ: ३७.सोदर० विद्यापति द्वौ० निकार ३८.श्रीपति सुतो विद्यापति परानौ दरिहरा ३९.सोदर० विद्यापति द्वौ० मिश्र कमलनयन सुता हरिअम सँ बछाई दौ ४०.रवौआलसँ सोने दौ देवनाथ सुतो कवि विद्यापति पचही सोदरपुरसँ जगन्नाथ दौ ४१.गोपी सुतो विद्यापति वाचस्पति शीवा हरिअमसँ नारायण दौ।।४२.विद्यापति निधि प्र. धरापतिय: ४३.तरौनी करमहासँ महिधर दौ।।(४६/०३) विद्यापति (१११/०३) सुतो मधुसूदन: ४४.कुलानन्द हृदयनन्दनो कर. पनाई दौ (१०९//१०६) विद्यापति (३१४/०५) सुता प्रितिनाथ शोभनाथ

महिनाथा: ४५.उँमापति सुत विद्यापति सुतो जयपति: ४६.जागू सुता सुरपति हरिपति प्रभापति गिरपति विद्यापतिय: ४७.हचलू सुता हरपति विद्यापति महो ज्ञानपति दिनपति मणिकंठा ४८.कृष्ण सुता रमापति श्रीपति रत्नपति विद्यापति: बूधवाल सँ धीरू दौ।।४९.दाशे सुता दयोरी खण्डबला सँ गोपीनाथ दौ (८५//०२) विद्यापति सुत जीवनाथ ५०.नरउन सँ विद्यापति द्वौ० ५१.धर्माधिक रणिक बाटू सुतो विद्यापति ५२.सोदरपुर सँ गयन दौ विद्यापति सुता रमापति होरिल हररवू जिवाईका माण्डर सँ सोढू दौ।। ५३.खौआल सँ रघुनाथ दौ (५४//०७) विद्यापति सुत जानू ५४.टकबालसँ विद्यापति द्वौ मतिनाथ ५५.खण्डबलासँ विद्यापति सुत जीवनाथ दौ ५६.करमहा सँ विद्यापति द्वौ० विश्वनाथ ५७.कृष्णपति सुतो उँमापति (ब० २८/०१) विद्यापति (३०२/०३) पण्डुआ सँ पाँ भगीरथ दौ ५८.महो हरिकृष्ण सुता खौआल सँ विद्यापति दौ ५९.मधुसूदन सुतो विद्यापति: अलय सँ अनिरूद्ध दौ ६०.माण्डर सँ देवशर्म्म द्वौ० विद्यापति सुता नरउन सँ बदनी दौ ६१.ठ० श्याम सुतो पुरन्दर परमानन्दो माण्डर सँ विद्यापति दौ ६२.विद्यापति सुता सोदरपुर सँ जयराम ६३.धर्मेश्वरौ खौआल सँ हराई सुत मनोहर दौ रूद सुतो राम: गंगोली सँ देवे दौ विस्फी सँ कवि कोकिल राज पण्डित म० म० पा० विद्यापति द्वौ० राम सुतो भिरवूक: फनन्दह सँ लोचन दौ पकलिया सँ दिनू द्वौ० भिरवू सुतो हराइक: सोदरपुर सँ विर सुत हरिदौ खौआल सँ शुभे द्वौ० हराई सुता मोहन मनोहरा कमल नारायणा: सोदरपुर सँ जगन्नाथ सुत भवानी दौ भवानी सुतो हरिदेव सदायकौ हरिअम सँ गोविन्द सुत श्रीधर दौ सक० जागे द्वौ० मनोहर सुता करमहा सँ रतनपति सुत कृष्णदाश दौ कृष्णदाश सुता सोदरपुर सँ मधुसूदन सुत सुन्दर दौ (४७//०५) दरिहरा सँ मुशाई द्वौ० हरि सुतो प्राणपति: सोदरपुर सँ नारायण सुत ननू दौ (११०//०१) (१०१//०१) नारायण सुतो

ननूक: वुधवाल सँ बहुड़ी दौ (१८०/०४) दामोदर सुतो बहुड़ीक: सोदरपुर सँ परमानन्द सुत कांगव दौ परमानन्द सुतो कांगव: माण्डर सँ हलघर सुत पीताम्बर दौ (५८//०५) करमहा सँ श्रीराम द्वौ० कांगव सुता करमहा सँ शिवदेव सुत कारम दौ माण्डर सँ वावू दौहित्र दौ० ६४. वावू दुर्गापति सिंह: सुतो वावू विद्यापति सिंह: करमहा सँ हरिनाथ सुत तारानाथ दौ ६५. खौआल सँ युवराज द्वौ० बावू विद्यापति सिंह सुतो वावू गिरिजापति सिंह ६६.वावू गंगापति सिंह सुता भेषपति सिंह विद्यापति सिंह ६७.वावू भेषपति सिंह पत्नी अन्तर्जातीय ए सुत हंसपति सिंह: वावू विद्यापति सिंह सुतो रमन कुमार सिंह:६८.बाला सुतो भैया कल्याणौ खौआल सँ विद्यापति दौ ६९.विश्वनाथ काशीनाथा: अलय सँ विद्यापति दौ ७०.पाठक विद्यापति सुतो दुखमंजन कलरौ आसी एकहरा सँ उँमानन्द दौ ७१.नरपति सुता कल्याणपुर विस्फी सँ सुन्दर दौ कमलनयन सुत नारायण सुतो सुन्दर: करमहा सँ विद्यापति दौ ७२.मुरारि सुता दामोदर विद्यापति महिघर आनन्दा:७३.विद्यापति सुता पद्मापति सभापति आदिपति गणपतिय:।। ७४.विद्यापति सुतो छीतू परमानन्दो माण्डर सँ नरपति दौ बहेराढ़ी सँ गदाधर द्वौ० ७५.अलय सँ कमल सुत नकटू दौ. विद्यापति सुत जीवनाथ सुतो परम: दरि. राम दौ।। ७६.करमहा सँ विद्यापति सुत मधुसूदन दौ ७७.मानी सोदरपुर सँ वाचस्पति सुत विद्यापति दौ ७८.खण्डबला सँ वावू दुर्गापति सिंह सुत वावू विद्यापति सिंह दौ ७९.खौआल सँ विद्यापति दौ ठ. मधुरापति सुतो वाछ शिवानन्दनो८०.सोदरपुर सँ बैद्यनाथ द्वौ. हरिकृष्ण सुता खौआल सँ मधुसूदनसुत विद्यापति दौ ८१.मधुसूदन सुत विद्यापति दौ ८२.दरिहरा सँ रमापति सुत वेणी दौ अलय सँ कृष्णपति सुत विद्यापति द्वौ ८३.अलय सँ विद्यापति द्वौ.॥ ८४.ज्यो.

शिवनन्दन सुतो विद्यापति . ८५.खौआल सँ भवदेव सुत विद्यापति दौ. ८६.पाठक कृष्णपति सुतो उषापति विद्यापति . ८७.विद्यापति सुतो दुखभंजन कलरो एकहरा सँ देवानन्द सुत उँमानन्द दौ ८८.अलय सँ विद्यापति सुत कलरु दौ ८९.कारु सुता पिताम्बर विद्यापति देवकीमाना का सोदरपुर सँ वैदयनाथ सुत जयि दौ ९०.सुरोइ प्र. शारदानन्द सुता गौरीनन्दन वाचस्पति प्र. विद्यापति दिवाकर प्र. मन्दू रत्नाकर प्र.भ्र. भोलन जी का नग. घुसौत सँ दामोदर सुत उग्रमोहन दौ एकहरा सँ शोभानन्द द्यौ.९१.खौआल सँ विद्यापति दौ.

आब आउ मूल मुद्दापर।

हमरा राजपण्डित आ आर कतेक रास धर्माधिकारणिक विद्यापति सभ जैमे एकटा देवदासीक पुत्र सेहो रहथि, केर ब्राह्मण हेबामे कोनो सन्देह नै अछि। हम विद्यापति ठक्कुरः आ कीर्तिलता कीर्तिपताका नै वरन विद्यापति पदावलीक गप कऽ रहल छी। तेँ कोनो ओझरीमे नै रहल जाए। आब आउ गएर ब्राह्मण द्वारा गाओल बिदापत, जे ज्योतिरीश्वरसँ पूर्व (सम्भवतः) हजाम जातिमे भेल रहथि आ तकर प्रमाण ज्योतिरीश्वर द्वारा वर्णन रत्नाकरमे ऐ कवि आ ओकर कृतिक चर्चाक संग अछि।

महादेव मूलतः गएर ब्राह्मणक देवता रहथि, आस्ते-आस्ते ओ ब्राह्मण लोकनि द्वारा अपनाओल गेलाह। विद्यापतिक कोनो पदावलीक रचनामे हुनकर संस्कृत/ अवहट्ठ लेखक हेबाक चर्च नै अछि। मुदा हुनकर रचना (संस्कृत आ अवहट्ठक इतर, जे दोसर विद्यापतिक रचना छी, जे ब्राह्मण रहथि) सर्वहाराक लेल जे दर्द अछि से संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापतिमे किए नै अछि? उदाहरण देखू।

विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर

भोजपुरीक साहित्य मैथिलीसँ कम समृद्ध अछि मुदा से अछि मात्र परिमाणमे, गुणवत्ताक दृष्टिमे ई कतेक क्षेत्रमे आगाँ अछि। भोजपुरीक भिखारी ठाकुरक बिदेसियाक सन्दर्भमे हम ई कहि रहल छी। भिखारी ठाकुर कलकत्तामे प्रवासी रहथि, घुरि कऽ एला आ भोजपुर क्षेत्रमे अपन कष्टक वर्णन जइ मर्मस्पर्शी रूपसँ गामे-गामे घुमि कऽ आ गाबि कऽ सुनेलन्हि से बनल बिदेसिया नाटक। मिथिलामे प्रवास आजुक घटना छी, गामक-गाम सुन्न भऽ गेल अछि। मिथिलाक बिदेसिया लोकनि देशक कोन-कोनमे पसरि गेल छथि। मुदा पहिने भोजपुर इलाका जकाँ प्रवासक घटना मिथिलामे नै छल। प्रवास मोरंग धरि सीमित छल जे नेपालक मिथिलांचल क्षेत्र अछि। आ तइसँ मैथिलीमे लोकगाथाक सूक्ष्म विवरणक बड़ अभाव, जे अछियो से लोकगाथा नायकक विवरण नै वरन महाकाव्यक नायकक मैथिलीमे विवरण जकाँ अछि, आ क्लिष्ट अछि, भिखारी ठाकुरक बिदेसियाक जोड़ नै। सलहेसक कथाक विवरण लिअ, क्षेत्रीय परिधि पार करिते सलहेस राजासँ चोर बनि जाइ छथि आ चोरसँ राजा। तहिना चूहड़मल क्षेत्रीय परिधि पार करिते जतऽ सलहेस राजा बनै छथि ओतऽ चोर बनि जाइ छथि, आ जतऽ सलहेस चोर कहल जाइ छथि ओतुक्का राजा/ शक्तिशालीक रूपेँ जानल जाइ छथि। मुदा ऐ सभपर कोनो शोध नै भऽ सकल अछि। ऐ क्रममे विद्यापतिक पदावलीक पद सभमे तकैत हमरा समक्ष विभिन्न प्रकारक गीत सभ सोझाँमे आएल। ऐमे जे अधिकांश छल से रहए प्रेमी-प्रेमिकाक विरहक विवरण आ

बिदेसियाक जे मूल कनसेप्ट अछि- रोजी-रोटी आ आजीविका लेल मोन-मारि कऽ प्रवास, तइसँ फराक। तखन जा कऽ हमरा किछु विशुद्ध बिदेसिया, जकरा विद्यापति पिआ-देसाँतर कहै छथि, भेटल। ऐमे स्वाभाविक रूपेँ अधिकांश विद्यापतिक नेपाल पदावलीसँ भेटल आ एकटा नगेन्द्रनाथ गुप्तक संग्रीहीत पदावलीसँ। मोरंग नेपाल स्थित मिथिलाक भाग अछि आ प्रवास लेल प्रसिद्ध छल, से तकर सम्भावित कारण।

धनछी रागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-
हम जुवती, पति गेलाह बिदेस। लग नहि बसए पड़उसिहु लेस।
हम युवती छी आ हमर पति बिदेस गेल छथि। लगमे पड़ोसीक कोनो अवशेष नै अछि।

सासु ननन्द किछुआओ नहि जान। आँखि रतौन्धी, सुनए न कान।
सास आ ननदि सेहो किछु नै बुझै छथि। हुनकर सभक आँखिमे रतौँधी छन्हि आ ओ सभ कानसँ सेहो किछु नै सुनै छथि।

जागह पथिक, जाह जनु भोर। राति अन्धार, गाम बड़ चोर।
हे पथिक! निन्नकेँ त्यागू। काल्हि भोरमे नै आउ। अन्हरिया राति अछि आ गाममे बड़ड चोर सभ अछि।

सपनेहु भाओर न देअ कोटबार। पओलेहु लोते न करए बिचार।
कोतबाल स्वपनोमे पहरा नै दैए आ नोत देलोपर विचार नै करैए।

नृप इथि काहु करथि नहि साति।पुरख महत सब हमर सजाति॥
तइ द्वारे राजा ककरो दण्ड नै दै छथि आ सभटा पैघ लोक एके रंगक छथि।

विद्यापति कवि एह रस गाब। उकुतिहि भाव जनाब।
विद्यापति कवि ई रस गबै छथि। उकतीसँ भाव जना रहली अछि।

मालवरागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-
बड़ि जुड़ि एहि तरुक छाहरि, ठामे ठामे बस गाम।
ऐ गाछक छाह बड़ड शीतल अछि। ठामे-ठाम गाम बसल अछि।

हम एकसरि, पिआ देसाँतर, नहि दुरजन नाम।
हम असगरि छी, प्रिय परदेसमे छथि, कतहु दुर्जनक नाम नै अछि।

पथिक हे, एथा लेह बिसराम।
हे पथिक! एतऽ विश्राम करू।

जत बेसाहब किछु न महघ, सबे मिल एहि ठाम।
जे किछु कीनब, किछुओ महग नै। सभ किछु एतऽ भेटत।

सासु नहि घर, पर परिजन ननन्द सहजे भोरि।
घरमे सासु नै छथि, परिजन दूरमे छथि आ ननदि स्वभावसँ सरल छथि।

एतहु पथिक विमुख जाएब तबे अनाइति मोरि।
एतेक रहितो जे अहाँ विमुख भऽ जाएब तँ आब हमर सक्क नै अछि।

भन विद्यापति सुन तञे जुवती जे पुर परक आस।
विद्यापति कहै छथि- हे युवती! सुनू जे अहाँ दोसराक आस पूर करै छी।

धनछीरागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-
परतह परदेस, परहिक आस। विमुख न करिअ, अबस दिस बास।
परदेसमे नित्य दोसराक आस रहैत अछि। से ककरो विमुख नै करबाक चाही। अवश्य वास देबाक चाही।

एतहि जानिअ सखि पिअतम-कथा।
हे सखी ! प्रियतम लेल एतबी कथा बुझू।

भल मन्द नन्दन हे मने अनुमानि। पथिककेँ न बोलिअ टूटलि बानि।
हे ननदि! मोनमे नीक-अधलाहक अनुमान कऽ पथिककेँ टूटल गप नै बाजू।

चरन-पखारन, आसन-दान। मधुरहु वचने करिअ समधान।चरण पखारू, आसन दियौ आ मधुर वचन कहि सान्त्वना दियन्हु।

ए सखि अनुचित एते दुर जाए। आओर करिअ जत अधिक बड़ाइ।
हे सखी, पथिक एतऽसँ दूर जाएत से अनुचित से ओकर आर बड़ाइ करू।

कोलाररागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-
हम एकसरि, पिअतम नहि गाम। तेँ मोहि तरतम देइते ठाम।
हम एकसरि छी आ प्रियतम गाममे नै छथि। तइ द्वारे राति बितबऽ लेल कहबामे हमरा तारतम्य भऽ रहल अछि।

अनतहु कतहु देअइतहुँ बास। दोसर न देखिअ पड़ओसिओ पास।
यदि कियो लगमे रहितथि तँ दोसर ठाम कतौ बास देखा दैतौं।

छमह हे पथिक, करिअ हमे काह। बास नगर भमि अनतह चाह।
हे पथिक क्षमा करू आ जाउ आ नगरमे कतौ बास ताकू।

आँतर पाँतर, साँझक बेरि। परदेस बसिअ अनाइति हेरि।
बीचमे प्रान्तर अछि, सन्ध्याक समय अछि आ परदेसमे भविष्यकेँ सोचैत काज करबाक चाही।

मोरा मन हे खनहि खन भाँग। जौवन गोपब कत मनसिज जाग।चल चल पथिक करिअ प... काह। वास नगर भमि अनतहु

चाह।सात पच घर तन्हि सजि देल। पिआ देसान्तर आन्तर भेल।बारह वर्ष अवधि कए गेल। चारि वर्ष तन्हि गेला भेल।

घोर पयोधर जामिनि भेद। जे करतब ता करह परिछेद।
भयाओन मेघ अछि, रतुका गप छी सोचि कऽ निर्णय करू।

भनइ विद्यापति नागरि-रीति। व्याज-वचने उपजाब पिरीति।
विद्यापति कहै छथि, ई नगरक रीति अछि जे कटु वचनसँ प्रीति अनैए।

घनछीरागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-
उचित बसए मोर मनमथ चोर। चेरिआ बुढ़िआ करए अगोर।
कामदेव रूपी चोरक लेल हमर अवस्था ठीक अछि। बुढ़िया चेरी पहरा दऽ रहल छथि।

बारह बरख अवधि कए गेल। चारि बरख तन्हि गेलाँ भेल।
बारहम बरखक रही, तखन ओ गेला आ आब चारि बर्ख तकर भऽ गेल।

बास चाहैत होअ पथिकहु लाज। सासु ननन्द नहि अछए समाज।
सास आ ननदि कियो संग नै छथि आ पथिक सेहो डेरा देबासँ लजाइ छथि।

सात पाँच घर तन्हि सजि देल। पिआ देसाँतर आँतर भेल।

ओ कामदेव लेल घर सजा कऽ देशान्तर चलि गेला आ हमरा सभक बीचमे अन्तर आबि गेल।

पड़ेओस वास जोएनसत भेल। थाने थाने अवयव सबे गेल।
पड़ोसक बास जेना सय योजनक भऽ गेल, सभ सर-सम्बन्धी जतऽ ततऽ चलि गेला।

नुकाबिअ तिमिरक सान्धि। पड़उसिनि देअए फड़की बान्धि।
लोकक समूह अन्हारमे विलीन भऽ गेल, पड़ोसिन फाटकि बन्न कऽ लेलन्हि।

मोरा मन हे खनहि खन भाग। गमन गोपब कत मनमथ जाग।
हमर मोन क्षण-क्षण भागि रहल अछि। कामदेव जागि रहल छथि गमनकेँ कतेक काल धरि नुकाएब।

धनछीरागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-
अपना मन्दिर बैसलि अछलिहुँ, घर नहि दोसर केवा।
अपन घरमे बैसल छलौं, घरमे कियो दोसर नै छल।

तहिखने पहिआ पाहोन आएल बरिसए लागल देवा।
तखने पथिक अतिथि अएलाह आ बरखा लाधि देलक।

के जान कि बोलति पिसुन पड़ौसिनि वचनक भेल अवकासे।की

बजतीह ईर्ष्यालु पड़ोसिन से नहि जानि, बजबाक अवसर जे भेटि गेलन्हि।

घोर अन्धार, निरन्तर धारा दिवसहि रजनी भाने।
दिननेमे रात्रि जकाँ हेबऽ लागल।

कञोने कहब हमे, के पतिअएत, जगत विदित पँचबाने।
हम ककरा कहब आ के पतियायत। कारण कामदेवक ख्याति तँ जगत भरिमे अछि।

नगेन्द्रनाथ गुप्त सम्पादित पदावली-
सासु जरातुरि भेली। ननन्दि अछलि सेहो सासुर गेली।
सासु चलि बसलीह, ननदि सेहो सासुर गेली

तैसन न देखिअ कोई। रयनि जगाए सम्भासन होई
कियो नै सम्भाषणक लेल पर्यन्त।

एहि पुर एहे बेबहारे। काहुक केओ नहि करए पुछारे।
एतुका एहन बेबहार, ककरो कियो पुछारी नै करैए।

मोरि पिअतमकाँ कहबा। हमे एकसरि धनि कत दिन रहबा।
हमर पिअतमकेँ कहब, हम असगरे कतेक दिन रहब।

पथिक, कहब मोर कन्ता। हम सनि रमनि न तेज रसमन्ता।
पथिक हुनका कहबन्हि, हमरा सन रमणिक रसक तेज कखन धरि रहत।

भनइ विद्यापति गाबे। भमि-भमि विरहिनि पथुक बुझाबे।
विद्यापति गबै छथि, विरहनि घूमि-घूमि कऽ पथिककेँ कहि रहल छथि।
की ई दर्द अवहट्ठ आ संस्कृतक विद्यापतिमे छन्हि? पदावली एकटा पैरेलल संस्कृतिक द्योतक अछि।
एक्के समयमे संस्कृत आ अवहट्ठ एक्के लेखक लिख लेत, ओकरा कष्ट छै जे अवहट्ठमे लिखलापर विद्वान ओकर उपहास करै छथि, मुदा ऐ दर्दक लेशोमात्र पदावलीक विद्यापतिमे नै छन्हि। ओतऽ तँ उल्लास आ दर्द छै, सर्वहाराक उल्लास आ दर्द। ओ विद्यापति जे संस्कृत आ अवहट्ठमे लिखलन्हि, ओ राजपण्डित छला, से विद्वान रहथि, हुनका अवहट्ठोमे लिखलापर लोक निन्दा करन्हि। मुदा मैथिलीक विद्यापति जे पैरेलल परम्पराक अंग छथि, ओइसँ दूर छला। ई पैरेलल परम्परा ऋगवेदक समयसँ छै (ओइ समयमे नाराशंसी रहै)। ई पैरेलल परम्पराक विद्यापति हजाम जातिक रहबे करथि, वा ब्राह्मण जातिक रहबे करथि, से इतिहास ओइपर मौन अछि। मुदा लोककथा आ परम्परा, बिदापतक सर्वहारासँ सघन सम्बन्ध आ बिस्फीक परम्परा हुनका गएर ब्राह्मण सिद्ध करैए। संस्कृत आ अवहट्ठक कोनो पाँति नहिये ओइ विद्यापतिक पदावलीक चर्चा करैए; आ नहिये पदावली पदावलीक विद्यापतिक संस्कृत वा अवहट्ठ रचनाक चर्चा करैए। संस्कृत आ अवहट्ठ मुस्लिम आक्रमणपर, जनौ आ मन्दिर भ्रष्ट हेबापर दुखी अछि, मुदा पदावली तँ सर्वहाराक हर्ष, उल्लास आ संघर्ष अछि; ओइ तरहक हाक्रोस ओतए नै। आ जखन मैथिलीबला विद्यापति ब्राह्मण रहबो करथि वा नै तहीपर सवाल अछि तखन पाग पहिरा कऽ कोन सोच हम सभ

उत्पन्न कऽ रहल छी, "विद्यापति" हम्मर छला आकि नै? की विद्यापतिक ब्राह्मण नै रहलासँ ओ हमर नै हेता? की हुनकर "पिआ देशांतर" बला, माइग्रेशन बला गीत महत्वहीन भऽ जेतै? की हुनकर शृंगारिक गीतक मात्र चर्चा कोनो षड़यंत्र तँ नै? विद्यापति सन कविकेँ पाग पहिरा कऽ जातिगत बन्धनमे बान्हब कतेक सही अछि? "मध्यकालीन मिथिला"मे विजय कुमार ठाकुर लिखै छथि: "मिथिलाक धार्मिक क्षेत्रमे एहि सामन्तवादी युगीन धार्मिक विचारधाराक प्रभाव एहन सर्वव्यापी छल जे एखनहुँ एहि परम्पराक निम्नलिखित अवशेष समाजमे विद्यमान अछि: ...(घ) पाग सेहो तांत्रिक विचारधारासँ सम्बद्ध अछि।" (पृ.२६) तँ ईहो तंत्र मंत्र बियाह उपनयन धरि ने रहऽ दियौ। किए ओइ पैरेलल परम्पराक विद्यापतिकेँ ओइमे सानै छियन्हि। जँ ओ हजाम जातिक रहथि तैयो आ जँ ब्राह्मण रहथि तँ आरो *(कारण २१म शताब्दीक ब्राह्मणक कट्टरता तँ देखिये रहल छी आ ई हजार साल पुराण ब्राह्मण जँ पैरेलल परम्पराक रहथि तँ पागरूपी सामन्तवादी अवशेष तांत्रिक धार्मिक कर्ममे मात्र प्रयुक्त हुअए, विद्यापतिक माथपर नै)।*



महाकवि विद्यापति

(चित्र: पनकलाल मंडल) -पनक लाल मण्डलकेँ विदेह सम्मान -चित्रकला लेल -भेटल छन्हि।)

महाकवि विद्यापति

कवीश्वर ज्योतिरीश्वर (लगभग १२७५-१३५०)सँ पूर्व (कारण ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थमे हिनक चर्च अछि), मैथिलीक आदि कवि। संस्कृत आ अवहट्टक विद्यापति ठक्कुरःसँ भिन्न। सम्भवतः बिस्फी गामक हजाम जातिक श्री महेश ठाकुरक पुत्र।

समानान्तर परम्पराक बिदापत नाचमे विद्यापति पदावलीक (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय होइत अछि।

विद्यापति ठक्कुरः 

(चित्र: मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कोलकाता। ई संस्था ऐ चित्रक चित्रकारक नाम अखन धरि गुप्त रखने अछि। ओइ समयमे ने मिथिलामे पाग रहै आ नहिये भयावह मोंछ आ क्लीन सेव दाढ़ी केर परम्परा रहै।)

विद्यापति ठक्कुरः 1350-1435 विषएवार बिस्फी-काश्यप (राजा शिवसिंहक दरबारी) आ संस्कृत आ अवहट्ट लेखक। कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, गोरक्षविजय, लिखनावली आदि ग्रंथ समेत विपुल संख्यामे कालजयी रचना। ई मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व)सँ भिन्न छथि।

बोधि कायस्थ

विद्यापति ठक्कुरः क पुरुष परीक्षामे हिनक गंगालाभक कथा वर्णित अछि। महाकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व मैथिली पदावली सभक लेखक) क विषयमे सेहो गंगालाभक ई कथा प्रचलित आ बादमे

विद्यापति ठक्कुरक (संस्कृत आ अवहट्टक लेखक)विषयमे सेहो गंगालाभक ई कथा प्रचलित भेल।

उगना महादेव

महादेव (उगनारूपी) विद्यापतिक ऐठाम गीत सुनबा लेल उगना नोकर बनि रहै छला। मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व) आ विद्यापति ठक्कुरः (संस्कृत आ अवहट्टक लेखक आ राजा शिवसिंहक दरबारी) दुनूसँ सम्बद्ध कऽ उगनाक ई कथा प्रसिद्ध भेल।

विद्यापतिक मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा यज्ञोपवीत संस्कार आ पाग-प्रतिष्ठापन

संस्कृत आ अवहट्ट बला विद्यापति ठक्कुरः आ कविकोकिल विद्यापतिक बीचक अन्तर "मिथिला सांस्कृतिक परिषद" आ ओइसँ जुड़ल "किशोरीकान्त मिश्र" आदि नै बुझि सकला वा नै बूझऽ चाहलन्हि। ऐतिहासिक लिखित तथ्य अछि जे गोनू झा १०५०-११५० मे भेला मुदा उषा किरण खान संस्कृत आ अवहट्टबला विद्यापतिसँ हुनकर शास्त्रार्थ करबै छथि (हिन्दीक ऐतिहासिक उपन्यास सिरजनहार, भारतीय ज्ञानपीठसँ प्रकाशितमे)। वीरेन्द्र झा कहै छथि जे गोनू झा ५०० साल पहिने भेला आ तारानन्द वियोगी गोनू झा कँ ३०० साल पहिने भेल मानै छथि (दुनू गोटेक हिन्दीमे प्रकाशित गोनू झापर पोथी, क्रमसँ राजकमल प्रकाशन आ नेशनल बुक ट्रस्टसँ प्रकाशित), तँ विभा रानीक गोनू झापर हिन्दी पोथी (वाणी प्रकाशन) मे कुणाल गोनू झाकँ भव सिंहक राज्यमे (१४म शताब्दी) भेल मानै छथि। जखन पंजीमे उपलब्ध लिखित

अभिलेखन गोनू झाकेँ संस्कृत आ अवहट्टबला विद्यापतिसँ दस पीढ़ी पहिने अभिलेखित करैए, तखन ई हाल अछि।

आ रामलोचन ठाकुर अही प्रतिक्रियावादी "किशोरीकान्त मिश्र"क मंचसँ मंच सापेक्ष बयान देलन्हि (मैथिलीमे एक लेखकक उपन्यासक संख्याक सम्बन्धमे) जकर कोनो ऐतिहासिक महत्व नै छै। चेतना समितिक पत्रिकामे मानेश्वर मनुज सेहो मंच सापेक्ष बयानमे जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासक संख्या मात्र ४ लिखलन्हि!!!

जगदीश प्रसाद मण्डलक नाममे जँ मण्डल टाइटिल नै रहैत मात्र जगदीश प्रसाद रहैत तँ रमानाथ झाक अनुयायी हुनका श्रोत्रिय, अमर-रामदेव झाक अनुयायी हुनका ब्राह्मण आ "लालदासक स्मारिका"क लेखक वर्मा जी हुनका कायस्थ घोषित कऽ दैतथि।

आ जँ जगदीश प्रसाद मण्डलक फोटो उपलब्ध नै रहितै तँ किशोरीकान्त मिश्रक प्रतिक्रियावादी मिथिला सांस्कृतिक परिषद जगदीश प्रसाद मण्डलक यज्ञोपवीत संस्कार कऽ हुनका पाग पहिरा फेर वएह कुकृत्य करितए जे ओ विद्यापतिक संग एक हजार सालक बाद केलक। आ बेरमाक कोनो बुढ़बा माटिक ढिमकाकेँ देखबैत जगदीश प्रसाद "झा/ ठक्कुरः" केर काल्पनिक घराड़ी, यएह छी, घोषित कऽ दितए।

मलंगियाक बेटा, रामदेव झाक बेटा आ ढेर रास छद्मनामीक देल गारि सेहो विदेहमे बिना काँट-छाँटक छपल अछि, जे लोक पढ़ि सकए, किछु गारि जे नै छापल जा सकैए, सएह टा नै छपने छी। आ गारिक डरसँ अखन धरिक मैथिली आ मिथिलाक इतिहासकार ऐ विषयपर इशारा तँ केलन्हि मुदा आगाँ नै बढ़ला।

ओ ज्योतिरीश्वर(१२७५-१३५०) पूर्व विद्यापतिये रहथि से फेर सिद्ध होइए कारण जयदेव (लगभग १२००)क गीत-नृत्य, आ किरतनियाँ, ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिक पदावलीसँ मेल खाइत अछि, संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक काव्य सौष्ठवसँ मेल नै खाइत अछि।

आब पुनः आबी मिथिला सांस्कृतिक परिषदक मंच जतएसँ रामलोचन ठाकुर मंच सापेक्ष बयान देलन्हि। ई परिषद विद्यापतिक यज्ञोपवीत संस्कार नै, मैथिलीक यज्ञोपवीत संस्कार केलक। ओकर विद्यापतिकेँ पहिराओल पाग कोलकातासँ बिन्ध्येश्वर मण्डल आ श्रीकान्त मण्डलकेँ लुप्त कऽ देलक आ मैथिलीक यज्ञोपवीत संस्कार पूर्ण भऽ गेल।

संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक जातिगत कट्टरताक बानगी देखी:-

कीर्तिलता- जाति-अजातिक विवाह अधम कएँ पारक।

पुरुष-परीक्षामे विद्यापति कथा कहैत-कहैत लेखकीय वक्तव्य दै छथि कि राजपूतक स्त्री चरित्रहीन होइत अछि, ई ओहिना भेल जेना अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीकृतिक कियो हाथ पकड़ि लऽ जा सकैए, बला वक्तव्य। संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति जाति-अजातिपर विशेष बल दै छथि, रक्त शुद्धता/ जाति हुनका लेल महत्वपूर्ण छन्हि। संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति कहै छथि- अकुलीन कोनो दयाक अधिकारी नै अछि!! आ सौन्दर्य मात्र धनिक आ विशिष्ट वर्गक एकाधिकार अछि!! संस्कृत आ अवहट्ठबला (किशोरीकान्त मिश्रक मिथिला सांस्कृतिक परिषदक जनौ आ पागबला) विद्यापति कहै छथि- जाति सामाजिक जीवनमे अन्तिम

निर्धारक तत्व अछि। जे खराप कुलमे जन्म लैए ओ दुष्ट दिमागक साँप मात्र बनि सकैए!! किशोरीकान्त मिश्रक मिथिला सांस्कृतिक परिषदक जनौ आ पागबला संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति कहै छथि- ओ देश जतऽ जातिक निअम लागू नै होइए से म्लेच्छ देश थिक(Aspects of Society and Economy of Medieval Mithila)- Upendra Thakur

अमीर खुसरोसँ पहिने पागक वर्णन हमरा नै भेटल अछि।

मुदा ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति (पदावलीक लेखक) कहै छथि:- नृप इथि काहु करथि नहि साति।

पुरख महत सब हमर सजाति॥

तइ द्वारे राजा ककरो दण्ड नै दै छथि आ सभटा पैघ लोक एके रंगक छथि।

गोविन्ददासक पद्यो क्लिष्ट छलन्हि आ एकर समानान्तर परम्परा सेहो नै छल (सम्भवतः सवर्ण मध्य प्रचलनक कारण ई दुनू चीज छल), से बिदापत नाच जकाँ ओ एतुक्का माँटिमे संरक्षित नै भऽ सकल।

गंगेश उपाध्यायक तत्त्वचिन्तामणिक चर्चा तँ अछि मुदा वर्धमान जे हुनका सुकविकैरवकाननेन्दुः कहै छथि, ओ कविता सभ कतऽ गेल? पक्षधर लिखैपर प्रतिबन्ध लगेलन्हि मुदा रघुनाथ शिरोमणि आ हुनकर शिष्य उदयन आ गंगेशक कृतिकेँ रटि कऽ चलि गेला आ नवद्वीपमे नव्य-न्याय स्कूलक स्थापनाक संगे बंगालसँ विद्यार्थी एनाइ बन्द भऽ गेल।

ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति:- कश्मीरक अभिनव गुप्त (दशम शताब्दीक अन्त आ एगारहम शताब्दीक प्रारम्भ)- ग्रन्थ “ईश्वर प्रत्याभिज्ञा-विभर्षिणी” मे विद्यापतिक उल्लेख करै छथि।

श्रीधर दासक सदुक्तिकर्णामृत, - श्रीधर दास विद्यापतिक पाँच टा पद उद्धृत केने छथि जे विद्यापतिक पदावलीक भाषा छी।

“जाव न मालतो कर परगास

तावे न ताहि मधुकर विलास।”

आ

“मुन्दला मुकुल कतय मकरन्द”

(मध्यकालीन मिथिला, विजय कुमार ठाकुर)

ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) षष्ठः कल्लोल- ॥अथ विद्यावन्त वर्णना॥ ….. विदातञो आस्थान भीतर भउ. तका पछा तेलङ्गी. मरहठी. वि।दओतिनी दुइ चित्रकइ गाङ्ग जउन निहालि अइसनि देषुअह. चउआञ्चरि चीरि एकहोङ्क परिहने …….से कइसन देषु. जइसे प्रयागक्षेत्र सरस्वतीकँ गङ्गाजमुनाक सम्वाहि। का हो तइसे ता विदाञोतके दुअओ सम्वाहिका हो भउअह . दशञुन्धी राजा अवधान कराउ. विदाञोत आस्थान वइसु.

(विदाञोत (पुल्लिंग) भीतर भेल, तकर पाछाँ तेलङ्गी, मरहठी। विदओतनी (स्त्रीलिंग) दूटा रंगक गङ्गा यमुनामे नहाएलि एहन देखाइए। चारि-चारि आँचरबला चीर एकहकटा पहिरने। से केहन देखू, जेना प्रयागक्षेत्र सरस्वतीकँ गङ्गाजमुनाक संगबे तेहने ओइ

विदाञोतकेँ दुनू सम्वाहिका। दशञुन्धी राजाकेँ अवधान करेलक, विदाञोत स्थानपर बैसला।

अष्टमः कल्लोलः- ॥अथ राज्य वर्णना॥ ...विदाञोत त।न्हिक गीत. नृत्य. वाद्य. ताल. घाघर परिठरइतैँ आह...

विदाञोत लोकनिक गीत, नृत्य, वाद्य, ताल, घाघर पहीरि कऽ भेल।

विद्यापति ठक्कुरःक संस्कृत साहित्य मिथिलाक विद्वान परम्पराक लोपक बाद सोझाँ आएल, आ संस्कृत साहित्यमे विद्यापति ठक्कुरःक कोनो खास चर्च नै भेटैत अछि आ बंगालक विद्यार्थीक एनाइयो कम भऽ गेल छल, जे अबितो रहथि हुनका लेल विद्यापति ठक्कुरःक संस्कृत आ अवहट्ठ साहित्य समकालीन साहित्य छल जे खतम होइत विद्वता परम्पराक साहित्य छल आ सेहो तखन लिखाइये रहल छल, मुदा ज्योतिरीश्वर-पूर्व पदावली प्रसिद्धि प्राप्त कऽ लेने छल। ओइ कालक गोनू वा विद्यापतिक समय पाग रहबो करए सेहो निश्चित नै, कारण अमीर खुसरो (१२५३-१३२५) मात्र एकर चर्च केने छथि। विजय कुमार ठाकुर एकरा सामन्तवादी प्रतीक आ तंत्र मंत्रसँ सम्बद्ध मानै छथि। मुस्लिम आक्रमणक बाद अधीनस्थ सामन्तकेँ ई पहिराओल गेल हएत आ ई मुस्लिम टोपीसँ मेल खाइतो अछि, आ मात्र ब्राह्मण-कायस्थ मुस्लिम आक्रमणक बाद मिथिलामे सामन्त रहथि (राजपूत नै) आ आइयो अही दू वर्गक बीच ई कहियो काल बियाह आदिमे प्रयुक्त होइए।

फणीश्वरनाथ रेणु बिदापत नाचपर रिपोर्ताज लिखलनि जे १ अगस्त १९४५ ई. केँ साप्ताहिक ''विश्वमित्र''मे प्रकाशित भेल। ऐ रिपोर्ताजक महत्व अछि, कारण ई ऐ विषयपर ज्योतिरीश्वर द्वारा

लिखित विवरणक ७०० बर्ख बाद लिखल गेल आ ऐ ७०० बर्खमे विद्यापतिकेँ समानान्तर परम्परा जिआ कऽ रखलक।

आ जे एकरा जिआ कऽ रखलक ओकरासँ अनचोक्के विद्यापति छीनि लेल गेल। बिदेश्वर ठाकुर विद्यापति गीत गबैत आ हाक्रोश करैत मृत्युकेँ प्राप्त केलन्हि जे विद्यापतिकेँ पाग पहिरा कऽ ब्राह्मण सभ छीन लेलक। ब्रह्मपुराक कानूनगो बद्री प्रसाद ठाकुर, पोखरिभीड़ाक बिनोद ठाकुर, रुद्रपुरक सरयुग ठाकुर आ मेंहथक जयराम ठाकुर आ बिस्फीक सौँसे गाम आइयो ई रटि रहल अछि। शालिग्राम यादव, अवधिया ठाकुर बिस्फी गामक परम्पराक गवाह छथि। विद्यापतिक कर्मकाण्डीय अपहरण मे हुनकर जन्म आदिक प्रति सभ तरहक अनर्गल तर्क उपस्थित होइत रहल मुदा हुनकर समानान्तर परम्पराक मादे कोनो शोध-पत्रमे चर्चो धरि नै भेल। ई आलेख बिदेश्वर ठाकुर सन हजारक हजार समानान्तर परम्पराक लोकक प्रति समर्पित अछि जे बिदापतक ज्योतिरीश्वर आ फणीश्वरनाथ रेणुक दुनू आलेखक बीच विद्यापतिकेँ जिआ कऽ रखलन्हि।

मिथिलाक शतपथ ब्राह्मणक परम्परा आ मिथिलाक समानान्तर परम्परा:

वैदिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋगवेदसँ पहिनेसँ भाषा अस्तित्वमे रहल हएत। कतेक मौखिक साहित्य जेना गाथा, नाराशंसी, दैवत कथा आ आख्यान सभ ओइमे रचल गेल हएत। एहने गाथा सभक गायकक लेल ‘‘गाथिन’’, ‘‘गातुविद्’’ आ ‘‘गाथपति’’ ऋगवेदमे प्रयुक्त भेल।

वैदिक कालेसँ गाथा आ नाराशंसी समानान्तर रूपमे रहल।

प्राकृतसँ वैदिक संस्कृत बहार भेल आकि वैदिक संस्कृतसँ प्राकृत? वेदमे नाराशंसी नाम्ना जन आख्यान यएह सिद्ध करैए जे दुनू समानान्तर रूपेँ बहुत दिन धरि चलल। ई समानान्तर परम्परा दुनूकेँ प्रभावित केलक। आब ऋगवेद देखू- ओतए दुर्लभ लेल- दूलभ, (ऋगवेद ४.९.८) प्रयोग की सिद्ध करैत अछि? अथर्ववेदमे पश्चात् लेल पश्चा (अथर्ववेद १०.४.१०) की सिद्ध करैत अछि? गोपथ ब्राह्मणमे प्रतिसन्धाय लेल प्रतिसंहाय की सिद्द करैत अछि? (गोपथ ब्राह्मण २.४)।

जे आर्य छथि से भारतक पच्छिम भागसँ मिथिलामे एला, आ हुनका सभक एबासँ पूर्व वेदक किछु अंश विद्यमान छल, तँ ने बहुत रास शब्द जे मैथिलीमे अछि, बहुत रास उच्चारण जे मैथिलीमे अछि ओ वैदिक संस्कृतमे अछि, मुदा लौकिक संस्कृतमे नै अछि। अविद्या, कर्मसिद्धान्त, जन्म आ पुनर्जन्मक आवाजाही आ मोक्ष ई सभ अनार्यसँ आर्यकेँ भेटलै। तँ ने उपनिषदमे मोक्ष प्राप्तिक मार्ग छै, स्वर्ग प्राप्तिक नै। मोक्ष भेटत कोना? यज्ञ केलासँ? नै, ई भेटत ज्ञानसँ आ मनन-चिन्तन आ समाधिसँ। राजा जनकक संरक्षणमे याज्ञवल्क्य बृहदारण्यक उपनिषदक तिरहुतक अनार्य क्षेत्रमे रचना केलन्हि।

वाचस्पति मिश्र सांख्यकारिकाक सन्तावनम सूत्रक व्याख्या करैत कहै छथि जे की ई कहि सकै छी जे अचेतन दूध केर पोषणसँ परु पोसाइए आ अचेतन प्रकृतिक संचालनसँ जीवकेँ मुक्तिक ज्ञान भेटैए? ईश्वर तँ स्वयंमे पूर्ण छथि तँ ओ कोन उद्देश्ये विश्वक सृष्टि करता आ जीव लेल जँ ओ सृष्टि करता तँ सृष्टिक बादे तँ जीव बन्हाइए आ सृष्टिसँ पूर्व तँ बन्हेबाक प्रश्ने नै अछि, तखन जीवक प्रति कथीक दया? से प्रकृति द्वारा सृष्टि होइए आ जीव अपन

प्रयाससँ अपवर्गक प्राप्ति करै छथि। आ विवेकसँ होइए प्रलय। से ईश्वरवाद नै निरीश्वरवाद अछि वाचस्पतिक व्याख्या। प्रकृति संचालनमे जँ ईश्वर भाग लै छथि तँ ओ चेतन प्रक्रिया हएत जे कोनो उद्देश्येसँ हएत आ तकर कोनो खगता ईश्वरकेँ छन्हिये नै। न्यायसूत्रक रचना केनिहार मिथिलाक गौतम सोलह पदार्थक ज्ञानसँ जीवक निःश्रेयस प्राप्त करबाक चर्च करै छथि, मुदा ऐ सभमे ईश्वरक कतौ चर्च नै अछि जे हुनको द्वारा मुक्ति सम्भव अछि। वैशेषिक सूत्र कहैए जे वेद विद्वान लोकनि द्वारा रचल गेल अछि नै कि ईश्वर द्वारा। कुमारिल भट्ट कहै छथि जे सृष्टिक पूर्व ईश्वरक विषयमे कोनो विश्वसनीय चर्चा असम्भव अछि।

शतपथ ब्राह्मणक तथाकथित मुख्य धारा, आ तकर समानान्तर मुख्यधारा:

ब्राह्मण आ गएर ब्राह्मणवाद मिथिलामे शुरुएसँ रहल अछि। ज्योतिरीश्वर लिखै छथि- बौध पक्ष अइसन- आपात भीषण। अगतिशील शतपथ ब्राह्मणक परम्परा, नामक साम्यताक कारण संस्कृत आ अवहट्टबला विद्यापतिकेँ पूज्य बनबैपर बिर्त अछि। ऋक् आ नाराशंसी, महाकवि विद्यापति आ पागबला विद्यापति, मोक्ष आ स्वर्ग-नर्क ई दुनू परस्पर विरोधी विचारधारा मिथिलामे रहल।

शतपथ ब्राह्मणक विदेघमाथव आ पुराणक निमि दुनू गोटेक पुरोहित गौतम छथि से दुनू एके छथि आ एतऽसँ विदेह राज्यक प्रारम्भ। माथवक पुरहित गौतम मित्रविन्द यज्ञक/ बलिक प्रारम्भ केलन्हि आ पुनः एकर पुनःस्थापना भेल महाजनक-२ क समयमे याज्ञवल्क्य द्वारा। मैत्रेयी, याज्ञवल्क्य, सीता, जनककेँ रटैत-रटैत ई परम्परा

विद्यापतिक यज्ञोपवीत संस्कार आ पाग प्रतिष्ठापन जइ तीव्र गतिये केलक से ओकर शतपथ ब्राह्मणक तथाकथित मुख्य धाराक अनुकूल छल।

१७६० ई.क माधव सिंहक शाखा पञ्जीक आदेशक बाद मिथिलामे ब्राह्मण आ कायस्थ मध्य नव-कुलीनवादक प्रसार भेल आ भलमानुस (बत्तीसगमिया) उपजातिक कर्ण कायस्थमे आ स्रोत्रिय उपजातिक मैथिल ब्राह्मणमे उत्पत्ति भेल, ओइसँ शारीरिक आ मानसिक बीमारी ऐ दुनू उपजातिमे मध्य भयंकर रूपसँ बढ़ल, संगे बहुविवाह, बाल-विवाहक आ विधवाक संख्यामे अत्यधिक वृद्धि भेल। आ ईहो जइ शान्तिपूर्ण रूपसँ आ तीव्रगतिसँ भेल से शतपथ ब्राह्मणक तथाकथित मुख्य धाराक अनुकूल छल।

विद्यापतिपर दिनेश्वर लाल आनन्द आ रामवृक्ष बेनीपुरीक विचार!!

दिनेश्वर लाल आनन्दकेँ भ्रम रहन्हि, ओइ कालमे पञ्जी गुप्त चीज रहै, जे संस्कृत आ अवहट्ठ बला विद्यापतिक विषएवार बिस्फीकेँ पञ्जीमे जयवार (निम्न कोटिक) कऽ देल गेल रहै। शाखा पञ्जी १७६० ई.सँ पहिने रहबे नै करै आ तकर प्रमाण अछि जे अयाची मिश्रक मूलक निचुलका पीढ़ी स्रोत्रिय उपजातिमे अछि आ ब्राह्मण उपजातिमे सेहो। ई ओहिना अछि जे सिन्धु घाटी सभ्यतामे बड़द रहै मुदा गाय नै (सीलपर), मुदा बिनु गाय बड़दक उत्पत्ति कोना हएत। दिनेश्वर लाल आनन्दकेँ पञ्जीक सभ तथ्य उपलब्ध नै रहन्हि, प्रायः पदावली बला विद्यापति आ संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति ठक्कुरःक एक्के हेबाक दुष्प्रचारमे हुनका लागल हेतन्हि जे अवहट्ठमे लिखबाक कारण जँ विषएवार बिस्फीकेँ पञ्जीमे जयवार करबाक सम्बन्धसँ जोड़ल जाए तँ विद्यापति किए क्रान्तिकारी भेला से व्याख्या कएल जा सकत। मुदा दिनेश्वर लाल आनन्द सेहो मानै

छथि जे पदावली हुनकर (विद्यापतिक) हाथक तँ छोड़ू, हुनकर कालोमे संगृहीत पद अछि, तकर कोनो विवरण नै अछि। मुदा से कोना सम्भव जखन संस्कृत आ अवहट्टबला विद्यापति अपन संस्कृत आ अवहट्ट ग्रन्थ सभ टहंकारसँ आरम्भ आ समापन करै छथि, के राजा-रानी हुनका प्रेरित केलखिन्ह, ककर आश्रित छला, सभ वर्णन दैत। पूर्ण लेखकीय अन्दाज, सरस्वती आ लक्ष्मी दुनुक बल; तखन पदावलीमे से किए नै? दिनेश्वर लाल आनन्द गुम्म छथि। संस्कृत आ अवहट्ट बला विद्यापति अपन आश्रयदाताक विषयमे लिखने छथि मुदा कोनो संस्कृत आ अवहट्ट ग्रन्थमे अपना विषयमे किछुओ नै लिखने छथि। ओ अवहट्ट लिखबोमे दवाबक अनुभव करै छथि, जे तखुनका मुख्य परम्पराक साहित्यिक भाषा छल। मुदा ज्योतिरीश्वरपूर्व विद्यापतिक प्रभाव एते छलन्हि जे हुनका संस्कृत नाटक गोरक्षविजयमे मैथिली गीत लिखऽ पड़लन्हि (जेना विदाञोतक पहिल रिपोर्ताज लिखनिहार ज्योतिरीश्वरकेँ संस्कृत नाटक धूर्तसमागममे मैथिली गीत लिखऽ पड़लन्हि)।

गोविन्द झा ज्योतिरीश्वरक विदाञोतमे विद्यापतिक परम्परा देखि लै छथि, चर्च करै छथि मुदा ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिकेँ आगाँ किए नै बढ़ा पबै छथि जखन बिदेश्वर ठाकुर गाबि-गाबि कऽ प्राण त्यागि रहल छथि? विद्यापति नाटकमे विद्यापतिकेँ प्यास जतऽ लगलन्हि ओ नाटक लेखकक गाम कोना भऽ जाइए? सभ अपना-अपना हिसाबसँ ‘‘हम्मर विद्यापति’’ नाटक लिखि रहल छथि।

रामबृक्ष बेनीपुरी लग सेहो पञ्जीक तथ्य नै छन्हि। एकटा उपजातिक बनोतरी आ किंवदन्तीक आधारपर ओ केशव मिश्रक विद्यापतिपर हँसब लिखै छथि; द्वैत परिशिष्टक ई केशव मिश्र वाचस्पति-२ (१४००-१४९०) क पौत्र छथि। एकटा आर केशव मिश्र (११५०

लगभग) छथि जे तर्कभाष लिखै छथि आ जकर समीक्षा तत्वचिन्तामणिकारक गंगेशक पुत्र वर्धमान ''तर्कप्रकाश''मे करै छथि। आनन्द कुमारस्वामी जतेक शोध १९१५ ई. मे केने रहथि ओइसँ एक्को डेग आगाँ नहिये बेनीपुरी जा सकलथि, नहिये आनन्दस्वामीक सए बर्ख बाद कियो दोसर मुख्यधाराक शोधकर्ता जा सकल छथि। वएग उगनाक कथा बेनीपुरी कहै छथि, मुदा महादेव संस्कृत आ अवहट्टक कट्टर विद्यापतिक ''शैवसर्वस्वसार''पर कैलाशमे नचता आकि ज्योतिरीश्वरपूर्व विद्यापतिक नचारीपर, ओइपर गुम छथि। आनन्द कुमारस्वामी जकाँ बेनीपुरीकेँ बुझल छन्हि जे संस्कृत आ अवहट्टक विद्यापतिक हाथक लिखल भागवत उपलब्ध अछि आ इहो जे विद्यापतिकेँ गंगालाभ कोना भेलन्हि, गंगा हुनका अपनामे लीलि लेलखिन्ह। आनन्द कुमारस्वामी जकाँ बेनीपुरीकेँ संस्कृत आ अवहट्टक विद्यापतिक लिखल पुरुषपरीक्षाक विषयमे सुनल छन्हि मुदा पढ़ल नै छन्हि, आ से नै तँ हुनका बुझल रहितन्हि जे संस्कृत आ अवहट्टक विद्यापति गंगालाभक कथा बोधि कायस्थक विषयमे लिखने छथि। ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिक विषयमे ई कथा उगनाक कथा सन प्रचलित छल जे बादमे संस्कृत आ अवहट्टक विद्यापतिसँ कर्मकाण्डीय रूपमे जोड़ल गेल आ पुरुषपरीक्षाक कथा बोधि कायस्थ एकर प्रमाण अछि। कीर्तिपताकाकेँ बेनीपुरी मैथिली गीतक संग्रह कहै छथि!! पूछि-पाछि कऽ शोध कएल जाइ छै? जे आधार कुमारस्वामी सए बर्ख पहिने रखलन्हि, ओइपर सुखाएल मुख्यधारा किए नै आगाँ बढ़ल कारण ई शतपथ ब्राह्मणवादी मुख्यधारा ओकरा एकर अनुमति नै दै छै। मुदा बिना कोनो प्रमाणक शिवसिंहक मित्र पुरादित्यकेँ बेनीपुरी भूमिहार ब्राह्मण सिद्ध कऽ दै छथि, ओहिना जेना गोविन्ददास (झा) केँ रमानाथ झा स्रोत्रिय बतेलन्हि (सुकुमार सेन तकरा हास्यास्पद मानै

छथि), आ रामदेव झा ब्राह्मण सिद्ध करै छथि आ कालिदासकेँ वर्माजी (लालदास स्मारिकामे) कायस्थ सिद्ध करै छथि।

संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति पूर्ण कर्मकाण्डक संग पुस्तकक प्रारम्भ आ अन्त करै छथि, राजा-रानी-आश्रयदाताकेँ मोन पाड़ै छथि मुदा अपन चर्च नै करै छथि। मुदा पदावली लोककण्ठमे किए रहि गेल, पुस्तकक तामझाम ओ तकरा किए नै देलन्हि, कारण ओ हुनकासँ कतेक सए बर्ख पूर्वक रचना छल, जखन पागक उत्पत्ति मिथिलामे नै भेल छल। पदावलीमे रूपनारायण, शिवसिंह, लखिमा, देव सिंह, हर सिंह, पद्म सिंह, विश्वास देवी, अर्जुन-अमर, राघव सिंह, रुद्र सिंह, धीर सिंह, भैरव सिंह, चन्द्र सिंह आदि बादमे घोसिआएल गेल, जे गीतक लयकेँ प्रभावित करैत स्पष्ट रूपसँ दृष्टिगोचर होइत अछि। संस्कृत-अवहट्ठबला विद्यापतिक भू-परिक्रमा (देव सिंह), कीर्तिलता (कीर्ति सिंह आ वीर सिंह), कीर्तिपताका, गोरक्षविजय (शिव सिंह), लिखनावली (पुरादित्य), दान वाक्यावली (रानी धीरमति) आदि स्पष्ट रूपसँ राज्याश्रित रचना छल। गोरक्षविजय नाटक भैरव पूजाक अवसरपर लिखल गेल आ ऐ मे धूर्त समागम सन मैथिली गीत छल जे ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिक भयंकर प्रभाव स्वरूप छल। नामक असमानता नै रहैत तँ ज्योतिरीश्वरकेँ ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति बना देल जाइत।

तत्वचिन्तामणिकारक गंगेश १२००० ग्रन्थक बराबर एकटा ग्रन्थ लिखलन्हि। प्रोफेसर दिनेशचन्द्र भट्टाचार्य "हिस्ट्री ऑफ नव्य-न्याय इन मिथिला" मे लिखै छथि- "The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila...Gangesha's family is completely ignored and we are not expected to know even his

father's name.'' आ ई, ओ लिखै छथि, हुनका प्रो. आर.झा (रमानाथ झा) कहलखिन्ह!
आब आउ पञ्जीमे वर्णित तथ्यपर- ओइमे स्पष्ट रूपसँ लिखल अछि जे तत्वचिन्तामणिकारक गंगेशक जन्म पिताक मृत्युक पाँच वर्ष बाद भेलन्हि आ ओ चर्मकारिणीसँ विवाह केलन्हि, तँ ई गप रमानाथ झा दिनेशचन्द्र भट्टाचार्यसँ किए नुकेलन्हि? एकटा उपजाति द्वारा हिनकर मूर्खसँ विद्वान बनबाक गप पसारल गेलन्हि आ हिनका खतम करबाक षडयंत्र भेल।
गंगेशक पुत्र वर्द्धमान गंगेशकेँ सुकविकैरवकाननेन्दुः कहै छथि। मुदा गंगेश सन प्रसिद्ध विद्वानक कविता कोन साजिशक अन्तर्गत आइ उपलब्ध नै अछि से ऊपर देल उदाहरणसँ स्पष्ट अछि। बंगालक वासुदेव पक्षधर मिश्रक सहपाठी रहथि, मिथिला पढ़ैले एला, शलाका परीक्षा उत्तीर्ण केलन्हि आ सर्वभौम उपाधि भेटलन्हि। वासुदेव गंगेशक तत्वचिन्तामणि आ उदयनक न्यायकुसुमांजलिक कारिकाकेँ कंठस्थ कऽ लेलन्हि। पक्षधर आ आन मिथिलाक शिक्षक तत्वचिन्तामणि लिखबाक (प्रतिलिपि करबाक) अनुमति नै दै छला! वासुदेवक शिष्य रघुनाथ शिरोमणि अपन गुरु पक्षधर मिश्रकेँ शास्त्रार्थमे हरा प्रमाणित करबाक अधिकार लेलन्हि। नव्यन्याय स्कूलक नवद्वीपमे वासुदेव-रघुनाथ द्वारा स्थापना भेल। पक्षधर मिश्र संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक समकालीन छला। आ रघुनाथक संग बंगालसँ मिथिलामे विद्यार्थीक आगमन बन्द भऽ गेल, आ बंगालक विद्यार्थी सभ जइ विद्यापतिक पदावली रटि बंगाल लऽ गेला से निश्चये पक्षधरक समकालीन नै पूर्वक विद्यापति रहथि जिनकर गीत जनकण्ठमे छल।
शिवसिंह द्वारा संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिकेँ जे बिस्फी ताम्रपत्र देल गेल तकरा ग्रियर्सन फर्जी कहलन्हि कारण ओ विद्यापतिक

पदावलीसँ परिचित रहथि आ बूझि गेल रहथि जे ओइ विद्यापतिकेँ ई ताम्रपत्र भेटब असम्भव छल। मुदा ई ताम्रपत्र तँ संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिकेँ भेटल छलन्हि आ दुनूक बीचक अन्तर ग्रियर्सन नै सोचि सकला। मुदा से म.म. हरप्रसाद शास्त्री सोचलन्हि आ ऐ ताम्रपत्रकेँ असली बतेलन्हि।

श्रीधरदासक सदुक्तिकर्णामृतमे कैवर्त पपीहाक गंगापर स्तुति गीत अछि। राधाकृष्णक गीत अछि। लक्ष्मणसेनक राज कवि धोयी (जोलहा) रहथि। लखिमा ठकुराइन पदावली नै लिखलन्हि संस्कृतमे पद्य लिखलन्हि (ग्रियर्सन), तखन समकालीन विद्यापति ठक्कुरः केना पदावली लिखता बा लखिमा हुनका तइ लेल केना उत्साहित करती। श्रीधरदासक अभिलेख अंधरा ठाढ़ीमे अछि आ ओ नान्यदेव आ गंगदेवक मंत्री रहथि। हुनकर वंशज अमिअकर संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक समकालीन रहथि। गंगदेवकेँ उपेन्द्र ठाकुर कलचुरी मानै छथि। विजय कुमार ठाकुर कलचुरि कर्णक स्तुतिमे सदुक्तिकर्णामृत (श्रीधरदास)क विद्यापतिक गीतकेँ मानै छथि। राधाकृष्ण चौधरीक मत ऐ सँ भिन्न छन्हि। कोनो परिस्थितिमे ई विद्यापति ज्योतिरीश्वर पूर्वक रहथि। ''रामचरित''मे- विग्रहपाल-३ कर्णकेँ हरेलन्हि, ऐ सम्बन्धमे बेगूसरायसँ उत्तर १६ किमी. नौलागढ़सँ दूटा पाल अभिलेख राधाकृष्ण चौधरीकेँ भेटलन्हि। ओहो कर्ण ११म शताब्दीक छथि। धूर्त समागम दक्षिण भारतमे प्रसिद्ध अछि।

अनुलग्नक:

फणीश्वर नाथ रेणु

एकटा लोकगीतक विद्यापति (अनुवाद: हिन्दीसँ मैथिली- गजेन्द्र ठाकुर)

भूमिका

महाकवि विद्यापतिपर ''खोज''करैत काल हमरा लागल जे एक अध्यायक शीर्षक राखऽ पड़त- ''खेतिहर-बोनिहार आ बहलमानक कवि विद्यापति''। कारण पूर्णियाँ-सहरसाक इलाकामे आइयो विद्यापतिक पदावली गाबि-गाबि कऽ भाव देखाकऽ नाचैबलाक मण्डली सभ अछि। ऐ मण्डली सभक नायक महिसवार, चरबाह आ गाड़ीक बहलमाने होइ छथि प्रायः। मैथिल पण्डित लोकनिसँ पुछलौं, ई कोना भेल? बजला, अहाँ कोन फेरामे पड़ल छी? अही सभ मूर्खक कारण आइ विद्यापतिक दुर्दशा भऽ रहल अछि। ऐ मामूली लोक सभक मोनमे जखन एलै विद्यापतिक नामपर ''चारिटा पदावली'' जोड़ि देलक। ..अहाँ दिग्भ्रमित भऽ रहल छी।.. मिथिलाक पण्डितक वर्जना-वाणीपर कान-बात नै दैत हम सहर्ष सहरसा (बा सहर्षा?) यात्राक तैयारी शुरू कऽ देलौं। ..कनचीरा गाम एकटा एहन गाम अछि जइपर दू-दू जिलाक जिला अधिकारीक शासन चलैत अछि। अदहा गाम सहरसामे, अदहा गाम पूर्णियाँमे।

... कनचीराक विद्यापति-मण्डलीक नाम दुनू जिलाक लोक लै छथि। ... जइ दिन कनचीरा गाम पहुँचलौं, गाममे एकटा अघट घटना घटित भऽ गेल रहै। दस सालसँ इलाकाक प्रतिनिधित्व करैबला नेताजी चुनावमे चितंग भऽ गेल रहथि। तइ द्वारे ओइ राति नाच-गानक दोसरे मतलब निकालल जा सकै छल, ऐ डरे ''विद्यापति-मण्डली''क नायक जनकदास नाच करबाक अनुमति नै देलनि।

दोसर राति ओ बड़ड खुशामद करेलाक बाद अनुमति देलनि। नायक जनकदास बड़ड तर्क-वितर्क केलाक बाद घुमा-फिरा कऽ दोहरा-तेहरा कऽ कहलनि, ''विद्यापति- नाच'' क जन्म हुनके

परिवारमे पहिले-पहिल भेल। विस्तारसँ ओ कहियो किछु नै कहलनि। आ हुनका जखन ई विश्वास भऽ गेलनि जे ''विद्यापति नाच मण्डली''क नामपर खर्च करबा लेल हजार- दू हजार टाका सरकारक खजानासँ लऽ कऽ हम नै बहराएल छी, तखन ओ मृदंगपर थाप देलनि। राति भरि नाच देखैत रहलौं। गाए चरबैबला छौड़ा साड़ी पहीर विरहिनी राधा बनि गेल आ कानि-कानि गाबए लागल- ''कतेक दिवस हरि खेपब हो, तुम एसकरि नारी!'' दोसर दिन, जनकदाससँ ऐ नाचक उत्पत्तिक इतिहास पुछलौं तँ ओ बाजल- नै जानि कहियासँ ऐ नाचक मूलगैनी हमरा परिवारमे चलैत आबि रहल अछि। जनकदासक ऐ उदासीक कारण छल- हमर टेपरेकार्डर।.. चुप्पे-चुप्पे सभ गीत फीतामे अहाँ भरि लेलौं, चलाकीसँ। मंगनीमे अपन काज सुतारि लेलौं अहाँ? आ, अंतिममे पचास टाका नगदी देलाक बादो ओ हमर ऐ प्रश्नक कोनो उत्तर नै देलनि कि खेतिहर-बोनिहार, चरवाह आ बहलमान सभ कहिया आ केना विद्यापतिक पदावलीकेँ गाबि-गाबि नाचब प्रारम्भ केलनि। जनकदासक पलानीमे पुआरपर पड़ल रही दिन भरि, ओकरा दया नै लगलै। ओकर मसोमात जवान बेटी हमरा दिससँ पैरवी केलक, तखनो ओ नै पसिझल, अपन खानदानीक ''हँसी'' करबैबला गपकेँ ''गजट'' मे ''छापी'' कराबऽ चाहत? बुरहा जनकदास बड़द खोलि चरबै लेल चलि गेला। हम ओकर पलानीमे पड़ल रहलौं आ तकर बादे एकटा खिस्सा सुनलौं बा सपना देखलौं बा''भ्रम''मे पड़ि गेलौं- ई नै कहि सकै छी।

राजदेव मण्डलक अम्बरा

कविता: कविता लोक कम पढ़ैत अछि। संस्कृतसन भाषाक प्रचार-प्रसार लेल कएल जा रहल प्रयासक अंतर्गत सम्भाषण-शिविरमे सरल संस्कृतक प्रयोग होइत अछि। कथा-उपन्यासक आधुनिक भाषा सभसँ संस्कृतमे अनुवाद होइत अछि मुदा कविता ओइ प्रक्रियामे बारल रहैत अछि। कारण कविता कियो नै पढ़ैत अछि आ जइ भाषा लेल शिविर लगेबाक आवश्यकता भऽ गेल अछि, तइ भाषामे कविताक अनुवाद ऊर्जाक अनर्गल प्रयोग मानल जाइत अछि। मैथिलीमे स्थिति एहन सन भऽ गेल अछि, जे गाम आइ खतम भऽ जाए तँ ऐ भाषाक बाजएबलाक संख्या बड्ड न्यून भऽ जाएत। लोक सेमीनार आ बैसकीमे मात्र मैथिलीमे बजता। मैथिली-उच्चारण लेल शिविर लगेबाक आवश्यकता तँ अनुभूत भइए रहल अछि। तँ ऐ स्थितिमे मैथिलीमे कविता लिखबाक की आवश्यकता आ औचित्य? समयाभावमे कविता लिखै छी, ऐ गपपर जोर देलासँ ई स्थिति आर भयावह भऽ सोझाँ अबैत अछि। एहना स्थितिमे आस-पड़ोसक घटनाक्रम, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा, आक्षेप आ यात्रा-विवरणी यएह मैथिली कविताक विषय-वस्तु बनि गेल अछि। मुदा ऐ सभ लेल गद्यक प्रयोग किए नै? कथाक नाट्य-रूपान्तरण रंगमंच लेल कएल जाइत अछि मुदा गद्यक रूपान्तरण कवितामे कोन उद्देश्यसँ। समयाभावमे लिखल जा रहल ऐ तरहक कविता सभक पाठक छथि गोलैसी केनिहार समीक्षक लोकनि आ स्वयं आमुखक माध्यमसँ अपन कविताक नीक समीक्षा केनिहार गद्यसँ पद्यमे रूपान्तरकार महाकवि लोकनि! पद्य सर्जनाक मोल के बूझत! व्यक्तिगत लौकिक अनुभव, जे गहींर धरि नै उतरत, तँ से तुकान्त

रहला उपरान्तो उत्कृष्ट कविता नै बनि सकत। पारलौकिक चिन्तन कतबो अमूर्त रहत आ जे ओ लौकिकसँ नै मिलत तँ ओ सेहो अतुकान्त वा गोलैसी आ वादक सोंगरक अछैत सिहरा नै सकत। मनुक्खक आवश्यकता अछि भोजन, वस्त्र आ आवास। आ तकर बाद पारलौकिक चिन्तन। जखन बुद्ध ई पुछै छथि जे ई सभ उत्सवमे भाग लेनिहार सभ सेहो मृत्युक अवश्यंभाविताकेँ जनै छथि? आ से जे जनै छथि तखन कोना उत्सवमे भाग लऽ रहल छथि। से आधुनिक मैथिली कवि जखन अपन भाषा-संस्कृतिक आ आर्थिक आधारक आधार अपना पएरक नीचाँसँ विलुप्त होइत देखै छथि आ तखनो आँखि मूनि कऽ ओइ सत्यकेँ नै मानै छथि, तखन जे देश-विदेशक घटनाक्रमक *वाद* कवितामे घोसिआबऽ चाहै छथि, देशज आ दलित समाज लेल जे ओ उपकरि कऽ लिखऽ चाहै छथि, उपकार करऽ चाहै छथि, तँ तइमे धार नै आबि पबै अछि। मुदा जखन राजदेव मंडल कविता लिखै छथि-

टप-टप चुबैत खूनक बून सँ
धरती भऽ रहल स्नात
पूछि रहल अछि चिड़ै
अपना मन सँ ई बात
आबऽ बाला ई कारी आ भारी राति
कि नहि बाँचत हमर जाति...?

-तँ से हमरा सभकेँ सिहरा दैत अछि। कविक कवित्वक जाति, ओइ चिड़ैक जाति आकि..। कोन गोलैसी आ आत्ममुग्ध आमुखक दरकार छै ऐ कविताकेँ। कोन गोलैसीक आ पंथक सोंगर चाही ऐ

सम्वेदनाकेँ।
तँ कविताकेँ उत्कृष्टता चाही। भाषा-संस्कृतिक आधार चाही। ओकरा खाली आयातित विषय-वस्तु नै चाही, जे ओकरापर उपकार करबाक दृष्टिएँ आनल गेल छै। ओकरा आयातित सम्वेदना सेहो नै चाही जे ओकर पएरक नीचासँ विलुप्त भाषा-संस्कृति आ आर्थिक आधारकेँ तकबाक उपरझपकी उपकृत प्रयास मात्र हुअए। नीक कविता कोनो विषएपर लिखल जा सकैत अछि। बुद्धक मानवक भविष्यक चिन्ताकेँ लऽ कऽ असञ्जाति मनकेँ सम्बल देबा लेल सेहो, नै तँ लोक प्रवचनमे ढोंगी बाबा लेल जाइते रहताह। समाजक भाषा-संस्कृति आ आर्थिक आधारक लेल सेहो, नै तँ मैथिली लेल शिविर लगाबऽ पड़त। बिम्बक संप्रेषण सेहो आवश्यक, नै तँ कवि लेल पहिनेसँ वातावरण बनाबए पड़त आ हुनकर कविताक लेल मंचक ओरिआओन करऽ पड़त, हुनकर शब्दावली आ वादक लेल शिविर लगा कऽ प्रशिक्षण देल जएबाक आवश्यकता अनुभूत कएल जाएत आ से कवि लोकनि कइयो रहल छथि !
मिथिलाक भाषाक कोमल आरोह-अवरोह, एतुक्का सर्वहारा वर्गक सर्वगुणसंपन्नता, संगे एतुक्का रहन-सहन आ सांस्कृतिक कट्टरता आ राजनीति, दिनचर्या, सामाजिक मान्यता, आर्थिक स्थिति, नैतिकता, धर्म आ दर्शन सेहो साहित्यमे एबाक चाही। आ से नै भेने साहित्य एकभगाह भऽ जाएत, ओलड़ि जाएत, फ्रेम लगा कऽ टंगबा जोगड़ भऽ जाएत। कविता रचब विवशता अछि, साहित्यिक विवशता। जहिया मिथिलाक लोककेँ मैथिली भाषा सिखेबा लेल शिविर लगाओल जेबाक आवश्यकता अनुभूत हएत, तहिया कविताक अस्तित्वपर प्रश्न सेहो ठाढ़ कएल जा सकत। आ से दिन नै आबए तै लेल सेहो कविकेँ सतर्क रहऽ पड़तन्हि।
आ से राजदेव मंडल सतर्क छथि आ तैँ हिनकर कविता-संग्रह

अम्बरा एक्कैसम शताब्दीक पहिल दशकक सर्वश्रेष्ठ मैथिली कविता संग्रह बनि आएल अछि।

मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डेल 'झारूदार'क गीत आ झारू - ''हमरा बिनु जगत सुना छै''

मैथिलीक भिखारी ठाकुर रामदेव प्रसाद मण्डेल 'झारूदार' दइ छथि माटि आ कहै छथि ''हमरा बिनु जगत सुना छै''।

मैथिली साहित्य वा कोनो भाषाक साहित्यमे झारू नामक काव्य विधा सुनने रहिऐ? रामदेव प्रसाद मण्डल ''झारूदार''जीक झारूकँ छोड़ि कऽ? नै ने!

कारण रामदेव प्रसाद मण्डिल ''झारूदार'' महीसक पीठ, खेतक आड़ि-धूर आ रस्ता चौबटियापर स्वतः स्फूर्त जे नव विधाक आविष्कार केने छथि से समाजक दुर्गुणकँ खरड़ासँ खरड़बा लेल छै। फुलझाड़ूसँ खरिहान नै बहारल हएत, आ खरड़ा सँ ओसारा नै बहारि सकै छी। लाठीमे राहड़िक डाँटक झारूसँ झोल-झाल साफ कएल जाइए। से तरह-तरहक बाढ़नि, आ खरड़ाक प्रचलन अछि। रामदेव जी गीत सेहो लिखै छथि, आ पनिसोखा सन रंग बिरंगक झारू सेहो। जेहेन समस्या तेहने झारू। आ मैथिलीमे जखन गोत्र-मूलक उपनाम रखबाक प्रवृत्ति किछु नव आ पुरान लेखकमे देखल जा रहल अछि तखन ई ''झारूदार'' उपनाम की सभ चीज बिनु कहने कहि जाइए?

आ कविक आत्मविश्वास, हम नै तँ किछु नै।

हमरासँ पहिले कोनो नै शासन।

नै छै कोनो धर्मक विधान।।

हमरा बिनु जगत सुना छै।

हतैबला छै पशु समान।।

आब ताकि लिअ ऐ झारूमे बौद्ध दर्शनक शून्यवाद आ शंकरक अद्वैत दर्शन!

हुनका पैसाक रोग नै चाही तँ अंध्विश्वासक रोग सेहो नै।

सभ बनल छै पैसा रोगी,

अन्धविश्वास, कुरीतक जोगी

मुदा ऐ लेल रामक तीर कमान चाही की? कारण तइ लेल तँ रामक अवतारक प्रतीक्षा करए पड़त। नै, स्वयंपर करू विश्वास, कारण जँ समस्या अहाँ छी तँ समाधान सेहो अहीं।

अहाँ बिना के ई दुख हरतै

अहींसँ ई सभ दानव मरतै

कलमकेँ एक बेर फेर बनाबू

रामक तीर कमान यौ।

आपसी एकताक महत्व कवि नीक जकाँ बुझै छथि, मुदा एकता

कोना आएत, तकर समाधान देखू:

एकता बनैले सहए पड़ै छै

घटो लगा कऽ बहए पड़ै छै

अपन गलतपर लहए पड़ै छै।

नारीक स्थिति, से ओ नारी गामक होथि वा ओ नेता ने किए बनि गेल होथि, अखनो टीस उठबैत अछि, आ कवि जँ झारूदार होथि तँ ओइ टीसक वर्ण एना होइत अछि:

नारी सीता राधा अंश,

पुरूष बनल छै रावण कंश।

फेर कोना कऽ चलतै,

ई घर दुनियाँदारी यौ।

मुदा तकर उपाय, की पुरुष बदलत नारीक दशा? नै, ई आत्मविश्वास स्वयं नारीमे छन्हि, ओ शिक्षाक डोर पकड़ती आ...

आब नै नारी रहब अनारी,

बनबै सख्त कठोर यौ।

तँ की वएह नारी वा जाति-पाति आदिक समस्या टा पर ध्यान छन्हि कविक? नै, ओ प्रदूषण सन विज्ञानक देनपर सेहो चिन्तित

छथि:

विज्ञानक ई देन प्रदूषण

बनि घर घुसल चुहार यौ।

बाघ बनि ई मुँह बौने अछि

दुनियाँ बनल सिकार यौ

आ प्रदूषण कोना कम हएत, सेहो ओ नव खाढ़ीकेँ राह देखबै छथि:

इंजन हो पूरा कंडीसन

धुआँ नै छोड़ै बेकार यौ।

करू खियाल किछु अगिला पिढ़ी

कोना रचत संसार यौ।

आ ऐ पर हुनकर एकटा झारू सेहो छन्हि, ओ वने टा नै वनवासीक सेहो संरक्षण चाहै छथि:

वन झील नदी आ वनवासी

पहार पठार संग रेगिस्तान।

करू सुरक्षा पर्यावरण केर

ऐ सँ देश बनत धनवान।।

दहेज आ काटर प्रथापर रामदेव जी लिखै छथि:

आइ हर घरमे सीता रोऐ छै

राइत-राइत भरि नै जनक सुतै छै

कतए सँ एतै दहेजक पैसा

हेतै केना कन्यादान यौ

मिथिलापर झारूदारकँ गर्व छन्हि, कोन मिथिलापर:

जगतरनी जतए गंगा धारा, ज्योति लिंग केर जतए उज्यारा।

हजरत तुलसी वाल्मिकक गुँजि रहल उपदेश।

मुदा बिहार अन्तर्गत जे मिथिला छै तकर दशापर झारूदार चिन्तित छथि आ बिहारक मुख्यमंत्री नीतिश कुमार, जे विकास पुत कहल जाइ छथि हुनका झारूदार किछु देखबऽ चाहै छथि:

केमरासँ तस्वीर बनेबै

मिथिला मैथिल परिवार केर।

तकरा देखेबै पटना जा कऽ

विकास पुत नीतिश कुमारकँ।

फोटो बनेबै खेत असिंचित

सिंचाइ पानि विजलीसँ वंचित।

मानवता ककरामे हेतै, मानवे मे ने। आ तकरे ने भेटतै दुनियाँक ताज आ सएह ने जीतै बनि झारूदार!

ताज मिलै सम्पूर्ण जगतक

आ बनि जीबए झारूदार

मानवमे मानवता होइ तँ

बदलै नै ओकर अवतार

तँ झारू आ गीत, जे बोन-झाँकुरमे खेत-पथारमे घुमैत-फिरैत लिखाएल से तँ विशिष्ट हेबे करतै आ ओकर लिखैबलाकेँ से ताज भेटबे करतै। मिथिलाक भिखारी ठाकुर ओइ ताजकेँ पहीरि झारूदार कहेबे करतै।

मुन्नाजीक ''माँझ आंगनमे कतिआएल छी''

''माँझ आंगनमे कतिआएल छी'' मुन्नाजीक रुबाइ आ गजल संग्रहक नाम अछि। कतिआएल आ सेहो माँझ आंगनमे! की कबीरक उलटबासीक प्रभाव अछि ई आकि गजलक स्वभाव अछि ई? नहिये ई कबीरक उलटबासीक प्रभाव अछि नहिये ई गजलक स्वभाव अछि, ई एकटा यथार्थ अछि। मुन्नाजी सन कतेको लोक कतिआएल छथि, प्रतिभा अछैत हेराएल छथि। मुदा गजलकार सभटा दोख अपनेपर लऽ लै छथि।

आब तँ माँझ आंगनमे कतिआएल छी

अपने चालिसँ आब बेरा गेलहुँ हम

आ सएह कारण अछि जे ओ नोरक सुख भोगऽ लागै छथि।

नोर तँ खसैए मुदा मजा सन लगैए

केहन नीक प्रेमक दुख लेलहुँ हम

बड़का खाधिमे खसै छथि आ तहू लेल अपनेकेँ दोखी मानै छथि:

छोटको ठेससँ नै सबक लेलहुँ हम

तँए बड़का खाधिमे खसि गेलहुँ हम

तँ की गजलकार प्रेमक महत्व बिसरि गेल छथि, नै प्रेम तँ सभकेँ चाही।

सभ उमेर वर्गकेँ प्रेम चाही

मरितो धरि कुशल-छेम चाही

आ हिनका जँ कोस दू-कोस मात्र चलबाक रहितन्हि तखन ने, हिनका तँ बहुत आगाँ बढ़बाक छन्हि तेँ प्रेम चाही।

डाहसँ पहुँचब कोस-दू कोस

आगू बढ़बा लेल तँ प्रेम चाही

आ से सभ ठाम। एकटा हमर संगी छल, एकटा परीक्षामे टॉप केलक तँ बाजल- नै कम्पीट करै छी तँ नै करै छी, आ करै छी तँ टॉप करै छी। ओ गजलकार नै छल जँ रहितए तँ अहिना लिखितए जेना मुन्नाजी लिखै छथि:

बदरी लादल रहै कोनो बात नै

जदि बरसी तँ बरिसात बनि कऽ

आ नजरि-नजरिक फेर आ हाफ ग्लास फुल, ई दुनू टा अवधारणा ऐ रूपमे ओ राखै छथि:

नजरि उठा कऽ देखबै तँ खाली बुझाएत ई दुनियाँ

नजरि गरा कऽ देखबै तँ सभ देखाएत ई दुनियाँ

समालोचना आ विरोध दुनूकेँ गजलकार नीक मानै छथि।

पक्षधरसँ राखू अपनाकेँ बचा कऽ

विपक्षीक सभ बातकेँ नै तीत बुझू

महगाइसँ लोक बेकल अछि मुदा तकरा लेल झुमैत मचानक बिम्ब देखू:

महगाइसँ खूने नै हड्डियो सुखाइए

आब झुलैत मचान सन लगैए लोक

आ ई उलटबासी देखू, बिम्ब नव, भावना शाश्वत:

हम तँ घूर जड़ेलौं गर्मी मासमे

मिझाएल आगिसँ पसाही कहियो

ई कोन गोष्ठी छी, जे अछि कोनो पत्रिकाक प्रायोजित चिट्ठी छपबाक राजनीति सन, ई रुबाइ देखू:

मोन भए उठल दुखित होहकारीसँ

उठि दर्शक भागल मारामारीसँ

प्रायोजक तँ पथने रहल कान अपन

कर्ता देखार भेला जतियारीसँ

मुदा बाढ़िक विषय जँ मैथिली गजलक अंग नै बनए तँ बुझू जे गजलकार समाजसँ स्वयं कतिआएल छथि। मुदा से नै अछि।

धार एखन धरि तँ उफानपर अछि

लोक ताका-ताकी करैत बान्हपर अछि

आब पड़ाइन घटल अछि, मिथिलासँ पड़ाइन। बाहरी लोक बिहारीकेँ मजदूर आ श्रमिकक पर्यायवाची मानि लेने छथि। तहूपर गजलकारक कलम चलल अछि।

बिहारक सिरखारी बदलि गेल सन लगैए आब

श्रमिक घटलासँ कंपनी-मालिक लगै बिहारी जकाँ

मुन्नाजीक गजल आ रुबाइ स्वच्छन्द रूपसँ बमकोला जेकाँ बहल अछि। शेरक स्वभाव होइ छै जे जँ ओकरा नीकसँ कहल जाए तँ आह-बाह लोक करिते अछि। मैथिलीमे गजल-रुबाइ जइ तरहेँ प्रसारित भऽ रहल अछि से देखि कऽ यएह लागि रहल अछि जे जतेक ई विधा अपनाकेँ पसारि रहल अछि तइसँ बेशी मैथिली लाभान्वित भऽ पसरि रहल अछि।

मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह ‘‘प्रतीक’’

मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह ‘‘प्रतीक’’ विहनि कथाक प्रतीकात्मकताक प्रतीक बनि गेल अछि। बिरारसँ विहनि उपारि धान आ मेरचाइ रोपबाक प्रक्रिया ऐ संग्रहक सभ कथा सभमे देखबामे आएत। तँ ई छिटुआ नै रोपुआ धानक खेती बनि गेल अछि। तीन मोनक कट्ठा सभ गोटे सुनैत हएब, मुदा एतऽ देखब।

विहनि कथा हास्य कणिका नै अछि, ई कथाक जड़ि अछि, बीआ अछि, छिटुआ धानसँ भेल पौध आ विहनिसँ भेल पौधमे बड्ड अन्तर छै। छिटुआ धान फौदाइ नै छै। से हास्य कणिका बिठुकट्टा होइ छै, ऐ मे हँसी अबै छै, मुदा ओ छिटुआ धान जकाँ अछि। दोसर बेर ओइ बिठुकट्टा कथाकेँ, हास्य कणिकाकेँ सुनब तँ ने हँसिये लागत आ नहिये छगुणते। तखन जँ बिनु सिझने विहनि कथा लिखाएत, बिनु सिझेने विहनि कथा लिखब तँ लतीफा बनबे टा करत। आ हास्य कणिका विहनि, लघु आ दीर्घ कथा वा उपन्यासमे लेखकीय सामर्थ्यक अनुसार प्रयुक्त होइत रहल अछि आ होइत रहत।

मुदा उसना धानसँ बिराड़मे विहनि नै बहराएत। से बिनु उसीनने बीआ बाउग करऽ पड़त। बिनु उसीनने सिझाबऽ पड़त आ तइ लेल बेशी मेहनति करऽ पड़त। आ बीआ छीटब तैयो सभ धानसँ विहनि नै बहराएत, किछु सँ नहियो बहराएत। से विहनि कथाकेँ सफल हेबाक प्रतिशत कम छै, लघुकथाक सफलताक प्रतिशत कने बेशी छै, दीर्घ-कथा आ उपन्यासक सफलताक प्रतिशत आर बेशी छै।

मुदा उपन्यास झंझटिया काज छै, मोन घोर कऽ दै छै, बेशी समए लागै छै। विहनि कथा धाँइ-धाँइ लिखाइ छै। मुदा जहिना कविता लेल आवेग चाही तहिना विहनि कथा लेल, नै तँ ने धाँइ-धाँइ लिखेबे करत आ पद्यक गद्य आ गद्यक पद्य बनबाक आशंका सेहो रहत। सभ उपन्यासकार कतेक रास विहनि उपाड़ि कऽ सजबैए। उपन्यास गद्य छिऐ मुदा ओइमे कोनो पात्र जँ गीत गाबऽ लागए तँ ओकरा अहाँ रोकि देबै? जे उपन्यासकार रहैए ओ विहनि देखि उपन्यासक धनखेती देखऽ लगैए, कखनो ओ विहनि कथा लिखियो दैए, फेर लोभ संवरण नै भेलासँ ओइ विहनिक प्रयोग उपन्यासमे, दीर्घकथामे, लघुकथामे सेहो करैए।

तखन मुन्नाजीक विहनि कथाक की विशेषता। मुन्नाजी हमर पड़ोसी सुरजु भाइ छथि, ओ बिराड़मे जतेक बीआ लगबै छथि ओकर दशो प्रतिशत अपन खेतमे नै लगा पबै छथि। बाढ़िक इलाका छै से लोकक खेत पड़ल रहि जाइ छै बिनु विहनिक। से सुरजू भाइक पड़ोसी ओइसँ लाभ उठबै छथि कारण बाढ़िमे कखनो काल तीन-तीन बेर धनरोपनी होइ छै, एक बेर रोपू बाढ़ि आएल, दोसर बेर रोपू फेर बाढ़ि आएल। आ सुरजू भाइ छथि तँ लोक विहनि लेल निश्चिन्त रहैए।

आ मुन्नाजीक विहनि कथा सेहो निश्चिन्त करैए।

"रेवाज" विहनि कथा लिअ। गाम घरमे मसोमातकेँ लोक डाइन कहै छै मुदा मुइलाक बाद घराड़ी लेल ओकरा आगि देबा लेल उपरौंझ होइ छै। एतऽ मुदा विहनि लेल जे बीआ छीटल गेल छै से

कने उच्च स्तरक छै। एतऽ मृतककेँ बेटा नै छै मुदा पत्नी आ बेटी छै। से जखन मृतकक भाइ कोहा उठबऽ चाहैए तँ विधवा ओकरा रोकै छै आ बेटीकेँ कोहा उठबैले कहै छै। आ संग के देत ऐ नव रेवाजमे, जे आइयेसँ प्रारम्भ भेल अछि? तखन उत्तरो भेटैए- निपुतराहा सभ।

तहिना ''कमरुनिसा'' विहनि कथा अछि। हसीना मंजिल सन एकटा आरो श्रेष्ठ उपन्यास ऐ विहनि कथा (सीड स्टोरी)सँ मुन्नाजी नै बना सकै छथि की? कमरुनिसाक पिता रहमान। लहठीक काज जकाँ दम्मा सेहो ओकर सभक पुश्तैनी वौस्तु छलै। कमरुनिसाक अब्बा-अम्मीक जान ई दम्मा लेलकै आ फेर कमरुनिसा...

''जिया जरए सगर राति''मे एड्सक समस्या आ लिविंग रिलेशनक चर्च अछि तँ ''दियाद''मे पनहीक ऊपरसँ चिक्कन चुनमुन हेबाक मुदा नीचाँसँ खलओदार केने जेबाक विवरण देल गेल अछि।

''नपना'' मे स्त्रीक काजक स्वरूप तय कएल गेल छै। अखनो जनगणना कालमे सरकार स्त्रीक घरक काजकेँ आमदनीमे नै जोड़ैत अछि, आ ऐ कथामे अन्त होइए जखन एकटा स्त्रीक चर्च अबैए जे नोकरीयो करैए आ घरक काजो।

''देह, मोन आ प्रेम'' एकटा हास्य कणिकाकेँ कोना विहनि कथामे परिवर्तित कएल जाए, तकर उदाहरण अछि। सबीना आ मोहसिन नाम्रा पात्र लऽ कऽ ई चमत्कार मुन्नाजी केने छथि।

आइ काल्हि जखन लोकक जिनगी गति पकड़ि लेने अछि तखन विहनि कथाक महत्व बढ़ि गेल अछि। मुन्नाजी विहनि कथा लेल

समर्पित छथि आ ई संग्रह हुनकर ऐ समर्पणक गुणात्मक अभिव्यक्ति छन्हि।

रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट"

"रथक चक्का उलटि चलै बाट" ई रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रहक नाम अछि। खाँटी शब्दावलीक प्रयोग आ ओइ माध्यमसँ तीन पाँतिक हाइकू/ शेनर्यू आ पाँच पाँतिक टनकामे हिनकर प्रकृति-प्रेमक माध्यमसँ भावोद्गारमे एतेक रास तथ्य सोझाँ अबैए, एतेक रास समस्या आ समाधान तकैए जे पढ़निहार बाजि सकैए, हँ ई हम किए नै सोचि सकलौं, मुदा आब सोचि सकब।

रथक चक्का

उलटि चलै बाट

चाक चलै छै

8.86|| गजेन्द्र ठाकुर

ठामे ठाम नचैत

दुनु करै दू काम

जापानक बाशो नै मोन पड़ि जाइ छथि रामविलास साहु जीक ऐ टनकासँ:

सावन मास

जलक बुन्न पड़ै

आसमानसँ

बेंगक बाजा बजै

खन्ता डबरा भरै

हिनकर मानव आ प्रकृतिक मेल कतेक अद्भुत लगैत अछि:

कारी काजर

मुखड़ा बिगारैत

कारी कोइली

मधुर गीत गबै

सभकेँ ललचाबै

मुदा कारी काजरक उपमा एतै खतम नै भेल अछि:

कारी काजर

आँखि देत सुखाय

कारी बादल

बरखासँ डुबाय

मुखरा देत बिगाड़ि

रौदक गुण तँ प्रकृति-प्रेमी कवि पढ़ि लैए, वसन्त आ हेमन्त वर्णनासँ की ई कम अछि?

चैतक रौद

तपाबै माटि-पानि

पछिया हवा

पकाबै चना-गहुम

बहारै धूर-कण

कविता कहैमे कवि सेहो पाछाँ नै छथि, कोसी धार हुनका हिलोरै छन्हि:

जिनगी बनल अछि हमर कंगाल

झौआ, पटेर, काश खगरा हमरासँ करैए रगड़ा

बाल बच्चा क जिनगी बाउलमे समाएल

अन्धविश्वासपर कविक कलम चलै छन्हि:

गोसाँइ खेले भगता-भगतिनियाँ

छत्तीस देवी चौदहो देबान

अखन छौ देहपर विरजमान

जे मांगब से पूरा करतौ

कारनीक सभ रोग वियाधि हरतौ

फूल-अच्छतसँ वरदान देतौ

बिगरल काज मनोकामना

चुटकी बजिते पूरा करतौ

बदलामे लड्डु-छागर-पाठी मांगतौ

कवि किसान छथि तँ किसानी कोना बिसरताह:

बिहानेसँ गजार कदबा

हुअए लगल खेत

हर जोतैत हरबाह

बिरहा गाबैत

आ फेर...

"हरक नाश आ

खेतक चासपर

पेट भरबाक अछि

सभकेँ आश।"

आ तखन... ...

गहुमक दाना कोठीमे भरलौं

भूसीकेँ भुसकाँरमे टलियेलौं

चारि मासक गहुमक फसलि

दिन-राति खटि कऽ घर केलौं

साल-भरि रोटियो खाए जीअब

गामक शब्दावली फकरा-कहबीक माध्यमसँ बहुत रास गप कहि जाइ छथि कवि:

हाटक चाउर बाटक पानि

बनियाँ घरक तरजूकँ

नै होइ छै कोनो माइन

कारण..

हाटक चाउर बाटे बिलाएल

घाटक पानि घाटे सुखाएल

देशी इलाज आ रोगक रोकथाम सेहो कविकँ बुझल छन्हि:

इचना, पोठी माछक चटनी

संगे जे खाइ मरूआ रोटी

नहि बनत रोगी मोटी

रक्त चाप, मधुमेह, जलोदर

रामविलास साहु जी चैतावर गबै (लिखै) छथि, बिरहा सुनै छथि, धनरोपनीपर आ किसानीपर कविता कहै छथि। आ ऐ सभ विषयपर हिनकर कविताक जोड़ा साहित्यमे भेटब कठिन। ई सभ विषय मैथिली कविताकँ विस्तार देलक अछि, आ ओइपर लिखबाक

सामर्थ्य रामविलास साहु जीमे छन्हि, ओकर भीतरमे ढुकि कऽ लिखबाक सामर्थ्य रामविलास साहुजीमे छन्हि।

उमेश मण्डल जीक “निश्तुकी” कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह

उमेश मण्डल जीक “निश्तुकी” कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह थिक। मैथिलीक नव तुर मात्र उमेरकेँ प्रतिष्ठा नै देबऽ चाहैए, जँ ओ उमेरगर लोक अग्रगामी नै होथि। आ से हेबाको चाही, काजक सम्मान छै उमेरक आ पुरानक नै। आ तेँ पुरान आ उमेरगर जँ अग्रगामी छथि तँ तिनका प्रतिष्ठा किए नै भेटन्हु?

ई टनका देखू:

समस्या आप्त

सोलहनी सजल

साहित्यकार

लेखे पुरान छै आप्त

केना एतै यथार्थ

आ तेँ “बुढ़ारीमे” क्षणिकामे ओ कहै छथि:

जिनगी चाह करैए

कर्मक बाट देखबैए

आ कर्मक बाट जँ पकड़ि लेब तखन धुधुएबे करब:

भुरकी-सँ-भार बनि

बील बीहरि धरि

बनि-बनि असंतोष

धोधरि बनि धुधुआ रहल अछि

मिथिलासँ पड़ाइन भऽ रहल छै। से रहि-रहि कचोटै छन्हि कविकेँ। आ जँ वसन्तक आगमन भऽ जाए तखन तत्व ज्ञान भैये ने जाएत!

बसंत आएल

गाम जाएब

आब एतए

रहि नै पाएब

बसंतेक खोजमे तँ

छी बौआएल

ऐ पड़ाइनसँ:-

गामक मुँहथरि

जंगल बनल अछि

हुनका विचारक फाँट सेहो रहि-रहि देखा पड़ै छन्हि:

अहाँक गप

अपन मन

दुनू मिलैए

मिलि दुनू अछि चौचंग

खोजि रहल अछि वसंत

मुदा

बसंतक चिड़ैकँ

संग नै राखए चाहै छी हम

हुनका बुझऽमे आबि रहल छन्हि :

भकोभन ओइ अन्हार कोठरीमे

आ ओ अहाँसँ पूछि रहल छथि:

तखन शीशामे केना देखाएत

ओकर चित्र केना आएत?

आ कियो नै सुनऽ चाहै छथि ओ गीत जतऽ मात्र आ मात्र गाओल जा रहल अछि संस्कृतिक गीत:

हनहनाइत, भनभनाइत ओइ स्वरकेँ

सुनैले नै छथि कियो तैयार

किए नै सुनै लेल छथि तैयार, कारण अछि डर, दर्दक डरे ओ नै सुनऽ चाहै छथि हनहनाइत, भनभनाइत ओइ स्वरकेँ।

किछु अजीब बात सभ हुनका असहज लगै छन्हि:

आगि-पानिकेँ

मनक माइनकेँ

कारण सेहो छै, अगिलहीक बिम्ब देखू:

सप्पत खाइ काल देवता

लोकक घर जड़बैकाल मित्ता

ज्ञान आ ज्ञानी आ ज्ञानक प्रकाश सेहो हुनका कखनो ओझरीमे धऽ दै छन्हि:

ज्ञानो भऽ जाइत अछि गुलाम

सांकृत्यायन पड़ै छथि मोन धराम

लहास जे अहाँकेँ बुझा पड़ैए सेहो आब बाजत:

आब ओ बाजत

बजैत-बजैत हँसत

अहाँक कृतिपर

बनल संस्कृतिपर

मंगल आ मंगला हुनकर कवितामे सेहो कएक ठाम आएल अछि। विवशताक प्रतीक अछि मंगला!

कातमे ठाढ़ भऽ मंगला

आ आगाँ...

अपनाकेँ केलक एकोर

तँ सुखाएल घाटक घटवारी मंगलापर देखू ओकर विवशता:

सुखलौ घाटक लेतै खेबाइ

नै देबै तँ देत ई रेबाड़ि।

सएह भेल मंगला घुरि गेल

पछिमे मुरि गेल

कवि कुम्हरौटक बिम्ब एना अनै छथि:

काँच माटिक मूर्ति जहिना

ढॉचा मात्र कहबैए।

तहिना तँ फूलोसँ बनल फल

सिरखार मात्र कहबैए।

आ वएह सिरखार ने

आशा बान्हि-बान्हि

रौद-बसात सहैए

आ अपने सन आर बटोही सेहो हिनका भेटि जाइ छन्हि:

हमरे सन इहो सभ बटोही

हराएल बाट बढ़ए चाहैए

कविकेँ कोनो भ्रम नै छन्हि जे जेहने बाट चलब तेहने घाट भेटत आ तखन ओइ घाटपर पानि सेहो तेहने भेटत:

जहिना चलैक बाट होइ छै

तहिना तँ बुझैयोक बाट छै

जेहेन जे बाट चलै छै

तेहने घाट पहुँचै छै

ई बाट आ विचार हुनकर एकटा आरो कवितामे अबैत अछि:

विचारक संग जँ चालि रहल

घाटपर जाइसँ कियो नै रोकत

आ नीक वा अधला बाट कियो केना धरैए, तहूपर हुनकर लेखनी चलै छन्हि:

जेहने घरक लोक रहै छै

घरक मुँहथरि तेहने होइ छै।

जेहने घरक मुँहथरि रहै छै

तेहने ने बाटो धड़ै छै

आ ई बाट हुनकर पछोड़ गजलमे सेहो नै छोड़ै छन्हि:

गोर मौगी गौरबे आन्हर भेलि अड़ल

करिया बाट बुझाइए चलू घुरि चली

ओ निराश कखनो नै होइ छथि:

मरलेमे मारि खा-खा

मारल बुइध कहबै छी

आ एकर कारण छै, ओ कहै छथि:

जहिना पबिते अद्राक पानि

मुइलहो धार जीबै छै।

भलहिं जीतहा धार बीच

तीन-मसुआ ओ कहबै छै

आ ऐ आशा-आक्रोश आ निराशाक मध्य ओ लिखै छथि:

छोड़ि देने टूटि जाएत समाज

अपन उमेश जोड़तै तँ चहकतै लगैए ई।

उमेश मण्डल जे किछु कहै छथि निश्तुकी कहै छथि, घुरछी, ओझरी सभटा चारू कात पसरल छन्हि। मुदा सोझराबै छथि, ओझराबै नै छथि।

उमेश पासवानक कविता संग्रह ''वर्णित रस''

कविकेँ युवापर भरोस छन्हि, आ तेँ युवाकेँ सम्बोधितो करै छथि आ ओकर आह्वानो करै छथि, जेना ''हम युवा'' कवितामे - जाति-धर्म/ मजहब केर नामपर/ षडयंत्र रचैए कियो/ हमर देशकेँ/ भीतर आबि कऽ/ आतंकवादक/ गाछ रोपैए कियो

आ तकर सम्बन्ध हुनकर ''जीतक झण्डा'' कवितामे भेटत जेना:- जरै जाउ/ वतन केर दुश्मन/ आगि सुनगाएल करू।

ई जे दुश्मन अछि सएह फहरबाबइए जीतक झण्डा:- आगि सुनगाएल करू/ जीत केर झंडा फहराएल करू आ ''हम युवा''मे

सेहो ओ कहै छथि:- आतंकवादक/ गाछ रोपैए कियो/ भारतवासी शेर छी/ शेरकेँ मादमे आबि कऽ/ जगबैए कियो। कारण जे देशक युवा छथि से:- हम छी गोली,/ हम छी बारूद/ हमही खंजर तलवार छी। तखन ऐ गोली लेल पेस्तौल, बारुद लेल आगि के छथि? ओ छथि युवा जे छथि खंजर आ तलवार।

तँ की दुश्मनी आधारित जोश छन्हि हुनकर कविता? नै से नै अछि- जौँ दोस्तीक लेल हाथ बढ़ाएब/ तँ हमही फूलक माला/ गला केर हार छी। कविकेँ टंगघिच्चा-घिच्चीक खेल नै पसिन्न छन्हि। आ कवि कहै छथि।

ऊपरसँ नूनू बौआ/ भितरे-भितर कहैए बकलेल/ बर्षोसँ देखि रहल छी/ हर तरहसँ दलितक उपेक्षा।

बाढ़िक प्रकोप कविकेँ कहबापर विवश करै छन्हि: केना कऽ ऐबेर खेतक आड़िपर/ जा कऽ कहब/ सेर-बरोबरि/ उखैर सन बीट/ समाठ सन सिस। गबहा संक्रान्तिपर कविकेँ कहऽ पड़ै छन्हि: केना कऽ गुजर चलत/ उपजा कऽ कास-पटेर। ओ कोसीकेँ कहै छथि: कऽ देलिऐ मिथिलाकेँ दू-भागमे/ अहाँ पूबमे सहरसा-सुपौल/ पछिममे मधुबनी-दरभंगा/ बिचमे अगबे बालु आ धूल।

मुदा फेर निर्मल्लीक पुल बनबाक चर्च: कहू आब कतेक चुप रहब/ ऐबेर हम बना देलौँ पुल।

पढ़ल-लिखल दलितक सामान्य दलितक प्रति व्यवहारपर जतेक अम्बेडकर दुखी रहथि ततबे चिन्ता उमेश पासवानकेँ सेहो छन्हि:

स्वयं दलित छी/ दलितक दरद जनै छी/ किछु व्यक्तिक किरदानीसँ चकित छी/ दलित भऽ कऽ ओ/ व्यक्ति अपनो समाजकेँ बिसरि गेल/ अप्पन भाषा-भेष छोड़ि कऽ/ दोसरक रंग-ढंगमे ढलि गेल।

ओ समाजसँ पुछै छथि: हम दलित छी/ मेहनति-मजदुरी कए कऽ बितबै छी अपन जीवन/ तैयो जरैत अछि।

कवि जगदीश प्रसाद मण्डल जी सँ प्रभावित छथि आ से ओ एकटा कविताक माध्यमे कहै छथि: हम छी सेवक मैथिल/ जगदीश बाबूक चेला/ नै हमरा लड्डू खियौलनि/ नै देलथि मिश्रीक ढेला।

मुदा हास्यसँ ओ दूर नै गेल छथि:

झोटा झोटौबलि/ हेतौ नटिनिया/ तोरा संग अही बेर गे।

वसन्तक आगमनसँ मात्र फूल-पात नै आन-आन जीवनसँ सम्बन्धित वौस्तुपर ध्यान जाइ छन्हि हुनकर: गाछ-वृक्षमे नव कनोजरिक संग मोजर फूल निकलैत अछि/ खेतमे गहुम-खेसारी तिसी-मसुरी तोरीक फूलसँ समुच्चाह बाध गमकैत अछि/ मधुमाछी लगौने सेनुरिया आमक गाछपर छत्ता देखि कऽ लुक्खी डरैत अछि/ अरहुलक फूल चूसि कऽ फुलचोभी चिहुकैत अछि/ कौआ आ कोइलीमे भेल अछि कनाइर।

पानि नै चलबाक गप नै बुझाइ छन्हि हुनका: देहसँ देह केना छुबाइ छै/ किएक नै चलैए हमर छुअल पानि यौ/ कोन जुलुमक सजा हमरा दऽ रहल छी/ किअए बुझै छी हमरा अपमानी यौ।

सुदामा आ कृष्णक दोस्तीकेँ सभ अलग कऽ देलक: दुनू दोसकेँ अलग कऽ देलक लोक/ अप्पन रास्ताक दिवार जकाँ/ हँसैत खेलैत...।

आ ई दशा किए भेल? :- सहलौं सभ किछु सलहेशक संतान रहितो/ जहिया तक चुप रहलौं हम।

आ कहै छथि: कतेक लिखब दलितक बेथा/ सलहेश गामक संदेश।

मुदा की मिथिलाक भाषा संस्कृति ककरो अनकर छी? नै ई तँ हमर छी आ तै पर गर्व करै छथि कवि:

हरक पाछाँ बगुला घुमैए/ हरबाहा जोरसँ बरदकेँ बाबू भैया कहि हँकैए।

देशक विकास आ नेता पर हुनका आक्रोश छन्हि: ऐठामक नेता छै माला-माल/ रोड-सड़ककेँ देखियौ तँ/ कदबा गजार सन छै थाल।

आ जे बड़का-बड़का राष्ट्रीय राजमार्ग (नेशनल हाइवे, एन.एच.) छै से तकर विवरण किछु एना छै: मौतक चौराहा बनल अछि एन.एच भुतहा मोड़।

आ लोकक दशा-दिशापर मुर्दा सेहो चिन्तित अछि: गारल मुर्दा छटपटा रहल अछि/ भितरसँ अंगुरी अप्पन उठा रहल अछि।

नारीक कर्मनिष्ठ स्वभावपर हिनकर लेखनी खूब चलल छन्हि:

ओमहर बिआ जे उखारै छै महिला जन/ कोइ करै छै, सासु-ननदिक निना-बिना/ कोइ गबै छै सोहर-समदौन।

कवि तुकमिलानीमे सेहो ढेर रास गप कहि जाइ छथि, पंजाबमे होइत मजदूरक पलायनक चर्च देखू:

जौं अखार महिनामे बुढ़ बड़द/ पजरामे दरद/ पंजाबमे मरद अछि/ तँ समझू हे गेलहे घर छी।

ओ आह्वान करै छथि: साहित्यक दलिदर कतेक जुलुम करैए हमरापर/ कियो तँ बाजू/ कियो हमरा दिससँ अवाज उठाउ।

आ अधिकार तँ चाहबे करी: अप्पन सोल्हनी बला रसा आब नै सुनब हम/

बर्खा तोड़ि दैए बान्हकेँ आ बना दैए गाम केँ कोसी आ कमला: लधने छल सतहिया/ ढौसाबेंग किड़ी-मकौड़ी करै छल सोर/ भुरुकुबा कनी उगल छल चुह-चुहिया।

तँ की कहल जाए ऐ ‘‘वर्णित रस’’ सभकेँ। की कविक वसन्त मात्र फूल-पात देखैए जे मात्र सुगन्ध दैए, आँखिकेँ सुख दैए, मुदा जरल पेटकेँ से नीक लगतै? तँ कविक वर्णित वसन्तक रस ओ फल विहीन सुन्दर फूल नै भऽ सकैए, आ से नहिये अछि। दलित विमर्श दलित द्वारा, आ ओइ दलित द्वारा जेकर धुआधजा छै सलहेश सन, नै बिसरल अछि अपन संस्कृति, बोली-वाणी, नै बिसरल अछि सोहर-समदौन। आ से छथि उमेश पासवान। आ जँ हुनकर वसन्तकेँ देखबाक, एन.एच.क चौराहाकेँ देखबाक दृष्टि

फराक अछि तँ हुनकर कविता सेहो फराक अछि।

सुजीतक जिद्दी

सुजीतक नव कथा संग्रह सम्वेदनामे गहींर धरि उतरल अछि। आदर्श कथामे कथाकार सुजीत महिला सूत्रधार बनल छथि, शैलीक भिन्नताक संग। घर बलासँ पहिने नहाएल छी तँ बाल्टिन माँजि दिअ नै तँ घर बलाक उमेर घटै छै। सासुक मुँहसँ ई गप सूनि भैरहवा नगरमे पललि मुदा देहातमे बियाहलि महिला कथा सूत्रधार अपन विधवा सासुक विषयमे सोचै छथि जे जँ बाल्टिन मँजलासँ पतिक उमेर बढ़ै छै तँ ओ किए विधवा भऽ गेली! पति अरुण

अकस तिकसमे पड़ल अछि। माए आ पत्नी दुनू ओकरा चाही। मुदा सूत्रधार घर छोड़ि एली। अरुण कहैत रहथि जे जँ हुनका बेटा हेतन्हि तँ ओ ओकर नाम आदर्श रखता।

जिद्दी कथामे शारदा अपन नृत्य आ अभिनयक बिच्चेमे छोड़ल जेबाक बात मोनमे रखने छथि आ बेटा जयन्त आ बेटी गिन्नीक नृत्य आ अभिनयक प्रति स्नेहमे अपन उद्देश्य देखै छथि। पति विरोध करै छथि। बेटा तँ नृत्य आ अभिनय छोड़ि दैत अछि मुदा बेटी हुनकर उद्देश्यकेँ पूर्ण करैत देखाइ छन्हि। मुदा तखने दारु, सिगरेट आ अनैतिक सम्बन्ध.. कथाक पूर्वार्धमे नृत्य आ अभिनयक प्रति दृष्टिकोण उत्तरार्धमे महिला सशक्तिकरण दिस जाइत जाइत कतौ आन ठाम चलि जाइत अछि। बेटा नृत्य आ अभिनय छोड़ि दै छन्हि मुदा शारदाक बेटी नै.. महिलाक आकांक्षा महिला द्वारा पूर्ण होइत होइत अनचोक्के कथ्य आ उद्देश्य भसिया जाइत अछि ।

फूल फुलाइए कऽ रहल मे सेहो महिला सूत्रधारक मानसिक विश्लेषण सोझाँ आएल अछि। कनेक रंग दब रहबाक कारण बियाहमे दिक्कत होइ छन्हि, मुदा फेर एकटा सुन्नर लड़का भेटै छन्हि। मुदा ओतौ धोखा.. मुदा ओ अपनाकेँ सम्हारि लै छथि आ किछु दिनमे सभ ठीक भऽ जाइत अछि ।

‘केहन सजाय’ कथामे एकटा परिवार अपन गोद लेल बेटीकेँ छोड़ि दैत अछि, अधेर उमेरमे जखन ओकरा अपन बच्चा होइ छै तखन ! मुदा ऐ कथामे सेहो कथा कहैत कहैत कथाकार रितेश आ चमेलीक प्रेमकेँ फरिछा नै पबै छथि। चमेलीकेँ जे माता पिता गोद लेलखिन्ह से यादव रहथि, ई कहबाक आवश्यकता कथाकारकेँ नै

पड़बाक चाही, कारण ऐ कथामे यादवक लोक संस्कृतिक कोनो वर्ण नै भेल छै। फेर कथाकार तखने पेटमे बच्चा भऽ गेल कहि कथाकेँ कपचि दै छथि।

आधुनिक कथा कथामे कथ्य तँ होइते अछि, मुदा ओइ संग जौँ तहपर तह समस्या भेटैत अछि तँ तकर समाधान लेल सेहो कथाकारकेँ शब्दावली, लोकव्यवहार आ शिल्पक संग लेबऽ पड़ै छन्हि। सम्वेदनाक तहमे कथाकार जाइ तँ छथि, मुदा बेसी ठाम कथ्य कहि देबा धरि सीमित रहि गेलासँ कथा काँच रहि गेल सन बूझि पड़ैत अछि। आशा अछि आगाँक संग्रहमे कथाकारक सामर्थ्य आर नीक जकाँ देखाइ पड़त ।

विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज

बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज- ऐ नामसँ १० टा गीतक संग्रह लऽ श्री बिनीत ठाकुर- शिक्षक, प्रगति आदर्श ई. स्कूल, लगनखेल, ललितपुर प्रस्तुत भेल छथि।

''भरल नोरमे'' शीर्षक पद्यमे की सुतलासँ भेटलै अछि ककरो अधिकार आ ''गाम नगरमे''- लोकतंत्रमे अपन अधिकार लऽ कऽ रहत मधेसी, ई घोषणा छन्हि कविक तँ ''कोरो आऽ पाढ़ि'मे गरीब छोड़ि कऽ के बुझतै गरीबीके मारि- ई कहि कवि अपन आर्थिक चिन्तन सेहो सोझाँ रखै छथि। चहुँदिश अमङ्गलमे जङ्गलक विनाशपर मुश्किलेसँ सुनी चिड़ियाके चिहुं-चिहुं- कहि कवि अपन पर्यावरण चिन्तन सोझाँ रखै छथि। ''जे करथि घोटाला'' मे भ्रष्टाचारपर आ ''जाइतक टुकड़ी''मे जाति प्रथापर कवि निर्ममतासँ चोट करै छथि तँ ''बेटीक भाग्यविधान''मे कविक भावना उफानपर अछि। ''कम्प्युटरक दुनिया'' आ ''अङ्गरेजिया''मे कवि सामयिकताकेँ नै बिसरल छथि तँ अन्तिम पद्य ''ताल मिसरी'' मे वरक सासुर प्रेम कनेक व्यंग्यात्मक सुरमे कवि कहि अपन ऐ क्षेत्रमे सेहो दक्ष हेबाक प्रमाण दै छथि। ओना तँ कविक ई प्रथम प्रकाशित कृति छन्हि, मुदा कवि जइ लयसँ कविता केने छथि से प्रशंसनीय अछि।

संतोष कुमार मिश्र- ''एना किए..?'' आ ''पोसपुत''

१

संतोषजीक ''एना किए..?'' पद्य संग्रह मैथिली पद्यक भविष्यक प्रति आश्वस्ति दैत अछि। ऐमे युवा कविक २४ गोट पद्यक संग्रह अछि।

संतोषजी कविता एना किए मे स्त्रीक समस्या तँ काल्पनिक सत्यमे जीवनक दर्शनक द्वन्द सोझाँ अनै छथि। बिचित्र कविता सेहो द्वन्दे अछि आ अएना कविकेँ अपन बचहनक स्मृतिमे लऽ जाइ छन्हि। दुविधा कवितामे कवि ऐ दुविधामे छथि जे अनुभवकेँ डुमा कऽ आ भावनाकेँ हेरा कऽ जे ओ प्रेममे पड़ला से सामाजिक अपराध अछि ! भद्रक बलि मे सगरमाथा आ मकालुकेँ नै छोड़बाक आ कोशी आ कर्णलीकेँ खा जेबाक बिम्ब कविताकेँ सार्थक करैत अछि। पहिने नुका कऽ मारैत छल आ आब देखा कऽ मारैत अछि, ओ राक्षस जकर हाथमे कानून छै। हमर मायकेँ बुद्धिए नै छै मे आजुक समाजक सत्य उद्घाटित होइत अछि जतऽ नीक लोक ओ अछि जे पाइबला अछि; नीक पद प्राप्ति करबा लेल घूस देमऽ पड़ै छै आ नमहर नेता बनबा लेल जनताकेँ धोखा देल जाइत अछि। नामी बनिञाकेँ.. कवितामे कवि नीक गबैयाक स्वर सुनला उत्तर महाँ बेकार पबै छथि। अन्नेसँ आनन्द कविता समाजक अंधविश्वासपर कटाक्ष अछि। टहटही इजोरियासँ कविक प्रश्न आ सौन्दर्यक परिभाषा इजोरिया कवितामे भेटैत अछि तँ मायकेँ प्रश्नमे सागरक पानिसँ बेशी नोर बहाबैत माएक दर्दकेँ कवि स्वर दै छथि। मातृभूमि

आ मिथिलाक जे छी तँ कविता मिथिला आ मैथिलीकेँ समर्पित अछि तँ हमर कनिञामे हास्यक संग दहेज आ अमेल विवाहक चर्चा होइत अछि। हमर आशमे बच्चाक आ नवीन शिक्षा पद्धति, डोनेशन आधारित एडमिशनक तँ हम आ हमरमे सेहो कवि सर-समाजक नीक-अधला वर्णन उठा कऽ कविता बना दै छथि। मूल्य अभिबृद्धि कर अर्थव्यवस्थाक वर्णन करैत अछि। हमर मीत जीवन-मृत्युक तँ सभामे आब केओ नहि अछि निक लोक एतऽ कहि कवि अपन व्यथा सोझाँ रखै छथि। बाटमे डेग-डेग पर गहुमन-धामन कवि देखै छथि, मुदा जीवनमे कविक आशावादिता घुरि अबै छन्हि।

ऐ संग्रहक पद्य भावना आ स्मृतिसँ जुड़ल अछि आ एकटा आन्तरिक भूचाल अनैत अछि। अपन ऐ पद्य संग्रहमे कवि प्रतिभाक जे प्रदर्शन देने छथि से हमरा सभ आसमे छी जे हुनकर आर संग्रह सेहो एतन्हि जे हमरा सभकेँ झमारि देत।

२

सन्तोष कुमार मिश्र केर कथा संग्रह पोसपुत मे ऐ कथाकारक सात गोट कथा पोसपुत, एकटा ब्यथा पत्रमे, जखन कनिञा भेलखिन बिमार, सिपाही, डाक्टर, भाग्य अप्पन-अप्पन आ दाग ऐमे सम्मिलित अछि। कथावस्तु प्रस्तुत करबासँ पहिने एकर अन्य पक्ष पर चर्च करब आवश्यक।

पहिल गप जे ऐ पुस्तकक समीक्षासँ एकर प्रारम्भ भेल अछि। श्री कालीकान्त 'तृषित', देपुरा रुपैठा, जनकपुर एकर सांगोपांग समीक्षा केलन्हि अछि, आ ई कथाकारक उच्च मानसिकता अछि जे ओ ऐ

समीक्षाकेँ उचित रूपमे लेलन्हि, कारण जौँ से नै रहैत तँ एकर ऐ रूपमे स्थान पोथीमे नै भेटैत।

दोसर गप जे ई पोथी एक दिससँ देखला उत्तर देवनागरीमे आ दोसर दिससँ देखला उत्तर मिथिलाक्षरमे लिखल बुझि पड़ैत अछि आ से अछियो।

आब पहिने तृषित जीक समालोचना देखै छी। ओ लिखै छथि जे कथाकारक कथामे पलायनवादी सोचक प्रधानता रहैत अछि, संगे ईहो गप उठबै छथि जे साहित्य सृष्टाकेँ तटस्थ प्रस्तोता हेबाक चाही आकि पथ प्रदर्शक, पलायनवादे हेबाक चाही आकि संघर्षक प्रेरणाश्रोत?

'पोसपुत'क विषयमे तृषित जी कहै छथि, जे ऐमे तीन पुस्त केर वर्णन अछि, आ राजा महेन्द्र आ राजा त्रिभुवनक समयमे भेल घटनाक वर्णन जोड़बाक अभिप्राय स्पष्ट नै अछि।

''एकटा व्यथा पत्रमे'' केर विषयमे ऋषित कहै छथि जे कालक गति, लोकक विवशता आ अनुभूतिक वर्णन अछि ऐमे।

तेसर कथा 'जखन कनिञा भेलखिन बिमार' केँ तृषित जी बिमार कथा घोषित करै छथि।

'सिपाही' कथामे ओइ पदक विवरण अछि जे विवाह दानमे प्राथमिकता पबै छल आ आब त्याज्य भऽ गेल अछि।

'डॉक्टर' कथाकेँ तृषितजी पलायनवादी सोचक पराकाष्ठा कहै छथि। तृषितजीक विचारेँ डॉक्टरकेँ मरैत दम तक रोगीकेँ बचेबाक प्रयास करबाक चाही।

''भाग्य अपन अपन'' भाग्य चक्र पर आधारित अछि। 'दाग'मे क्षणिक आवेशमे उठाओल गेल डेग, अपरिपक्व उम्रमे भेल प्रेम विवाह फेर तकरा बाद दोसराक संग भागि जाएब ई सभ पथभ्रष्टताक प्रतीक अछि।

पोसपुत आत्मकथात्मक शैलीमे लिखल गेल अछि, मुदा एकर समापन अकस्मात् होइत अछि, पोसपुतक किरदानीसँ आ मायक नैहर जेबासँ।

दोसर कथा पत्र शैलीमे अछि, जतऽ पोसपुत कथा जकाँ पात्र संतोष छथि। ऐ कथाक समापन सेहो बड्ड हड़बड़ीमे भेल अछि, आ घटनाक तारतम्य लेखकसँ पाठक धरि नै पहुँचि सकल।

ओहिना जखन कनिञा भेलखिन बिमारमे लेखक अपन कथ्य स्पष्ट नै कऽ सकला।

सिपाही कथामे सेहो पात्रक नाम संतोष छन्हि, मुदा कथ्य आत्मकथात्मक नै अछि। डॉक्टरकेँ देशमे सेवा करबाक पुरस्कार भेटलै प्रमाण-पत्रक रद्द होयब आ से ओकरा हेतु प्राणघातक सिद्ध भेल। भाग्य अपन-अपन पुरान खिस्सा कहबाक शैलीमे अछि, जे राजा देशमे सर्वेक्षण करेबा लेल राजकुमारकेँ पठबै छथि आ ई कथ्य नीक बनि पड़ल अछि। दाग कथा हड़बड़ीमे लिखल भाषित होइत अछि।

ऐ कथा संग्रहकेँ तृषित जी समीक्षाक संग भाषायी रूपसँ संपादित नै केलन्हि, ऐमे मानकताक अभाव अछि। प्रूफ रीडिंग सेहो नीक जकाँ नै भेल अछि। मानकताक हेतु विदेहक रचना लेखन स्तंभमे स्थान देल गेल अछि।केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर द्वारा सेहो मैथिली स्टाइल मैनुअलक निर्माण भऽ रहल अछि, आवश्यकता अछि जे नेपालक विद्वान लोकनि सेहो अपन मत मैथिली अकादमीक मानक निर्धारण शैलीक आधार पर बनाओल जा रहल शैली पर देथि, जइसँ ई सर्वग्राह्य हुअए।

मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी

मैथिली

बाबूकँ अपन ऐ राजनैतिक जमीनक अनुभव ओइ दलमे रहितो नै भेल हेतन्हि, जकरा कहियो ओ रामक संग पटेने रहथि। दलमे एकटा प्रभावी नेता कहै जाइबला बाबूकँ कहियो पिछड़ल वर्गक नेताक रूपमे प्रस्तुत नै कएल गेल। मुदा राजनैतिक जमीनसँ बेशी जोड़तोड़मे माहिर बाबू दलसँ निकालि देल जाइते प्रतिपक्षी-दलक नजरिमे एना चढ़ला जे हुनका प्रतिपक्षी-दल अपना दिससँ प्रदेशमे पिछड़ल वर्गक गद्दीपर विराजमान कऽ देलक।

एकरा सुरजापुरीमे (भारत दिसुका किशनगंज आदि क्षेत्रमे) एना लिखल/ बाजल जाएत:-

बाबूक अपना यहार राजनीतिक जमीनेर अहसास उस दलात रहले नी होबे। जहाक कोईखुन वहाय रामेर संगे सीचे छीले। दलात एक कद्दावर नेता कहा जनवार बाबू कोईखुन पिछवाड़ नेतार लखा पेश नी करील। लेकिन राजनीतिक से बेसी जोड़तोड़ोत माहिर बाबू दलार से निकलाते ही प्रतिपक्षी-दलाड़ नजरोत हिरंगदी चढ़ील कि वहाय पाटी अपनार बीती से प्रदेशोत पिछड़ार नेतार गद्दीत

विरजमान करील।

एकरा राजबंशी (नेपाल दिस सुरजापुरीकेँ राजबंशी भाषा कहल जाइ छै, झापा, सरनामति, चकमकी, मेची, ताधंडुवा आदिमे- राजबंशी आ सुरजापुरीमे मामूली अन्तर छै) मे एना लिखल बाजल जाएत:-

बाबूर अपनार इर राजनीतिक जमीनेर ऐहसास उखान दल त रहते हुए भी नी होल, जइर कोधोय उम्हा रामेर संगे छिले। दलात एक कद्दावर नेता कहवार बाबूर कोधोय पिछड़ा नेतार लाखा पेश नी करे। माने राजनीतिक जमीनत भेल्ला जोड़तोड़ माहिर बाबू दल से निकलाले ही प्रतिपक्षी-दलार नजर एनंतिंज चढ़िल कि अम्हा पार्टीत अपनार तरफ से प्रदेशत छट जातिर नेतारक गद्धी पर बठाइ दिल।

सुरजापुरी- भारतमे बिहारक किशनगंज आ पूर्णियाँ आदिमे गामे-गाम राजबंशी (महादलित) जाति द्वारा ई भाषा बाजल जाइत अछि। किशनगंजमे मुस्लिममे स्वामी जाइत खोट्टा आ सेवक जाति कुल्हिया कहल जाइ छथि। कुल्हिया जाति सेहो सुरजापुरी भाषा बजै छथि। राजबंशी आ जे आन जाति सभ कुल्हियाक आसपास रहै छथि से सुरजापुरी बजै छथि। ई भाषा मैथिली आ बांग्लाक मिश्रण अछि। कियो कियो बंगालक कूच बिहारक बाहे बंगाली आ नेपालक राजबंशी भाषाकेँ सेहो सुरजापुरी भाषा कहै छथि। किछु गोटेक मत छन्हि जे बांग्लादेशक लोकक भाषाक क्षेत्रीय भाषासँ मिश्रणक परिणामस्वरूप सुरजापुरी भाषा निकलल। पूर्णियाँ आ किशनगंजमे

एक्के गाममे कुल्हिया आ राजबंशी लोकनि सुरजापुरी बजै छथि, संथाल लोकनि संथाली बजै छथि, बंजारा लोकनि बंजारा भाषा बजै छथि जखन कि शेष सभ गोटे मैथिली बजै छथि। जँ मिथिला राज्यमे ऐ क्षेत्र सभकेँ लेल जाए तँ हुनका सभकेँ हुनकर भाषाक विकासक गारन्टी देबऽ पड़त। की मिथिला राज्य अभियानकर्मी सभक सोच एतऽ धरि पहुँचलनि अछि?

दूर्वाक्षत

यजुर्वेदक अध्याय २२ मंत्र २२ कें विश्वक पहिल राष्ट्रभक्ति गीत हेबाक गौरव प्राप्त छै। मुदा मिथिलामे दूभि-अक्षत छीटि कऽ ऐ मंत्रकें दूर्वाक्षत मंत्र बना देल गेल। बिहार स्टेट टेक्स्ट बुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लि. दूर्वाक्षत नामसँ नवम वर्गक किताब छपने अछि। ऐ पोथीमे मिथिला आ मैथिलीकें पछुएबाक षडयंत्र पूर्ण रूपसँ दृष्टिगोचर होइत अछि। अठारह पन्नामे मिथिलाक एकटा जिलाक स्थायी बन्दोबस्तीबला जमीन्दारक जीवनी पढ़ाओल गेल अछि!! मैथिली लिपिक संरक्षणपर डेढ़ पन्नाक पचास बर्ख पुरान लेख अछि जकर आइक तकनीकी युगमे कोनो महत्त्व नै छै, प्रवासी मैथिल समाज लेख पुरातनपंथी अछि आ अखुनका बच्चाकें ई हास्यास्पद बुझेतै, प्रवासक अर्थ, मैथिलक अर्थ आ प्रवासक कारण सभ किछु बदलि गेल अछि। तँ की ई बच्चा सभकें गुलामीक पाठ पढ़ेबाक षडयंत्र नै अछि? लोक नवम वर्गक हिन्दी, अंग्रेजी, बांग्ला आ आन भाषाक पोथीसँ एकर तुलना करैए तँ स्थिति आर भयावह भऽ जाइए। शिक्षकसँ आग्रह जे जमीन्दारक जीवनी बच्चा सभकें नै पढ़ाबथु, प्रश्न-पत्र सेट केनिहारसँ आग्रह जे ओ जमीन्दारक जीवनीबला अध्यायसँ प्रश्न नै पुछथि।

छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल

महेन्द्र मलंगिया

एक कमल नोरमे: माला पति राजेशकेँ सन्तान लेल दोसर बियाह लेल आग्रह करैए, मुदा पति मना करै छै, ओकर सासु ज्योतिषक संग मिलि मालाक दोसराक संग बेहोशीमे अश्लील फोटो लैए आ राजेशकेँ देखबैए। राजेश मालाकेँ घरसँ बहार कऽ दैए आ ज्योतिषीक पुत्रीक बियाह राजेशसँ भऽ जाइ छै। माला आत्महत्या करैए। **जुआयल कनकनी**: जीबू अपन माता-पिता द्वारा आत्महत्या लेल काकीकेँ दोषी मानैए मुदा बादमे जखन ओ बुझैए जे बैजू ओकर बहिनक शील भंग केलक। फेर बदला आ पश्चाताप। **ओकरा आँगनक बारहमासा**: बारह मासमे बोनिहारक जिनगीक विवरण।

छुतहा घैल महेन्द्र मलंगियाक नवीन नाटकक नाम छन्हि। ऐ छोटसन नाटकक भूमिका ओ दस पन्नामे लिखने छथि।

पहिने ऐ भूमिकापर आउ। हुनका कष्ट छन्हि जे रमानन्द झा ‘‘रमण’’ हुनका सुझाव देलखिन्ह जे ‘‘छुतहर घैल’’केँ मात्र ‘‘छुतहर’’ कहल जाइ छै। से ओ तीन टा गप उठेलन्हि- पहिल-

तोँ कहियो पोथी के लेखी,

हम कहियो अँखियन के देखी।’’

दोसर- यात्री जीक विलाप कविता-

काते रहै छी जनु घैल छुतहर

आहि रे हम अभागलि कत बड़।''

आ कहै छथि जे ओइ कविताक विधवा आ ऐ नाटकक कबूतरी देवीकेँ शिवक महेश्वरो सूत्र आ पाणिनीक दश लकारसँ (वैदिक संस्कृत लेल पाणिनी १२ लकार आ लौकिक संस्कृत लेल दस लकार निर्धारित केने छथि..खएर...) कोन मतलब छै?

तेसर ओ अपन स्थितिकेँ कापरनिकस सन भेल कहै छथि, जे लोकक कहलासँ की हेतै आ गाम-घरमे लोक ''छुतहर घैल'' बजिते छै!!

मुदा ऐ तीनू बिन्दुपर तीनू तर्क मलंगियाजीक विरुद्ध जाइ छन्हि। ''अँखियन देखी'' आ लोकव्यवहार ''छुतहर'' मात्र कहल जाइत देखलक आ सुनलक अछि, घैलचीपर छुतहरकेँ अहाँ राखि सकै छी? लोइटसँ बड़ैबमे पान पटाओल जाइ छै तखन मलंगियाजीक हिसाबे ओकरा ''लोइट घैल'' कहबै। घैल, सुराही, कोहा, तौला, छुतहर, लोइट, खापड़ि, कुड़नी, कुरवाड़, कोसिया, सरबा, सोबरना ऐ सभ बौस्तुक अलग नामकरण छै। फूलचन्द्र मिश्र ''रमण'' (प्रायः फूलचन्द्रजी ''छुतहा घैल'' शब्दक सुझाव हँसीमे देने हेथिन्ह, आ जँ नै तँ ई एकटा नव भाषाक नव शब्द अछि!!)क सुझाव मानैत मलंगिया जी ''छुतहर घैल'' केँ ''छुतहा घैल'' कऽ देलन्हि, ई ऐ गपक द्योतक जे हुनका गलतीक अनुभव भऽ गेलन्हि मुदा रमानन्द

झा ''रमण''क गप मानि लेने छोट भऽ जइतथि से खुट्टा अपना हिसाबे गाड़ि देलन्हि। आ बादमे रमानन्द झा ''रमण'' चेतना समितिसँ ओइ पोथीकेँ छपेबाक आग्रह केलखिन्ह आ, चेतना समिति मात्र २५ टा प्रति दैतन्हि तँ ओ अपन संस्थासँ एकरा छपबेलन्हि, ऐ सभसँ पठककेँ कोन सरोकार? आब आउ यात्रीजीक गपपर, यात्रीजीकेँ हिन्दी पाठकक सेहो ध्यान राखऽ पड़ै छलन्हि, हुनका मोनो नै रहै छलन्हि जे कोन कविता हिन्दीमे छन्हि, कोन मैथिलीमे आ कोन दुनूमे, से ओ छुतहर घैल लिखि देलन्हि, एकर कारण यात्रीजीक तुकबन्दी मिलेबाक आग्रहमे सेहो देखि सकै छी। आ फेर आउ कॉपरनिकसपर, जँ यात्री जी वा मलंगिया जी ''घैल छुतहर'', ''छुतहर घैल'' वा ''छुतहा घैल'' लिखिये देलन्हि तँ की नेटिव मैथिली भाषी छुतहरकेँ ''घैल छुतहर'', ''छुतहर घैल'' वा ''छुतहा घैल'' बाजब शुरू कऽ देत। से कॉपरनिकस सेहो मलंगियाजीक विरुद्ध छथिन्ह।

कॉपरनिकसक किंवदन्तीक सटीक प्रयोग मलंगियाजी नै कऽ सकला, प्रायः ओ गैलिलीयोसँ कॉपरनिकसकेँ कन्फ्यूज कऽ रहल छथि, कॉपरनिकसक सिद्धान्तक समर्थन पोप द्वारा भेल छल आ कॉपरनिकस पोप पॉल-३ केँ अपन हेलियोसेन्ट्रिक सिद्धान्तक चालीस पन्नाक पाण्डुलिपि समर्पित केने रहथि। खएर मलंगियाजीक विज्ञानक प्रति अनभिज्ञता आ विज्ञानक सिद्धान्तकेँ किवदन्तीसँ जोड़बाक सोचपर अहाँकेँ आश्चर्य नै हएत जखन अहाँ हुनकर खाँटी लोककथा सभक अज्ञानताकेँ अही भूमिकामे देखब।

''अली बाबा आ चालीस चोर''- सम्पूर्ण दुनियाँकेँ बुझल छै जे ई मध्यकालीन अरबी लोककथा अछि जे ''अरेबियन नाइट्स (१००१

कथा)'' मे संकलित अछि आ ओइमे विवाद अछि जे ई अरेबियन नाइट्समे बादमे घोसियाएल गेल वा नै, मुदा ई मध्यकालीन अरबी लोककथा अछि, ऐ मे कोनो विवाद नै अछि। बलबनक अत्याचार आदिक की की गप साम्प्रदायिक मानसिकता लऽ कऽ मलंगिया जी कहि जाइ छथि से हुनकर लोककथाक प्रति सतही लगाव देखार करैत अछि। ''मिथिला तत्व विमर्श'' वा ''रमानाथ झा''क पंजीक सतही ज्ञान बहुत पहिनहिये खतम कऽ देल गेल अछि, आ तँ ई लिखित रूपसँ हमरा सभक पंजी पोथीमे वर्णित अछि। गोनू झा विद्यापति सँ ३०० बर्ख पहिने भेला, मुदा मलंगियाजी ५० साल पुरान गप-सरक्काक आधारपर आगाँ बढ़ै छथि। हुनका बुझल छन्हि जे गोनूकेँ धूर्ताचार्य कहल गेल छन्हि, मुदा संगे गोनूकेँ महामहोपाध्याय सेहो कहल गेल छन्हि से हुनका नै बुझल छन्हि!! गोनू झाक समयमे मुस्लिम मिथिलामे रहबे नै करथि तखन ''तहसीलदारक दाढ़ी'' कतऽ सँ आओत। लोकक कण्ठमे छुतहर छै ओकरा ''छुतहा घैल'' कऽ दियौ, लोकक कण्ठमे ''कर ओसूली''करैबलाक दाढ़ी छै ओकरा ''तहसीलदार''क दाढ़ी कहि साम्प्रदायिक आधारपर मुस्लिमकेँ अत्याचारी करार कऽ दियौ, आ तेहेन भूमिका लिखि दियौ जे रमानन्द झा ''रमण'' आ आन गोटे डरे समीक्षा नै करता। एकटा पैदल सैनिक आ एकटा सतनामी (दलित-पिछड़ल वर्ग द्वारा शुरू कएल एकटा प्रगतिवादी सम्प्रदाय)क झगड़ासँ शुरू भेल सतनामी विद्रोह औरंगजेबक नीतिक विरोधमे छल आ ओइमे मस्जिदकेँ सेहो जराओल गेलै, मुदा गोनू झाक कर ओसूली अधिकारी मुस्लिम नै रहथि, लोककथामे ई गप नै छै, हँ जँ साम्प्रदायिक लोककथाकार कहल कथामे अपन *वाद* घोसियेलक आ लिखै काल बेइमानी केलक तँ तइसँ मैथिली लोककथाकेँ कोन

सरोकार? फील्डवर्कक आधारपर जँ लोककथाक संकलन नै करब तँ अहिना हएत।

महेन्द्र नारायण राम लिखै छथि जे लोककथामे जाति-पाइत नै होइ छै, मुदा मलंगियाजी से कोना मानता। भगता सेहो हुनकर कथामे एबे करै छन्हि, आ असल कारण जइ कारणसँ ई मलंगिया जीक नाटकक अभिन्न अंग बनि जाइत अछि से अछि हुनकर आनुवंशिक जातीय श्रेष्ठता आधारित सोच। हुनकर नाटकमे मोटा-मोटी अढ़ाइ-अढ़ाइ पन्नाक घीच तीरि कऽ सत्रहटा दृश्य अछि, जइमे पन्द्रहम दृश्य धरि ओ छोटका जातिक (मलंगियाजीक अपन इजाद कएल भाषा द्वारा) कथित भाषापर सवर्ण दर्शकक हँसबाक, आ भगताक भ्रष्ट-हिन्दीक माध्यमसँ छद्म हास्य उत्पन्न करबाक अपन पुरान पद्धतिक अनुसरण करै छथि। शोलकन्हक स्त्रीक साड़ी ठेहुनसँ ऊपर करेबामे, देखबामे हुनका आ हुनकर कट्टर सवर्ण दर्शककेँ हास्य रस देखाइ पड़ै छन्हि! कथाकेँ उद्देश्यपूर्ण बनेबाक आग्रह ओ सोलहम दृश्यसँ करै छथि मुदा बाजी तावत धरि हुनका हाथसँ निकलि जाइ छन्हि। आइ जखन संस्कृत नाटकोमे प्राकृत वा कोनो दोसर भाषाक प्रयोग नै होइत अछि, मलंगियाजीक भरतकेँ गलत सन्दर्भमे सोझाँ आनब संस्कृतसँ हुनकर अनभिज्ञताकेँ देखार करैत अछि आ भरत नाट्यशास्त्रपर हिन्दीमे जे सेकेण्डरी सोर्सक आधारपर लोक सभ पोथी लिखने छथि, तकरे कएल अध्ययन सिद्ध करैत अछि।

मलंगियाजीक ई कहब अछि जे नाटक जँ पढ़बामे नीक अछि तँ मंचन योग्य नै हएत, वा मंचन लेल लिखल नाटक पढ़बामे नीक नै लागत? हुनकर संस्कृत पाँतीकेँ उद्धृत करबासँ तँ यएह लगैत

अछि। जँ नाटक पढ़बामे उद्वेलित नै करत तँ निर्देशक ओकर मंचनक निर्णय कोना लेत? आ मंचीय गुण की होइ छै, अढ़ाइ-अढ़ाइ पन्नाक सत्रहटा दृश्य, तथाकथित निम्न वर्गकेँ अपमानित करैबला जातिवादी भाषा, भगताक ''बुझता है कि नहीं?'' बला हिन्दी आ ऐ सभक सम्मिलनक ई ''स्लैपस्टिक ह्यूमर''? आ जे एकर विरोध कऽ मैथिलीक समानान्तर रंगमंचक परिकल्पना प्रस्तुत करत से भऽ गेल नाटकक पठनीय तत्त्वक आग्रही आ जे पुरातनपंथी जातिवादी अछि से भेल नाटकक मंचीय तत्वक आग्रही!! की २१म शताब्दीमे मलंगियाजीक जाति आधारित वाक्य संरचना संस्कृत, हिन्दी वा कोनो आधुनिक भारतीय भाषाक नाटकमे (मैथिलीकेँ छोड़ि) स्वीकार्य भऽ सकत? आ जँ नै तँ ऐ शब्दावली लेल १८०० बर्ष पुरनका संस्कृत नाटकक गएर सन्दर्भित तथ्यकेँ, मूल संस्कृत भरत नाट्यशास्त्र नै पढ़ैबला नाटककार द्वारा, बेर-बेर ढालक रूपमे किए प्रयुक्त कएल जाइए? माथपर छिट्टा आ काँखमे बच्चा जँ कियो लेने अछि तँ ओ निम्न वर्गक अछि? ओकर आंगनक बारहमासामे ओ ऐ निम्न वर्गकेँ राड़ कहै छथि, कएक दशक बाद ई धरि सुधार आएल छन्हि जे ओ आब ओइ वर्गकेँ निम्न वर्ग कहि रहल छथि, ई सुधार स्वागत योग्य मुदा ऐ दीर्घ अवधि लेल बड़ड कम अछि। बबाजी कोना कथामे एलै आ गाजा कोना एलै आ ओइसँ बगियाक गाछक बगियाक कोन सम्बन्ध छै? मलंगियाजी अपन जाति-आधारित वाक्य संरचना, आ भ्रष्ट-हिन्दी मिश्रित वाक्य रचना कोना घोसिया सकितथि जँ भगता आ निम्न वर्गक छद्म संकल्पना नै अनितथि, ई तथ्य ओ बड़ड चतुराइसँ नुकेबाक प्रयास करै छथि, आ तँ ओ मेडियोक्रिटीसँ आगाँ नै बढ़ि पबै छथि। आ तँ हुनकामे ऐ नाट्य-कथाकेँ उद्देश्यपूर्ण बनेबाक आग्रह तँ छन्हि मुदा

सामर्थ्य नै आबि पबै छन्हि।

साहित्यमे लोक-तत्व: गाथा/ नृत्य/ नाटक

लोकगाथा/ नृत्य/ संगीत आदिक ऐतिहासिक वर्णन

मोहनजोदड़ो सभ्यतासँ प्राप्त कांस्य प्रतिमा नृत्यक मुद्राक संकेत दैत अछि, वर्तमान कथक नृत्यक ठाठ मुद्रा सदृश, दहिन हाथ ४५ डिग्रीक कोण बनेने आ वाम हाथ वाम छाबापर, संगे वाम पएर कने मोड़ने। ऋगवेदक शांखायन ब्राह्मणमे गीत, वाद्य आ नृत्य तीनूक संगे-संग प्रयोगक वर्णन अछि, ऐतरेय ब्राह्मणमे ऐ तीनूक गणना दैवी शिल्पमे अछि। ऋगवेद १०.७६.६ मे उषाक स्वर्णिम आभा कविकेँ सुसज्जित ऋषिक स्मरण करबै छन्हि। ऋगवेदमे लोक नृत्यक (प्रान्चो अगाम नृतये) सेहो उल्लेख अछि। महाव्रत नाम्ना सोमयागमे दासी सभक (३-६ दासीक) सामूहिक नृत्यक वर्णन अछि। शांखायन १.११.५ मे वर्णन अछि जे विवाहमे ४-८ सुहागिनकेँ सुरा पियाओल जाइ छल आ चतुर्वार नृत्य लेल प्रेरित कएल जाइ छल। वैदिक साहित्यमे विवाह विधिमे पत्नीक गायनक उल्लेख अछि। सीमन्तोन्नयन विधिमे पति वीणावादकसँ सोमदेवक वादयुक्त गान करबाक अनुरोध करै छथि। अथर्ववेदमे वसा नाम्ना देवताक नृत्य ऋक्, साम आ गाथासँ सम्बन्धित हेबाक गप आएल अछि, सोमपानयुक्त ऐ नृत्यमे गन्धर्व सेहो होइ छला, से वर्णित अछि। अथर्ववेद १२.१.४१ मे गीत, वादन आ नृत्यक सामूहिक ध्वनिक वर्णन अछि। वैदिक कालमे साम संगीतक अलाबे गाथा आ नाराशंसी नाम्ना लौकिक गाथा-संगीतक सेहो प्रचलन छल।

लोकगाथाक तत्व: भाषाक स्वरूप मौखिक रहबाक कारणसँ

गतिशील अछि। काल निर्धारण सेहो अनुमानपर आधारित होइत अछि।

गाथा मेला, हाट बजार, विशिष्ट लोकक घर, सार्वजनिक स्थलपर होइत अछि - से जै जातिक लोकदेवता रहै छथि तकर अतिरिक्त दोसरो जातिक श्रोता रहैत छथि।

सर्जक आ श्रोताक प्रत्यक्ष संबंध रहैत अछि, श्रवण तत्वक कारण कथाक अनायास अलंकरण भेटैत अछि, मुदा सभटा साहित्यिक लक्षण जेना सर्ग, छन्द, नाट्य-संधि आ वस्तु निर्देशक अभाव रहैत अछि। वस्तु संगठन सुगठित नै रहैत अछि। गारिक प्रयोग आ मद्यपानक यत्र-तत्र वर्णन रहैत अछि।

ग्रामीण व्यवस्थामे चोरक स्थान आ ओकर वर्णन, स्थानीय देवी-देवताक चरचा आ जातीय अस्मिताक प्रयोग होइत अछि। कथा-गायक आशु कवि होइ छथि- एकटा ढ़ाँचापर अपन हिसाबसँ ओ हेर-फेर कऽ गबै छथि प्रारम्भमे ईश्वर, वन्दना आ बीच-बीचमे ईश्वरसँ क्षमायाचना, ई सभ गायन क्षमता स्थिर करबाक उद्देश्यसँ कएल जाइत अछि।

घण्टासँ ऊपर गायनक बीचमे हुक्का-चिलम, मद्यपान, परिवेशक वर्णन होइत अछि। लोरिक मनुआर श्रोताक सोझाँ कएल जाइत अछि मुदा सल्हेसक कथा आराध्य देवक समक्ष।

दैवी शक्ति द्वारा युद्धमे नायकक सहायता होइत अछि।

नायक सेहो गारिक प्रयोग करैत अछि।

महाकाव्यक पात्रक नाम आ आन तत्वक ग्रहण जेना महाभारतक जुआ आदि प्रयोगमे आनल जाइत अछि।

निष्कर्ष: सभ साहित्यिक विधा दू प्रकारक होइत अछि। लोकधर्मी आ नाट्यधर्मी, लोकधर्मी भेल ग्राम्य आ नाट्यधर्मी भेल शास्त्रीय उक्ति। ग्राम्य माने भेल कृत्रिमताक अवहेलना मुदा अज्ञानतावश किछु गोटे एकरा गाममे होइबला नाटक बुझै छथि। लोकधर्मीमे स्वभावक अभिनयमे प्रधानता रहैत अछि, लोकक क्रियाक प्रधानता रहैत अछि, सरल आंगिक प्रदर्शन होइत अछि, आ ऐमे पात्रक, से ओ स्त्री हुअए वा पुरुष, तकर संख्या बड़ड बेसी रहैत अछि। नाट्यधर्मीमे वाणी मोने-मोन, संकेतसँ, आकाशवाणी इत्यादि, नृत्यक समावेश, वाक्यमे विलक्षणता, रागबला संगीत, आ साधारण पात्रक अलाबे दिव्य पात्र सेहो रहै छथि। कोनो निर्जीव/ वा जन्तु सेहो संवाद करऽ लगैए, एक पात्रक डबल-ट्रिपल रोल, सुख दुखक आवेग संगीतक माध्यमसँ बढ़ाओल जाइत अछि।

वैदिक आख्यान, जातक कथा, ऐशप फेबल्स, पंचतंत्र आ हितोपदेश आ संग-संग चलैत रहल लोकगाथा सभ। सभ ठाम अभिजात्य वर्गक कथाक संग लोकगाथा रहिते अछि।

स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८)

स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र ''यात्री'' केर जन्म १९११ ई. मे अपन मामागाम सतलखामे भेलन्हि जे हुनकर पैतृक गाम तरौनीक लगेमे अछि। यात्री जी अपन गामक संस्कृत पाठशालामे पढ़ऽ लगला, फेर वाराणसी आ कलकत्ता सेहो गेला आ संस्कृतमे ''साहित्य आचार्य'' क उपाधि प्राप्त केलन्हि। तकर बाद ओ कोलम्बो लग कलनिआ स्थान गेला, पाली आ बुद्ध धर्मक अध्ययनक लेल। ओतऽ ओ बौद्ध धर्ममे दीक्षित भऽ गेला आ हुनकर नाम पड़लन्हि - नागार्जुन। मुदा बादमे पुनः गाममे यज्ञोपवीत कऽ ब्राह्मण धर्ममे घुरला!

यात्रीजी मार्क्सवादसँ प्रभावित छला, १९२९ ई. क अन्तिम मासमे मैथिली भाषामे पद्य लिखब शुरू केलन्हि। १९३५ ई.सँ हिन्दीमे सेहो लिखऽ लगला। स्वामी सहजानन्द सरस्वती आ राहुल सांकृत्यायनक संग ओ किसान आन्दोलनमे संलग्न रहला आ १९३९ सँ १९४१ धरि ऐ क्रममे विभिन्न जेलक यात्रा केलन्हि। हुनकर बहुत रास रचना जे महात्मा गाँधीक मृत्युक बाद लिखल गेल छल, प्रतिबन्धित कऽ देल गेल। भारत-चीन युद्धमे कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा चीनकेँ देल समर्थनक बाद कम्युनिस्ट पार्टीसँ मतभेद भेलन्हि। जे.पी. अन्दोलनमे भाग लेबाक कारण आपातकालमे हिनका जेलमे ठूसि देल गेल। यात्रीजी हिन्दीमे बाल साहित्य सेहो लिखलन्हि। हिन्दी आ मैथिलीक अतिरिक्त बांग्ला आ संस्कृतमे सेहो हिनकर लेखन आएल। मैथिलीक दोसर साहित्य अकादमी पुरस्कार १९६९ ई. मे यात्रीजीकेँ हुनकर कविता संग्रह ''पत्रहीन नग्न गाछ''पर भेटलन्हि। १९९४ ई.मे ओ साहित्य अकादमीक फेलो -हिन्दी आ मैथिली कविक रूपमे- भेला।

यात्रीजी जखन २० वर्षक छला तखन १२ वर्षक कान्यासँ हिनकर विवाह भेल। हिनकर पिता गोकुल मिश्र अपन समाजमे अशिक्षितक गनतीमे रहथि आ चरित्रहीन छला। यात्रीजीक बच्चाक स्मृतिमे छन्हि जे हुनकर पिता कोना हुनकर अस्वस्थ आ ओछाओन धएल मायपर कुरहड़ि लऽ मारबा लेल उठल छला, जखन ओ बेचारी हुनकासँ कुमार्ग छोड़बाक गुहारि कऽ रहल छली। यात्रीजी मात्र छह वर्षक छला जखन हुनकर माए हुनका छोड़ि प्रयाण कऽ गेली। यात्रीजीकेँ अपन पिताक ओ चित्र सेहो रहि-रहि सतबै छलन्हि जइमे हुनकासँ मातृवत प्रेम करएवाली हुनकर विधवा काकीक, हुनकर पिताक अवैध सन्तानक गर्भपातमे, लगभग मृत्यु भऽ गेल छलन्हि। के एहन पाठक हएत जे यात्रीजीक हिन्दीमे लिखल ''रतिनाथ की चाची'' पढ़बा काल बेर-बेर नै कानल हएत। पिता-पुत्रक ई घमासान एहन बढ़ल जे पुत्र अपन बाल-पत्नीकेँ पिता लग छोड़ि वाराणसी प्रयाण कऽ गेला।

कर्मक फल भोगथु बूढ़ बाप
हम टा संतति, से हुनक पाप
ई जानि ह्वैन्हि जनु मनस्ताप
अनको बिसरक थिक हमर नाम
माँ मिथिले, ई अंतिम प्रणाम! (काशी/ नवंबर १९३६)

काशीसँ श्रीलंका प्रयाण, ''कर्मक फल भोगथु बूढ़ बाप'' ई कहि यात्रीजी अपन पिताक प्रति सभ उद्गार बाहर कऽ दै छथि। १९४१ ई. मे यात्रीजी अपन पत्नी, अपराजिता, लग आबि गेलथि।

१९४१ ई. मे यात्रीजी दू टा मैथिली कविता लिखलन्हि- ‘‘बूढ़ वर’’ आ ‘‘विलाप’’ आ एकरा पाम्फलेट रूपमे छपबा कऽ ट्रेनक यात्री लोकनिकेँ बेचलन्हि। जीविकाक ताकिमे सौँसे भारत दुनू प्राणी घुमला। पत्नीक जोर देलापर बीच-बीचमे तरौनी सेहो घुमि कऽ आबथि। आ फेर आएल १९४९ ई., अपना संग लेने यात्रीजीक पहिल मैथिली कविता-संग्रह ‘‘चित्रा’’। १९५२ ई. धरि पत्नी संगमे घुमैत रहलथिन्ह, फेर तरौनीमे रहऽ लगली। यात्रीजी बीच-बीचमे आबथि। अपराजितासँ यात्रीजीकेँ छह टा सन्तान भेलन्हि, आ सभक भार पत्नी अपना कान्हपर लेने रहली। यात्रीजी दमासँ परेशान रहैत रहथि।

हम जखन दरभंगामे पढ़ैत रही तँ यात्रीजी ख्वाजा सरायमे रहै छला। हमरा मोन अछि जे मैथिलीक कोनो कार्यक्रममे यात्रीजी आएल छला आ कम्युनिस्ट पार्टीबला सभ एजेन्डा छीनि लेने छल। अगिले दिन यात्रीजी अपनाकेँ ओइ धोधा-धोखीमे गेल सभाक कार्यवाहीसँ हटा लेलन्हि। एमर्जेन्सीमे जेल गेलाह तँ आर.एस.एस.क कार्यकर्ता लोकनिसँ जेलमे भेँट भेलन्हि आ जे.पी.क सम्पूर्ण क्रान्तिक विरुद्ध सेहो जेलसँ बाहर एलाक बाद लिखलन्हि यात्रीजी। यात्रीजी मैथिलीमे बैद्यनाथ मिश्र "यात्री" आ हिन्दीमे ‘‘नागार्जुन’’ क नामसँ रचना लिखलन्हि।

‘‘पृथ्वी ते पात्रं’’ १९५४ ई. मे ‘‘वैदेही’’मे प्रकाशित भेल छल, हमरा सभक मैट्रिकक सिलेबसमे छल। यात्रीजी लिखै छथि-

‘‘आन पाबनि तिहार तँ जे से। मुदा नबान निर्भूमि परिवारकेँ देखार कए दैत छैक। से कातिक अबैत देरी अपराजिता देवीक घोघ लटकि जाइन्हि। कचोटेँ पपनियो नहि उठा होइन्ह ककरो दिश! बेसाहल अन्नसँ कतउ नबान भेलइए’’?

यात्री एकटा मिथ छथि? की यात्री एकटा मिथ छथि? ओ मुख्यतः हिन्दीक लेखक रहथि, मैथिलीमे ओ हिन्दीक दशमांशो नै लिखलन्हि। जे लिखबो केलन्हि तइमे सँ बेशी स्वयं द्वारा हिन्दीसँ अनूदित। मैथिली आ मिथिला क्षेत्रक शब्दावली आ संस्कृति हिन्दीक लोककेँ अबूझ आ तेँ रुचिगर लगलै मुदा तइमे सेहो ढेर रास कमी रहै जेना एकटा उदाहरण यात्री समग्रसँ। यात्री समग्र- पृ.२२० जेठ सुदी चतुर्दशी कऽ रहनि पीसाक वर्षी। पहिले वर्षी..पृ.. २२२- ..कहाँ जे एको दिनक खातिर जाइ, कर्ता बना, अषाढ़ बढ़ि तृतियाक तिथिपर पहिल।

एहेन बेमारी आनो मैथिली-हिन्दी लेखकमे छन्हि। ई ऐतिहासिक लिखित तथ्य अछि जे गोनू झा १०५०-११५० मे भेला मुदा उषा किरण खान विद्यापतिसँ हुनकर शास्त्रार्थ करबै छथि (हिन्दीक ऐतिहासिक उपन्यास सिरजनहार, भारतीय ज्ञानपीठ, मे) वीरेन्द्र झा कहै छथि जे गोनू झा ५०० साल पहिने भेला आ तारानन्द वियोगी गोनू झा केँ ३०० साल पहिने भेल मानै छथि (दुनू गोटेक हिन्दीमे प्रकाशित गोनू झापर पोथी, क्रमसँ राजकमल प्रकाशन आ नेशनल बुक ट्रस्टसँ प्रकाशित) तेँ विभा रानीक गोनू झापर हिन्दी पोथी (वाणी प्रकाशन) मे कुणाल गोनू झाकेँ भव सिंहक राज्यमे (१४म शताब्दी) भेल मानै छथि। जखन पंजीमे उपलब्ध लिखित अभिलेखन गोनू झाकेँ विद्यापतिसँ दस पीढ़ी पहिने अभिलेखित करैत अछि, तखन ई हाल अछि। मिथिला क्षेत्रक शब्दावली आ संस्कृतिक- जे हिन्दीक लोककेँ अबूझ आ तेँ रुचिगर लगै छै- तथ्यमे ई मैथिली-हिन्दी लेखक सभ अपन अज्ञानतासँ ढेर रास गलत तथ्य पड़सि रहल छथि, साम्प्रदायिक लेखक लोकनि गोनू

झाक कथामे मुस्लिम तहसीलदारक अत्याचार घोंसिया रहल छथि (मुस्लिम लोकनि मिथिलामे गोनूक समए मे रहबे नै करथि)!

यात्री समग्रमे बलचनमा नै लेल गेल कारण ओ हिन्दीक कृति अछि, ओकर मैथिली अनुवाद सेहो भ्रष्ट अछि लगैए जेना अदहा अनुवाद केलाक बाद मैथिली लेल हुनका लग समयाभाव भऽ गेल होइन्ह। यात्री समग्रमे नवतुरिया लेल गेल, ओहो मूल हिन्दी अछि, किए मूल मैथिली कहि कऽ लेल गेल तकर जबाब सम्पादक देता। मैथिलीमे प्रूफ रीडरकेँ सम्पादक कहेबाक सख छन्हि आ लोक ग्रियर्सन धरिक रचनाक रिप्रिन्ट अपन सम्पादकत्वमे करबा रहल छथि। एकटा दोसर उदाहरणमे पी.सी.रायचौधुरीक दरभंगा जिला गजेटियरक तेसर अध्यायक चारिटा उपशीर्षकक अंग्रेजी रचनाकेँ मोहन भारद्वाज अपन सम्पादकत्वमे रमानाथ झा रचनावलीमे -किनको कहलासँ सत्य मानि- रमानाथ झाक रचना मानि घोसिया देलन्हि, जखन कि लिखित आ वैयाकरणिक शिल्पक आधारपर ओ रचना पी.सी.रायचौधुरीक अछि। यात्री स्वयं कहै छथि जे ओ मैथिली बलचनमा पहिने लिखलन्हि आ तकर हिन्दीमे अनुवाद केलन्हि। मुदा हिन्दी बलचनमामे ओ ई नै लिखै छथि आ ओकरा हिन्दीक पहिल आंचलिक उपन्यास कहै छथि। ई बेमारी आइयो मैथिलीक लेखककेँ गरोसने अछि आ यात्री जीक ऐ मे सायास-अनायास योगदान दुखदायी अछि।

राजकमल यात्रीकेँ अमर-सुमन सन पुरान ढर्राक कवि कहै छथि, प्रायः यात्रीक छन्दक प्रति सजगतासँ राजकमलकेँ ई भ्रम भेल छलन्हि।

रामविलास शर्मा आ यात्रीजीक, मैथिली बोली अछि आकि भाषा, ऐ

विषयक सम्वादक भाषा विज्ञानक दृष्टिएँ कोनो खास महत्व नै छै। रामविलास शर्मा बहुत पैघ साम्यवादी चिन्तक रहथि आ हुनकर कविता, आलेख सँ बेसी प्रभावी हुनकर कएक खण्डक भारतक इतिहास विवेचन अछि। मैथिलीकेँ भाषाक रूपमे स्थापित करबामे सुभद्र झा, रामावतार यादव, योगेन्द्र यादव, सुनील कुमार झा आदि भाषाशास्त्री काज केने छथि, रामविलास शर्मा आ यात्रीजीक सम्वाद गपाष्टक मात्र अछि।

चतुरानन मिश्र आ जगदीश प्रसाद मंडल कम्यूनिस्ट आन्दोलनसँ जुड़ल छथि, प्रायोगिक रूपमे, पार्टी स्तरपर, मुदा हिनकर दुनू गोटेक उपन्यास देखला उत्तर हमरा ई कहबामे कनेको कष्ट नै होइत अछि जे जइ रूपमे यात्री आ धूमकेतु मार्क्सवादक बैशाखी लऽ उपन्यासकेँ ठाढ़ करै छथि तकर बेगरता ऐ दुनू उपन्यासकारकेँ नै बुझना जाइ छन्हि। मार्क्सवादक असल अर्थ हिनके दुनूक रचनामे भेटत। कतौ पार्टीक नाम वा विचारधाराक चर्च नै मुदा जे असल *डायलेक्टिकल मैटेरियलिज्म* छै तकर पहिचान, जिनगीक महत्वपर विश्वास, द्वन्द्वात्मक पद्धतिक प्रयोग आ ई तखने सम्भव होइत अछि जखन लेखक दास कैपिटल सहित मार्क्सवादक गहन अध्ययन करत आ प्रायोगिक मार्क्सवादपर कताक दशक चलत।

आ अन्तमे यात्रीजीक संस्कृत पद्य:-

वासन्ती कनकप्रभा प्रगुणिता

पीतारुर्णैः पल्लवैः

हेमाम्भोजविलासविभ्रमरता

दूरे द्विरेफाः स्ता

यैशसण्डलकेलिकानन कथा

विस्मरिता भूतले

छायाविभ्रमतारतम्यतरलाः

तेऽमी ‘‘चिनार’’ द्रुमाः॥

-बसंतक स्वर्णिम आभा द्विगुणित भऽ गेल अछि पीअर-लाल कोपड़सँ। स्वर्णकालक भ्रममे भौरा सभ एकरासँ दूर-दूर रहैत अछि। नन्दनवनक विहारकेँ जे पृथ्वीपर बिसरा दैत अछि, छाह झिलमिल घटैत-बढ़ैत जकर डोलब अछि चंचल आ तरल। ओइ चिनारकेँ हम देखने छी अडिग भेल ठाढ़।

हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली

हिन्दी जै हिसाबे अपन भूगोल बढ़ेलक अछि ओइ हिसाबे ओकर शब्दावली नै बढ़ल छै, से हिन्दीसँ डरबाक कोनो प्रश्ने नै। हिन्दीक साम्राज्यवाद अंग्रेजीक साम्राज्यवादक स्थान लऽ लेने अछि आ से सभ हिन्दी दिवसपर छोट भाषाकेँ गीरबाक ओकर प्रवृत्तिपर बहस नै रोकल जा सकत। लैटिन/ दक्षिण अमेरिकाक सभटा मूल भाषा खतम भऽ गेल आ ओकर स्थान स्पेनिश आ पोर्तूगीज लेलक। स्पेन अजटेक सभ्यताकेँ खतम केलक, ओकर सभ चेन्हासी मेटा देलक, मुदा मेक्सिको तकर पश्चातापमे विश्वकप फुटबॉलक आयोजन लेल जे स्टेडियम बनेलक तकर नाम अजटेक स्टेडियम रखलक।

डेनमार्कक शब्दकोष बड विस्तृत छै, प्रायः २३ वोल्यूम सँ बेशीमे छै, आप्रवासी प्रायः ओकर नागरिकता लेल लै जाएबला परीक्षामे डेनिस भाषामे अनुत्तीर्ण भऽ जाइ छथि, एकटा महिला जे डेनिससँ विवाह केने रहथि हुनकर बच्चा डेनमार्कक नागरिक भऽ गेल मुदा ओ कहलन्हि जे भाषा पेपर बड्ड कठिन छै, डेनिस सेहो ओइमे अनुत्तीर्ण भऽ जाइ छथि, जनसंख्या वा क्षेत्रफलक छोट रहब डेनिस वोकाबुलेरी लेल हानिकारक नै भेलै।

साहित्यकक मूल सरोकार अछि विषय-वस्तुसँ। मुदा शब्दक अकाल जँ साहित्यकारेक मध्य रहत तँ ओ की संप्रेषण करता, विषय-वस्तुकेँ कोना फरिछा पेता। जे हाल हिन्दी साहित्यक अछि सएह मैथिलीक भऽ जाएत। शब्दावलीक ग्राह्यता नेटिव स्पीकरक गाममे बाजल जाएबला शब्दावली निर्धारित करत, संस्कृतिसँ दूर प्रवासी द्वारा बाजल जाएबला शब्दावली नै। आ जँ संस्कृतिसँ कटल प्रवासी द्वारा बाजल शब्दावलीकेँ आधारभूत बनाएब तँ नीक साहित्य कोड़ि

कऽ निकालल बुझाएत आ गोलैसी आधारित समीक्षकक समीक्षित साहित्य नेचुरल बुझाएत।

शास्त्रीय अनुशासन लेखक लेल अछि, पाठक लेल नै। लेखक जँ गजल, रोला, दोहा, कुण्डलिया शास्त्रीय आधारपर लिखता तखने पाठककेँ नीक लगतै, जँ लेखक मेहनतिसँ दूर भागता तँ साहित्यिक पाठकीयता घटत। शास्त्रक बान्ह तोड़बाक विधि सेहो शास्त्रक मध्य छै, सावित्री मंत्र जँ शास्त्रीय कट्टरतासँ देखी तँ ओ गायत्री छन्दमे नै छै, मुदा हम सभ ओकरा गायत्रीमे मानै छी कारण गणना पुरेबालेल स्वः केँ सुवः कएल गेलै।

दरभंगाक मजहर इमामकेँ "पिछले मौसम का फूल"पर उर्दू लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार देल गेल। ऐ संग्रहमे गजल (बहरयुक्त) ५५ टा आ आजाद गजल (बे-बहर) ३ टा छै, मुदा पाठक हुनका गजल लेल मोन राखने छन्हि, ओकरा मतलब नै छै जे, जे गजल ओकरा नीक लगलै से बहरमे छै वा नै, ओकरा तँ नीक लगलै। आ की ई संयोग छी जे बहरयुक्त गजले ओकरा नीक लगलै? मजहर इमामकेँ उर्दू साहित्य आजाद गजलकेँ स्थापित केनिहारक रूपमे मोन रखने अछि।

लेखकक आइडियोलोजी पानिमे नून सन हेबाक चाही, पानिमे तेल सन नै आ ऐपर हम पहिनहियो लिखने छी। यात्री आ धूमकेतुकेँ कम्यूनिस्ट पार्टीक सोंगरक आवश्यकता पड़लन्हि कारण वामपंथ ‘‘नीक सेन्ट’’ आ ‘‘डिजाइनर वीयर’’क भाँति हिनका सभ लेल फैशन छल, से बलचनमा कांग्रेस आ समाजवादी पार्टीसँ हटलाक बाद कम्यूनिस्ट आ लालझंडामे सभ समस्याक समाधान तकैए,

ओकरा यात्रीजी सभ समाधान ओइमे दै छथिन्ह। धूमकेतुक पात्र लेल सेहो लाल झंडा लक्ष्मण बूटी अछि। मुदा ई लोकनि कम्यूनिस्ट मूवमेन्टसँ -फैशनक अतिरिक्त- जुड़ल नै छथि तँ हिनकर साहित्यमे आइडियोलोजी तेल सन सहसह करैए। आब आउ चतुरानन्द मिश्र आ जगदीश प्रसाद मण्डलक मैथिली साहित्यपर। चतुरानन्द मिश्रक उपन्यासमे वा जगदीश प्रसाद मण्डलक मैथिली साहित्यमे कतौ लालझंडा वा कम्यूनिस्ट पार्टीक चर्च अहाँ देखने छी? एतऽ जे भेटत से अछि असल वामपंथी द्वन्द्वात्मक पद्धति, जीवनपर विश्वास, माने आइडियोलोजी नून सन मिलल। आ की ई मात्र संयोग अछि जे चतुरानन्द मिश्र जीवनक प्रारम्भमे साहित्य लिखै छथि आ जगदीश प्रसाद मण्डल जीवनक उत्तरार्धमे, अन्तिम केस खतम भेलाक बाद? जगदीश प्रसाद मण्डलक गाम बेरमाक जमीन्दार ठाकुर जी हमर पितयौत भाइकेँ कहलखिन्ह जे जगदीश प्रसाद मण्डल सत्य हरिश्चन्द्र छथि, हमर गामक गौरव छथि। आ से तखन, जखन जगदीश प्रसाद मण्डल कम्यूनिस्ट मूवमेन्टक नेतृत्व केलन्हि दसो बेर जेल गेला, केस हुनके सभसँ लड़लन्हि आ तकर परिणाम भेल जे बेरमामे आइ दस बीघासँ पैघ जोत ककरो नै छै। आइयो ओ फूसक घरमे रहै छथि आ तीन बजे उठि कऽ डिबिया लेस कऽ मैथिली साहित्य लिखै छथि आ हुनकर बेटा हुनका आइ धरि लिखैत नै देखने छथिन्ह, जे कखन ओ लिखै छथि, भोगेन्द्र झाक नेतृत्वमे ओ प्रण लेने रहथि जे जखन बाजब, सभ मैथिलीमे बाजब। से हुनकर बेटा हुनका मैथिलीक अतिरिक्त दोसर भाषा बजैत नै सुनने छथिन्ह। आ सएह कारण अछि जे हुनकर विषय-वस्तु नवीन होइत अछि, हुनकर शब्दावली नेटिव स्पीकरक शब्दावली अछि, जे ओइ विषय-वस्तुकेँ

फरिछेबामे सफल होइत अछि आ आवश्यक अछि। हुनकर लोक, हुनकर गाछ-बृच्छ, हुनकर फूलपात, हुनकर खेत खलिहान असल अछि, जमीनी अछि, पतालसँ कोड़ि कऽ निकालल नै। आ हुनकासँ प्रेरणा लऽ प्रवासमे रहनिहार नव साहित्यकार मैथिली लिखबासँ पहिने मिथिलाक इतिहास-भूगोल आ संस्कृतिक ज्ञान प्राप्त करथु, तखने हुनकर साहित्य फराक भऽ सकतन्हि। राधाकृष्ण चौधरीक ‘‘मिथिलाक इतिहास’’ आ जगदीश प्रसाद मण्डलक ‘‘गामक जिनगी’’ पढ़ू।

आयातित शब्दावलीबला साहित्य कोना मैथिली पाठक घटेलकै; आ खाँटी शब्दावली कोना मैथिली साहित्यक स्तर ऊँच केलकै, आ पाठक बढ़ेलकै, ई आब ककरोसँ नुकाएल नै अछि।

उपन्यास लेल दू-दू बेर बूकर पुरस्कार आ साहित्यक लेल नोबल पुरस्कारसँ सम्मानित जॉन मैक्सवेल कुट्सी भाषाक सन्दर्भमे कहने रहथि जे अफ्रीकान्स आ अंग्रेजी भाषाक द्विभाषिया माहौलमे हुनकर अंग्रेजी लेखन हुनका लेल बहुत रास संप्रेषण सम्बन्धी समस्या सोझाँ अनैत छल। ओ अफ्रीकान्ससँ अंग्रेजीमे तकर प्रतिकार स्वरूप ढेर रास अनुवाद केलन्हि। मुदा मैथिलीक साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता (आ किछु ऐ पुरस्कार लेल ललाइत आकांक्षी लोकनि), जे तथाकथित साहित्यकार लोकनि छथि, से जइ प्रकारेँ मैथिली आ हिन्दी दुनूक डोरी पकड़ि माहौल खराप करबामे लागल छथि, से जॉन मैक्सवेल कुट्सीसँ किछु शिक्षा ग्रहण करता, से मात्र आशा कऽ सकै छी।

अमेरिकामे ३५० शब्दक अंग्रेजीक "हाइ प्रेक्वेन्सी" आ ३५००

"बेसिक वर्ड लिस्ट" हाइ स्कूलक छात्र लेल छै जे क्रमशः कॉलेज आ ग्रेजुएट स्कूल (ओतए पोस्ट ग्रेजुएटकेँ ग्रेजुएट स्कूल कहल जाइ छै) धरि पहुँचलापर दुगुना (गएर भाषा फेकल्टीक छात्र लेल) भऽ जाइ छै। साहित्यक विद्यार्थी/ साहित्यकार लेल ऐ सँ दस गुणा अपेक्षित होइत अछि। हिन्दीमे -अपवाद स्वरूप आंचलिक पोथी छोड़ि- हिन्दीक कवि आ उपन्यासकार अठमा वर्गक २००० शब्दक शब्दावलीसँ साहित्य (पद्य, उपन्यास) रचै छथि आ मैथिलीक किछु साहित्यकार ऐ बेसिक २००० शब्दक वर्ड लिस्टकेँ मैथिलीमे आयात करऽ चाहै छथि, आ ओतबे धरि सीमित रहऽ चाहै छथि, जखन जापानी अल्फाबेटक चेन्ह ५०० धरि पहुँचि जाइत अछि।

तारानन्द वियोगीजीक जातिवाद दोसरे तरहक छन्हि- ओ लिखै छथि- "एतए तं मैथिलीक दुर्बल काया पर कूडा-कचडाक पहाड ठाढ करबाक सुनियोजित अभियान चलि रहल छै। एकर सफाइ लेल मेहतरक फौज चाही। ठीके तं छै। पहिने कहल जाय जे मैथिली ब्राह्मणक भाषा छी, आगू कहल जाएत जे मैथिली मेहतरक भाषा छी।" ऐ लिंक https://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio/ पर मिथिलाक विभिन्न जातिक ऑडियो आ ऐ लिंक https://sites.google.com/a/videha.com/videha-video/ पर वीडियो रेकॉर्डिंग ऑनलाइन उपलब्ध अछि जइमे डोम-मल्लिक (जकरा वियोगीजी मेहतर कहै छथि आ ओकरा आ ओकर भाषासँ घृणा करै छथि)क रेकॉर्डिंग सेहो श्री उमेश मंडल जीक सौजन्यसँ अछि।

महेन्द्र मलंगियाक *काठक लोक* आ *ओकर आंगनक बारहमासा* जइ तरहें दलितक भाषाक कथित मैथिली (मलंगियाजीक सृजित कएल)क प्रति घृणा आ कुप्रचारक प्रारम्भ केलक तारानन्द वियोगी ओकरा आगाँ बढ़ेलन्हि। ई ऑडियो आ वीडियो रेकार्डिंग अन्तिम रूपसँ ऐ घृणा आ कुप्रचारकेँ खतम कऽ देने अछि आ विश्व ई सुनि आ देख रहल अछि जे जातिगत आधारपर मैथिली कोनो तरहें भिन्न नै अछि। वियोगीजी अपन ऊर्जा ऋणात्मक दिशामे लगबै छथि आ तकर कारण अछि हुनक दृष्टि आ आइडियोलोजीक फरिच्छ नै हएब आ तँ दोसराक समालोचना ओ बर्दास्त नै कऽ सकै छथि। विदेहक सम्पादकीयपर हुनकर ओ टिप्पणी आएल छल जकर जवाब ओ अविनाश (आब अविनाश दास)क फेसबुक वॉलपर देने रहथिन्ह।

ओही सम्पादकीयक रेस्पॉन्समे गंगेश गुंजन जी लिखने रहथि जे युवा सुभाष चन्द्रक ई गप जे "गंगेश गुंजन पाँच साल पहिने कमानी ऑडीटोरियममे कहने रहथि जे ओ हिन्दीमे लिखै छथि मुदा मैथिलीबला सभ हुनका पुरस्कृत कऽ देलकन्हि" सत नै अछि, ओ कहलन्हि जे ओ ई नै बाजल छथि। डॉ. धनाकर ठाकुर सेहो साहित्य अकादेमीपर आंगुर उठेबासँ दुखी रहथि आ विदेहक सह-सम्पादक श्री उमेश मण्डल जी केँ कएकटा मेल पठेलन्हि। ओ जगदीश प्रसाद मण्डल आ उमेश मण्डलक असली मानकीकृत भाषाक पक्षमे नै छथि, भाषा विज्ञानपर जखन उमेश मंडल बहसक प्रारम्भ केलन्हि तँ ओ अपनाकेँ डॉक्टर बना लेलन्हि आ बहसमे भाग नै लेलन्हि। मेलक अतिरिक्त हजारीबागक "सगर राति दीप जरय"मे ओ आ बहुतो गोटे कहैत सुनल गेलाह- एना नै लिखू, फलना सन लिखू, पहिने पढ़ू तखन ओहने लिखू (ई मानि कऽ ओ सभ चलै छथि जे ओ सभ बिन पढ़ने लिखै छथि!)। बेनीपुरीक

"अम्बापाली" नाटक हिन्दीमे छै, एन.सी.ई.आर.टी. ओकरा स्कूलक पाठ्यक्रममे लगेलक मुदा सम्पादक कहलन्हि जे "क्रिया 'है' क अनुपस्थिति" जेना "वह जा रहा", बेनीपुरीपर स्थानीय क्षेत्रक प्रभावक परिणाम अछि आ तेँ सम्पादक मण्डल ओकर ऐतिहासिकताकेँ देखैत स्कूली पाठ्यक्रममे रहलाक बादो ओकरा सम्पादित नै कऽ रहल अछि। मुदा जखन उमेश मण्डल/ जगदीश प्रसाद मण्डल/ राम विलास साहू लिखै छथि, ओ जाइत, ओ खाइत, तँ "सगर राति"मे भाषा-विज्ञानसँ अनभिज्ञ विशेषज्ञ सभ किछु एहेन सलाह दऽ दै छथि जे मैथिलीक मूल विशेषते गौण पड़ि जाए, मैथिलीसँ प्रभावित बेनीपुरीक हिन्दी, एन.सी.ई.आर.टी.क सम्पादकसँ मैथिलीक नामपर बचि जाइत अछि, मुदा मैथिलीमे पसरल जातिवाद ओकरा नै छोड़बापर बिर्त अछि। से जातिवादी मानसिकता सी.आइ.आइ.एल.क अनुवाद मिशनक परिणामकेँ सेहो भयंकर रूपेँ प्रभावित करत, कारण ओइमे छद्म मानकीकरणक आधारपर अनुवाद कार्यशाला आयोजित भऽ रहल अछि। मैथिलीक तथाकथित स्थापित/ पुरस्कृत साहित्यकार यावत असल मानकीकरणकेँ नै पकड़ता, हुनकर अस्तित्व उपरोक्त राक्षसी प्रतिभा (विषय-वस्तु आ भाषा दुनू दृष्टिकोणसँ) सभक सोझाँमे मलिछौने रहत।

१.जातिवादी मानसिकता माने जे केलक से हमर आनुवंशिक जाति केलक, से ककरोमे भऽ सकैए।

छद्म मानकीकरण: एकटा खास जातिवादी स्कूलक विचारकेँ प्रश्रय देलाक परिणाम, जे एकाध किताब सी.आइ.आइ.एल. मैथिलीमे निकाललक अछि आ जइ तरहेँ ओकर मानकीकरण प्रोजेक्ट सालक

सालसँ बिना परिणामक चलि रहल छै।

असल मानकीकरण: मिथिलाक सभ क्षेत्रक सभ जातिक बाजल जाएबला मैथिलीक आधारपर गहन विचार विमर्शसँ बनाओल मानकीकृत मैथिली। एकर बानगी ऐ लिंक https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/ पर देल बेचन ठाकुर/ जगदीश प्रसाद मण्डल आदिक रचनामे भेटत। फील्डवर्क ऐ लिंक https://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio/ पर देल -मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक संस्कार, लोकगीत आ व्यवहार गीत (*सौजन्य: उमेश मंडल*)- ४६ टा ऑडियो फाइलमे भेटत आ ऐ लिंकक https://sites.google.com/a/videha.com/videha-video/

- मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक संस्कार, लोकगीत आ व्यवहार गीत (*सौजन्य: उमेश मंडल*) - ४४ टा वीडियो फाइलमे भेटत तथा २००० पाठकक विचारपर आधारित सारांश ऐ लिंकपर http://www.videha.co.in/new_page_13.htm भेटत। ऑडियो आ वीडियो फाइल महेन्द्र मलंगिया द्वारा ‘‘काठक लोक’’ आ ‘‘ओकर आंगनक बारहमासा’’ द्वारा प्रचारित शोलकन्हक कथित (इजाद कएल) मैथिलीपर अन्तिम प्रहार अछि।

राक्षसी प्रतिभा: पूरा ब्राह्मणवादी मैथिली साहित्यकारक अपठित दुनियाँ एक दिस आ जगदीश प्रसाद मण्डल, राजदेव मण्डल, बेचन ठाकुरक पठित दुनियाँ दोसर दिस, जकरा ब्राह्मणवादी मैथिली साहित्यकार लोकनि ‘‘राक्षसी प्रतिभा’’ सम्भवतः निन्दात्मक रूपमे

कहता/ कहै छथि मुदा हमरा मोने ओ हुनका सभक हारिक शुरुआत अछि।

धनाकर ठाकुरजीक एकटा विचार छलन्हि (विचार नै निर्णय छलन्हि) जे रामनाथोक बदला रामनाथहुँ हेबाक चाही!!

सी.आइ.आइ.एल.क अनुवाद मिशनक आरम्भिक मेहनति अपठित मैथिली साहित्यक साहित्यकारक कार्यशाला अछि, ओकरा पाठकसँ कोनो मतलब नै छै आ ने असल पठित साहित्यकारक साहित्यसँ। से ओकर परिणाम वएह हेतै जे साहित्य अकादेमीक छै। अमरजी लिखै छथि- साहित्य अकादेमीक पोथी सभ गोदाममे सड़ि रहल छै।

मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त

गुणाढ्यक पैशाची भाषाक वृहत् कथाक क्षेमेन्द्रक कथा मंजरी वा सोमदेवक कथासरित्सागरक अनुवाद हेबाक कथा, कथा कहबाक शैली सेहो भऽ सकैए मुदा ई अनुवादक कथाक प्रारम्भ तँ कहिते अछि।

अनुवादक इतिहास बड़ड पुरान छै। कोनो प्राचीन भाषा जेना संस्कृत, अवेस्ता, ग्रीक आ लैटिनक कोनो कालजयी कृति जखन दुरूह हेबऽ लागल तँ ओइपर चाहे तँ भाष्य लिखबाक खगताक अनुभव भेल आ कनेक आर आगाँ ओकरा दोसर भाषामे अनुवाद कऽ बुझबाक खगताक अनुभव भेल। प्राचीन मौर्य साम्राज्यक सम्राट अशोकक पाथरपर कीलित शिलालेख सभ, कएकटा लिपि आ भाषामे, राज्यक आदेशकेँ विभिन्न प्रान्तमे प्रसारित केलक। भाष्य पहिने मूल भाषामे लिखल जाइ छल आ बादमे दोसर भाषामे लिखल जाए लागल।

मैथिलीसँ दोसर भाषा आ दोसर भाषासँ मैथिलीमे अनुवाद लेल सिद्धान्त: मैथिलीसँ सोझे दोसर भाषामे अनुवाद अखन धरि संस्कृत, बांग्ला, नेपाली, हिन्दी आ अंग्रेजी धरि सीमित अछि। तहिना ऐ पाँचू भाषाक सोझे अनुवाद मैथिलीमे होइत अछि। ऐ पाँच भाषाक अतिरिक्त मराठी, मलयालम आदि भाषासँ सेहो सोझ मैथिली अनुवाद भेल अछि मुदा से नगण्य अछि। मैथिलीमे अनुवाद आ मैथिलीसँ अन्य भाषामे अनुवाद ऐ पाँचू भाषाकेँ मध्यस्थ भाषाक रूपमे लऽ कऽ होइत अछि। अहू पाँच भाषामे हिन्दी, नेपाली आ

अंग्रेजीक अतिरिक्त आन दू भाषाक मध्यस्थ भाषाक रूपमे प्रयोग सीमित अछि। अनुवादसँ कने भिन्न अछि रूपान्तरण, जेना कथाक नाट्य रूपान्तरण वा गद्यक पद्यमे आ पद्यक गद्यमे रूपान्तरण। ऐमे मैथिलीसँ मैथिलीमे विधाक रूपान्तरण होइत अछि आ अनुवाद सिद्धान्तक ज्ञान नै रहने रूपान्तरकार अर्थ आ भावक अनर्थ कऽ दै छथि। मैथिलीमे आ मैथिलीसँ अनुवादमे तँ ई समस्या आर विकट अछि।

उत्तम अनुवाद लेल किछु आवश्यक तत्व: शब्दशः अनुवाद करबा काल ध्यान राखू जे कहबी आ सन्दर्भक मूल भाव आबि रहल अछि आकि नै। शब्द, वाक्य आ भाषाक गढ़नि अक्षुण्ण रहए से ध्यानमे राखू। मूल भाषाक शब्द सभ जँ प्राचीन अछि तँ अनूदित भाषाक शब्द सभकेँ सेहो पुरान आ खाँटी राखू। मूल आ अनूदित भाषाक व्याकरण आ शब्द भण्डारक वृहत् ज्ञान एतऽ आवश्यक भऽ जाइत अछि। मूल भाषामे मुँह कोचिया कऽ बा हास्य उत्पन्न करै लेल बाजल रामनाथ आकि उमेशक प्रति सम्बोधनकेँ रामनाथो, उमेशोक बदलामे रामनाथहुँ, उमेशहुँ कऽ अनुवाद कएल जाएब उचित हएत मुदा सामान्य परिस्थितिमे से उचित नै हएत। से शब्द, भाव, प्रारूपमे सेहो आ मूल कृतिक देश-कालक भाषामे सेहो समानता चाही। अनुवादककेँ मूल आ अनूदित कएल जाएबला भाषाक ज्ञान तँ हेबाके चाही संगमे दुनू भाषा क्षेत्र इतिहास, भूगोल, लोककथा, कहबी आ ग्रम्य-वन्य आ नग्रक संस्कृतिक ज्ञान सेहो हेबाक चाही। ई मध्यस्थ भाषासँ अनुवाद करबा काल आर बेसी महत्वपूर्ण भऽ जाइत अछि। ऐ परिस्थितिमे "दुनू भाषा क्षेत्रक इतिहास, भूगोल, लोककथा, कहबी आ ग्रम्य-वन्य आ नग्रक संस्कृतिक ज्ञान" सँ

तात्पर्य अनूदित आ मूल भाषा क्षेत्रसँ हएत, मध्यस्थ भाषा क्षेत्रसँ नै। कखनो काल मूल भाषाक कोनो भाषासँ सम्बन्धित तत्व वा गएर भाषिक तत्व (सांस्कृतिक तत्त्व) क सही-सही उदाहरण अनूदित भाषामे नै भेटैत अछि आ तखन अनुवादक गपकेँ नमराबऽ लगै छथि वा ओइ लेल एकटा सन्निकट शब्दावली (ओइ नै भेटल तत्वक) देमऽ लगै छथि। ऐ परिस्थितिमे सन्निकट शब्दावली देबासँ नीक गपकेँ नमरा कऽ बुझाएब वा परिशिष्ट दऽ ओकरा स्पष्ट करब हएत। ऐ सँ मूल भाषासँ मध्यस्थ माषाक माध्यमसँ कएल अनुवादमे होइबला साहित्यिक घाटाकेँ न्यून कएल जा सकत।

कथा, कविता, नाटक, उपन्यास, महाकाव्य (गीत-प्रबन्ध), निबन्ध, स्कूल-कॉलेजक पुस्तक, संगणक विज्ञान, समाजशास्त्र, समाज विज्ञान आ प्रकृति विज्ञानक पोथीक अनुवाद करबा काल किछु विशेष तकनीकक आवश्यकता पड़त। निबन्ध, स्कूल-कॉलेजक पुस्तक, संगणक विज्ञान, समाजशास्त्र, समाज विज्ञान आ प्रकृति विज्ञानक अनुवाद ऐ अर्थें सरल अछि जे ऐ सभमे विस्तारसँ विषयक चर्चा होइत अछि आ सर्जनात्मक साहित्य {कथा, कविता, नाटक, उपन्यास, महाकाव्य (गीत-प्रबन्ध)} क विपरीत भाव आ संस्कृतिक गुणांक नै रहैत अछि वा कम रहैत अछि। संगे एतऽ पाठक सेहो कक्षा/ विषयकक अनुसार सजाएल रहै छथि। *केमिकल* नाम, *बायोलोजिकल* आ *बोटेनिकल बाइनरी* नाम आ आन सभ *सिम्बल* आदि जे विशिष्ट अन्तर्राष्ट्रीय संस्था सभ द्वारा स्वीकृत अछि तकर परिवर्तन वा अनुवाद अपेक्षित नै अछि। सर्जनात्मक साहित्यमे नाटक सभसँ कठिन अछि, फेर कविता अछि आ तखन कथा, जँ अनुवादकक दृष्टिकोणसँ देखी तखन। नाटकमे नाटकक पृष्ठभूमि आ परोक्ष निहितार्थकेँ चिन्हित करऽ पड़त संगे पात्र सभक

मनोविज्ञान बूझए पड़त। कवितामे कविताक विधासँ, ओकर गढ़निसँ अनुवादकक परिचित भेनाइ आवश्यक, जेना हाइकूक मैथिलीसँ अंग्रेजी अनुवाद करै बेरमे मैथिलीक वार्णिक ५/७/५ क मेल जँ अंग्रेजीक अल्फाबेटसँ करेबै तँ अहाँक अनूदित हाइकू हास्यास्पद भऽ जाएत कारण अंग्रेजीमे ५/७/५ सिलेबलक हाइकू होइ छै आ मैथिलीमे जेना वर्ण आ सिलेबलक समानता होइ छै से अंग्रेजीमे नै होइ छै। ऐ सन्दर्भमे ज्योति सुनीत चौधरीक मैथिलीसँ अंग्रेजी अनुवाद एकटा प्रतिमान प्रस्तुत करैत अछि। कविताक लय, बिम्बपर विचार करऽ पड़त संगे कविता खण्डक कविताक मुख्य शरीरसँ मिलान करऽ पड़त। कथामे कथाकारक आ कथाक पात्रक संग कथाक क्रम, बैकफ्लैशक समय-कालक ज्ञान आ वातावरणक ज्ञान आवश्यक भऽ जाइत अछि। आब महाकाव्यक अनुवाद देखू, रामलोचन शरणक मैथिली रामचरित मानस अवधीसँ मैथिलीमे अनुवाद अछि मुदा दोहा, चौपाइ, सोरठा सभ शास्त्रीय रूपेँ अनूदित भेल अछि।

संस्कृत भाषाक अनुवादक माध्यमसँ पाठन आंग्ल शासक लोकनि द्वारा प्रारम्भ भेल। ऐ विधिसँ ने लैटिनक आ नहिये ग्रीकक अध्यापन कराएल गेल छल। ऐ विधिसँ जँ अहाँ संस्कत वा कोनो भाषा सीखब तँ आचार्य आ कोविद कऽ जाएब मुदा सम्भाषण नै कएल हएत। जँ कोनो भाषाकेँ अहाँ मातृभाषा रूपेँ सीखब तखने सम्भाषण कऽ सकब, संस्कृति आदिक परिचय पाठ्यक्रममे शब्दकोष, आ लोककथा आ इतिहास/ भूगोलक समावेश कऽ कएल जा सकैत अछि।

संगणक द्वारा अनुवाद: सर्जनात्मक वा निबन्ध, स्कूल-कॉलेजक पुस्तक, संगणक विज्ञान, समाजशास्त्र, समाज विज्ञान आ प्रकृति विज्ञानक अनुवाद संगणक द्वारा प्रायोगिक रूपमे कएल जाइत अछि मुदा ''कोल्ड ब्लडेड एनीमल'' क अनुवाद हास्यास्पद रूपेँ ''नृशंस जीव'' कएल जाइत अछि। मुदा संगणक द्वारा अनुवाद किछु क्षेत्रमे सफल रूपेँ भेल अछि, जेना विकीपीडियामे ५०० शब्दक एकटा ''बेसी प्रयुक्त शब्दावली'' आ २६०० शब्दक ''शब्दावली''क अनुवाद केलासँ, गूगलक ट्रान्सलेशन ओजार आदिमे आधारभूत शब्दक अनुवाद केलासँ आ आन गवेषक जेना मोजिला फायरफॉक्स आदिमे अंग्रेजीक सभ पारिभाषिक संगणकीय शब्दक अनुवाद केलासँ त्रुटिविहीन स्वतः मैथिली अनुवाद भऽ जाइत अछि।

भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान

भाषाक पारिवारिक वर्गीकरण ऐतिहासिक आधारपर होइत अछि, जइमे भाषाक इतिहास, एक भाषाक दोसर भाषासँ उत्पत्ति, भाषाक आकृति-प्रकृति माने रचनात्मकताक संग अर्थ-तत्वपर सेहो ध्यान देल जाइत अछि। जेना कोनो व्यक्ति वा समूह बीजीपुरुषक संकल्पना करैत अछि आ ओतऽसँ अपना धरि एकटा वंशवृक्षक निर्माण करैत अछि, तहिना भाषाक इतिहासक लेखक सेहो आदि, मध्य आ आधुनिक कालक आधारपर भाषाक पूर्ववर्ती आ बीज भाषाक संकल्पना सोझाँ अनै छथि। मुदा भाषाक इतिहासमे पुत्री भाषा आ बहिन भाषाक संकल्पना सेहो ऐ तरहेँ सोझाँ अबैत अछि।

मैथिलीक भारोपीय भाषा परिवारमे स्थान

स्थान, शब्द, व्याकरण आ ध्वनिक आधारपर भाषा एक-दोसरासँ लग होइत अछि। मुदा ऐ मध्य किछु अपवाद सेहो अछि। अवेस्ता, अंग्रेजी आ जर्मन भाषा मैथिलीसँ भौगोलिक रूपसँ दूर रहलोपर एक्के परिवारक अछि, मुदा अरबी, तमिल आदि सापेक्ष रूपेँ भौगोलिक निकटता अछैत दोसर परिवारक अछि।

फेर भाषा स्थित आयातित विदेशज शब्दावलीक आधारपर हम एक भाषाकेँ दोसर भाषाक परिवारक सिद्ध नै कऽ सकै छी। तहिना ध्वनिमूलक आ शब्दमूलक अर्थक साम्य सेहो दू भाषा परिवारकेँ एक वर्गमे नै आनि सकैत अछि, जेना संस्कृतक जाल्म आ अरबीक जालिम -शब्दमूलक साम्य वा मैथिलीक मियाऊँ आ चीनी मन्दारिन भाषाक म्याऊँ (बिलाड़ि)- ध्वनिमूलक साम्य।

ध्वनिक साम्यमे सेहो कखनो काल गड़बड़ी होइत अछि, जेना मैथिलीमे ड़, ढ़ आ चन्द्रबिन्दुक खूब प्रयोग होइत अछि मुदा ई तीनू ध्वनि संस्कृतमे नै अछि।

भौगोलिक आधारपर सेहो ''भारोपीय भाषा'', ई नामकरण पूर्ण रूपसँ समीचीन नै अछि, कारण सम्पूर्ण भारतमे भारोपीय भाषा परिवारक उपस्थिति नै अछि आ भारतमे भारोपीय भाषाक अतिरिक्त आनो भाषा परिवारक उपस्थिति अछि। यूरोपमे सेहो काकेशियन आदि भाषा परिवार भारोपीय भाषा परिवारमे नै अबैत अछि।

व्याकरण साम्यक आधार दू भाषाकेँ एक परिवारमे रखबाक सभसँ सुदृढ़ आधार अछि।

मूल रूपसँ भारोपीय परिवारक भाषामे प्रत्ययक प्रयोग खूब होइत अछि आ धातुमे प्रत्यय जोड़ि शब्द बनैत अछि। पुल्लिंग, स्त्रीलिंग आ नपुंसक लिंग, ई तीन तरहक लिंग अछि तँ एकवचन, द्विवचन आ बहुवचन ऐ तीन तरहक वचन। मुदा आब अधिकांश भाषामे एकवचन आ बहुवचन यएह दूटा वचन होइत अछि। जइ क्रियाक फल स्वयं प्राप्त हुअए से आत्मनेपदी आ जकर फल दोसरकेँ भेटए से परस्मैपदी, ई दू तरहक क्रिया भारोपीय भाषमे रहैत अछि। समासक प्रयोग सेहो मोटा-मोटी भारोपीय भाषाक विशेषता अछि।

भारोपीय परिवारक दू भेद अछि। सए (१००) लेल प्रयुक्त मूल भारोपीय शब्द ''क्मतोम'' दू तरहेँ बाजल जाइत अछि। संस्कृतमे ''शतम्'' आ लैटिनमे ''केन्टुम्''। ऐ आधारपर संस्कृतसँ लग भाषा समूह अवेस्ता (भाषा आ ग्रंथ दुनूक नाम, जेन्द-अवेस्ता- ओइपर भाष्य), फारसी, मैथिली, रूसी आदि अबैत अछि। केन्टुम् वर्गमे

लैटिनसँ लग भाषा जेना ग्रीक, जर्मन, फ्रेंच, इटालियन आदि अबैत अछि।

शतम् वर्गमे भारत-इरानी (वा इन्डो आर्यन), बाल्टो-स्लाविक, आर्मीनी आ इलीरी भाषा समूह अबैत अछि।

इन्डो आर्यन वा भारतीय-ईरानी भाषा समूहमे ऋगवेद सभसँ प्राचीन अछि। जोराष्ट्रियन धर्मक अवेस्ता ग्रन्थ जे वैदिक कालक अछि ओ अवेस्ता भाषाक ग्रन्थ अछि। ईरानी भाषा समूहमे अवेस्ता, प्राचीन फारसी, पहलवी, पश्तो, बलूची आ कुर्द भाषा प्रमुख अछि। भारतीय आर्यभाषा समूहमे वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पाली (प्राचीन प्राकृत ५००. ई.पू.सँ १०० ई.पू. धरि), प्राकृत (मध्य प्राकृत १०० ई.पू. सँ ५०० ई. धरि), अपभ्रंश (५०० ई. सँ ९०० ई. धरि) आ अवहट्ट (९०० ई. सँ ११०० ई. धरि) आ तकर बाद मागधी प्राकृतसँ मैथिली, बंगला, ओड़िया, असमी आदि भाषा (११०० ई. सँ) अबैत अछि।

विश्वक भाषाक पारिवारिक वर्ग

(अ) यूरेशिया, (आ)अफ्रीका, (इ)प्रशान्त महासागरक क्षेत्र (पैसिफिक), (ई)अमेरिका

(अ) यूरेशिया- (क)भारोपीय, (ख)द्राविड़, (ग)बुरुशस्की, (घ)काकेशी, (ङ)यूराल-अल्ताई, (च)चीनी, (छ)जापानी-कोरियाई,

(ज)हाइपरबोरी, (झ)बास्क, (ञ)सेमीटिक-हेमिटिक- *अफ्रीकामे*

(क)भारोपीय- (i) इन्डो आर्यन, (ii)बाल्टो-स्लाविक, (iii)आर्मीनियन, (iv) इलीरी, (v)ग्रीक, (vi)केल्टिक, (vii)जर्मानिक, (viii)इटालिक, (ix)हित्ती, (x)तोखारी

(i) इन्डो आर्यन- (a)भारतीय आर्यभाषा, (b)ईरानी

(a)भारतीय आर्यभाषा

(A)प्राचीन भारतीय आर्यभाषा (२५०० ई.पू.सँ ५०० ई. पू.)

(B)मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा (५०० ई.पू.सँ १००० ई.)

(C)आधुनिक भारतीय आर्यभाषा(१००० ई. सँ आइ धरि)

(A)प्राचीन भारतीय आर्यभाषा (२५०० ई.पू.सँ ५०० ई. पू.)- वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत (वाल्मीकि - ‘‘मानुषिमिह संस्कृताम्’’- संस्कृत आ मानुषी दुनू भाषा।)

(B)मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा (५०० ई.पू.सँ १००० ई.)- पहिल प्राकृत (पाली), दोसर प्राकृत (साहित्यिक प्राकृत- शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी, अर्द्धमागधी, पैशाची, ब्राचड, खस), तेसर प्राकृत (अपभ्रंश- प्रथमे-प्रथम व्याडि आ पतंजलि द्वारा उल्लेख।)

(C)आधुनिक भारतीय आर्यभाषा(१००० ई. सँ आइ धरि) (अ) **शौरसेनी**सँ खड़ी बोली, वृजभाषा, बाँगरू, कन्नौजी, बुन्देली,

मारवाड़ी, जयपुरी, मालवी, मेवाती, गुजराती (आ)**महाराष्ट्री**सँ मराठी, कोंकणी, नागपुरी, बरारी (इ) **मागधी**सँ भोजपुरी, मगही, बांगला, ओड़िया, असमी, मैथिली (ई) **अर्धमागधी**सँ अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी (उ) **पैशाची**सँ लहँदी (ऊ) **ब्राचड**सँ सिन्धी, पंजाबी (ए) **खस**सँ पहाड़ी भाषाक विकास रेखांकित होइत अछि।

वाल्मीकि द्वारा सुन्दरकाण्डमे मानुषिमिह संस्कृताम्- संस्कृत आ मानुषी दुनू भाषाक ज्ञान हनुमानजीसँ कहबाएल गेल अछि। ज्योतिरीश्वर- ''पुनु कइसन भाट- संस्कृत, पराकृत, अवहठ, पैशाची, सौरसेनी, मागधी छहु भाषाक तत्वज्ञ'' संगे ज्योतिरीश्वर द्वारा सात *''उपभाषाक''* चर्च भेल अछि। प्राकृतक कएकटा प्रकार छल। ओइमे मागधी प्राकृत मैथिली आ अन्य पूर्वी भारतक भाषाक विकासमे योगदान देलक। अर्धमागधीमे जैन धर्मग्रन्थ आ पालीमे बौद्ध धर्मग्रन्थ लिखल गेल। कालिदासक संस्कृत नाटकमे संस्कृतक अतिरिक्त अपभ्रंशक प्रयोग गएर अभिजात्य वर्गक लेल प्रयुक्त भेल तँ चर्यापदक भाषा सेहो मागधी मिश्रित अपभ्रंश छल। मैथिली सहित आन आधुनिक भारतीय आर्यभाषा दोसर प्राकृतसँ विकसित भेल सेहो देखि पड़ैत अछि। अपभ्रंश परवर्ती कालमे पूर्वी भारतमे अवहट्टक रूप लेलक। मैथिलीक विशेषता जइमे एकर सभ शब्दक स्वरांत हएब, क्रियारूपक जटिल हएब (मुदा तइमे लैंगिक भेद नै हएब), सर्वनामक सम्बन्ध कारक रूप आदिक रूपरेखा अवहट्टमे दृष्टिगोचर हएब शुरू भऽ गेल छल। ऐतिहासिक आधारपर भाषाक पारिवारिक वर्गीकरणमे अवहट्ट (अवहट्ठ) कें ''मैथिल अपभ्रंश'' तइ कारणसँ कहल जाइत अछि आ मागधी

प्राकृतसँ सेहो एकर विकास दृष्टिगोचर होइत अछि। अवहट्ट मैथिलीसँ लग रहितो शौरसेनी प्राकृत-अपभ्रंशसँ सेहो लग अछि, मुदा देशी शब्दक प्रयोगसँ ऐमे अपभ्रंशसँ बहुत रास व्याकरणिक परिवर्तन देखा पड़ैत अछि। विद्यापतिक ‘‘कीर्तिलता’’ अवहट्टमे अछि, मुदा ‘‘चर्या गीत’’ आ ‘‘वर्णन रत्नाकर’’ कीर्तिलतासँ पूर्ववर्ती हेबाक बादो पुरान मैथिली अछि आ अवहट्टसँ सेहो लग अछि। दामोदर पंडितक ‘‘उक्ति व्यक्ति प्रकरण’’ सेहो कीर्तिलतासँ पूर्ववर्ती अछि मुदा पुरान अवधी आ पुरान कोशलीक प्रतिमान प्रस्तुत करैत अछि आ अवहट्टसँ लग अछि। भारोपीय भाषा परिवारमे मैथिलीक स्थान मोटा-मोटी संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आ अवहट्टक ऐतिहासिक क्रममे अबैत अछि।

मैथिली वा कोनो भाषाक उत्पत्तिक मूलमे मनुक्खक मुँहसँ बहराएल ध्वनि आ ओइ ध्वनिक अर्थ कोनो वस्तु, व्यक्ति वा विचारसँ हएब सिद्ध हएत। ध्वनि तँ चिड़ै, चुनमुनी, माल-जाल आ बौक व्यक्ति द्वारा सेहो उत्पन्न होइत अछि मुदा से अर्थपूर्ण नै भऽ पबैए आ भाषाक निर्माण नै कऽ पबैए।

१८६६ ई. मे पेरिसमे ‘‘ला सोसिएते द लिंग्विस्टीक’’ नाम्ना संस्था भाषाक उत्पत्ति आ विश्वक भाषा सभक निर्माण’’ ऐ विषयकेँ अपन कार्यकारिणीसँ हटा देलक कारण ऐ विषयक विवेचन अनुमानपर आधारित हेबाक कारणसँ ई वैज्ञानिक दृष्टिकोणसँ दूर रहैत अछि।

वैदिक संस्कृतसँ लौकिक संस्कृत आ ओइसँ पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट आ मैथिलीक क्रम ताकल जा सकैत अछि। मुदा वैदिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋगवेदसँ पहिनेसँ ओ भाषा

अस्तित्वमे रहल हएत। कतेक मौखिक साहित्य जेना गाथा, नाराशंसी, दैवत कथा आ आख्यान सभ ओइमे रचल गेल हएत। एहने गाथा सभक गायकक लेल ''गाथिन'', ''गातुविद्'' आ ''गाथपति'' ऋगवेदमे प्रयुक्त भेल। वैदिक संस्कृतक उत्पत्ति दैवी रूपमे भेल वा आंगिक-वाक संकेतक संप्रेषणीयता बढ़ेबाक लेल से मात्र अनुमानेक विषय भऽ सकैत अछि। भाषामे ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य आ अर्थक परिवर्तन भेलासँ वैदिकसँ लौकिक संस्कृत बहराएल आ फेर पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट आ मैथिली। पाणिनी द्वारा भारतक विभिन्न क्षेत्रसँ लेल शब्दावली लौकिक संस्कृतकेँ ततेक समृद्ध केलक जे ओइसँ आन सभ भाषाक कतेको तरहक रूप बहार भेल। कतेक तरहक क्षेत्रीय प्राकृत आ अपभ्रंश ओइ भौगोलिक क्षेत्रक विस्तारकेँ लैत बहार भेल आ ओइसँ आइक आधुनिक भारतीय आर्य भाषा सभक उत्पत्ति भेल।

मैथिली भारोपीय भाषा परिवारसँ सम्बन्धित अछि। भारोपीय भाषा परिवारक भीतर विश्वक लगभग चालीस प्रतिशत जनसंख्या अबैत अछि। ई सभसँ पैघ भाषा परिवार अछि, सभसँ समृद्ध सेहो। मोटा-मोटी एकर दू विभाग छै, पहिल यूरोपक आर्य भाषा आ दोसर भारत-ईरानी शाखा। भारत-ईरानी आर्यभाषाक भीतर ईरानी, दरद आ भारतीय आर्यभाषा अबैत अछि। दरद भाषामे कश्मीरी आ पामीर पठारक पूर्व दक्षिणक भाषा सभ अछि। मैथिली भाषाक उद्गम आ विकास भारतीय आर्यभाषाक भीतर ताकल जाइत अछि।

भाषाक उद्गम तँ अनुमानक विषय थिक। भाषाक उद्गमक आ तकर प्रयोगक कतेक वर्षक पश्चात् ओइमे साहित्य रचना होइत

अछि। तखन जा कऽ ओकर रूप स्थिर होइत अछि। वैदिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋगवेद, लौकिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ वाल्मीकि रामायण, पालि भाषाक प्राचीनतम ग्रन्थ बुद्ध त्रिपिटक, प्राकृतक प्राचीनतम ग्रन्थ विमल सूरिक पउमचरिउ, अपभ्रंशक प्राचीनतम ग्रन्थ योगीन्द्रक परमात्म प्रकाश अछि। आदि मैथिलीक प्राचीन साहित्य सिद्ध साहित्य, बौद्धगान आ ज्योतिरीश्वरक वर्णन रत्नाकर अछि।

सिद्ध सरहपाद 700-780 **सरहपाद-''सिद्धिरत्थु मइ पढ़मे पढ़िअउ ,मण्ड पिबन्तोँ बिसरउ एमइउ'',** मिथिलामे अक्षरारम्भ सिद्धिरस्तु (गणेशजीक अंकुश आँजी) सँ होइत अछि। मिथिलामे ई धारणा अछि जे माँड़ पीलासँ स्मरण शक्ति क्षीण होइत अछि। दोसर उदाहरण- बलद बियायल गबैया बाँझे- बड़द बिया गेल आ गाए बाँझे अछि।

मध्यकालीन मैथिलीक ग्रन्थ विद्यापतिक मैथिली साहित्य आ तकर बाद चतुर चतुर्भुज, शंकरदेव, विभिन्न मल्ल नरेश द्वारा रचित साहित्य, कीर्तनिया आ अंकिया नाटसँ मनबोध धरि अबैत अछि। आधुनिक मैथिली साहित्य चन्दा झासँ प्रारम्भ होइत अछि।

प्राचीन भारतक आर्यभाषाक क्षेत्र वैदिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋगवेदमे वर्णित धार सभक आधारपर निर्धारित कएल जा सकैत अछि आ एकर प्रसार कोना आन क्षेत्रमे भेल सेहो ऐसँ निर्धारित होइत अछि। ऋगवैदिक आर्य ''सप्त सैन्धव'' माने सात धारक क्षेत्रमे रहै छला- ई सात धार छल वितस्ता, अश्किनी, परुष्णी, शतुद्रु, विपाशा, क्रुमु आ गोमती। ऐमे पहिल पाँचटा धार पंजाब आ

शेष दूटा अफगानिस्तानमे बहै छल। ई सातो धार ऋगवेद कालक सभसँ उपयोगी धार सिन्धुक सहायक छल। ऋगवेदमे सरस्वती धारक वर्णन "धार सभक माय"क रूपमे भेल अछि। ऋगवेदमे यमुनाक दू बेर आ गंगाक एक बेर वर्णन अछि। ऋगवेदक दसम मण्डलमे "धारक स्तुति" मे सिन्धु आ सप्तसैन्धवक स्तुति भेल अछि। ओइ कालमे पुरु, अनु, द्रुह्य, यदु आ तुर्वस नाम्ना पंचजन बसै छला। क्रिवि, त्रित्सु, सेहो ओइ कालमे छला। पुरु आ सभसँ शक्तिवान भरत कबीला मिलि बादमे कुरु कबीला बनल। भरत कबीला दाशराज्ञ युद्धमे पाँच आर्य आ पाँच अनार्य कबीलाक संगठनकेँ हरेलक, जइमे भरतक पुरहित वशिष्ठ रहथि आ पाँच आर्य आ पाँच अनार्य (दस्यु) कबीलाक संगठनक पुरहित रहथि विश्वामित्र। बोगजकोई एशिया माइनरमे हित्ती शासकक १४म शती ई.पू.क उत्कीर्णित अभिलेखमे इन्द्र, दशरथ, अर्त्ततम आदि राजाक, इन्द्र, वरुण, नासत्य, आदि देवताक उल्लेख अछि। यजुर्वेदक प्रचलित संहिता वाजसनेयी आ सामवेदक संहिता कौथुम, सामवेदक आरण्यक आ उपनिषद छान्दोग्यक आधारपर मिथिलामे ब्राह्मणक वाजसनेयी आ छान्दोग्यमे उर्ध्वाधर विभाजन एखन धरि अछि। यजुर्वेदमे विदेहक वर्णन अछि तँ ऋगवेदमे वैदिक जनकक (सीताक पिता सीरध्वज जनक पछाति भेला।)

"वैदेह राजा" ऋगवेदिक कालक नमी सप्याक नामसँ छला, यज्ञ करैत सदेह स्वर्ग गेला, ऋगवेदमे वर्णन अछि। ओ इन्द्रक संग देलन्हि असुर नमुचीक विरुद्ध आ तइमे इन्द्र हुनका बचेलन्हि। शतपथ ब्राह्मणक विदेघमाथव आ पुराणक निमि दुनू गोटेक पुरोहित गौतम छथि से दुनू एके छथि आ एतऽसँ विदेह राज्यक प्रारम्भ

भेल। माथवक पुरहित गौतम मित्रविन्द यज्ञक/ बलिक प्रारम्भ केलन्हि आ पुनः एकर पुनःस्थापना भेल महाजनक-२ क समयमे याज्ञवल्क्य द्वारा। निमि गौतमक आश्रमक लग **जयन्त** आ मिथि - जिनका मिथिला नामसँ सेहो सोर कएल जाइ छन्हि, **मिथिला** नगरक निर्माण केलन्हि। निमीक जयन्तपुर वर्तमान जनकपुरमे छल, मिथीक मिथिलानगरीक स्थान एखन धरि निर्धारित नै भऽ सकल अछि, अनुमानित अछि ई जनकपुरक लग छल। सीरध्वज जनक सीताक पिता छथि आ एतऽसँ मिथिलाक राजाक सुदृढ़ परम्परा देखबामे अबैत अछि। ‘‘कृति जनक’’ सीरध्वजक बादक 18म पुस्तमे भेल छला। कृति हिरण्यनाभक पुत्र छला आ जनक बहुलाश्वक पुत्र छला। याज्ञवलक्य हिरण्याभक शिष्य छला, हुनकासँ योगक शिक्षा लेने छला। कराल जनक द्वारा एकटा ब्राह्मण युवतीक शील-अपहरणक प्रयास भेल आ जनक राजवंश समाप्त भऽ गेल (संदर्भ अश्वघोष-बुद्धचरित आ कौटिल्य-अर्थशास्त्र)।अर्थशास्त्रमे(१.६ विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे षडोऽध्यायः इन्द्रियजये अरिषड्वर्गत्यागः) कराल जनकक पतनक चर्चा अछि। तद्विरुद्धवृत्तिरवश्येन्द्रियश्चातुरन्तोऽपि राजा सद्यो विनश्यति- यथा दाण्डक्यो नाम भोजः कामाद् ब्राह्मण कन्यायमभिमन्यमानः सबन्धराष्ट्रो विननाश करालश्च वैदेहः,...।

वैदिक संस्कृतक कालमे आर्य सप्तसन्धवसँ विदेह धरि आबि गेल छला। अनार्य (दस्यु)सँ ओइ कालमे हुनकर सम्पर्क भऽ गेल छल आ शाब्दिक आदान-प्रदान सेहो भऽ गेल छल। यजुर्वेदमे आ बादमे अथर्ववेदमे ई आदान-प्रदान दृष्टिगोचर होइत अछि। अनार्य (दस्यु) आ व्रात्य (अनार्यसँ आर्य बनल जाति) दुनुक भाषा सप्तसैन्धव आर्यक भाषासँ मिलि गेल आ पुबरिया आ आन क्षेत्रीय बसात

लगलासँ वैदिक संस्कृत लौकिक संस्कृतमे बदलि गेल। निरुक्तक समयमे सेहो वैदिक शब्दावली कठिन भऽ गेल छल, ओकर उत्पत्तिपर विवेचन शुरू भऽ गेल छल। पाणिनीक भाषा पुबरिया, दछिनबरिया, पछबरिया आ उत्तरबरिया सभ क्षेत्रक दस्यु आ व्रात्य भाषाक शब्दावलीकेँ समाहित कऽ बनल छल। ई संस्कारित भाषा बादक लोक मध्य संस्कृतक रूपमे विख्यात भेल। पाणिनी लौकिक संस्कृतकेँ जेना ''भाषा'' कहलन्हि, तहिना यास्क आ पाणिनी वैदिक संस्कृतकेँ ''छन्दस्''। यएह छन्दस् अवेस्ता भाषाक भाष्य लेल जेन्द (छन्द) कहल गेल।

संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली

१. संस्कृत

देवनागरीक अतिरिक्त समस्त उत्तर भारतीय भाषा नेपाल आ दक्षिणक (तमिलकेँ छोड़ि) सभ भाषा वर्णमालाक रूपमे स्वर आ कचटतप आ य, र ल व, श, स, ह क वर्णमालाक उपयोग करैत अछि। ग्वाङ हेतु संस्कृतमे दोसर वर्ण छैक (छान्दोग्य परम्परामे एकर उच्चारण नै होइत अछि मुदा वाजसनेयी परम्परामे खूब होइत अछि- जेना छान्दोग्य उच्चारण सभूमि तँ वाजसनेयी उच्चारण सभूमीग्वंङ), ग्वाङ ह्रस्व दीर्घ दुनू होइत अछि। सिद्धिरस्तु लेल सेहो कमसँ कम छह प्रकारक वर्ण मिथिलाक्षरमे प्रयुक्त होइत अछि। वैदिक संस्कृतमे उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित (क्रमशः क॑ क॒ क) उपयोग तँ मराठीमे ळ आ अर्द्ध ऱ् केर सेहो प्रयोग होइत अछि। मैथिलीमे ऽ (बिकारी वा अवग्रह) क प्रयोग संस्कृत जकाँ

होइत अछि आ आइ काल्हि एकर बदलामे टाइपक सुविधानुसारे द’ (दऽ क बदलामे) एहन प्रयोग सेहो होइत अछि मुदा ई प्रयोग ओइ फॉण्टमे एकटा तकनीकी न्यूनताक परिचायक अछि। मुदा आकार क बाद बिकारीक आवश्यकता नै अछि।

जेना फारसीमे अलिफ बे से आ रोमनमे ए बी सी होइत अछि तहिना मोटा-मोटी सभ भारतीय भाषामे लिपिक भिन्नताक अछैत वर्णमालाक स्वरूप एके रङ अछि।

वर्णमालामे दू प्रकारक वर्ण अछि- स्वर आ व्यंजन। वर्णक संख्या अछि ६४ जइमे २२ टा स्वर आ ४२ टा व्यञ्जन अछि।

स्वरक वर्णन ऐ प्रकारेँ अछि- जइ वर्णक उच्चारणमे दोसर वर्णक उच्चारणक अपेक्षा नै रहैत अछि, से भेल स्वर।

स्वरक तीन टा भेद अछि- ह्रस्व, दीर्घ आ प्लुत। जइमे बाजैमे एक मात्राक समय लागए से भेल ह्रस्व, जइमे दू मात्राक समय लागल से भेल दीर्घ आ जइमे तीन मात्राक समय लागल से भेल प्लुत।

मूलभूत स्वर अछि- अ इ उ ऋ लृ

पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा समानाक्षर कहै छला।

दीर्घ मिश्र स्वर अछि- ए ऐ ओ औ

पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा सन्ध्यक्षर कहै छला।

लृ दीर्घ नै होइत अछि आ सन्ध्यक्षर ह्रस्व नै होइत अछि।

अ इ उ ऋ ऐ सभक ह्रस्व, दीर्घ (आ ई ऊ ॠ) आ प्लुत (आ३ ई३ ऊ३ ॠ३) सभ मिला कऽ १२ वर्ण भेल। लृ क ह्रस्व आ प्लुत दू भेद अछि (लृ३), तँ २ टा ई भेल। ए ऐ ओ औ ई चारू दीर्घ मिश्रित स्वर अछि आ ऐ चारूक प्लुत रूप सेहो (ए३ ऐ३ ओ३ औ३) होइत अछि, तँ ८ टा ई सेहो भेल। भऽ गेल सभटा मिला कऽ २२ टा स्वर।

ऐ सभटा २२ स्वरक वैदिक रूप तीन तरहक होइत अछि, उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित।

ऊँच भाग जेना तालुसँ उत्पन्न अकारादि वर्ण उदात्त गुणक होइत अछि आ तेँ उदात्त कहल जाइत अछि।

नीचाँ भागसँ उत्पन्न स्वर अनुदात्त आ जइ अकारादि स्वरक प्रथम भागक उच्चारण उदात्त आ दोसर भागक उच्चारण अनुदात्त रूपेँ होइत अछि, से भेल स्वरित।

स्वरक दू प्रकार आर अछि, सानुनासिक जेना अँ आ निरनुनासिक जेना अ।

दत्तेन निर्वृत्तः कूपो दात्तः। दत्त नाम्ना पुरुष द्वारा विपाट्- ब्यास धारक उतरबरिया तटपर बनबाएल, एतऽ इनार भेल दात्त। अञ प्रत्यान्त भेलासँ *दात्त* आद्युदात्त भेल, अण् प्रत्यायान्त होइत तँ प्रत्यय स्वरसँ अन्तोदात्त होइत। रूपमे भेद नै भेलोपर स्वरमे भेद अछि। ऐसँ सिद्ध भेल जे सामान्य कृषक वर्ग सेहो शब्दक सस्वर उच्चारण करै छला।

स्वरितकेँ दोसरो रूपमे बुझि सकै छी- जेना ऐमे अन्तिम स्वरक तीव्र स्वरमे पुनरुच्चारण होइत अछि।

आब व्यञ्जन पर आउ।

व्यञ्जन ४२ टा अछि।

क् ख् ग् घ् ङ्

च् छ् ज् झ् ञ्

ट् ठ् ड् ढ् ण्

त् थ् द् ध् न्

प् फ् ब् भ् म्

य् र् ल् व्
श् ष् स्
ह्
य् व् ल् सानुनासिक सेहो होइत अछि, यँ वँ लँ आ निरुनासिक सेहो।
एकर अतिरिक्त दू टा आर व्यञ्जन अछि- अनुस्वार आ विसर्जनीय वा विसर्ग।
ई दुनूटा, स्वरक अनन्तर प्रयुक्त होइत अछि।
विसर्जनीय मूल वर्ण नै अछि, वरन् स् वा र् क विकार अछि।
विसर्जनीय किछु ध्वनि भेद आ किछु रूपभेदसँ दू प्रकारक अछि- जिह्वामूलीय आ उपध्मानीय। जिह्वामूलीय मात्र क आ ख सँ पूर्व प्रयुक्त होइत अछि, दोसर मात्र प आ फ सँ पूर्व।
अनुस्वार, विसर्जनीय, जिह्वामूलीय आ उपध्मानीयकेँ अयोगवाह कहल जाइत अछि।
उपरोक्त वर्ण सभकेँ छोड़ि ४ टा आर वर्ण अछि, जकरा यम कहल गेल अछि।
कुँ खुँ गुँ घुँ (यथा- पलिक् क्नी, चख ख्नुतः, अग् ग्निः, घ् घ्नन्ति) पञ्चम वर्ण आगाँ रहला पर पूर्व वर्ण सदृश जे वर्ण बीचमे उच्चारित होइत अछि से यम भेल।
यम सेहो अयोगवाह होइत अछि।
अ आ कवर्ग ह (असंयुक्त) आ विसर्जनीय क उच्चारण कण्ठमे होइत अछि।
इ ई चवर्ग य श क उच्चारण तालुमे होइत अछि।
ऋ ॠ टवर्ग र ष क उच्चारण मूर्धामे होइत अछि।
लृ तवर्ग ल स क उच्चारण दाँतसँ होइत अछि।
उ ऊ पवर्ग आ उपध्मानीय क उच्चारण ओष्ठसँ होइत अछि।

व क उच्चारण उपरका दाँतसँ अधर ओष्ठक सहायतासँ होइत अछि।
ए ऐ क उच्चारण कण्ठ आ तालुसँ होइत अछि।
ओ औ क उच्चारण कण्ठ आ ओष्ठसँ होइत अछि।
य र ल व अन्य व्यञ्जन जकाँ उच्चारणमे जिह्वाक अग्रादि भाग ताल्वादि स्थानकेँ पूर्णतया स्पर्श नै करैत अछि। श् ष् स् ह् जकाँ ऐमे तालु आदि स्थानसँ घर्षण सेहो नै होइत अछि।
क सँ म धरि स्पर्श (वा स्फोटक कारण जिह्वाक अग्र द्वारा वायु प्रवाह रोकि कऽ छोड़ल जाइत अछि) वर्ण र सँ व अन्तःस्थ आ ष सँ ह घर्षक वर्ण भेल।
सभ वर्गक पाँचम वर्ण अनुनासिक कहबैत अछि कारण आन स्थान समान रहितो एकर सभक नासिकामे सेहो उच्चारण होइत अछि- उच्चारणमे वायु नासिका आ मुँह बाटे बहार होइत अछि।
अनुस्वार आ यम क उच्चारण मात्र नासिकामे होइत अछि- आ ई सभ नासिक्य कहबैत अछि- कारण ऐ सभमे मुखद्वार बन्द रहैत अछि आ नासिकासँ वायु बहार होइत अछि। अनुस्वारक स्थान पर न् वा म् क उच्चारण नै हेबाक चाही।
जखन हमरा सभकेँ गप करबाक इच्छा होइत अछि, तखन संकल्पसँ जठराग्नि प्रेरित होइत अछि। नाभि लगक वायु वेगसँ उठैत मूर्धा धरि पहुँचि, जिह्वाक अग्रादि भाग द्वारा निरोध भेलाक अनन्तर मुखक तालु आदि भागसँ घर्षित होइत अछि आ तखन वर्णक उत्पत्ति होइत अछि। कम्पन भेलासँ वायु नादवान आ यएह गुंजित होइत पहुँचैत अछि मुँहमे आ ओकरा कहल जाइत अछि घोषवान, नादरहित भऽ पहुँचैत अछि श्वासमे आ ओकरा कहल जाइत अछि अघोषवान्।

श्वास प्रकृतिक वर्ण भेल ‘‘अघोष’’ , आ नाद प्रकृतिक भेल ‘‘घोषवान्’’। जइ वर्णक उत्पत्तिमे प्राणवायुक अल्पता होइत अछि से अछि ‘‘अल्पप्राण’’ आ जकर उत्पत्तिमे प्राणवायुक बहुलता होइत अछि, से भेल ‘‘महाप्राण’’।
कचटतप क पहिल, तेसर आ पाँचम वर्ण भेल अल्पप्राण आ दोसर आ चारिम वर्ण भेल महाप्राण। संगे कचटतप क पहिल आ दोसर भेल अघोष आ तेसर, चारिम आ पाँचम भेल घोषवान्। य र ल व भेल अल्पप्राण घोष। श ष स भेल महाप्राण अघोष आ ह भेल महाप्राण घोष। स्वर होइछ अल्पप्राण, उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित।

छन्दोबद्ध रचना पद्य कहबैत अछि-अन्यथा ओ गद्य थीक। छन्द माने भेल एहन रचना जे आनन्द प्रदान करए । मुदा ऐसँ ई नै बुझबाक चाही जे आइक नव कविता गद्य कोटिक अछि कारण वेदक सावित्री-गायत्री मंत्र सेहो शिथिल/ उदार निअमक कारण, सावित्री मंत्र गायत्री छंद, मे परिगणित होइत अछि तकर चरचा नीचाँ जा कऽ हएत - जेना यदि अक्षर पूरा नै भेल तँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादकँ बढ़ा लेल जाइत अछि। य आ व केर संयुक्ताक्षरकँ क्रमशः इ आ उ लगा कऽ अलग कएल जाइत अछि। जेना- वरेण्यम्=वरेणियम्

स्वः= सुवः।

आइक नव कविताक संग हाइकू लेल मैथिली भाषा आ भारतीय, संस्कृत आश्रित लिपि व्यवस्था सर्वाधिक उपयुक्त अछि। तमिल छोड़ि शेष सभटा दक्षिण आ समस्त उत्तर-पश्चिमी आ पूर्वी भारतीय लिपि आ देवनागरी लिपि मे वएह स्वर आ कचटतप व्यञ्जन विधान

अछि, जइमे जे लिखल जाइत अछि सएह बाजल जाइत अछि। मुदा देवनागरीमे ह्रस्व “इ” एकर अपवाद अछि, ई लिखल जाइत अछि पहिने, मुदा बाजल जाइत अछि बादमे। मुदा मैथिलीमे ई अपवाद सेहो नै अछि- यथा *अछि* ई बाजल जाइत अछि अ- ह्रस्व इ -छ वा अ इ छ। दोसर उदाहरण लिअ- राति- रा इ त। तँ सिद्ध भेल जे हाइकूक लेल मैथिली सर्वोत्तम भाषा अछि। एकटा आर उदाहरण लिअ। सन्धि संस्कृतक विशेषता अछि, मुदा की इंग्लिशमे संधि नै अछि? तँ ई की अछि - आइम गोइङ टूवाड्र्सदएन्ड। एकरा लिखल जाइत अछि- आइ एम गोइङ टूवाड्र्स द एन्ड। मुदा पाणिनि ध्वनि विज्ञानक आधार पर संधिक निअम बनेलन्हि, मुदा इंग्लिशमे लिखबा कालमे तँ संधिक पालन नै होइ छै, आइ एम कँ ओना *आइम* फोनेटिकली लिखल जाइत अछि, मुदा बजबा काल एकर प्रयोग होइत अछि। मैथिलीमे सेहो यथासंभव विभक्ति शब्दसँ सटा कऽ लिखल आ बाजल जाइत अछि।

छन्द दू प्रकारक अछि। मात्रा छन्द आ वर्ण छन्द ।

वेदमे वर्णवृत्तक प्रयोग अछि मात्रिक छन्दक नै ।

वार्णिक छन्दमे वर्ण/ अक्षरक गणना मात्र होइत अछि। हलंतयुक्त अक्षरकेँ नै गानल जाइत अछि। एकार उकार इत्यादि युक्त अक्षरकेँ ओहिना एक गानल जाइत अछि जेना संयुक्ताक्षरकेँ। संगे अ सँ ह केँ सेहो एक गानल जाइत अछि। एकसँ बेशी मान कोनो वर्ण/ अक्षरक नै होइछ। मोटा-मोटी तीनटा बिन्दु मोन राखू-

१. हलंतयुक्त अक्षर-०

२. संयुक्त अक्षर-१

३. अक्षर अ सँ ह -१ प्रत्येक।

आब पहिल उदाहरण देखू-

ई अरदराक मेघ नहि मानत रहत बरसि के=१+५+२+२+३+३+३+१=२०

आब दोसर उदाहरण देखू

पश्चात्=२

आब तेसर उदाहरण देखू

आब=२

आब चारिम उदाहरण देखू

स्क्रिप्ट=२

मुख्य वैदिक छन्द सात अछि-

गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पङ्क्ति, त्रिष्टुप् आ जगती। शेष ओकर भेद अछि, अतिछन्द आ विच्छन्द। एतऽ छन्दकेँ अक्षरसँ चिन्हल जाइत अछि। जे अक्षर पूरा नै भेल तँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादमे बढ़ा लेल जाइत अछि। य आ व केर संयुक्ताक्षरकेँ क्रमशः इ आ उ लगा कऽ अलग कएल जाइत

अछि। जेना-

वरेण्यम्=वरेणियम्

स्वः= सुवः

गुण आ वृद्धिकेँ अलग कऽ सेहो अक्षर पूर कए सकैत छी।

ए = अ + इ

ओ = अ + उ

ऐ = अ/आ + ए

औ = अ/आ + ओ

छन्दः शास्त्रमे प्रयुक्त 'गुरु' आ 'लघु' छंदक परिचय प्राप्त करू।

तेरह टा स्वर वर्णमे अ,इ,उ,ऋ,लृ ई पाँच ह्रस्व आर आ,ई,ऊ,ऋ,ए.ऐ,ओ,औ, ई आठ दीर्घ स्वर अछि।

ई स्वर वर्ण जखन व्यंजन वर्णक संग जुड़ि जाइत अछि तँ ओकरासँ 'गुणिताक्षर' बनैत अछि।

क्+अ= क,

क्+आ=का ।

एक स्वर मात्रा आकि एक गुणिताक्षरकेँ एक 'अक्षर' कहल जाइत अछि। कोनो व्यंजन मात्रकेँ अक्षर नै मानल जाइत अछि- जेना 'अवाक्' शब्दमे दू टा अक्षर अछि, अ, वा ।

१. सभटा ह्रस्व स्वर आ ह्रस्व युक्त गुणिताक्षर 'लघु' मानल जाइत अछि। एकरा ऊपर U लिखि एकर संकेत देल जाइत अछि।

२. सभटा दीर्घ स्वर आ दीर्घ स्वर युक्त गुणिताक्षर 'गुरु' मानल जाइत अछि, आ एकर संकेत अछि, ऊपरमे एकटा छोट -।

३. अनुस्वार किंवा विसर्गयुक्त सभ अक्षर गुरू मानल जाइत अछि।

४. कोनो अक्षरक बाद संयुक्ताक्षर किंवा व्यंजन मात्र रहलासँ ओइ अक्षरकेँ गुरु मानल जाइत अछि। जेना- अच्, सत्य। ऐमे अ आ स दुनू गुरु अछि।

५. जेना वार्णिक छन्द/ वृत्त वेदमे व्यवहार कएल गेल अछि तहिना स्वरक पूर्ण रूपसँ विचार सेहो ओइ युग सँ भेटैत अछि। स्थूल रीतिसँ ई विभक्त अछि:- १. उदात्त २. उदात्ततर ३. अनुदात्त ४. अनुदात्ततर ५. स्वरित ६. अनुदात्तानुरक्तस्वरित, ७. प्रचय (एकटा श्रुति-अनहत नाद जे बिना कोनो चीजक उत्पन्न होइत अछि, शेष सभटा अछि आहत नाद जे कोनो वस्तुसँ टकरओला पर उत्पन्न होइत अछि)।

१. उदात्त- जे अकारादि स्वर कण्ठादि स्थानमे ऊर्ध्व भागमे बाजल जाइत अछि। एकरा लेल कोनो चेन्ह नै अछि। २. उदातात्तर-

कण्ठादि अति ऊर्ध्व स्थानसँ बाजल जाइत अछि। ३. अनुदात्त- जे कण्ठादि स्थानमे अधोभागमे उच्चारित होइछ। नीचाँमे तीर्यक चेन्ह खचित कएल जाइछ। ४. अनुदातात्ततर- कण्ठादिसँ अत्यंत नीचाँ बाजल जाइत अछि। ५. स्वरित- जइमे अनुदात्त रहैत अछि किछु भाग, आ किछु रहैत अछि उदात्त। ऊपरमे ठाढ़ रेखा खेंचल जाइत अछि, ऐमे। ६. अनुदाक्तानुरक्तस्वरित- जइमे उदात्त, स्वरित किंवा दुनू बादमे होइछ, ई तीन प्रकारक होइछ। ७. प्रचय-स्वरितक बादक अनुदात्त रहलासँ अनाहत नाद प्रचयक, तानक उत्पत्ति होइत अछि।

१. पूर्वार्चिकमे क्रमसँ अग्नि, इन्द्र आ सोम पयमानकेँ संबोधित गीत अछि। तदुपरान्त आरण्यक काण्ड आ महानाम्नी आर्चिक अछि। आग्नेय, ऐन्द्र आ पायमान पर्वकेँ ग्रामगेयण आ पूर्वार्चिकक शेष भागकेँ आरण्यकगण सेहो कहल जाइछ। सम्मिलित रूपेँ एकरा प्रकृतिगण कहै छी। २.उत्तरार्चिक: विकृति आ उत्तरगण सेहो कहै छी। ग्रामगेयगण आ आरण्यकगणसँ मंत्र चुनि कऽ क्रमशः उहगण आ ऊह्यगण कहबैछ- तदन्तर प्रत्येक गण दशरात्र, संवत्सर, एकह, अहिन, प्रायश्चित आ क्षुद्र पर्वमे बाँटल जाइछ। पूर्वार्चिक मंत्रक लयकेँ स्मरण कऽ उत्तरार्चिक केर द्विक, त्रिक, आ चतुष्टक आदि (२,३, आ ४ मंत्रक समूह) मे ऐ लय सभक प्रयोग होइछ। अधिकांश त्रिक आदि प्रथम मंत्र पूर्वार्चिक होइत अछि, जकर लय पर पूरा सूक्त (त्रिक आदि) गाओल जाइछ।

उत्तरार्चिक उहागण आ उह्यगण प्रत्येक लयकेँ तीन बेर तीन प्रकारेँ पढ़ैछ। वैदिक कर्मकाण्डमे प्रस्ताव, प्रस्तोतर द्वारा, उद्गीत उदगातर

द्वारा, प्रतिघार प्रतिहातर द्वारा, उपद्रव पुनः उदगातृ द्वारा आ निधान तीनू द्वारा मिलि कय गाएल जाइछ। प्रस्तावक पहिने हिंकार (हिं,हुं,हं) तीनू द्वारा आ ॐ उदगातृ द्वारा उदगीतक पहिने गाओल जाइछ। ई पाँच भक्ति भेल।

हाथक मुद्रा- हाथक मुद्रा १.१.औँठा(प्रथम आँगुर)-एक यव दूरी पर २.२. औँठा प्रथम आँगुरकेँ छुबैत ३.३. औँठा बीच आँगुरकेँ छुबैत ४.४. औँठा चारिम आँगुरकेँ छुबैत ५.५. औँठा पाँचम आँगुरकेँ छुबैत ६.११. छठम क्रुष्ट औँठा प्रथम आँगुरसँ दू यव दूरी पर ७.६. सातम अतिश्वर सामवेद ८.७. अभिगीत ऋग्वेद

ग्रामगेयगान- ग्राम आ सार्वजनिक स्थल पर गाएल जाइ छल। आरण्यक गेयगान- वन आ पवित्र स्थानमे गाएल जाइ छल।

ऊहगान- सोमयाग एवं विशेष धार्मिक अवसर पर। पूर्वार्चिकसँ संबंधित ग्रामगेयगान ऐ विधिसँ। ऊह्मगान आकि रहस्यगान- वन आ पवित्र स्थान पर गाएल जाइत अछि। पूर्वार्चिकक आरण्यक गानसँ संबंध। नारदीय शिक्षामे सामगानक संबंधमे निर्देश:- १.स्वर-७ ग्राम-३ मूर्छना-२१ तान-४९

सात टा स्वर सा,रे,ग,म,प,ध,नि, आ तीन टा ग्राम-मध्य,मन्द,तीव्र। ७*३=२१ मूर्छना। सात स्वरक परस्पर मिश्रण ७*७=४९ तान।

ऋगवेदक प्रत्येक मंत्र गौतमक २ सामगान (पर्कक) आ काश्यपक १ सामगान (पर्कक) कारण तीन मंत्रक बराबर भऽ जाइत अछि। मैकडॉवेल इन्द्राग्नि, मित्रावरुणौ, इन्द्राविष्णु, अग्निषोमौ ऐ सभकेँ युगलदेवता मानलन्हि अछि। मुदा युगलदेव अछि विशेषण-विपर्यय।

वेदपाठ-

१. संहिता पाठ अछि शुद्ध रूपमे पाठ।

अ॒ग्निमी॑ळे पु॒रोहि॑तं य॒ज्ञस्य॑दे॒वमृ॒त्विज॑म।होता॑रंरत्न॒ धातमम्।

२. पद पाठ- ऐमे प्रत्येक पदकें पृथक कऽ पढ़ल जाइत अछि।

३. क्रमपाठ- एतऽ एकक बाद दोसर, फेर दोसर तखन तेसर, फेर तेसर तखन चतुर्थ। एना कऽ पाठ कएल जाइत अछि।

४. जटापाठ- ऐमे जँ तीन टा पद क, ख, आ ग अछि तखन पढ़बाक क्रम ऐ रूपमे हएत, कख, खक, कख, खग, गख, खग। ५. घनपाठ-ऐ मे उपरका उदाहरणक अनुसार निम्न रूप हएत- कख,खक,कखग,गखक,कखग। ६. माला, ७. शिखा, ८. रेखा, ९. ध्वज, १०. दण्ड, ११. रथ। अंतिम आठकेँ अष्टविकृति कहल जाइत अछि।

साम विकार सेहो ६ टा अछि, जे गानकेँ ध्यानमे रखैत घटाएल, बढ़ाएल जा सकैत अछि। १. विकार-अग्नेकेँ ओग्नाय। २. विश्लेषण- शब्द/पदकेँ तोड़नाइ ३. विकर्षण-स्वरकेँ खिंचनाइ/ अधिक मात्राक बड़ाबर बजेनाइ। ४. अभ्यास- बेर-बेर बजनाइ। ५. विराम- शब्दकेँ तोड़ि कऽ पदक मध्यमे 'यति'। ६. स्तोभ-आलाप योग्य पदकेँ जोड़ि लेब। कौथुमीय शाखा 'हाउ' 'राइ' जोड़ै छथि। राणानीय शाखा 'हावु', 'रायि' जोड़ै छथि।

मात्रिक छन्दक प्रयोग वेदमे नै अछि वरन् वर्णवृत्तक प्रयोग अछि आ गणना पाद वा चरणक अनुसार होइत रहए। मुख्य छन्द गायत्री, एकर प्रयोग वेदमे सभसँ बेशी अछि। तकर बाद त्रिष्टुप आ जगतीक प्रयोग अछि।

१. गायत्री- ८-८ केर तीन पाद। दोसर पादक बाद विराम। वा एक पदमे छह टा अक्षर।

२. त्रिष्टुप- ११-११ केर ४ पाद।

३. जगती- १२-१२ केर ४ पाद।

४. उष्णिक- ८-८ केर दू तकर बाद १२ वर्ण-संख्याक पाद।

५. अनुष्टुप- ८-८ केर चारि पाद। एकर प्रयोग वेदक अपेक्षा संस्कृत साहित्यमे बेशी अछि।

६. बृहती- ८-८ केर दू आ तकरा बाद १२ आ ८ मात्राक दू पाद।

७. पंक्ति- ८-८ केर पाँच। प्रथम दू पदक बाद विराम अबैछ।

यदि अक्षर पूरा नै होइत अछि, तँ एक वा दू अक्षर निम्न प्रकारेँ घटा-बढ़ा लेल जाइत अछि।

(अ) वरेण्यम् केँ वरेणियम् स्वः केँ सुवः।

(आ) गुण आ वृद्धि सन्धिकेँ अलग कऽ लेल जाइत अछि।

ए= अ + इ

ओ= अ + उ

ऐ= अ/आ + ए

औ= अ/आ + ओ

अहू प्रकारेँ नै पुरलापर अन्य विराडादि नामसँ एकर नामकरण होइत अछि।

यथा- गायत्री (२४)- विराट् (२२), निचृत् (२३), शुद्धा (२४), भुरिक् (२५), स्वराट्(२६)।

ॐ भूर्भुवस्वः । तत् सवितुर्वरेण्यं। भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।

वैदिक ऋषि स्वयंकेँ आ देवताकेँ सेहो कवि कहै छथि। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य ऐ कवि चेतनाक वाङ्मय मूर्त्ति अछि। ओतऽ आध्यात्म चेतना, अधिदैवत्वमे उत्तीर्ण भेल अछि, एवम् ओकरा आधिभौतिक भाषामे रूप देल गेल अछि।

वैदिक (छन्दस्) आ लौकिक संस्कृत (भाषा) क व्याकरण :

वैदिक आ लौकिक दुनू संस्कृतमे संज्ञा, सर्वनाम आ विशेषणक पुल्लिंग, स्त्रीलिंग आ नपुंसक लिंग, तीन वचन- एक, दू आ बहुवचन रहल, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग आ नपुंसक लिंग, लिंगक द्योतक

नै अछि, दारा- पुल्लिंग, कलत्र- नपुंसक लिंग आ भार्या- स्त्रीलिंग; मुदा तीनू पत्नीक पर्यायवाची अछि। तहिना ईश्वरः (पुल्लिंग), ब्रह्म (नपुंसक लिंग) आ चितिः (स्त्री लिंग) होइत अछि। संज्ञा, सर्वनाम आ विशेषणक आठटा कारक (विभक्ति) सेहो होइत अछि। दस गणक धातुक रूप परस्मैपदी (फल दोसराकेँ), आत्मनेपदी (फल अपनाकेँ) आ उभयपदी ई तीन तरहक होइत अछि। कर्तृ, कर्म आ भव ई तीन वाच्य आ बारह लकार (लट्, लिट्, लङ्, लुङ्, लुट्, लृट्, लोट्, विधिलिंङ्, आर्शीलिंङ्, लृङ्, लेट् आ लेङ्) होइत अछि। लेट् आ लेङ् लकार लौकिक संस्कृत (भाषा) मे नै होइत अछि।

संस्कृतमे तीनटा पुरुष- प्रथम (आन भाषाक अन्य पुरुष), मध्यम आ उत्तम होइत अछि। उद्देश्य आ विधेय; कर्ता आ क्रिया; विशेष्य आ विशेषण आ संज्ञा आ सर्वनामक परस्पर गुण-समानता रहै छै।

वैदिक संस्कृतमे गीतात्मक आ बलात्मक स्वराघात रहए मुदा लौकिक संस्कृतमे खाली बलात्मक स्वराघात रहि गेल। वैदिक उच्चारण उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित (संगीतशास्त्रक आरोह, अवरोह आ सम सँ तुलना द्रष्टव्य) लौकिक उच्चारणमे खतम भऽ गेल।

वैदिक छन्दमे एक चरण, जकरा पाद कहै छिऐ ओइ पादमे वर्णक गनती होइत अछि। छन्दमे गति (लय) आ यति (विराम) सेहो होइत अछि। ह्रस्व स्वर लघु होइत अछि, ह्रस्वक बाद संयुक्त वर्ण एलासँ लघु स्वर गुरु स्वर भऽ जाइत अछि।

उपसर्ग: लौकिक संस्कृतमे उपसर्ग क्रियासँ पहिने अबैत अछि मुदा

वैदिक संस्कृतमे पहिने, बादमे, अलगसँ आ कतौ अन्तरालक बाद सेहो अबैत अछि। संगे वैदिक संस्कृतमे जे एक बेर उपसर्ग क्रियाक संग आबि गेल तँ तकरा बाद ओइ मंत्रमे मात्र उपसर्गक प्रयोग हएत आ वएह उपसर्गयुक्त क्रियाक द्योतक हएत।

समास: वैदिक संस्कृतमे समासमे सेहो कखनो काल भिन्नता छै, जेना अष्टक बाद कोनो शब्द होइ तँ ओ अष्टा भऽ जाइ छै- अष्टापदी। पितृ आ मातृक द्वन्द्व समास भेलापर दुनूमे *आ* लगै छै आ गुण होइ छै- पितरामातरा।

लेट लकार: लौकिक संस्कृतमे लेट लकारक प्रयोग नै होइत अछि मुदा वैदिक संस्कृतमे होइत अछि जेना भवाति, पताति लौकिकमे मात्र भवति, पततिसँ निदृष्ट होइत अछि।

वैदिक आ लौकिक संस्कृत कोनो दू भाषा नै अछि वरन् लौकिक संस्कृत, वैदिक संस्कृतिक सरल रूप अछि। वैदिक संस्कृतमे लौकिक संस्कृतसँ सभ किछु बेशी अछि (अपवाद- लुट् आ लृट् लकारक वैदिक संस्कृतमे कम उपयोग।)

संहिता, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक आ उपनिषदक भाषा वैदिक संस्कृत कहल जाइत अछि आ तकर बादक संस्कृत लौकिक संस्कृत कहल जाइत अछि।

दुनू संस्कृतमे धातु, शब्द आ अर्थ प्रायः एक्के अछि।

दुनूमे तीन लिंग, तीन वचन आ तीन पुरुष होइत अछि।

दुनूमे सभ शब्द प्रायः धातु अछि; रूढ़ शब्द बड्ड कम अछि।

समास दुनूमे अछि, हँ लौकिक संस्कृतमे एकर बेशी प्रयोग देखबामे अबैत अछि।

छन्द सेहो दुनूमे मोटा-मोटी एक्के रङक भेटत।

धातुक गण मध्य विभाजन सेहो दुनूमे एक्के रङ भेटत।

णिच्, सन् प्रत्यय दुनूमे एक्के रङ भेटत।

पदक निर्माण दुनूमे एक्के तरीकासँ होइत अछि।

सुप्-तिङ-कृत्-तद्धित दुनूमे एक्के रङ भेटत।

दुनूमे शब्दक क्रम आगाँ पाछाँ भेने अर्थक परिवर्तन नै होइत अछि। दुनूमे सन्धि, कारक आ विभक्ति होइत अछि।

मुदा:-

लौकिक संस्कृतमे उपध्मानीय आ जिह्वामूलीय ध्वनिक प्रयोग नै होइत अछि आ तकर स्थानमे विसर्गसँ काज चलैत अछि।

वैदिक संस्कृतमे ळ, ळह होइत अछि मुदा लौकिक संस्कृतमे नै होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे दू स्वर मध्य ''ड'' ळ भऽ जाइत अछि आ ''ढ'' ळह भऽ जाइत अछि। लौकिक संस्कृतमे से नै अछि।

ग्वाङ (ह्रस्व आ दीर्घ) लौकिक संस्कृतमे नै अछि। यजुर्वेदमे ह, श, ष, स, र एहि सभसँ पूर्व अनुस्वार ग्वाङ भऽ जाइत अछि।

उदात्त, अनुदात्त आ स्वरितक उच्चारण लौकिक संस्कृतमे स्पष्ट रूपसँ नै होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे लेट् लकारक प्रयोग होइत अछि, लौकिक संस्कृतमे नै।

वैदिक संस्कृतमे उपसर्ग धातुसँ पृथक् मुदा लौकिक संस्कृतमे संगमे प्रयोग होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे कृत् प्रत्ययक तुमुन् से, सेन्, असे, अध्यै इत्यादि १५ टा प्रत्ययक प्रयोग होइत अछि मुदा लौकिक संस्कृतमे खाली ''तुम्'' प्रत्ययक प्रयोग होइत अछि।

वैदिक संस्कृतक सन्धि निअम शिथिल होइत अछि मुदा लौकिक संस्कृतक दृढ़ होइत अछि।

वैदिक कतेको शब्दक अर्थ लौकिक संस्कृतमे बदलि गेल अछि। जेना असुर वैदिक संस्कृतमे शक्तिवानकेँ कहल जाइ छल मुदा लौकिक संस्कृतमे राक्षसकेँ कहल जाइत अछि।

धातुरूप सेहो वैदिक संस्कृतमे भिन्न अछि, अन्तिम स्वर दीर्घ सेहो होइत अछि। जेना चक्र- चक्रा: द्वित्वक अभाव होइत अछि जेना ''ददाति''क स्थानमे ''दाति''; कखनो काल परस्मैपदिक स्थानमे

आत्मेनपद आ आत्मनेपदिक स्थानमे परस्मैपद धातुक प्रयोग होइत अछि; शप् स्थानपर कखनो काल दोसर गणक विकरणक प्रयोग होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे शब्द रूप, धातु रूप, प्रत्ययक विविधता बेशी अछि।

वैदिक संस्कृतक काल-पुरुष-वचन-लिंगक ऐच्छिक परिवर्तन लौकिक संस्कृतमे मोटामोटी खतम भऽ गेल अछि।

वैदिक संस्कृतक अच्, अम्, जिन्व्, पिन्व् आदि धातु लौकिक संस्कृतमे प्रयोग नै होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे तर-तम प्रत्यय संज्ञा शब्द सन आ लौकिक संस्कृतमे विशेषण सन प्रयुक्त होइत अछि।

छन्दक हिसाबसँ वैदिक संस्कृतमे स्वर्-सुवर् आ दर्शत, दरशत लिखि लेल जाइत अछि। मुदा लौकिक संस्कृतमे से नै होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे ‘‘आन्’’ पदक अन्तमे रहलापर आ तकर बाद अ, इ, उ स्वर एलापर न् लुप्त भऽ जाइत अछि आ आकारक बाद अनुस्वार भऽ जाइत अछि। जेना महान् इन्द्रः= महा इन्द्रः। लौकिक संस्कृतमे से नै होइत अछि।

वैदिक संस्कृत-धातुरूपः-

लट् लकार मध्यमपुरुष बहुवचन परस्मैपदि धातु थ, त, थन, तन

ई चारू प्रत्यय लगैत अछि। जेना वद्- वदथ, वदथन, वदत, वदतन।

लट् लकार उत्तमपुरुष-बहुवचन परस्मैपदि धातु मस् (मः), मसि ई दूटा प्रत्यय प्रयोग होइत अछि। जेना नाशयामः- नाशयामसि। इमः इमसि। स्मः- स्मसि।

लोट् लकारक मध्यमपुरुष एकवचन परस्मैपदि धातुमे हि, धि ई दूटा प्रत्यय होइत अछि। जेना श्रुणुहि, श्रुणुधि।

लोट् लकार मध्यमपुरुष बहुवचन आत्मनेपद धातुमे ध्वम् आ ध्वात् ई दूटा प्रत्यय होइत अछि। जेना वारयध्वम्, वारयध्वात्।

(छन्दसि लुङ् लङ् लिटः):- वैदिक संस्कृतमे लुङ्, लङ् आ लिट् लकारक प्रयोग लोट्, लट् लकारक अर्थमे प्रयोग होइत अछि। जेना आगमत् (वैदिक लुङ्)= आगच्छतु (लोट)। अवृणीत (वैदिक लङ्)= वृणीते (लट्)। ममार (वैदिक लिट्)= म्रियते (लट्)।

वैदिक संस्कृत:-शब्दरूप:-

[संस्कृत (सं= स्+म- ई ठीक अछि; एकर उच्चारण सं= स्+न गलत अछि।)]

वैदिक संस्कृतमे शब्दरूपक भिन्नता लौकिकसँ बेशी होइत अछि। जेना अकारान्त पुल्लिंग देवः प्रथमा-द्वितीया-सम्बोधन-द्विवचन वैदिकमे देवा, देवौ दुनू होइत अछि मुदा लौकिकमे मात्र देवौ होइत अछि।

प्रथमा-सम्बोधन-बहुवचन वैदिकमे देवासः, देवाः मुदा लौकिकमे मात्र देवाः होइत अछि। तृतीया-एकवचन वैदिकमे देवा, देवेन दुनू होइत अछि मुदा लौकिकमे मात्र देवेन होइत अछि। तृतीया-बहुवचन वैदिकमे देवेभिः, देवैः मुदा लौकिकमे देवैः होइत अछि।

तहिना वैदिक संस्कृतमे ऋकारान्त शब्दक रूप पुल्लिंग-स्त्रीलिंगमे लौकिक संस्कृत जकाँ होइत अछि, खाली प्रथमा-द्वितीया-सम्बोधन-द्विवचनमे दू रूप होइत अछि। जेना दातृ- दातारा, दातारौ। पितृ- पितरा, पितरौ। मातृ- मातरा, मातरौ।

अस्मद्:- प्रथमा-द्विवचन वैदिक- वाम्, आवम्; लौकिक आवाम्। चतुर्थी-एकवच वैदिक- मह्य, मह्यम्; लौकिक- मह्यम्। पञ्चमी-द्विवचन वैदिक आवत्, आवाभ्याम्; लौकिक- आवाभ्याम्। सप्तमी-बहुवचन वैदिक-अस्मे, अस्मासु; लौकिक- अस्मासु।

छन्द

पिङ्गल मुनिक छन्द शास्त्रक आठमे सँ पहिल चारिम अध्यायक सातम सूत्र धरि वैदिक छन्दक आ तकरा बाद लौकिक छन्दक वर्णन अछि।

वैदिक छन्दमे अक्षरक गणना होइत अछि। ओतऽ लघु आ गुरुक विचार नै होइत अछि। ऋगवेदमे सभसँ बेशी त्रिष्टुप्, फेर गायत्री आ तखन जगती छन्दक प्रयोग भेल अछि।

त्रिष्टुप्- ४४ अक्षर- ११ अक्षरक ४ पाद;

गायत्री- २४ अक्षरक (ई २,३,४,५ पदक होइत अछि), सभसँ बेशी लोकप्रिय ८ अक्षरक तीन पादक गायत्री जइमे दोसर पादक बाद विराम होइत अछि। २३ अक्षरक गायत्री निचृद् गायत्री, २२ अक्षरक गायत्री विराड् गायत्री, २५ अक्षरक गायत्री भुरिग् गायत्री, २६ अक्षरक गायत्री स्वराड् गायत्री कहल जाइत अछि। सभ पादमे एक अक्षर कम भेलासँ ''पादनिचृद् गायत्री'' कहल जाइत अछि।

जगती- ४८ अक्षर- १२ अक्षरक चारि पाद।

पाठ

वैदिक संस्कृतकेँ स्मरण रखबाक कएकटा विधि अछि।

संहिता पाठ- मूलमंत्र सन्धि सहित सस्वर पढ़ल जाइत अछि।

पदपाठ- मन्त्रक पदक पृथक पाठ होइत अछि।

क्रमपाठ- क्रमसँ दू पदक पाठ होइत अछि।

जटापाठ- अनुलोम १-२, विलोम २-१, अनुलोम १-२

शिखापाठ- जटापाठमे परिवर्तित उत्तरपदक योगसँ शिखापाठ होइत अछि।

घनपाठ- शिखामुक्त विपर्यक पदक पुनः पाठ होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे यज्ञ आ आध्यात्मिक विषयक चर्च होइत अछि।

लौकिक संस्कृतमे इहलौकिक विषयवस्तु सेहो अबैत अछि।

प्राकृत

संस्कृतसँ पहिने प्राकृत रहए वा बादमे ई विवादक विषय भऽ सकैत अछि कारण ऋगवेदक शिथिर, दूलभ, इन्दर आदि शब्द जनभाषाक साहित्यीकरणक प्रमाण अछि। ओना एकर प्रारम्भिक प्रयोग अशोकक अभिलेखसँ तेरहम शताब्दी ई. धरि भेटि जाएत मुदा पारिभाषिक रूपमे जइ प्राकृतक एतऽ चर्चा भऽ रहल अछि ओ पहिल ई.सँ छठम ई. धरि साहित्यिक भाषा दू अर्थे रहल। पहिल संस्कृत साहित्यक नाटकमे जन सामान्य आ स्त्री पात्र लेल शौरसेनी, महाराष्ट्री आ मागधीक (वररुचि चारिम प्राकृतमे पैशाचीक नाम जोड़ै छथि) प्रयोग सेहो भेल (कालिदासक अभिज्ञान शाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम्, शूद्रकक मृच्छकटिकम्, श्रीहर्षक रत्नावली, भवभूतिक उत्तररामचरित, विशाखादत्तक मुद्राराक्षस) आ दोसर जे फेर ऐ प्राकृत सभमे साहित्यक निर्माण स्वतंत्र रूपेँ होमए लागल। फेर ऐ प्राकृत भाषाकेँ सेहो व्याकरणमे बान्हल गेल आ तखन ई भाषा अलंकृत होमए लागल आ अपभ्रंश आ अवहट्टक प्रयोग लोक करऽ लगला, ओना अपभ्रंश प्राकृतक संग प्रयोग होइत रहए तकर प्रमाण सेहो उपलब्ध अछि।

अशोकक अभिलेखमे शाहबाजगढ़ी आ मानसेराक अभिलेख उत्तर-पच्छिम, कलसी, मध्य, धौली, जौगड़ पूर्व आ गिरनार दक्षिण पच्छिमक जनभाषाक क्षेत्रीय प्रकारक दर्शन करबैत अछि। राजशेखर प्राकृतकेँ मिट्ठ आ संस्कृतकेँ कठोर कहै छथि (विद्यापति पछाति कहै छथि देसिल बयना सभ जन मिट्ठा)।

प्राचीन प्राकृत पालिकेँ कहल जाइत अछि जइमे अशोकक अभिलेख, महावंश आ जातक लिखल गेल। मध्य प्राकृतमे साहित्यिक प्राकृत अबैत अछि। बादक प्राकृतमे अपभ्रंश आ अवहट्ठ अबैत अछि।

मोटा-मोटी गद्य लेल शौरसेनी, पद्य लेल महाराष्ट्री आ धार्मिक साहित्य लेल मागधी-अर्धमागधीक प्रयोग भेल। नाटकमे स्त्री-विदूषक बजैत रहथि शौरसेनीमे मुदा पद्य कहथि महाराष्ट्रीमे, नाटकक तथाकथित निम्न श्रेणीक लोक मागधी बजै छला।

प्राकृतमे सुप् तिङ् धातुक संग मिज्झर भऽ जाइत अछि।

प्राकृतमे धातुरूप १-२ प्रकारक (भ्वादिगण जकाँ) आ शब्दरूप ३-४ (अकारान्त जकाँ) प्रकारक रहि गेल, माने दुनू रूप कम भऽ गेल। मुदा ऐसँ अर्थमे अस्पष्टता आएल जकर निवारण कारकक चेन्ह केलक।

चतुर्थी, द्विवचन, लङ् लिट् लुङ् आत्मेपद आदिक अभाव भऽ गेल प्रथमा आ द्वितीयाक बहुवचन एक भऽ गेल। ध्वनि परिवर्तन भेल। ऋ, ऐ, औ, य, श, ष आ विसर्गक अभाव भेल (अपवाद मागधीमे य आ श अछि मुदा स नै)।

अन्तमे आएल व्यंजन लुप्त भेल (ह्रस्व स्वरक बाद दू आ दीर्घ स्वरक बाद एकसँ बेशी व्यंजन नै रहि सकैत अछि।)

न ण मे, य ज मे आ श, ष स मे परिवर्तित भऽ जाइत अछि।

पदमे उत्तरपदक पहिल अक्षरक लोप भऽ जाइत अछि, मुदा से धातुरूप अछि तखन लोप नै होइत अछि। जेना आर्यपुत्र= अज्जउत्त मुदा आगतम्= आगदं

अनुदात्त अव्ययक पहिल अक्षरक लोप होइत अछि। जेना च= अ

भू धातुक भ परिवर्तित भऽ ह भऽ जाइत अछि। जेना भवति= होइ

क ख मे आ प फ मे बदलि जाइत अछि। पनस= फणस, क्रीड्= केल

उच्चारण स्थानक परिवर्तनक क्रममे दन्त्य उच्चारण स्थान तालव्यमे बदलि जाइत अछि। जेना त् = च्

मध्यक य लोपित भऽ जाइत अछि। क, ग, च, ज, त, द क सेहो किछु अपवादकेँ छोड़ि लोप होइत अछि। प, ब, व क लोप सेहो कखनो काल होइत अछि। जेना- प्रिय= पिअ, लोक= लोअ, अनुराग= अणुराअ, प्रचुर= पउर, भोजन= भोअण, रसातल= रसाअल, हृदय= हिअअ, रूप= रूअ, विबुध= विउह, वियोग= विओअ

मध्यक क, त, प क्रमसँ ग, द, ब भऽ जाइत अछि। ख, घ, थ, घ, फ, भ ई सभ ह भऽ जाइत अछि। जेना नायकः= णाअगु, आगतः= आगदो, दीप=दीब=दीव। मुख= मुह, सखी= सही, मेघ= मेह, लघुक= लहुअ, यूथ= जूह, रुधिर= रुहिर,

वधू= वहू, शाफर= साहर, अभिनव= अहिणव।

कखनो काल मध्यक व्यंजन दोबर भऽ जाइत अछि। जेना एक= एक्क

मध्यक ट, ठ क्रमसँ ड, ढ भऽ जाइत अछि। जेना कुटुम्ब= कुडुम्ब, पठन= पढण

मध्यक प, ब परिवर्तित भऽ व बनि जाइत अछि। जेना दीप= दीव। शबर= सवर।

ड, त, द परिवर्तित भऽ ल बनि जाइत अछि। जेना क्रीडा= कीला, सातवाहन= सालवाहण, दोहद= दोहल।

म परिवर्तित भऽ व बनि जाइत अछि। जेना ग्राम= गाँव।

अन्तिम स्पर्श वर्णक लोप होइत अछि, अन्तिम अनुनासिकमे अनुस्वार नै होइत अछि, अः बदलि कऽ ओ भऽ जाइत अछि वा ओकर लोप भऽ जाइत अछि।

मोटा-मोटी शब्दक प्रारम्भमे एकेटा व्यंजन आ मध्यमे बेशीसँ बेशी दूटा व्यंजन सेहो द्वित्वमे जेना क्क वा क्ख रूपमे रहैत अछि।

व्यंजनक बलक अनुरूपेँ निम्न प्रकारक क्रम होइत अछि।(अ) कवर्ग, चवर्ग,, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग मे क (सभसँ बेशी बलगर) सँ भ (क्रमसँ कम बलगर) धरि, सभ वर्गक पाँचम वर्ण छोड़ि कऽ। जेना कवर्गक ङ, चवर्गक ञ, टवर्गक ण, तवर्गक न आ

पवर्गक म छोड़ि कऽ। फेर (आ) कचटतप वर्गक पाँचम वर्ण। फेर (इ) ल, स, व, य, र। ऐमे समानबलक वर्णमे बादबला वर्ण प्रबल होइत अछि, अन्यथा अधिक बलबला बेशी बलगर होइत आछि। जेना- उत्पल= उप्पल, खड्ग= खग्ग, अग्नि= अग्गि। फेर जे कचटतप वर्गक पाँचम वर्णक ओइ वर्गक कोनो दोसर वर्ण हएत तँ पाँचम वर्ण ओहिना रहत, नै तँ ओकर परिवर्तन अनुस्वारमे भऽ जाएत। जेना क्रौञ्च= कोञ्च, दिङ्मुख= दिंमुह।

दोसर पदक प्रारम्भमे ज्ञ रहलासँ ओ ज्ज बनि जाइत अछि। मनोज्ञ= मणोज्ज।

कचटतप वर्गक बाद श, ष, स रहलासँ च्छ होइत अछि। जेना अप्सरा= अच्छरा, मत्सर= मच्छर।

क्ष बदलि कऽ क्ख भऽ जाइत अछि। जेना दक्षिण= दक्खिण।

शौरसेनीमे क्ष बदलि कऽ क्ख आ मागधीमे च्छ भऽ जाइत अछि। जेना कुक्षि= कुक्खि (शौरसेनी), कुच्छि (मागधी)।

प्राकृतमे ऋ आ लृ स्वर नै होइत अछि। ऋ बदलि कऽ (अ) रि भऽ जाइत अछि। जेना ऋषि= रिषि, (आ) अ भऽ जाइत अछि। जेना कृत= कद। (इ) इ भऽ जाइत अछि। जेना दृष्टि= दिट्ठि। (ई) उ भऽ जाइत अछि। जेना पृच्छति= पुच्छदि।

ऐ, औ बदलि कऽ ए भऽ जाइत अछि। जेना कौमुदी=

कोमुदी।

संयुक्ताक्षरसँ पूर्व ह्रस्व स्वर रहैत अछि।

उ बदलि कऽ अ वा ओ भऽ जाइत अछि। जेना मुकुल= मउल। पुस्तक= पोत्थअ।

ऊ बदलि कऽ ओ भऽ जाइत अछि। जेना मूल्य= मोल्ल।

ए बदलि कऽ इ भऽ जाइत अछि। जेना एतेन= एदिणा।

ओ बदलि कऽ उ भऽ जाइत अछि। जेना अन्योन्य= अण्णुण्ण।

अनुस्वार+ अपि= पि आ अनुस्वार+इति= ति भऽ जाइत अछि। खलु= ख भऽ जाइत अछि।

य् बदलि कऽ इ भऽ जाइत अछि। जेना कथयतु= कधेतु।

प्राकृतमे अन्तिम व्यंजनक लोप भऽ जाइत अछि। व्यंजन सन्धिक मोटा-मोटी अभाव रहैत अछि।

स्वर सन्धिमे सेहो मध्य वर्णक लोप भेलोपर सन्धि नै होइत अछि।

शब्दरूपमे द्विवचन खतम भऽ गेल। चतुर्थीक रूप षष्ठीमे मिलि गेल। व्यंजन अन्तबला शब्द खतम भऽ गेल।

धातुरूपमे शब्दरूपसँ बेशी अन्तर आएल। व्यंजन अन्तबला धातु खतम भऽ गेल। धातुरूप एक्के रीतिसँ चलऽ लागल, द्विवचन खतम भऽ गेल, रूपक भिन्नता कम भऽ गेल। आत्मनेपद रूप मोटा-मोटी खतम भऽ गेल। लिट्, लिङ्, लुङ् रूप सेहो मोटा-मोटी खतम भऽ गेल। भूतकाल लेल कृदन्त प्रत्ययक प्रयोग होमए लागल। भ्वादिगण आ चुरादिगणक अलाबे सभ गण खतम भऽ गेल।

शौरसेनीमे द्य, र्ज्, र्य् बदलि कऽ ज्ज् भऽ जाइत अछि।

शौरसेनी आ माहाराष्ट्री- संस्कृतक मध्यक त शौरसेनीमे द भऽ जाइत अछि मुदा माहाराष्ट्रीमे ओ लोपित भऽ जाइत अछि। जेना- संस्कृत- जानाति= शौरसेनी जाणादि= माहाराष्ट्री जाणाइ

संस्कृतक मध्यक थ शौरसेनीमे घ मुदा माहाराष्ट्रीमे ह भऽ जाइत अछि। जेना संस्कृत अथ= शौरसेनी अघ= माहाराष्ट्री अह।

दोसर पदक प्रारम्भमे ज्ञ रहलासँ मागधीमे ञ्ञ बनि जाइत अछि।

मागधीमे श, ष, स ई तीनू परिवर्तित भऽ श; र परिवर्तित भऽ ल; ज परिवर्तित भऽ य बनि जाइत अछि। अकारान्त प्रथमा एकवचनमे ए लगैत अछि। जेना दरिद्र= दलिद्द।

मागधीमे ज बदलि कऽ य भऽ जाइत अछि।

मागधीमे द्य, र्ज्, र्य् बदलि कऽ य्य भऽ जाइत अछि।

मागधीमे ण्य, न्य,ज्ञ,ञ्ज बदलि कऽ ञ्ञ भऽ जाइत अछि।

मागधीमे मध्यक च्छ बदलि कऽ श्च भऽ जाइत अछि।

मागधीमे ष्क= स्क वा श्क, ष्ट= स्ट वा श्ट, ष्प= स्प, ष्फ= स्फ भऽ जाइत अछि।

मागधीमे र्थ बदलि कऽ स्त भऽ जाइत अछि।

विधिलिङ् क प्रयोग जैन प्राकृत- अर्धमागधी आ जैन महाराष्ट्रीमे प्रचलित रहल, आन प्राकृतमे ई मोटा-मोटी खतम भऽ गेल।

संस्कृतक तुम् शौरसेनीमे दुं, मागधीमे सेहो दुं रहैत अछि मुदा महाराष्ट्रीमे उं भऽ जाइत अछि।

प्राकृतक शौरसेनी, मागधी, महाराष्ट्रीक अतिरिक्त पैशाची प्राकृतक सेहो उल्लेख भेटैत अछि। गुणाढ्यक वृहत्कथा ऐ प्राकृतमे लिखल गेल जे आब स्वतंत्र रूपसँ उपलब्ध नै अछि। एकर उल्लेख उद्धरण रूपमे कखनो काल भेटैत अछि। ई पश्चिमोत्तर भारतक प्राकृत छल, उद्धरण रूपमे उपलब्ध साहित्यक अनुसार ऐमे निम्न विशेषता छल। ण बदलि कऽ न भऽ गेल। र बदलि कऽ ल भऽ गेल। ल बदलि कऽ र भऽ गेल। सघोष अघोष बनि गेल। दू स्वरक बीचक ल बदलि कऽ ळ भऽ गेल। स्वरक बीचमे ष बदलि कऽ श वा स, ज्ञ बदलि कऽ न्य आ ण्य बदलि कऽ ञ्ञ भऽ

गेल। ऐमे आत्मनेपद आ परस्मैपद दुनू अछि।

पश्चिमोत्तरक खोतानसँ प्राकृत धम्मपद खरोष्ठी लिपिमे दहिनसँ वाम लिखल लेख प्राप्त होइत अछि जइमे श, ष, स तीनूक प्रयोग अछि।

मोटा-मोटी प्राकृतमे शब्द-धातुरूपक सरलीकरणक प्रक्रिया दृष्टिगोचर होइत अछि, द्वित्व, मूर्धन्यीकरण, अघोषीकरण आ सघोषीकरण, लकारक बदला कृदन्तक प्रयोग सेहो बढ़ि गेल।

प्राकृत आ पालि:

प्राकृतसँ वैदिक संस्कृत बहार भेल आकि वैदिक संस्कृतसँ प्राकृत? वेदमे नाराशंसी नाम्ना जन आख्यान यएह सिद्ध करैत अछि जे दुनू समानान्तर रूपेँ बहुत दिन धरि चलल। ई समानान्तर परम्परा दुनूकेँ प्रभावित केलक। आब ऋगवेद देखू- ओतऽ दुर्लभ लेल- दूलभ, (ऋगवेद ४.९.८) प्रयोग की सिद्ध करैत अछि? अथर्ववेदमे पश्चात् लेल पश्चा (अथर्ववेद १०.४.१०) की सिद्ध करैत अछि? गोपथ ब्राह्मणमे प्रतिसन्धाय लेल प्रतिसंहाय की सिद्द करैत अछि? (गोपथ ब्राह्मण २.४)। आ वैदिक कालमे संस्कृतकेँ संस्कृत नै भाषा कहल जाइ छल। आ जकरा आइ प्राकृत कहै छिऐ से पालिक बाद ओइ रूपमे बुझल गेल (साहित्य लेखन सम्बन्धमे)।

भरत (नाट्यशास्त्रमे) ७ टा आ वररुचि ४ टा प्राकृतक चर्चा करै छथि।

ओना तँ महावीरक वचन अर्ध-मागधी प्राकृत आ बुद्धक वचन

मागधी-प्राकृतमे देल गेल मुदा ई दुनू मूलतः जनभाषा रहए।

मुदा जखन विभिन्न क्षेत्रक लोक जुमलाह तँ बुद्ध सभकेँ अपन क्षेत्रक भाषामे बुद्धवचन सिखबा लेल कहलन्हि: अनुजानामि भिक्खवे, सकायनिरुत्तियाबुद्धवचनं परियापुणितं- माने भिक्षु लोकनि, अपन-अपन भाषामे बुद्धवचन सिखबाक अनुमति दै छी। आ बुद्धवचनमे प्रधान तत्व जनभाषा मागधीक रहल मुदा आन आन भाषाक तत्व सेहो फेंटाएल; आ से भाषा पालि भऽ गेल।

पालिमे:

''ऋ'', ''लृ'', ''ऐ'', ''औ'' आ ''अः'' नै होइए आ ''अं'' स्वर नै व्यंजन होइए।

तालव्य श आ मूर्धन्य ष सेहो नै होइए मात्र दन्त स होइए।

संस्कृतक ''ळ'' व्यंजन होइए।

संस्कृतक संयुक्त व्यंजन ''क्ष'', ''त्र'' आ ''ज्ञ'' नै होइए।

''ऋ'' बदलि कऽ ''अ'', ''इ'', ''अ,इ'', ''इ,उ'' भऽ जाइए। ''वृ'' बदलि कऽ ''रु'' भऽ जाइए।

''लृ'' बदलि कऽ ''उ''भऽ जाइए।

''ऐ'' बदलि कऽ ''इ'' वा ''ए'' भऽ जाइए।

''औ'' बदलि कऽ ''उ'' आ ''ओ'' भऽ जाइए।

संस्कृतक ह्रस्वक दीर्घ भेनाइ: सिंहः= सीहो

संस्कृतक दीर्घक ह्रस्व भेनाइ: मुनीन्द्रः= मुनिन्दो

निकटक स्वर: निषण्णः= निसिन्नो

बलाघात: मध्यमः= मज्झिमो

प्रसार: जयति=जेति

स्वरलोप: इति= ति

पालिमे ड आ ढ सेहो नै होइत अछि। तालव्य श आ मूर्धन्य ष लेल ''स'' वा ''छ'' प्रयुक्त होइए; ड लेल''ळ'' आ ढ लेल ''ळ्ह'' प्रयोग होइए।

क बदलैए ''य'' मे: जेना लौकिकः= लोकियो वा ''व'' मे जेना शुकः= सुवो

आगाँ-पाछाँ सेहो होइए: जेना मशकः=मकसोः, करेणुः=कणेरु

कवर्ग चवर्गमे बदलैए: कुन्दः=चुन्दो

तवर्ग टवर्गमे बदलैए: प्रथमः=पठमो

''ख'' उष्मीकृत भऽ ''ह''मे बदलैए: प्रखरः= पहरो

''क'' घोषीकृत भऽ ''ग'' भऽ जाइए: मूकः=मूगो

''ग'' अघोषीकृत भऽ ''क'' बनि जाइए: तडागम् = तळाकं

''झ'' अल्पप्राणीकृत भऽ''ज'' बनि जाइए: झल्लिका = जल्लिका

''प'' महाप्राणीकृत भऽ ''फ'' बनि जाइए: परशुः= फरसु

व्यञ्जनक लोप सेहो होइए: पविसिष्यामि= पविस्सामि

दुर्बल संयुक्त व्यंजनक लोप: क्षत्रियः= खत्तियो

ध्वजः= धजो

आब सरलताक संधान देखू- गर्हा= गरहा; रत्नम् = रतनं

पालिमे तीनटा सन्धि अछि: स्वर, व्यंजन आ अनुस्वार (निग्गहीत) सन्धि।

स्वर सन्धि: स्वरक बाद स्वरमे पूर्ववर्ती/ परवर्ती स्वरक लोप वा ककरो लोप नै होइत अछि।

व्यंजन सन्धि: ह्रस्व वा दीर्घ स्वरक बाद व्यंजन एलापर ओ स्वरक्रमसँ दीर्घ आ ह्रस्व भऽ जाइए।

निग्गहीत सन्धि: अनुस्वार (निग्गहेत)क कतौ आगमन तँ कतौ लोप भऽ जाइए। जेना- त+खणे= तंखणे; आ सं+रागो=

सारागो

पालिमे दुइयेटा वचन होइत अछि- एकवचन आ बहुवचन; आ सात टा विभक्ति: पठमा, दुतिया, ततिया, चतुत्थी, पञ्चमी, छट्ठी, सत्तमी, आलपन। ५०० सँ ८०० धरि धातु नौ गणमे आठ लकार (आशीर्लिङ आ लुट् लकार नै होइत अछि) होइत अछि।

पालिमे समास संस्कृत सन होइत अछि।

प्राकृतमे:

ओना मूल बात यएह अछि जे सभ प्राकृत शब्दक संस्कृत रूप नै अछि।

साहित्यिक प्राकृतक कएक प्रकार होइत अछि।

पैशाची प्राकृतमे ‘‘ट’’ लेल ‘‘त’’ आ ‘‘ल’’ लेल’’ळ’’

अर्धमागधी प्राकृतमे मध्यक स्वतंत्र ‘‘क’’ बदलि जाइए ‘‘ग’’, ‘‘त’’ वा ‘‘य’’ मे। दू टा स्वरक बीच ‘‘प’’ बदलि जाइए ‘‘व’’ मे।

शौरसेनी प्राकृतमे दू टा स्वरक बीचक स्वतंत्र ‘‘त’’ बदलि जाइए ‘‘द’’ मे आ ‘‘थ’’ बदलि जाइए ‘‘ह’’ वा ध’’ मे।

मागधी प्राकृतमे ‘‘र’’ क स्थानपर ‘‘ल’’, ‘‘य’’ केर स्थानपर ‘‘य्य’’ वा ‘‘ज्ज’’, ‘‘स’’ आ ‘‘ष’’ क स्थानपर ‘‘श’’ क प्रयोग

होइत अछि।

प्राकृत मे ह्रस्व आ दीर्घ ''ॠ'', ''ॡ'', ''ऐ'' आ ''औ'' नै होइत अछि। न केर बदला ''ण'' होइत अछि।

ॠ बदलि जाइए: अ, आ, ई, उ, रि

ॡ बदलि जाइए: इलि

ऐ बदलि जाइए: ए

औ बदलि जाइए: उ

दू स्वरक बीच क, ग, च, ज, त, द, य, व केर लोप होइत अछि जेना: लोक=लोअ, लावण्य= लाअण्ण

ख परिवर्तित भऽ जाइए ह मे: शाखा= शाहा

प्रारम्भक य भऽ जाइए ज, जेना: यम=जम

श आ ष भऽ जाइए स; क्ष भऽ जाइए ख वा छ वा झ; ज्ञ भऽ जाइए ण; त्व भऽ जाइए च; थ्व भऽ जाइए छ, द्व भऽ जाइए ज; ध्व भऽ जाइए झ।

सन्धि संस्कृत सन अछि। वचन दू- एकवचन आ बहुवचन, विभक्ति सात। संस्कृत जेकाँ धातु दस गण मे रहैत अछि, तुदादिगणक रूपक लोप भऽ जाइत अछि । भूत आ भविष्य मे

एक्के-एक्के टा रूप होइत अछि।

प्राकृतमे समास संस्कृत सन होइत अछि।

अवहट्ट

अपभ्रंश जखन समापनपर छल तखन मोटामोटी एगारहमसँ चौदहम शताब्दी धरि ''अवहट्ट'' साहित्यिक भाषाक रूपमे उपस्थित रहल। मैथिलीसँ एकर निकटताक कारण एकरा ''मैथिल अपभ्रंश'' सेहो कहल गेल आ ई अपभ्रंशक प्रकारक रूपमे सेहो मर्यादित रहल।

विद्यापति स्वयं कीर्तिलता आ कीर्तिपताकाक भाषाकेँ अवहट्ट कहै छथि मुदा ताहूसँ पूर्व ऐ शब्दक प्रयोग भाषाक सन्दर्भमे पहराज केने छथि ''पाउअकोस''मे। अद्दहमाण अपन कृति संदेशरासकमे आ वंशीधर प्राकृत पैंगलम् क टीकामे अवहट्टक भाषाक रूपमे उल्लेख केने छथि। ज्योतिरीश्वर वर्णरत्नाकरमे लिखै छथि- *''पुनु कइसन भाट- संस्कृत, पराकृत, अबहठ, पैशाची, सौरसेनी, मागधी छहु भाषाक तत्वज्ञ''*। अपभ्रंश परवर्ती कालमे पूर्वी भारतमे अवहट्टक रूप लेलक। मैथिलीक विशेषता जइमे एकर सभ शब्दक स्वरांत हएब, क्रियारूपक जटिल हएब (मुदा तइमे लैंगिक भेद नै हएब), सर्वनामक सम्बन्ध कारक रूप आदिक रूपरेखा अवहट्टमे दृष्टिगोचर हएब शुरू भऽ गेल छल। खास कऽ विद्यापतिक अवहट्टमे मैथिली वर्तनीक इकार, ओकार, आ अनुनासिकक बदलामे ''कचटतप'' वर्गक पाँचम अनुनासिक वर्णक प्रयोग देखबामे अबैत अछि मुदा हुनकर अवहट्ट भाषामे कखनो काल बुझाइत अछि जे ई भाषा खाँटी मैथिली

अछि तँ कखनो ऐमे प्राकृत, फारसी, गुजराती-सौराष्ट्री अवधी आ कोशली भाषाक शब्दावलीक बेशी प्रयोग भेटैत अछि। आ सएह कारण रहल हएत जे हुनकर अवहट्ट सर्वदेशीय (राजशेखर कहै छथि ‘‘विश्व-कुतुहली’’) बनि सकल। एकर दूटा देवनागरी पाण्डुलिपि दू ठामसँ- गुजरातक स्तम्भतीर्थमे आ उत्तर प्रदेशक फतेहपुर जिलाक असनी गाममे भेटल आ एकटा मिथिलाक्षरक पाण्डुलिपि नेपालसँ भेटल। ऐतिहासिक आधारपर भाषाक पारिवारिक वर्गीकरणमे अवहट्ट (अवहट्ठ) कें ‘‘मैथिल अपभ्रंश’’ तइ कारणसँ कहल जाइत अछि आ मागधी प्राकृतसँ सेहो एकर विकास दृष्टिगोचर होइत अछि। मैथिलीक स्थान मोटा-मोटी संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आ अवहट्टक ऐतिहासिक क्रममे अबैत अछि। अवहट्ठ मैथिलीसँ लग रहितो शौरसेनी प्राकृत-अपभ्रंशसँ सेहो लग अछि, मुदा देशी शब्दक प्रयोगसँ ऐमे अपभ्रंशसँ बहुत रास व्याकरणिक परिवर्तन देखा पड़ैत अछि। विद्यापतिक ‘‘कीर्तिलता’’ अवहट्टमे अछि, मुदा ‘‘चर्या गीत’’ आ ‘‘वर्णन रत्नाकर’’ कीर्तिलतासँ पूर्ववर्ती हेबाक बादो पुरान मैथिली अछि आ अवहट्टसँ सेहो लग अछि। दामोदर पंडितक ‘‘उक्ति व्यक्ति प्रकरण’’ सेहो कीर्तिलतासँ पूर्ववर्ती अछि मुदा पुरान अवधी आ पुरान कोशलीक प्रतिमान प्रस्तुत करैत अछि आ अवहट्टसँ लग अछि। संगे ईहो सत्य जे कीर्तिलता आ कीर्तिपताकामे विद्यापति अवहट्टक कतेको प्रकारसँ प्रयोग करै छथि। पहिने तँ ई अपभ्रंशक पर्यायक रूपमे प्रयुक्त होइ छल मुदा जेना जेना अपभ्रंशक विशेषताकेँ ई छोड़ैत गेल आ आधुनिक भारतीय भाषाक व्याकरणिक विशेषताक, खास कऽ मैथिलीक व्याकरणिक

विशेषताक आधार बनऽ लागल तखन ई अपभ्रंशसँ पृथक् अवहट्टक रूप लेलक। एकर प्रमुख व्याकरणिक विशेषता अछि- स्वर संयोग, क्षतिपूर्तिक लेल दीर्घीकरण, व्यंजनक अपन खास विशेषता, रूपक विचार (लिंग-वचन), निर्विभक्तिक प्रयोग, कारक-परसर्ग, कारक विभक्ति, सर्वनाम, विशेषण, सार्वनामिक विशेषण, क्रिया, कृदन्त, आज्ञार्थक, पूर्वकालिक, संयुक्त क्रिया, क्रिया विशेषण, शब्दावलीक विशेषता, पूर्व स्वरपर स्वराघात, स्वर सानुनासिकतामे परिवर्तन, अकारण सानुनासिकताक प्रवृत्ति, एक संग अनेक स्वरक प्रयोग, अक्षर लोप, परसर्गक स्थानपर मूल शब्द, सर्वनामक प्रचुरता, क्रियापदक विकास आ वाक्य रचना।

अवहट्ट भाषामे जैन धर्मसँ सम्बन्धित रचना ढेर रास अछि आ ओइमे शौरसेनीक प्रभाव अछि।अवहट्टक मुख्य क्षेत्र छल मान्यखेत, गुजरात, बंगाल आ मिथिला। जैन धर्मसँ सम्बन्धित लोक मुख्य रूपसँ मान्यखेतमे रहथि। ‘‘वज्जालग्ग’’ श्वेताम्बर मुनि जयवल्लभ द्वारा संकलित सुभाषितक संग्रह अछि जइमे अवहट्टक प्रभाव दृष्टिगोचर होइत अछि। शालिभद्र सूरीक ‘‘भरतेश्वर बाहुवली रास’’, एकटा दोसर शालिभद्र सूरीक ‘‘पंच पाण्डव चरित’’, स्थूलिभद्र रास, जयशेखर सूरीक ‘‘नेमिनाथ फागु’’, सकलकीर्तिक ‘‘सोलह कारण रास’’क अतिरिक्त मौखिक काव्य जेना बौद्ध सिद्ध साहित्य, डाक, धर्ममंगल काव्य, शून्यपुराण, माणिकचन्द्र राजार गान, लोरिकाइन जनक मध्य आएल। अवहट्टक बाद ब्रजबुली द्वारा राय रमानन्द, शंकरदेव आ चैतन्यदेव लोकभाषाक माध्यमसँ जन धरि पहुँचला। अवहट्टक प्रभाव ब्रजबुली आ मैथिलीपर पड़ल। बारहम

शताब्दीक डाकार्णव नेपालमे रचित अछि जकर लिपि मिथिलाक्षर आ भाषा अवहट्ट अछि। मिथिलामे कर्णाट आ ओइनवार राजवंशक कालमे अवहट्टमे रचना कएल गेल। सिद्ध साहित्य, बौद्धक दोहाकोश-चर्यागीत आ ज्योतिरीश्वरक वर्णन रत्नाकरमे अवहट्टक प्रयोग प्रारम्भ भऽ गेल छल। मुनिराम सिंहक पाहुड दोहा आ बौद्ध धर्मक वज्रयानक ग्रन्थमे सेहो अवहट्टक रूप देखबामे अबैत अछि। दामोदर पंडितक उक्तिव्यक्तिप्रकरण अवहट्टमे रचित अछि, ई संस्कृत सिखेबाक ग्रन्थ अछि। बारहम शताब्दीक पूर्वार्धमे उद्दहभाण ''संदेश रासय''क रचना केलन्हि, रचयिता स्वयं ऐ ग्रन्थक भाषाकेँ अवहट्ट कहै छथि। प्राकृत् पैंगलम् -जे छन्दशास्त्रक संकलन अछि आ जकर संकलनकर्ताक नाम अज्ञात अछि- क टीकाकार सेहो ऐ ग्रन्थक भाषाकेँ अवहट्ट कहि सम्बोधित केने छथि। विद्यापतिक कीर्तिलता आ कीर्तिपताका सेहो अवहट्टमे रचित भेल।

अवहट्टक अपभ्रंशसँ व्याकरणिक भिन्नता आ मैथिलीसँ सन्निकटता: दीर्घ मिश्र स्वर अछि- ए ऐ ओ औ; पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा सन्ध्यक्षर कहै छला। संस्कृतक ऐ, औ क्रमसँ अइ, अउ ध्वनि बनि गेल आ ओइसँ किछु आर स्वर बहार भेल। संस्कृतक बादबला भाषा खास कऽ मध्यकालिक भाषामे लगातार दू वा तीन स्वरक प्रयोगसँ ध्वनि आ लेखन दुनूमे विचित्रता आएल। आधुनिक भाषाक लेल आवश्यक छल जे पुनः व्यंजनक बेशी प्रयोग कऽ, तत्समक बेशी प्रयोग कऽ पूर्वस्थिति आनल जाए, जइसँ उच्चारण आ लेखन सरल भऽ सकए। क्रियाक अन्तमे आ आन पदक सभ स्थानमे स्वरकेँ

संयुक्त करब प्रारम्भ भेल। ऐमे ‘‘ऐ’’ आ ‘‘औ’’ अवहट्ठक विशेषता रूपमे परिगणित भेल। जेना टुट्टै=टूटै, गुण्णइ=गुणै, पइ=पै, रहइ=रहै, करउ=करौ, चअउर=चौरा, दुण्णउ=दूणौ, तउ=तौ, आअउ=आऔ।

ऋ ऐ तीन रूपमे ध्वनित होमए लागल। र्+अ, र्+इ , र्+उ आ मध्य रूप माने रि (र्+इ) ऐ रूपमे स्थिर होमए लागल। जेना अमृत= अमिअ ऐमे मृ=मि भऽ गेल अछि।

स्वरमे किछु आर परिवर्तन भेल। शब्द प्रारम्भक स्वरक दीर्घ हएब स्वाभाविक लगैत अछि, जेना आँचल=आँचर। स्त्रीलिंगमे अन्तिम आ लुप्त होमए लागल जेना भिक्षा=भीख। स्वरक बहुलताबला शब्दमे सन्धि आ लुप्तीकरण बढ़ल, जेना धरित्री=धरती, उपआस=उपास।

अपभ्रंशक अंधआर=अंधार (संधि) बनि गेल।

कज्ज=काज बनि गेल (दीर्घ)
अंचल=आँचर (अनुनासिक)

व्यंजन ओहिना रहल मुदा ण कम आ ञ बेशी प्रयोगमे आबए लागल आ ड़, ढ़ ई दुनू नव व्यंजन आएल। क्ष=क्+ष बदलि कऽ ष्ख होमए लागल। न आ ल मे सेहो पर्याय बनल जेना नहिअ=लहिअ आइ काल्हि सेहो मैथिलीमे लोर आ नोर दुनू बाजल जाइत अछि।

उ सँ अन्त होमएबला संज्ञा रहल मुदा अ, आ, इ, ई, ऊ, ऐ,

ओ सेहो संज्ञाक अन्तमे आबए लागल। न्हि अन्तिममे लगा कऽ बहुवचन बनेबाक प्रवृत्ति बढ़ल, जेना युवराजन्हि। द्विवचन खतम भऽ गेल आ तकर बदला बहुवचनक प्रयोग भेल आ तइ लेल सव्वउं (सभ) क प्रयोग प्रारम्भ भेल।

लिंगसँ विशेषणक रूप परिवर्तन आ लुप्तविभक्ति-निर्विभक्तिक प्रयोग बेशी होमए लागल। विशेषणक रूप परिवर्तित भेल। जेना अइस, एत्ते, कतहु, पहिल, चारु।

कारकक विभक्तिक संग सन, सउं, क, माझ, केर, लागि आदिक प्रयोग होमए लागल।

पश्चिमी अवहट्टमे विभक्तिक प्रयोग घटल मुदा पूर्वी अवहट्टमे ए, हि विभक्तिसँ ढेर रास काज लेल गेल।

सर्वनाम कर्ता लेल हौ, तोञ, सो आ संबंध लेल मोञ, तुम्ह, तिसु प्रयुक्त होमए लागल।

क्रियामे करउँ, करसि, करथि प्रयुक्त होमए लागल। कृदन्त रूपमे पढ़न्ता, चलु, उपजु, गेल, भेल, कहल, मारल, चलल, करहुं, कहसि, जाहि, पावथि प्रयुक्त होमए लागल।

संयुक्त काल जेना *आवत्त हुअ* प्रयुक्त होमए लागल।

भविष्यत् कालक पूर्वी रूपमे व लगैत छल आ पछबरिया रूपमे ह लगैत छल।

क्रियाविशेषणमे जनु, नहु, बिनु अबस प्रयुक्त होमए लागल।

पूर्व स्वरपर स्वराघात, जेना: अक्खर= आखर।

सर्वनामक संख्यामे वृद्धि भेल।

क्रियापदमे विकासक फलस्वरूप कृदन्तक प्रयोग वर्तमानकालमे बेशी होमए लागल।

आब वाक्यमे शब्दक स्थानक निर्धारण आवश्यक भऽ गेल। मोटामोटी कर्ता, कर्म आ आखिरीमे क्रिया राखल जाए लागल।

संयुक्त कालक प्रयोग सेहो आरम्भ भेल।

शब्दक पहिल अक्षरक स्वरक दीर्घ हेबाक प्रवृत्ति अवहट्टमे बेशी अछि, स्त्रीलिंग शब्दमे शब्दक अन्तिम अक्षरक आ लुप्त होमए लागल। अनुनासिक शब्दक संख्यामे वृद्धि भेल। संज्ञाक लिंग आ वचन तँ दुइयेटा रहल मुदा एकवचनक प्रयोग बहुवचनमे होमए लागल। प्रातिपदिक अधिकांशतः स्वरान्त अछि आ अकारान्त सेहो। विभक्तिक बदलामे परसर्गक प्रयोग होमए लागल। अपादान लेल हुंते, सउँ प्रयोगमे आबए लागल आ अधिकरण लेल माँझ, उप्परि आ ऐ दुनू (अपादान आ अधिकरण) लेल कखनो काल चन्द्रबिन्दु टा सँ काज चलि गेल, ''हिं'' विभक्ति सेहो कतेको कारकक लेल प्रयुक्त भेल आ ''ए'' विभक्ति सँ कर्म, करण, अधिकरण सभ टाक भान होमए लागल। संज्ञाक ऐ तरहक सरलीकरण सर्वनाममे सेहो देखबामे अबैत अछि। क्रियाक निर्माणमे सरलता आएल आ से

भेल कृदन्तक बेशी प्रयोगसँ आ संयुक्त क्रियाक बढ़ोत्तरीसँ। भूतकाल ‘‘ल’’ लगा कऽ सेहो बनऽ लागल, आ भविष्यत् काल ‘‘व’’ लगा कऽ सेहो, जेना थाकल, पढ़ब जे बादमे मैथिलीमे सेहो आएल।

पूर्व स्वरपर स्वराघात आ स्वरक क्षतिपूरक दीर्घीकरण अवहट्टक मुख्य विशेषता अछि। अपभ्रंशक अक्खर, ठक्कुर आ नच्चइ क्रमसँ आखर, ठाकुर आ नाचइ भऽ गेल। स्वरक सानुनासिकतामे परिवर्तन भेल जइसँ पुरान निअममे परिवर्तन भेल। पहिने स्पर्श व्यंजनमे अनुस्वारक अभाव छल आ कचटतप क पाँचम वर्ण तकर बदलामे संयुक्त भऽ प्रयुक्त होइत छल। अपवादमे य सँ ह धरिक वर्णक उपस्थितियेमे अनुस्वार लगै छल। पूर्व स्वरपर स्वराघात आ क्षतिपूरक दीर्घीकरणक अतिरिक्त युक्ताक्षरक पूर्वस्वरपर स्वराघातक संग अनुस्वार आबए लागल, जेना- ऊसास/ आंग/ आँकुस/ आँचर/ काँट/ लाँघि/ पाँच/ चाँद/ आँगन/

क्रमसँ

उस्सास/ अंग/ अंकुस/ अंचल/ कण्टक/ लघ्/ पंच/ चन्द्र/ अंगण/ क बदलामे आबि गेल। स्वरक क्षतिपूरक दीर्घीकरणक अतिरिक्त अनुस्वारकँ ह्रस्व कएल जाए लागल आ आधुनिक मैथिलीक अकारण आनुनासिकताक प्रवृत्तिक आरम्भ भेल, जेना- कज्ज=काँज, कच्चुः=काँच, भग्ग=भाँग, ओष्ठ=ओँदिम।

अक्षर लोप: संकोच वा अक्षर लोपक कारणसँ

अन्धकार=अन्हार, देवकुल= देउर, देवगृह=देवहा, कोट्टशीर्ष=कोसीस, उपवास=उपास, उत्तिष्ठ=उँट, सहकार=सहार, स्वर्णकार=सोनार, सुन्नाअर=सुन्नार, सहयार=साहार भऽ गेल।

परसर्गक प्रयोगमे वृद्धि: अपभ्रंशक परसर्गक प्रयोगमे अवहट्ट कालमे आर वृद्धि भेल। जेना-

कर्ता- एन्ने

करण-सन, सउं

सम्प्रदान-लागि, लग्गि, लागे, प्रति, कारण

अपादान-सओ, हुत, हुते, हुंति, सिउ

संबंध- केर, कर, के, करेउ, कइ, क

अधिकरण- माझ, ऊपर, माँझ, भीतर, माहि

सर्वनामक आधिक्य: कीर्तिलतामे जेन्ने, आ आन ठाम मोर, मेरहु, तोरा, तोहार, तोहर, तोरा आदि सर्वनामक प्रयोग प्रारम्भ भेल। संबधवाचक सर्वनाम- जञोन, जेन्ने, जस, जसु, जे; प्रश्न वाचक- केहु, कोए; अनिश्चयवाचक- कोइ, केहु; निजवाचक- अपन, अपनेहु, निअ आदिक प्रयोग होमए लागल।

कृदन्तक प्रयोग क्रियापदक विकसित रूप: आब कृदन्तक प्रयोगमे वृद्धि भेल जेना भूतकालक कृदन्तक प्रयोग वर्तमान

जकाँ हएब आ कखनो काल अपन पूर्ण रूपमे सेहो हएब।

वर्तमान लेल कृन्तक प्रयोग पढ़न्ता, कहन्ता, आवन्ता; भविष्यत् काल लेल करहुं, करिहि आ भूतकाल लेल कृदन्तक प्रयोग जेना चलु, लागु क प्रयोग भेल।

''अन्त'' सँ आधुनिक ''ता'' निकलल अछि आ ''अन्त'' क प्रयोग बढ़ि गेल। संयुक्त क्रियाक प्रयोग प्रारम्भ भऽ गेल- जेना ''ले'' जोड़ि कऽ क्रिया बनाएब ''खाइले''; सामर्थ्यसूचक पार आ आरम्भसूचक चाह/ लागु क प्रयोग आरम्भ भेल।

मैथिली

ऐतिहासिक आधारपर भाषाक पारिवारिक वर्गीकरणमे अवहट्टकेँ ''मैथिल अपभ्रंश'' तइ कारणसँ कहल जाइत अछि आ मागधी प्राकृतसँ सेहो एकर विकास दृष्टिगोचर होइत अछि। अवहट्ट मैथिलीसँ लग रहितो शौरसेनी प्राकृत-अपभ्रंशसँ सेहो लग अछि, मुदा देशी शब्दक प्रयोगसँ ऐमे अपभ्रंशसँ बहुत रास व्याकरणिक परिवर्तन देखा पड़ैत अछि। विद्यापतिक ''कीर्तिलता'' अवहट्टमे अछि, मुदा ''चर्या गीत'' आ ''वर्ण रत्नाकर'' कीर्तिलतासँ पूर्ववर्ती हेबाक बादो पुरान मैथिली अछि आ अवहट्टसँ सेहो लग अछि। भारोपीय भाषा परिवारमे मैथिलीक स्थान मोटा-मोटी संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आ अवहट्टक ऐतिहासिक क्रममे अबैत अछि।

ध्वनि: दन्त न क उच्चारणमे दाँतमे जीह सटत- जेना बाजू नाम, मुदा ण क उच्चारणमे जीह मूर्धामे सटत (नै सटैए तँ उच्चारण दोष

अछि)- जेना बाजू गणेश। तालव्य **श**मे जीह तालुसँ , **ष**मे मूर्धासँ आ दन्त **स**मे दाँतसँ सटत। निशाँ, सभ आ शोषण बाजि कऽ देखू। मैथिलीमे **ष** केँ वैदिक संस्कृत जेकाँ **ख** सेहो उच्चरित कएल जाइत अछि, जेना वर्षा, दोष। य अनेको स्थानपर ज जकाँ उच्चरित होइत अछि आ ण ड़ जेकाँ (यथा संयोग आ गणेश **संजोग** आ **गड़ेस** उच्चरित होइत अछि)। मैथिलीमे व क उच्चारण ब, श क उच्चारण स आ य क उच्चारण ज सेहो होइत अछि।

ओहिना ह्रस्व इ बेशीकाल मैथिलीमे पहिने बाजल जाइत अछि कारण देवनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे ह्रस्व इ अक्षरक पहिने लिखलो जाइत आ बाजलो जेबाक चाही। कारण जे हिन्दीमे एकर दोषपूर्ण उच्चारण होइत अछि (लिखल तँ पहिने जाइत अछि मुदा बाजल बादमे जाइत अछि), से शिक्षा पद्धतिक दोषक कारण हम सभ ओकर उच्चारण दोषपूर्ण ढंगसँ कऽ रहल छी।

पानि-पाइन-पैन

अछि- अ इ छ **ऐछ**

छथि- छ इ थ छैथ

पहुँचि- प हुँ इ च

तखन प्रश्न उठैत अछि जे ‘‘छथि’’ केँ छैथ लिखबामे की हर्ज? हर्ज अछि, कारण मिथिलाक बहुतो क्षेत्रमे छथि, छथी, पानि, पानी, पहुँचि, पहुँची सेहो बाजल जाइत अछि। से पानि, रहथि, पहुँचि लिखलासँ सभ क्षेत्रक प्रतिनिधित्व होइत अछि।

आब अ आ इ ई ए ऐ ओ औ अं अः ऋ ऐ सभ लेल मात्रा सेहो अछि, मुदा ऐमे ई ऐ ओ औ अं अः ऋ कँ संयुक्ताक्षर रूपमे गलत रूपमे प्रयुक्त आ उच्चरित कएल जाइत अछि। जेना ऋ कँ री रूपमे उच्चरित करब। आ देखियौ- ऐ लेल देखिऔ क प्रयोग अनुचित। मुदा देखिऐ लेल देखियै अनुचित। क् सँ ह् धरि अ सम्मिलित भेलासँ क सँ ह बनैत अछि, मुदा उच्चारण काल हलन्त युक्त शब्दक अन्तक उच्चारणक प्रवृत्ति बढ़ल अछि, मुदा हम जखन मनोजमे ज् अन्तमे बजै छी, तखनो पुरनका लोककँ बजैत सुनबन्हि- मनोजऽ, वास्तवमे ओ अ युक्त ज् = ज बजै छथि।

फेर ज्ञ अछि ज् आ ञ क संयुक्त मुदा गलत उच्चारण होइत अछि- ग्य। ओहिना क्ष अछि क् आ ष क संयुक्त मुदा उच्चारण होइत अछि छ। फेर श् आ र क संयुक्त अछि श्र (जेना श्रमिक) आ स् आ र क संयुक्त अछि स्र (जेना मिस्र)। त्र भेल त+र ।

फेर **कँ** / **सँ** / **पर** पूर्व अक्षरसँ सटा कऽ लिखू मुदा **तँ**/ **के**/ **कऽ** हटा कऽ। **ऐ मे सँ** मे पहिल सटा कऽ लिखू आ बादबला हटा कऽ (जेना ऐमे सँ)। अंकक बाद टा लिखू सटा कऽ मुदा अन्य ठाम टा लिखू हटा कऽ जेना **छहटा** मुदा **सभ टा**। फेर ६अ म सातम लिखू- छठम सातम नै। घरबलामे **बला** मुदा घरवालीमे **वाली** प्रयुक्त करू।

रहए- **रहै** मुदा सकैए (उच्चारण सकै-ए)।

मुदा कखनो काल रहए आ रहै मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से

कम्मो जगहमे पार्किंग करबाक अभ्यास **रहै** ओकरा। पुछलापर पता लागल जे ढुनढुन नाम्रा ई ड्राइवर कनाट प्लेसक पार्किंगमे काज करैत **रहए**।

छलै, छलए मे सेहो अही तरहक भेद अछि। छलए क उच्चारण छल-ए सेहो।

संयोगने- (उच्चारण **संजोगने)**

कैँ/ के / **कऽ**

केर- **क** (**केर** क प्रयोग नै करू)

क (जेना रामक) **<u>रामक</u>** आ संगे (उच्चारण **राम के** / **राम कऽ** सेहो)

सँ- सऽ

चन्द्रबिन्दु आ अनुस्वार- अनुस्वारमे कंठ धरिक प्रयोग होइत अछि मुदा चन्द्रबिन्दुमे नै। चन्द्रबिन्दुमे कनेक एकारक सेहो उच्चारण होइत अछि- जेना रामसँ- (उच्चारण राम सऽ) रामकैँ- (उच्चारण राम कऽ/ राम के सेहो)।

कैँ जेना रामकैँ भेल हिन्दीक को (राम को)- राम को= रामकैँ

क जेना रामक भेल हिन्दीक का (राम का) राम का= रामक

कऽ जेना जा कऽ भेल हिन्दीक कर (जा कर) जा कर= जा

कऽ

सँ भेल हिन्दीक से (राम से) राम से= रामसँ

सऽ तऽ त केर ऐ सभक प्रयोग अवांछित।

के दोसर अर्थें प्रयुक्त भऽ सकैए- जेना *के कहलक?*

नञि, नहि, नै, नइ, नँइ, नइँ ऐ सभक उच्चारण- नै

अ कखनो काल ओ भऽ जाइत अछि जेना मन=मोन, वन=बोन (वर्तुल)

अ कखनो काल आ भऽ जाइत अछि, जेना- फंदा=फान, चन्द्र=चान (स्वराघात)

घर=घऽर (उच्चारण) (स्वराघात)

बुद्ध=बुद्धऽ (उच्चारण) (स्वराघात)

घमसान=घमऽसान (दीर्घक पहिनेक ह्रस्व स्पष्ट उच्चरित- स्वराघात)

''इ'' क पहिने ''आ'' रहलापर ''ऐ'' उच्चरित होइत अछि- जेना पानि=पैन, मुदा विभिन्न क्षेत्रमे पानी, पानि बाजल जाइत अछि तेँ वर्तनीमे पानि, आगि लिखब उचिते अछि।

आ कखनो काल अ भऽ जाइत अछि, जेना काका=कक्का।

इ कखनो काल ओ भऽ जाइत अछि जेना रिवाज=रेबाज।

ऋ कखनो काल इ/ ई/ ऊ भऽ जाइत अछि जेना कृष्ण=किसुन, पृष्ठ=पीठ, वृद्ध=बूढ़।

अन्तमे ‘‘ई’’ क बदलामे इ लिखल जाइत अछि।

ऋ कखनो काल अ भऽ जाइत अछि जेना- वृषभ=बसहा, अहृदी=अहदी।

उ कखनो काल ओ भऽ जाइत अछि जेना दुकान=दोकान

ऊ कखनो काल ओ भऽ जाइत अछि जेना मूल्य=मोल।

अए कखनो काल ए भऽ जाइत अछि जेना कएलनि=केलनि।

ऐ कखनो काल अइ/ अए भऽ जाइत अछि जेना भैया=भइया, पैर=पएर।

आ+ओ कखनो काल औ भऽ जाइत अछि जेना गमाओल=गमौल।

क कखनो काल ख/ ग भऽ जाइत अछि जेना पुष्करि=पोखरि, भक्त=भगत।

ष कखनो काल शब्दक प्रारम्भ वा अन्तमे रहलापर ख भऽ

जाइत अछि जेना षष्ठी=खष्ठी, भेष-भूषा=भेख-भूखा।

क्ष कखनो काल ख भऽ जाइत अछि जेना क्षीर=खीर।

ज्ञ कखनो काल ग भऽ जाइत अछि जेना यज्ञ=जाग।

ग कखनो काल घ भऽ जाइत अछि जेना गर्ग=घाघ।

त्य कखनो काल च भऽ जाइत अछि जेना सत्य=साँच।

त्स्य कखनो काल छ भऽ जाइत अछि जेना मत्स्य=माँछ।

य कखनो काल शब्दक प्रारम्भमे रहलापर ज भऽ जाइत अछि जेना यम=जम।

द्य कखनो काल ज भऽ जाइत अछि जेना विद्युत=बिजुली।

ध्य कखनो काल झ भऽ जाइत अछि जेना वंध्या=बाँझ।

त कखनो काल ट भऽ जाइत अछि जेना कर्तन=काटब।

न्थ कखनो काल ठ भऽ जाइत अछि जेना ग्रन्थि=गेंठ।

द कखनो काल ड भऽ जाइत अछि जेना दण्ड=डाँट।

त कखनो काल लुप्त भऽ जाइत अछि जेना जाइत=जाइ।

स्त कखनो काल थ भऽ जाइत अछि जेनाप्रस्तर=पाथर।

द कखनो काल ड भऽ जाइत अछि जेना दाह=डाह।

ध कखनो काल शब्दक अन्तमे रहलापर दह भऽ जाइत अछि जेना गधा=गदहा।

ल कखनो काल न भऽ जाइत अछि आ न कखनो काल ल भऽ जाइत अछि जेना नोर=लोर।

प कखनो काल फ भऽ जाइत अछि जेना पाश=फाँस।

फ कखनो काल ‘‘प’’ आ ‘‘ह’’ भऽ जाइत अछि जेना बेवकूफ=बेकूफ।

ब कखनो काल म भऽ जाइत अछि जेना शैबाल=सेमार।

म्भ कखनो काल म भऽ जाइत अछि जेना खम्भा=खमहा।

म्ब कखनो काल म भऽ जाइत अछि जेना कम्बल=कम्मल।

ल कखनो काल र भऽ जाइत अछि जेना हल=हर।

व कखनो काल भ भऽ जाइत अछि जेना वाष्प=भाप।

ह कखनो काल शब्दक अन्तमे रहलापर लुप्त भऽ जाइत अछि जेना गेलाह=गेला।

त्त्व क बदलामे त्व जेना महत्वपूर्ण (महत्त्वपूर्ण नै) जतऽ अर्थ बदलि जाए ओतै मात्र तीन अक्षरक संयुक्ताक्षरक प्रयोग

उचित। सम्पति- उच्चारण स म्प इ त (सम्पत्ति नै- कारण सही उच्चारण आसानीसँ सम्भव नै)। मुदा सर्वोत्तम (सर्वोतम नै)।

मे केँ सँ पर (शब्दसँ सटा कऽ) तँ कऽ धऽ दऽ (शब्दसँ हटा कऽ) मुदा दूटा वा बेशी विभक्ति संग रहलापर पहिल विभक्ति टाकेँ सटाऊ।

एकटा दूटा (मुदा कएक टा)

बिकारीक प्रयोग शब्दक अन्तमे, बीचमे अनावश्यक रूपेँ नै। आकारान्त आ अन्तमे अ क बाद बिकारीक प्रयोग नै (जेना दिअ, आ)।

अपोस्ट्रोफीक प्रयोग बिकारी (ऽ -संस्कृतमे एकरा अवग्रह आ बांग्लामे जफला कहल जाइत अछि) क बदलामे करब अनुचित आ मात्र फॉन्टक तकनीकी न्यूनताक परिचायक)- ओना बिकारीक संस्कृत रूप ऽ अवग्रह कहल जाइत अछि आ वर्तनी आ उच्चारण दुनू ठाम एकर लोप रहैत अछि/ रहि सकैत अछि (उच्चारणमे लोप रहिते अछि)। मुदा अपोस्ट्रोफी सेहो अंग्रेजीमे पसेसिव केसमे होइत अछि आ फ्रेंचमे शब्दमे जतऽ एकर प्रयोग होइत अछि जेना raison d'etre ततऽ सेहो एकर उच्चारण रैजौन डेटर होइत अछि, माने अपोस्ट्रॉफी अवकाश नै दैत अछि वरन तारतम्य जोड़ैत अछि, से एकर प्रयोग बिकारीक बदला देनाइ तकनीकी रूपेँ सेहो अनुचित)।

मैथिलीक मात्रात्मक आघातमे ह्रस्व स्वरपर आघात पड़लापर ओ

दीर्घ भऽ जाइत अछि।शब्दमे जौँ दीर्घ स्वर रहत तँ आघात ओइपर, दीर्घ नै रहत तँ उपान्त्य स्वरपर आ जतऽ दूटा दीर्घ लगातार अछि ओतऽ सेहो उपान्त्य दीर्घपर आघात पड़ैत अछि। पा'नि, ओसा'रा। बलात्मक आघात सेहो गपपर जोर देबा काल प्रयुक्त होइत अछि जेना- अपन=अप्पन। जइ स्वरपर आघात पड़त तकर पूर्वक सभ स्वर ह्रस्व भऽ जाइत अछि।

मैथिलीक उच्चारण आ लेखनक विशेषता:

१.*पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार*: पञ्चमाक्षरान्तर्गत ङ, ञ, ण, न एवं म अबैत अछि। संस्कृत भाषाक अनुसार शब्दक अन्तमे जइ वर्गक अक्षर रहैत अछि ओही वर्गक पञ्चमाक्षर अबैत अछि। जेना-

अङ्क (क वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ङ् आएल अछि।)

पञ्च (च वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ञ् आएल अछि।)

खण्ड (ट वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ण् आएल अछि।)

सन्धि (त वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे न् आएल अछि।)

खम्भ (प वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे म् आएल अछि।)

उपर्युक्त बात मैथिलीमे कम देखल जाइत अछि। पञ्चमाक्षरक बदलामे अधिकांश जगहपर अनुस्वारक प्रयोग देखल जाइछ। जेना- अंक, पंच, खंड, संधि, खंभ आदि। व्याकरणविद पण्डित गोविन्द

झाक कहब छनि जे कवर्ग, चवर्ग आ टवर्गसँ पूर्व अनुस्वार लिखल जाए तथा तवर्ग आ पवर्गसँ पूर्व पञ्चमाक्षरे लिखल जाए। जेना- अंक, चंचल, अंडा, अन्त तथा कम्पन। मुदा हिन्दीक निकट रहल आधुनिक लेखक ऐ बातकेँ नै मानै छथि। ओ लोकनि अन्त आ कम्पनक जगहपर सेहो अंत आ कंपन लिखैत देखल जाइ छथि।

नवीन पद्धति किछु सुविधाजनक अवश्य छै। किएक तँ ऐमे समय आ स्थानक बचत होइ छै। मुदा कतोक बेर हस्तलेखन वा मुद्रणमे अनुस्वारक छोट सन बिन्दु स्पष्ट नै भेलासँ अर्थक अनर्थ होइत सेहो देखल जाइत अछि। अनुस्वारक प्रयोगमे उच्चारण-दोषक सम्भावना सेहो ततबे देखल जाइत अछि। एतदर्थ कसँ लऽ कऽ पवर्ग धरि पञ्चमाक्षरेक प्रयोग करब उचित अछि। यसँ लऽ कऽ ज्ञ धरिक अक्षरक सङ्ग अनुस्वारक प्रयोग करबामे कतौ कोनो विवाद नै देखल जाइछ।

२.*ढ आ ढ़* : ढ़क उच्चारण ''र् ह''जकाँ होइत अछि। अतः जतऽ ''र् ह''क उच्चारण हुअए ओतऽ मात्र ढ़ लिखल जाए। आन ठाम खाली ढ लिखल जेबाक चाही। जेना-

ढ = ढाकी, ढेकी, ढीठ, ढेउआ, ढङ्ग, ढेरी, ढाकनि, ढाठ आदि।

ढ़ = पढ़ाइ, बढ़ब, गढ़ब, मढ़ब, बुढ़बा, साँढ़, गाढ़, रीढ़, चाँढ़, सीढ़ी, पीढ़ी आदि।

उपर्युक्त शब्द सभकेँ देखलासँ ई स्पष्ट होइत अछि जे साधारणतया

शब्दक शुरूमे ढ आ मध्य तथा अन्तमे ढ़ अबैत अछि। यएह निअम ड आ ड़क सन्दर्भ सेहो लागू होइत अछि।

३.*व आ ब* : मैथिलीमे ''व''क उच्चारण ब कएल जाइत अछि, मुदा ओकरा ब रूपमे नै लिखल जेबाक चाही। जेना- उच्चारण : बैद्यनाथ, बिद्या, नब, देबता, बिष्णु, बंश, बन्दना आदि। ऐ सभक स्थानपर क्रमशः वैद्यनाथ, विद्या, नव, देवता, विष्णु, वंश, वन्दना लिखबाक चाही। सामान्यतया व उच्चारणक लेल ओ प्रयोग कएल जाइत अछि। जेना- ओकील, ओजह आदि।

४.*य आ ज* : कतहु-कतहु ''य''क उच्चारण ''ज''जकाँ करैत देखल जाइत अछि, मुदा ओकरा ज नै लिखबाक चाही। उच्चारणमे यज्ञ, जदि, जमुना, जुग, जाबत, जोगी, जदु, जम आदि कहल जाएबला शब्द सभकेँ क्रमशः यज्ञ, यदि, यमुना, युग, यावत, योगी, यदु, यम लिखबाक चाही।

५.*ए आ य* : मैथिलीक वर्तनीमे ए आ य दुनू लिखल जाइत अछि।

प्राचीन वर्तनी- कएल, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि।

नवीन वर्तनी- कयल, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि।

सामान्यतया शब्दक शुरूमे ए मात्र अबैत अछि। जेना एहि, एना, एकर, एहन आदि। ऐ शब्द सभक स्थानपर यहि, यना, यकर, यहन आदिक प्रयोग नै करबाक चाही। यद्यपि मैथिलीभाषी थारू सहित किछु जातिमे शब्दक आरम्भोमे ''ए''केँ य कहि उच्चारण कएल जाइत अछि।

ए आ ‘‘य’’क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीने पद्धतिक अनुसरण करब उपयुक्त मानि ऐ पुस्तकमे ओकरे प्रयोग कएल गेल अछि। किएक तँ दुनूक लेखनमे कोनो सहजता आ दुरूहताक बात नै अछि। आ मैथिलीक सर्वसाधारणक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एसँ बेसी निकट छै। खास कऽ कएल, हएब आदि कतिपय शब्दकेँ कैल, हैब आदि रूपमे कतौ-कतौ लिखल जाएब सेहो ‘‘ए’’क प्रयोगकेँ बेसी समीचीन प्रमाणित करैत अछि।

६.*हि, हु तथा एकार, ओकार* : मैथिलीक प्राचीन लेखन-परम्परामे कोनो बातपर बल दै काल शब्दक पाछाँ हि, हु लगाओल जाइ छै। जेना- हुनकहि, अपनहु, ओकरहु, तत्कालहि, चोट्टहि, आन्हु आदि। मुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर एकार एवं हुक स्थानपर ओकारक प्रयोग करैत देखल जाइत अछि। जेना- हुनके, अपनो, तत्काले, चोट्टे, आनो आदि।

७.*ष तथा ख* : मैथिली भाषामे अधिकांशतः षक उच्चारण ख होइत अछि। जेना- षड्यन्त्र (खड़यन्त्र), षोडशी (खोड़शी), षट्कोण (खटकोण), वृषेश (वृखेश), सन्तोष (सन्तोख) आदि।

८.*ध्वनि-लोप* : निम्नलिखित अवस्थामे शब्दसँ ध्वनि-लोप भऽ जाइत अछि:

(क) क्रियान्वयी प्रत्यय अयमे य वा ए लुप्त भऽ जाइत अछि। ओइमे सँ पहिने अक उच्चारण दीर्घ भऽ जाइत अछि। ओकर आगाँ लोप-सूचक चिह्न वा विकारी (’ / ऽ) लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : पढ़ए (पढ़य) गेलाह, कए (कय) लेल, उठए (उठय) पड़तौक।

अपूर्ण रूप : पढ़' गेलाह, कऽ लेल, उठ' पड़तौक।

पढ़ऽ गेलाह, कऽ लेल, उठऽ पड़तौक।

(ख) पूर्वकालिक कृत आय (आए) प्रत्ययमे य (ए) लुप्त भऽ जाइछ, मुदा लोप-सूचक विकारी नै लगाएल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : खाए (य) गेल, पठाय (ए) देब, नहाए (य) अएलाह।

अपूर्ण रूप : खा गेल, पठा देब, नहा अएलाह।

(ग) स्त्री प्रत्यय इक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीनूमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप : दोसरि मालिनि चलि गेलि।

अपूर्ण रूप : दोसर मालिन चलि गेल।

(घ) वर्तमान कृदन्तक अन्तिम त लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप : पढ़ैत अछि, बजैत अछि, गबैत अछि।

अपूर्ण रूप : पढ़ै अछि, बजै अछि, गबै अछि।

(ङ) क्रियापदक अवसान इक, उक, ऐक तथा हीकमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप: छियौक, छियैक, छहीक, छौक, छैक, अबितैक, होइक।

अपूर्ण रूप : छियौ, छियै, छही, छौ, छै, अबितै, होइ।

(च) क्रियापदीय प्रत्यय न्ह, हु तथा हकारक लोप भऽ जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप : छन्हि, कहलन्हि, कहलहुँ, गेलह, नहि।

अपूर्ण रूप : छनि, कहलनि, कहलौँ, गेलऽ, नइ, नञि, नै।

९.*ध्वनि स्थानान्तरण* : कोनो-कोनो स्वर-ध्वनि अपना जगहसँ हटि कऽ दोसर ठाम चलि जाइत अछि। खास कऽ ह्रस्व इ आ उक सम्बन्धमे ई बात लागू होइत अछि। मैथिलीकरण भऽ गेल शब्दक मध्य वा अन्तमे जँ ह्रस्व इ वा उ आबए तँ ओकर ध्वनि स्थानान्तरित भऽ एक अक्षर आगाँ आबि जाइत अछि। जेना- शनि (शइन), पानि (पाइन), दालि (दाइल), माटि (माइट), काछु (काउछ), मासु (माउस) आदि। मुदा तत्सम शब्द सभमे ई निअम लागू नै होइत अछि। जेना- रश्मिकेँ रइश्म आ सुधांशुकेँ सुधाउंस नै कहल जा सकैत अछि।

१०.*हलन्त()क प्रयोग* : मैथिली भाषामे सामान्यतया हलन्त ()क

आवश्यकता नै होइत अछि। कारण जे शब्दक अन्तमे अ उच्चारण नै होइत अछि। मुदा संस्कृत भाषासँ जहिनाक तहिना मैथिलीमे आएल (तत्सम) शब्द सभमे हलन्त प्रयोग कएल जाइत अछि।

११. जे शब्द मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आइ धरि जइ वर्त्तनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः तइ वर्त्तनीमे लिखल जाइत अछि- उदाहरणार्थ-

ग्राह्य

एखन
ठाम
जकर, तकर
तनिकर
अछि

अग्राह्य
अखन, अखनि, एखेन, अखनी
ठिमा, ठिना, ठमा
जेकर, तेकर
तिनकर। (वैकल्पिक रूपँ ग्राह्य)
ऐछ, अहि, ए।
१२. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप वैकल्पिकतया अपनाओल जाइत अछि: भऽ गेल, भय गेल वा भए गेल। जा रहल अछि, जाय रहल अछि, जाए रहल अछि। कर' गेलाह, वा करय गेलाह वा करए गेलाह।

१३. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखल जाइत अछि यथा कहलनि वा कहलन्हि।
१४. 'ऐ' तथा 'औ' ततऽ लिखल जाइत अछि जतऽ स्पष्टतः 'अइ' तथा 'अउ' सदृश उच्चारण इष्ट हो। यथा- देखैत, छलैक, बौआ, छौक इत्यादि।
१५. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द ऐ रूपे प्रयुक्त हएत: जैह, सैह, इएह, ओऐह, लैह तथा दैह।
१६. ह्रस्व इकारांत शब्दमे 'इ' के लुप्त करब सामान्यतः अग्राह्य थिक। यथा- ग्राह्य देखि आबह, मालिनि गेलि (मनुष्य मात्रमे)।
१७. स्वतंत्र ह्रस्व 'ए' वा 'य' प्राचीन मैथिलीक उद्धरण आदिमे तँ यथावत राखल जाइत अछि, किंतु आधुनिक प्रयोगमे वैकल्पिक रूपेँ 'ए' वा 'य' लिखल जाइत अछि। यथा:- कयल वा कएल, अयलाह वा अएलाह, जाय वा जाए इत्यादि।
१८. उच्चारणमे दू स्वरक बीच जे 'य' ध्वनि स्वतः आबि जाइत अछि, तकरा लेखमे स्थान वैकल्पिक रूपेँ देल जाइत अछि। यथा- धीआ, अढ़ैआ, विआह, वा धीया, अढ़ैया, बियाह।
१९. सानुनासिक स्वतंत्र स्वरक स्थान यथासंभव 'ञ' लिखल जाइत अछि वा सानुनासिक स्वर। यथा:- मैञा, कनिञा, किरतनिञा वा मैआँ, कनिआँ, किरतनिआँ।
२०. कारकक विभक्तिक निम्नलिखित रूप ग्राह्य:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे। 'मे' मे अनुस्वार सर्वथा त्याज्य थिक। 'कऽ क वैकल्पिक रूप 'केर' राखल जा सकैत अछि।
२१. पूर्वकालिक क्रियापदक बाद 'कय' वा 'कए' अव्यय वैकल्पिक रूपेँ लगाओल जा सकैत अछि। यथा:- देखि कय वा देखि कए।
२२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माङ, भाङ इत्यादि लिखल जाइत

अछि।

२३. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'म' क बदला अनुसार नै लिखल जाइत अछि, किंतु छापाक सुविधार्थ अर्द्ध 'ङ' , 'ञ', तथा 'ण' क बदला अनुस्वारो लिखल जा सकैत अछि। यथा:- अङ्क, वा अंक, अञ्चल वा अंचल, कण्ठ वा कंठ।

२४. हलंत चिह्न निअमतः लगाएल जाइत अछि, किंतु विभक्तिक संग अकारांत प्रयोग कएल जाइत अछि। यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक।

२५. सभ एकल कारक चिह्न शब्दमे सटा कऽ लिखल जाइत अछि, हटा कऽ नै, संयुक्त विभक्तिक हेतु फराक लिखल जाइत अछि, यथा घर परक।

२६. अनुनासिककेँ चन्द्रबिन्दु द्वारा व्यक्त कएल जाइत अछि। परंतु मुद्रणक सुविधार्थ हि समान जटिल मात्रापर अनुस्वारक प्रयोग चन्द्रबिन्दुक बदला कएल जा सकैत अछि। यथा- हिँ केर बदला हिं।

२७. पूर्ण विराम पासीसँ (।) सूचित कयल जाइत अछि।

२८. समस्त पद सटा कऽ लिखल जाइत अछि, वा हाइफेनसँ जोड़ि कऽ , हटा कऽ नै।

२९. लिअ तथा दिअ शब्दमे बिकारी -संस्कृतमे एकरा अवग्रह आ बांग्लामे जफला कहल जाइत अछि- (ऽ) नै लगाओल जाइत अछि।

३०. अंक देवनागरी रूपमे राखल जाइत अछि।

३१.किछु ध्वनिक लेल नवीन चिन्ह बनबाओल जेबाक चाही। जा ई नै बनल अछि ताबत ऐ दुनू ध्वनिक बदला पूर्ववत् अय/ आय/ अए/ आए/ आओ/ अओ लिखल जाइत अछि। आकि ऎ वा ऒ सँ व्यक्त कएल जाइत अछि।

(भारतक आ नेपालक सरकारी पोथी सभक आधारपर)

मैथिली व्याकरणक विशेषता: मैथिलीक विकास बौद्ध सिद्ध आचार्य, फेर कर्णाट आ ओइनवार राजवंश, मल्ल राजवंश आ मध्यकालक मैथिली आ आधुनिक मैथिलीक तथाकथित मानक आ पूब, पच्छिम, उत्तर, दक्षिण भिन्नताक अनुसार परिवर्तित होइत रहल अछि आ मैथिली व्याकरण ऐ सभ विशेषताकेँ संग लऽ कऽ चलैत अछि।

मैथिलीमे सभ शब्द स्वरांत, अ वृत्ताकार, ए, य, ऐ, यै, ओ, औ ई सभ स्पष्ट उच्चरित होइत अछि। सम्बन्ध कारक लेल सँ, क, केर (बेशी पद्यमे प्रयुक्त) प्रयुक्त होइत अछि। संज्ञा रूप कम-सरल (एकवचनसँ बहुवचन करबा लेल सभ आदि जोड़ि दियौ) मुदा क्रिया-धातुरूप बेशी होइत अछि। आदर आ अनादरपूर्ण प्रयोगमे क्रियापदमे परिवर्तन होइत अछि। मैथिलीमे क्रियाक रूप कर्ता आ वाक्यक दोसर संज्ञा, सर्वनाम (कर्तासँ सम्बद्ध) द्वारा निर्धारित होइत अछि। मैथिलीमे क्रिया पुरुष-भेदक अनुरूप बदलैत अछि। मैथिलीमे ब द्वारा भविष्यत् कालक अलाबे क्रियार्थी संज्ञा सेहो बनाओल जाइत अछि। ल प्रयुक्त कए कृदन्त कहल, गेल मे परिवर्तन मैथिलीक विशिष्टता अछि।

मैथिलीमे शब्दक भिन्न-भिन्न वर्णपर बलाघात होइत अछि। मैथिलीमे कारक विभक्तिसँ ओना तँ तिर्यक रूप नै देखबामे अबैत अछि, जेना गामक, मुदा सम्बन्ध कारकमे ई अपवाद अछि, जेना साँझ-साँझुक। क्रियार्थ संज्ञा रूपमे सेहो तिर्यक रूप होइत अछि।

संज्ञा:कोनो वस्तुक नाममे लघु, गुरु आ गुरुतर ई तीन रूप

होइत अछि- मनोज्, मनोज, मनोजबा।

लिंग: लिंग रूप सरल अछि। निर्जीवक लिंग पुल्लिंग भऽ गेल अछि। संज्ञामे लिंगसँ शब्दक रूप परिवर्तन नै होइत अछि मुदा विशेषण आ क्रियामे होइत अछि।

वचन: संज्ञामे वचनक भिन्नतासँ परिवर्तन नै होइत अछि। लोकनि, रास आदि शब्द जोड़ि कऽ तकर बोध कराओल जाइत अछि। ''हम'' एकवचन अछि आ ''हमसभ'' बहुवचन।

विभक्ति: करण -ए- जेना काजे। अधिकरण- आँ-हि- जेना परुकाँ, चोट्टहि ।

कारक: कर्ता- रिक्त, कर्म- कैँ, करण- सँ, संप्रदान- लए, अपादान- सँ, संबंध-क, केर(पद्यमे), अधिकरण–मे।

सर्वनाम: उत्तम पुरुष- हम, हमे

मध्यम पुरुष- तूँ, तोँ, अहाँ, अपने, ई

अन्य पुरुष-ताहि, तकरा, तकर, हुनका, हुनि, ओकरा, हुनकर, ओकर, हिनका, एकर, हिनकर, जाहि, जकरा, जकर, के, की, ककरा, अपन, कोन, किछु, केदन, केहनदन, कोनादन, एतबा, कतबा, ततबा, ततेक।

क्रियाविशेषण: एतए, कहाँ, कखन, जखन, जाबे, ताबे, आबे, आब, जहिआ, तहिआ, कहिआ, जेना, तेना, एम्हर, ओम्हर, जेम्हर, तेम्हर, भर(दक्षिणभर)। कालबोधक-आइ, काल्हि, परसू,

लगले, परुकाँ; स्थानबोधक- जेना आगाँ, पाछाँ; प्रकारबोधक- जेना भने, कने-मने; संयोजक जेना मुदा, आर; सम्बोधन जेना रौ, हौ; समुच्चयबोधक जेना ईह, छी; बलद्योतक जेना ए ; नहि, भरिसक आदि विविध क्रियाविशेषण होइत अछि।

उपसर्ग: अ, अन, अध, अब, दु, नि, भरि, कम, ब, बद, बे, सर।

प्रत्यय: अक्कड़, अंत, इल, आइन, आइ,आउ, आकू, आन, आना, आप, आयत, आर, इन, बाह, आरि, आरी, आहु, औन, इअल, इआ, ई, गर, ऐत, ओड़, ओला, औटी, औती, ओना, औबिल, क, त, औत, आइ, बान, म, बला, हार, हा, ई, कार, बाह, आनी, खाना, खोर, गरी, ची, बाज।

विशेषण: ऐमे आदर आ लिंगक अनुसार परिवर्तन होइत अछि। सिलेबी, गोल, चर्की ई गाए-बड़द लेल प्रयुक्त होइत अछि आ विशेषणसँ प्राणिक बोध भऽ जाइत अछि। पढ़ल (पुल्लिंग) आ पढ़लि (स्त्रीलिंग), मझिला छौड़ा-माँझिल भाइ (आदर)।

क्रिया: वचन भेद मैथिली क्रियामे नै होइत अछि। पुरुषक अनुसार क्रियामे भेद अबैत अछि। आदर प्रदर्शनमे सेहो क्रियारूप बदलैत अछि। तिङन्त मे लिंगभेद नै होइत अछि मुदा कृदन्तमे लिंगक अनुसार क्रियापद बदलि जाइत अछि। क्रिया कारकक अनुसार बदलैत अछि। ऐ प्रकारसँ क्रिया देखि कऽ मात्र ई पता लागत जे कर्ता आदरणीय अछि वा नै, क्रियाक कर्म कोन पुरुषमे अछि आ आदरणीय अछि वा नै।

क्रियाक चारि रूप जेना स्वयं मरब (मरैत अछि), मारब (मारैत अछि), दोसरासँ मरबाएब (मरबैत अछि) आ कर्मवाचानुसार ककरो कहि कऽ मरबाएब (मरबबैत अछि)- होइत अछि।

धातुरूप- मैथिलीमे लगभग १२२५ धातुरूप दीनबन्धु झा संकलित केने छथि जे पाणिनीक २००० धातुसँ कनिये कम अछि। आ यएह १२२५ टा धातु मैथिली भाषाक स्वतंत्र अस्तित्वकँ असगरे बनओने रखबा लेल पर्याप्त अछि। किछु उदाहरण:

छक- अविरोधपूर्वक अन्यक्रियासँ दबब अर्थमे- रूपलाल फुल तोड़बामे सोनेलालसँ **छकलाह-** जीतल गेला।

ठक- परतारब, वञ्चना- ठक बुड़िबककँ ठकैत अछि- ओकर वस्तु लऽ लेबाक हेतु भ्रम उत्पन्न करबैत अछि।

डक- अपन उत्कट गन्धक प्रसारण- हीँगु डकैत अछि- अपन तीव्र गन्धक प्रसार करैत अछि।

ढक- मिथ्या अपन अति प्रशंसा करब- जयलाल ढकैत छथि- अपन मिथ्या अति प्रशंसा बजै छथि।

बक- अश्रव्य बहुत बाजब- जयलाल *बकैत* छथि- नै सुनबाक योग्य कथा बहुत बजै छथि।

मक- हर्षसँ मालक धावनक्रीड़ा- बाछा मकैत अछि, लीलसँ एम्हर ओम्हर दौगि रहल अछि।

वाल्मीकि द्वारा सुन्दरकाण्डमे मानुषिमिह संस्कृताम्- संस्कृत आ मानुषी दुनू भाषाक ज्ञान हनुमानजीसँ कहबाओल गेल अछि। ज्योतिरीश्वर वर्णन रत्नाकरमे लिखै छथि- *''पुनु कइसन भाट- संस्कृत, पराकृत, अबहठ, पैशाची, सौरसेनी, मागधी छहु भाषाक तत्वज्ञ''* संगे ज्योतिरीश्वर द्वारा सात *''उपभाषक''* चर्च भेल अछि। प्राकृतक कएकटा प्रकार छल। ओइमे मागधी प्राकृत मैथिली आ अन्य पूर्वी भारतक भाषाक विकासमे योगदान देलक। अर्धमागधीमे जैन धर्मग्रन्थ आ पालीमे बौद्ध धर्मग्रन्थ लिखल गेल। कालिदासक संस्कृत नाटकमे संस्कृतक अतिरिक्त अपभ्रंशक प्रयोग गएर अभिजात्य वर्गक लेल प्रयुक्त भेल तँ चर्यापदक भाषा सेहो मागधी मिश्रित अपभ्रंश छल। मैथिली सहित आन आधुनिक भारतीय आर्यभाषा दोसर प्राकृतसँ विकसित भेल सेहो देखि पड़ैत अछि। अपभ्रंश परवर्ती कालमे पूर्वी भारतमे अवहट्टक रूप लेलक। मैथिलीक विशेषता जइमे एकर सभ शब्दक स्वरांत हएब, क्रियारूपक जटिल हएब (मुदा तइमे लैंगिक भेद नै हएब), सर्वनामक सम्बन्ध कारक रूप आदिक रूपरेखा अवहट्टमे दृष्टिगोचर हएब शुरू भऽ गेल छल।

डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)

१

महाराष्ट्रक एकटा नग्र रत्नागिरी। ओइ नग्र लग एकटा गाम अम्बावडे।

ओइ गामसँ रामजी सपकाळक एकटा परिवार छल, भारतीय सेनामे, एकटा स्कूलमे ओ हेडमास्टर रहथि। गौरांगी नीलाक्षी आ भीमा हुनकर पत्नी छलखिन्ह। हुनकर चौदहम सन्तान १४ अप्रैल १८९१ ई. कँ भीमाक कोखिसँ भेल आ तकर नाम भीम राखल गेल, तखन रामजी महूमे पदस्थापित रहथि।

१८९४ ई. मे रामजी सेवानिवृत्त भऽ गेला। भीम जखन ६ बर्खक रहथि तखने हुनकर मायक देहान्त भऽ गेलन्हि आ तकर बाद हुनकर पालन हुनकर शरीरसँ अपाहिज दीदी केलखिन्ह। पिता फेरसँ विवाह केलखिन्हि आ नोकरी लेल गोरेगाँव चलि गेला।

२

रामजी सपकाल अस्पृश्य महार जातिक रहथि। ओ कबीरक दोहा सुना कऽ भीमकँ भोरे-भोर पढ़ैले उठा दै छला।

सेवानिवृत्तिक बाद जखन ओ काप-दपोली १८९४ ई.मे एला तखन डपोली नगरपालिका शिक्षा विभाग अपन स्कूलमे अस्पृश्यक नामांकन नै लेबाक निर्णय कऽ लेलक। अखन धरि अस्पृश्यक बच्चाक

नामांकन ओइ स्कूल सभमे होइ छलै। तखन रामजी मुम्बइ आ फेर सतारा चलि गेला। भीमक प्रारम्भिक शिक्षा सतारामे भेलन्हि।

कोनो नौआ भीमक केश नै काटै छल से भीमक बहिन हुनकर केश काटै छली।

स्कूलमे हुनकासँ सटि कऽ कियो नै बैसै छल।

कटही गाड़ीबला हुनका तै शर्तपर बैसबै छल जे गाड़ी भीम चलेता आ ओ आरामसँ बैसत।

पानि पीबाक संकट, जलाशय हुनका लेल नै?

हम विद्या प्राप्त करब, तखन ई सभ भेटत। संकल्प लेलन्हि भीम।

ओतै विद्यालयमे पेंडसे आ आम्बेडकर, दूटा शिक्षक रहथि।

एक दिन भीम अपनाकेँ भिजा लेलन्हि जे स्कूलमे नै पढ़ऽ पड़ए। मुदा पेंडसे हुनका अपन घर पठेलन्हि आ हुनका धरिया पहिर कऽ स्कूलमे पढ़ाइ करऽ पड़लन्हि।

आम्बेडकरक परम प्रिय शिष्य बनि गेला भीम। आम्बेडकर ब्राह्मण रहथि। एक दिनुका गप अछि। भीम खेनाइ नै आनने रहथि, असगरे भुखले पेटे एकटा गाछक छाह तर ओ बैसल रहथि।

पुछलन्हि आम्बेडकर- भीम एना असगरे किए बैसल छी? भीम कहलन्हि- आइ हम खेनाइ नै आनने छी। कहलन्हि आम्बेडकर- तँ

की भेल, चलू आइ दुनू गुरु चेला रोटी तरकारी संगे खाइ छी। भीमक प्रति एहेन नीक आचरण आइ धरि कियो नै केने छल। भीम प्रसन्न भऽ गेला।

कहलन्हि आम्बेडकर- भीम, हम अहाँकेँ अपन कुलनाम दै छी, आब अहाँ आम्बेडकर कहाएब।

३

रामजी मुम्बइ आबि गेला। एलफिंस्टन स्कूलमे ओ भर्ती भेला। १९०७ मे स्कूलक शिक्षा ओ पूर्ण केलन्हि। केलुस्कर हुनका "बुद्धचरितम्" उपहारमे देलन्हि।

भीमकेँ स्कूलमे संस्कृत पढ़बाक बड़ड इच्छा रहन्हि मुदा तकर अनुमति नै छल।

जखन भीम १७ बर्खक रहथि तखन ९ बर्खक रमासँ हुनकर बियाह भेलन्हि।

केलुस्कर महोदयक प्रयाससँ बड़ोदा नरेशक छात्रवृत्ति भीमकेँ प्राप्त भेलन्हि आ ओ १९१२ ई.मे बी.ए. पास भऽ गेला।

बड़ोदा सरकार हुनका लेफ्टिनेन्ट पदपर तैनात केलक।

मुदा तकर बाद पिताक मोन खराप भऽ गेलन्हि, भीम पितासँ भेँट करबाले एला, पिता प्रसन्न रहथिन्ह। पिता अपन प्रसन्नताक संगे प्रयाण केलन्हि, मृत्युक लीला, भीम जोर-जोरसँ कानलथि।

४

बड़ोदा नरेशक छात्रवृत्तिसँ भीम १९१३ ई. मे अध्ययन लेल न्यूयार्क बिदा भेला। कोलम्बिया विश्वविद्यालय हुनकर प्रबन्ध स्वीकृत केलक आ हुनका ''डॉक्टर ऑफ फिलोसोफी'' उपाधि देलक।

घुरला भीम।

हुनकर सत्कार कएल जाए, भव्य सत्कार। सभ हित-सम्बन्धी विचारलन्हि।

मुदा ओ नै स्वीकार केलन्हि अपन सत्कार। हमर सत्कारपर होमएबला खर्चासँ छात्रवृत्ति दियौ, वंचितकेँ पढ़ाउ।

बड़ोदा नरेश हुनका बड़ोदा बजेलन्हि। हुनकर आवास-भोजनक व्यवस्था लेल कहलन्हि।

मुदा कोनो भोजनालय वा धर्मशाला हुनका रखबा लेल तैयार नै भेल। एकटा पारसी भोजनालय किछु दिन हुनका रखलक मुदा फेर ओतौसँ हुनका निकालि देल गेल।

एकटा गाछतर ओ कानऽ लगला। शिक्षा प्राप्त करब तँ हमर दोष दूर हएत, से सोचने रही। मुदा आब तँ हम शिक्षा प्राप्त केने छी, आब किए ई यातना देल जा रहल अछि हमरा? प्रण करै छी हम जे ऐ व्यवस्थाकेँ तोड़ि देब, ओकर जड़िपर प्रहार करब।

५

भीम घुरि एला मुम्बइ। ओ शिडेनहम महाविद्यालयमे प्राध्यापक बनि गेला।

कोल्हापुरक छत्रपति साहू महराज उपेक्षित लोकक उद्धार लेल कटिबद्ध छला। भीम ओतऽ गेला, घोषणा केलन्हि माणग्राममे साहू महराज, हे उपेक्षित जन आबि गेल छथि, अहाँ सभक उद्धारक- डॉ आम्बेडकर।

मुदा एकटा आर आघात, पुत्र गंगाधरक मृत्युसँ पत्नी रमा खिन्न रहऽ लगली। यशवन्तक पालन ओ करैत रहली, पति बड्ड कम समए घरमे दै छलखिन्ह, मुदा ओ सभटा सहैत रहली।

६

फेर अध्यापनपद छोड़ि ओ ‘‘इकोनोमिक एण्ड पोलिटिकल सायंस’’ नाम्ना लंडन स्थित संस्थामे ‘‘द प्रॉब्लेम ऑफ रुपी’’ पर प्रबन्ध देलन्हि। मुदा हुनका क्रान्तिकारी मानल गेल, से ओ संस्थाक मोन-माफिक संशोधित प्रबन्ध प्रस्तुत केलन्हि आ ‘‘डॉक्टर ऑफ सायंस’’ भऽ घुरला। विधिक अध्ययन केलाक बाद ओ न्यायालय सेहो जाइ छला।

२० जुलाइ १९२४ ई. केँ ओ ‘‘बहिष्कृत हितकारिणी सभा’’ नामसँ एकटा संस्था बनेलन्हि। कारण हुनकर विश्वास छलनि जे अपन समस्याक समाधान अपने करऽ पड़त, आन से नै कऽ सकत।

२० मार्च १९२७ ई. महाडमे जनान्दोलनक नेतृत्व कऽ ‘‘चवदार तळ’’ जलाशयसँ पानि पीलन्हि।

तकर बाद ''बहिष्कृत भारत'' मासिक द्वारा विचार प्रसारित केलन्हि।

२ मार्च १९३०, नाशिक राममन्दिरमे प्रवेशक प्रयासक जनान्दोलनक नेतृत्व, मुदा पण्डा द्वार बन्न कऽ लेलक, तखन सभ राम आ लक्ष्मण कुण्डमे स्नान कऽ घुरि गेला।

मुदा १९३३ ई मे मुम्बइ प्रान्तमे सभ उपेक्षितक मन्दिर प्रवेशक विधान पास भेल।

७

१९२७ ई. मे अपन शिक्षक आम्बेडकरसँ हुनकर भेँट भेलन्हि। हुनकर चिट्ठी भीम स्नेहसँ रखने छला। गुरु-शिष्य भाव विह्वल भऽ गेला।

साइमन कमीशनक समितिमे भीमक चयन भेल, वयस्क मतदानक अनुशंसा भीमक कएल छन्हि।

लंडनमे ''राउण्ड टेबल कान्फ्रेन्स''मे तीन बेर भाग लऽ कऽ दलितक समस्या उठेलन्हि ओ।

मुदा फेर आघात। पत्नी रमाक मृत्य।

१५ अप्रैल १९४८ ई. कँ शारदा-कबीर नाम्ना ब्राह्मण चिकित्सिकासँ विवाह केलन्हि।

समए कम अछि। संघर्ष निष्फल भऽ रहल अछि। हिन्दू, अस्पृश्य हिन्दू! नै। हम असफल नै हएब। धर्मान्तर। केलुस्करक देल बुद्धचरितम् सम्बल बनत।

१४ अक्टूबर १९५६ ई., दशमी, नागपुर ९ बजे भोरसँ ११ बजे धरि, गोरखपुरक महास्थाविर चन्द्रमणि धर्मान्तर करेता, बौद्ध धर्मंमे।

ओ, हुनकर दोसर ब्राह्मण पत्नी सविता आ लाखक लाख लोक बौद्ध बनि जाइ गेला।

बुद्धक पद धूलि माथपर लगा तीन बेर वन्दन केलन्हि।

८

स्वतंत्र भारतक विधि मंत्री बनला बाबासाहेब आम्बेडकर। संस्कृतक पैघ प्रेमी। संस्कृतमे सम्भाषण करै छलाह (आज, हिन्दी पत्रिका सितम्बर १५, १९४९ अंक; द लीडर, इलाहाबाद, १३ सितम्बर, १९४९)। ऑल इण्डिया सेड्यूल कास्ट फेडेरेशनमे संस्कृत राजभाषा हुअए, ई प्रस्ताव बाबासाहेब राखलन्हि मुदा युवा बी.पी. मौर्य आदिक विरोध भेल आ प्रस्ताव आपस भऽ गेल।

लाखक लाख पोथी हुनकर निजी पुस्तकालयमे छलन्हि, सभटा पोथी ओ मुम्बइक सिद्धार्थ महाविद्यालयकेँ दऽ देलन्हि।

पैघ भेलाक उपरान्तो ओ अपन समाजसँ अपन लोकसँ दूर नै गेला।

६ दिसम्बर १९५६ ई.केँ ओ निर्वाण प्राप्त केलन्हि।

अभिनय पाठशाला

[अभिनय पाठशाला (रंगमंच आ फिल्म लेल)- विदेह नाट्य (आ फिल्म) उत्सव २०१२ क पूर्वपीठिका]

(ऐ आलेखक आधार हमर तीन मासमे देल ४० टा संस्कृतमे अनूदित व्याख्यान अछि जे हम श्री अरविन्द आश्रममे ओड़ीसाक प्राइमरी स्कूल लेल चयनित शिक्षक-शिक्षिका प्रशिक्षुकेँ देने रही। हम जतेक हुनका सभकेँ पढ़ेलौं, तइसँ बेसी हुनका सभसँ सिखलौं। ओ सभ आब ओड़ीसाक सुदूर क्षेत्रमे पढ़ा रहल छथि। ई आलेख हुनके लोकनिकेँ समर्पित अछि।- गजेन्द्र ठाकुर)

१

अभिनय की अछि ? बच्चा सभ अपन समान पसारि किछु-ने-किछु काज करिते रहैत अछि। हमर बेटी फुसियाहीक चाह बनबैत अछि आ हमरा दैत अछि। हम सेहो ओकरा फुसियाही कऽ घुट-घुट पी जाइ छी। मुदा फेर ओ असली सूप अनैए, हम काज कऽ रहल छी, हम बिन मुँह घुमेने घुट-घुट चाह पीबाक अभिनय करै छी, मुदा बेटी कहैए, ''ई असली छी''। हमर भक टूटैए आ हम असली दुनियाँमे आबि जाइ छी।

बच्चा नाटकसँ शिक्षा लैए, लोककेँ आ वातावरणकेँ बुझबाक प्रयास करैए।

तखन मन्दिरक उत्सव आ राजाक प्रासादमे होइबला नाटक स्वतंत्र

भऽ गेल आ एकर उपयोग वा अनुप्रयोग दोसर विषयकेँ पढ़ेबामे सेहो हेबऽ लागल। दोसर विषयक विशेषज्ञक सहभागिता आवश्यक भऽ गेल। स्वतंत्र रूपेँ सेहो ई विषय अछि आ एकर अनुप्रयोग सेहो कएल जाइत अछि। पारम्परिक नाटक पेशेवर नाटकसँ जुड़त, उदाहरण स्वरूप कएल गेल नाटक, मंचक साजसज्जा, आ असल नाटकक मंचन रंगमंचक इतिहास बनत। मुदा ऐ सँ पहिने रंगमंचक प्रारम्भिक ज्ञानक संग नाटक पढ़बाक आदतिक विकसित भेनाइ सेहो आवश्यक अछि। आ से पढ़बा काल एकर मंच प्रबन्धन आ अभिनयक दृष्टिसँ विश्लेषण सेहो आवश्यक अछि।

राजनैतिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक घटनाक्रमक जानकारी सम्बन्धित प्रस्तुतिक सन्दर्भमे देब आवश्यक होइत अछि। भरतक नाट्यशास्त्रक अतिरिक्त कालिदास, भास आ शूद्रकक नाटकक परिचय सेहो आवश्यक।

रंगमंचसँ जुड़ल लोककेँ लिटल आ ग्रेट ट्रेडिशन, दुनूक अनुभव आ जानकारी हेबाक चाही।

बच्चा नाटक आ रंगमंचसँ जुड़त तँ जिम्मेवार नागरिक बनत, आर्थिक रूपेँ आत्म-निर्भर बनत आ सक्रिय नागरिक सेहो बनत।

२

चैतन्य महाप्रभु *जात्राक* संगीत आ नृत्य युक्त *वीथी* मंचनक प्रयोग संदेशक प्रसार लेल केलन्हि।

नाट्य शास्त्रमे वर्णन अछि जे नाटकक उत्पत्ति इन्द्रक ध्वजा

उत्सवसँ भेल। नाट्य शास्त्र नाटककेँ दू प्रकारमे १.अमृत मंथन आ २.शिवक त्रिपुरदाह, मानैत अछि। एहेन लगभग दस टा दृश्य वा रूपकक प्रकार भरत लग छलन्हि (दशरूपक) आ ओइमे नृत्य, संगीत आ अभिनय सम्मिलित छल; आ ऐ दशरूपकक अतिरिक्त श्रव्य गीत सभ छल।

पाँचम शताब्दी ई. पू. मे पाणिनी शिलालिन् आ कृशाश्वक चर्चा करै छथि जे नट सूत्रक संकलन केने रहथि। नट माने अभिनेता आ रंग माने रंगमंच। नटक पर्यायवाची होइत अछि, भरत, शिलालिन् आ कृशाश्व!

मैथिली नाटक जे आइ धरि मात्र नृत्य-संगीतसँ बेशी आ चित्रकला आ दस्तकारीसँ मामूली रूपसँ जुड़ल छल, से आब भौतिकी, जीव विज्ञान, इतिहास, भूगोल, राजनीति आ साहित्यसँ सेहो जुड़ए, तकर प्रयास हेबाक चाही।

३

अभिनय पाठशाला:

विभिन्न औजारकेँ पकड़बाक आ चलेबाक विधि: ओकर ग्रीसिंग आदि केनाइ, ओकरा सुरक्षित रखनाइ सिखाउ। घरकेँ कोना साफ राखी, साफ आ अव्यवस्थित घरमे अन्तर, कोन चीजकेँ बेर-बेर साफ करऽ पड़ैए, कोन चीजकेँ नै, से सिखाउ। कनियाँ-पुतराक निर्माण, तार, फाटल-पुरान कपड़ा, टूटल चूड़ी/ गहना, पुरान साड़ी, रुइया आदिसँ मुँह, आँखि आदिक चित्रण होइत अछि। शरीरक चमड़ा

लेल प्लास्टिक आदि वा कपड़ापर रंगक परत लगाउ। ऊन आदिसँ केस बनाएब, वीर, योद्धा आदि बनबैले तलवार लेल काठी आ पैघ जुत्ता, आ फेर मजदूर गुड़िया आदि बनेनाइ सिखाउ। माने सभ तरहक पात्रक निर्माण।

मवेशी पन्हेनाइ, दूध दुहनाइ, लथारसँ बचबाक अभिनय, दही पौरनाइ, लस्सी घोटनाइ, आँखि आ हाथक मिलान, ई सभ काल्पनिक रूपैँ सिखाउ। खेल जेना करिया झुम्मरि आदिक परिचय दियौ।

कागचक नाव आ हवाइ जहाज बनेनाइ आ रेखाचित्र बनेनाइ सिखाउ। लिखलकैँ बुझबाक आ विषयकैँ बुझबाक तरीका अछि रंगमंच।

चलनाइक अभिनय- चलनाइ सेहो कएक प्रकारक होइत अछि, हड़बरा कऽ चलनाइ, कोनो बोझ, कोदारि आदि उठा कऽ चलनाइ, जोशमे, दुखमे चालि आ थाकल ठेहिआयल चालि, नेङरा कऽ चलनाइ, भेड़ चालि, नारा लगबैत चलब, दू-तीन टा संगीक संग चलब, ई सभ बच्चा वा प्रौढ़ अभिनेताकैँ नीक जकाँ सिखाउ। स्पर्श- गरम वस्तु छूनाइ, ठंढा छूअब, कड़गर आ मोलायम वस्तु छूब, फेर तकर प्रतिक्रिया, भय-आसक्ति-तामस-लाज-नै करऽ बला भाव, जिद्द, दुःख, हँसी (खीखी हँसीसँ मुँह बन्न कऽ हँसबा धरि), देखनाइ -खुशीसँ, आश्चर्यसँ, विभिन्न प्रकारक दृश्यपर प्रतिक्रिया सेहो देखेबाक आवश्यकता अछि। बजार, स्कूल, घर, सभा आदि कार्य, स्मरण शक्ति, शब्दावली, ध्यान, व्यक्तित्व, क्षमता, विचारधारा, स्वाभिमान, इच्छा, शारीरिक विश्वास प्रदर्शन, उत्साह, स्त्री-पुरुष

विमर्श, मनोविज्ञान, कविता, गद्य, गीत, कथा आ प्रहेलिकाक समावेश, तकर स्मरण आ वाचन ऐ सभपर ध्यान देब आवश्यक अछि। अंग प्रचालन, नृत्य, संगीत, हस्त संचालन, कसरत (सम्मिलित रूपेँ), हवाक झोंकाक भीतर आएब, ऐ सँ खिड़की खुजब, किछु माथपर खसब आदिक काल्पनिक अनुभव, ऐ सभक अनुभव बच्चा सभकेँ कराउ। वातावरण, गति, रूप, आकार-प्रकारक अनुभव। अपनसँ अलग प्रकारक व्यक्तित्वक अभिनय, ध्वनि आ दृश्यक संबंध आ दुनूक संगे-संग पुनरावृत्ति, वास्तविक आ काल्पनिक दुनूक मंचन, कोनो विषयपर वार्तालाप, किताब, अखबार, वृत्तचित्रक विषय, तात्कालिक विषय। जबरदस्ती यादि कराएब गलत मुदा सुनि-सुनि कऽ मोन राखब नीक।

खेल- दूटा दल बना कऽ अभिनय। एक दल सुतत, दोसर दल नढ़िया/ कौआ बनि उठाएत, श्लोक आदिक समवेत पाठ, ई सभ अभ्यास कराउ।

वर्कशॉपमे- किनको कोनो काजमे दिक्कत होइन्ह तँ दोसरकेँ ओकर सहायता लेल कहू, ककरो सुझावपर आपसमे सलाह लिअ आ मिल कऽ विचार करू, क्षमता अनुसारे काज दियौ, जे नीकसँ काज केलनि तकरा प्रशंसा सेहो भेटबाक चाही, मीठ बाजब सिखाउ, सही बाजब सिखाउ, बजबासँ पहिने अपन बेर एबा धरि रुकू, निर्देशक पालन करू, बौस्तुकेँ बाँटि कऽ आ मिल कऽ प्रयोग केनाइ सिखाउ, कर्तव्यक बोध कराउ, जिम्मेवारी दियौ, सामूहिक कार्यमे भाग लिअ, अन्य सामाजिक व्यवहार अपनाउ, अवलोकन आ श्रवण द्वारा सम्भाषण आ अभिनय सिखाउ, अनुकरण द्वारा अभिनय सिखाउ,

कोनो चीज दोहरा कऽ अभिनय सिखाउ, प्रशंसा/ प्रोत्साहनसँ सिखाउ, मनोरंजन आ आनन्दयुक्त वातावरण बनेने रहू, नमगर व्याख्यान नै दियौ, उदाहरण, अभ्यास आ प्रोत्साहन बेशी कारगर हएत (भाषणक बदला), दण्डसँ बचू, दू बच्चाक तुलनासँ बचू, कोनो बच्चाकेँ दोसर बच्चाक नजरिमे नै खसाउ, बाहरी लोकसँ बच्चा सभक भेँट करबाउ, त्योहार/ उत्सव संग मिल मनाउ, मिलि जुलि कतौ घुमैले जाउ, स्नेहसँ देखू/ मुस्की दियौ/ माथ हिला कऽ समर्थन करू/ पीठ ठोकू/ माता-पिताकेँ ओकर प्रशंसा करू/ मुदा बेर-बेर ओकर प्रशंसा ओकर सोझाँमे नै करू/ चॉकलेट आदिक लालच नै दियौ/ कोनो एहेन चीज नै गछि लिअ जे अहाँ पूर्ण नै कऽ सकी। पाँचसँ कम उमेरक बच्चाकेँ गलतीक कारण नै बताउ- ओतेक बुद्धि ओइ उमेरमे नै होइ छै। मुँहसँ/ इशारासँ, आवाज आ मुँह हिला कऽ गलती करबासँ रोकू, आवश्यकता हुअए तँ छोट-मोट दण्ड, पाँचसँ बेशी उमेरक बच्चाकेँ दियौ, मुदा ओकरा मारियौ नै, लज्जित नै करियौ/ शिकाइत नै करियौ, निर्णय लेबाक आदति दियौ, भागेदारीक सुखक अनुभव कराउ, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा सिखबियौ, आत्मनिर्भर भेनाइ सिखबियौ, स्वभावक विषयमे बतबियौ, बात करबाक कला, आपसक सम्बन्ध, सार्वजनिक सम्पत्तिक आदर केनाइ सिखबियौ, पर्यावरणक ध्यान रखनाइ सिखबियौ, भावनाकेँ ठेस नै पहुँचबियौ, प्रश्न करबाक कला सिखबियौ, जीवनक नायक केहेन हेबाक चाही से बतबियौ, आत्मशक्तिक शक्तिक वर्णन करू, अपन गामकेँ बूझब सिखबियौ, धर्म-राजनीतिक-जातिक गुत्थी बुझबियौ।

अभिनयक पाठशालाक कार्यशाला लेल आवश्यक तत्व:

-शारीरिक आ अभिनय क्षमताक विश्लेषण/ शरीर रचना शास्त्रक ज्ञान/ नाटकक समाजशास्त्रीय दृष्टिसँ भेद/ नाट्य मंचनक जीबाक साधनसँ रहल जुड़ाव आ प्रभाव/ सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आ राजनैतिक वातावरणक अध्ययनक दृष्टिसँ नाट्य मंचक प्रकारक सम्बन्ध, सिखबाक आ बुझबाक कलाक विकास, कोनो अवधारणाकेँ बनेनाइ आ ओकरा बुझि कऽ मंचन केनाइ, अभिनय लेल चलबाक आ बजबाक अभ्यास आ नाटक संस्कृतिक अंग बनि जाए तकर प्रयास, इतिहासक कालखण्ड आ ओइ कालखण्ड सभक नाटकक परिचय, तखुनका कालकेँ मंचपर स्थापित करब आ ऐ लेल इतिहास, भूगोल आ सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक अवस्थाक परिचय कराउ। पेशागत रंगकर्मक अवलोकनसँ मंचक पाछाँ होइबला काजक विषयमे जानकारी भेटत। नाटकक कालखण्डक अनुरूप मंच आ पहिराबाक अध्ययन, विभिन्न कालखण्डक नाटकक रेकॉर्डिंग वा मंचनकेँ जा कऽ देखबाक आवश्यकता आ ओइ कालक फोटो, चित्रकला आ आन सूचनाक संकलन। संगीत-नाटक अकादेमी, दिल्लीमे ढेर रास डोक्यूमेन्ट्री देखबा लेल आ ढेर रास सान्द्र मुद्रिका किनबा लेल उपलब्ध अछि।

४

कोलकातामे १८५० ई.क आसपास आधुनिक रंगमंच ब्रिटिश क्लबमे शुरू भेल, मुदा बाहरी लोकक प्रवेश ओतऽ नै छलै। जात्रा आधारपर- विद्यासुन्दर (प्रेमी-प्रेमिकाक कथा- बांग्ला) खेलाएल जाइ छल, भारतेन्दु सेहो रासलीलाक आधारपर लिखलन्हि। विष्णुदास भावे- सीता स्वयंवर (१८४३ई.), मराठीमे यक्षगण (कर्णाटक)क

आधारपर एकटा प्रयोग छल। हबीब तनवीर- नजीर कविपर- आगरा बाजार आ मृच्छकटिकम् (शूद्रकक संस्कृत नाटक हिन्दीमे), शम्भु मित्र, बी.वी.कारन्थ, के.एन.पणिक्कर, रतन थियाम (चक्रयुध- अभिमन्यु कथापर, गीत-नृत्य आधारित, किछु लोक एकरा बैले बुझलन्हि!), पणिक्कर आ कारन्थ स्वर आ बोलक प्रयोग केलन्हि। कारन्थ-आलापक सेहो प्रयोग केलन्हि। १९५६ ई. संगीत-नाटक अकादेमी द्वारा प्रथम राष्ट्रीय नाट्य उत्सव- कालिदासक अभिज्ञान शाकुन्तलम् (संस्कृत) सँ उत्सवक प्रारम्भ- गोवा ब्राह्मण सभा द्वारा। पणिक्करक मध्यम व्यायोग- भास (संस्कृत) आ थियाम- भास उरुमुगम (मणिपुरी) केलथि जइमे कलाकार नृत्यशैलीमे आस्तेसँ आबथि आ जाथि।

विजय तेन्दुलकरक घासीराम कोतवाल, जकर आधार छल नाना फड़णवीस आ दोसर पुणेक भ्रष्ट ब्राह्मण (दशावतार आधारित पारम्परिक शैलीमे), आ शान्तत- कोर्ट चालू आहे; गिरीश कर्णाडक हयवदन (कथासरित्सागर- यक्षगण आधारित); मोहन राकेशक आषाढ़ का एक दिन, शम्भू मित्र- डायरेक्टर- रवीन्द्रनाथ, इब्सेन (डॉल्स हाउस), उत्पल दत्त- कल्लोल (तरंगक ध्वनि) ई सभ आधुनिक रंगमंचकेँ आगाँ बढ़ेलन्हि।

५

पारसी रंगमंच:- मुम्बइक आर्थिक रूपेँ सम्पन्न पारसी समुदायक, एकरा हाइब्रिड (वर्णशंकर वा मिश्र) रंगमंच कहल जाइत अछि। १८५३ ई. मे एकर प्रारम्भ भेल। १९४० ई. धरि ई नीक-नहाँति चलैत रहल। सिनेमाक आगमनक बाद एकर मृत्यु भऽ गेल।

एकरासँ जुड़ल लोक सिनेमाक क्षेत्रमे चलि गेला। पारसी नाटकक किछु प्रसिद्ध नाटक जेना इन्दर सभा, आलम आरा आ खोन्ने नहाक (सेक्सपियरक हेमलेट आधारित) सिनेमा बनि सेहो प्रस्तुत भेल।

विषय वस्तु: पारसी नाटकक विषय-वस्तु महाकाव्य आ पुराण आधारित छल। एकर विषय ऐतिहासिक आ सामाजिक छल। सभ बेर पर्दा खसबाक बाद हास्य कणिका खेलाएल जाइ छल। देश-विदेशमे पारसी थियेटरक प्रदर्शन होइ छल। रोमांच आ रहस्य एकर मुख्य अंग छल। चित्रित पर्दाक प्रयोग होइ छल। पर्दा कोनो रहस्य एलापर खसै छल। दर्शकक मांगपर रिटेक सेहो भऽ जाइ छलै आ ई रिटेक कोनो दृश्य वा कोनो गीतक पुनः प्रस्तुतिक रूपमे होइ छल, आ तइ लेल पर्दा फेरसँ उठि जाइ छलै। राजा रवि वर्मा आ पारसी थियेटर दुनू एक दोसरासँ प्रभावित छला। पारसी थियेटरक कलाकारक पहिराबा आ मंच सज्जापर राजा रवि वर्माक चित्रकलाक प्रभाव छल आ राजा रवि वर्मा अपन चित्रकलाक विषयक प्रेरणा पारसी थियेटरक दृश्यसँ ग्रहण करै छला।

दोहा/ रोला/ कुण्डलिया

कुण्डलिया

छत्ता घुरछा पल्लौसँ, भेल दिने अन्हार।
दिन बितलापर घर घुरी, काल भेल विकराल॥
काल भेल विकराल, पोरे-पोर सिहरैए।
सुनत केओ सवाल, बोल बगहा लगबैए।
ऐरावत बेहाल, बोल कतऽ भेल निपत्ता।
घुरियाए बनि काल, पैसि बिच घोरन छत्ता।।

दोहा

दोहा मात्रिक छन्द अछि। दोहामे दू पाँती आ चारि चरण होइत अछि। पहिल चरणमे १३, दोसर चरणमे ११, तेसर चरणमे १३ आ चारिम चरणमे ११ मात्रा होइत अछि। पहिल आ तेसर चरणक आरम्भ जगणसँ (***जगण*** U। U) नै हएत आ दोसर आ चारिम चरण अन्त हएत दीर्घ-ह्रस्वसँ।

रोला

रोला सेहो मात्रिक छन्द अछि। रोलामे चारि पाँती आ आठ चरण होइत अछि। पहिल चरणमे ११, दोसर चरणमे १३, तेसर चरणमे ११ आ चारिम चरणमे १३ मात्रा, पाँचम चरणमे ११, छअम चरणमे १३ मात्रा होइत अछि। सभ पाँतीक पहिल चरणक अन्तमे दीर्घ-ह्रस्व, वा ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व होइत अछि। सभ पाँतीक दोसर चरणक

अन्तमे चारिटा ह्रस्व, वा दूटा दीर्घ, वा दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व (***भगण*** । U U), वा ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ (***सगण*** U U ।) होइत अछि। रोलाक प्रारम्भ ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्वसँ नै करू।

कुण्डलिया

दोहा आ रोलाक कुण्डली (मिश्रण) भेल कुण्डलिया। दोहा लिख दियौ, फेर दोहाक अन्तिम चरणकेँ (११ मात्रा बला) रोलाक पहिल चरण बना दियौ (पुनरावृत्ति) आ फेर रोला जोड़ू। खाली ई ध्यान राखू जे दोहाक पहिल चरणक पहिल शब्द आ रोलाक अन्तिम चरणक अन्तिम शब्द एक्के रहए। कुण्डलियाक पहिल शब्द आ अन्तिम शब्द एक्के होइए। कुण्डलियाक चारिम आ पाँचम चरण सेहो एक्के होइए।

छन्द विचार

साहित्यक दू विधा अछि गद्य आ पद्य। छन्दोबद्ध रचना पद्य कहबैत अछि- अन्यथा ओ गद्य थीक। छन्द माने भेल एहन रचना जे आनन्द प्रदान करए।

छन्द दू प्रकारक अछि।मात्रिक आ वार्णिक।

मात्रिक गणना

मैथिलीक उच्चारण निर्देश आ ह्रस्व-दीर्घ विचारपर आउ।

शास्त्रमे प्रयुक्त 'गुरु' आ 'लघु' छंदक परिचय प्राप्त करू।

तेरह टा स्वर वर्णमे अ,इ,उ,ऋ,लृ - ह्र्स्व आर आ,ई,ऊ,ऋ,ए.ऐ,ओ,औ- दीर्घ स्वर अछि।

ई स्वर वर्ण जखन व्यंजन वर्णक संग जुड़ि जाइत अछि तँ ओकरासँ 'गुणिताक्षर' बनैत अछि।

क्+अ= क,

क्+आ=का ।

एक स्वर मात्रा आकि एक गुणिताक्षरकेँ एक 'अक्षर' कहल जाइत अछि। कोनो व्यंजन मात्रकेँ अक्षर नै मानल जाइत अछि- जेना 'अवाक्' शब्दमे दू टा अक्षर अछि, अ, वा ।

१. सभटा ह्रस्व स्वर आ ह्रस्व युक्त गुणिताक्षर 'लघु' मानल जाइत अछि। एकरा ऊपर U लिखि एकर संकेत देल जाइत अछि।

२. सभटा दीर्घ स्वर आर दीर्घ स्वर युक्त गुणिताक्षर 'गुरु' मानल जाइत अछि, आ एकर संकेत अछि, ऊपरमे एकटा छोट -।

३. अनुस्वार किंवा विसर्गयुक्त सभ अक्षर गुरू मानल जाइत अछि।

४. कोनो अक्षरक बाद संयुक्ताक्षर किंवा व्यंजन मात्र रहलासँ ओइ अक्षरकेँ गुरु मानल जाइत अछि। जेना- अच्, सत्य। ऐमे अ आ स दुनू गुरु अछि।

जेना कहल गेल अछि जे अनुस्वार आ विसर्गयुक्त भेलासँ दीर्घ

हएत तहिना आब कहल जा रहल अछि जे चन्द्रबिन्दु आ ह्रस्वक मेल ह्रस्व हएत।

माने चन्द्रबिन्दु+ह्रस्व स्वर= एक मात्रा

संयुक्ताक्षर: एतए मात्रा गानल जाएत ऐ तरहेँ:-

क्ति= क् + त् + इ = ०+०+१= १

क्ती= क् + त् + ई = ०+०+२= २

क्ष= क् + ष= ०+१

त्र= त् + र= ०+१

ज्ञ= ज् + ञ= ०+१

श्र= श् + र= ०+१

स्र= स् +र= ०+१

शृ =श् +ऋ= ०+१

त्व= त् +व= ०+१

त्त्व= त् + त् + व= ० + ० + १

ह्रस्व + S = १ + ०

अ वा दीर्घक बाद बिकारीक प्रयोग नै होइत अछि जेना दिअऽ आऽ ओऽ (दोषपूर्ण प्रयोग)। हँ व्यंजन+अ गुणिताक्षरक बाद बिकारी दऽ सकै छी।

ह्रस्व + चन्द्रबिन्दु= १+०

दीर्घ+ चन्द्रबिन्दु= २+०

जेना हँसल= १+१+१

साँस= २+१

बिकारी आ चन्द्रबिन्दुक गणना शून्य हएत।

जा कऽ = २+१

क् =०

क= क् +अ= ०+१

किएक तँ क कें क् पढ़बाक प्रवृत्ति मैथिलीमे आबि गेल तँ बिकारी देबाक आवश्यकता पड़ल, दीर्घ स्वरमे एहन आवश्यकता नै अछि।

U- ह्रस्वक चेन्ह

।- दीर्घक चेन्ह

एक दीर्घ । =दूटा ह्रस्व U

वार्णिक गणना

संयुक्ताक्षरकेँ एक गानू आ हलन्तक/ बिकारीक/ इकार आकार आदिक गणना नै करू। वार्णिक छन्दक परिचय लिअ। ऐमे अक्षर गणना मात्र होइत अछि। हलंतयुक्त अक्षरकेँ नै गानल जाइत अछि। एकार उकार इत्यादि युक्त अक्षरकेँ ओहिना एक गानल जाइत अछि जेना संयुक्ताक्षरकेँ। संगहि अ सँ ह केँ सेहो एक गानल जाइत अछि। द्विमानक कोनो अक्षर नै होइछ। मुख्य रूपे तीनटा बिन्दु मोन राखू-

1.हलंतयुक्त अक्षर-0

2.संयुक्त अक्षर-1

3.अक्षर अ सँ ह -1 प्रत्येक।

आब पहिल उदाहरण देखू

ई अरदराक मेघ नहि मानत रहत बरसि
के=1+5+2+2+3+3+3+1=20 मात्रा

आब दोसर उदाहरण देखू

पश्चात्=2 मात्रा

आब तेसर उदाहरण देखू

आब=2 मात्रा

आब चारिम उदाहरण देखू

स्क्रिप्ट=2 मात्रा

मुख्य वैदिक छन्द सात अछि-गायत्री,उष्णिक् ,अनुष्टुप् ,बृहती,पङ्क्ति,त्रिष्टुप् आ जगती। शेष ओकर भेद अछि अतिछन्द आ विच्छन्द। छन्दकेँ अक्षरसँ चिन्हल जाइत अछि। यदि अक्षर पूरा नै भेल तँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादमे बढ़ा लेल जाइत अछि।य आ व केर संयुक्ताक्षरकेँ क्रमशः इ आ उ लगा कऽ अलग कएल जाइत अछि।जेना-

वरेण्यम्=वरेणियम्

स्वः= सुवः

गुण आ वृद्धिकेँ अलग कऽ सेहो अक्षर पूर कऽ सकै छी।

ए= अ + इ

ओ= अ + उ

ऐ= अ/आ + ए

औ= अ/आ + ओ

सरल वार्णिक छन्दमे ह्रस्व आ दीर्घक विचार नै राखल जाइए। मुदा वार्णिक छन्दमे ह्रस्व आ दीर्घक विचार राखल जा सकैत अछि, कारण वैदिक वर्णवृत्तमे, बादमे वार्णिक छन्दमे, ई विचार शुरू भऽ गेल छल:- जेना

तकैत रहैत छी ऐ मेघ दिस

तकैत (ह्रस्व+दीर्घ+दीर्घ)- वर्णक संख्या-तीन

रहैत (ह्रस्व+दीर्घ+ह्रस्व)- वर्णक संख्या-तीन

छी (दीर्घ) वर्णक संख्या-एक

ऐ (दीर्घ) वर्णक संख्या-एक

मेघ (दीर्घ+ह्रस्व) वर्णक संख्या-दू

दिस (ह्रस्व+ह्रस्व) वर्णक संख्या-दू

मात्रिक छन्दमे द्विकल, त्रिकल, चतुष्कल, पञ्चकल आ षटकल अन्तर्गत एक वर्ण (एकटा दीर्घ) सँ छह वर्ण (छहटा ह्रस्व) धरि भऽ सकैए।

द्विकलमे- कुल मात्रा दू हएत, से एकटा दीर्घ वा दूटा ह्रस्व हएत।

त्रिकलमे कुल मात्रा तीन हएत- ह्रस्व+दीर्घ, दीर्घ+ह्रस्व आ ह्रस्व+ह्रस्व+ह्रस्व; ऐ तीन क्रममे।

चतुष्कलमे कुल मात्रा चारि; पञ्चकलमे पाँच; षटकलमे छह मात्रा हएत।

वार्णिक छन्द तीन-तीन वर्णक आठ प्रकारक होइत अछि जे "यमाताराजसलगम्" सूत्रसँ मोन राखि सकै छी।

आब कतेक पाद आ कतऽ यति,अन्त्यानुप्रास देबाक अछि; कोन तरहेँ क्रम बनेबाक अछि से अहाँ स्वयं वार्णिक/ मात्रिक आधारपर कऽ सकै छी, आ विविधता आनि सकै छी।

वर्ण छन्दमे तीन-तीन अक्षरक समूहकेँ एक गण कहल जाइत अछि। ई आठ टा अछि-

यगण U । ।

रगण ।U।

तगण । । U

भगण । U U

जगण U । U

सगण U U ।

मगण । । ।

नगण U U U

ऐ आठक अतिरिक्त दूटा आर गण अछि- ग / ल

ग- गण एकल दीर्घ ।

ल- गण एकल ह्रस्व U

एक सूत्र- आठो गणकेँ मोन रखबा लेल:-

यमाताराजभानसलगम्

आब ऐ सूत्रकेँ तोड़ू-

यमाता U । । = ***यगण***

मातारा । । । ***= मगण***

ताराज । । U = ***तगण***

राजभा ।U। = ***रगण***

जभान U। U = ***जगण***

भानस । U U = ***भगण***

नसल U U U = *नगण*

सलगम् U U । = *सगण*

रामलोचन शरणक मैथिली राम चरित मानस

महाकाव्य वा गीत प्रबन्ध: महाकाव्यक वर्णन जे ई कतेक सर्गमे हुअए, एकर नायक केहन प्रकृतिक हुअए आ ओ उच्च कुल उत्पन्न हुअए आदि आब बुद्धिविलास मात्र कहल जाएत। जेना गद्यमे कथा होइत अछि आ विस्तारक अनुसार विहनि कथा, लघुकथा आ दीर्घ कथामे विभक्त कएल जाइत अछि, तइ सन्दर्भमे उपन्यास (वा बीच-बीचमे नाटकक) पद्य रूपान्तरण महाकाव्य कहल जाएत। जँ ऋगवैदिक परम्परामे जाइ तँ महाकाव्यकेँ गीत-प्रबन्ध कहल जेबाक चाही।

आचार्य रामलोचन शरणक गीत-प्रबन्ध मैथिली रामचरित मानस: मैथिली साहित्यकेँ पढ़निहारक समक्ष मैथिलीमे रामचरित किंवा रामायण श्री चंदा झा कृत मिथिला भाषा रामायण आ श्री लालदासक रमेश्वर चरित मिथिला रामायण- ऐ दू गोट ग्रंथक रूपमे प्राप्त होइत अछि। पाठ्यक्रमक अंतर्गत स्कूल, कॉलेज-विश्वविद्यालयक मैथिली विषयक पाठ हुअए आकि सामान्य आलोचना ग्रंथ आकि पत्र-पत्रिकामे छिड़िआएल लेख सभ, ऐ तेसर रामायणक अस्तित्वो धरि नै स्वीकार कएल गेल अछि। एकर संग ईहो बुझि लिअ जे जनमानस समालोचनाशास्त्रक आधारपर राखल विचारकेँ तखने स्वीकार करैत अछि जखन ओ सत्यक प्रतीक हुअए। आइयो मिथिलामे जे अखंड रामायण पाठ होइत अछि से वाल्मीकि रामायणक किंवा तुलसीक रामचरितमानसक। एकर कारणपर हम

बहुत दिन धरि विचार करैत रहलौं। कएकटा चन्द्र रामायण आ लालदासकृत मिथिला रामायण, रामायण अखंड पाठ केनिहार लोकनिकेँ बँटबो केलौं मुदा सबहक यएह विचार छल, जे ई दुनू ग्रंथ मैथिली साहित्यक अमूल्य धरोहर अछि, मुदा अखंड पाठक सुर जे तुलसीक मानसमे अछि से दोसर भाषाक रहला उत्तरो संगीतमय अछि। शंकरदेव अपन मातृभाषा असमियाक बदला मैथिली भाषाक प्रयोग संगीतमय भाषा हेबाक द्वारे केलन्हि, तइ भाषामे संगीतमय रामायणक रचना जे अखण्ड पाठमे प्रयोग भऽ सकए, केर निर्माण संभव नै भऽ सकल अछि, से हमर मोन मानबा हेतु तैयार नै छल।

श्री रामलोचनशरण-कृत यथासम्भव पूर्णभावरक्षित समश्लोकी मैथिली श्रीरामचरितमानस एकर प्रमाण अछि। अपन समीक्षक लोकनि ऐ मोतीकेँ चिन्हबामे सफल किए नै भऽ सकला, एकर चर्चो तक मैथिलीक उपरोक्त दुनू रामायणक समक्ष किए नै कएल जाइत अछि?

स्व.हरिमोहन झाक कोनो पोथी मैथिली अकादमी द्वारा हुनका जिबैत प्रकाशित नै भेल आ साहित्य अकादमी पुरस्कार सेहो हुनका मृत्योपरांत देल गेलन्हि। आचार्य रामलोचन शरण मैथिलीक सभसँ पैघ महाकाव्यक रचयिता छथि आ हमरा विचारे सभसँ संपूर्ण मैथिली रामायणक सेहो। जखन हम ऐ महाकाव्यक फोटोकॉपी पूर्वाँचल मिथिलाक रामायण- अखंड- पाठक संस्थाकेँ देलौं, तँ ओ लोकनि एकरा देख कऽ आश्चर्यचकित रहि गेला आ अगिला साल ऐ रामायणक अखंड पाठक निर्णय केलन्हि। एकरा मैथिलीक समालोचनाशास्त्रक विफलता मानल जाए, किएक तँ ई महाकाव्य तँ

विफल भैये नै सकैत अछि। आचार्यक मनोहरपोथीक चर्चा हम अपन बाल्येवस्थासँ सुनैत रही, मुदा ऐ पोथीक नै। मैथिलीक सभसँ पैघ महाकाव्यक चर्चा मात्र सीतायनपर आबि किए खतम भऽ जाइत अछि? आचार्य श्री रामलोचनशरणक मैथिली श्री रामचरितमानस सभसँ पैघ महाकाव्य अछि ई एकटा तथ्य अछि आ से समालोचनाकार किंवा मैथिली भाषाक इतिहासकार लोकनिक कृपाक वशीभूत नै अछि। अपन ग्रंथक किञ्चित् पूर्ववृत्तम् मे आचार्य लिखैत छथि- मिथिलाभाषायाः मूर्द्धन्या लेखकाः श्रीहरिमोहनझामहोदया निशम्यैतद् वृत्तं परमाह्लादं गता भूयो भूयश्च मामुत्साहितवन्तः। आगाँ ओ लिखै छथि- प्राध्यापकस्य श्री सुरेन्द्रझा 'सुमन' तथा सम्पादनविभागस्थ पण्डित श्री शिवशंकरझा-महोदयस्य हृदयेनाहं कृतज़्ज्ञोऽस्मि। से सभकेँ ई देखल गुनल सेहो छलन्हि।

आचार्य रामलोचन शरणक गीत-प्रबन्ध मैथिली रामचरित मानसक गेयता: आचार्यजीक सुन्दरकाण्डक प्रारंभ देखू आ एकर गेयताक तुलना चन्दा झाक रामायण आ लालदासक रामयणसँ करू:-

जामवंत केर वचन सोहाओल। सुनि हनुमंत हृदय अति भाओल॥1॥ ता धारि बाट देखब सहि सूले। खा कय बंधु कंद फल मूले॥2॥

जाधरि आबी सीतहिँ देखी। होयत काज मन हरख विसेखी॥3॥ ई कहि सबहिँ झुकाकय माथे। चलल हरषि हिय धय रघुनाथे॥4॥

सिंधु तीर एक सुंदर भूधर। कौतुक कूदि चढ़ल तेहि ऊपर॥5॥ पुनु पुनि रघुवीरहिँ उर धारी। फनला पवनतनय बल भारी॥6॥

जहि गिरि चरन देथि हनुमंते। से चल जाय पताल तुरंते॥7॥ सर अमोघ रघुपति केर जहिना। चलला हनूमान झट तहिना॥8॥ जलनिधि रघुपति दूत बिचारी। कह मैनाक हौ श्रम भारी॥9॥

तुलसी अकबरक समकालीन छला आ हुनकर भाषा आ अखुनका भाषामे किछु अंतर आबि गेल अछि, मुदा तुलसीक गेयता ओहिनाक ओहिना अछि। आचार्यजी तुलसीक गेयता उठओलन्हि अछि, आ दुरूहता खतम कऽ देने छथि। सभ काण्डक शुरूमे देल संस्कृत पद्य ओ तुलसीक मानससँ लेलन्हि अछि। आचार्यजीक ई मैथिली रामचरितमानस तुलसीक मानसक रूपांतर तँ अछि मुदा ई मैथिलीक मूल महाकाव्यक रूपमे परिगणित हेबाक अधिकारी अछि जेना कंबनक तमिल रामायण आ तुलसीक मानस अपन-अपन भाषामे परिगणित कएल जा रहल अछि। कंबन वाल्मीकि रामायणक रूपांतर तमिलमे कऽ रहल छला, तखन ओ वाल्मीकि रामायणक विषयमे कहलन्हि- ई रामायण एकटा दूधक समुद्र अछि आ हम छी एकटा बिलाड़ि जे मनसूबा बना रहल अछि जे ऐ सभटा दूधकें एक्के बेरमे पीबि जाइ।

ओना ईहो सत्य जे कंबन कहियो (आचार्यजी सेहो एहिना केलन्हि) रामायणकेँ अपन मौलिक कृति नै कहलन्हि वरन वाल्मीकिक कृतिक रूपांतरे कहलन्हि, जखन कि ओ अपन कृतिमे रामकेँ भगवान बना देलन्हि। वाल्मीकि रामकेँ मर्यादा पुरुष मानै छला। वाल्मीकि सुग्रीवक विवाह बालीक पत्नीसँ बालीक मरबाक पश्चात हेबाक वर्णन करै छथि मुदा कंबन बालीक पत्नीक आजीवन वैधव्यक वर्णन करै छथि। आचार्यजीकेँ ई करबाक आवश्यकता नै पड़लन्हि किएक तँ लोकक कंठमे तुलसीक मानस बसि गेल छल, आ हुनका एकर

गेयताक निर्वाह मात्र करबाक छलन्हि।

आचार्य रामलोचन शरणक गीत-प्रबन्ध मैथिली रामचरित मानस आ एकर नारी आ शूद्र-वन्यजाति विरोध प्रदर्शन: आब मानसक एकटा विवादास्पद पद्यक चर्चा करी। अर्थक पुनर्पाठ भऽ सकै छल। आचार्यजी सुन्दरकाण्डक अंतमे लिखै छथि जखन सिंधु (समुद्र)रामकेँ लंका जेबाक रस्ता नै दै छथि तखन राम कहै छथि-

लछुमन बान सरासन आनू। सोखब बारिधि बिसिख कृसानू॥1॥

तखन सिंधु कर जोरि बजै छथि-

ढोल गमार सुद्र पसु नारी। सब थिक ताड़न केर अधिकारी॥

एकर पुनर्पाठ एना भऽ सकै छल, जे ई सभ -ढोल गमार सुद्र पसु नारी- ई सभ शिक्षा किंवा सबक देबा योग्य अछि, गमार सुद्र आ नारीमे शिक्षाक अभाव अछि तेँ आ पसुमे मनुष्यक अपेक्षा बुद्धि नै छै तेँ, ढोलक प्रयोग बिना शिक्षाक करब तँ संगीत नै ध्वनि भऽ जाएत। फेर समुद्र ओइ स्थितिमे खलनायक बनि रहल छल आ ओकर वक्तव्य कविक आकि रचनाकारक वक्तव्य नै भऽ सकैत अछि। रचनाकारक रचनामे नीक अधला सभ पात्र रहैए, आ ओइ पात्रक मुँहसँ नीक आ अधला दुनू गप निकलत। रचनाकारक सफलता ऐपर निर्भर करैत अछि, जे ओ अपनाकेँ अपन पात्रसँ फराक कऽ पबैत अछि आकि नै। मुदा तुलसी आ तँ आचार्य रामलोचन शरण सेहो अपनाकेँ पात्रसँ बहुत ठाम फराक नै कऽ पबै छथि। जखन भारतमे सामन्तवादी सरकार छल तखन हुनकर शूद्र

आ गएर द्विज जातिपर कएल टिप्पणी अनावश्यक बुझि पड़ैए। मिथिलाक स्मृतिकार लोकनि यएह परम्परा बादोमे रखलन्हि आ आश्चर्य तँ तखन होइए जखन ऐ तरहक गएर जरूरी टिप्पणी अंग्रेजी शासनकालमे प्रणीत संस्कृत ग्रन्थ सभमे मैथिल लोकनि द्वारा कएल देखै छी, ओइ अंग्रेजी शासनमे मे ब्राह्मण आ गएर ब्राह्मण सभकेँ अंग्रेज *ब्लैक इण्डियन* कहै छला।

तुलसीक प्रासंगिकता वा कट्टरता नै वरण मात्र ओकर दुरूहताकेँ आचार्य खतम कएने छथि। उपरोक्त विवादास्पद पदक अतिरिक्त आनोठाम ई जातिवादिता देखबामे अबैत अछि।

मैथिली रामचरित मानस अयोध्याकाण्डक दोहा १२ क बादक तेसर पद देखू:-

करय बिचार कुबुद्धि कुजाती।

हैत अकाज कोन बिधि राती॥३॥

मैथिली रामचरित मानस अयोध्याकाण्डक दोहा ५९ क बादक पहिल पद देखू:-

कोल किरात सुता बन जोगे।

विधि रचलनि बंचित सुख भोगे॥१॥

मैथिली रामचरित मानस अयोध्याकाण्डक दोहा १६१ क बादक चारिम पद देखू:-

विधियो सकथि न तिय हिय जानी।

सकल कपट अघ अबगुन खानी॥४॥

(स्त्रीक हृदैक गति विधातो नै बुझि सकै छथि, ई कपट, पाप आ अवगुणसँ उगडुम अछि!!)

मैथिली रामचरित मानस अयोध्याकाण्डक दोहा १९३ क बादक तेसर पद देखू:-

लोकवेद सबतरि जे नीचे।

छुबि जसु छाह लैछ जल सीचेँ॥३॥

तुलसी आ तेँ आचार्य रामलोचन शरण सेहो अपनाकेँ पात्रसँ बहुत ठाम फराक नै कऽ पबै छथि (कम्बन वाल्मीकिक अनुवाद करै काल बहुत ठाम तत्कालीन युगक अनुरूक अपनाकेँ फराक करै छथि) आ तेँ मैथिली रामचरित मानस अयोध्याकाण्डक दोहा २५० क बादक तेसर पदमे वन्यजातिक मुँहसँ कहबै छथि:-

यैह हमर अछि बुझु बड़ सेबे।

बासन बसन चोराय न लेबे॥३॥

मैथिली रामचरित मानस बालकाण्डक दोहा ६२ क बादक सातम

पद देखू:-

जद्यपि जग दारुण दुख नाना।

सब सौँ कठिन जाति अपमाना॥७॥

मुदा जखन बीसम शताब्दीमे साहित्य अकादेमीक पोथीमे लोरिकपर मैथिली आलेखमे एकटा सज्जन लिखै छथि जे ब्राह्मणपर कएल शूद्र द्वारा अत्याचारक विरुद्ध लोरिक ठाढ़ भेला तँ अकबरकालीन तुलसी आ ओकर छन्दोबद्ध अनुवादक आचार्य रामलोचन शरणकेँ की दोष देल जाए! जेना विष्णु शर्मा पंचतंत्रक कथा कहैत-कहैत स्त्री आ शूद्रक पाछाँ अकारण क्रूर भऽ जाइ छथि सएह हाल राम चरित मानसक अछि।

आचार्य रामलोचन शरणक गीत-प्रबन्ध मैथिली रामचरित मानसक विशेषता: मैथिली रामचरित मानस बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड आ उत्तरकाण्डमे विभक्त अछि। वाल्मीकि रामायणक सुनियोजित कथ्यमे किछु हेरफेर कएल गेल अछि। एकर शैली आ चरित्रक अंकन उदात्त अछि। श्रृंगार रसक प्राधान्य नै अछि मुदा राम सीताक सन्दर्भमे वियोग आ संयोग दुनू कालमे एकर प्रयोग भेल अछि। मुख्य अंगी रस अछि शान्ति, ओना ई सभटा रामभक्तिमे समाहित अछि। भक्तिक प्रधानता अछि मुदा ज्ञान आ कर्मक महत्व कम नै कएल गेल अछि, सगुणक प्राधान्य रहितो निर्गुण भक्तिक महत्व कम नै भेल अछि, राम ब्रह्म छथि आ हुनकर निर्गुण आ सगुण दू रूप छन्हि। जीव आ ब्रह्म एक्के अछि। वचनक पालन हुअए वा पितृभक्ति, भ्रातृभक्ति वा नारीक प्रेम वा पतिव्रतक, मैथिली रामचरित

मानस ऐ सभ आदर्शसँ ओतप्रोत अछि। मैथिली रामचरित मानसमे सभ अलंकार प्रयोगमे अछि मुदा मुख्य रूपेँ रूपक आ उपमा प्रयोगमे अछि। प्रेमाख्यानमे प्रयुक्त दोहा आ चौपाइ आधारित प्रबन्ध पद्धतिक कड़वक विधिक प्रयोगक बादो संस्कृत छन्द सभ प्रयुक्त भेल अछि। मैथिली रामचरित मानसमे विद्यापतिक गीत-विधि, वीरगाथा सभक छप्पय विधि, दोहा, सोरठा, भाट सभक कवित्त-सवैया, नीतिवाक्यक सूक्ति, घनाक्षरी, तोमर, त्रिभंगी छन्दक प्रयोग भेल अछि। मनुक्खक बहुत रास टोटमाक सेहो वर्णन यत्र-तत्र भेल अछि। एकर उद्देश्य अछि मोक्ष, लोककल्याण आ रामरायक स्थापना। मुदा ऐमे रामक अतिरिक्त कृष्ण, शिव (सेतुबन्ध कालमे राम द्वारा शिवक पूजा) आ गणेशक स्तुति अछि। प्रकृति आ चरित्र दुनूक चित्रणमे मैथिली रामचरितमानस अद्वितीय अछि। कवि खिस्सा कहि रहल छथि मुदा बीच-बीचमे ई भारद्वाज-याज्ञवल्क्य आ गरुड़-काकभशुण्डीक सम्वादक माध्यमसँ सेहो कहल गेल अछि। सम्वाद शैलीक प्रयोग मैथिली रामचरितमानसमे खूब भेल अछि। लक्ष्मण-परशुराम सम्वाद हुअए वा मंथरा आ कैकेयीक सम्वाद आकि रावण आ अंगदक सम्वाद, सभ ठाम नाटकक सम्वाद शैली सन रोचक पद्य अहाँकेँ भेटत। प्रारम्भक बालकाण्ड आ अन्तक उत्तरकाण्डमे ऐ गीत-प्रबन्धक दूटा ध्रुव दृष्टिमे आएत। उत्तरकाण्डमे गुरु-शिष्यक खराप होइत सम्बन्ध आ ब्राह्मणक वेद बेचबाक आ पतित हेबाक चर्चा भेटैत अछि मुदा उत्तरकाण्डमे रामराज्यक रूपरेखा सेहो भेटैत अछि।

मैथिली साहित्यक गीत-प्रबन्ध मध्य मैथिली रामचरितमानसक स्थान: मैथिली वा कोनो भाषामे रामक चरित वाल्मीकि रामायणसँ प्रभावित

भेने बिना नै रहि सकैए। आचार्य रामलोचन शरणक तुलसीक मानसक समश्लोकी मैथिली अनुवाद ओइ अर्थेँ आर विशिष्ट भऽ जाइत अछि जे आचार्य रामलोचनशरण खाँटी मैथिली तत्वक कतौ अवहेलना नै केने छथि आ ई गीत-प्रबन्ध मैथिलीक अखन धरिक आकारमे (आ गुणात्मक रूपेँ सेहो) मैथिलीक सभसँ पैघ गीत-प्रबन्ध (महाकाव्य) अछि।

मैथिली नाटक आ फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ

१

मैथिली नाटकक एकटा समानान्तर दुनियाँ

रामखेलावन मंडार- गाम कटघरा, प्रखण्ड- शिवाजीनगर, जिला समस्तीपुर। हिनके संग बिन्देश्वर मंडल सेहो छला। उठैत मैथिली कोरस आ - माँ गै माँ तूँ हमरा बंदूक मँगा दे कि हम तँ माँ सिपाही हेबै- एखनो लोककेँ मोन छन्हि। ऐ मंडली द्वारा रेशमा-चूहड़, शीत-बसन्त, अल्हा-ऊदल, नटुआ दयाल ई सभ पद्य नाटिका प्रस्तुत कएल जाइ छल।

मैथिली-बिदेसिया- पिआ देसाँतरक टीम सहरसा-सुपौल-पूर्णियाँसँ अब छल।

हासन-हुसन नाटिका होइ छल।

रामरक्षा चौधरी नाट्यकला परिषद, ग्राम- गायघाट, पंचायत करियन, पो. वैद्यनाथपुर, जिला- समस्तीपुर विद्यापति नाटक गोरखपुर धरि जा कऽ खेलाएल छल। ऐ मंडली द्वारा प्रस्तुत अन्य नाटक अछि- लौंगिया मेरचाइ, विद्यापति, चीनीक लड्डू आ बसात।

मैथिली नाटकक समानान्तर दुनियाँकेँ सेहो अभिलेखित आ सम्मानित कएल जेबाक प्रयास हेबाक चाही।

२

मैथिली फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ

मैथिलीक समानान्तर सिनेमा:

धड़कन मीडिया हाउस प्रा. लि., मिरचैया, सिरहा, नेपालक (नन्दलाल महतोक प्रस्तुति, छायांकन- एम.समिर. निर्माता कमल यादव,लेखक-निर्देशक जितेन्द्र सहयोगी) "माई के ममता"

मैथिली फिल्मक कलाकार: कलाकार- अबधेश कुमार गिरी, प्रियंका शर्मा, राजकुमार महतो, निर्मला महतो, अन्जनी मण्डल, नन्दन ठाकुर, धर्मेन्द्र साह, जितेन्द्र ठाकुर, रिता सहयोगी, निर्मला महतो, सुरजा महतो, प्रविन ठाकुर, दिनेश यादव, दिनेश ठाकुर, प्रेम कुमार सिंह, प्रेम कुमार महतो, अनिल कुमार महतो, ज्ञानेन्द्र कुमार महतो, संजय महतो, दशरथ महतो, बिरेन्द्र महतो,चम्पा देवी, मधुदेवी महतो, पुष्पा कर्ण, गुलजार यादव, रन्जु महतो, इन्दु साह, मनोज कुमार सिंह, राम कुमार साह, गणेश महतो, अरुण चौधरी, अनिल कुमार साह, पवन याद, हेमलाल यादव, सत्य नारायण महतो, गंगा महतो, भरोसी महतो, बैजू बावरा, अख्लेश्वर महतो, ध्रुव कुमार महतो, अनिल कुमार दास, विनोद महतो, सन्तोष साह, विपुल साह, प्रदीप साह, रोशन कुमार घिमिरे, मंचन महतो, जगदीश यादव, विन्देश्वर यादव, देविन्द्र यादव, ब्रह्मदेव महतो, इन्दु मल्लिक, उत्तम महतो, सियाशरण महतो, राधा कुमारी, सरस्वती कुमारी, कृष्णा कु. महतो, आकाश कुमार महतो, शिवम चौधरी, आशीष कुमार महतो

विशेष:रिता कु. कर्ण, मिथलेश यादव, प्रमोद साह, रिना यादव, रेखा

महतो, ज्ञानेन्द्र कुमार महतो, एम. समिर, अनिल कुमार महतो, सुरेश यादव, वि.पी.उदासी, सुरेश मण्डल, रामशुभक महतो, देव कुमार महतो, रामदेव पण्डित, अन्जनी मण्डल, महेश कुशवाहा, बिरेन्द्र कबीरपंथी, कुमार कुशे, बाबू राम महतो, धर्मेन्द्र साह, अनिल कुमार महतो, उपेन्द्र नारायण महतो, पवन मल्लिक, नन्दन ठाकुर, दिवाकर ठकुरी।

गीतकार: जितेन्द्र सहयोगी

संगीतकार: गुरुदेव कामत, कमल मण्डल, विश्वनाथ झा।

गायक/ गायिका: गुरुदेव कामत, रामा मण्डल, हरिशंकर चौधरी, विश्वनाथ झा, सर्मिला महतो, मधु गुरुंग।

-"प्रित के बाजी" मैथिली फिल्म

-जी.प्र.गुप्ताक फ़िल्म

-निर्देशक सूर्य साह

-सम्पादक जितु सिंह

- छायांकन कुंदन कुमार पप्पू

-निर्माता जिवछ प्रसाद गुप्ता

-सहनिर्माता राजकुमार गुप्ता

-कथा वस्तु गीत श्याम पासवान

-संगीत शैलेन्द्र वि.क.

-गायक गायिका जिवछ, राजकुमार , सुनिता, प्रभा

-नृत्य राम ठाकुर , अजय ठाकुर

-द्वन्द कैलाश मंडल

मेमोरी मिथिला फिल्मस प्रा.लि.क बैनरपर बनऽ जा रहल मैथिली फिचर फिल्म आई लभ जनकपूरक शुभ मूहुर्त श्रावण २५ गतेकँ भेल । सभ पत्रकार, कलाकार, साहित्यकार लगाइत मैथिली कलाप्रेमी लोकनि उपस्थित रहथि।

कथा-निर्देशन

निराजन मेहता (मझित)

निर्माता

प्रदिप राज-कमल मण्डल

संगीत :

कमल मण्डल

गीत : विनीत ठाकुर

स्थान : मधेश मिडिया हाउस

समय : दिनक १ बजे, श्रावण २५ गते

हनुमान स्थान, अनामनगर,

काठमाण्डू

मैथिली फिल्म माई के ममता क च्यारिटी शो काठमाडौँ मे,कान्तिपुर हल, सितापाइला, काठमाडौँ।

-माई के ममताक लेखक आ निर्देशक जितेन्द्र सहयोगी ।

चारिटा अंग्रेजी नाटक- डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन एगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल आ स्ट्राइफ

ऐ निबन्धक आधार अछि परशुराम झाक "डाइमेन्शन्स ऑफ पीस इन इंग्लिश ड्रामा- स्टडीज इन डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन अगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल एण्ड स्ट्राइफ"। परशुराम झा १९३८- गाम- मेंहथ (मधुबनी), कृति- डाइमेन्शन्स ऑफ पीस इन इंग्लिश ड्रामा, क्रिश्चियन पोएटिक ड्रामा। परशुराम झा अंग्रेजी साहित्यक आजीवन अध्यापन केने छथि।

डॉक्टर फॉस्टस एलिजाबेथ युगक, *सैमसन एगोनिस्टेस* एज ऑफ रीजनक, *मर्डर इन द कैथेड्रल* आधुनिक युगक नाटक अछि। ई तीनू मुख्यतः धार्मिक नाटक अछि। *स्ट्राइफ* आधुनिक धर्मनिरपेक्ष नाटक अछि, ई सिद्ध करैत अछि जे धर्मनिरपेक्षता धर्मसँ निकलल अछि, कमसँ कम धर्मक नैतिक सन्दर्भसँ।

डॉक्टर फॉस्टस (द ट्रैजिकल हिस्ट्री ऑफ द लाइफ एण्ड डेथ ऑफ डॉक्टर फॉस्टस) क्रिस्टोफर मारलोवे (१५६४-१५९३) लिखित अछि। क्रिस्टोफर मारलोवे सेक्सपियर(१५६४-१६१६) क समकालीन छला। क्रिस्टोफर मारलोवेकेँ कोनो आपत्तिजनक पाण्डुलिपि लेल प्रिवी काउन्सिल द्वारा वारन्ट जारी कऽ बजाओल गेल आ तकर दस दिन बाद हुनकर चक्कू मारि हत्या कऽ देल गेल, जखन ओ मात्र २९ बर्खक छला। ओ जँ अपन सम्पूर्ण जिनगी जिबितथि तँ सेक्सपियरसँ पैघ नाटककार होइतथि वा नै से इतिहासक गर्भमे नुकाएल रहि गेल। ई नाटक *ब्लैंक वर्स* आ गद्य मिश्रित अछि। ब्लैंक वर्समे मीटर रहै छै मुदा लय नै। मारलोवेक

जीवन कालमे एकर मंचन भेल मुदा एकर प्रकाशन हुनकर मृत्युक एगारह बर्खक बाद भेल।

सैमसन अगोनिस्टेस (सैमसन, प्रतियोगी-योद्धा) जॉन मिल्टन (१६०८-१६७४) लिखित दुखान्त क्लोजेट पद्य-नाटक अछि। क्लोजेट नाटक तकरा कहल जाइत छै जे मंचन लेल नै वरन असगर पढ़बा लेल वा किछु गोटे संगे जोर-जोरसँ पढ़ि कऽ सुनबा-सुनेबा लेल लिखल जाइ छै।

मर्डर इन द कैथेड्रल टी.एस. इलियट (१५६४-१५९३) लिखित पद्य-नाटक अछि।

स्ट्राइफ(कटु संघर्ष) जॉन गाल्सवर्दी (१८६७-१९३३) लिखित नाटक अछि।

डॉक्टर फॉस्टस - क्रिस्टोफर मारलोवे

१५९२ ई. मे ''इंग्लिश फाउस्ट बुक''मे किछु घटोत्तरी-बढ़ोत्तरी कऽ ''डॉक्टर फाउस्टस'' नाटक रचित भेल, जे ओइ युगक वास्तविकताकेँ देखबैत अछि।

डॉक्टर फॉस्टस ''मेडिएवल मिस्ट्री प्ले'', मोरेलिटी प्ले'' आ ''इन्टरल्यूड''सँ सम्बन्धित अछि- कथ्य आ रूप दुनूमे। फेर फॉस्टसक ''असीमित ज्ञान'', ''लौकिक आनन्द'' आ ''शक्ति''क लेल अदम्य लालसा ऐ नाटककेँ पुनर्जागरणक आत्माक निकट लऽ जाइत अछि।

फॉस्टसक पहिल प्रवेश ओकरा लेल दूटा विकल्प लऽ अबैत अछि। ओकरा आध्यात्मिक जीवन चुनबाक छै आकि लौकिक। ओकरा नै खतम हुअएबला आनन्द चाही आकि आध्यात्मिक अंधकूप आ मुत्यु। ओकरा अपन इच्छाक पालन करबाक छै आकि भगवानक। ओ ज्ञानी अछि, एरिस्टोटलक तर्क चिन्तन ओ पढ़ने अछि, रोग-व्याधि दूर करैबला चिकित्साशास्त्र ओ जनैत अछि। ओ धर्मशास्त्रमे डॉक्टरेट अछि। मुदा ई सभ ज्ञान ओकरा शान्ति आ आनन्द नै दै छै। मुदा ओ चुनैए जादू आ लौकिक इच्छाक तृप्तिक रस्ता।

ऐ जादूक चयन कऽ ओ ‘‘भरोस’’पर भरोस छोड़ि दैए।

फॉस्टसक लौकिक इच्छा छै वेस्ट इंडीजक आ अमेरिकाक (जे मारलोवेक समएमे इंडिया कहल जाइ छल) सोना, पूर्वक मोती, नीक फल। ओकर इच्छाक लेल जादूगर वाल्डेस आ कॉरनेलियस छै।

नाटकक बादक भागमे मेफिस्टोफिलिसक आगमन होइ छै- फॉस्टस ओकरासँ कहैत अछि जे ओ लूसीफरकेँ सूचित करए जे फॉस्टस अपन आत्माक बदलेन लौकिक भोग लेल करबा लेल तैयार अछि। ‘‘नीक दूत’’क फॉस्टसकेँ सुझाव जे ओ स्वर्ग आ स्वर्गीय वस्तुक विषयमे सोचए, फॉस्टस ‘‘खराप दूत’’क सलाह मानि धनक इच्छा करैए।

अपन आत्माक निलामीक बंधकपत्र अपन खूनसँ लिखैत अछि फॉस्टस। लूसीफरकेँ अपन आत्मा समर्पित कऽ दैत अछि ओ। मेफिस्टोफिलिस ओकरा नर्कक विषयमे कहैत अछि मुदा ओ ओइपर ध्यान नै दऽ ‘‘सुतनाइ’’, ‘‘खेनाइ’’ आ ‘‘चलनाइ’’पर ध्यान दैत

अछि। बहस केनाइ, ज्ञानक संचय, खगोलशास्त्र आ वनस्पतिशास्त्रक ज्ञान आ सौन्दर्यशास्त्र, ई सभ मेफिस्टोफिलिसक सहयोगसँ फॉस्टस प्राप्त करैत अछि।

फॉस्टसक लैंगिक इच्छाक पूर्तिक पहिने मेफिस्टोफिलिस ओकरा बुझबैत अछि मुदा फेर एकटा ‘‘खराप आत्मा’’केँ स्त्री बना फॉस्टसक पत्नीक रूप दैत अछि।

‘‘खराप आत्मा’’ कोनो मृत व्यक्तिक अनुकरण कऽ सकैए मुदा स्वयं जीवित नै भऽ सकैए। से तकर परिणाम ई भेल जे ओकर ठोढ़ फॉस्टसक आत्माकेँ चूसि लै छै। ‘‘खराप आत्मा’’सँ संसर्गक पाप फॉस्टस करैए आ परिणाम छै ओकर आध्यात्मिक मृत्यु।

ओ भगवानसँ दूर भऽ जाइए आ ओ ‘‘खराप आत्मा’’ संगे चौबीस बर्ख बितेबा लेल रस-रंगमे डूमि जाइए।

मुदा जखन ओकर मृत्युक बॉन्डक समए निकट अबै छै, ओ कहैए- ‘‘हम जे जिबितौं एकरा सभक संग तँ स्थिर जीवन जिबितौं मुदा आब मरब तँ सदा लेल मरि जाएब’’।

आ ओकर अन्तिम क्षण- जखन ओकर मृत्यु हेबाक छै, तकर पूर्व- बारह बजेक घड़ीक टिकटिक। ओ दुखी भऽ कहैए- ‘‘ओकर आत्मा अखनो जीबए नर्कमे रहबाक लेल’’ मुदा...

ओ विद्वान् सभकेँ कहैए- ओ साँप जे ईवकेँ प्रलोभित केलक से बचि सकैए मुदा फॉस्टस नै।

ओ पश्चातापो नै कऽ सकैए, ओकरा क्षमा नै कएल जा सकै छै, पवित्र नै कएल जा सकै छै। ओ स्वीकार करैए जे ओ भगवानकेँ अपमानित केने अछि।

सैमसन एगोनिस्टेस- जॉन मिल्टन

नाटकक प्रारम्भमे सैमसनकेँ आन्हर कऽ गाजाक जेलमे श्रम मजदूरी लेल हेबाक आ एक गोटे द्वारा जेलक सोझाँक चमकैत किनारपर लऽ जेबाक दृश्य अछि। ई एकटा छुट्टीक दिन छल, कारण छल फिलिस्तीनक भगवान डेगोनक, जे अदहा मनुक्ख आ अदहा माँछ छथि, भोज छै। बसात लगलासँ सैमसन अपनामे ऊर्जाक संचार पबैए। ओकरामे स्वर्गसँ भेटल शक्ति छै जे फिलिस्तीनक परतंत्रतासँ इस्रायलकेँ मुक्ति दिएबा लेल छै। मुदा तखने ओकरा लगै छै जे भगवान ओकरा जतेक शक्ति देलन्हि ततेक बुद्धि नै देलन्हि, नै तँ ओ ओतेक जल्दी अपन शक्तिक रहस्य डेलिलाकेँ नै बतबितै। मुदा भगवानक बुद्धिपर ओ कोनो बहस कोना कऽ सकैए, जे कि इच्छा छै ओकर।

ओकर पिता मनोआ सैमसनकेँ जेलसँ बाहर निकालबाक एकटा योजना लऽ अबैत अछि। ओकर योजना जे फिलिस्तीनक सामन्तकेँ पाइ दऽ सैमसनकेँ छोड़बाबी, ई सैमसनकेँ नीक नै लगै छै, नै मानै अछि ओ।

मनोआ ओकरा कहै छै जे फिलिस्तीन सभ भोजक क्रममे डेगनक प्रशंसा करत आ इस्रायलक भगवानक अपमान। ई सुनि सैमसन दुखी भऽ जाइए। ओ मनोआकेँ कहैए जे ओकरा कोनो आशंका नै छै जे इस्रायलक भगवान डेगोनपर विजय करत। मनोआक गेलापर

ओ कोरसमे मुदा ई कहैए जे मुदा ओ कोना भगवान लेल काज कऽ सकत?

डेलीला अबैए आ सैमसनकेँ कहैए जे ओ फिलिस्तीनी सामन्तकेँ कहि ओकरा छोड़बाओत मुदा सैमसन ओकरा रहस्यकेँ खोलैवाली कहैए।

हराफा सैमसनकेँ कहैत अछि जे भगवान सैमसनकेँ छोड़ि देने छथि।

अधिकारी अबैत अछि आ ओ फिलिस्तीनक सामन्तक आदेश अनैत अछि जे सैमसनकेँ अपन करतब डेगनक भोजक अवसरपर देखेबाक छै। पहिने ओ मना करैए फेर किछु सोचि कऽ मानि जाइए। मिल्टन फिलिस्तीनीकेँ लौकिक आनन्दमे खसल आ डेगनकेँ ओइ लौकिक आनन्दक देवताक रूपमे देखबै छथि। सैमसन दूटा खाम्हक बीचमे जाइत अछि, प्रार्थना करैत अछि आ भवनकेँ खसा दैए।

दूतक ऐ वर्णनसँ सैमसनक पितामे शान्त प्रतिक्रिया होइत अछि। ओ कहै छथि- दुखी हेबाक समए नै अछि। ओ अपन मुत्युसँ इस्त्रायल लेल सम्मान आ स्वतंत्रता अनने छथि।

मर्डर इन द कैथेड्रल- टी.एस. इलियट

मर्डर इन द कैथेड्रल कैंटरबरीक महिलाक कोरस स्वरसँ प्रारम्भ होइत अछि जइमे प्रकृतिक स्वरूपक हितकारी नै हएब आ सुरेब नै हएब वर्णित अछि।

दूत आर्कबिशपक इंग्लैंड आगमनक सूचना दैए। बेकेट फ्रांसमे सात बर्ख रहलाक बाद कैंटरबरी घुरै छथि। एतऽ हुनका लेल बाहरी आ आन्तरिक दुनू स्तरपर संघर्ष अछि। राज्यक आ धर्मक, राजा आ आर्कबिशपक संघर्ष तँ छैहे, आन्तरिक संघर्ष सेहो छै जे भीतरक इच्छा छै। ओ अपन भूतकालकेँ, जइमे बैरन सभक मित्रता आ चान्सलरशिप अबैत अछि, केँ ''छाह'' कहै छथि, ऐसँ सेहो हुनका संघर्ष करबाक छन्हि।

बेकेटक बाहरी शत्रु चारिटा ''नाइट'' तरुआरि भँजैत अबै छथि। बेकेट तावत अपन आन्तरिक शत्रुपर विजय प्राप्त कऽ लेने छथि आ ओ शान्तिसँ ''नाइट'' सभकेँ कहै छथि- ''अहाँ सभक स्वागत अछि, चाहे अहाँक उद्देश्य जे हुअए''।

ओ कहै छथि जे हुनका कहियो इच्छा नै भेलन्हि जे ओ राजाक पुत्रक मुकुट छीन लेथि।

नाइटक राजाक आदेश सुनेलापर जे ओ देश छोड़ि देथि, बेकेट कहै छथि जे आब नै, सात साल ओ अपन लोकसँ दूर रहला।

ओ अपन हत्या कएल जेबासँ पूर्व नाइट सभसँ कहै छथि- ''हमर अहाँ जे चाही करू मुदा हमर लोक अहाँकेँ छूबो नै करता''।

पुरोहित सभ हुनका इच्छाक विरुद्ध हुनका जबरदस्ती कैथेड्रलक

भीतर लऽ जाइ छथि आ चर्च बन्द कऽ दै छथि। मुदा बेकेट कहै छथि-

“चर्च सर्वदा खुजल रहबाक चाही, शत्रुक लेल सेहो”।

जखने चर्चक दरबज्जा खुजैत अछि मातल “नाइट” सभ बेकेटक हत्याक उद्देश्यसँ पैसि जाइ छथि।

बेकेटक हत्या भऽ जाइ छन्हि, पुरहित सभ भगवानकेँ धन्यवाद दै छथि जे ओ कैंटरबरीमे एकटा आर सन्त देलन्हि।

स्ट्राइफ- जॉन गाल्सवर्दी

ट्रेनार्था टिन प्लेट वर्क्समे एकटा औद्योगिक विवादक कारण अक्टूबरसँ श्रमिकक हड़ताल प्रारम्भ भेल। चारि मासक बाद ७ फरबरीकेँ एकटा विशेष बोर्ड मीटिंग ऐपर भेल, मैनेजर फ्रांसिस अंडरवुडक, जे कम्पनीक चेयरमेन जॉन एन्थोनीक जमाए छथि, डाइनिंग रूममे। ऐ मीटिंगमे डाइरेक्टर फ्रेडरिक एच. वाइल्डर, विलियम स्कैंटलबरी, ओलीवर वैंकलिन आ एंथोनीक छोट पुत्र एडगर छथि।

एडगर श्रमिकक दशासँ आहत छथि। मुदा वाइल्डर उग्र छथि कम्पनीक शेयर नीचाँ गेलासँ आ पचास हजारसँ बेशी घाटासँ ओ चिन्तित छथि। स्कैंटलबरी अहिंसाक पथिक छथि तँ वैंकलिन मध्यमार्गी छथि।

एंथोनी मुदा श्रमिकक लेल कोनो सहानुभूतिक विरुद्ध छथि।

वाइल्डर सुझाव दै छथि जे सेंट्रल यूनियनक हारनेसकेँ विवाद दूर करबा लेल कहल जाए मुदा एंथोनी मना करै छथि।

वर्कमेन कमेटीक आन सदस्यक संग छथि रॉबट्र्स, ओ एंथोनीक विरोध करै छथि। हारनेसक विपरीत ओहो उग्र छथि।

एंथोनीक पुत्री एनिड पिताक वर्गान्तरक विरुद्ध छथि। हुनकर खबासनी एनी रोबट्र्ससँ बियाहल छनि, एनीक सहायता एनिड करऽ चाहै छथि। एनिडक भेँट रॉबट्र्ससँ ओकर झोपड़ीपर होइ छन्हि। ओ ओकरा समझौता लेल कहै छथि मुदा ओ एंथोनीकेँ आततायी कहै छथि। कहै छथि जे एंथोनी मरैत रहत आ रॉबट्र्सक हाथ उठेलासँ जे ओकर जान बचि जेतै तँ रॉबट्र्स अपन कंगुरिया आँगुरो नै उठाएत।

श्रमिक मीटिंगमे रॉबट्र्सक समर्थक इवान्स आ जॉन बलगिनमे झगड़ा भऽ जाइ छै। हेनरी थॉमस आगू अबैए आ कहैए ‘‘लाज होइए तोहर स्ट्राइफपर’’।

बेरू पहरक मीटिंगमे ओ श्रीमती रॉबट्र्सक मुत्युक सूचना दैत अपन सदस्यतासँ इस्तीफा देबाक गप करैत अछि।

मुदा एंथोनी कहैए- युद्ध तँ युद्ध होइ छै।

रॉबट्र्स बोर्ड मीटिंगमे कनी देरीसँ अबैए, ओकरा पता लगै छै जे ओकर श्रमिक सभ ओकरा हटा देलकै। आ एंथोनीकेँ सेहो निदेशक

सभ हटा देलकै।

हारनेसक नेतृत्वमे समझौताक गप आगाँ बढ़ै छै। हेनरी टेक, कंपनीक सचिव संतुष्ट छथि।

मैथिली लेल समीक्षाशास्त्रक सिद्धांत

मैथिली समीक्षाक आवश्यक तत्व-

मैथिली कथा-कविताक समीक्षाक आवश्यक तत्वपर विचार करए पड़त।

नव वातावरणमे अवस्थित नव समस्याकेँ चिन्हित करब, व्यक्तिगत अनुभवकेँ सार्वजनिक जीवनसँ जोड़बाक प्रयासकेँ चिन्हित करब, सूत्रबद्धता अछि वा नै, कारण विवादित वस्तुकेँ घोसिआएब, वादक प्रतीक-चिन्हकेँ ठूसि कऽ साहित्यमे देबाक प्रवृत्तिक आधारपर ब्लैकमेलर साहित्यकेँ चिन्हित करब, अपन प्रशंसा आ दोसराक प्रति आक्षेपक कथा-कवितामे ब्लैकमेलर साहित्यकार द्वारा प्रयोग करबाक गुंजाइश रहैत अछि। मुदा तथ्यपूर्ण मूल्यांकन ऐ प्रवृत्तिकेँ चिन्हित करत।

गपाष्टक आ समीक्षाक अंतरकेँ चिन्हित करब। एकर मुख्य लक्षण ''कियो हुनका कहियो पुछलकन्हि, सुनैत छिऐ जे ओ ई करए चाहैत रहथि ..'' आ ऐ तरहक आर गप सभ। संगे हिनकर रचनाकेँ पाठक नै बूझि पबैए- समीक्षक सेहो नै बूझि पबैए- मुदा हिनकामे असली गप ई छन्हि। ई फलनाक बेटा छथि तेँ नीक आकि अधला लिखै छथि, ई ऐ पदपर छथि तेँ नीक आकि अधला लिखै छथि। ई पाइबला छथि, होटल छन्हि तेँ साहित्यकार नै छथि आ ई पर्चा फेकै छथि, पत्रकार छथि तेँ महान साहित्यकार छथि। ई सहरसा-सुपौलक छथि तेँ नीक आकि अधला आ ई दरभंगाक सोति आकि ब्राह्मण-कायस्थ तेँ नीक आकि अधला लिखै छथि।

एक पाँतिक वक्तव्य- ऐ रचनाक हम विरोध आकि समर्थन करै छी। ई हमरा लेल नीक लोक छथि तेँ नीक लिखै छथि। ई हमर

जातिक छथि वा हमरा भविष्यमे फाएदा पहुँचेता तेँ अद्भुत लिखै छथि। हिनकर हम प्रशंसा करबन्हि तँ ईहो हमर प्रशंसा करता। ऐ सभ प्रवृत्तिकेँ चिन्हित करब।
मूल्यांकनमे ककरो प्रति पूर्वाग्रह वा घृणा राखब। ओकर सम्पूर्ण गप बुझबासँ पूर्वे निर्णय सुनाएब। ऐकेँ चिन्हित करब।

मैथिली साहित्य, जतए मूल धारामे पाठकक संख्या शून्य छै, एक साहित्यकार दोसराक समीक्षा करैत अछि आ एतऽ व्यक्तिगत अहम् आ ब्लैकमेलिंगक पूर्ण गुंजाइश छै। अहाँ दू-चारिटा कवि-कथाकार सम्मेलनमे चलि जाउ, उद्घोषकक उद्घोषणा आ थोपड़ी उद्घोषकक आ साहित्यकारक पूर्वाग्रहकेँ चिन्हित कऽ देत। जेना गौरीनाथ लिखै छथि जे हिन्दीयोमे -प्रेमचन्द, मोहन राकेश आ उत्तराखण्डी- एना कऽ कए संग्रह अबैत अछि जेना उत्तराखण्डी प्रेमचन्द आ मोहन राकेशक कोटिक होथि। तहिना मैथिलीमे कुलानन्द मिश्र-हरेकृष्ण झा आ ई; वा यात्री-राजकमल आ ओ, वा राजकमल-ललित आ ई, मात्र यएह कवि कथाकार छथि एहन सन वक्तव्य अबैत अछि आ ऐ मे ***ई*** आ ***ओ*** क प्रति देखाओल पूर्वाग्रहयुक्त दुटप्पी चिन्हित भऽ जाएत। खूब साहित्य पढ़ू- भारतक आ नेपालक दुनू दिसुका मैथिली साहित्य। आ ऐ क्रममे जे रचना आ जे रचनाकार नीक लागथि आ जे तथाकथित स्थापित रचनाकार वा रचना अधला लागए तकरा चिन्हित करू, विसंगतिकेँ सेहो। आ से बिना भयक, कारण ब्लैकमेलर आ गोल बना कऽ कविता-कथा रचनिहारक दिन खतम करबाक लेल साहस जरूरी अछि। बिना पाठकक ई लोकनि मैथिली साहित्यकेँ सोंगरपर रखने छथि, एकटा छद्म वातावरण बना कऽ। गपाष्टक आ समीक्षाक अंतर चिन्हित करब आवश्यक।

स्वतंत्रता/ आरक्षण- ऐ दूटा पर घमर्थन। स्वतंत्रता सतही छल, मतदान नकली अछि आ आरक्षण भेदभावपर आधारित, ई घमर्थन करैत शोषक वर्ग। स्वतंत्रता मतदानकँ जन्म देलक आ पाँच सालपर ई सामाजिक परिवर्तनक ढेर रास नव समीकरणकँ जन्म दैत अछि- से शोषित वर्ग लेल हितकारी। असमान सामाजिक स्तरकँ समान अधिकार देबाक कोनो मतलब नै। तँ शोषक वर्ग कहत- ओहू आरक्षित वर्गमे ऊँच नीचक जन्म भऽ रहल अछि। मुदा से जातिक आधारपर तँ नै भऽ रहल अछि आ पहिनेक तुलनामे कम भऽ रहल अछि। जे शूद्र ऋषि कवि ऐलूष वैदिक ऋचाक द्रष्टा छथि, जे महिला अपाला वैदिक ऋचाक द्रष्टा छथि, से करोटमे किए ठाढ़ रहथि? पुरातन व्यवस्थाक जातिक भीतरक स्तरीकरण, कर्ण-कायस्थ आ मैथिल ब्राह्मणक भीतर पञ्जी-प्रथा द्वारा कएल गेल स्तरीकरण, पाइ-पैरवी लऽ दऽ कऽ होइत स्तरीकरणक स्थितिमे नीचाँ ऊपर केनाइ। समाजक बाल-विवाह पक्ष आ विधवा-विवाह विपक्ष आधारित आ पञ्जी आधारित बतहपनीक प्रतीक रूपमे रहैत आइ काल्हिक व्यवस्था सभ।

आत्मकेन्द्रित, भाषा-संस्कृति छोड़ैत समाज- कारण ऐ सभसँ प्रेम मात्र प्रतीक रूपमे ओ बाल्यकालसँ देखने अछि। पढ़ाइक रूप अखनो असमानतापर आधारित अछिये मुदा पुरनका तुलनामे अकाश पतालक अंतर अछि। कियो पढ़ि-लिखि कऽ अपन समाजमे उच्चसँ उच्चतम स्तर प्राप्त कऽ सकैत अछि आ तखन ने ओकरा पाँजि चाही आ ने किछु आर। फेर ओ ग्राम पंचायतसँ लऽ कऽ संसद धरि पहुँचैत अछि। ठिकेदारी करबासँ लऽ कऽ बस-टेम्पू धरि

चला-चलबा सकैत अछि। हम ऐ द्वारे नै पढ़ि सकलौं, कलक्टर नै बनि सकलौं, कहलापर आब लोक कहैत अछि जे तखन फलनांक बेटा कोना से बनि गेल। शोषक द्वारा शोषितपर कएल उपकार वा अपराधबोधक अन्तर्गत मरड़पर लिखल जाएबला कथा-कवितामे जे पैघत्वक (जे हीन भावनाक एकटा रूप अछि) भावना होइ छै, तकरा चिन्हित कएल जाए।

व्यक्तिक प्रतिष्ठा स्थान-जाति आधारित। किछु प्रतिष्ठा आ विशेषाधिकार प्राप्त जाति। किछुकेँ तिरस्कार आ हुनकर जीवन कठिन। अनुसूचित जाति (११००, पहिल सरकारी सूची) +पिछड़ल जाति ३७४३ (मंडल आयोग)= ४८४३, वर्ण-व्यवस्था धार्मिक नै सामाजिक प्रथा जकर आब कोनो उपयोग नै। विघटनकारी तत्वक रूपमे विदेशी मानसिकता आ जड़ मानसिकता द्वारा उपयोग संभव।

भावनात्मक वातावरण- सत्यक आ कलाक कार्यक सौंदर्यीकृत अवलोकन, सुन्दर-मूर्त, अमूर्त। प्रकृति कलाविशिष्ट प्रभावशाली स्थिति, शोकजनक, हास्य, मानवक सौंदर्यक अनुभव ओकर अनुभव बिना सम्भव नै। ऐसँ समाजक सौंदर्यीकरणक प्रति दृष्टिकोण सोझाँ अबैत अछि।

मानसिक क्रिया- मनुष्य़ सोचैबला प्राणी, मानसिक आ भौतिक दुनूक अनुभूति करएबला प्राणी। शरीर आ मस्तिष्क, दिनुका काज आ रातुक स्वप्न।

विरोधाभास वा छद्म आभास- अस्पष्टता। सैद्धांतिक लाभ।

काण्टक दर्शन- मछहरमे दू इंचक अवकाश बला जाल फेकब तँ दू इंचसँ कमबला माँछ नै भेटत, तखन ई निर्णय जे ऐ पोखरिमे दू इंचसँ छोट माँछ नै! समीक्षकक जाल जतेक महीन हुअए ततेक नीक।

बाल-किशोर साहित्य- जे बच्चा किशोर पढ़त तँ बादोमे भाषाक प्रति घुरत- नोकरी-चाकरी स्थिर भेलाक बाद। कारण स्कूल-कओलेजमे जकर विषए मैथिली नै अछि वा मैथिली बाल साहित्य नै पढ़ने अछि से किए मैथिलीसँ प्रेम करत- अहाँ ओकरा लेल नै तकबै तँ ओहो नै ताकत।

सगर राति दीप जरय आ मैथिली समीक्षा- युद्धक कारण- सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक आ तात्कालिक। मात्र तात्कालिक रटि लिअ आ सभमे सभटा खरापे-खराप लिखि दियौ- आर्थिक स्थिति खराप- सामाजिक स्थिति खराप आदि। मुदा जँ फ्रांसीसी क्रान्तिमे से लिखि देबै तँ ओइ समए ओतुक्का किसानक आर्थिक दशा इंग्लैंडसँ नीक रहै आ सएह फ्रांसकेँ क्रान्ति लेल सक्षम बनेलकै, प्रतिकार लेल सक्षम बनेलकै। तहिना सगर राति दीप जरयमे समीक्षा होइए- शिल्प नीक/ खराप, कथ्य नीक/ खराप...।

दलित साहित्य- महेन्द्र नारायण राम, बिलट पासवान विहंगम आदि केँ छोड़ि दियन्हि तँ मैथिलीक मूल धारामे दलित लेखक आ दलित साहित्य शून्य अछि।

खेसारी / माघ / आम आ शरद ऋतु / धूमकेतु मोड़पर / यात्रीक

उपन्यासमे आषाढ़क आ दोसर मासक तिथि दुइये पृष्ठक अन्तरपर / मोहन भारद्वाज । कुमार पवन

धूमकेतु मोड़ पर पृष्ठ १- एक पाँतीसँ ठाढ़ आ कतौ अरड़ा कऽ ओलड़ि गेल धानक सीस- कोसक कोस पसरल हरियर कचोर खेसारीक गद्दा (माने अंतिम स्थिति)- मुदा खेसारी तँ अगहनक बाद (धानक बाद- गद्दरि तँ आर पहिने होइए) होइत अछि।

यात्री समग्र-पृ.२२० जेठ सुदी चतुर्दशी कऽ रहनि पीसाक वर्षी। पहिले वर्षी..पृ.. २२२- ..कहाँ जे एको दिनक खातिर जाइ, कर्ता बना, अषाढ़ बढ़ि तृतियाक तिथिपर पहिल।

बलचनमाक समीक्षामे मोहन भारद्वाज लिखै छथि- क्यो यात्रीजीकेँ पुछलकन्हि जे बलचनमाक दोसर भाग लिखबा लेल..यात्री कहलखिन्ह जे बलचनमाकेँ तँ आब धोधि भऽ गेल हेतै। यात्रीकेँ के पुछलकन्हि (काल्पनिक प्रश्नोत्तरी)- फेर जे बलचनमा पढ़ने छथि तिनका बुझल छन्हि जे बलचनमाकेँ मारि कऽ पाड़ि देल गेलै से मृत बलचनमाकेँ धोधि हेतै से यात्रीजी ओइ काल्पनिक प्रश्नकर्ताकेँ किए कहथिन्ह।

कुमार पवनक पइठ सर्वश्रेष्ठ मैथिली दीर्घ कथा मुदा अहूमे अन्त दुनू भाइक लड़ाइ आदि..एकर बदला दोसर लक्ष्य हेबाक चाही-जेना शोषण।

साहित्यक विभिन्न विधा जेना पद्य, प्रबन्ध, निबन्ध, समालोचना, कथा-गल्प, उपन्यास, पत्रात्मक साहित्य, यात्रा-संस्मरण, रिपोर्ताज,

नाटक आ एकांकी मनोरंजनक लेल सुनल-सुनाओल-पढ़ल जाइत अछि वा मंचित कएल जाइत अछि। ई उद्देश्यपूर्ण भऽ सकैत अछि वा ऐमे निरुद्देश्यता-एबसर्डिटी सेहो रहि सकै छै- कारण जिनगीक उत्थल-धक्कामे निरुद्देश्यपूर्ण साहित्य सेहो मनोरंजन प्रदान करैत अछि।

प्राचीन कालमे कला, साहित्य आ संगीत एक खाढ़ीसँ दोसर खाढ़ी मध्य हस्तांतरित होइ छल। पदपाठ, क्रमपाठ, जटा पाठ, शिखापाठ, घनपाठ आदि स्मृतिक वैज्ञानिक पद्धति छल। घर, वेदी आ आन कलाकृतिक बनेबाक विधिक यजुर्वेदमे वर्णन छल जे भाष्य सभमे आर विस्तृत भेल आ पुरातत्वक प्राचीनतम आधार सिद्ध भेल। संगीतक पद्धति सामवेदकँ विशिष्ट बनेलक। ऐ तरहेँ साहित्य, कला आ संगीतकँ बान्हबाक प्रयत्न भेल, जइसँ ई विधा दोसरो गोटे द्वारा ओही तरहेँ अनुकृत भऽ सकए। आ ऐ क्रममे कला, साहित्य आ संगीतक समीक्षा वा ओकर गुणक विश्लेषण प्रारम्भ भेल। कला, साहित्य आ संगीतक समाज लेल कोन प्रयोजन, एकर नैतिक मानदण्ड की हुअए, ऐ दिस सेहो प्राच्य आ पाश्चात्य विचारक अपन विचार राखलन्हि। प्लेटो कहै छथि जे कोनो कला नीक नै भऽ सकैए किए तँ ई सभटा असत्य आ अवास्तविक अछि।

मुदा कला, संगीत आ साहित्य कखनो काल **स्वान्तः सुखाय सेहो** होइत अछि, एकरा पढ़ला, सुनला, देखला आ अनुभव केलासँ प्रसन्नता होइ छै, मानसिक शान्ति भेटै छै तँ कखनो काल ई उद्वेलित सेहो करै छै। एरिस्टोटल मुदा कहै छथि जे कलाकार ज्ञानसँ युक्त होइ छथि आ विश्वकँ बुझबामे सहयोग करै छथि।

शब्दोचारण आ कला निर्माणक बाद बोध्य बौस्तुक उत्पत्ति होइ छै। शब्द आ ध्वनि, रूप, रस, राग, छन्द, आ अलंकारसँ ओकर औचित्य सिद्ध होइ छै।

जगतक सौन्दर्यीकृत प्रस्तुति अछि कला। सौंदर्यक कला उपयोगिताक संग। कलापूर्णता कलाक जीवन दर्शन- संप्रदाय संग। भावनात्मक वातावरण- सत्यक आ कलाक कार्यक सौंदर्यीकृत अवलोकन, सुन्दर-मूर्त, अमूर्त।

मानसिक क्रिया- मनुष्य़ सोचैबला प्राणी, मानसिक आ भौतिक दुनूक अनुभूति करऽबला प्राणी। विरोधाभास वा छद्म आभास- अस्पष्टता। ***मार्क्सवाद उपन्यासक सामाजिक यथार्थक ओकालति करैत अछि।***

फ्रायड सभ मनुक्खकेँ रहस्यमयी मानै छथि। ओ साहित्यिक कृतिकेँ साहित्यकारक विश्लेषण लेल चुनै छथि तँ **नव फ्रायडवाद** ***जैविकक बदला सांस्कृतिक तत्वक प्रधानतापर जोर दैत देखबामे अबै छथि।***

नव-समीक्षावाद ***कृतिक विस्तृत विवरणपर आधारित अछि।***

उत्तर आधुनिक, अस्तित्ववादी, मानवतावादी, ई सभ विचारधारा दर्शनशास्त्रक विचारधारा थिक। पहिने दर्शनमे विज्ञान, इतिहास, समाज-राजनीति, अर्थशास्त्र, कला-विज्ञान आ भाषा सम्मिलित रहै छल। मुदा जेना-जेना विज्ञान आ कलाक शाखा सभ विशिष्टता प्राप्त करैत गेल, विशेष कऽ विज्ञान, तँ दर्शनमे गणित आ विज्ञान मैथेमेटिकल लॉजिक धरि सीमित रहि गेल। दार्शनिक आगमन आ निगमनक अध्ययन प्रणाली, विश्लेषणात्मक प्रणाली दिस बढ़ल।

मार्क्स जे दुनिया भरिक गरीबक लेल एकटा दैवीय हस्तक्षेपक समान छला, द्वन्द्वात्मक प्रणालीकेँ अपन व्याख्याक आधार बनेलन्हि। आइ-काल्हिक ''डिसकसन'' वा द्वन्द्व जइमे पक्ष-विपक्ष, दुनू सम्मिलित अछि, दर्शनक (विशेष कऽ षडदर्शनक- माधवाचार्यक सर्वदर्शन संग्रह-द्रष्टव्य) खण्डन-मण्डन प्रणालीमे पहिनेसँ विद्यमान छल।

से इतिहासक अन्तक घोषणा केनिहार फ्रांसिस फुकियामा- जे कम्युनिस्ट शासनक समाप्तिपर ई घोषणा केने छला- किछु दिन पहिने ऐसँ पलटि गेला। उत्तर-आधुनिकतावाद सेहो अपन प्रारम्भिक उत्साहक बाद ठमकि गेल अछि।

अस्तित्ववाद, मानवतावाद, प्रगतिवाद, रोमेन्टिसिज्म, समाजशास्त्रीय विश्लेषण ई सभ **संश्लेषणात्मक समीक्षा** प्रणालीमे सम्मिलित भऽ अपन अस्तित्व बचेने अछि।

साइको-एनेलिसिस वैज्ञानिकतापर आधारित रहबाक कारण द्वन्द्वात्मक प्रणाली जकाँ अपन अस्तित्व बचेने रहत।

कोनो कथाक आधार **मनोविज्ञान** सेहो होइत अछि। कथाक उद्देश्य समाजक आवश्यकताक अनुसार आ कथा यात्रामे परिवर्तन समाजमे भेल आ होइत परिवर्तनक अनुरूपे हेबाक चाही। मुदा संगमे ओइ समाजक संस्कृतिसँ ई कथा स्वयमेव नियन्त्रित होइत अछि। आ ऐमे ओइ समाजक ऐतिहासिक अस्तित्व सोझाँ अबैत अछि। जे हम वैदिक आख्यानक गप करी तँ ओ राष्ट्रक संग प्रेमकेँ सोझाँ अनैत अछि। आ समाजक संग मिलि कऽ रहनाइ सिखबैत अछि। जातक कथा लोक-भाषाक प्रसारक संग बौद्ध-धर्म प्रसारक इच्छा सेहो रखैत अछि। मुस्लिम जगतक कथा जेना रूमीक ''मसनवी'' फारसी

साहित्यक विशिष्ट ग्रन्थ अछि जे ज्ञानक महत्व आ राज्यक उन्नतिक शिक्षा दैत अछि। आजुक कथा ऐ सभ वस्तुकेँ समेटैत अछि आ एकटा प्रबुद्ध आ मानवीय समाजक निर्माण दिस आगाँ बढ़ैत अछि।

कम्यूनिज्मक समाप्तिक बाद लागल जे इतिहास, जे दूटा विचारधाराक संघर्ष अछि, एकटा विचारधाराक खतम भेलाक बाद समाप्त भऽ गेल। **फ्रांसिस फुकियामा** घोषित केलन्हि जे विचारधाराक आपसी झगड़ासँ सृजित इतिहासक ई समाप्ति अछि आ आब मानवक हितक विचारधारा मात्र आगाँ बढ़त। मुदा किछु दिन पहिने ओ कहलन्हि जे समाजक भीतर आ राष्ट्रीयता मध्य एखनो बहुत रास भिन्न विचारधारा बाँचल अछि।

उत्तर आधुनिकतावादी दृष्टिकोण-विज्ञानक ज्ञानक सम्पूर्णतापर टीका, सत्य-असत्य, सभक अपन-अपन दृष्टिकोणसँ तकर वर्णन, आत्म-केन्द्रित हास्यपूर्ण आ नीक-खराबक भावनाक रहि-रहि खतम हएब, सत्य कखन असत्य भऽ जाएत तकर कोनो ठेकान नै, सतही चिन्तन, आशावादिता तँ नहिये अछि मुदा निराशावादिता सेहो नै, जे अछि तँ से अछि बतहपनी, कोनो चीज एक तरहेँ नै कएक तरहेँ सोचल जा सकैत अछि- ई दृष्टिकोण, कारण, नियन्त्रण आ योजनाक उत्तर परिणामपर विश्वास नै, वरन संयोगक उत्तर परिणामपर बेशी विश्वास, गणतांत्रिक आ नारीवादी दृष्टिकोण आ लाल झंडा आदिक विचारधाराक संगे प्रतीकक रूपमे हास-परिहास, भूमंडलीकरणक कारणसँ मुख्यधारसँ अलग भेल कतेक समुदायक आ नारीक प्रश्नकेँ (विरोधे स्वरमे सही) उत्तर आधुनिकता सोझाँ

अनलक। विचारधारा आ सार्वभौमिक लक्ष्यक विरोध केलक मुदा कोनो उत्तर नै दऽ सकल।

तहिना उत्तर आधुनिकतावादी विचारक **जैक्स देरीदा** भाषाकेँ विखण्डित कऽ ई सिद्ध केलन्हि जे विखण्डित भाग ढेर रास विभिन्न आधारपर आश्रित अछि आ बिना ओकरा बुझने भाषाक अर्थ हम नै लगा सकै छी।

आ संवादक पुनर्स्थापना लेल कथाकारमे विश्वास हेबाक चाही- तर्क-परक विश्वास आ अनुभवपरक विश्वास ।

प्रत्यक्षवादक विश्लेषणात्मक दर्शन वस्तुक नै, भाषिक कथन आ अवधारणाक विश्लेषण करैत अछि ।

विश्लेषणात्मक अथवा तार्किक प्रत्यक्षवाद आ अस्तित्ववादक जन्म विज्ञानक प्रति प्रतिक्रिया रूपमे भेल। ऐसँ विज्ञानक द्विअर्थी विचारकेँ स्पष्ट कएल गेल।

प्रघटनाशास्त्रमे चेतनाक प्रदत्तक प्रदत्त रूपमे अध्ययन होइत अछि। अनुभूति विशिष्ट मानसिक क्रियाक तथ्यक निरीक्षण अछि। वस्तुकेँ निरपेक्ष आ विशुद्ध रूपमे देखबाक ई माध्यम अछि।

अस्तित्ववादमे मनुष्य-अहि मात्र मनुष्य अछि। ओ जे किछु निर्माण करैत अछि ओइसँ पृथक ओ किछु नै अछि, स्वतंत्र हेबा लेल अभिशप्त अछि (सार्त्र)।

हेगेलक डायलेक्टिक्स द्वारा विश्लेषण आ संश्लेषणक अंतहीन

अंतस्संबंध द्वारा प्रक्रियाक गुण निर्णय आ अस्तित्व निर्णय करबापर जोर देलन्हि। मूलतत्व जतेक गहींर हएत ओतेक स्वरूपसँ दूर रहत आ वास्तविकतासँ लग।

क्वान्टम सिद्धान्त आ अनसरटेन्टी प्रिन्सिपल सेहो आधुनिक चिन्तनकँ प्रभावित केने अछि। देखाइ पड़एबला वास्तविकतासँ दूर भीतरक आ बाहरक प्रक्रिया सभ शक्ति-ऊर्जाक छोट तत्वक आदान-प्रदानसँ सम्भव होइत अछि। अनिश्चितताक सिद्धान्त द्वारा स्थिति आ स्वरूप, अन्दाजसँ निश्चित करऽ पड़ैत अछि।

तीनसँ बेशी डाइमेन्सनक विश्वक परिकल्पना आ स्टीफन हॉकिन्सक ‘‘अ ब्रिफ हिस्ट्री ऑफ टाइम’’ सोझे-सोझी भगवानक अस्तित्वकँ खतम कऽ रहल अछि कारण ऐसँ भगवानक मृत्युक अवधारणा सेहो सोझाँ आएल अछि, जे शुरू भेल अछि से खतम हएत भलहि ओकर आयु बेशी हुअए।

जेना **वर्चुअल रिअलिटी** वास्तविकताकँ कृत्रिम रूपेँ सोझाँ आनि चेतनाकँ ओकरा संग एकाकार करैत अछि तहिना बिना तीनसँ बेशी बीमक परिकल्पनाक हम प्रकाशक गतिसँ जँ सिन्धुघाटी सभ्यतासँ चली तँ तइयो ब्रह्माण्डक पार आइ धरि नै पहुँचि सकब।

साहित्यक समक्ष ई सभ वैज्ञानिक आ दार्शनिक तथ्य चुनौतीक रूपमे आएल अछि। होलिस्टिक आकि सम्पूर्णताक समन्वय करऽ पड़त! ई दर्शन दार्शनिक सँ वास्तविक तखने बनत।

पोस्टस्ट्रक्चरल मेथोडोलोजी भाषाक अर्थ, शब्द, तकर अर्थ,

व्याकरणक निअम सँ नै वरन् अर्थ निर्माण प्रक्रियासँ लगबैत अछि। सभ तरहक व्यक्ति, समूह लेल ई विभिन्न अर्थ धारण करैत अछि। भाषा आ विश्वमे कोनो अन्तिम सम्बन्ध नै होइत अछि। शब्द आ ओकर पाठ केर अन्तिम अर्थ वा अपन विशिष्ट अर्थ नै होइत अछि। आधुनिक आ उत्तर आधुनिक तर्क, वास्तविकता, सम्वाद आ विचारक आदान-प्रदानसँ आधुनिकताक जन्म भेल ।

मुदा फेर **नव-वामपंथी आन्दोलन** फ्रांसमे आएल आ सर्वनाशवाद आ अराजकतावाद आन्दोलन सन विचारधारा सेहो आएल। ई सभ आधुनिक विचार-प्रक्रिया प्रणाली ओकर आस्था-अवधारणासँ बहार भेल अविश्वासपर आधारित छल। पाठमे नुकाएल अर्थक स्थान-काल संदर्भक परिप्रेक्ष्यमे व्याख्या शुरू भेल आ भाषाकेँ खेलक माध्यम बनाएल गेल- लंगुएज गेम। आ ऐ सभ सत्ता, वैधता आ ओकर स्तरीकरणक आलोचनाक रूपमे आएल पोस्टमॉडर्निज्म।

कंप्युटर आ सूचना क्रान्ति जइमे कोनो तंत्रांशक निर्माता ओकर निर्माण कऽ ओकरा विश्वव्यापी अन्तर्जालपर राखि दै छथि आ ओ तंत्रांश अपन निर्मातासँ स्वतंत्र अपन काज करैत रहैत अछि, किछु ओहनो कार्य जे एकर निर्माता ओकरा लेल निर्मित नै केने छथि। आ किछु हस्तक्षेप-तंत्रांश जेना वायरस, एकरा मार्गसँ हटबैत अछि, विध्वंसक बनबैत अछि तँ ऐ वायरसक एंटी वायरस सेहो एकटा तंत्रांश अछि, जे ओकरा ठीक करैत अछि आ जे ओकरो सँ ठीक नै होइत अछि तखन कम्प्युटरक बैकप लऽ ओकरा फॉर्मेट कऽ देल जाइत अछि- क्लीन स्लेट !

पूँजीवादक जनम भेल औद्योगिक क्रान्तिसँ आ आब **पोस्ट**

इन्डस्ट्रियल समाजमे उत्पादनक बदला सूचना आ संचारक महत्व बढ़ि गेल अछि, संगणकक भूमिका समाजमे बढ़ि गेल अछि। मोबाइल, क्रेडिट-कार्ड आ सभ एहन वस्तु चिप्स आधारित अछि। *डी कन्सट्रक्शन* आ *री कन्सट्रक्शन* क विचार रचना प्रक्रियाक पुनर्गठन कैँ देखबैत अछि जे उत्तर औद्योगिक कालमे चेतनाक निर्माण नव रूपमे भऽ रहल अछि।

इतिहास तँ नै मुदा परम्परागत इतिहासक अन्त भऽ गेल अछि। राज्य, वर्ग, राष्ट्र, दल, समाज, परिवार, नैतिकता, विवाह सभ फेरसँ परिभाषित कएल जा रहल अछि। मारते रास परिवर्तनक परिणामसँ विखंडित भऽ सन्दर्भहीन भऽ गेल अछि कतेक संस्था।

नीक साहित्य/कला त्वरित उपस्थापनक आधारपर नै वरन ओइमे तीक्ष्णतासँ उपस्थापित मानव-मूल्य, सामाजिक समरसताक तत्व आ समानता-न्याय आधारित सामाजिक मान्यताक सिद्धान्त आधार बनत। समाज ओइ आधारपर कोना आगू बढ़ए से संदेश तीक्ष्णतासँ आबैए वा नै से देखऽ पड़त। पाठकक मनसि बन्धनसँ मुक्त होइत अछि वा नै, ओइमे दोसराक नेतृत्व करबाक क्षमता आ आत्मबल अबै छै वा नै, ओकर चारित्रिक निर्माणक आ श्रमक प्रति सम्मानक प्रति सन्देह दूर होइ छै वा नै- ई सभटा तथ्य साहित्यक मानदंड बनत। कात-करोटमे रहनिहार तेहन काज कऽ जाथि जे सुविधासम्पन्न बुते नै सम्भव अछि, आ से कात-करोटमे रहनिहारक आत्मबल बढ़लेसँ हएत।

हीन भावनासँ ग्रस्त साहित्य कल्याणकारी कोना भऽ सकत? बदलैत

सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक-धार्मिक समीकरणक परिप्रेक्ष्यमे एकभग्गू प्रस्तुतिक रेखांकन, कथाकार-कविक व्यक्तिगत जिनगीक अदृढ़ता, चाहे ओ वादक प्रति हुअए वा जाति-धर्मक प्रति, साहित्यमे देखार भइए जाइ छै। आ एहने साहित्य बेर-बेर अपनाकेँ परिमार्जित-परिवर्धित करितो मूल दोषसँ दूर नै भऽ पबैत अछि, अपन व्यक्तिगत प्रशंसा आ दोसराक प्रति आक्षेपक कथा-कवितामे ब्लैकमेलर साहित्यकार द्वारा प्रयोग करबाक गुंजाइश रहैत अछि। जातिवाद-सांप्रदायिकतावाद आबिये जाइ छै। शोषक द्वारा शोषितपर कएल उपकार वा अपराधबोधक अन्तर्गत लिखल जाएबला कथामे जे पैघत्वक (जे हीन भावनाक एकटा रूप अछि) भावना होइ छै, तकरा चिन्हित कएल जाए।

मेडियोक्रिटी चिन्हित करू- तकिया कलाम आ **चालू ब्रेकिंग न्यूज**- आधुनिकताक नामपर। युगक प्रमेयकेँ माटि देबाक विचार ऐमे नै भेटत, आधुनिकीकरण, लोकतंत्रीकरण, राष्ट्र-राज्य संकल्पक कार्यान्वयन, प्रशासनिक-वैधानिक विकास, जन सहभागितामे वृद्धि, स्थायित्व आ क्रमबद्ध परिवर्तनक क्षमता, सत्ताक गतिशीलता, औद्योगीकरण, स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद नवीन राज्य राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक समस्या-परिवर्तन आ एकीकरणक प्रक्रिया, कखनो काल परस्पर विरोधी। सामुदायिकताक विकास, मनोवैज्ञानिक आ शैक्षिक प्रक्रिया।

से ऐ अन्तर्राष्ट्रिय परिदृश्यक, बुश-सद्दामक आलोचनामे धार ओइ कारणसँ नै आबि पबैत अछि। कोनो मन्दिर-मस्जिदकेँ जे ओ समर्थन-विरोध करैत छथि वा कोनो नन्दीग्राम-लालगढ़क सेहो तँ ओइमे सेहो तइ तरहक धार नै अबैत अछि। दारू पीबि मँतल मानववाद, धर्मनिरपेक्षतावाद, वामपंथ आ दक्षिणपंथपर हुनकर विचार लागत औँघाएल। युगक सभ शब्दावली भरता आ कविता-कथा

तैयार। अमेरिकाक आलोचनामे धार कोना आएत आ वामपंथक पक्षमे सेहो- जखन अपन दिनचर्यामे दक्षिणपंथ शामिल अछि। संघर्षक अभाव सृजनात्मकताक स्तरकेँ समए बढ़लासँ बढ़ेबाक बदला घटबैत अछि। युगक अनुरूप सभ चलैए, ओकर विपरीत चलब तखन ने सृजनात्मकताक संग चाही। दोसराकेँ पलायनवादी कहनिहार ऐ तरहक सुविधावादी तत्वकेँ चिन्हित करू, गहींर पैसब जिनका लेल संभव नै।

इतिहाससँ जुड़ाव ऐतिहासिक मनोभावनासँ जोड़ि सकत। वर्तमान सामाजिक व्यवस्थाकेँ माटि देबामे धारक अभाव- हीनभावनाग्रस्त आ अपराध भावसँ भरल लेखकसँ संभव नै।

न्याय वैशेषिक आ सांख्य-योगक वस्तुवाद, बाह्यक यथार्थ आ मायाक विरोध, गृहस्थ जीवन, लोक हित। कला आ साहित्यक कृति, आत्माक भीतरक ज्ञान प्रज्ञापर आधारित होइत अछि जे अखण्ड अछि- गति, स्वतंत्रता, सर्जनात्मक परिवर्तन। इतिहास वा साहित्यक इतिहास हम बदलि नै सकै छी आ एतऽ उच्च आ मध्यवर्गक स्मृति आधारित **मिथिलाक स्वर्णयुग** ! मुदा तकर महत्व दूरदर्शन आ चलचित्र टामे भऽ सकैत अछि। उदारवाद। औद्योगिकरण आ तकर आर्थिक विकासक सफलता-असफलता। सामाजिक रूपमे समाजक पिछड़ल वर्गक विरोधकेँ आरक्षण आ स्वतंत्रता पसारि देलक मुदा संगे एकर तीव्रता कम केलक से चाहे ओ नक्सलवाद हुअए वा माओवाद वा मार्क्सवाद-लेनिनवाद। बुर्जुआ वर्ग लेल ई फाएदा रहल। बुर्जुआ वर्गक राजनैतिक आ सांस्कृतिक संगठन पसरए आ सर्वहारा वर्ग धरि पहुँचए, से प्रयास आ महिला लोकनिकेँ ऐमे सम्मिलित करबाक प्रयास। पाइ आ सुविधा अपना संग परम्परागत नैतिकताकेँ तोड़लक।

कम्पनी अपन स्वतंत्र अस्तित्व बनेलक आ परिवार आ व्यक्ति ऐ तरहक कम्पनीकेँ नौकरीपेशा लोकक संग चलबऽ लागल।

प्रकृतिपर नियन्त्रण आ मानवीय व्यवहारक अवलोकन। काजक लेल अन्न आ काजक बदला पाइ, रोजगार गारन्टी कार्यक्रम, जनवितरण प्रणालीक दोकान। रोजगार लेल देश-विदेश छोट हएब, परिवारक आधारपर आघात।

पूँजीवादी विश्व अर्थव्यवस्था, परिवर्तन आपरूपी नै वरन् संघर्ष आ प्रयाससँ भेटत। स्वतंत्र मानवीय संवेदना जे नीक भविष्यक गारंटी नै दैत अछि तँ ई अधलाक सेहो गारंटी नै दैत अछि। हमरा सभ लग विकल्प अछि आ मैथिली साहित्यक पुनर्जीवनक जे किछु प्रमाण भेटि रहल अछि से कम नै अछि। विकल्प हमरा सभकेँ तकबाक अछि जे सनसनी पसारी आकि कार्य करी।

आदिवासी- सतार, गिदरमारा आदि विविधता आ विकासक स्तरकेँ प्रतिबिम्बित करैत अछि। प्रकृतिसँ लग, प्रकृति-पूजा, सरलता, निश्छलता, कृतज्ञता। व्यक्तिक प्रतिष्ठा स्थान-जाति आधारित। दिनकर, सामाजिक-धार्मिक उत्सव, सूर्य-चन्द्र-वृक्ष-पर्वत पूजा, पृथ्वी स्तुति आ जलाशय आ नक्षत्रक प्रति आस्था, जनक माने जन (विश)सँ निकलल, मिथिलावासीमे सेहो ई आस्था।

किछु प्रतिष्ठा आ विशेषाधिकार प्राप्त जाति। किछुकेँ तिरस्कार आ हुनकर जीवन कठिन।

महिला आ बाल-विकास- महिलाकेँ अधिकार, शिक्षा-प्रणालीकेँ सक्रिय करब, पाठ्यक्रममे महिला अध्ययन, महिलाक व्यावसायिक आ तकनीकी शिक्षामे प्रतिशत बढ़ाओल जाए।स्त्री-स्वातंत्र्यवाद, महिला

आन्दोलन।

धर्मनिरपेक्ष- राजनैतिक संस्था संपूर्ण समुदायक आर्थिक आ सामाजिक हितपर आधारित- धर्म-नस्ल-पंथ भेद रहित। विकास आर्थिकसँ पहिने शैक्षिक हुअए तखने जनसामान्य ओइ विकासमे साझी भऽ सकैए। ऐसँ सर्जन क्षमता बढ़ैत अछि आ लोकमे उत्तरदायित्वक बोध होइत अछि। सामुदायिक आ राष्ट्रीय जीवन। गतिशील प्रबन्धन, विकास-प्रक्रियामे स्थान। स्वतंत्रता आन्दोलन आ पर्यावरण आन्दोलन, दहेज-विरोधी आन्दोलनमे सहभागिता, आर्थिक समानता लेल संघर्ष, महिला श्रमिकक बच्चा लेल बालाश्रय-गृह, बालवाड़ी, आंगनवाड़ी। प्रतिद्वंदिताक कारण कम वेतन, काज करबाक दशा प्रतिकूल, सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिसँ महत्वहीन स्थान।

धर्म-आस्था वा सामाजिक मूलक आधारपर व्यक्ति वा समूहक बीच विभाजन अस्वीकार। सभ समुदाय शक्तिक उपयोग उत्तरदायित्व आ कर्तव्यक निर्वहन जकाँ, माने वितरणात्मक न्याय। धर्म-आस्थाक आधारपर कोनो भेद नै आ राज्य धर्म द्वारा नियंत्रित नै हएत। टैगोरक कलात्मकतावाद, गाँधीक नैतिकतावाद, अरविन्द घोषक रहस्यवादी आध्यात्म दर्शन, विवेकानन्दक व्यावहारिक वेदान्तवाद।

विज्ञान आ प्रौद्योगिकी विकसित आ अविकसित राष्ट्रक बीचक अंतरक कारण मानवीय समस्या, बीमारी, अज्ञानता, असुरक्षाक समाधान- आकांक्षा, आशा सुविधाक असीमित विस्तार आ आधार। ऐसँ वैयक्तिक आ राष्ट्रीय शक्तिक अभिवृद्धि होइत अछि। विधि-व्यवस्थाक निर्धन आ पिछड़ल वर्गकेँ न्याय दिअएबामे प्रयोग हेबाक चाही। न्याय पंचायतकेँ पुनःजीवन।

नागरिक स्वतंत्रता- मानवक लोकतांत्रिक अधिकार, मानवक स्वतंत्र चिन्तन क्षमतापूर्ण समाजक सृष्टि, प्रतिबन्ध आ दबाबसँ मुक्ति। अधिकारक उत्पीड़नसँ बचाव।

भारतमे राजनीतिक क्रान्तिक बाद औद्योगिक आ सामाजिक क्रान्तिक संकल्प कएल गेल, विकसित देशमे औद्योगिक क्रान्तिक पहिने सामाजिक क्रान्ति भेल। तइ कारणसँ हमरा सभकेँ कठिन परिस्थितिक सोझाँ हेबऽ पड़ल। लोकाचार, चिन्तन क्रम आ दृष्टिकोणक अलाबे पोषण, स्वास्थ्य, सफाइ, चिकित्सा, शिक्षा, आयु-प्रत्याशामे वृद्धि, मृत्युदरमे कमी। आधुनिकीकरण, लोकतंत्रीकरण, राष्ट्र-राज्य संकल्पक कार्यान्वयन, प्रशासनिक-वैधानिक विकास, जन सहभागितामे वृद्धि, स्थायित्व आ क्रमबद्ध परिवर्तनक क्षमता, सत्ताक गतिशीलता, औद्योगीकरण।

समाजक **धनाढ्य आ निर्धन**मे विभाजन- दुनू वर्गक आकार, स्तर आ बीचक दूरी।

स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद **नवीन राज्य राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक समस्या-परिवर्तन आ एकीकरण**क प्रक्रिया, कखनो काल परस्पर विरोधी।

मानवशास्त्रीय, जातीय, धार्मिक, भाषिक- प्राथमिक आ लघु निष्ठा-स्थानिक, जातीय, धार्मिक-भाषिक आस्था। सामुदायिकताक विकास, मनोवैज्ञानिक आ शैक्षिक प्रक्रिया।

कला- ऐ लेल कोनो सैद्धांतिक प्रयोजन हेबाक चाही ? जगतक सौन्दर्यीकृत प्रस्तुति अछि कला। सौंदर्यक कला उपयोगिताक संग। कलापूर्णताक कलाक जीवन दर्शन- संप्रदाय संग। भावनात्मक

वातावरण- सत्यक आ कलाक कार्यक सौंदर्यीकृत अवलोकन, सुन्दर-मूर्त, अमूर्त।

जल थल वायु आ आकाश- भौतिक रासायनिक जैविक गुणमे हानिकारक परिवर्तन, **प्रदूषण,** प्रकृति असंतुलन।

प्रेस- शासक आ शासितक ई कड़ी, सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक जीवनमे भूमिका, मुदा आब प्रभावशाली विज्ञापन एजेंसी जनमतकेँ प्रभावित केनिहार। उद्योगपति प्रेसक मालिक आ सरकार शासन संचालक- प्रेसक स्वतंत्रताकेँ खतरा। नेपाल-भारत सन देश लेल ई खतरा आर बेशी। नव संस्थाक निर्माण वा वर्तमानमे सुधार, सामन्तवादी, जनजातीय, जातीय आ पंथगत निष्ठाक विरुद्ध, लोकतंत्र, उदारवाद, गणतंत्रवाद, संविधानवाद, समाजवाद, समतावाद, सांवैधानिक अधिकारक अस्तित्व, समयबद्ध जनप्रिय चुनाव, जन-संप्रभुता, संघीय शक्ति विभाजन, जनमतक महत्व, लोक-प्रशासनिक प्रक्रिया-अभिक्रम, दलीय हित-समूहीकरण, सर्वोच्च व्यवस्थापिका, उत्तरदायी कार्यपालिका आ स्वतंत्र न्यायपालिका।

मिकेल फोकौल्ट- ज्ञान आ सत्य बनाओल जाइत अछि।

डेलीयूज आ गुटारी कहै छथि जे हम सभ इच्छा ऐ द्वारे करै छी कारण हम सभ इच्छा मशीन छी।

मिकाहिल बखतिन भाषाकेँ सामाजिक क्रियाक रूपमे लै छथि आ हुनकर कार्य उपन्यासपर अछि।

रूसक **रूपवादी** साहित्यकेँ मात्र भाषाक विशिष्ट प्रयोग मानै छथि।

जीन फ्रान्कोइस लियोटार्ड-सत्यक आ इतिहासक सत्यता मात्र आभासी अछि। **बौड्रीलार्ड**- विज्ञापन आ दूरदर्शन सत्य आ आभासीक बीच भेद मेटा देने अछि। दुनू उत्तर आधुनिकताक मुख्य विचारक छथि।

लाकानक विशेषता छन्हि जे ओ फ्रायडक पद्धतिक भाषिकी अनुप्रयोग केलन्हि। ओ कहै छथि जे अचेतनताक संरचना भाषा सन छै। जखन बच्चा भाषा सीखैए तखन ओकरा एकटा चेन्ह लेल एकटा शब्द सिखाओल जाइ छै। इच्छा, त्रुटि आ आन ई तीनटा तथ्य लाकान नीक जकाँ राखै छथि। इच्छा आवश्यकता आ माँगनाइ दुनू अछि मुदा एकरा ऐ दू रूपमे विखंडित नै कएल जा सकैत अछि। आनक वर्णनमे त्रुटि आ रिक्तता अबैत अछि। विषय अर्थक क्षणिक प्रभाव अछि आ ई आन सन हएत जखन ई आभासी हएत आ त्रुटिक कारण बनत, जइसँ इच्छाक उदय हएत।

उत्तर उपनिवेशवादक तीन विचारक छथि- होमी भाभा(फोकौल्ट आ लाकानसँ लग), गायत्री स्पीवाक (फोकौल्ट आ डेरीडासँ लग) आ एडवर्ड सईद(फोकौल्टसँ लग) जे उपनिवेशवादीक पूर्वक धूर्तताक, शिथिलता आदिक धारणाक लेल कएल गेल कार्य आ सिद्धांतीकरणक व्याख्या करै छथि।

रेमण्ड विलियम्सक संस्कृतिक अध्ययन साहित्यक आर्थिक स्थितिसँ सम्बन्ध देखबैत अछि। नव इतिहासवाद इतिहासक शब्दशास्त्र आ शब्दशास्त्रक ऐतिहासिकताक तुलना करैत अछि।

इलाइन शोआल्टर महिला लेखनक मानसिक, जैविक आ भाषायी विशेषताकेँ चिन्हित करै छथि। सिमोन डी. बेवोइर नारीक नारीक प्रति प्रतिबद्धतामे वर्ग आ जातिकेँ (जकर बादक नारीवादी सिद्धांत विरोध केलक) बाधक मानै छथि। वर्जीनिया वुल्फ नारी लेखक लेल आर्थिक स्वतंत्रता आ निजताकेँ आवश्यक मानै छथि। हिनकर विचारकेँ क्रान्तिकारी नै मानल गेल। मेरी वोल्स्टोनक्राफ्ट नारी शिक्षामे क्रान्ति आ औचित्यक शिक्षाकेँ सम्मिलित करबापर जोर देलनि।

नव समीक्षा- इलिएट कवितामे भावनाक प्रधानताक विरोध केलन्हि आ एकरा गएर वैयक्तिक बनेबाक आग्रह केलनि। समीक्षकक काज लोकक रुचिमे सुधार करब सेहो अछि। विमसैट आ वर्डस्ले कहलनि जे कविता उद्देश्य वा ऐतिहासिक अध्ययनपर समीक्षा आधारित नै रहत। ई पाठकपर पड़ल भावनात्मक प्रभावपर सेहो आधारित नै रहत कारण से सापेक्ष अछि। ओ आधारित रहत वास्तविक शब्दशास्त्रपर।

फिलिप सिडनीसँ अंग्रेजी समीक्षाक प्रारम्भ देखि सकै छी- ओ कविताकेँ सौन्दर्य, अर्थ आ मानवीय हितमे देखलन्हि।

जॉन ड्राइडन- प्राचीन साहित्यमे नैतिक प्रवचनपर आ एकर लाभहानिपर विचार केलनि।

सैमुअल जॉनसन सेक्सपिअरक नाटकमे हास्य आ दुखद तत्वपर लिखलन्हि।

रूसोक रोमांशवाद मनुक्खक नीक हेबापर शंका नै करैए (क्लासिकल समीक्षक शंका करै छथि मुदा नव-क्लैसिकल कहै छथि जे मानव स्वभावसँ दूषित अछि मुदा संस्था ओकरा नीक बना सकैए) मुदा संगे ई कहैए जे संस्था सभ दूषित अछि आ मात्र दूषित लोकक मदति करैए। रोमांशवाद कविताक व्यक्तिगत अनुभव हेबाक गप कहैए।

आधुनिक स्थितिवाद (साहित्यक अवस्थितिपर कोनो प्रश्न चिन्ह नै) पर संरचनावाद प्रहार केलक आ तकरा बाद लेखक स्वयं लिखल टेकस्टक विश्लेषण करबाक अधिकार गमेलक।

उत्तर संरचनावाद कहलक जे साहित्य ओइसँ आगाँक वस्तु अछि जे संरचनावाद बुझै अछि। उत्तर-संरचनावादक एकटा प्रकार अछि उत्तर आधुनिकता। उत्तर संरचनावाद कहलक जे साहित्यमे संरचना संस्कृति आ सिद्धान्त मध्य कार्य करैत अछि जत्तऽ किछु भाव आ सोच वंचित अछि जे निरन्तरताक विरोध करैए। विखण्डनवाद आ उत्तर आधुनिकता उत्तर संरचनावादक बाद आएल। उत्तर उपनिवेशवाद उपनिवेशक नव रूपकेँ नै मानैए आ अव्यवस्थाक सिद्धांत सन असफल उद्देश्यकेँ उचित परिणाम नै भेटबाक कारण मानैए।

संरचनावाद दमित करैबला पाश्चात्य व्यवस्था आ समाजपर चोट करैए आ ऐ सँ मार्क्सवादकेँ बल भेटलै (अलथूजर)।

आधुनिकतावादी-स्थितिवादी, नव समीक्षा, संरचनावाद आ उत्तर संरचनावादक बाद विखण्डनवाद आ उत्तर आधुनिकतावाद आएल जकरा विलम्बित पूँजीवाद कहल गेल (फ्रेडरिक जेनसन)।

अठारहम शताब्दीमे आधुनिक माने छल जड़विहीन मुदा बीसम शताब्दीक प्रारम्भमे एकर अर्थ प्रगतिवादी भऽ गेल। १९७० ई.क बाद आधुनिक शब्द एकटा सिद्धांतक रूप लऽ लेलक से **उत्तर-आधुनिक** शब्द पारिभाषिक भेल जकर नजरिमे लौकिक महत्वपूर्ण नै रहल। आधुनिक काल धरिक सभ जीवन आ इतिहास अमहत्वपूर्ण भेल आ खतम भेल। ई सिद्धांत भेल इतिहासोत्तर, विकासोत्तर आ कारणोत्तर। सत्य आ आपसी जुड़ावक महत्व खतम भऽ गेल।

जादुइ वास्तविकतावाद जइमे वास्तविक स्थितिमे जादुइ वस्तुजात घोसिआओल जाइत अछि। स्पेनिश उपन्यासकार गैब्रिअल गार्सिया मार्क्विसक ''वन हंड्रेड ईयर्स ऑफ सोलीट्यूड'' आ सलमान रुस्डीक ''मिडनाइट्स चिल्ड्रेन'' ऐ तरहक उपन्यास अछि। रचनाकार ऐ तरहक प्रयोग कऽ वास्तविकताकेँ नीक जकाँ बुझबाक प्रयास करै छथि।

जोसेफ कोनरेड उपन्यासकेँ इतिहास कहै छथि। जोसेफ कोनरेड पोलिश भाषी रहथि मुदा अंग्रेजीक प्रसिद्ध उपन्यासकार छथि जे धाराप्रवाह अंग्रेजी नै बजैत रहथि। **रोलेंड बार्थेज** कहै छथि जे उपन्यास इतिहास सेहो छी आ उपन्यास इतिहासक विरोध सेहो करैए। रोलेंड बार्थेज फ्रांसक साहित्यिक सिद्धांतकार रहथि आ हिनकर लेखनीक प्रभाव संरचनावाद, मार्क्सवादी आ उत्तर संरचनावादी साहित्यिक सिद्धांतपर पड़ल।

उत्तर आधुनिक पाश्चात्य बुर्जुआ दृश्य-श्रव्य मीडियाक प्रयोग कऽ असमता, अन्याय आ वंचितक अवधारणाकेँ मात्र शब्द कहै छथि जे

समता, प्राप्ति आ न्यायक लगक शब्द अछि। गरीबी जे पाश्चात्यमे समस्या नै अछि से आइ भारतमे पैघ समस्या अछि। उत्तर आधुनिकता नारीवादक आ मार्क्सवादक विरोधमे अछि आ एकर नारीवाद आ मार्क्सवाद विरोध केलक अछि। जेना ऐतिहासिक विश्लेषणक पक्षमे मार्क्सवाद अछि आ ओइसँ ओ अपन सिद्धांत फेरसँ सशक्त केलक अछि, संरचनावाद-उत्तर-संरचनावाद आ उत्तर आधुनिकतावादक परिप्रेक्ष्यमे। मार्क्सवाद लौकिक पक्षपर जोर दैत अछि मुदा तँ ई उपयोगितावाद आ चार्वक दर्शनक लग नै अछि, कारण उपयोगितावाद आ चार्वकवाद मात्र शारीरिक आवश्यकताकेँ ध्यानमे रखैत अछि। नारीवादी दृष्टिकोण सेहो उत्तर आधुनिकतावादक यथास्थिवादक विरोध केलक अछि कारण यावत से खतम नै हएत ताधरि नारीक स्थितिमे सुधार नै आएत।

महिला- ऋगवेदमे अपाला,घोषा, श्रद्धा, शची, सार्पराज्ञी, यमी, वैवस्वती, देव जामय, इन्द्राणी, शश्वती, रोमशा, गोधा, उर्वशी, सूर्या, अदिति, नदी, लोपामुद्रा, विश्ववारा, वाक् जुहू, सरमा आ यमी ऐ २१ टा ऋषिकाक वर्णन अछि। देवता माने प्रतिपाद्य विषय नै कि गॉड (जेना ग्रिफिथ अनुवाद केने छथि।) मन्त्रार्थमे महर्षि पतञ्जलिक वैज्ञानिक मन्तव्य ‘‘यच्छब्द आह तदस्माकं प्रमाणम्’’ माने जे शब्द आकि मंत्रक पद कहैत अछि सएह हमरा लेल प्रमाण अछि- एकर अर्थ बादमे वेदे प्रमाण अछि- गलत रूपेँ भेल।

प्लेटो- प्लेटो कहै छथि जे कोनो कला नीक नै भऽ सकैए किएक तँ ई सभटा असत्य आ अवास्तविक अछि। प्लेटोक ई विचार स्पार्टासँ एथेंसक सैन्य संगठनक न्यूनताकेँ देखैत देल विचारक

रूपमे सेहो देखल जेबाक चाही, काव्य/ नाटकक ऐ रूपँ विरोध केलन्हि जे सम्वादकेँ रटि कऽ बाजैसँ लोक एकटा कृत्रिम जीवन दिस आकर्षित हएत।

अरिस्टोटल कविताकेँ मात्र अनुकृति नै मानै छथि, ओ ऐ मे दर्शन आ सार्वभौम सत्य सेहो देखै छथि। ओ नाटकक दुखान्तकेँ आ अनुकृतिकेँ निसास छोड़ैबला कहै छथि जे आनन्द, दया आ भयक बाद अबैत अछि।

सम्वाद दू तरेहेँ भऽ सकैए- अभिभाषण वा गप द्वारा। गपमे दार्शनिक तत्व कम रहत। प्राचीन ग्रीसमे कविता भगवानक सनेस बूझल जाइ छल। एरिस्टोफिनीस नीक आ अधला ऐ दू तरहक कविता देखै छथि तँ थियोफ्रेस्टस कठोर, उत्कृष्ट आ भव्य ऐ तीन तरहेँ कविताकेँ देखै छथि। कविता आ संगीत अभिन्न अछि। मुदा यूरोपक सिम्फोनी जइमे ढेर रास वादन एके संगे विभिन्न लयमे होइत अछि, सिद्धांतमे अन्तर अनलक। यएह सभ किछु नाटकक स्टेज लेल सेहो लागू भेल।

डेरीडाक विखण्डन पद्धति ऊँच स्थान प्राप्त रचना/ लेखक केँ नीचाँ लऽ अनैत अछि आ निचुलकाकेँ ऊपर। रोलेण्ड बार्थेस लिखै छथि जे जखन कृति रचनाकारसँ पृथक भऽ जाइए आ ओकर विश्लेषण स्वतंत्र रूपँ होमए लगै छै तखन कृति महत्वपूर्ण भऽ जाइए जकरा ओ रचनाकारक मृत हएब कहै छथि।

उत्तर-संरचनावाद संरचनावादक सम्पूर्ण आ सुगठित हेबाक अवधारणाकेँ माटि देलक। सौसरक भाषा सिद्धान्त- बाजब/ लिखब,

वास्तविक समयक साहित्य वा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यक शब्दशास्त्र, महत्वपूर्ण कोनो कृति वा मनुक्ख अछि/ महत्ता एकटा भाव अछि, वास्तविक समयमे भाषा वा एकर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य; मुदा एकरा सेहो डेरीडाक विखण्डन सिद्धान्त उल्टा-पल्टा करऽ लागल।

लिंग एकटा जैव वैज्ञानिक तथ्य अछि मुदा महिला/ पुरुषक सिद्धान्त सामाजिकताक प्रतिफल अछि। महिला सापेक्ष साहित्य कला पुरुष द्वारा निर्मित अछि आ पुरुखक नजरिसँ महिलाकेँ देखैत अछि। साहित्यक नारीवादी सिद्धान्त ऐ समस्याक तहमे जाइए। मिथिलाक सन्दर्भमे महिलाक स्थिति ओतेक खराप नै छै मुदा मैथिली साहित्यक एकभगाह प्रवृत्तिक कारण उच्च वर्गक नारीक खराप स्थिति साहित्यमे आएल। आधुनिकीकरण तथाकथित सामाजिक रूपसँ निचुलका जाति सभमे सेहो नारीक स्थितिमे अवनति अनलक अछि। दोसर एकटा आर गप अछि जे जाति आ धर्म नारीक अधिकारकेँ कैक हीसमे बाँटि देने अछि।

नारीवादी दृष्टिकोण सेहो कहैए जे सभटा सिद्धांत पुरुष द्वारा बनाएल गेल से ओ पूर्ण व्याख्या नै कऽ सकैए। सरल मानवतावाद सिद्धांतक विरुद्ध आएल मुदा ई सेहो एकटा सिद्धांत बनि गेल। सार्थक साहित्यक निर्माण एकर अन्तर्गत भेल।

पोथी समीक्षामे अत्यधिक आलोचनासँ बचबाक चाही। समीक्षककेँ अपन विद्वत्ता प्रदर्शनसँ बचबाक चाही। अत्यधिक आलोचनाक क्रममे लोक अपन विद्वता देखबऽ लगै छथि। आलोचनाक क्रममे संयम रखबाक चाही, खराप शब्दावलीक प्रयोग समीक्षकक खराप लालन-पालन देखबैत अछि। पोथीक बिना पढ़ने समीक्षा अनैतिक अछि।

उदाहरणस्वरूप कर्मधारयमे धूमकेतुक विषयमे तारानन्द वियोगी लिखै छथि- मिथिलाक संस्कृतिमे युग-युगसँ प्रतिष्ठापित साम्प्रदायिक सौहार्दकेँ रेखांकित करैत हिनक कथा ‘‘नमाजे शुकराना’’ बहुत महत्वपूर्ण थिक। (कर्मधारय, पृ. १२७) (!) कथाक शीर्ष देखि कऽ ऐ तरहक समीक्षा भेल अछि कारण ऐ कथामे हाजी सैहेबक नमाजक समएमे पिंजराक सुग्गा ‘‘सीता...राम...।’’ बजैए आ सुग्गाक पिंजराकेँ हाजी सैहेब ताधरि महजिदक देबालपर पटकै छथि जाधरि सूगा मरि नै जाइए। सईदा कानऽ लगैए आ कथा खतम भऽ जाइए। आ ई कथा समीक्षकक मतमे साम्प्रदायिक सौहार्दकेँ रेखांकित करैए!

समीक्षककेँ अति प्रशंसासँ सेहो बचबाक चाही। पोथीक समीक्षामे ई देखाएल जेबाक चाही जे ऐ विषयपर लिखल आन पोथीसँ ई पोथी कोन रूपेँ भिन्न अछि, कोना ई पोथी रिक्त स्थलक पूर्ति करैए, पोथीमे की-की छै आ ओइ विषयपर लिखल आन पोथीसँ एकर तुलना हेबाक चाही। पोथीक विस्तारकेँ ध्यानमे राखि समीक्षा हजारसँ दू हजार शब्दमे हेबाक चाही। समीक्षा सम्बन्धित पोथीक हेबाक चाही, लेखकक नै। लेखकक दोसर रचनाक विश्लेषणसँ समीक्षाकेँ भरब नीक समीक्षा नै, जे ऐ सभ पोथीसँ समीक्षित पोथीक कोनो सोझ सम्बन्ध हुअए तखने ओकर प्रयोग करू। मिथिलाक विविध संस्कृति आ इतिहासकेँ देखैत मैथिली साहित्यक एकभगाह स्थिति विशेष रूपमे- व्यक्तिगत आक्षेपक आ जिला-जबारकेँ ध्यानमे रखबाक सेहो परम्परा रहल अछि। जाति-धर्म आ क्षेत्रीय मैथिली भाषा समीक्षामे कम्मे अबैए मुदा जिला-जवारक/ दोस-महीमक-पड़ोसक आधारपर नीक वा अधलाह समीक्षाक प्रवृत्ति वा आग्रहक

भयंकर प्रभाव समीक्षकक मध्य छन्हि।

कोनो खास समीक्षासँ ओइ पोथीपर प्रकाश पड़ैए वा नै से देखू। ई तँ नै अछि जे ओ समीक्षा लेखकपर टिप्पणी कऽ रहल अछि वा लेखकक आन रचनापर- गहींरमे जाएब तँ बूझि जाएब जे समीक्षा पोथी पढ़ि लिखल गेल छै आकि नै। आलंकारिक भाषाक दिन गेल, शब्दक सटीक प्रयोग करू, अनावश्यक शब्द आ पाँतीकेँ निकालू। आत्मकथात्मक पोथीक समीक्षा लेल लेखकक जिनगीपर प्रकाश दऽ सकै छी। पोथीक रूप, रंग आ आवरणक फोटोक समीक्षासँ आगाँ बढ़ू आ पोथीक समीक्षा करू। पोथीमे महिला विरोधी वा जाति-क्षेत्रक बन्हनसँ बान्हल मानसिकताकेँ दूर राखू। पोथी लेखकक नामक वा आवरणक चित्रक अनावश्यक न्यून विश्लेषणसँ अपनाकेँ दूर राखू।

उपन्यासक अंग अछि वातावरणक निर्माण जइमे लेखक कथा कहैत अछि, ओकर पात्र सभक विवरण, कथाक प्रारूप आ तकरा लेल लोकक आ परिस्थितिक वर्णन। ऐ मेसँ कोनो एक टा पक्ष लऽ कऽ अहाँ कथा लिख सकै छी। नाटकमे भावनापूर्ण सम्वाद आ क्रियाकलापक योग रहत। पद्यमे शब्दक प्रयोगसँ चित्रक निर्माण करऽ पड़त आ लोकक भावनाकेँ उद्वेलित करबा योग्य बनबऽ पड़त, ऐ लेल कविक वातावरणमे हस्तक्षेपयुक्त सलाहक औचित्य आ ध्वनि-विज्ञानक योग सेहो चाही।

कोनो कृति कोना उत्कृष्ट अछि आ ओइमे की छुटि गेल अछि से समीक्षककेँ देखबाक चाही। ओकर मूल्यांकन एकभगाह नै हेबाक चाही, ओइ रचनामे की संदेश नुकाएल छै, लेखक कोन दिस

निर्देशित कऽ रहल अछि, से समीक्षककेँ बुझबाक आ लिखबाक चाही। आब प्रश्न उठैए जे समीक्षाक पोथीक समीक्षा कोन हुअए। ऐ मे समीक्षककेँ ओइ पोथीक मुख्य धाराकेँ चिन्हित करबाक चाही।

जे समीक्षा/ निबन्धक पोथीमे कएक तरहक निबन्ध/ समीक्षा अछि आ मारते रास लेखकक रचना संकलित अछि तँ से सोद्देश्य अछि वा निरुद्देश्य से समीक्षककेँ देखबाक चाही।

समीक्षित पोथीक अतिरिक्त ओइ विषयपर आन पोथीक सेहो जत्तऽ धरि सम्भव हुअए चर्चा हेबाक चाही। अपन विचारधाराकेँ समीक्षित पोथीपर आरोपण नै हेबाक चाही। ओइ पोथीक आइक समएक सन्दर्भमे की आवश्यकता अछि से देखाउ। ओइ पोथीक महत्ता कोन रूपमे अछि से देखाउ, ओकर मुख्य तत्व चिन्हित करू। लेखकक जीवन दर्शन, वास्तविक, काल्पनिक आ आदर्शक सम्बन्धमे ओकर दृष्टि, संदेहकेँ चिन्हित करू। लेखकक लेखनशैलीक कलात्मक पक्ष, ओकर गप कहबाक क्षमता, रचनाक ढाँचा आ ओकर विभिन्न भागकेँ जोड़बाक कलाक चर्चा करू, जेना नीक कमार ठोस आ कलात्मक पलंग बनबैत अछि, तँ दोसर कमारक जोर मात्र ठोस हेबापर होइ छै आ तेसरक कलात्मकतापर, तहिना।

सिद्धान्तक आवश्यकता की छै? सरल मानवतावाद कहैए जे साहित्यक सिद्धान्तक बदलामे रचनाक की मानवीय दृष्टिकोण छै, ओइमे सार्थकता छै आकि नै से सामान्य बुद्धिसँ कएल जा सकैए। अपन बुद्धिक प्रयोग कऽ रचनाक गुणवत्ता अहाँ देखि सकै छी, कोनो साहित्यिक सिद्धान्तक आवश्यकता समीक्षा लेल नै छै। मुदा

सरल मानवतावाद स्वयं एकटा सिद्धांत बनि गेल।

काव्यक भारतीय विचार: मोक्षक लेल कलाक अवधारणा, जेना नटराजक मुद्रा देखू। सृजन आ नाश दुनूक लय देखा पड़त। स्थायी भावक गाढ़ भऽ सीझि कऽ रस बनब- आ ऐ सन कतेक रसक **सीता** आ **राम** अनुभव केलन्हि (देखू वाल्मीकि रामायण)। **कृष्ण** भारतीय कर्मवादक शिक्षक छथि तँ संगमे रसिक सेहो।

कलाक स्वाद लेल रस सिद्धांतक आवश्यकता भेल आ भरत नाट्यशास्त्र लिखलन्हि। अभिनवगुप्त आनन्दवर्धनक ध्वन्यालोकपर भाष्य लिखलन्हि। भामह ६अम शताब्दी, दण्डी सातम शताब्दी आ रुद्रट ९अम शताब्दी एकरा आगाँ बढ़ेलन्हि।

रस सिद्धान्त:

भरत:- नाटकक प्रभावसँ रसक उत्पत्ति होइत अछि। नाटक कथी लेल? नाटक रसक अभिनय लेल आ संगे रसक उत्पत्ति लेल सेहो। रस कोना बहराइए? रस बहराइए कारण (विभाव), परिणाम (अनुभाव) आ संग लागल आन वस्तु (व्यभिचारी)सँ। स्थायीभाव गाढ़ भऽ सीझि कऽ रस बनैए, जकर स्वाद हम लऽ सकै छी।

भट्ट लोलट:- स्थायीभाव कारण-परिणाम द्वारा गाढ़ भऽ रस बनैत अछि। अभिनेता-अभिनेत्री अनुसन्धान द्वारा आ कल्पना द्वारा रसक अनुभव करै छथि। लोलट कविकेँ आ संगमे श्रोता-दर्शककेँ महत्व नै दै छथि।

शौनक:- शौनक रसानुभूति लेल दर्शकक प्रदर्शनमे पैसि कऽ रस लेब आवश्यक बुझै छथि, घोड़ाक चित्रकेँ घोड़ा सन बूझि रस लेबा

सन।

भट्टनायक कहै छथि जे रसक प्रभाव दर्शकपर होइत अछि। कविक भाषाकेँ ओ भिन्न मानै छथि। रससँ श्रोता-दर्शकक आत्मा परमात्मासँ मेल करैए। रसक आनन्द अछि स्वरूपानन्द। आ ऐसँ होइत अछि आत्म-साक्षात्कार।

रस सिद्धान्त श्रोता-दर्शक-पाठक पर आधारित अछि। ई श्रोता-दर्शक-पाठकपर जोर दैत अछि।

बार्थेजक संरचनावाद-उत्तर-संरचनावादक सन्दर्भमे लेखकक उद्देश्यसँ पाठकक मुक्तिक लेल लेखकक मृत्युकेँ आवश्यक मानै छथि- लेखकक मृत्यु माने लेखक रचनासँ अलग अछि आ पाठक अपना लेल अर्थ तकैत अछि।

ध्वनि सिद्धान्त:

आनन्दवर्धनक ध्वन्यालोक साहित्यक उद्देश्य अर्थकेँ परोक्ष रूपेँ बुझाएब वा अर्थ उत्पन्न करब कहै छथि। ई सिद्धान्त दैत अछि परोक्ष अर्थक संरचना आ कार्य, रस माने सौन्दर्यक अनुभव आ अलंकारक सिद्धान्त।आनन्दवर्धन काव्यक आत्मा ध्वनिकेँ मानै छथि। ध्वनि द्वारा अर्थ तँ परोक्ष रूपेँ अबैत अछि मुदा ओ अबैत अछि सुसंगठित रूपमे। आ ऐसँ अर्थ आ प्रतीक दूटा सिद्धान्त बहार होइत अछि। ऐसँ रसक प्रभाव उत्पन्न होइत अछि, ऐसँ रस उत्पन्न होइत अछि। न्याय आ मीमांसा ऐ सिद्धान्तक विरोध केलक, ई दुनू दर्शन कहैत अछि जे ध्वनिक अस्तित्व कतौ नै अछि, ई परिणाम अछि अनुमानक आ से पहिनहियेसँ लक्षणक अन्तर्गत अछि। आ से

सभ शब्द द्वारा वर्णित हएब सम्भव नै अछि।

स्फोट सिद्धांत:

भर्तृहरीक वाक्यपदीय कहैत अछि जे शब्द आकि वाक्यक अर्थ स्फोट द्वारा संवाहित अछि। वर्ण स्फोटसँ वर्ण, पद स्फोटसँ शब्द आ वाक्य स्फोटसँ वाक्यक निर्माण होइत अछि। कोनो ज्ञान बिनु शब्दक सम्बन्धक सम्भव नै अछि। ई भारतीय दर्शनक ज्ञान सिद्धान्तक एकटा भाग बनि गेल। अर्थक संप्रेषण अक्षर, शब्द आ वाक्यक उत्पत्ति बिन सम्भव अछि। स्फोट अछि शब्दब्रह्म आ से अछि सृजनक मूल कारण। अक्षर, शब्द आ वाक्य संग-संग नै रहैए। बाजल शब्दक फराक अक्षर अपनामे शब्दक अर्थ नै अछि, शब्द पूर्ण हेबा धरि एकर उत्पत्ति आ विनाश होइत रहै छै। स्फोटमे अर्थक संप्रेषण होइत अछि मुदा तखनो स्फोटमे प्राप्ति, समए वा संचारक कालमे अक्षर, शब्द वा वाक्यक अस्तित्व नै भेल रहै छै। शब्दक पूर्णता धरि एक अक्षर आर नीक जकाँ क्रमसँ अर्थपूर्ण होइए आ वाक्य पूर्ण हेबा धरि शब्द क्रमसँ अर्थपूर्ण होइए। सांख्य, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा आ वेदान्त ई सभ दर्शन स्फोटकेँ नै मानैत अछि। ऐ सभ दर्शनक मानब अछि जे अक्षर आ ओकर ध्वनि अर्थकेँ नीक जकाँ पूर्ण करैत अछि। फ्रांसक जैक्स डेरीडाक विखण्डन आ पसरबाक सिद्धान्त स्फोट सिद्धान्तक लग अछि।

अलंकार सिद्धान्त:

भामह अलंकारकेँ समासोक्ति कहै छथि जे आनन्दक कारण बनैए। दण्डी आ उद्भट सेहो अलंकारक सिद्धान्तकेँ आगाँ बढ़बै छथि। अलंकारक मूल रूपसँ दू प्रकार अछि, शब्द आ अर्थ आधारित आ

आगाँ सादृश्य-विरोध, तर्कन्याय, लोकन्याय, काव्यन्याय आ गूढ़ार्थ प्रतीति आधारपर। मम्मट ६१ प्रकारक अलंकारकेँ ७ भागमे बाँटै छथि, उपमा माने उदाहरण, रूपक माने कहबी, अप्रस्तुत माने अप्रत्यक्ष प्रशंसा, दीपक माने विभाजित अलंकरण, व्यतिरेक माने असमानता प्रदर्शन, विरोध आ समुच्चय माने संगबे।

औचित्य सिद्धान्त:

क्षेमेन्द्र औचित्यविचारचर्चामे औचित्यकेँ साहित्यक मुख्य तत्व मानलन्हि। आ औचित्य कतऽ हेबाक चाही? ई हेबाक चाही पद, वाक्य, प्रबन्धक अर्थ, गुण, अलंकार, रस, कारक, क्रिया, लिंग, वचन, विशेषण, उपसर्ग, निपात माने फाजिल, काल, देश कुल, व्रत, तत्व, सत्व माने आन्तरिक गुण, अभिप्राय, स्वभाव, सार-संग्रह, प्रतिभा, अवस्था, विचार, नाम आ आशीर्वादमे।

कंपायमान अछि ई ब्रह्माण्ड आ ई अछि कंपन मात्र। कविता वाचनक बाद पसरैत अछि शान्ति, शान्ति सर्वत्र आ शान्ति पसरैत अछि मगजमे।

भारत आ पाश्चात्य नाट्य सिद्धांतक तुलनात्मक अध्ययनसँ ई ज्ञात होइत अछि मानवक चिन्तन भौगोलिक दूरीकक अछैत कतेक समानता लेने रहैत अछि। भारतीय नाट्यशास्त्र मुख्यतः भरतक ''नाट्यशास्त्र'' आ धनंजयक दशरूपकपर आधारित अछि। पाश्चात्य नाट्यशास्त्रक प्रामाणिक ग्रंथ अछि अरस्तूक ''काव्यशास्त्र''। भरत नाट्यकेँ ''कृतानुसार'' ''भावानुकार'' कहै छथि, धनंजय अवस्थाक अनुकृतिकेँ नाट्य कहै छथि। भारतीय साहित्यशास्त्रमे

अनुकरण नट कर्म अछि, कवि कर्म नै। पश्चिममे अनुकरण कर्म थिक कवि कर्म, नटक कतौ चरचा नै अछि।
अरस्तू नाटकमे कथानकपर विशेष बल दै छथि। ट्रेजेडीमे कथानक केर संग चरित्र-चित्रण, पद-रचना, विचार तत्व, दृश्य विधान आ गीत रहैत अछि। भरत कहै छथि जे नायकसँ संबंधित कथावस्तु आधिकारिक आ आधिकारिक कथावस्तुकेँ सहायता पहुँचाबएबला कथा प्रासंगिक कहल जाएत। मुदा सभ नाटकमे प्रासंगिक कथावस्तु हुअए से आवश्यक नै।
कथा इतिवृत्तिक दृष्टिसँ प्रख्यात, उत्पाद्य आ मिश्र तीन प्रकारक होइत अछि। प्रख्यात कथा इतिहास पुराणसँ लेल जाइत अछि आ उत्पाद्य कल्पित होइत अछि। मिश्रमे दुनूक मेल होइत अछि।
अरस्तू कथानककेँ सरल आ जटिल दू प्रकारक मानै छथि।
फेर अरस्तू इतिवृत्तकेँ दन्तकथा, कल्पना आ इतिहास ऐ तीन प्रकारसँ सम्बन्धित मानै छथि।
अरस्तूक ट्रेजेडीक चरित्र य़शस्वी आ कुलीन छथि- सत् असत् केर मिश्रण।
भरत नृत्य संगीतक प्रेमीकेँ धीरललित, शान्त प्रकृतिकेँ धीरप्रशान्त, क्षत्रिय प्रवृत्तिकेँ धीरोदत्त आ ईर्ष्यालूकेँ धीरोद्धत्त कहै छथि।
भारतीय सिद्धांत कार्यक आरम्भ, प्रयत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति आ फलागम धरिक पाँच टा अवस्थाक वर्णन करैत अछि। प्राप्त्याशामे फल प्राप्तिक प्रति निराशा अबैत अछि तँ नियताप्तिमे फल प्राप्तिक आशा घुरि अबैत अछि। पाश्चात्य सिद्धांतमे अछि आरम्भ, कार्य-विकास, चरम घटना, निगति आ अन्तिम फल। प्रथम तीन अवस्थामे ओझराहटि अबैत अछि, अन्तिम दू मे सोझराहटि।
कार्यावस्थाक पंच विभाजन- बीया, बिन्दु, पताका, प्रकरी आ कार्य अछि।

अरस्तू एकरा बीआ, मध्य आ अवसान कहैत छथि। आब आउ सन्धिपर, मुख-सन्धि भेल बीज आ आरम्भकेँ जोड़एबला, प्रतिमुख-सन्धि भेल बिन्दु आ प्रयत्नकेँ जोड़एबला, गर्भसन्धि भेल पताका आ प्राप्याशाकेँ जोड़एबला, विमर्श सन्धि भेल प्रकरी आ नियताप्तिकेँ जोड़एबला आ निर्वहण सन्धि भेल फलागम आ कार्यकेँ जोड़एबला।

पाश्चात्य सिद्धांत स्थान, समय आ कार्यक केन्द्र तकैत अछि। अभिनवगुप्त सेहो कहैत छथि जे एक अंकमे एक दिनक कार्यसँ बेशीक समावेश नै हुअए आ दू अंकमे एक वर्षसँ बेशीक घटनाक समावेश नै हुअए।

मुदा ऐ त्रिकक विरोध ड्राइडन केने छला आ शेक्सपिअरक नाटकक स्वच्छन्दताक ओ समर्थन केलन्हि।

भारतमे नाटकक दृश्यत्वक समर्थन कएल गेल मुदा अरस्तू आ प्लेटो एकर विरोध कएलन्हि। मुदा १६म शताब्दीमे लोडोविको कैस्टेलवेट्रो दृश्यत्वक समर्थन केलन्हि। डिटेटार्ट सेहो दृश्यत्वक समर्थन केलन्हि तँ ड्राइडन नाटकक पठनीयताक समर्थन केलन्हि। देसियर पठनीयता आ दृश्यत्व दुनूक समर्थन केलन्हि। अभिनवगुप्त सेहो कहने छला जे पूर्ण रसास्वाद अभिनीत भेला उत्तर भेटैत अछि, मुदा पठनसँ सेहो रसास्वाद भेटैत अछि।

पश्चिमी रंगमंचक नाट्यविधान वास्तविक अछि मुदा भारतीय रंगमंचपर सांकेतिक। जेना अभिज्ञानशाकुंतलम् मे कालिदास कहै छथि- इति शरसंधानं नाटयति।

अंकिया नाटमे सेहो प्रदर्शन तत्वक प्रधानता छल। कीर्तनियाँ एक तरहेँ संगीतक छल आ एतौ अभिनय तत्वक प्रधानता छल। अंकीया नाटकक प्रारम्भ मृदंग वादनसँ होइ छल।

गद्यक विभिन्न विधा जेना प्रबन्ध, निबन्ध, समालोचना, कथा-गल्प,

उपन्यास, पत्रात्मक साहित्य, यात्रा-संस्मरण, रिपोर्ताज आदिक मध्य कथा-गल्प, आख्यान आ उपन्यास, अनुभव मिश्रित कल्पनापर विशेष रूपसँ आधारित अछि। जकरा हम सभ खिस्सा-पिहानी कहै छिऐ तइसँ ई सभ लग अछि। कथा-गल्प, आख्यान आ उपन्यास आ किछु दूर धरि नाटक आ एकांकी मनोरंजनक लेल सुनल-सुनाओल-पढ़ल जाइत अछि वा मंचित कएल जाइत अछि। ई उद्देश्यपूर्ण भऽ सकैत अछि वा ऐमे निरुद्देश्यता-एबसर्डिटी सेहो रहि सकै छै- कारण जिनगीक भागदौड़मे निरुद्देश्यपूर्ण साहित्य सेहो मनोरंजन प्रदान करैत अछि।

विहनि-कथा/ लघुकथा/ दीर्घकथा/ उपन्यास: अंग्रेजीक शॉर्ट स्टोरी आ मैथिलीक विहनि आ लघु कथा। मैथिलीमे एक पन्नासँ छोट कथा भेल विहनि कथा आ ओइसँ पैघ आ ४-५ पन्नासँ १५-२० पन्ना धरि लघु कथा आ ओइसँ पैघ दीर्घ कथा। फेर ५०-६० पन्नासँ उपन्यास शुरू। लघुकथा कहने एकटा एहेन विधा बनि सोझाँ आएल अछि जे पहिने कथा थिक फेर लघुकथा। विहनि कथा, लघुकथा, दीर्घ कथा, उपन्यास, नाटक आ एकांकी एकटा अनुभव मिश्रित कल्पनापर आधारित अछि। अंग्रेजीमे सेहो लम्बाइक आधारपर शॉर्ट-स्टोरी/ नोवेलेट/ नोवेला/ नोवेल क विभाजन कएल जाइत अछि। मैथिलीमे सभ विधामे शब्द संख्याक घटोत्तरी-बढ़ोत्तरी अंग्रेजी वा दोसर यूरोपियन भाषासँ बेशी होइत अछि, ओना अंग्रेजी वा दोसर यूरोपियन भाषामे सेहो सभ विधामे लेखकक व्यक्तिगत रुचि आ कथ्यक आवश्यकताक अनुसार घटोत्तरी-बढ़ोत्तरी होइते अछि। तहिना वन-एक्ट प्ले भेल एकांकी आ प्ले भेल नाटक। से विहनिकथा/ लघुकथा कथा तँ छीहे।

अहाँक अनुभवमिश्रित कल्पना अहाँसँ किछु कहबा लेल कहैत अछि। आ ई कथ्य हास्य-कणिका वा अहास्य-कणिका बनि सकैत

अछि। लोक अहाँकेँ कहि सकै छथि जे अहाँकेँ गप्प बड्ड फुराइए, अहाँ हाजिर जवाब छी। आ तकर बाद अहाँक हिम्मत बढ़ैत अछि आ अहाँ ओइ कथ्यकेँ शिल्पक साँचामे ढलैय्या कऽ विहनि कथा बना दै छी। हास्य-कणिकाक संग सभसँ मुख्य अवरोध छै जे अहाँक सुनाओल हास्य-कणिका घूमि-फिरि अहीं लग आबि जाएत, माने मौलिकता कतौ हेरा जाएत। हास्य-कणिका सेहो एक-दू पाँतीसँ आध-एक पृष्ठ धरिक होइत अछि। कथा-उपन्यासमे एकर समावेश कएल जा सकैत अछि मुदा लघुकथा एकर पलखति नै दैत अछि। मुदा कथा-उपन्यासमे जेना कएल जाइत अछि जे एकरा कोनो पात्रक मुँहसँ कहाबी वा कोनो आन प्रसंगसँ जोड़ि सार्थक बनाबी तँ से अहाँ लघुकथामे सेहो कऽ सकै छी। गल्प आख्यानसँ होइत अछि आ नैतिक शिक्षा, प्रेरक कथा आ मिस्टिक टेल्स सेहो लघुसँ दीर्घ रूप धरि होइत अछि। एकर लघु रूप विहनि कथा नै भेल सेहो नै।

विहनि कथामे जे त्वरित विचारक उपस्थापन देखल जाइत अछि से उपन्यासमे सेहो रहैत अछि। मुदा जे त्वरित विचारक उपस्थापन नै रहलासँ ओ विहनि कथा नै रहत सेहो गप नै। उनटे जखन विहनि कथाक समीक्षा करऽ लागब तखन समीक्षकक ध्यान स्थायी तत्व दिस हेबाक चाही नै कि त्वरित उपस्थापन दिस। त्वरित विचारक उपस्थापनक प्रति बेसी झुकाव ओकरा अहास्य-कणिका बना दैत अछि, ओ विहनि कथा आकि विहनि कथा तँ रहत मुदा श्रेष्ठ विहनि वा लघुकथा नै रहत। विहनि वा लघुकथा झमारि देत तँ ओ विहनि वा लघुकथा वा श्रेष्ठ विहनि वा लघुकथा भेल आ जे ओ झमारि नै सकत तँ ओ विहनि वा लघुकथा भेबे नै कएल- ई गप नै छै। कोनो त्वरित विचार आएल, ओकरा कागचपर लिखि लेलौं,

ऐ डरसँ जे कतौ बिसरा ने जाए- एतऽ धरि तँ ठीक अछि। मुदा हरबड़ा कऽ एकरा विहनि वा लघुकथा बना देबासँ पहिने विचारकेँ सीझऽ दिऔ। ओइमे की मिज्झर करब तँ ओइमे स्थायी तत्व आबि सकत तइपर मनन करू। ओना बिना सिझने जे झमारैबला विहनि वा लघुकथा लिखि देलौं तँ ओ विहनि वा लघुकथा तँ भेल मुदा श्रेष्ठ विहनि वा लघुकथा ओ सेहो भऽ सकत तकर सम्भावना कम। ई ओहिना अछि जेना कोनो झमकौआ गीत अपन प्रभाव बेसी दिन रखबे करत से निश्चित नै अछि तहिना कथाक ई स्वरूप ट्वेंटी-ट्वेंटी सन नै भऽ जाए तइपर विचार करऽ पड़त।
उपन्यास तँ एक उखड़ाहामे नै पढ़ल जा सकैए मुदा दीर्घकथा एक उखड़ाहामे पढ़ल जा सकैत अछि। एक उखड़ाहामे अहाँ कएकटा विहनि वा लघुकथा पढ़ि सकै छी। उपन्यासमे लेखक वातावरणक, प्लॉटक, व्यक्तिक जइ विशदतासँ वर्णन कऽ सकैए से दीर्घ कथामे सम्भव नै। ओ एकटा पक्षपर रहैए आ लघुकथा तँ एकटा घटनापर केन्द्रित रहैए आ ऐ क्रममे वातावरण आ व्यक्तिक जीवनक एकटा मोटामोटी विवरणात्मक स्केच मात्र खेंचि पबैए। विहनि कथामे वातावरण आ व्यक्तिक जीवनक एकटा मोटामोटी विवरणात्मक स्केच सेहो नै खेंचि सकै छी, से पलखति विहनि कथा अहाँकेँ नै देत, हँ तखन विहनि कथा सेहो एकटा पक्षपर वा एकटा घटनापर केन्द्रित रहैए। आ ई पक्ष वा घटना तेहन रहत जे लेखककेँ ललचबइत रहत जे एकरा स्वतंत्र रूपसँ लिखू, एकरा दीर्घ/ लघु कथा वा उपन्यासक भाग बना कऽ एकर स्वतंत्रता नष्ट नै करू।
तखन उपन्यासक प्लॉटसँ विहनि वा लघु कथाक प्लॉट सरल हएत, पक्ष वा घटनाक वर्णन शिल्पक साँचामे ढलैय्या केलौं आ पूर्ण विहनि वा लघुकथा बनि कऽ तैयार।

विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र

विहनि/ लघु कथा एक पक्ष वा घटनाक वर्णन अछि। अहाँ ओइ घटनाकेँ ३-४ पृष्ठमे सेहो लिखि सकै छी। जेम्स जॉयसक ‘‘डब्लाइनर” लघु-कथा संग्रहक सभ कथा एकटा घटनासँ अनचोके कोनो वस्तुक त्वरित ज्ञान दर्शबैत अछि। १५ टा शॉर्ट-स्टोरीक संग्रह जेम्स जॉयसक ‘‘डब्लाइनर” २०० पृष्ठक अछि आ मैथिली विहनि कथाक सभ विशेषतासँ युक्त अछि। तहिना खलील-जिब्रान आ एंटन चेखवक ढेर रास शॉर्ट-स्टोरी नमगर रहितो विहनि कथा अछि, मुदा मैथिलीक लघुकथा लेल सेहो ऐ विशेषताक खगता छै। नॉवेल जकरा बांग्ला आ मैथिलीमे उपन्यास आ मराठीमे कादम्बरी कहै छिऐ-क विस्तार बेशी होइ छै। मैथिलीमे ५०-६० पृष्ठसँ उपन्यास शुरू भऽ जाइ छै जे अंग्रेजीक शॉर्ट-स्टोरी / नोवेलेट/ नोवेला/ ऐ सभक ऊपरी सीमाक्षेत्रमे अबैत अछि। मुदा मैथिलीक स्थिति अंग्रेजीसँ फराक छै। ऐमे बालकथा कएक राति धरि चलैत अछि तँ पैघ लोकक कथा मिनटमे सेहो खतम भऽ जाइत अछि। मैथिलीक सन्दर्भमे ई तथ्य आब सोझाँ आबि गेल अछि जे विहनि कथाक सीमा एक पृष्ठ, लघु कथाक तीन-चारि पृष्ठ, दीर्घकथाक १५-२० पृष्ठ आ उपन्यासक ६०-५०० पृष्ठ अछि।

विहनि कथाक समीक्षा कोना करी? विहनि कथामे कोनो कथा पूर्ण रूपसँ कहल गेल तँ फेर ओ विहनि कथा नै कहाएत। हँ जँ ओइमे एकटा घटनाक शृंखलाक वर्णन एकटा कथ्य कहक लेल आवश्यक अछि तँ शृंखला पूर्ण हेबाक चाही। ऐ शृंखलाक कड़ी कनेक नमगर भऽ सकैए। त्वरित उपस्थापनाक हरबड़ी ऐ शृंखलाकेँ कमजोर कऽ सकैए। सदिखन उल्टा धार बहाबी आ त्वरित

उपस्थापना आनी- ई पद्धति किछु गणमान्य विहनि कथा लेखकक फार्मूला बनि गेल अछि। एकाध-दूटा विहनि कथामे ई सिनेमाक “आइटम गीत” सन सोहनगर लगैत अछि मुदा फेर समीक्षकक दृष्टि एकरा पकड़ि लैत अछि, कारण ई प्रो-एक्टिव हेबाक साती रिएक्टिव बनि जाइत अछि। स्थायी प्रभाव ऐसँ नै आबि पबै छै, विहनि कथा लेखकक प्रतिभाक कमी ऐमे प्रतीत होइ छै। विहनि कथा वएह श्रेष्ठ हएत जे एकटा घटनाक शृंखलाक निर्माण करत आ अपन निर्णय सुनेबा लेल पाठककेँ छोड़ि देत। फरिछेबाक पलखति विहनि कथाकेँ नै छै, मुदा तकर माने ई नै जे दू-चारि पाँतीमे बात कएल जाए। मुदा लेखक जौँ दू-चारि पाँतीक गपकेँ विहनि कथा कहै छथि तँ समीक्षक ओकरा विहनि कथा मानबा लेल बाध्य छथि मुदा ओ श्रेष्ठ विहनि कथा हएत तकर सम्भावना घटि जाइत अछि।

विहनि कथाक वर्ण्य विषय मात्र चलैत-फिरैत घटना नै अछि। विहनि कथा-लेखककेँ बच्चा लेल, नैतिक शिक्षापर आ धार्मिक विषयपर सेहो विहनि कथा लिखबाक चाही। ट्रेनमे बसमे जाइ छी, घरमे दलानपर घूरतर गप करै छी आ तकर अनुभव मात्र विहनि कथामे आबि रहल अछि। सामाजिक आ आर्थिक समस्या सेहो एकर स्थायी वर्ण्य विषय भऽ सकैत अछि। राजनैतिक प्रश्न आ प्राकृतिक आपदाकेँ वर्ण्य विषय बनाएल जा सकैत अछि। विहनि कथा समीक्षक समीक्षा करबा काल पौराणिक रूपमे शिव पुराणमे सभसँ पैघ शिव आ गरुड़ पुराणमे सभसँ पैघ गरुड़ ऐ तरहक समीक्षा नै करथि। माने ई नै होमऽ लागए जे, जे अछि से विहनि कथा। जेना उपन्यासमे लेखककेँ अपन पूर्ण प्रतिभा देखेबाक लेल पलखतिक अभाव नै रहै छै से लघु कथामे नै रहै छै आ विहनि कथामे तँ से आरो कम रहै छै। मुदा विषयक विस्तार कऽ

पाठकक माँगकेँ पूर्ण कएल जा सकैत अछि। कथोपकथनक गुंजाइश कम राखि वा कोनो उपस्थापनासँ पहिने राखि विहनि कथा आ लघु कथाकेँ सशक्त बनाओल जा सकैत अछि, अन्यथा ओ एकांकी वा नाटक बनि जाएत। विहनि कथाक समावेश लघुकथा-उपन्यासमे भऽ सकैए मुदा विहनि कथामे हास्य-कणिकाक समावेश नै हुअए तखने ओ समीक्षाक दृष्टिसँ श्रेष्ठ हएत, कारण एक तँ कम जगह, तइमे जे कथोपकथन आ हास्य कणिका घोसियेलौं तखन ओकर प्रभाव दीर्घजीवी नै हएत।

बूच जीक कविताक- ***मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो*** **अध्ययन**

जेठी करेह:

बूच जीक कविता **जेठी करेह** कवितामे कवि कहै छथि जे ई भोरमे उधिआइ अछि, बर्खा हेठ भेलोपर उपलाइत अछि। ओकर खतराक बिन्दु बड्ड ऊपर छै तखन ओ किए अकुलाइत अछि। आ आखिरीमे कहै छथि जे बान्ह तोड़ि ई प्रलय मचाओत से बुझाइत अछि। ई भेल ऐ **कविताक सामान्य पाठ**। आब एतऽ एकरा **संरचनावादी दृष्टिकोण**सँ देखी तँ लागत जे करेह सवेरे उधिआइ अछि तँ आशा करू जे आन बेरमे ई नै उधिआइत हएत। बरखा हेठ भेने उपलाइत अछि मुदा से नै हेबाक चाही। इन्होर पानिक चमकब, मोरपर भौरी देब आ तकर परिणाम जे डीहक करेजकेँ ई अपनामे समा लैत अछि। ओकर रेतक बढ़लासँ कविक धैर्य चहकै छन्हि। आब कने संरचनावादसँ हटि कऽ एकर **ऐतिहासिक विश्लेषण**पर आउ। ई नव युगक लेल एकटा नव अर्थ देत। खतराक बिन्दु जे कविक समएमे ऊँचगर लगैत हएत आब बान्हक बीचमे भेल जमा धारक मवादक चलते ओतेक ऊँच नै रहि गेल। से नव पीढ़ी लेल कविक कविता कविसँ फराक एकटा नव स्वरूप लऽ लैत अछि। आब कने संरचनावादसँ हटि कऽ **विखण्डनवाद** दिस आउ। विखण्डनवादी कहत जे संरचनावादीक ध्रुव दार्शनिक स्वरूप लैत अछि। बर्खा हेठ भेलै, तैयो उपलायब, बान्ह बनबैबला

इंजीनियरक करेहकेँ बान्हबाक प्रयासक बुरबकीक रूप लेब आ कविक करेह द्वारा बान्ह तोड़ि प्रलय मचेबाक भविष्यवाणी स्वयं कविक ध्रुवीकरणक स्थायी वा क्षणिक हेबापर प्रश्नचिन्ह लगेबाक प्रमाण अछि। आब फेर कने कविताक ऐतिहासिकतापर जाउ। **जादू-वास्तविकतावादी** साहित्यमे भूतकालमे गेलापर हम देखै छी जे ६०क दशकमे बान्ह बनेबाक भूत सवार रहै, बान्ह, ऊँच आ चाकर, जे धारकेँ रोकि देत आ मनुक्ख लेल की-की फाएदा ने करत। ओइ स्थितिमे जादू-वास्तविकताबला साहित्यक पात्र लग ई कविता जाएत तँ ओ ऐ कविताक तेसरे अर्थ लगाएत। कविक अस्तित्व ओतऽ खतम भऽ जाएत आ शब्दशास्त्र अपन खेल शुरू करत। जादू-वास्तविकताबला साहित्यक ओ पात्र जे भविष्यमे जीयत तकरा लेल सेहो ई एकटा अलगे अर्थ लेत, ओ धारक खतराक निशानक ऊँच होइबला गप बुझबे नै करत आ कविक कविताक भावक ताकिमे रहत। मुदा **विखण्डनवाद** तकरा बाद अपने जालमे फँसि जाएत, बहुत रास बात नै रहत मुदा बहुत रास बात रहत। बरखा रहत, धार सेहो परिवर्तित रूपमे रहबे करत, रौदमे ओकर पानि इन्होर होइते रहत। उधियेनाइ आ उपलेनाइ रहबे करत।

स्वागत गान:

स्वागत गानक सामान्य पाठ- कवि सभक स्वागत कऽ रहल छथि मुदा मिथिलाक उपटैत धरतीक करुण क्रन्दनक बीच उल्लासक गीत कोन हएत। भ्रमर पियासल, फलक गाछ मौलायल तखन ई समारोही गोष्ठीसँ की हएत? कविताक संग लाठी आ रसक संग खोरनाठी लिअए पड़त। कविताक नीचाँमे सूचना अछि- विद्यापति स्मृति पर्व समारोह १९८४, ग्राम-बैद्यनाथपुर, प्रखंड-रोसड़ा, जिला-

समस्तीपुरमे आगत अतिथिक स्वागत। ओ कालखण्ड मिथिलासँ पड़ाइनक प्रारम्भ छल। हाजीपुरमे गंगा पुल बनि गेल छल। विकासक प्रतिमान लागल जेना विफल भऽ गेल। पैघ बान्हक प्रति मोहभंग भऽ गेल छल। कृषिक आ कृषकक दुर्दशाक लेल बाढ़िक विभीषिका छल तँ स्थानीय फसिल आधारित औद्योगीकरण निपत्ता छल आ शिक्षाक अभियान कतौ देखबामे नै आबि रहल छल। आ ताइ स्थितिमे समारोही गोष्ठीक स्वागतक भार कविजी सम्हारने रहथि। **ध्वनि सिद्धान्त:** आनन्दवर्धन ध्वन्यालोकमे साहित्यक उद्देश्य अर्थकेँ परोक्ष रूपेँ बुझाएब वा अर्थ उत्पन्न करब कहै छथि। ई सिद्धान्त दैत अछि परोक्ष अर्थक संरचना आ कार्य, रस माने सौन्दर्यक अनुभव आ अलंकारक सिद्धान्त। आनन्दवर्धन काव्यक आत्मा ध्वनिकेँ मानै छथि। ध्वनि द्वारा अर्थ तँ परोक्ष रूपेँ अबैत अछि मुदा ओ अबैत अछि सुसंगठित रूपमे। आ ऐसँ अर्थ आ प्रतीक दूटा सिद्धान्त बहार होइत अछि। ऐसँ रसक प्रभाव उत्पन्न होइत अछि। ऐसँ रस उत्पन्न होइत अछि। न्याय आ मीमांसा ऐ सिद्धान्तक विरोध केलक, ई दुनू दर्शन कहैत अछि जे ध्वनिक अस्तित्व कतौ नै अछि, ई परिणाम अछि अनुमानक आ से पहिनहियेसँ लक्षणक अन्तर्गत अछि। आ से सभ शब्द द्वारा वर्णित हएब सम्भव नै अछि। **स्वागत गानक ध्वनि सिद्धान्तक हिसाबसँ पाठ:** *विद्यापति शिव स्वरूप मृत्युंजय मऽरल छथि* कहि कवि अर्थ आ प्रतीक दुनू सोझाँ अनै छथि। ध्वनि सिद्धान्तक न्याय दर्शन विरोध केलक मुदा उदयनक गाम करियनक कवि बूच जी दार्शनिक नै, कवि छथि। ओ ध्वनिक जोरगर संरचना सोझाँ अनै छथि- *हमरा सबहक अभाग अजरो भऽ जऽड़ल छथि,* आ *मात्र ई समारोही गोष्ठी सँ की हेतै ?* आगाँ ओ कहै छथि- *काव्य पाठ करू मुदा कान्ह पर लिअ लाठी, एक हाथ रसक श्रोत दोसर मे*

खोर नाठी। ऐ प्रतीक सभसँ भरल ई कविता सुगठित रूपे आगाँ बढ़ैत अछि आ अभ्यागतक स्वागत करैत अछि। **मार्क्सवादी दृटिकोण**सँ देखलापर लागत जे कविक काजकेँ ऐ कवितामे काव्यपाठसँ आगाँ भऽ देखल गेल अछि। ऐमे सकारबाक भावक संग ओकरा फुसियेबाक, पुरान आ नव, आ विकास आ मरण दुनूक नीक जकाँ संयोजन भेल अछि। स्वागत गान अपन परिस्थितिसँ कटि कऽ आह-बाह करऽ लगैत तँ मार्क्सवादी दृष्टिकोणसँ ई निम्न कोटिक कविता भऽ जाइत (जकर भरमार मैथिलीक स्वागत आ ऐश्वर्य गान गीत सभमे अछि), मुदा कवि एकरा एकटा गतिशील प्रक्रियाक अंग बना देलन्हि आ ई मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ स्वागत गान बनि गेल।

बेटी बनलि पहाड़:

बेटी बनलि पहाड़ कविताक सामान्य पाठ: दुलरैतिन बेटी घेंटक घैल बनल छथि। बेटी एलीह तँ उड़नखटोला चढ़ि कऽ मुदा हरि गरुड़ त्यागि कार माँगि रहल छथिन्ह। पैंतीस ग्राम सोना पुड़ेलन्हि मुदा आब बियाह रातिक खर्चा चाही आ बरियाती दस गाही एता; सौँसे बल्ब जड़ि रहल अछि मुदा माझे ठाम अन्हार अछि। दशरथ एको पाइ नै मंगलन्हि, रामो किछु नै बजला। इतिहास तँ कृष्णक लव मैरेजक छल मुदा तइसँ की। जनक वर्तमानमे हाहाकार कऽ रहल छथि। बेटाक कंठ बाप पकड़ने अछि आ घरे-घर बूचड़खाना बनल अछि आ गामे-गाम बजार लागल अछि। **बेटी बनलि पहाड़ कविताक समाजशास्त्रीय समीक्षा पद्धतिक दृष्टिसँ पाठ:** ई कविता काटर प्रथाक विरोधक कविता अछि। समाजमे ओइ कालमे

(अखनो) काटर प्रथाक कारण उड़नखटोलापर चढ़ि कऽ आयलि दुलरैतिन बेटीक बाप अपस्यांत छथि।

करूण गीत:

करूण गीत कविताक सामान्य पाठ: कोकिलक करुण गीत सुनि श्रवित लोचनसँ कुसमित कानन देखब! सुवर्णक सौर्य शिखरपर शान्ति सागरक सुलभ जीत! जहिना किछु आलिंगन करै छी अनेको वक्रशूल भोका जाइत अछि। सुषमा दू क्षणक लेल आयलि, (आ चलि गेलि!) प्रेमक मधु तीत भऽ गेल। रजनीक रुदन विगलित प्रभात! **करूण गीत कविताक रूपवादी दृष्टिकोणसँ पाठ:** *कुसुमित काननक श्रवित लोचन द्वारा देखब, श्रृंगार सेज पर ज्वलित मसानक रौद्र रूपक आएब आ सुवर्णक शौर्य शिखर पर - शांति सागरक सुलभ जीत* कैँ देखू। भाषाक अनभुआर पक्षकैँ कवि नीक जकाँ उपयोग करै छथि। आ अहीसँ हुनकर कवितामे कवित्व आबि जाइत अछि। विरोधी शब्द सभक बाहुल्य आ संयोजनक अनभुआर प्रकृति शब्दालंकारसँ युक्त भाषा ऐ कविताकेँ विशिष्ट बनबैत अछि। फूलक शूल सन ढुकब आ एहने आन संयोजन ऐ कविताकेँ रूपवादी दृष्टिकोणसँ श्रेष्ठ बनबैत अछि।

गामे मोन पड़ैए:

गामे मोन पड़ैए कविताक सामान्य पाठ: गाममे रोटी एकोण रहए आ बथुओ साग अनोन रहए मुदा तैयो कलकत्तामे गामे मोन पड़ि रहल अछि। करेहक पानि पटा कऽ मोती उपजाएब तँ बच्चा सभ बिलटत? हुगलीक बाबू रहब नीक आकि कमला कातक जोन रहब? ईडेन गार्डनसँ नीक कमला कातक बोन अछि, पति पत्नीकेँ ईडेन गार्डनमे माला पहिरा रहल छथि मुदा कमला कातक बोनमे

तिरहुतनी अपन भोला लेल धतूर अकोन ताकि रहल छथि! **नारीवादी दृष्टिकोणसँ गामे मोन पड़ैए कविताक पाठ:** प्रवासक कविता अछि ई। तिरहुतनी अपन भोला लेल धतूर अकोन ताकि रहल छथि, आ भोला प्रवासमे छथि। **अस्तित्ववादी** दृष्टिकोणसँ देखी तँ ई भोला अपन दशा लेल, असगर जीबा लेल, चिन्ता लेल अपने जिम्मेदार छथि।

सोन दाइ:

सोन दाइ कविताक सामान्य पाठ: सोन दाइक जीवनमे ने हास रहतन्हि आ ने विलास, मुदा से किए? बाल वृन्द जा रहल छथि, नव युवको चलल छथि आ तकरा बाद बूढ़-सूढ़। तैयो किए विश्वास छन्हि सोन दाइकेँ? ऐ सभक उत्तर आगाँ जा कऽ भेटैत अछि, देसकोस बिसरि ओ प्रवास काटि रहल छथि। आ जौँ-जौँ उमेर बढ़तै कहिया धरि सोन दाइक घरमे वास हेतै। **नारीवादी दृष्टिकोणसँ सोन दाइ कविताक पाठ:** नारीक लेल वएह सिद्धान्त, किए ने ओ काव्येक सिद्धान्त हुअए, जे पुरुष केन्द्रित समाजमे पुरुष लोकनि द्वारा बनाओल गेल अछि, समीचीन नै अछि। सोन दाइ देसकोस बिसरि ककरा लेल प्रवास काटि रहल छथि?

अकाल:

अकाल कविताक सामान्य पाठ: अकालक वर्णनमे कवि नाङरिमे भूखक ऊक बान्हि ओकर चारपर ताल ठोकबाक वर्णन करै छथि। अनावृष्टिसँ अकाल आ तइसँ महगीक आगमन भेल, तइसँ जड़ैत गामक अकास लाल भऽ गेल। भारतमे लंका सन मृत्युक ताण्डव शुरू भेल अछि मुदा ऐबेर **विभीषण**क घर सेहो नै बाँचत कारण

ओकर मुंडमाल डोरी-डोरीसँ बान्हल अछि। माए भरि-भरि पाँज कऽ धरती पकड़ि रहल छथि। **दशानन** अपन बीसो आँखि ओनारि माथ हिला रहल छथि। **औचित्य सिद्धान्त:** क्षेमेन्द्र औचित्यविचारचर्चामे औचित्यकेँ साहित्यक मुख्य तत्व मानलन्हि। आ औचित्य कतऽ हेबाक चाही? ई हेबाक चाही पद, वाक्य, प्रबन्धक अर्थ, गुण, अलंकार, रस, कारक, क्रिया, लिंग, वचन, विशेषण, उपसर्ग, निपात माने फाजिल, काल, देश कुल, व्रत, तत्व, सत्व माने आन्तरिक गुण, अभिप्राय, स्वभाव, सार-संग्रह, प्रतिभा, अवस्था, विचार, नाम आ आशीर्वादमे। कंपायमान अछि ई ब्रह्माण्ड आ ई अछि कंपन मात्र। कविता वाचनक बाद पसरैत अछि शान्ति, शान्ति सर्वत्र आ शान्ति पसरैत अछि मगजमे। **अकाल कविताक औचित्य सिद्धान्तक हिसाबसँ पाठ:** *ई अकाल नहि, महाकाल अछि, भूखक ऊक बान्हि नाड़रि सँ, चारे पर ठोकैत ताल अछि* मिथिलाक काल-देशमे अकालक ई वर्णन कविक कविताक औचित्य अछि। रावण तँ उपटबे करत, विभीषण सेहो नै बाँचत।

तोहर ठोर:

तोहर ठोर कविताक सामान्य पाठ: पानक ठोर आ सुन्नरिक ठोर। सुन्नरि द्वारा बातक चून लगाएब आ कऽथक सन लाल बुन्न कपोल सजाएब। मुदा प्रेमक पुंगी कतए? भोरक लाली सुन्नरिक ठोर सन, बिनु सुन्नरि व्याकुल साँझ जकाँ। बधिक जे बनत सुन्नरिक वर तँ हम बनब विखण्डित राहु। स्वर्गोमे सुधा कम्मे अछि, तहिना सुन्नरिक ठोर सेहो कतऽ पाबी। सकरी मिल महान बनत जे हम विश्वकर्मासँ विज्ञान सीखब। आ ओइ मिलसँ बहार हएत माधुर्य। कुसियारक पाकल पोर सन सुन्नरिक ठोर अछि। पुनर्जन्ममे सेहो धान आ चिष्टान्न बनि सुन्नरि हम अहाँक लग आएब। मुदा एतबा

बादो शब्दसँ उद्देश्य कहाँ प्रकट भेल। **अलंकार सिद्धान्तक हिसाबसँ तोहर ठोर कविताक पाठ:** भामह अलंकारकेँ समासोक्ति कहै छथि जे आनन्दक कारण बनैए। दण्डी आ उद्भट सेहो अलंकारक सिद्धान्तकेँ आगाँ बढ़बै छथि। अलंकारक मूल रूपसँ दू प्रकार अछि, शब्द आ अर्थ आधारित आ आगाँ सादृश्य-विरोध, तर्कन्याय, लोकन्याय, काव्यन्याय आ गूढ़ार्थ प्रतीति आधारपर। मम्मट ६१ प्रकारक अलंकारकेँ ७ भागमे बाँटै छथि, उपमा माने उदाहरण, रूपक माने कहबी, अप्रस्तुत माने अप्रत्यक्ष प्रशंसा, दीपक माने विभाजित अलंकरण, व्यतिरेक माने असमानता प्रदर्शन, विरोध आ समुच्चय माने संगबे। बातक चून लगाएब अप्रस्तुत, कऽथक सन लाल बुन्न कपोल, पानक ठोर आ सुन्नरिक ठोर, भोरक लाली सुन्नरिक ठोर सन, कुसियारक पाकल पोर सन सुन्नरिक ठोर ई सभ उपमा कवि द्वारा प्रयुक्त भेल अछि। मुदा *कतऽ छह प्रेमक पुंगी हूक?* मे सादृश्य-विरोध अछि। *अहाँ बिनु व्याकुल वाटक माँझ* मे रूपक प्रयुक्त भेल अछि। **काव्यक भारतीय विचार:** मोक्षक लेल कलाक अवधारणा, जेना नटराजक मुद्रा देखू। सृजन आ नाश दुनूक लय देखा पड़त। स्थायी भावक गाढ़ भऽ सीझि कऽ रस बनब- आ ऐ सन कतेक रसक **सीता** आ **राम** अनुभव केलन्हि (देखू वाल्मीकि रामायण)। **कृष्ण** भारतीय कर्मवादक शिक्षक छथि तँ संगमे रसिक सेहो। कलाक स्वाद लेल रस सिद्धांतक आवश्यकता भेल आ भरत नाट्यशास्त्र लिखलन्हि। अभिनवगुप्त आनन्दवर्धनक ध्यन्यालोकपर भाष्य लिखलन्हि। भामह ६अम शताब्दी, दण्डी सातम शताब्दी आ रुद्रट ९अम शताब्दी एकरा आगाँ बढ़ेलन्हि। **रस सिद्धान्तक हिसाबसँ तोहर ठोर कविताक पाठ: रस सिद्धान्त:भरत:-** नाटकक प्रभावसँ रस उत्पत्ति होइत अछि। नाटक कथी लेल?

नाटक रसक अभिनय लेल आ संगे रसक उत्पत्ति लेल सेहो। रस कोना बहराइए? रस बहराइए कारण (विभाव), परिणाम (अनुभाव) आ संग लागल आन वस्तु (व्यभिचारी)सँ। स्थायीभाव गाढ़ भऽ सीझि कऽ रस बनैए, जकर स्वाद हम लऽ सकै छी। **भट्ट लोलट:-** स्थायीभाव कारण-परिणाम द्वारा गाढ़ भऽ रस बनैत अछि। अभिनेता-अभिनेत्री अनुसन्धान द्वारा आ कल्पना द्वारा रसक अनुभव करै छथि। लोलट कविकेँ आ संगमे श्रोता-दर्शककेँ महत्व नै दै छथि। **शौनक:-** शौनक रसानुभूति लेल दर्शकक प्रदर्शनमे पैसि कऽ रस लेब आवश्यक बुझै छथि, घोड़ाक चित्रकेँ घोड़ा सन बूझि रस लेबा सन। **भट्टनायक** कहै छथि जे रसक प्रभाव दर्शकपर होइत अछि। कविक भाषाकेँ ओ भिन्न मानै छथि। रससँ श्रोता-दर्शकक आत्मा, परमात्मासँ मेल करैए। रसक आनन्द अछि स्वरूपानन्द। आ ऐसँ होइत अछि आत्म-साक्षात्कार। रस सिद्धान्त श्रोता-दर्शक-पाठक पर आधारित अछि। ई श्रोता-दर्शक-पाठकपर जोर दैत अछि। बार्थेज संरचनावाद-उत्तर-संरचनावादक सन्दर्भमे लेखकक उद्देश्यसँ पाठकक मुक्तिक लेल लेखकक मृत्युकेँ आवश्यक मानै छथि- लेखकक मृत्यु माने लेखक रचनासँ अलग अछि आ पाठक अपना लेल अर्थ तकैत अछि। *लगौलह बातक पाथर चून* / आ *सजौलह कऽथ कपोलक खून* / विभाव अछि आ ऐ कारणसँ *देखि कऽ लहरल हमर करेज* अनुभाव माने परिणाम बहार होइत अछि। **स्फोट सिद्धांत:** भर्तृहरीक वाक्यपदीय कहैत अछि जे शब्द आकि वाक्यक अर्थ स्फोट द्वारा संवाहित अछि। वर्ण स्फोटसँ वर्ण, पद स्फोटसँ शब्द आ वाक्य स्फोटसँ वाक्यक निर्माण होइत अछि। कोनो ज्ञान बिनु शब्दक सम्बन्धक सम्भव नै अछि। ई भारतीय दर्शनक ज्ञान सिद्धान्तक एकटा भाग बनि गेल। अर्थक संप्रेषण अक्षर, शब्द आ वाक्यक उत्पत्ति बिन सम्भव अछि। स्फोट अछि

शब्दब्रह्म आ से अछि सृजनक मूल कारण। अक्षर, शब्द आ वाक्य संग-संग नै रहैए। बाजल शब्दक फराक अक्षर अपनामे शब्दक अर्थ नै अछि, शब्द पूर्ण हेबा धरि एकर उत्पत्ति आ विनाश होइत रहै छै। स्फोटमे अर्थक संप्रेषण होइत अछि मुदा तखनो स्फोटमे प्राप्ति समए वा संचारक कालमे अक्षर, शब्द वा वाक्यक अस्तित्व नै भेल रहै छै। शब्दक पूर्णता धरि एक अक्षर आर नीक जकाँ क्रमसँ अर्थपूर्ण होइए आ वाक्य पूर्ण हेबा धरि शब्द क्रमसँ अर्थपूर्ण होइए। सांख्य, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा आ वेदान्त ई सभ दर्शन स्फोटकेँ नै मानैत अछि। ऐ सभ दर्शनक मानब अछि जे अक्षर आ ओकर ध्वनि अर्थकेँ नीक जकाँ पूर्ण करैत अछि। फ्रांसक जैक्स डेरीडाक विखण्डन आ पसरबाक सिद्धान्त स्फोट सिद्धान्तक लग अछि। **स्फोट सिद्धांतक आधारपर तोहर ठोर कविताक पाठ:** आब उदयनक करियनक धरतीपर रहबाक अछैतो न्याय सिद्धान्तक स्फोट सिद्धान्तकेँ नै मानब कविक कविताकेँ नै अरघै छन्हि। *मने मे रहल मनक सब बात* कहि ओ *अलभ्य चित चोर* सँ सुन्नरिक ठोरक तुलना कऽ दै छथि।

उदयनक गामक कवि बूच कहै छथि *भऽ रहल वर्ण - वर्ण निःशेष, शब्द सँ प्रगटल नहि उद्येश्य;* एतऽ शब्दसँ नै मुदा स्फोटसँ अर्थक संप्रेषण कवि द्वारा तोहर ठोर आ ऐ संग्रहक आन कविता सभमे जाइ तरहेँ भेल अछि, से *संसारक सभसँ लयात्मक आ मधुर भाषा मैथिली* मे (यहूदी मेनुहिनक शब्दमे) विद्यापतिक बादक सभसँ लयात्मक कविक रूपमे बूचजी केँ प्रस्तुत करैत अछि आ मैथिली कविताकेँ ऐ रूपमे फेरसँ परिभाषित करैत अछि।

विदेशी पूँजी निवेशक भाषापर (मैथिली सहित) प्रभाव

विदेशी पूँजीक भारतमे सोझ निवेश दोसर देशक फर्मसँ मिलि कऽ वा ओकर सम्पत्ति वा ओकर स्टॉक कीनि कऽ होइत अछि। ओ ऐ लेल स्वॉट अनेलिसिस करै छथि आ अपन प्रवेशक लेल अपन कम दाममे उत्पादन आ सेहो तीव्र गतिसँ कएक तरहक उपाय द्वारा करबाक क्षमताकेँ देखैत से करै छथि। कोन देशमे विदेशी पूँजी निवेश हएत से किछु गपपर निर्भर करैत अछि। चीनमे भारतक तुलनामे बेशी विदेशी पूँजी आएत कारण भारतमे कार्य करबा लेल ढेर रास लोकतंत्रीय प्रक्रिया सभ छै जे उत्पादक दाम बढ़बै छै। ई एना बूझि सकै छी जापान आ स्विटजरलैण्ड आदि देशमे विदेशी पूँजी कम आएल बनिस्पत स्पेनक। आ ऐ तरहेँ तुलना करी तँ नेपालमे भारतक अपेक्षा तुलनात्मक पूँजी निवेश बेशी आएत। मैथिली आ आन भाषामे विदेशी पूँजी निवेशक आगमनक सम्भावना देखी तँ तुलनात्मक रूपमे मैथिलीमे बेशी पूँजी आएत, नेपाली वा

हिन्दीक तुलनामे। आ मैथिलीक सन्दर्भमे नेपालक मैथिलीक भविष्य भारतक मैथिलीक भविष्यक तुलनामे बेशी नीक बूझि पड़त जँ विदेशी पूँजीक गप आएत।

मुदा विदेशी पूँजी मात्र प्रबन्धन वा अर्थशास्त्रक उपरोक्त सैद्धांतिक प्रतिफल टा नै अछि। एतऽ हम राजनैतिक स्थिरता आ सामाजिक संकट दुनूकेँ सोझाँ पबै छी। भारतक भयंकर लाइसेंस फीस जेना सूचना आ प्रौद्योगिकीक क्षेत्रमे मैथिलीक दुर्दशाक लेल जिम्मेवार अछि से नेपालमे नै अछि। से ओतऽ रेडियो आ टी.वी.पर मैथिली नीक दशामे अछि। मुदा राजनैतिक अस्थिरता कखनो काल नेपालमे पूँजी निवेशमे बाधक भऽ जाइए। तहिना नेपालक मैथिलीक सामाजिक आधार विस्तृत अछि मुदा भारतक तेहन नै अछि। से भारतमे मैथिलीक लेल पूँजी निवेशक ई ऋणात्मक गुणक अछि।

जेना ऊपर कहने छी जे कोनो विदेशी पूँजी निवेश हएत तँ पाइ लगेनहार पहिने स्वॉट एनेलिसिस करत।

मैथिलीक सन्दर्भमे स्वॉट एनेलिसिस:-

मैथिलीक स्वॉट Strenghth- Weakness- Opportunity-Threat (SWOT) एनेलेसिस (हमर गुरुजी चमू कृष्ण शास्त्री जीक ऐमे बड़ पैघ योगदान छन्हि।)

मैनेजमेन्टमे एकटा विषय छै स्वॉट अनेलिसिस। मैथिलीकेँ ऐ कसौटीपर कसै छी।

S- Strenghth- शक्ति, सामर्थ्य, बल ___

मैथिली लेल हृदएमे अग्नि छन्हि, से सभक हृदएमे, परस्पर एक दोसराक विरोधी किए ने होथु। जनक बीचमे ऐ भाषाक आरोह, अवरोह आ भाषिक वैशिष्ट्यकेँ लऽ कऽ आदर अछि आ ऐ मे मैथिली नै बजनिहार भाषाविद् सम्मिलित छथि। आध्यात्मिक आ सांस्कृतिक महत्वक कारण सेहो मैथिली महत्वपूर्ण अछि। ऐ भाषामे एकटा आन्तरिक शक्ति छै। बहुत रास संस्था, जइमे किछु जातिवादी आ सांप्रदायिक संस्था सेहो सम्मिलित अछि, एकर विकास लेल तत्पर अछि। ऐ भाषाक जननिहार भारत आ नेपाल दू देशमे तँ रहिते छथि आब आन-आन देश-प्रदेशमे सेहो पसरल छथि।

W- Weakness- न्यूनता, दुर्बलता, मूर्खता ___

प्रशंसा परम्परा जइमे दोसराक निन्दा सेहो सम्मिलित अछि, एकरे अन्तर्गत अबैत अछि- माने आत्मप्रशंसाक।

परस्पर प्रशंसा सेहो ऐमे शामिल अछि। सरकारपर आलम्बन, प्राथमिकताक अज्ञान- जकर कारणसँ महाकवि बनबा/ बनेबा लेल कवि समीक्षक जान अरोपने छथि- जखन भाषा मरि रहल अछि। कार्ययोजनाक स्पष्ट अभाव अछि आ जेना-तेना किछु मैथिली लेल कऽ देबा लेल सभ व्यग्र छथि, कऽ रहल छथि। स्वयं मैथिली नै बाजि बाल-बच्चाकेँ मैथिलीसँ दूर रखबाक जेना अभियान चलल अछि आ ऐमे मीडिया, कार्टून आ शिक्षा-प्रणालीक संग एक्के खाढ़ीमे भेल अत्यधिक प्रवास अपन योगदान देलक अछि। मैथिलीक कार्यकर्ता लोकनिक कएक ध्रुवमे बँटल रहबाक कारण समर्थनपरक

लॉबिइंग कर्ताक अभाव अछि। मैथिलीकेँ ऐमे की लाभक बदला अपन/ अप्पन लोकक की लाभ ऐ लेल लोक बेशी चिन्तित छथि। मैथिली छात्रक संख्याक अभाव। उत्पाद उत्तम रहला उत्तर सेहो विक्रय कौशलक आवश्यकता होइ छै। मैथिलीमे उत्तम उत्पादक अभाव तँ अछिए, विक्रय कौशलक सेहो अभाव अछि।

O- Opportunity- अवसर, योग, अवकाश ___

विशिष्ट विषयक लेखनक अभाव, मात्र कथा-कविताक सम्बल। मैथिलीमे चित्र-शृंखला, चित्रकथा, विज्ञान, समाज विज्ञान, आध्यात्म, भौतिक, रसायन, जीव, स्वास्थ्य आदिक पोथीक अभाव अछि। ताड़ग्रन्थक संगणकक उपयोग कऽ प्रकाशन नै भऽ रहल अछि। छात्र शक्तिक प्रयोग न्यून अछि। संध्या विद्यालय आ चित्रकला-संगीतक माध्यमसँ शिक्षा नै देल जा रहल अछि। दूरस्थ शिक्षाक माध्यमसँ/ अन्तर्जालक माध्यमसँ मैथिलीक पढ़ाइक अत्यधिक आवश्यकता अछि। मैथिलीमे अनुवाद आ वर्तमान विषय सभपर पुस्तक लेखन आ अप्रकाशित ताड़ ग्रन्थ सभक प्रकाशनक आवश्यकता अछि। मैथिलीक माध्यमसँ प्रारम्भिक शिक्षाक आवश्यकता अछि। प्रवासी मैथिल लेल भाषा पाठन-लेखन-सम्पादन पाठ्यक्रमक आवश्यकता अछि।

T- Threat- भीषिका, समभाव्यविपद् ___

हताशा, आत्महीनता, शिक्षासँ निष्कासन, पारम्परिक पाठशालामे शिक्षाक माध्यमक रूपमे मैथिलीक अभाव, विरल शास्त्रज्ञ, ताड़पत्रक उपेक्षा आ विदेशमे बिक्री, भाषा शैथिल्य, सांस्कृतिक प्रदूषण आ

परिणामस्वरूप भाषा प्रदूषण, मुख्यधारासँ दूर भेनाइ आ मात्र दू जातिक भाषा भेनाइ, शिक्षक मध्य ज्ञान स्तरक ह्रास, राजनैतिक स्वार्थवश मैथिलीक विरोध ई सभ विपदा हमरा सभक सोझाँ अछि।

ई सभटा ऊपरवर्णित बिन्दु प्रबन्धन-विज्ञानक कार्य-योजनाक विषय अछि आ भाषणक नै कार्यक आवश्यकता अछि। सम्भाषण, मैथिली माध्यमसँ पाठन, नव सर्वांगीन साहित्यक निर्माण लेल सभकेँ एकमुखी, एक स्तरीय आ एक यत्नसँ प्रयास करऽ पड़त। धनक अभाव तखने होइत अछि जखन सरकारी सहायतापर आस लगेने रहब। सार्वजनिक सहायताक अवलम्ब धरू, दाताक अभाव नै स्वीकारकर्ताक अभाव अछि।

यूनेस्को कहैत अछि जे भारत विश्वक ६अम सभसँ पैघ पुस्तक प्रकाशक अछि जतऽ अंग्रेजी लगा कऽ २५ मान्यता प्राप्त भाषामे पोथी प्रकाशन होइ छै। अंग्रेजीक पोथी प्रकाशनमे भारत संयुक्त राज्य अमेरिका आ ग्रेट ब्रिटेनक बाद तेसर स्थानपर अछि। मुदा चौबीस मुख्य भाषामे सँ यूनेस्कोक अनुसार पुस्तक प्रकाशन लेल मात्र १८ भाषा महत्वपूर्ण अछि आ ऐ १८ भाषामे मैथिली नै अछि। फेडरेशन ऑफ इण्डियन पब्लिशर्सक अनुसार मोटामोटी भारतमे १६००० प्रकाशक छथि जे सालमे ७०००० पोथी प्रकाशित करै छथि। ऐमे २१,००० पोथी अंग्रेजीमे छपैए आ तहूसँ बेशी पोथी हिन्दीमे छपैए। भारतमे साक्षरताक स्थिति जेना-जेना नीक हेतै, तेना-तेना पोथी पढ़ैबलाक संख्यामे सेहो वृद्धि हेतै। नेपालमे मुख्यतः नेपालीक पोथी छापल जाइत अछि। भारत आ नेपाल दुनू ठाम मैथिली पोथीक प्रकाशन गुण आ संख्या दुनूमे पछुआएल अछि।

सरकारी संस्थाक संग विदेशी निवेशकक सहयोग: आब प्रकाशन उद्योगसँ आगाँ बढ़ी आ सूचना-प्रसार माध्यमक आन क्षेत्र जेना टी.वी., रेडियो आ ऑनलाइन भाषाइ उपकरणपर आउ। एतऽ विदेशी निवेशक हमरा सभ लेल डॉक्यूमेन्टरी, मनोरंजन आ भाषाइ उपकरणक निर्माणमे सहयोग दऽ सकै छथि। सरकार मान्यता प्राप्त भाषा लेल बिना बजारकेँ ध्यानमे रखने खास कऽ मैथिली सहित ओइ छह भाषाकेँ ध्यानमे राखैत काज करए तँ बजारक दृष्टिसँ जे सांस्कृतिक ह्रास सूचना-प्रौद्योगिकी मध्य देखबामे आबि रहल अछि से मैथिलीमे नै आएत। अरबी भाषाकेँ फंडक कोनो कमी नै छै मुदा ओ भाषा किए मरि रहल अछि, जखन ओकरा पक्षमे सरकारी कामकाज छै, मस्जिद छै, शिक्षा पद्धति छै। लेबनान, जोर्डन आ इजिप्टक अतिरिक्त सउदी अरब आ आन गल्फ देशक एकरा संरक्षण दै छै। मुदा पाइ एकरा लेल आफत बनल छै। सभ शेख विदेशसँ पढ़ि कऽ अबै छथि आ मिश्रित अरबी बजै छथि आ तकरा फैशन मानल जा रहल छै। जै अरबीमे कुरान लिखल गेल आ आइ काल्हिक शैक्षिक ‘‘आधुनिक मानकीकृत अरबी- मॉडर्न स्टैण्डर्ड अरेबिक- (एम.एस.ए.)’’ मे बड्ड पैघ भेद आबि गेल छै। ई ‘‘आधुनिक मानकीकृत अरबी’’ बाजै जाए बला अरबीसँ फराक भऽ गेल अछि आ एकर काज मात्र सभ अरब देशक बीच सूत्रबद्ध करबा धरि सीमित भऽ गेल छै, जइसँ सभ एक दोसराकेँ बुझि पाबए। मुदा यएह ‘‘आधुनिक मानकीकृत अरबी’’ दृश्य-श्रव्य-प्रिंटमे अछि जे ककरो मातृभाषा नै छिऐ वरन व्याकरण पढ़ि कऽ सीखल जाइ छै। विदेशी निवेशककेँ जँ सरकार मैथिली लेल मनोरंजक कार्यक्रमकेँ मैथिलीमे डब करबा लेल सहायता करए तँ कार्टून चैनल सभक कार्यक्रम आ धारावाहिक सभ मैथिलीमे प्रसारित भऽ

सकत भने ओकरा विज्ञापन भेटौ वा नै। आ एक बेर जे ई पहिया घुमत तँ मैथिली जीबि उठत। आ ई पहिया तखने घुमत जखन मधुबनी-दरभंगा-सहरसा-सुपौलक ब्राह्मण-कायस्थ-सवर्ण मैथिलीकेँ जीबि उठऽ देता, अपन ऋणात्मक ऊर्जाकेँ विराम देता, समाजक सभ वर्ग जे मैथिलीसँ जुड़ि रहल अछि ओइमे बाधा देबाक बदला सहयोग करता। समाजक राक्षसी प्रतिभायुक्त ई सर्वहारा वर्ग मैथिलीक रक्षा लेल समर्पित हसेरी बनत तखने ई भाषा आब बचत।

मुख्य विदेशी निवेशक: अखन धरि हार्पर कॉलिन्स, पेंगुइन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, मैकमिलन, रैंडम हाउस, पिकाडोर, हैचेट आ रुटलेज हावर्ड बिजनेस पब्लिशिंग अपन शाखा वा भारतीय सहयोगीक माध्यमसँ भाषायी क्षेत्रमे निवेश केने अछि। मुदा से निवेश अंग्रेजी धरि सीमित भऽ गेल अछि। भारतमे प्रकाशन उद्योगमे विदेशी खिलाड़ी एलाक बाद एकटा पेंगुइन हिन्दीकेँ छोड़ि देल जाए तँ विदेशी निवेश भारतीय भाषामे लगभग नगण्य अछि। एकर कारण सेहो स्पष्ट अछि। भारतीय भाषाक प्रकाशक सरकारी खरीदपर निर्भर छथि आ गएर सरकारी खरीदमे ओ टेक्स्टबुक छपाइपर जोर दै छथि। विदेशी निवेशक सरकारी खरीद आ टेक्स्टबुक छपाइक आधारपर अपन नीति निर्धारित नै करै छथि। मैथिलीक लेल ई वरदान होइतए मुदा जे भविष्यक साक्षरता वृद्धिक अनुमान लैयो कऽ चली तँ नव साक्षर मैथिली पढ़ता तकर आशा वर्तमान शिक्षा प्रणालीमे मैथिलीक कतिआएल स्थितिकेँ देखैत असम्भवे बुझा पड़ैत अछि, आ मैथिलीमे ने सरकारी लाइब्रेरीक खरीदक आशा छै आ ने टेक्स्ट बुक छपाइक। पाठकक संख्या तखन इन्टरनेटपर बढ़ाबए पड़त, आ जे पाठक कहियो सरकारी

शिक्षा प्रणालीमे मैथिली नै पढ़ि सकल छथि तिनका प्रारम्भमे मंगनीमे डाउनलोडक सुविधा देबऽ पड़त। मैथिलीसँ अंग्रेजी आ संस्कृत आ तकर माध्यमसँ आन भाषामे अनुवाद द्वारा सरकारी आ संस्थागत पुरस्कार पद्धति द्वारा कतिआएल पोथी सभकेँ सोझाँ आनए पड़त जइसँ मैथिली साहित्यक उत्कृष्टता विदेशी निवेशकक सोझाँ आबए। आ ओम्हर सरकारी स्कूलक अतिरिक्त पब्लिक स्कूल सभमे सेहो मैथिलीक पढ़ाइ हुअए तइ लेल समर्पित हसेरी तैयार करए पड़त। एक दोसरापर प्रत्यारोप लगेलाक बदला (कायस्थ आ ब्राह्मण द्वारा एक दोसरापर, मधुबनी-सहरसा-मधेपुरा-समस्तीपुर-बेगुसराय, पूर्णियाँक लोक द्वारा एक दोसरापर आरोप-प्रत्यारोप जे मैथिलीक दुर्दशा लेल हम नै ओ जिम्मेवार छथि- तइसँ हटि कऽ) एकमुखी, एक स्तरीय आ एक यत्नसँ प्रयास करए पड़त। आ जनताकेँ जोड़ए पड़त। हा पुरस्कार केलाक बदला जन साहित्यकारकेँ चिन्हबापर, जन नेताकेँ चिन्हबापर, जन विक्रेताकेँ चिन्हबापर अपन जान-जी लगाबऽ पड़त।

विदेशी निवेश तँ छोड़ू भारतीय प्रकाशक जे कहियो ऐ क्षेत्रमे आबऽ चाहलक वा सरकारी खरीदक मशीनरी जे कोनो मैथिलीक पोथी कीनऽ चाहलक वा अनुवाद लेल कोनो स्वयंसेवी संस्था मैथिली पोथी सभक चयन करऽ चाहलक तखनो मैथिली साहित्यक मूलधाराक पुरोधा लोकनि द्वारा, जे सलाहकार बनला, भ्रमित सूची देल गेल, कतेक रास मिथिलाक्षरक पाण्डुलिपि देशक बाहर टपा देल गेल आ मारते रास लोक द्वारा ढेर रास बखेरा ठाढ़ कएल गेल। से सभ कियो भागि गेला, बाहरियो आ मैथिली सेवी सेहो। सरकारी खरीद गुणक आधारपर नै भेल, पैरवी-पैगाम आ ढेर रास आन गुणकक आधारपर भेल। विदेशी निवेशकक लग ई सभ

ऋणात्मक पक्ष लऽ कऽ हमरा सभ कोना जा सकब।

विदेशी निवेशसँ मैथिलीपर अप्रत्यक्ष प्रभाव: मैथिलीपर विदेशी निवेशक अप्रत्यक्ष प्रभावक रूपमे मैथिली बाजैबलाक संख्याक घटोत्तरी आ मैथिलीक शब्दावलीक ह्रासकेँ राखल जाइत अछि। ओना ई सभ भारत आ नेपालमे पैघ नग्रक अनियन्त्रित विकास आ छोट नग्रक बिना अपन आर्थिक आधारक मात्र जमीनक खरीद-बिक्रीक कारणसँ विस्तारक कारण बेसी भेल अछि। मैथिली भाषीक एके खाढ़ीमे जतेक पड़ाइन भेल अछि से आन वर्गमे तीन-चारि खाढ़ीमे भेल (जेना तमिल वा बांग्लाभाषीकेँ लऽ सकै छी।)। मुदा आनो भाषा-भाषीमे विदेश पड़ाइनसँ भाषाक लोप भेल अछि मुदा संस्कृतिक लोप नै तँ आन वर्गमे भेल अछि आ ने मैथिलीभाषी वर्गमे। मैथिली भाषीकेँ लऽ कऽ दिल्लीमे ई कहबी भऽ गेल अछि जे आन वर्ग पाँच साल दिल्लीमे रहलापर पंजाबी बाजऽ लगै छथि आ हुनकर घरक स्त्रीगण करवा-चौथ करऽ लगै छथि मुदा मैथिलीभाषी नै तँ पंजाबी सिखै छथि आ ने हुनकर घरक स्त्रीगण करवा-चौथ करै छथि। हँ जखन अहाँ पत्नीसँ मैथिलीमे नै बजबै आ बच्चाकेँ गामक दर्शनो नै करऽ देबै तँ ओ मैथिली बाजब छोड़बे करत। विदेशी निवेश जाइ तरहेँ हिन्दी आ अंग्रेजी कार्टून चैनलमे भेल अछि, ओइसँ मैथिलीटा नै पंजाबीपर सेहो संकट आबि गेल अछि। मुदा ई एकटा फेज छिऐ, आ ई फेज बीस बर्खमे खतम भऽ जाएत। जे परिवार ऐ बीस बर्खमे मैथिली बाजब छोड़ि देता हुनका हम मैथिली दिस सोझ रूपमे नै घुरा सकब। मुदा सांस्कृतिक सन्निकटताक कारणसँ मैथिलीक परियोजना, अनुवाद, ऑडियो-वीडियो आ संचार परियोजनाकेँ ओ समर्थन करबे करता, तकरा सम्मान देबे करता। आ ई अप्रत्यक्ष रूपमे मैथिली लेल

वरदान सिद्ध हएत। आ एकटा पुनर्जागरणक काल अखन चलि रहल अछि तकर पुनरावृत्ति बीस बर्ख बाद हएत। मैथिली युद्धसँ बहार भऽ जीवित निकलत आ सुदृढ़ हएत।

विदेशी निवेशकक मैथिलीमे निवेश केलासँ लाभ: विदेशी निवेशक कल्याणकारी कार्य सेहो करै छथि। हुनका मैथिलीक विशेषता बुझाबए पड़त। विश्व प्रसिद्ध वायोलिन वादक स्व. येहुदी मेनुहिन मैथिलीकेँ संसारक सभसँ लयात्मक आ मधुर भाषा कहने छला (बी.बी.सी.पर विद्यापति संगीत सुनि कऽ, उदय प्रकाश द्वारा सेहो कोट कएल गेल)। विदेशी निवेशक किछु निवेश यूनेस्कोक भाषा सम्बन्धी नीतिक आधारपर सेहो करैत अछि। आ ई कल्याणकारी निवेश लाभपर आधारित नै होइत अछि, सरकारी खरीदपर आधारित नै होइत अछि, विज्ञापनपर आधारित नै होइत अछि। अन्तर्राष्ट्रीय सर्टिफिकेशनपर आधारित गएर सरकारी संस्था सभक माध्यमसँ मैथिलीमे शैक्षिक पोथी आ मनोरंजन आ स्वास्थ्य आधारित फिल्म डोक्यूमेन्टरीक मैथिली भाषी क्षेत्रमे ग्राम पंचायतक स्कूल सभक माध्यमसँ वितरण कएल जाए तँ मैथिली भाषी लोकक हीन भावनामे कमी आएत आ भाषायी क्रान्तिक संगे आर्थिक क्रान्ति सेहो आएत।

दूषण पंजी

दूषण पंजीक स्कैन कएल सिंगल पी.डी.एफ.। पंजीक हमर पोथीमे ओना तँ ११००० तालपत्रक जे.पी.जी.इमेज क डी.वी.डी. सेहो अलगसँ किनबाक व्यवस्था रहै आ ओइ डी.वी.डी.कँ कबिलपुरक सगर राति दीप जरएमे हम बाँटनहियो रही, मुदा ओइमे जे दूषण पंजी रहै तकर कारण कतेक पंचैती भेल, कतेक गोटे सोझाँ आ फोनपर गारि पढ़लन्हि। अखनो बहुत गोटे पंजीमे ओकर चर्चासँ भितरे-भितरे गुम्हरैत रहै छथि आ गपमे तामसे हाँफऽ लगै छथि जेना खून पीबि जेता। ऐ दूषण पंजीमे ब्राह्मणक आन जाति खास कऽ दलित आ मुस्लिमक संग विवाह, वा पतिक मृत्युक बाद विवाहक लिखित दस्तावेज छल। ओकरामे हेर-फेर केनाइ हमरासँ सम्भव नै छल। पंजीक पोथीमे शब्दशः एकर मिथिलाक्षरसँ देवनागरीमे लिप्यंतरण भेल अछि। एतऽ हम मूल ताड़पत्र आ बसहा पत्रपर लिखल पंजीक लिंक दऽ रहल छी। संगमे पंजीक लिंक सेहो। कियो नै कहि सकैत अछि जे ऐ मे एक्को रत्ती अशुद्धि अछि। गंगेशक जन्म पिताक मृत्युक ५ बर्ख बाद आ फेर हुनकर चर्मकारिणीसँ विवाह एतऽ वर्णित भेटत। ई वएह नव्य-न्यायक जनक गंगेश छथि।

आनन्दा चर्मकारिणीसँ विवाह एतऽ सेहो भेटत जे हमरा द्वारा लिखित प्रेमकथा "शब्दशास्त्रम्"क आधार बनल।

दूषण पंजी- मूल मिथिलाक्षर लेख- ताड़पत्र सिंगल पी.डी.एफ.
https://docs.google.com/a/videha.com/viewer?a=v&pid=sites&srcid=dmlkZWhhLmNvbXx2aWRlaGEtcG90aGl8Z3g6ZjFiNTA5NGI2YTVlNGEx

मोदानन्द झा शाखा पंजी-

http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/modanand_jha_shakha_panji.pdf

मंडार- मरड़े कश्यप-प्राचीन-

http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/mandar_marare_kashyap_prachin_complete.pdf

प्राचीन पंजी (लेमीनेट कएल)-

http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/laminatedpanji.pdf

उतेढ़ पंजी-

http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/panji_7_uterh_panji.pdf

पनिचोभे बीरपुर-

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/Home/Panichobhe_Birpur.pdf?attredirects=0

दरभंगा राज आदेश उतेढ आदि

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/Home/DARBHANGA_RAJ_ORDER_PANJI_PACHHBARI_ORDER_UTEDH.pdf?attredirects=0

छोटी झा पुस्तक निर्देशिका-

http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/panji_directory_chotijha_shakha_pustak.pdf

पत्र पंजी
http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/patra_panji.pdf

मूलग्राम पंजी
http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/panji_8_moolgram_panji.pdf

मूलग्राम परगना हिसाबे पंजी
http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/panji_9_moolgram_parganawise_panji.pdf

मूल पंजी-
2 http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/moolpanji_2.pdf

मूल पंजी-३-
http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/mool_panji_3.pdf

मूल पंजी-४
http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/mool_panji_4.pdf

मूल पंजी-५
http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/mool_panji_5.pdf

मूल पंजी-६
http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/moolpanji_6.pdf

मूल पंजी-७-
http://videha123.files.wordpress.com/2011/09/prachin_panji_last.pdf

पंजी-पोथी- http://www.box.net/shared/yx4b9r4kab

एकटा पोथी आएल छल "मिथिला की सांस्कृतिक लोकचित्रकला",१९६२ (लेखक: चित्रकार श्री लक्ष्मीनाथ झा), आ दोसर पोथी "जीनोम मैपिंग: मिथिलाक पंजी प्रबन्ध- ४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.), २००९ (गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा , पंजीकार विद्यानन्द झा)"पंजी-पोथी- http://www.box.net/shared/yx4b9r4kab आ पंजीक पात सभ https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/ पर उपलब्ध अछि। आब ऐ दुनू पोथीक किछु भाग चोरि कऽ दू गोटे अपना नामेँ छपबेलन्हि अछि आ तइमे हुनका लोकनिकेँ सहयोग सेहो भेटल छन्हि। सुशीला झा "अरिपन"२००८ नामसँ

"मिथिला की सांस्कृतिक लोकचित्रकला" पोथीक अनुवाद अपना नामे कऽ लेने छथि,फोटो तक स्कैन कऽ चोरा लेने छथि आ तकरा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर प्रकाशन अनुदान देने अछि, जे ऐ पोथीपर लिखल अछि। डा. योगनाथ झा तँ सद्यः "जीनोम मैपिंग: मिथिलाक पंजी प्रबन्ध- ४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.) केँ अपना नामेँ पंजी-प्रबन्ध (वंश परिचय- प्रथमभाग, २०१०) नामसँ छपबा लेलन्हि आ ऐ मे हुनका सहयोग भेटलन्हि श्रोत्रिय समाजक संगठन "महाराजा कामेश्वर सिंह सांस्कृतिक विकास मंच"क। ई श्रोत्रिय समाजक संगठन श्री लक्ष्मीनाथ झा, जे श्रोत्रिय छला, केर पोथीक चोरिक विरोध कोना करत? ऊपरमे स्कैन कएल पन्ना सभ देखू। हिनका सभकेँ देख कऽ तँ पुरान चोर पंकज पराशर (http://www.box.net/shared/75xgdy37dr) सेहो लजा जाएत।

मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे रामलोचन ठाकुरक कोलकातासँ प्रकाशित देसिल बयनाक चर्चा नै भेटत (अपवाद: राधाकृष्ण चौधरीक "अ सर्वे ऑफ मैथिली लिटेरेचर " मे कोलकाता देसिल बयनाक चर्च छै।)। देसिल बयना नाम्ना पत्र १९८२ ई. मे प्रकाशित होइत रहल आ एकर ७० टा पृष्ठ विदेह आर्काइवमे स्कैन कऽ सिंगल पी.डी.फ.बना कऽ देल गेल अछि। बहुत रास अद्भुत रचना आ लेखकक कृति अहाँ ऐमे पढ़ि सकब।

देखू - देसिल बयना
https://docs.google.com/a/videha.com/viewer?a=v&pid=sites&srcid=dmlkZWhhLmNvbXx2aWRlaGEtcG90aGl8Z3g6Njc3YmM2NmI4ODBkMzRmNQ

रमेश नारायणक ‘‘पाथरक नाव’’ २. विनोद बिहारी वर्माक ‘‘बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)’’

मैथिली कथा संग्रह सभमे १.रमेश नारायणक ‘‘पाथरक नाव’’ २. विनोद बिहारी वर्माक ‘‘बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)’’ ई दुनू कथा संग्रह अपन किछु खास विशिष्टताक कारण विशेष स्थान रखैत अछि।

रमेश नारायणक ‘‘पाथरक नाव’’ १९७२ ई. मे उपासना प्रकाशन, ९०, श्रीकृष्णानगर, पटना-१ सँ छपल। विनोद बिहारी वर्माक ‘‘बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)’’ १९९४ ए. मे मैथिली प्रतिभा. एल.एफ. १/३, युनिट-३, कोहाउसिङ्ग कालोनी, भुवनेश्वर-७५१००१ सँ छपल।

रमेश नारायणक ‘‘पाथरक नाव’’

रमेश नारायण अपन कथा-संग्रहक समर्पण करै छथि ---अथाहो पानिमे ऐना जकाँ झलकैत/ अपना गामक ओहि थाल-कादोकेँ,/ जाहिमे हमरे लेल/ एक गोट रक्तकमल/ जनमि कए फुलेबाक हमर आस/ अटकल अछि.... आ अपना दिससँ कहै छथि- इएह, जे/ एहि संग्रहक कतेको कथा आकाशवाणीक पटना केन्द्रसँ प्रसारित अछि,/ तैं आकाशवाणीक सौजन्यों सँ।

ऐ कथा संग्रहमे ई सभ कथा संकलित अछि:- १.ठेहियायल मोन

घुमाओन बाट, २.काजरक रेख, ३.आँजुर भरि नोर, ३.काँच निन्न टुटैत स्वप्न, ४.सइँतल सेज निहुँछल निन्न, ५.तेजि गेल बिदेस..., ६.काँट कुसक छाहरि, ७.एक पोस्टकार्ड: सरोजिनी आ' हम ८.चीरल पन्ना जोड़ल पाँती।

विनोद बिहारी वर्माक ''बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)''

विनोद बिहारी वर्मा अपन कथा-संग्रहक समर्पण करै छथि:- बहु विद्या विद् / पूज्य लाल भाइ,/ डा. ब्रज किशोर वर्मा ''मणिपद्म'' क/ पुण्य स्मृतिमे/ श्रद्धापूर्वक समर्पित- विनोद। ऐ संग्रहमे १४ टा कथा अछि जइमे सँ ३ टा कथा *मिथिला मिहिर* मे छपल छल आ ११ टा कथा *वैदेही* मे। ऐ कथा संग्रहमे ई सभ कथा संकलित अछि:- १. बलानक बोनिहार ओ पल्लवी, २. कुन्ती, कर्ण ओ परशुराम, ३.सुलोचनाक चटिसार, ४. साहेब, ५. ब्रह्मा-बिसुन-राति, ६.हम पान खेलहुँ, ७.फूलक कथा, ८.अन्तर्मुखी बसुन्धरा, ९. काशक फूल, १०. माछक पिकनिक, ११.जीवन-नाओ, १२.कापुरुष, १३.गोनौर-बाबू, १४.आकाश-फूल

अन्तर्जाल अपराध- आ तकरा पकड़बाक विधि

मैथिलीक दन्द-फन्द बला सभक प्रवेश अन्तर्जालपर शुरू भऽ गेल अछि। ई लोकनि पहिने पत्र आ एस.एम.एस. द्वारा ब्लैकमेलमे लागल छला। आब ई-पत्रक प्रयोग साधारण संगणक ज्ञानबला सेहो कऽ सकै छथि, से ऐ प्रवृत्तिमे वृद्धि आएल अछि।

अन्तर्जाल अपराधक प्रकार

गारि आ हतोत्साहित करैबला ई-मेल: ऐमे नाम बदलि कऽ ई-मेल आ टिप्पणी देल जाइत अछि। ऐसँ अपराधी अपन शिकारकेँ मानसिक रूपसँ कष्ट दै छै। कतेको बेर शिकार व्यक्ति अन्तर्जाल छोड़ि दै छथि आ हुनकर दैनिक रचनात्मक क्रिया प्रभावित होइ छन्हि। कतेक गोटे मैथिलीकेँ गुड-बाइ सेहो कहि दै छथि। कखनो काल अहाँक जालवृत्त वा जालस्थलपर पोर्न साइटक लिंक कियो राखि देत, तँ कखनो गारि पढ़ि कऽ भागि जाएत, माने ई-पत्र, ऑनलाइन वार्तालाप, कमेन्ट बॉक्समे। कखनो अहाँक सालक आ मासक मेहनति सेकेन्डमे कॉपी पेस्ट कऽ अपना नामसँ छपा लेत। बहुत गोटे हमरा सालक मेहनति ऑनलाइन मुफ्त उपलब्ध करेबा लेल टोकबो केलन्हि। मुदा हमरा ऐ सम्बन्धमे बिल गेट्सक वक्तव्य मोन पड़ि जाइत अछि। हुनकासँ एक बेर पूछल गेलन्हि जे माइक्रोसॉफ्टक उत्पाद ‘‘एक्स बॉक्स’’ भारतमे पाइरेसीक डरसँ विलम्बसँ उतारल गेल, तँ ओ कहने छलाह जे माइक्रोसॉफ्ट कहियो पाइरेसीक डरसँ कोनो उत्पाद बजारमे अनबामे विलम्ब नै केने

अछि। विदेह आर्काइव सेहो दिनानुदिन समृद्ध भेल जा रहल अछि, साइबर अपराधक द्वारे ऐमे कोनो कमी नै आएल अछि।

डराबैबला ई-मेल: ब्लैकमेलर ऐसँ शिकारकेँ धमकाबैत रहैत अछि। नामक खुलासा नै भेने प्राप्तकर्ता बेचारा कतेको लोकपर शंका करऽ लगैए। ब्लैकमेलर सेहो अपन खण्डित व्यक्तित्वक प्रदर्शन करैत तुष्ट होइत रहैए।

वायरस प्रसार करैबला ई-मेल: ई-पत्र द्वारा कोनो लिंक पठाएल जाइ छै, कोनो अटैचमेन्ट पठाएल जाइ छै, जकरा क्लिक केलौं नै वा खोललौं नै आकि अहाँक कम्प्यूटर बैसि गेल। ऐ तरहक मैसेज ब्लूटूथ ऑन रहलासँ अहाँक मोबाइलमे सेहो आबि जाइत अछि।

फेकमेल: एक ठामसँ आबैबला ई-मेल छद्म रूपसँ फेकमेलसँ दोसराक ई-मेलसँ आएल बुझि पड़ैए। ऐसँ ब्लैकमेलर अहाँक झगड़ा दोसरसँ करेबाक प्रयास करैए। मुदा ऐ तरहक मेलकेँ डिलीट नै करू आ नहिये ऐ तरहक मेलक कोनो उतारा दियौ।

अगिला चरण- वित्तीय हानि: रचनात्मक क्रियाक बन्न भेने भने सद्यः वित्तीय हानि नै होइ छै मुदा ब्लैकमेलर अगिला चरणमे अहाँक क्रेडिट कार्ड संख्या, पासवर्ड, बैंक एकाउन्ट नम्बर पुछि सकैए। लागत जेना ओ ई-पत्र इनकम टैक्स रिफन्ड लेल अछि, वा सूडानक कोनो अकाल पीड़ितक आर्द्र पुकार अछि। अहाँ ऐ तरहक मेलक जवाब किन्नौ नै दिअ आ ई-पत्रकेँ स्पैममे धऽ दियौ आ किछु प्रति सुरक्षित राखि लिअ। ओइ अपराधीकेँ पकड़बाक सामान्य प्रक्रिया आगाँक बिन्दुमे अछि।

अपराधीकेँ पकड़ब कोना: अपन साइटपर हिट काउन्टर लगाउ, ऐसँ ई फाएदा हएत जे अहाँक साइटपर टाइम-स्टैम्प आबि जाएत। टिप्पणीक टाइम स्टैम्पसँ एकरा मिलाउ आ चोरकेँ पकड़ू। कम्प्यूटरकेँ कमान्ड दऽ कऽ ई-मेलक हेडर आ ओइसँ समय आ स्थानक जनतब लिअ। फेर ओइ फेक व्यक्तिक पता आ फोन नम्बर (एक्स्टेन्शन सहित) ऐसँ ज्ञात भऽ सकैए। एहन कोनो तरहक ई-पत्रकेँ नहिये नष्ट करू आ नहिये सम्पादित करू।

अन्तर्जालक उपयोगसँ सम्भावित हानिपर नियन्त्रण: ऐ प्रकारक ई-पत्र उपयोगकर्ता लेल संकट उत्पन्न करै छै। लोक दुखी रहए लगैत अछि, किछु गोटे इन्टरनेटक कनेक्शन कटबा लै छथि। मुदा अभद्र मेल एलापर अपनापर नियन्त्रण राखू आ डिप्रेशनमे नै जाउ। अन्तर्जालक नीक पक्षक उपयोग करैत रहू। कोनो साइटपर लॉग ऑन केने छी तँ तत्काल लॉग आउट भऽ जाउ।

अंतर्जाल आ मैथिली

पूर्वपीठिका :

इंटरनेट पर ई-प्रकाशित करबाक उद्देश्य एकटा फॉरमक स्थापना हेबाक चाही जइमे लेखक आ पाठकक बीच एकटा एहन माध्यम हुअए जे कतौसँ चौबीसो घंटा आ सातो दिन उपलब्ध हुअए। जइमे प्रकाशनक नियमितता हुअए आ जइसँ वितरणक समस्या आ भौगोलिक दूरीक अंत भऽ जाए। फेर सूचना-प्रौद्योगिकीक क्षेत्रमे क्रांतिक फलस्वरूप एकटा नव पाठक आ लेखक वर्गक हेतु, पुरान पाठक आ लेखकक संग, फॉरम प्रदान केनाइ सेहो एकर उद्देश्य हेबाक चाही । इंटरनेटपर मैथिलीक प्रारम्भ हम कएने रही 2000 ई. मे याहू जियोसिटीजपर 2000-2001 मे मुदा ओ सभ साइट याहू द्वारा सेवा समाप्तिक बाद डिलीट भऽ गेल। ५ जुलाई २००४ केँ बनाओल “भालसरिक गाछ” जे http://www.videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html पर अखनो उपलब्ध अछि, मैथिलीक इंटरनेटपर प्रथम उपस्थितिक रूपमे अखनो विद्यमान अछि। शुरूमे आस्की फॉण्ट क्रुतदेव, शुशा ई सभ फॉण्ट साइट लेल प्रयुक्त होइ छल, पहिने ई उपयोगी छल मुदा आब सर्च इंजिनमे यूनिकोड-यू.टी.एफ.८ केर सर्च होइ छै आ आस्की मे लिखल देवनागरीक सर्च नै भऽ पबैत अछि । विन्डोजमे मंगल वर्णमुख (फॉन्ट) अबै छै से यूनीकोडमे छै आ ऐमे लिखल देवनागरी सर्च भऽ जाइत अछि। मिथिलाक्षरक यूनीकोड रूपक

आवेदन (अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल गेल) स्वीकृत भऽ गेल अछि जइमे बर्कले विश्वविद्यालयक प्रोफेसर डेबोराह एन्डरसन, Project Leader, Script Encoding Initiative, Dept. of Linguistics, UC Berkeley क आग्रहपर हमहूँ योगदान देने रही। पाठक आ लेखक दुनू कम रहथि, मुदा जेना जेना यूनीकोड आधारित अन्वेषण यंत्र गूगल, लाइव आ आस्क डॉट काम द्वारा विकसित भेल तेना तेना अन्तर्जालपर मैथिली पाठक आ लेखकमे वृद्धि होइत गेल।

मैथिली आ अंतर्जाल :

एतऽ साहित्य, समाचार, मैथिली ऑडियो, मैथिली वीडियो, मिथिला चित्रकला, इलेक्ट्रोनिक मैथिली पोथी सभ किछु अछि।

गूगल आ वर्डप्रेस द्वारा जालवृत्त खोलबाक लेल बहुत रास बनल बनाएल परिकल्पित नमूना स्थल निर्माण लेल उपलब्ध अछि आ ओतऽ लेखन, संदेश आ टिप्पणी लेल असीमित दत्तांशनिधि उपलब्ध अछि, जतऽ जालोद्वहन मंगनीमे देल जा रहल अछि। ई सभ जालवृत्त निर्माण स्थल उपभोक्ता केन्द्रित अछि आ एतऽ सरल लेखन-पद्धतिक व्यवस्था सेहो कएल गेल अछि ।

एपलक मैक ऑपेरेटिंग सिस्टममे देवनागरी. एपलक मैक ऑपेरेटिंग सिस्टममे आब सामान्य देवनागरी लेआउट आ क्वेर्टी लेआउट भेटत। फोनेटिक टाइप करैमे क्वेर्टी लेआउट बेशी लाभकारी अछि। विन्डोज जकाँ राइट क्लिक मैक ऑपेरेटिंग सिस्टममे नै चलै छै। ऑप्शनक प्रयोग करऽ पड़त। आब मैक सिस्टम सेहो

यूजर फ्रेण्डली भऽ गेल छै। सिस्टम प्रेफरेन्समे इण्टरनेशनल क्लिक करू आ इनपुटमे देवनागरी आ देवनागरी क्वेर्टी आ कीबोर्ड व्युअर सेलेक्ट करू (स्क्रीनपर कीबोर्ड लेआउट अनबा लेल)। वर्ड फाइल खोलि देवनागरीमे टाइप करू।

शिक्षित मध्यवर्गमे मैथिली भाषा नवम वर्गसँ स्नातक-स्नातकोत्तर धरि मैथिलीकेँ भाषा वा मातृभाषाक रूपमे लेनिहार ऐसँ स्नेह करै छथि। अन्तर्जालपर मैथिलीक आगमनसँ सेहो मातृभाषासँ स्नेह फेरसँ जागल। मैथिलीक पोथीक सुगमतासँ नै भेटब जइमे सरकारी संस्थाक मैथिली पाठ्यपुस्तक सम्मिलित अछि, ऐमे अन्तर्जाल द्वारा सीमित रूपमे हस्तक्षेप भेल अछि। आ ऐ सभक परिणामक रूपमे मैथिली लेखकक भीतर हीन भावना (सुपीरियोरिटी कॉम्प्लेक्स सेहो हीन भावनाक रूप अछि) पैसि गेल आ साहित्य सोंगरपर ठाढ़ कएल जाए लागल। वाद-विवाद उत्पन्न कऽ आरोप-प्रत्यारोप आधारित साहित्यक चर्चा प्रारम्भ भेल। पति-पत्नी, जिला-जबार आ पिता-पुत्रक अपन पक्षमे वातावरण तैयार करब आरम्भ भेल। माने ब्लैकमेलिंग आ ब्लैक-मार्केटिंग द्वारा कथा-कविताक पुरस्कार लेल लिखल जाएब। मुदा बुकर आ नोबल साहित्य पुरस्कार प्राप्त साहित्य सेहो कालातीत नै रहि पबैत अछि, बहुत रासकेँ तँ लोक मोन रखैत अछि मुदा ढेर रास विस्मृत भऽ जाइ छथि आ पाठक ओकर मूल्यांकन कऽ दै छथि। मुदा मैथिलीमे खाढ़ीक-खाढ़ी बीति जाइत अछि मुदा पाठकक अभावमे पति-पत्नी, पिता-पुत्र, जिला-जबार आ आब कथाकार-कविक बनल गोल सभ एकर ब्लैकमेलिंगक आधारपर मूल्यांकन करैत अछि। अन्तर्जालक हस्तक्षेपक बादो मूल धारामे नीक साहित्य, सृजनात्मक साहित्य आ कल्याणकारी साहित्य सोझाँ नै आबि रहल अछि, नै सृजित कएल जा रहल अछि।

विवाद कऽ समाचारमे रहएबला कवि-कथाकारकेँ अहाँ प्रश्रय देब कारण ओ ब्लैकमेलिंग कऽ रहल छथि वा धूरा-गर्दामे रहनिहार मानवतावादी कवि-कथाकारकेँ। आ जखन से करब तखने निरर्थक देखाएबला मैथिली साहित्यमे प्राणवायु भरि पाएब।

अन्तर्जालपर मैथिली साहित्यक भविष्य:

जहिया प्रेस आएल छल तँ ओकरा बुर्जुआ वर्गक हेबाक विशेषण भेटल रहै, उपन्यास सेहो प्रेस अएलापर आएल, से ओहो बुर्जुआ साहित्य रहए मुदा आस्ते-आस्ते ओ धारणा खत्म भेल। अंतर्जालक साहित्य सेहो प्रिंट साहित्यक पूरक रहबे करत। जे लोक कम्प्यूटर स्क्रीनपर नै देखता तँ प्रिंट कऽ कऽ देखता। आ *प्रिंट ऑन डिमांडक* सुविधा सेहो *पोथी डाट काम* / श्रुति प्रकाशन आ आन साइट/ प्रकाशक दऽ रहल छथि।

मैथिली लेल अंतर्जाल द्वारा प्रकाशनक नियमितता, वितरणक समस्याक समाप्ति, शून्य लागत आ भौगोलिक दूरीक अंत एकटा वरदान सिद्ध भेल अछि।

अंतर्जालपर सूचनाक त्वरित सम्प्रेषण होइत अछि मुदा एकर उपयोगसँ बेशी दुरुपयोगक संभावना रहैत अछि, ख़ास कऽ नाम बदलि कऽ विभिन्न आइ. एस.पी. सँ कमेन्ट आ ब्लैकमेल केनाइ आदि, ओकरा उघार करबाक विधि सेहो अछि मुदा से ऊर्जाक अपव्यय सेहो करबैत अछि।

लाभ-हानि:

अंतर्जालपर सूचनाक त्वरित सम्प्रेषण होइत अछि मुदा एकर उपयोगसँ बेशी दुरुपयोगक संभावना रहैत अछि, ख़ास कऽ नाम बदलि कऽ विभिन्न आइ. एस.पी. सँ कमेन्ट आ ब्लैकमेल केनाइ आदि, ओकरा उघार करबाक विधि सेहो अछि मुदा से ऊर्जाक अपव्यय सेहो करबैत अछि। जतए इंटरनेटक स्पीड कम छै वा इंटरनेट महग छै ओतऽ सामग्री pdf स्वरूपमे संग्रहण कएल जा सकैत अछि, जकरा डाउनलोड कऽ पाठक अपन कंप्युटरमे सुरक्षित राखि सकै छथि आ अपना सुविधानुसारे एकरा पढ़ि सकै छथि। कोनो फाइलकेँ पढ़बा हेतु कंप्युटरमे आवश्यक फॉंट हएब जरूरी अछि, नै तँ सभसँ सरल उपाय अछि शब्द-संसाधकमे बनल लेख (वर्ड डोक्युमेंट) केँ पी.डी.एफ. फाइलमे परिवर्त्तित करब । ऐमे नफा नुकसान दुनू अछि । नफा जे बिना कोनो फांटक झंझटिक पी.डी.एफ.फाइल जइ काँटा/ वर्णमुख/ लिपिमे लिखल गेल अछि, तइमे पढ़ल जा सकैत अछि। एकर नुकसान जे जखने फाइलमे जा कए सेव एज टेक्स्ट करब तँ अंग्रेजी तँ सेव भऽ जाएत मुदा देवनागरी तेहन सेव हएत जे पढ़ि नै सकी।

अंतर्जाल प्रवासी मैथिलक लेल वरदान सिद्ध भेल अछि आ ऐमे बच्चा आ महिलाक संग जइ तरहेँ गएर मैथिल ब्राह्मण-कर्ण कायस्थ पाठक आ लेखक जुटला से अद्भुत अछि।

आ एतऽ मैथिलीकेँ देल स्लो-पोइजनिंगक विरुद्ध काज होइत अछि। मैथिलीक नामपर कोनो कम्प्रोमाइज नै भेटत। सुच्चा मैथिली पाठक, कोनो गोलैसी नै। व्यक्तिगत महत्वाकांक्षामे कटाउझ करैत बिन पाठकक पत्रिका नै अछि ई सभ जे स्वयं मरि रहल अछि आ मैथिलीकेँ मारि रहल अछि। ओना अन्तर्जालपर मैथिलीक किछु

जालवृत्तपर सेहो जातिगत कटाउझ आ अपशब्दक प्रयोग देखबामे आएल अछि आ से केनिहार व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा बला सभ छथि। अन्तर्जालपर ई-प्रकाशित रचनाकेँ हजारक-हजार पाठकक स्नेह आ ऑनलाइन कामेन्ट प्राप्त होइत अछि। राष्ट्रीय सर्वेक्षण ई देखबैत अछि जे संस्कृत, हिन्दी, मैथिली आ आन साहित्य कॉलेजमे वएह पढ़ै छथि जिनका दोसर विषयमे नामांकन नै भेटै छन्हि, पत्रकारितामे सेहो यएह सभ अबै छथि। प्रतिभा विपन्न एहने साहित्यसेवीकेँ साहित्यक चश्का लागल छन्हि आ हिनके हाथमे मैथिली भाषाक भविष्य सुरक्षित रहत? मैथिली जे सीमित प्रतियोगी (दुर्जेय!) सभक आपसी महत्वाकांक्षाक मारिक बीच मरि रहल छल तइमे अंतर्जाल हस्तक्षेप केलक अछि। विज्ञान कथा, बाल-किशोर कथा-कविताक एतऽ अमार लागल अछि, मात्र मैथिल ब्राह्मण नीक मैथिली लिखि सकै छथि से तथ्य जालवृत्तपर पोस्ट भेल असंपादित रचना झूठ सिद्ध करैत अछि आ से गएर मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ पाठक आ लेखकक सोझाँ प्रतिमान प्रस्तुत करैत अछि जे ओ गलत नै बाजि रहल छथि वरन मैथिली गलत लिखल जा रहल छल। आ मैथिली साहित्य एकभगाह भऽ जेबासँ बचि जाइत अछि। आ अंतर्जालसँ प्रिंटमे प्रवेश सेहो सरल अछि कारण प्रकाशककेँ बनल बनाओल सामग्री प्राप्त होइ छन्हि, खर्चा बचि जाइ छन्हि।

अन्तर्जालपर मैथिलीक भविष्य:

जहिया प्रेस आएल छल तँ ओकरा बुर्जुआ वर्गक हेबाक विशेषण भेटल रहै, उपन्यास सेहो प्रेस एलापर आएल से ओहो बुर्जुआ

साहित्य रहै, मुदा आस्ते-आस्ते ओ धारणा खत्म भेल। अंतर्जालक साहित्य सेहो प्रिंट साहित्यक पूरक रहबे करत। जे लोक कम्प्यूटर स्क्रीनपर नै देखता तँ प्रिंट कऽ कए देखता। आ प्रिंट ऑन डिमांडक सुविधा सेहो *पोथी डाट काम* / श्रुति प्रकाशन आ आन साइट/ प्रकाशक दऽ रहल अछि। मैथिली लेल अंतर्जाल द्वारा प्रकाशनक नियमितता, वितरणक समस्याक समाप्ति, शून्य लागत आ भौगोलिक दूरीक अंत एकटा वरदान सिद्ध भेल अछि।

स्व. श्री हरिमोहन झा (१९०८-१९८४)

जन्म १८ सितम्बर १९०८ ई. ग्राम+पो.- कुमर बाजितपुर , जिला- वैशाली, बिहार, भारत। पिता- स्वर्गीय पं. जनार्दन झा ‘‘जनसीदन’’। शिक्षा- दर्शनशास्त्रमे एम.ए.- १९३२, बिहार-उड़ीसामे सर्वोच्च स्थान लेल स्वर्णपदक प्राप्त। सन् १९३३ सँ बी.एन.कॉलेज पटनामे व्याख्याता, पटना कॉलेजमे १९४८ ई.सँ प्राध्यापक, सन् १९५३ सँ पटना विश्वविद्यालयमे प्रोफेसर आ

विभागाध्यक्ष आ सन् १९७० सँ १९७५ धरि यू.जी.सी. रिसर्च प्रोफेसर। हिनकर मैथिली कृति १९३३ मे "कन्यादान" (उपन्यास), १९४३ मे "द्विरागमन"(उपन्यास), १९४५ मे "प्रणम्य देवता" (कथा-संग्रह), १९४९ मे "रंगशाला"(कथा-संग्रह), १९६० मे "चर्चरी"(कथा-संग्रह) आ १९४८ ई. मे "खट्टर ककाक तरंग" (व्यंग्य) अछि। "एकादशी" (कथा-संग्रह)क दोसर संस्करण १९८७ ए. मे आएल जइमे ग्रेजुअट पुतोहुक बदलामे "द्वादश निदान" सम्मिलित कएल गेल जे पहिने "मिथिला मिहिर"मे छपल छल मुदा पहिलुका कोनो संग्रहमे नै आएल छल।श्री रमानाथ झाक अनुरोधपर लिखल गेल "बाबाक संस्कार" सेहो ऐ संग्रहमे अछि। आ हुनकर "खट्टर काका" १९७१ ई. मे हिन्दीमे सेहो पुस्तकाकार आएल। एकर अतिरिक्त हिनकर स्फुट प्रकाशित-लिखित पद्यक संग्रक "हरिमोहन झा रचनावली खण्ड ४ (कविता)" ऐ नामसँ १९९९ ई.मे छपल आ हिनकर आत्मचरित "जीवन-यात्रा" १९८४ ई.मे छपल। हरिमोहन बाबूक "जीवन यात्रा" एकमात्र पोथी छल जे मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित भेल छल आ ऐ ग्रंथपर हिनका साहित्य अकादमी पुरस्कार १९८५ ई. मे मृत्योपरान्त देल गेलन्हि। साहित्य अकादेमीसँ १९९९ ई. मे "बीछल कथा" नामसँ श्री राजमोहन झा आ श्री सुभाष चन्द्र यादव द्वारा चयनित हिनकर कथा सभक संग्रह प्रकाशित कएल गेल, ऐ संग्रहमे किछु कथा एहनो अछि जे हिनकर एखन धरिक कोनो पुरान संग्रहमे सम्मिलित नै छल। हिन्दीमे "न्याय दर्शन", "वैशेषिक दर्शन", "तर्कशास्त्र"(निगमन), दत्त-चटर्जीक "भारतीय दर्शनक" अंग्रेजीसँ हिन्दी अनुवादक संग हिनकर सम्पादित "दार्शनिक विवेचनाएँ" आदि ग्रन्थ प्रकाशित अछि। अंग्रेजीमे हिनकर शोध ग्रंथ अछि- "ट्रेन्ड्स ऑफ लिंग्विस्टिक

एनेलिसिस इन इंडियन फिलोसोफी''।

हरिमोहन झा समग्र
हरिमोहन झा जीक समग्र रचनाक एक बेर सिंहावलोकन कएल जाए।
कथा-एकांकी
१. १.अयाची मिश्र (एकाङ्की) २. मंडन मिश्र (एकाङ्की) ३. महाराज विजय (एकाङ्की) ४. बौआक दाम (एकाङ्की) ५.रेलक झगड़ा (एकाङ्की) ६. संगठनक समस्या- पत्र शैली ७. ''रसमयी''क ग्राहक पत्र-शैली ८.पाँच पत्र पत्र-शैली ९. दलानपरक गप्प १०.घूरपरक गप्प ११.पोखड़िपरक गप्प १२. चौपाड़िपरक गप्प १३.धर्मशास्त्राचार्य १४.ज्योतिषाचार्य १५.पंडितजी १६.कविजी १७.परिवर्तन १८.युगक धर्म १९.महारानीक रहस्य २०.सात रंगक देवी २१.नौ लाखक गप्प २२.रंगशाला २३.अँचारक पातिल २४.चिकित्साक चक्र २५.रेशमी दोलाइ २६.धोखा २७.प्रेसक लीला २८.देवीजीक संस्कार २९.एहि बाटे अबै छथि सुरसरि धार ३०. कन्याक जीवन ३१. रेलक अनुभव ३२. ग्रामसेविका ३३. मर्यादाक भंग ३४. तिरहुताम ३५.टोटमा ३६.तीर्थयात्रा ३७.अलंकार-शिक्षा ३८.बाबाक संस्कार ३९.द्वादश निदान ४०.ग्रेजुएट पुतोहु ४१.ब्रह्माक शाप ४२.आदर्श भोजन ४३.सासुरक चिन्ह ४४.कालीबाड़ीक चोर ४५.कालाजारक उपचार४६.विनिमय ४७.दरोगाजीक मोंछ ४८.शास्त्रार्थ ४९.विकट पाहुन ५०.आदर्श कुटुम्ब ५१.साझी आश्रम ५२.घरजमाय५३.भदेशक नमूना ५४.बीमाक एजेन्ट ५५.अंगरेजिया बाबू
पद्य
१.सनातनी बाबा ओ कलियुगी सुधारक २.कन्याक नीलामी डाक ३.मिथिलाक मिहिर सँ ४.ढाला झा ५.टी. पार्टी ६.बुचकुन झा

७.पंडित लोकनि सँ ८.निरसन मामा ९.आगि १०.अङरेजिया लड़कीक समदाउनि ११.गरीबनीक बारहमासा १२.श्री यात्रीजीक प्रति : मैथिलीक उक्ति १३.सौराठ १४.अलगी १५.अशोक-वाटिकामे १६.पटना-स्तोत्र १७.श्रद्धेय अमरनाथ झाक प्रति श्रद्धांजलि १८.हिन्दी ओ मैथिली १९.बुचकुन बाबाक चिट्ठी २०.जगमग-जगमग दीप जराऊ २१.कलकत्ता गेला उत्तर २२.अकाल २३.कलकत्ता हमरा बड़ पसन्द २४.सलगमक खण्ड २५.बूढ़ानाथ २६.नवकी पीढ़ीसँ २७.पंडित ओ मेम २८.पंडित-विलाप २९.गंगाक घाटपर ३०.समयक चक्र ३१.महगी-माहात्म्य ३२.रस-निमन्त्रण ३३.अकविताक प्रति : कविताक उक्ति ३४.हम पाहुन छी ३५.अनागत प्रेयसीसँ ३६.मत्स्य-तीर्थ ३७.मिष्टान्न ३८.हे राजकमल ३९.घटक सौं ४०.पंडितजी सौं ४१.कनियाँक समस्या ४२.मुक्तक ४३.गजल ४४.मातृभूमि ४५.नारी-वन्दना ४६.हे दुलही के माय ४७.मात्रूभूमि वन्दना ४८.चन्द्रमाक मृत्यु ४९.मिथिला वन्दना ५०.कवि हे! आब कोदारि धरु ५१.महगी ५२.नव पराती ५३.चालिस आ चौहत्तरि ५४.प्रयोगवादी कविता ५५.स्व. ललित नारायण मिश्रक स्मृतिमे ५६.उद्‌गार ५७.अन्तिम सत्य ५८.मधुर भाषा मैथिली छी ५९.छगुन्ता ६०.विद्यापति पर्व महान हमर ६१.आठ संकल्प ६२.घूटर काका ६३.वनगाम-महिषी स्मृति ६४.मैथिली-वन्दना ६५.हे मातृभूमि केर माटि ६६.कहू की औ बाबू ६७.कश्मीर हमर थीक ६८.मंगल प्रभात ६९.बुचकुन बाबाक स्वप्न ७०.जय विद्यापति ७१.शुभांशसा ७२.पारिचारिका स्तोत्र ७३.मनचन बाबा ७४.एहि बेरक फगुआ ७५.परतारु जुनि ७६.हे मजूर! कष्ट लखि अहाँक (कविजी: प्रणम्य देवता) ७७.हे हे मजूर! (कविजी: प्रणम्य देवता) ७८.अबि! अनन्त कोमल करुणे! (कविजी: प्रणम्य देवता) ७९.हे वीर! हलायुध धर

खड्ग(कविजी: प्रणम्य देवता) ८०.अयि! प्रचंड चंडिके! (कविजी: प्रणम्य देवता) ८१.झाँसीक रानी(कविजी: प्रणम्य देवता) ८२.हे प्रगतिशील महिला समाज(कविजी: प्रणम्य देवता) ८३.प्रिये! हम जाइत छी ओहि पार(कविजी: प्रणम्य देवता) ८४.धन्य-धन्य मातृभूमि (अयाची मिश्र : चर्चरी) ८५.धन्य ई मिथिलेशक दरबार(अयाची मिश्र : चर्चरी) ८६.हे डीह! अमर कीर्तिक निधान! (अयाची मिश्र : चर्चरी) ८७.हरिहर जन्म किएक लेल (माछक महत्व : खट्टर ककाक तरंग) ८८.केहन भेल अन्हेर(खट्टर ककाक टटका गप्प : खट्टर ककाक तरंग)

खट्टर ककाक तरंग (कथा-व्यंग्य)
कन्यादान (उपन्यास)
द्विरागमन (उपन्यास)
जीवनयात्रा (आत्मकथा)
कन्यादानक समर्पण- जे समाज कन्या कैं जड़ पदार्थवत् दान कय देबा मे कुंठित नहि होइत छथि, जाहि समाजक सूत्रधार लोकनि बालक कैं पढ़ैबाक पाछाँ हजारक हजार पानि मे बहबैत छथि और कन्याक हेतु चारि कैञ्चाक सिलेटो कीनब आवश्यक नहि बुझैत छथि, जाहि समाजमे बी.ए. पास पतिक जीवन-संगिनी ए बी पर्यन्त नहि जनैत छथिन्ह, जाहि समाज कैं दाम्पत्य-जीवनक गाड़ी मे सरकसिया घोड़ाक संग निरीह बाछी कैं जोतैत कनेको ममता नहि लगैत छन्हि, ताही समाजक महारथी लोकनिक कर-कुलिश मे ई पुस्तक सविनय, सानुरोध ओ सभय समर्पित।
प्रणम्य देवताक समर्पण- आइ सँ सात वर्ष पूर्व जे कार्तिकी पूर्णिमाक करार पर हमरा सँ पैंच लऽ गेलाह और तहियासँ पुनः कहियो दर्शन देबाक कृपा नहि कैलन्हि, जनिक चिर-स्मरणीय कीर्ति-कलाप

प्रथमे कथा मे विशद रूप सँ वर्णित छैन्ह, जे ''प्रणम्य देवता'' क मध्य सर्वश्रेष्ठ आसन पर अधिकार जमा सकैत छथि, जनिक वन्दनीय बन्धुवर्ग ई पुस्तक देखि विनु मङनहि अपन स्वत्व स्थापित कय लऽ सकैत छथि, तेहन प्रमुख चरित-नायक, विकट पाहुन भीमेन्द्रनाथ क सुदृढ़ विशाल मुष्टिमे ई विचित्र-चरित्र-पूर्ण पोथी विवशतापूर्वक अर्पित छैन्ह!

खट्टर ककाक तरंगक समर्पण- जे भंगक तरंगमे काव्य-शास्त्र-विनोदक धारा बहा दैत छथि; जनिक प्रवाहमे थोड़ेक कालक हेतु वेद-पुराण, धर्मशास्त्र, सभटा भसिया जाइत अछि; जे बात-बातमे अद्भुत रस ओ चमत्कारक चाशनी घोरि दैत छथि; जे मर्मस्पर्षी व्यंग्य द्वारा लोकक अन्तस्तल मे पहुँचि गुदगुदी लगा दैत छथि; तेहन चिर आनन्दमूर्ति, परिहास-प्रिय खट्टर कका कैं- त्व्दीयं वस्तु पितृव्य! तुभ्यमेव समर्पितम्।

रंगशालाक समर्पण- जे अक्षययौवना नटी एहि अनादि अनन्त रंगशालाक प्रवर्तिका थिकीह, जे मनोहर वीणा-वादिनी सम्पूर्ण चराचर विश्वकैं अपना आंगुरक अग्रभाग पर नचा रहल छथि, जे रहस्यमयी अपन मोहिनी लीलाक झलक देखाय ककरो स्पर्श नहि करय दैत छथिन्ह, जे कल्पनाक रंगीन पाँखि पर आबि कलाकारक कलामे रसक संचार करैत छथिन्ह, तेहन आश्चर्यकारिणी चिरसुन्दरी त्रैलोक्य-विजयिनी माया देवी कैं।

जगदीश प्रसाद मण्डल

१९४२-४३ क बंगालक अकालक विषयमे अमर्त्य सेन लिखै छथि जे ऐ अकालमे बंगालमे लाखक लाख लोक मुइला (फेमीन इन्क्वायरी कमीशनक अनुसार १५ लाख) मुदा अमर्त्यक एकोटा सर-सम्बन्धीक मृत्यु ओइमे नै भेल। तहिना मिथिलाक १९६७ ई.क अकालमे भारतक प्रधानमंत्रीकेँ देखाएल गेलन्हि जे कोना मुसहर लोकनि बिसाँढ़ खा कऽ अकालसँ लड़ि रहल छथि, मुदा ऐपर कथा लिखल गेल २००९ ई.मे। २००९ ई. मे जगदीश प्रसाद मंडलजी बिसाँढ़पर मैथिलीमे कथा लिखलन्हि। आ ऐ विलम्बक

कारण सेहो स्पष्ट अछि। मैथिली साहित्यमे जे एकभगाह प्रवृत्ति रहल अछि, तइ कारणसँ अमर्त्य सेन जकाँ हमरो साहित्यकार सभ ओइ महाविभीषिकासँ ओत्ते प्रभावित नै भेल हेता। आ एतऽ जगदीश प्रसाद मंडल जीक कथा मैथिली कथा धाराक यात्राकेँ एकभगाह हेबासँ बचा लैए। हुनकर लघुकथा सभ उत्कृष्ट अछि, रिक्त स्थानक पूर्ति करैत अछि आ मैथिली साहित्यक पुनर्जागरणक प्रमाण उपलब्ध करबैत अछि। जगदीश प्रसाद मण्डल शिल्पी छथि, कथ्यकेँ तेना समेटि लै छथि जे पाठक विस्मित रहि जाइत अछि। मुदा हिनका द्वारा कथ्यकेँ (विहनि कथा, लघु कथा, उपन्यास, नाटक, प्रेरक-कथा सभमे) उद्देश्यपूर्ण बनेबाक आग्रह आ क्षमता हिनका मैथिली साहित्यमे ओइ स्थानपर स्थापित करैत अछि, जतऽसँ मैथिली साहित्यक इतिहास ‘‘जगदीश प्रसाद मण्डलसँ पूर्व’’ आ ‘‘जगदीश प्रसाद मण्डलसँ’’ ऐ दू खण्डमे पाठित हएत। समाजक सभ वर्ग हिनकर कथ्यमे भेटैत अछि आ से आलंकारिक रूपमे नै वरन् अनायास, जे मैथिली साहित्य लेल एकटा हिलकोर एबाक समान अछि। हिनकर कथ्यमे कतौ अभाव-भाषण नै भेटत, सभ वर्गक लोकक जीवन शैलीक प्रति जे आदर आ गौरव ओ अपन कथ्यमे रखै छथि से अद्भुत। हिनकर कथ्यमे नोकरी आ पलायनक विरुद्ध पारम्परिक आजीविकाक गौरव महिमामंडित भेटैत अछि, आ से प्रभावकारी होइत अछि हिनकर कथ्य आ कर्मक प्रति समान दृष्टिकोणक कारणसँ आ से अछि हिनकर व्यक्तिगत आ सामाजिक जीवनक श्रेष्ठताक कारणसँ। जे सोचै छी, जे करै छी सएह लिखै छी- तइ कारणसँ। यात्री आ धूमकेतु सन उपन्यासकार आ कुमार पवन आ धूमकेतु सन कथा-शिल्पीक अछैत मैथिली भाषा जनसामान्यसँ दूर रहल। मैथिली भाषाक आरोह-अवरोह मिथिलाक

बाहरक लोककेँ सेहो आकर्षित करैत रहल आ ओइ भाषाक आरोह-अवरोहमे समाज-संस्कृति-भाषासँ देखाओल जगदीशजीक सरोकारी साहित्य मिथिलाक सामाजिक क्षेत्र टा मे नै वरन् आर्थिक क्षेत्रमे सेहो क्रान्ति आनत।

प्रेमशंकर सिंह

मैथिली भाषा साहित्य : बीसम शताब्दी - प्रेमशंकर सिंहजीक ऐ निबन्ध-प्रबन्ध-समालोचना संग्रहमे मैथिली साहित्यक २०म शताब्दी आ एक्कैसम शताब्दीक पहिल दशकक विभिन्न प्रिय-अप्रिय पक्षपर चर्चा भेल अछि। अप्रिय पक्ष अबैत अछि ऐ द्वारे कारण राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक समस्या-परिवर्तन आ एकीकरणक प्रक्रिया कखनो काल परस्पर विरोधी होइत अछि।

मैथिली साहित्यक पुरान सन्दर्भ मैथिली भाषा आ साहित्यमे वर्णित अछि। लोकगाथा मे मणिपद्मक लोकगाथाक क्षेत्रमे अवदानकेँ

रेखांकित करैत लोकगाथाक चर्चा भेल अछि। लोकनाट्यमे मैथिली लोकनाट्यक विस्तृत उल्लेख अछि। बीसम शताब्दी- स्वर्ण युगमे मैथिली साहित्यक सए बर्खक सर्वेक्षण अछि। पारंपरिक नाटकमे मैथिलीक आ मैथिलीमे अनूदित पारम्परिक नाटकक चर्चा अछि। सामाजिक विवर्तक जीवन झा मैथिली नाट्य साहित्यमे हुनका द्वारा आनल नूतन कथ्य-शिल्पकेँ रेखांकित करैत अछि। हरिमोहन झाक परवर्त्ती रचनाकारपर प्रभाव हरिमोहन झा पर समीक्षा अछि। मैथिली आन्दोलनक सजग प्रहरी, जयकान्त मिश्रक अवदानक आधारित अछि। संस्मरण साहित्यमे मणिपद्मक *हुनकासँ भेँट भेल छल* क सन्दर्भमे संस्मरण साहित्यपर चर्चा भेल अछि। अमरक एकांकी: सामाजिक यथार्थमे अमरजीक विधाक तँ मायानन्दक रेडियो शिल्पमे मायानन्द मिश्रक विधाक सर्वेक्षण अछि। चेतना समिति ओ नाट्यमंचमे चेतना समिति द्वारा कएल रचनात्मक कार्यक विवरण अछि।

ऐ सभ आलेखमे सत्यक आ कलाक कार्यक सौंदर्यीकृत अवलोकन, संस्था सभक निर्माण वा वर्तमानमे संपूर्ण समुदायक धर्म-नस्ल-पंथ भेद रहित आर्थिक आ सामाजिक हितपर आधारित सुधारक आवश्यकता, महिला-लेखन आ बाल-साहित्यक स्थान-स्थापर चर्चा, यथासंभव मेडियोक्रिटी चिन्हित करबाक प्रयास, मूल्यांकनमे ककरो प्रति पूर्वाग्रह वा घृणा नै राखब- ई सभटा समीक्षाक आवश्यक तत्वक ध्यानमे राखल गेल अछि। एक पाँतिक वक्तव्य कतौ नै भेटत, पूर्ण विवेचन भेटत।

विदेहक लोगो:: विद्यापति:उगना ::मिथिला:मैथिली

I.

महाभारतमे उल्लेख अछि, जे इन्द्र-ध्वजा गाढ़ नील रंगक होइ छल। रामक ध्वजा लाल-गेरुआ रंगक छलन्हि आ ऐपर कुलदेवता सूर्यक चित्र अंकित छल। महाभारतमे अर्जुनक ध्वजापर वानरराजक चित्र छल। नकुलक ध्वजा पर सरभ पशुक चित्र छल। अथर्ववेदक अनुसार सरभ पशु दू माथक, दूटा सुन्दर पंख बला, एकटा नमगर पुच्छी बला आ सिंहक समान आठ नोकगर पएरक आंगुर युक्त होइ छल। अभिमन्युक ध्वजा पर सारंग पक्षी छल। दुर्योधनक ध्वजा सर्पध्वजा छल। द्रोणक ध्वजा पर मृगछाल आ कमण्डल छल। कर्णक ध्वजा पर हाथीक पएरक जिंजीर छल, आ सूर्य सेहो छला।

भगवान विष्णुक ध्वजा पर गरुड़ अंकित अछि। शिवक ध्वजा पर नंदी वृषभ अंकित अछि।
दुर्गा मण्डपमे शस्त्र, ट्क्का, पटह, मृदंग, कांस्यताल(बाँसुरीकेँ छोड़ि), वाद्य ध्वज,कवच आ धनुष केर पूजन होइत अछि। ऐमे सर्वप्रथम खड्गक पूजा होइए, तकरा बाद चुरिका, कट्टारक, धनुष, कुन्त आ कवच केर पूजा आ फेर चामर, छत्र, ध्वज, पताका, दुन्दुभि, शंख, सिंहासन आ अश्व केर पूजा होइत अछि। हमरा हिसाबे मिथिलाक कोनो झंडा बिना ऐ सभक सम्मिलनक संपूर्ण नै हएत।

... ...

इन्द्रस्येव शची समुज्जवलगुणा गौरीव गौरीपतेः कामस्येव रतिः स्वभावमधुरा सीतेव रामस्य या। विष्णोः श्रीरिव पद्मसिंहनृपतेरेषा परा प्रेयसी विश्वख्यातनया द्विजेन्द्रतनया जागर्ति भूमण्डले॥9॥

उपर्युक्त पद्य संस्कृत आ अवहट्टबला विद्यापतिकृत शैवसर्वस्वसारक प्रारम्भक नवम श्लोक छी। एकर अर्थ अछि- उत्कृष्ट गुणवती, मधुर स्वभाववाली, ब्राह्मण-वंशजा, नीति-कौशलमे विश्वविख्यात आ महारानी विश्वासदेवी सम्प्रति संसारमे सुशोभित छथि, जे पृथ्वी-पति पद्मसिंहकेँ तहिना प्रिय छली जहिना इन्द्रकेँ शची, शिवकेँ गौरी, कामकेँ रति, रामकेँ सीता आ विष्णुकेँ लक्ष्मी॥9॥
मधुबनी जिला मुख्यालयसँ दक्षिण पण्डौल रेलवे-स्टेशनक निकट भवानीपुर ग्राम बसल अछि। ऐ गामक निकट छह फीट नीचाँ जमीनमे एकटा शिव-लिंग अछि, जे उग्रनाथ महादेवक नामसँ प्रसिद्ध अछि। एहन विश्वास लोकमे छै जे मैथिली पदावली आ नचारीक लेखक विद्यापतिक सहचर उगना, जखन महाकवि प्यासे अप्स्याँत छला, हुनका अपन जटासँ गंगाजल निकालि पिएने रहथि। ऐपर

कविकेँ शंका भेलन्हि, आ ओ कविसँ असली परिचय पुछलन्हि। तकर बाद ऐ स्थानपर शिव हुनका अपन असली रूपक दर्शन देलन्हि।
ऐ कथापर विश्वास तखने भऽ सकैए, जखन तर्क आ विज्ञानक संग श्रद्धाक मिश्रण हुअए। शंकराचार्यक विषयमे कहल गेल जे ओ अपन कमंडलमे धार भरि लेलन्हि। भेल ई जे बाढ़िमे, बीचमे पहाड़ रहलाक कारण, एक दिस बाढ़ि अबै छल आ एक दिस दाही। बीचक गुफाकेँ शंकर अपन शिष्यक सहयोगसँ तोड़ि जखन कमण्डल लेने बहरेला तँ लोक देखलक जे दोसर कात पानि आबि रहल अछि। सभ शंकराचार्यक स्तुति केलन्हि, जे अहाँ अपन कमण्डलमे धार आनि हमरा सभकेँ दाही सँ आ दोसर कातक लोककेँ बाढ़िसँ मुक्त कराओल। अहाँ कमण्डलमे पानि आ धार अनलौं। बादमे अवसरवादी लोकनि एकरा चमत्कारसँ जोड़ि देने हेता। आशा अछि जे उगनाक कथाक तर्क आ श्रद्धासँ विवेचना हएत।
बीस मार्चकेँ १४ दिनुका मिथिला क्षेत्रक गृही परिक्रमा, (जनकपुरक), दू टा डालाक संग- मिथिला बिहारी जी आ किशोरीजी आ आर मारिते रास ढेर मन्दिरक/ भक्तक डाला सभक संग कुआ रामपुर दऽ कऽ जनकपुरमे प्रवेश करैत छथि। कतेक भक्त तँ अपन पशुक संगे परिक्रमा करै छथि। ई परिक्रमा कचुरी मठ, धनुषासँ शुरू होइत अछि आ अमावस्याक रातिमे पहिल विश्राम हनुमान नगर आ चतुर्दशी दिन पन्द्रहम विश्राम जनकपुरमे होइत अछि। २१ मार्चकेँ फागुन परिक्रमा दिन ई यात्रा जनकपुर नगरपालिकाक परिक्रमाक अंतरगृह परिक्रमा (लगभग 8 किलोमीटर) क संग होइत अछि। २२ मार्चकेँ जनकपुर आ आसपासमे होली मनाओल जाइत अछि।

जनकपुर मध्य परिक्रमाक १५ स्थल आ ओतुक्का मुख्य देवता १. हनुमाननगर- हनुमानजी २.कल्याणेश्वर- शिवलिंग ३.गिरिजा-स्थान- शक्ति ४.मटिहानी- विष्णु मन्दिर ५.जालेश्वर- शिवलिंग ६.मनाई- माण्डव ऋषि ७. श्रुव कुण्ड- ध्रुव मन्दिर ८.कंचन वन- कोनो मन्दिर नञि मात्र मनोरम दृश्य ९.पर्वत- पाँच टा पर्वत १०.धनुषा- शिवधनुषक टुकड़ी ११.सतोखड़ी- सप्तर्षिक सात टा कुण्ड १२.हरुषाहा- विमलागंगा १३. करुणा- कोनो मन्दिर नहि मात्र मनोरम दृश्य १४. बिसौल- विश्वामित्र मन्दिर १५.जनकपुर। अन्तमे फेर जनकपुरमे खतम भऽ जाइत अछि। भक्त सभ बारहबीघा मैदान आ धर्मशाला सभमे ठहरै छथि।
लघु परिक्रमा आठ कि.मी., मध्य परिक्रमा 40 कोसक (128 कि.मी.) आ वृहत परिक्रमा 268 कि.मी. क होइत अछि।

उग्रतारा स्थान- मण्डन मिश्रक कुलदेवी/ गोसाउनी महिष मर्दिनी भगवती, महिष्मती।
१४म शताब्दीमे राजा शिव सिंहक ज्येष्ठ रानी पद्मावती महिषीमे, जकर महिष्मति होइमे विवाद अछि, एकटा मन्दिर बनबेलन्हि। खण्डवला राजवंश कालमे सेहो एतऽ मन्दिरक रख-रखाव होइ छल आ राजा आसिन नवरात्रमे एतऽ पूजा करैले आ रहबाले अबैत रहथि।
तारा भक्त लोकनि दुर्गापूजाक समयमे एतऽ खूब अबै छथि

कपिलेश्वर स्थान- मधुबनीसँ पाँच किलोमीटर पश्चिम माधव मन्दिर आ पुरान शिवलिंग, सांख्य दर्शनक जनक कपिल एतऽ मन्दिरक

स्थापना करबेलन्हि। एखुनका मन्दिर दरभंगा महाराज राघव सिंह द्वारा २५० वर्ष पहिने बनबाओल गेल। प्राचीन कालमे समुद्र हिमालय धरि पसरल छल आ फेर जमीन पसरल। जखन बंगालक खाड़ीक निकट गंगासागर तीर्थ लग कपिल सगरक ६०००० पुत्र / सैनिककेँ जरा देलन्हि तखन ओ कपिलेश्वर एला। एखन गंगासागर सेहो समुद्रसँ कनेक हटि कऽ अछि।

जानकी नवमी- वैशाख शुक्ल नवमी। रामनवमी- चैत्र शुक्ल नवमी।
विद्यापतिक मृत्यु तिथि कार्तिक धवल त्रयोदशी।
विवाह पंचमी- अगहन शुक्ल पंचमी।
शतानन्द पुरहित-राम सीताक विवाह। मरवापर मिथिला चित्रकला। परिछन, गोसाउन गीत आ नैना जोगिन ओहिना जेना जुगल सरकार (राम-सीता)क विवाहमे भेल रहए, आइयो।
मिथिला प्राचीन कालमे मैथिलक भूमि विदेहक नामसँ- जकर राजधानी मिथिला रहए- स्थापना मिथी (भविष्य पुराण) द्वारा। दोसर नाम विदेह, मिथिला, तीरभुक्ति, तिरहुत, तपोभूमि, साम्भवी, सुवर्णकानन, मँतिली। मिथिला माहात्म्य (वृहद विष्णु पुराण)- वृहद परिक्रमा- सम्पूर्ण मिथिलाक परिक्रमा एक सालमे- 268 कि.मी.। कौशिकीसँ शुरू भऽ सिंघेश्वर स्थान, ओतऽसँ सिमरियाघाट, फेर हिमालयक फुटहिल्स, फेर कौशिकी होइत सिंघेश्वरस्थान। मध्य परिक्रमा- 40 कोस (128 कि.मी) 5 दिनमे, मुदा आइ-काल्हि 15 दिनमे। फाल्गुन शुक्ल पक्षक पहिल तिथिकेँ (अमावस्या) दिन शुरू होइत अछि आ पूर्णिमा दिन खतम होइत अछि। फागुनक परिक्रमा सभसँ बेशी प्रसिद्ध अछि मुदा परिक्रमा कातिक आ बैशाखमे सेहो कएल जा सकैत अछि।
पाणिनी- मिथिला ओ नगरी छी जतऽ शत्रुक मर्दन कएल जाइत

अछि। जनक- जन (विश)सँ व्युत्पत्ति। निमी द्वारा वैजयंती (जनकपुर) आ मिथी द्वारा मिथिला नगरक स्थापना।
शरभ नकुलक झंडापर रहए, मिथिकल जानवर जकरा दू टा माथ, दू टा पाँखि, एकटा नमगर पुच्छी, आ सिंह जकाँ 8 टा नह होइत अछि। जखन भगवान विष्णु नरसिंह अवतार लेलन्हि तखन हुनका प्रसन्न करबा लेल शिव शरभक रूपमे जन्म लेलन्हि। मिथिला चित्रकलाक पाँच रंग- क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरक द्योतक। अंकुश- दू फँरक बरछा- स्पीयर जइसँ हाथीकेँ नियंत्रित करै छी, गणेश जीक अंकुश मूसकेँ नियंत्रित करैत अछि।
यूनीकोड- 1200 साल पुरान फिगराइन आ 500 साल पुरान पाण्डुलिपि। संयुक्ताक्षर- कोष्ठकक संख्या जे बंगालीमे नै अछि वा बिल्कुल अलग अछि- कवर्ग (10), खवर्ग (4), गवर्ग (8), घवर्ग (4), ङ वर्ग (4) चवर्ग (6), ज वर्ग (5), झ वर्ग (4) ट वर्ग (3), ठ वर्ग (2), ड वर्ग (2), ढ वर्ग (3), ण वर्ग (6), त वर्ग (6) , थ वर्ग (3), द वर्ग (8), ध वर्ग (3), न वर्ग (6) प वर्ग (8), फ वर्ग (2), ब वर्ग (4), भ वर्ग (3), म वर्ग (11) अंत-संयुक्ताक्षर य वर्ग (2), र वर्ग (2), ल वर्ग (4), व वर्ग (4), श वर्ग (9), ष वर्ग (8), स वर्ग (8), ह वर्ग (8) तीन वर्णक संयुक्ताक्षर- (49) चारि वर्णक संयुक्ताक्षर (1) बिकारी (1), ग्वंग ह्रस्व-दीर्घ (2), अंजी एक टाइप अंशुमन पाण्डे द्वारा वर्णित (5) प्रकार आर।
संस्कृत-अवहट्टक विद्यापतिक नेपाल लखिमाक संग पलायन-घुरलाक बाद अंतिम रचना दुर्गा भक्ति तरंगिणी।
ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति झूमर, नचारी, महेशवाणी, जोग उचिती, बटगवनी, परिछनि, कोबर, पराती, बारहमासा, मान, तिरहुत,

दृश्यकूट, शिव, भगवती आ गंगा, विष्णु, शक्ति, हर-गौरीक विषयमे गीत लिखलनि।

मिथिला आ संस्कृत- *कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता*

मिथिला आ संस्कृतक संबंध बड़ड पुरान अछि। षड् दर्शनमे चारि दर्शनक प्रारंभ एतऽसँ भेल। वाजसनेयी आ छांदोग्यक रूपमे दू गोट वैदिक शाखा अखनो एतऽ अछि, ब्राह्मणवर्गमे, मुदा नामे मात्रक। मिथिलामे कतेको लोक भेटता जे मात्र विवाह कालमे वाजसनै आ छंदोगिया नामसँ परिचय प्राप्त करै छथि। बीच रातिमे पता चलै छन्हि जे वर छांदोग्य छथि आ स्त्रीगणमे शोर उठैत अछि जे आब तँ दू विवाह हएत- बड़ड समए लागत। वाजसनेयी आ छांदोग्य क्रमशः शुक्ल यजुर्वेद आ सामवेदक शाखा अछि। इंदिरा गाँधी नेशनल सेंटर ऑफ आट्‌र्स वेद पर एक गोट डी.वी.डी. निकाललक अछि। अखनो ओड़ीसा, महाराष्ट्र, केरल, कर्णाटक आ तमिलनाडुमे वैदिक शाखा जीवित अछि, मुदा अपना ऐठाम शाखा रहितो नामोसँ अर्थोसँ अनभिज्ञता अछि।

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापना प्रधानमंत्री नरसिम्हा रावक प्रयासे रामटेक, महाराष्ट्रमे भेल। अल्पावधिमे ई वि.वि. संपूर्ण महाराष्ट्रमे वर्षावधि संस्कृत संभाषण शिविर चला रहल अछि। शिशुक हेतु 23 खंडमे किताब छपलक अछि, जखन कि एकर भवन अखन बनिये रहल अछि।

का.सि.संस्कृत वि.वि. दरिभङ्गा बहुत रास संस्कृत-मैथिली काव्यक उद्धार केलक मुदा आब जा कऽ एकर योगदान सालमे एकटा पतरा छपबा धरि सीमित भऽ गेल छै- आ ई विश्वविद्यालय पंचांग सेहो अपन गणनाक हेतु विवादमे पड़ि गेल अछि।

विश्वविद्यालय द्वारा 20 सालसँ ऊपर भेल जखन संस्कृत-प्राकृत देसिल बयना सँ युक्त नाटक सभक आलोचनात्मक संस्करण प्रकाशित भेल, जे भाषा मिश्रणक कारणे, जहिना ई संस्कृतक तहिना मैथिलीक, रचनामे परिगणित होइत अछि। विश्वविद्यालय द्वारा पहिल संपादित ग्रंथ ज्योतिरीश्वर ठाकुरक धूर्त्तसमागम अछि। धूर्त्तसमागम तेरहम शताब्दीमे ज्योतिरीश्वर ठाकुर द्वारा रचल गेल। ज्योतिरीश्वर ठाकुर धूर्त्तसमागममे मैथिली गीतक समावेश केलन्हि। ई प्रहसनक कोटिमे अबैत अछि। मैथिलीक अधिकांश नाटक-नाटिका श्रीकृष्णक अथवा हुनकर वंशधरक चरित पर अवलंबित एवं हरण आकि स्वयंबर कथापर आधारित छल। मुदा धूर्त्तसमागममे साधु आ हुनकर शिष्य मुख्य पात्र अछि। धूर्त्तसमागमक सभ पात्र एकसँ-एक धूर्त छथि। तइ हेतु एकर नाम धूर्त्तसमागम सर्वथा उपयुक्त अछि। प्रहसनकेँ संगीतक सेहो कहल जाइछ, तइ हेतु ऐमे मैथिली गीतक समावेश सर्वथा समीचीन अछि। ऐमे सूत्रधार, नटी स्नातक, विश्वनगर, मृतांगार, सुरतप्रिया, अनंगसेना, अस्ज्जाति मिश्र, बंधुवंचक, मूलनाशक आ नागरिक मुख्य पात्र छथि। सूत्रधार कर्णाट

चूड़ामणि नरसिंहदेवक प्रशस्ति करैत अछि। फेर ज्योतिरीश्वरक प्रशस्ति होइत अछि। ऐमे एक प्रकारक एब्सर्डिटी अछि, जे नितांत आधुनिक अछि। जे लोच छै से एकरा लोकनाट्य बनबै छै। विश्वनगर स्त्रीक अभावमे ब्रह्मचारी छथि! शिष्य स्नातक संग भिक्षाक हेतु मृतांगार ठाकुरक घर जाइ छथि तँ अशौचक बहाना भेटै छन्हि। विश्वनगर शिष्य स्नातक संग भिक्षा हेतु सुरतप्रियाक घर जाइ छथि। फेर अनंगसेना नामक वैश्याकँ लऽ गुरु-शिष्यमे मारि बजरि जाइ छन्हि। फेर गुरु-शिष्य अनंगसेनाक संग असज्जाति मिश्र लग जाइ छथि तँ ओतऽ मिश्रजी लंपट निकलै छथि।... जे जुआ खेलाएब आदिकेँ संसारक सार बुझै छथि। असज्जाति मिश्र पुछै छथि जे के वादी आ के प्रतिवादी। स्नातक उत्तर दै छथि- जे अभियोग कहबाक लेल हम वादी थिकौं आ शुल्क देबा हेतु संन्यासी प्रतिवादी थिका। विश्वनगर अपन शुल्कमे स्नातकक गाजाक पोटरी प्रस्तुत करै छथि। विदूषक असज्जाति मिश्रक कानमे अनंगसेनाक यौनक प्रशंसा करैत अछि। असज्जाति मिश्र अनंगसेनाकेँ बीचमे राखि दुनूक बदला अपना पक्षमे निर्णय लैत अछि। एम्हर विदूषक अनंगसेनाक कानमे कहैत अछि, जे ई संन्यासी दरिद्र अछि, स्नातक आवारा अछि आ ई मिश्र मूर्ख, तँ हमरा संग रहू। अनंगसेना चारू दिस देखि बजैछ, जे ई तँ असले धूर्तसमागम भऽ गेल।
विश्वनगर स्नातकक संग पुनः सुरतप्रियाक घर दिस जाइ छथि। एमहर मूलनाशक नौआ अनंगसेनासँ साल भरिक कमैनी मंगैए। ओ हुनका असज्जातिमिश्र लग पठबैत अछि। मूलनाशक असज्जातिमिश्रकेँ अनंसेनाक वर बुझैत अछि। गाजा शुल्कमे लऽ असज्जति मिश्रकेँ गतानि कऽ बान्हि तेना मालिश करैत अछि जे ओ बेहोश भऽ जाइ छथि। ओ हुनका मुइल बुझि भागि जाइत

अछि।

विदूषक अबैत अछि, आ हुनकर बंधन खोलैत अछि आ पुछैत अछि जे हम अहाँक प्राणरक्षा कएल अछि, आ जे किछु आन प्रिय कार्य हुअए तँ से कहू। असज्जाति कहल जे छलसँ संपूर्ण देशकेँ खेलौं, धूर्त्तवृत्तिसँ ई प्रिया पाओल, सेहो अहाँ सन आज्ञाकारी शिष्य पओलक, ऐसँ प्रिय आब किछु नै अछि। तथापि सर्वत्र सुखशांति हुअए तकर कामना करै छी।

मिथिलामे संस्कृतक स्थिति-

मिथिला क्षेत्रमे निम्न संस्थान कवि गुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेकसँ मान्यताक आवेदन कएल अछि। जेना बिहार विद्यालय परीक्षा समितिक अस्तव्यस्तताक कारण केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्डक मान्यता प्राप्त स्कूलक संख्या बढ़ल तहिना दरभंगाक संस्कृत विश्वविद्यालयक अस्तव्यस्तताक कारण नीक संस्थान सभ मान्यताक लेल बाहरक दिस देखलक अछि।

1.J.N.B. Sanskrit Vidyalaya Bihar Post Lagma (R.B.Pur) Via-Lohna Road, Dist. Darbhanga

2.Laxmiharikant Sanskrit Prathamik,Madhyamik Vidyalaya,Post. Jhanjharpur Bazar, Dist.Madhubani,

3.Ajitkumar Mehta Sanskrit Shikshan Sansthan Post Ladora, Dist. Samastipur.

4.Dr.Mandanmishra Sanskrit Mahavidyalaya,Post Sanjat, Dist.Begusarai

5.Saraswati Adarsha Sanskrit

Mahavidyalaya,Begusarai
6.Dr.R.M.Adarsha Sanskrit Mahavidyalaya,P.O. Malighat, Muzaffarpur

एकर अतिरिक्त राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली निम्न विद्यालय सभकेँ ग्रांट दऽ जीवित रखने अछि।
1.J.N.B. Adarsh Sanskrit Mahavidyalaya, PO. Lagma, Via - Lohna Road, Distt - Darbhanga.
2.Laxmi Devi Saraf Adarsh Sanskrit Mahavidyalaya, Kali Rekha, Distt- Deoghar.
3.Rajkumari Ganesh Sharma Sanskrit Vidyapeetha, Kolahnta Patori,Distt - Darbhanga
4.Ramji Mehta Adarsh Sanskrit Mahavidyalaya,Malighat, Muzaffarpur.

ऐमे लगमाक विद्यालय कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय सँ मान्यता मँगलक अछि, किएकि दरभंगाक वि.वि. मे ऐ तरहक कोनो परियोजनाक सर्वथा अभाव अछि।
तीस वर्ष पहिने हिन्दीमे डा. रामप्रकाश शर्म्मा लिखित मिथिलाक इतिहास सेहो प्रकाशित भेल रहए। आजुक दिन नै तँ एकरा अपन वेबसाइट छै नहिये दूर शिक्षाक कोनो परियोजना।
कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयसँ प्रकाशित दोसर नाटक अछि- संस्कृत आ अवहट्टक विद्यापतिक गोरक्षविजय नाटक। ऐसँ पहिने कृष्ण पर आधारित नाटकक प्रचलन छल। ऐ अर्थमे ई एकटा क्रांतिकरी नाटक कहल जाएत।
नाथ संप्रदाय किंवा गोरक्ष संप्रदायक प्रवर्त्तक योगी गोरक्षनाथक

कथा लऽ कऽ ऐ नाटकक कथावस्तु संगठित भेल अछि।
गोरक्षनाथक गुरु मत्स्येन्द्रनाथ योग त्यागि कदलिपुरमे राजा, 18 टा रानीक संग भोग कऽ रहल छथि। गोरक्ष आ काननीपादकेँ द्वारपाल रोकि दैत अछि। मंत्री ढोलहो पिटबा दैत अछि जे योगी सभक प्रवेश कतौ नै हुअए आ रानी सभकेँ राजाक मोन मोहने रहबाक हेतु कहल जाइत अछि। गोरक्ष आ काननपाद नटुआक वेष धरै छथि आ मोहक नृत्य राजाकेँ देखबै छथि। ऐ बीच राजाक एकमात्र पुत्र बौधनाथ खेलाइत-खेलाइत मरि जाइत अछि। राजाक शंका नटपर जाइ छै तँ ओकरा मारबाक आदेश होइ छै। नट बच्चाकेँ जिया दै छै। राजा हुनकर परिचय पुछै छथि तखन ओ हुनका अपन पूर्व जन्मक सभटा गप बता दै छन्हि, जे अहाँ तँ जोगी छी भोगी नै।
ऐ नाटकक पात्रमे महामति (राजाक मंत्री) आ महादेवी-मत्स्येन्द्रनाथक ज्येष्ठ रानी सेहो छथि। मत्स्येन्द्रनाथ कदलीपुरक राजा आ पूर्व जन्मक योगी छथि। मत्स्येन्द्रनाथ अंतमे कहै छथि जे गोरक्ष जेहन शिष्य हुअए आ महादेवी जेहन सभ नारी होथु।

कामेश्वरसिंह दरभङ्गा संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा त्रैमासिकी संस्कृत पत्रिका 'विश्वमनीषा' निकलैत छल। 1975 ई. सँ 1994 ई. धरि ई पत्रिका प्रकाशित होइत रहल, मुदा 14 वर्षसँ एकर प्रकाशन बंद अछि। हिन्दीमे मिथिलाक इतिहासक अतिरिक्त सात खण्डमे मैथिलीक परम्परागत नाटकक (1300 ई. सँ 1900ई. धरिक 16 टा नाटक) प्रकाशन कएल गेल छल। मैथिलीमे पं गोविन्द झा लिखित वातावरण नाटकक संस्कृत अनुवाद श्री पं शशिनाथ झा केलन्हि आ तकरा विश्वविद्यालय प्रकाशित केलक। 'स्मृति-साहस्त्री'

जे 20म शताब्दीक विद्वान्-साधकक जीवनपर आधारित प्रथम मैथिली महाकाव्य अछि, आ जकर रचयिता श्री बुद्धिधारी सिंह ‘‘रमाकर’’ छथि केर प्रकाशन सेहो विश्वविद्यालय केने अछि। रूपक समुच्चयः नामक पुस्तकमे चारि गोट रूपक अछि। ऐमे चारिम संस्कृत रूपक म.म.अमरेश्वर कृत धूर्त्तविडम्बन प्रहसनम् मैथिली अनुवादक संग देल गेल अछि। म.म. भवनाथ उपाध्यायक राजनीतिसारः सेहो मैथिली अनुवादक संग देल गेल अछि।

संप्रति विश्वविद्यालयक कार्य सालमे एकबेर पंचाङ बनेबा धरि सीमित बुझाइत अछि।

जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोष

मैथिलीक पुरोधा जयकान्त मिश्र (१९२२-२००९) क ३ फरबरी २००९ केँ सात बजे साँझमे निधन भऽ गेलन्हि। मैथिली साहित्यक एकटा बड़ पैघ विद्वान डॉ. जयकांत मिश्र १९८२ ई. मे इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अंग्रेजी आ आधुनिक यूरोपियन भाषा विभागक प्रोफेसर आ हेड पदसँ सेवा निवृत्त भेल छला। तकरा बाद ओ चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालयमे भाषा आ समाज विज्ञानक डीन रूपमे कार्य केलन्हि। स्व. मिश्र अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, इलाहाबादक अध्यक्ष, गंगानाथ रिसर्च इंस्टीट्यूट, इलाहाबादक अवैतनिक सचिव आ सम्पादक, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागक प्रबन्ध विभागक संयोजक आ साहित्य अकादमी, नई दिल्लीक मैथिली प्रतिनिधि आ भाषा सम्पादक रहल छला। मैथिली साहित्यक इतिहास, फोक लिटेरेचर ऑफ मिथिला, कीर्तनिया ड्रामा सभक क्रिटिकल एडीशन, लेक्चर्स ऑन थॉमस हार्डी, लेक्चर्स ऑन फोर पोएट्स आ द कॉम्प्लेक्स स्टाइल इन एंगलिश पोएट्री हिनक लिखित किछु ग्रंथ अछि। हिनकर वृहत मैथिली शब्द कोषक मात्र दू खण्ड प्रकाशित भऽ सकल, जइमे

देवनागरीक संग मिथिलाक्षर आ फोनेटिक अंग्रेजीमे सेहो मैथिली शब्दक नाम रहए। ई दुनू खण्ड मैथिली शब्दकोष संकलक सभ लेल सर्वदा प्रेरणास्पद रहत। विदेह डाटाबेसक आधारपर गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झाक मैथिली अंग्रेजी शब्दकोष जइमे मिथिलाक्षर आ अंतर्राष्ट्रीय फोनेटिक अल्फाबेट, रोमन आ देवनागरीमे शब्द आ शब्दार्थ देल गेल अछि जयकांत मिश्र , दीनबन्धु झा-गोविन्द झा, भवनाथ मिश्र-मतिनाथ मिश्र 'मतंग' आ युगलकिशोर मिश्रकेँ समर्पित कएल गेल अछि। मैथिलीमे शब्दकोष निर्माण देरीसँ शुरू भेल आ पहिल गम्भीर प्रयास दीनबन्धु झाक मिथिला भाषा विद्योतनमे उपस्थित ११२५ टा धातु-रूप अछि (१९४६ ई.) आ फेर हुनके द्वार संकलित मिथिलाभाषाकोषः शब्दकोष (१९५२ ई.) अछि। ऐसँ पहिने भव नाथ मिश्रक मिथिला शब्द प्रकाशक पहिल खण्ड आएल (१९१४ ई.), मुदा ओ बड़ड संक्षिप्त रहए आ ओकरा शब्दकोष नै वरन ग्लॉसरी कहि सकै छी। अलाइस इरवीन डेविसक बेसिक कलोक्विअल मैथिली: अ मैथिली-नेपाली-इंगलिश वोकाबुलेरी (१९८४ ई.) सेहो अति संक्षिप्त अछि। मैथिली अकादमीक मैथिली शब्दकोष (१९९३, मूल संग्रहकर्त्ता-युगल किशोर मिश्र) पहिल बेर एकटा विराट संकल्पक संग सोझाँ आएल, मुदा संयोजक, सम्पादक, कार्यकारी सम्पादक, सम्पादन उपसमिति आदि-आदि मध्य हुनकर नाम बीचमे मूल संग्रहकर्ताक रूपमे मात्र घोसिआएल देखबामे अबैत अछि।

ऐ मध्य जयकांत मिश्रक बृहत् मैथिली शब्दकोशक पहिल खण्ड १९७३ ई. मे आ दोसर खण्ड १९९५ ई. मे आएल। ऐ दुनू खण्डमे स्वर वर्णमालाक अ सँ औ एतबे वर्णसँ शुरू भेल शब्दक वर्णन आबि सकल आ क सँ शुरू भेल शब्दक मात्र पहिल पृष्ठ

आएल। जयकांत बाबूक मृत्युक संग एकर आगामी खण्ड सभक आएब आब सम्भव नै अछि।

भवनाथ मिश्रक पुत्र मतिनाथ मिश्र 'मतंग' क मैथिली शब्द कल्पद्रुम १९९८ ई. मे आएल जे दोसर बेर एकटा विराट संकलनक संग (युगल किशोर मिश्रक मैथिली अकादमी, पटनाक कोषक बाद) सोझाँ आएल। ऐमे भवनाथ मिश्रक मिथिला शब्द प्रकाशक पहिल खण्ड सेहो प्रारम्भमे देल गेल अछि।

दीनबन्धु झाक पुत्र गोविन्द झाक मैथिली-अंग्रेजी शब्द कोश (कल्याणी कोश, १९९९) जयकांत बाबूक कोशक समान द्विभाषी छल जइमे मैथिलीक संग अंग्रेजीमे शब्दार्थ अछि। एम्हर २००७ ई. मे उमेश चन्द्र झाक संक्षिप्त चातुर्भाषिक शब्दकोश (मैथिली, संस्कृत, हिन्दी एवं अंगरेजी) सेहो आएल अछि।

एकर सभक अतिरिक्त साझा प्रकाशन, नेपाल द्वारा सेहो एकटा बृहत् मैथिली शब्दकोश प्रस्तावित अछि।

अंग्रेजी शब्दकोष: डाटाबेसक आधारपर बनल शब्दकोष सभ:

अंग्रेजी शब्दकोषक ऐतिहासिक महत्वक शब्दकोषक अतिरिक्त जे आधुनिक समएमे डाटाबेस/ कम्प्युटरीकृत लिखित-मौखिक कोर्पस (पत्र-पत्रिका, पोथी, मौखिक वार्तालाप, रेडियो-टी.वी. कार्यक्रममे प्रयुक्त आ पाण्डुलिपि आधारित शब्द) आधारित वैज्ञानिक सिद्धांत आधारित शब्दकोष आएल अछि, ओइमे तीन टा शब्दकोष उल्लेख योग्य अछि:

१.ऑक्सफोर्ड एडवान्स्ड लर्नर्स डिक्शनरी (१९४८ प्रथम संस्करणसँ सातम संस्करण १९९५),

२.लॉन्गमेन डिक्शनरी ऑफ कन्टेमपरोरी इन्गलिश (१९७८ प्रथम संस्करणसँ पाँचम संस्करण २००९) आ

३.कोलिन्स कोबिल्ड एडवान्स्ड लर्नर्स इंग्लिश डिक्शनरी (१९९५ प्रथम संस्करणसँ छठम संस्करण २००८)।
एकर अतिरिक्त सी.डी.पर आ ऑनलाइन उपलब्ध माइक्रोसॉफ्ट एनकार्टा डिक्शनरी उच्चारणक ध्वनि रेकार्डिंग सेहो दैत अछि (ऑक्सफोर्ड एडवान्स्ड लर्नर्स डिक्शनरीक आ दोसरो कोषक सी.डी.वर्सन उच्चारणक ध्वनि रेकार्डिंग दैत अछि)।
कोनो कोषक उत्कृष्टताक निर्धारण ओइमे सम्मिलित शब्दक संकलनसँ लगाएल जेबाक चाही। पहिल ई जे पाठक जइ शब्दक ताकिमे छथि से हुनका भेटन्हि आ ई ओइ शब्दकोषक अद्यतन, फील्डवर्क आधारित (मिथिलाक सभ क्षेत्रसँ आ प्रवासी मैथिलक नव-नव प्रयोगसँ) आ नव-नव विषय (जेना अन्तर्जाल, विज्ञान-कला-वाणिज्य, संगणक आ नूतन घटनाक्रम आधारित) कँ समाहित केने बिना सम्भव नै। विद्वताक संग तकनीकक प्रयोग विषय वस्तु चयनमे हेबाक चाही, ऐमे खेल-धूप, गप-शप आ लिखित साहित्यक संग मौखिक साहित्य सेहो रहए। तखन तइ शब्दक परिभाषा सेहो ततबे महत्वपूर्ण- ओइ चयनित शब्दक भाषायी विश्लेषण ततेक सूक्ष्मतासँ हेबाक चाही जइसँ भाषाक कोनो सन्दर्भ/ कोनो अर्थ छूटि ने जाए। ऐ क्रममे ई उल्लेखनीय अछि जे दीनबन्धु झाक ११२५ टा धातुरूपकँ जँ आर कनेक परिवर्धित आ संशोधित कऽ देल जाए आ एकरा लगभग २००० आधारभूत शब्द धरि बढ़ा देल जाए तँ ओ सभ मैथिली भाषी, जिनका भाषापर नीक पकड़ नै छन्हि, ५००००-१००००० शब्दक मैथिली कोषक सभ शब्दक अर्थ आ संदर्भ बुझि सकता।
कोषमे देल शब्द सभक अर्थ बेशी प्रयुक्तसँ कम प्रयुक्त अर्थक क्रममे हेबाक चाही। एतऽ मौखिक उच्चारण आ प्रयोगपर ध्यान सेहो आवश्यक अछि। पाठककँ ईहो बुझाउ जे कोन शब्द बेशी आ कोन

शब्द कखनो-काल प्रयुक्त होइत अछि। लोकोक्तिक प्रयोग सेहो, उदाहरण दऽ, ठाम-ठाम हेबाक चाही।
संयुक्त शब्द, लोकोक्ति आधारित मिश्रित संयुक्त शब्द, कोनो शब्दसँ निकलल शब्द, पर्याय-विपर्याय ऐ सभक संकलन शब्दक संग आवश्यक। कोनो शब्द-मोहाबराक संग दोसर शब्द सभक जुड़ब आ समान वा तेहन-सन अर्थमे प्रयुक्त हएब, ई सभ सेहो देखाएब आवश्यक।
व्याकरणीय विवेचन-समानता-असमानता दुनू देखबैत, तकर प्रयोग सेहो स्थान-स्थानपर करू। वाक्यमे प्रयोग अनुसारे शब्दक अर्थमे परिवर्तन दर्शित करू।
कोष मध्य बुझेबा लेल चित्रक प्रयोग सेहो आवश्यक। आधुनिक वैज्ञानिक शब्दकोषमे उच्चारण भिन्नताक निरूपण सेहो हेबाक चाही।
मोहाबरा आ लोकोक्तिक सापेक्ष सन्दर्भमे प्रयोग (जेना ब्राह्मण कहै छथि- दस ब्राह्मण दस पेट, दस राड़ एक पेट; मुदा तथाकथित जाति-व्यवस्थाक निचुलका सीढ़ीक लोक कहैत छथि- दस बाभन एक पेट, दस राड़ दस पेट), यदि एहन प्रयोग उपलब्ध अछि, सेहो दर्शित करू।
शब्दक वाक्यमे प्रयोग- अर्थ मात्र किछु शब्दमे देने बहुत रास गलत प्रयोग देखबामे अबैत अछि आ एकर निराकरण शब्द अर्थक संग पूर्ण वाक्यमे प्रयोगसँ कएल जा सकैत अछि (कवितामे सेहो पूर्ण वाक्यक प्रयोग कएल जा रहल अछि से ओतौसँ उदाहरण संभव)।
तंत्रांश-शब्दकोष- सॉफ्टवेयर (तंत्रांश) आधारित कोषक विकास हुअए, जइसँ एकर सी.डी. वा अन्तर्जालपर निरूपण भऽ सकए आ ध्वन्यात्मक-मौखिक उदाहरण देल जा सकए।

फोनेटिक ट्रांसक्रिप्शन- अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक वर्णमाला

इन्टरनेशनल फोनेटिक अल्फाबेट-आइ.पी.ए.- सभसँ लोकप्रिय फोनेटिक ट्रांसक्रिप्ट लिपि अछि आ एकर प्रयोग द्विभाषी वा बहुभाषी शब्दकोषक संदर्भमे करब आवश्यक।

जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोष:

जयकान्त मिश्रक मैथिली शब्दकोषक प्रथम खण्डक आत्म-निवेदनमे जयकान्त मिश्र लिखै छथि जे- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ भाषाविज्ञानवेत्ता डॉ. सुभद्र झा (वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालयक भूतपूर्व पुस्तकालयाध्यक्ष) कोशक प्रधान सम्पादकक कार्यभार लेबासँ तहिना विरक्ति देखाओल जहिना १९६५ ई. मे साहित्य अकादमीमे मैथिलीकेँ भारतक सत्रहम साहित्यिक भाषाक रूपमे स्थान देआबए काल हुनका भेलन्हि।

सुभद्र झाक "फॉर्मेशन ऑफ द मैथिली लंग्वेज" (१९५८ ई.) क प्रयोग मैथिली शब्दक व्युत्पत्तिक टिप्पणी देबामे जयकान्त मिश्र प्रयोग केने छथि- जेना सुनीति कुमार चाटुर्ज्या जयकान्त मिश्रक मैथिली शब्दकोषक प्रथम खण्डक उपोद्घातमे लिखैत छथि। जयकान्त मिश्रक मैथिली शब्दकोष आर बहुत रास कारणसँ एकटा कीर्तिमान स्थापित करैत अछि। जेना:-

१.तत्कालीन शब्दावलीक संयोजन:- दीनबन्धु झाक-मिथिलाभाषा शब्दकोश, बदरीनाथ झाक-मैथिली-संस्कृत शब्दकोश, सर जार्ज ए.ग्रिअर्सनक-बिहार पीजेन्ट लाइफ आ मैथिली शब्दकोश- मैथिली क्रेस्टोमएथी-१८८२, डॉक्टर श्री सुभद्र झा सर्वानन्दकृत अमरकोशटीका, म.म.डॉक्टर उमेश मिश्र, रुचिपति, जगद्धर, विद्यापति शब्दावली, एन.एन.वसु सम्पादित चर्यागीतिसँ शब्दावली, सुनीति कुमार चाटुर्ज्या आ बबुआजी मिश्र सम्पादित वर्णरत्नाकरसँ शब्दावली, खगेन्द्रनाथ मित्र ओ मजुमदार सम्पादित विद्यापति पदावलीसँ शब्दावली, सर जार्ज ग्रिअर्सन सम्पादित कृष्णजन्मसँ

शब्दावली, सुरेन्द्र झा ''सुमन'' , ऋद्धिनाथ झा आ रामेश्वर झा सम्पादित कहबी संग्रह।

२.संदर्भ रूपमे प्रकाशित पोथी आ प्रकाशित हस्तलिखित पाण्डुलिपिक प्रयोग: ज्योतिरीश्वरक १३२४ ई.क मैथिली धूर्तसमागम, विद्यापतिक १४१५ ई.क गोरक्षविजय, कान्हारामक १८४२ ई.क गौरी स्वयम्बर, लोचन, गोविन्ददास, चन्दा झा, हर्षनाथ झा, लालदास, हरिमोहन झा, सुमन, यात्री आदि।

३.दीर्घायु समस्त पत्र-पत्रिकाक संदर्भ रूपमे प्रयोग: मिथिला मिहिर, मिथिला मोद, वैदेही।

४.ध्वनि-कॉर्पोरा- टेपरेकार्डरसँ शब्द सभक वाच्य वा उपभाषाक रूप सभक संग्रह, खेती आ मल्लाहक शब्दावलीक संग्रह मुदा ऐमे धान-आम-मूलग्राम-पाँजि सभक शब्दावली छूटल।

५.शब्द सभक प्रथम-प्रयोगक कॉर्पोराक आधारपर निर्धारण आ तकर शब्दकोशमे प्रदर्शन ऐमे मिश्र टोलाक श्री शशिनाथ चौधरीक योगदान।

६.राजाराम टाइप फाउन्ड्री प्रेस, कटघर, इलाहाबाद द्वारा बनाओल म.म. डॉ. उमेश मिश्रक निर्देशनमे तिरहुता काँटाक प्रयोग कोषमे भेल, संगे रोमन फोनेटिक ट्रांसक्रिप्शनक प्रयोग उच्चारण बोध लेल कएल गेल।

७.जयकान्त मिश्रक कोषमे डॉ सर गंगानाथ झा, डॉ. अमरनाथ झा आ म.म. डॉ. उमेश मिश्र ग्रंथ-पत्रिकाक संकलनमे सहयोग देलन्हि। प्रो. हरिमोहन झा, बाबू श्री लक्ष्मीपति सिंह, प्रो. बुद्धिधारी सिंह रमाकर, प्रो. सुरेन्द्र झा ''सुमन'' आ काञ्चीनाथ झा ''किरण'' अवैतनिक परामर्शदाताक कार्य केलन्हि। सहायक सम्पादकक कार्य केलन्हि- श्री राघवाचार्य शास्त्री, डॉक्टर उमाकान्त तिवारी, श्री

जयगोविन्द मिश्र, प्रो. सुशील चन्द्र चौधरी, श्री जीवेश्वर झा, श्री यशोधर झा, डॉक्टर किशोरनाथ झा, प्रो. रुद्रकान्त मिश्र।
८.व्याकरण विवेचन: शब्दक अर्थक प्रयोगक अनुसारेँ १.२ कऽ विवरण, व्याकरण-विवरण-शब्दक स्थिति लुप्त, काव्य प्रयोग, शब्दक देशज-विदेशज व्युत्पत्ति, तुलनात्मक शब्द-विलोम-पर्यायक ठाम-ठाम उदाहरण, शब्दक अर्थ निर्दिष्ट करबा लेल कॉर्पोरासँ लेल ओइ शब्दयुक्त वाक्य-प्रयोग।
दीनबन्धु झाक मिथिलाभाषा विद्योतनक धातुपाठ मे अर्थक व्युत्पत्ति बड़ड नीकसँ देल गेल अछि, जेना- (१०) डिक- अधिकक अँटकब। ई जगह गहीँड़ अछि तेँ एहिठाम पानि डिकल अछि- अधिक अँटकल अछि। मिथिला भाषा विद्योतनक दुनू खण्डमे उपस्थित ४३ टा सारणी मे मैथिली शब्दक व्युत्पत्ति विस्तृत रूपमे देल गेल अछि। दीनबन्धु झाक मिथिला भाषा कोषक भूमिकामे सेहो ढेर रास शब्दक अन्वय, उच्चारण, लिङ्ग-निर्णय आ व्याकरणक विवेचन कएल गेल अछि। मूलकोषमे सेहो सभ शब्दमे तँ नै, मुदा अधिकांशमे शब्द, ओकर सन्धि-विच्छेद, व्याकरणगत विशेषता आ अर्थ देल गेल अछि। यत्र-तत्र शब्दक भिन्न-रूप आ शब्दक संग क्रियादि जुटबासँ अर्थक भिन्नता सेहो देखाओल गेल अछि। मैथिली अकादमी, पटनाक युगल किशोर मिश्र बला शब्दकोशमे शब्द, तकर बाद व्याकरणगत विशेषता आ अर्थ देल गेल अछि। अलाइस इरवीन डेविसक बेसिक कलोक्विअल मैथिली: अ मैथिली-नेपाली-इंगलिश वोकाबुलेरी (१९८४ ई.) मात्र रोमन आ फोनेटिक रोमन वर्णमालाक प्रयोग करैत अछि आ मैथिली शब्द, ओकर व्याकरणगत विशेषता आ तकर अर्थ नेपाली आ अंग्रेजीमे दैत अछि। तकर बाद किछु संरचनात्मक टिप्पणीक बाद नेपाली आ अंग्रेजी इंडेक्स देल गेल अछि जइमे नेपालीसँ मैथिली आ अंग्रेजीसँ मैथिली अर्थ देल

गेल अछि। भवनाथ मिश्रक मिथिला शब्द प्रकाशमे मिथिलाभाषामे शब्द, फेर ओकर हिन्दी आ संस्कृतमे अर्थ, तखन लिङ्ग आ अन्तमे संस्कृतमे ओकर प्रमाण देल गेल अछि। मति नाथ मिश्र ''मतंग'' क मैथिली शब्द कल्पद्रुममे मैथिली शब्द, ओकर व्याकरणगत विशेषता आ तकर अर्थ आ अन्तमे शब्द मैथिली, देशज, तत्सम वा तद्भव अछि, तकर वर्णन देल गेल अछि। गोविन्द झाक कल्याणी कोश- अ मैथिली-इंग्लिश डिक्शनरी मे प्रस्तावनामे देल किछु संरचना आ उच्चारणक विश्लेषणक संग एपेन्डिक्समे क्रियापदीय प्रत्यय, नाम-प्रत्यय आ एकक, सौरमास ओ नक्षत्र, चान्द्रमास, विभिन्न संवत, भार-मान, नपना, रैखिक मान, वर्ग-मान, मुद्रा आ प्रकीर्ण गणनाक सारणी देल गेल अछि। मूल कोषमे देवनागरीमे मैथिली शब्द, फेर रोमन फोनेटिक वर्णमालामे ओकर ट्रांसक्रिप्शन, व्याकरणगत विशेषता आ मैथिली आ अंग्रेजीमे तकर अर्थ देल गेल अछि। यत्र-तत्र शब्दक भिन्न अर्थ आ संदर्भ सेहो देल गेल अछि। उमेश चन्द्र झाक चातुर्भाषिक शब्दकोषमे मैथिली शब्द आ तकर संस्कृत, हिन्दी आ अंग्रेजी अर्थ देल गेल अछि। सी-डैकक तंत्रांश-शब्दकोष मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी-मैथिली डिक्शनरीमे मैथिली टाइप केलासँ अंग्रेजीमे अर्थ आ अंग्रेजी टाइप केलासँ मैथिलीमे अर्थ अबैत अछि। विदेह डाटाबेसक आधारपर गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झाक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोष आ अंग्रेजी-मैथिली शब्दकोष विदेह-कॉर्पोराक आधारपर बनल अछि आ प्रिंट आ ऑनलाइन, (http://www.videha.co.in/ पर) दुनू रूपमे उपलब्ध अछि आ निरन्तर संवर्धनशील अछि। ऐ कोषमे अन्तर्जाल, संगणक आ विज्ञान शब्दावली आन आधुनिक विषयक संग सम्मिलित कएल गेल अछि। एखन मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोषमे अन्तर्राष्ट्रीय

फोनेटिक अल्फाबेटमे मैथिली शब्द, फेर ओइ शब्दक देवनागरी आ मिथिलाक्षरमे ट्रांसलिटेरेशन, फेर अन्तर्राष्ट्रीय फोनेटिक अल्फाबेट, देवनागरी आ मिथिलाक्षरमे ओकर अर्थ आ अन्तमे अंग्रेजीमे अर्थ आ व्याकरणगत विशेषता देल गेल अछि। विदेह-कॉर्पोराक आधारपर बनल अंग्रेजी-मैथिली शब्दकोषमे अंग्रेजी शब्द आ ओकर व्याकरणगत विशेषता, फेर अन्तर्राष्ट्रीय फोनेटिक अल्फाबेट, देवनागरी आ मिथिलाक्षरमे ओकर अर्थ आ अन्तमे अंग्रेजीमे अर्थ देल गेल अछि। सम्पूर्ण डाटाबेस प्रिंट भेलाक बाद कोषमे देल शब्द सभक अर्थ बेशी प्रयुक्तसँ कम प्रयुक्त अर्थक क्रममे, संयुक्त शब्द, लोकोक्ति आधारित मिश्रित संयुक्त शब्द, कोनो शब्दसँ निकलल शब्द, पर्याय-विपर्याय शब्द, मोहाबराक संग दोसर शब्द सभक व्याकरणीय विवेचन-समानता-असमानता दुनू देखबैत, कोष मध्य बुझेबा लेल चित्रक प्रयोग, मोहाबरा आ लोकोक्तिक सापेक्ष सन्दर्भमे प्रयोग, शब्दक वाक्यमे प्रयोग (विदेह कॉर्पोरासँ) क संग दोसर संस्करणमे तंत्रांश-शब्दकोष सी.डी.मे उपलब्ध करेबाक योजना अछि, जइमे ध्वन्यात्मक रेकार्डिंग रहत। ओना http://www.videha.co.in/ केर आर्काइवमे उच्चारणक ऑडियो फाइल डाउनलोड/ श्रवण लेल ऑनलाइन राखल गेल अछि।

जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोष:विवेचना:

कोनो शब्दकोश लिखल नै जाइत अछि वरन संगृहीत कएल जाइत अछि। मुदा जँ विषय नव अछि तखन ओइ लेल मौखिक-साहित्यिक परम्पराकेँ देखैत शब्दक निर्माण करऽ पड़त आ विदेशज शब्दकेँ सेहो ठाम-ठाम स्वीकार करऽ पड़त। ओना शब्दकोषक लक्ष्य मात्र संग्रहण अछि मुदा ई देखल जाइत अछि जे नै चाहियो कऽ ई मानकीकरण प्रसंगकेँ आगाँ बढ़बैत अछि आ लोक-व्यवहारकेँ प्रभावित

करैत अछि। ऐ कारणसँ कोषक सम्पादकक दायित्व आर बढ़ि जाइत अछि।

ऐ तरहेँ श्री जयकान्त मिश्रक शब्दकोष आधुनिक कोनो शब्दकोषसँ कोनो तरहेँ न्यून नै अछि। ई एक तरहेँ एक डेग आगाँ बढ़ैत अछि, जखन शब्दक अर्थ निर्दिष्ट करबा लेल कॉर्पोरासँ लेल ओइ शब्दयुक्त वाक्य-प्रयोगमे प्राचीन (८म शताब्दी सँ १३२४ ई.पर्यन्त-चर्यापद, ज्योतिरीश्वर आदि), पूर्वकालीन मध्ययुग (१३२४ ई-१५०० ई.), मध्ययुग (१५०० ई-१८६० ई., लोचन गोविन्ददास आदि) आ आधुनिक मैथिली (१८६० ई.-१९६० ई., चन्दा झा, हरिमोहन झा आदि) सँ संदर्भ सहित उदाहरण दैत अछि।
जयकान्त मिश्रक मैथिली शब्दकोष आ जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोष ऐ तरहेँ एक दोसराक पूरक भऽ सकत जखन हुनकर कार्यकेँ आगाँ बढ़ाओल जाए आ पूर्ण कएल जाए।

इन्फॉरमेशन सोसाइटी, सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान

इन्फॉरमेशन सोसाइटी किंवा सूचना-आधारित-समाज एकटा ओहेन समाज अछि जइमे सूचनाक निर्माण, वितरण, प्रसार, उपयोग, एकीकरण आ संशोधन, ई सभ एकटा महत्त्वपूर्ण आर्थिक, राजनीतिक आ सांस्कृतिक क्रिया होइत अछि। आ ऐ समाजक भाग हेबामे समर्थ लोक अंकीय वा डिजिटल नागरिक कहल जाइ छथि। ऐ उत्तर औद्योगिक समाजमे सूचना-प्रौद्योगिकी उत्पादन, अर्थव्यवस्था आ समाजकेँ निर्धारित करैत अछि। उत्तर-आधुनिक समाज, उत्तर औद्योगिक समाज आदि संकल्पना सँ ई निकट अछि। अर्थशास्त्री फ्रिट्ज मैचलप एकर संकल्पना देने छलाह। हुनकर ज्ञान-उद्योगक धारणा शिक्षा, शोध आ विकास, मीडिआ, सूचना प्रौद्योगिकी आ सूचना सेवाक पाँचटा अंगपर आधारित छल। प्रौद्योगिकी आ सूचनाक समाजपर भेल प्रभाव एतऽ दर्शित होइत अछि। ई वएह समाज थिक जइमे आइ-काल्हि हमरा सभ रहि रहल छी।

दुनू विश्वयुद्ध आ फासिज्मक चुनौतीक बाद १० दिसम्बर १९४८ कँ संयुक्त राष्ट्रसंघक महासभा द्वारा मानवाधिकारक सार्वभौम घोषणाक उद्घोषणा कएल गेल आ एकरा अंगीकार कएल गेल। ई घोषणा राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आ धार्मिक भेदभावरहित एकटा सामान्य मानदण्ड प्रस्तुत करैत अछि जे सभ जन-समाज आ सभ राष्ट्र लेल अछि।

सूचना समाजपर पहिल संयुक्त राष्ट्र विश्व सम्मेलन दू खेपमे भेल। पहिल १०-१२ दिसम्बर २००३ मे जेनेवा, स्विटजरलैंड मे आ दोसर खेप १६-१८ नवम्बर २००५ मे ट्युनिस, ट्यूनिसियामे। एतऽ

मानवाधिकार आ सूचना प्रौद्योगिकीक बीचमे सम्बन्धकेँ मान्यता देल गेल छल।

मानवाधिकारक सार्वभौम घोषणाक निम्न बिन्दु सभ सूचनाक समाजसँ सम्बन्धित अछि। (मानवाधिकारक सार्वभौम घोषणाक मैथिली अनुवाद डॉ. रमानन्द झा 'रमण')

अनुच्छेद १२

कोनो व्यक्ति कोनो आन व्यक्तिक एकान्तता, परिवार, निवास वा संलाप (पत्राचारादि) मे स्वेच्छया हस्तक्षेप नै करत आ ने ओकर प्रतिष्ठा आ ख्यातिपर प्रहार करत। प्रत्येक व्यक्तिकेँ एहन हस्तक्षेप वा प्रहारसँ कानूनी रक्षा पेबाक अधिकार छै।

अनुच्छेद १८

प्रत्येक व्यक्तिकेँ विचार, विवेक आ धर्म रखबाक अधिकार छै। ऐ अधिकारमे समाविष्ट अछि धर्म आ विश्वासक परिर्वतनक स्वतन्त्रता, एकसर वा दोसराक संग मिलि प्रकटतः वा एकान्तमे शिक्षण, अभ्यास, प्रार्थना आ अनुष्ठानक स्वतन्त्रता।

अनुच्छेद १९

प्रत्येक व्यक्तिकेँ अभिमत एवं अभिव्यक्तिक स्वतन्त्रताक अधिकार छै, जइमे समाविष्ट अछि बिना हस्तक्षेपक अभिमत धारण करब, जइ कोनो क्षेत्रसँ कोनो माध्यमे सूचना आ विचारक याचना, आदान प्रदान करब।

अनुच्छेद २७

१. प्रत्येक व्यक्तिकेँ समाजक सांस्कृतिक जीवनमे अबाध रूपेँ भाग लेबाक, कलाक आनन्द लेबाक तथा वैज्ञानिक विकासमे आ तकर लाभमे अंश पेबाक अधिकार छै।

२. प्रत्येक व्यक्तिकेँ अपन सृजित कोनो वैज्ञानिक, साहित्यिक

अथवा कलात्मक कृतिसँ उत्पन्न, भावनात्मक वा भौतिक हितक रक्षाक अधिकार छै।

अनुच्छेद २१

१. प्रत्येक व्यक्तिकँ अपन देशक शासनमे प्रत्यक्षतः भाग लेबाक अथवा स्वतन्त्र रूपैँ निर्वाचित अपन प्रतिनिधि द्वारा भाग लेबाक अधिकार छै।

२. प्रत्येक व्यक्तिकँ अपना देशक लोक-सेवामे समान अवसर पेबाक अधिकार छै।

३. जनताक इच्छा शासकीय प्राधिकारक आधार हएत। ई इच्छा आवधिक आ निर्बाध निर्वाचनमे व्यक्त कएल जाएत आ ई निर्वाचन सार्वभौम एवं समान मताधिकार द्वारा गुप्त मतदानसँ हएत अथवा समतुल्य मुक्त मतदान प्रक्रियासँ।

अंकीय वा डिजिटल विभाजन एकटा ज्ञानक विभाजन, सामाजिक विभाजन आ आर्थिक विभाजन देखबैत अछि आ बिना भेदभावक एकटा सूचना समाजक निर्माणक आवश्यकता देखबैत अछि, जइसँ सूचना प्रौद्योगिकीपर विकासशील देशक सार्वभौम अधिकार रहए।

मानवाधिकार आ सूचना प्रौद्योगिकीक मध्य व्यक्तिक एकान्तक अधिकार सेहो सम्मिलित अछि। विद्वान, मानवाधिकार कार्यकर्ता आ आन सभ व्यक्ति द्वारा अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता, सूचनाक अधिकार, एकान्तता, भेदभाव-रहित, स्त्री-समानता, प्रज्ञात्मक संपत्ति, राजनीतिक भागीदारी आ संगठनक मेलक संदर्भमे आ सूचना आ जनसंचार प्रौद्योगिकीक सन्दर्भमे ऐ गपपर चरचा शुरू भेल अछि, जे सूचना-समाजमे मानवाधिकारकँ बल देत आकि ओकरा हानि पहुँचाओत।

ऑनलाइन पत्राचारक गोपनीयताक अधिकार, अन्तर्जालक सामग्रीक सांस्कृतिक आ भाषायी विविधता आ मीडिया शिक्षा। सूचना

समाजक तकनीकी अओजार ओकर अधिकार आ स्वतंत्रतासँ लाभान्वित होइत अछि आ समाजक समग्र विकास, अधिकार आ स्वतंत्रताक सार्वभौमता, अधिकारक आपसी मतभिन्नता, स्वतंत्रता आ मूल्य निरूपणमे सहभागी होइत अछि।

ऐसँ सूचना, ज्ञान आ संस्कृतिमे सरल पइठक वातावरण बनैत अछि आ ई उपयोगकर्ताकेँ वैश्विक सूचना समाजक अभिनेताक रूपमे परिणत करैत अछि। कारण ई उपयोगकर्ताकेँ पहिनेसँ बेशी अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता आ नव सामग्री आ नव सामाजिक अन्तर्जाल-तंत्र निर्माण करबाक सामर्थ्य दैत अछि। ऐसँ एकटा नव विधि, आर्थिक आ सामाजिक मॉडेलक आवश्यकता सेहो अनूभूत कएल जा रहल अछि जइमे साझी कर्तव्य, ज्ञान आ समझ आधार बनत। बच्चाक हित एकटा आर चिन्ता अछि जे पैघक हितसँ सर्वदा ऊपर रखबाक चाही।
आधुनिक समाजक आर्थिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक धन एकत्र करबाक प्रवृत्ति सूचना समाजमे बढ़ल अछि आ प्रौद्योगिकी एकटा आधारभूत बेरोजगारी अनलक अछि।
गरीबी, मजदूरक अधिकार आ कल्याणकारी राज्यक संकल्पना, लाभ-हानिक आगाँ कतौ पाछाँ छूटल जा रहल अछि। आब मात्र किछुए अभिनेता चाही, प्रकाशक लोकनि सेहो मात्र किछु बेशी बिकाइबला पोथीक लेखकक प्रचार करै छथि। यएह स्थिति रंगमंच, पेंटिंग, सिनेमा आ आन-आन क्षेत्रमे सेहो दृष्टिगोचर भऽ रहल अछि। सूचना सर्वदा लाभकारी नै होइत अछि। ई मात्र कला, ग्रंथ धरि सीमित नै अछि वरन सट्टा बाजार आ प्रायोजित सर्वेक्षण रपट सेहो ऐमे सम्मिलित अछि। समय आ स्थानक बीचक

दूरीकेँ ई कम करैत अछि आ दुनूक बीचमे एकटा सन्तुलन बनबैत अछि।

मानवक गरिमा मानवक जन्म आधारित सामाजिक स्थानसँ हटि कऽ मानवक गरिमाक अधिकारपर बल दैत अछि। मुक्ति आ स्त्री-मुक्ति आन्दोलन ऐ दिशामे प्रयास अछि।

सूचनाक स्वतंत्र उपयोग सीमित अछि, लोकक एकान्त खतम भऽ रहल अछि। बिल गेट्ससँ जखन हुनकर भारत यात्राक क्रममे पूछल गेल छलन्हि जे माइक्रोसॉफ्टक एक्स-बॉक्स भारतमे पाइरेसीक डरसँ देरीसँ उतारल गेल तँ ओ कहने रहथि जे माइक्रोसॉफ्ट कहियो कोनो उत्पाद पाइरेसीक डरसँ देरीसँ नै अनलक। स्पैम आ पाइरेसीक डर खतम हेबाक चाही।

सूचना समाज वएह समाज छी जकर बीचमे हम सभ रहि रहल छी। लोकतंत्र आ मानवाधिकारक सम्मान सूचना-समाज आ उत्तर सूचना-समाजमे होइत रहत। अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता, एकान्तक अधिकार, सूचना साझी करबाक अधिकार आ सूचना धरि पहुँचक अधिकार जे सूचनाक संचारसँ सम्बन्धित अछि, ई सभ राज्य द्वारा आ सूचना-समाजक बाजारवादी झुकावक कारण खतराक अनुभूतिसँ त्रस्त अछि।

अन्तर्जाल लोकक मीडिआ अछि आ एकटा एहन प्रणाली अछि जे लोकक बीच सम्वाद स्थापित करैत अछि। ऐसँ संचार-माध्यमक मठाधीश लोकनिक गढ़ टुटैत अछि।

अन्तर्जालमे सामान्य रूपसँ सम्पादक नै होइ छथि। एतऽ लोक विषयक आ सामग्रीक निर्माण कऽ स्वयं ओकर संचार करै छथि। ऐसँ कतेक रास सामाजिक सम्वादक प्रारम्भ होइत अछि। मुदा कतेक रास समाज-विरोधी सामग्री सेहो अबैत अछि। तँ की ओइपर प्रतिबन्ध हेबाक चाही। मुदा जँ सॉफ्टवेयरक माध्यमसँ मशीनकेँ

सामग्रीपर प्रतिबन्ध लगेबाक अधिकार देब, तखन ई अभिव्यक्तिक स्वतंत्रतापर पैघ आघात हएत।

बौद्धिक सम्पदाक अधिकार लेखककेँ मृत्युक ६० बरख बादो प्रकाशन आ वितरणक अधिकार दैत अछि। अन्तर्जालमे सेहो पाइरेसीकेँ प्रतिबन्धित करऽ पड़त आ कमसँ कम लेखकक मृत्युक ६० बरख बाद धरि लेखकक अधिकार ओकर सामग्रीपर रहए, से व्यवस्था करऽ पड़त। मुदा पेटेन्टक बेशी प्रयोग विकासशील देशक सूचना अभिगमनमे बाधक हएत आ प्रौद्योगिकीक विकासमे सेहो बाधा पहुँचाएत।

कॉपीराइटसँ सांस्कृतिक विकास मुदा हएत, जेना संगीत, फिल्म, आ चित्र-शृंखला (कॉमिक्स) क विकास। डिजिटल वातावरणमे प्रतिकृतिक बिना अहाँ अन्तर्जालपर सेहो सामग्री नै देखि सकब, से ऑफ-लाइन कॉपीराइट आ ऑनलाइन कॉपीराइट दुनूमे थोड़बेक अन्तर अछि। ऑनलाइन कॉपीराइट प्रतिकृतिकेँ सेहो प्रतिबन्धित करैत अछि। आ प्रतिकृति कएल सामग्रीकेँ दोसर वस्तुमे जोड़ब वा संशोधित करब सेहो बड्ड सरल अछि। से नाम आ चित्र बिना ओकर निर्माताक अनुमतिक नै प्रयोग हुअए, दोसराक व्यक्तिगत वार्तालाप-चैटिंग-मे हस्तक्षेप नै हुअए आ दोसराक विरुद्ध कोनो एहन बयानबाजी नै हुअए जइसँ कोनो व्यक्तिक विरुद्ध गलत धारणा बनए। तहिना नौकरी-प्रदाता कोनो प्रकारक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण अपन कर्मचारीक नियन्त्रण लेल लगबैत अछि तँ से अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संघक दिशा-निर्देशक अनुरूप हेबाक चाही। ई-पत्रमे अनपेक्षित सन्देश, आ ककरो मानसिक वा चिकित्सकीय रिपोर्टक अनपेक्षित संग्रह आ उपयोग सेहो मानवाधिकारक हनन अछि।

अन्तर्जालक उपयोग मुदा सीमित अछि, कारण बहुत रास सामग्री

आ तंत्रांश मंगनीमे उपलब्ध नै अछि आ महग अछि, डिजिटल विभाजन शिक्षाक स्तरकेँ आर बेशी देखार करैत अछि। शारीरिक श्रमक बदलामे मानसिक श्रमक एतऽ बेशी उपयोग होइत अछि, से ई आशा रहए जे स्त्री-असमानता सूचना-समाजमे घटत। मुदा सर्वेक्षण देखबैत अछि जे महिलाक पइठ सूचना प्रौद्योगिकीमे कम छन्हि।

इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी आ ब्रेल-इनेबल कएल/ ध्वनि-इनेबल कएल कम्प्यूटर स्क्रीन/ इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी विकलांग आ अन्ध विकलांग लेल घर पर रहि ई-वाणिज्य करबामे सहायता दैत, मुदा ऐ क्षेत्रमे कएल शोध आ ओकर परिणाम महग रहबाक कारणसँ ओतेक लाभ नै दऽ सकल अछि।

बाल, वृद्ध, विकलांग, स्त्री, कामगार, प्रवासी-कामगार आ दोसर सामाजिक रूपसँ अब्बल वर्ग सूचना समाजमे सेहो अपनाकेँ अब्बल अनुभव करै छथि।

सार्वभौम मानवाधिकार घोषणाक अनुच्छेद १२ एकान्तता [भारतीय संविधानक अन्तर्गत पास कएल कोनो विधि जे संसद द्वारा पारित होइत अछि, द्वारा सभ रक्षित अछि], अनुच्छेद १८ एकान्तमे शिक्षण आ विचारक स्वतंत्रता [भारतीय संविधानक धारा २५(१)], अनुच्छेद १९ कोनो क्षेत्रसँ कोनो माध्यमे सूचना आ विचारक याचना, आदान प्रदान करबाक अधिकार [भारतीय संविधानक धारा १९ (a)], आ अनुच्छेद २१ (१) [भारतीय संविधानक धारा ३२५], अनुच्छेद २१ (२) [भारतीय संविधानक धारा ३२६] आ अनुच्छेद २१(३) [भारतीय संविधानक धारा १६(१) आ १६(२)], अनुच्छेद २७ [भारतीय संविधानक धारा ५१(a)],

वैज्ञानिक विकासमे आ तकर लाभमे अंश पेबाक अधिकार दैत अछि, संगे प्रत्येक व्यक्तिकेँ अपन सृजित कोनो वैज्ञानिक,

साहित्यिक अथवा कलात्मक कृतिसँ उत्पन्न, भावनात्मक वा भौतिक हितक रक्षाक अधिकार सेहो दैत अछि। ऐ आधारपर सूचना-समाजमे मानवाधिकारकेँ देखैत सूचना आ प्रसारण प्रौद्योगिकी द्वारा सामग्री निर्माण तेना हेबाक चाही आ कॉपीराइट आ बौद्धिक सम्पदा अधिकार सेहो तइ तरहेँ हुअए जे ओइसँ सार्वभौम मानवाधिकार घोषणाक बिन्दु सभक अवहेलना नै हुअए वरन ओकर आदर हुअए।

सम्बन्धित धारा:

सार्वभौम मानवाधिकार घोषणाक अनुच्छेद १२ एकान्तता [भारतीय संविधानक अन्तर्गता पास कएल कोनो विधि जे संसद द्वारा पारित होइत अछि, द्वारा सभ रक्षित अछि], अनुच्छेद १८ एकान्तमे शिक्षण आ विचारक स्वतंत्रता [भारतीय संविधानक धारा २५(१)], अनुच्छेद १९ कोनो क्षेत्रसँ कोनो माध्यमे सूचना आ विचारक याचना, आदान प्रदान करबाक अधिकार [भारतीय संविधानक धारा १९ (a)], आ अनुच्छेद २१ (१) [भारतीय संविधानक धारा ३२५], अनुच्छेद २१ (२) [भारतीय संविधानक धारा ३२६] आ अनुच्छेद २१(३) [भारतीय संविधानक धारा १६(१) आ १६(२)]; अनुच्छेद २७ [भारती संविधानक धारा ५१(a)]

अन्हारक विरोधमे अरविन्द ठाकुर

अरविन्द ठाकुर(१९५४-) एहन कथाकार छथि जे कनियाँ काकी आ बुच्ची दाइसँ हटि कऽ मैथिलीमे लघुकथा लिखै छथि। अरविन्द ठाकुरक सशक्त पक्ष छन्हि राजनैतिक-आर्थिक लघुकथा सभ। मैथिली कथाक जड़ता कम होइत अछि। सामाजिक-राजनैतिक-आर्थिक कथा तत्वकँ जोड़ि कऽ लिखल ई मैथिली लघुकथा सभ ढेर रास रिक्तताक पूर्ति करैत अछि। समाज-राजनीति, ब्यूरोक्रेसी-जूडिसियरी सभक साङोपाङ विवेचन भेल अछि।

अन्हारक विरोधमे

खिस्सा सियार-यार- रामनारायण महराज-एक्स एम.एल.ए. आ भूतपूर्व चेयरमैन सरकारी प्रकाशन कमिटी, तहिया कोनो घोटालामे मुख्यमंत्रीक भाइ रामाधार पांडे, एम.एल.ए. हिनका बचेने रहथिन्ह। गरीबदास आजाद जिला कमिटीक महामंत्री, अनेक बर्ख धरि सोशलिस्ट आ आब महासभा पार्टीमे, बेटा सेहो ट्रेनमे डकैती धरि करऽ लागल छन्हि। शालिगराम राय आ लखन यादव- मनबढ़ू सभ। मीटिंग। राजनाथ झा आ जीबछ मंडलक मुँहे राजनीतिपर किछु पैराग्राफ अबैत अछि। सदानन्द विद्रोही महासभापार्टीक विरोधी दलक स्वयंभू नेता तोफान सिंहक शागिर्द आ हुनका संग एकटा बम विस्फोटमे दहिना हाथ गमेने एकटा जुआन। हुनकर अफसोच करब, रघुबंश मंडलक जिला कमिटीक भाइस प्रेसिडेन्ट बनबामे पांडेजीक दाँव- बैकवार्डकँ जगह भेटबाक चाही, आ चौधरीजीक प्रतिष्ठाकँ देखि हुनकर चुप भऽ जाएब! राजमंगल श्रीवास्तव आ सतीश सिंह परमार (छत्तीस बाबू छत्री- *मनबढ़ू शब्दावली*)। एकावन गोट मेम्बरबला संस्था धेला कमिटीक सर्वेसर्वा परमारजी। श्रीवास्तव आ परमारक जोड़ी कुख्यात- अलग-अलग रहलापर दुनू गोटे एक दोसराकँ गारि पढ़ै छथि मुदा रहै छथि संगे। पूर्व प्रखण्ड अध्यक्ष

शनिचर ''शनि'' गाजा आदिक अनवरत सेवी आ वर्तमान युवा अध्यक्ष गणेश गुरमैता पेटीशनबाज। चटर्जी दा- पटनासँ फोनपर रहै छथि- चौधरीजी आ पांडेजीक विरोधमे चौबेजीक संगे फ्रंटक नियार छन्हि। शनि-गुरमैताकेँ परमार गपमे ओझरा लै छन्हि तँ क्यो गोटे दुनू गोटेकेँ फुसियाहीं कऽ सोर करै छन्हि आ त्राण दियाबै छन्हि। जटाशंकर मलिक प्रसिद्ध माखन बाबू (सभ नट वोल्टपर फिट हुअएबला सलाइ-रिंच- *मनबढ्ढू शब्दावली*)। अपनापर ध्यान आकर्षित करबा लेल पारसमणि चौधरीकेँ सोर करै छथि आ हुनकर प्रणामक उत्तर तीन प्रणामसँ दै छथि। हुनकर कार बेटा बौका बाबू (सम्प्रदायवादी पार्टीक मेम्बर) लऽ गेल छन्हि आ जीप खराप छन्हि, दुसधटोली बलाक पंचैती करबाक छलन्हि से रिक्शा मँगबाबऽ पड़लन्हि। च्यवनप्राश खाइते रहै छथि- राघोपुरसँ होमियोपैथिक इलाज करेने छथि। सीता बाबू महासभा पार्टीक प्रखण्ड अध्यक्ष (माखन बाबूक बहु- *मनबढ्ढू शब्दावली*)।सुबोधनारायण सिंह प्रसिद्ध सुबोधजी। एक्स.एम.एल.ए. आ एक्स अध्यक्ष जिला महासभा पार्टी (*समर्थक शब्दावली*- जिलाक गाँधी, *विरोधी शब्दावली*- नटवरलाल आ *मनबढ्ढू शब्दावली*- मुँहदुबरा)। सादगी रहन-सहन, विनम्र। रामाधार पांडेजीक भाए मुख्यमंत्री शिवाधार पांडेक प्रति समर्पित। मुदा चौधरीजीसँ बेसी सटबाक सजा शिवाधारजी हिनका पार्टीक उम्मीदबारी वापस लेबा लेल कहि कऽ देलखिन्ह। राजीव शर्मा- गलतफहमीक शिकार- जे छल-प्रपंच, फूसि आ विश्वासघातक बिना सेहो राजनीति कएल जा सकैत अछि। ठाँइ-पठाँइ बजै छथि आ से *मनबढ्ढू* सभ कटाह कहै छन्हि। सुबोधजीक कहलापर जे शिवाधार बाबूक फोन एलन्हि तँ हुनका नाम आपिस करऽ पड़लन्हि, ओ कहै छथि जे ऐ लुच्चा-लफंगा सभक सरदरबाक गोल्हड़ी झाड़ि देबनि

हमरा सभ। ओतै रामसोगारथ मंडल सेहो छथि, स्वतंत्रता सेनानी मुदा सम्मान-पेंशन अस्वीकार कऽ चुकल छथि। कियो कहै छन्हि तँ कहै छथिन्ह जे जाउ बाउ जाउ, ई गप सुन्नर ठाकुरकेँ सिखेबन्हि जे मुनिस्टर सभक केश-दाढ़ी बनबैत सुराजी पेंशन हथिआ नेने-ए। आ तखने अनघोल, फेर बाजी मारि लेलन्हि चमोक्नि! आ माखन बाबू बड़का गाड़ीसँ उतरैत रामाधार पांडेक गरामे माला पहिरा दै छथि। फेर एकाएकी माला पहिरेबाक चलन आ फेर एकाएकी भाषण-भाख। आ ओम्हर रामसोगारथ मंडलक सपनामे कारी-कारी भयावह आकृति सोनहुला सपनाकेँ चारू कातसँ घेरि लै छन्हि।

पियासल पानि- रामचरनक खेती करब, आब हरबाही मुदा ओकर बेटा लखनाक माथपर छै आ तखने ओकर गौना होइ छै आ अबैए नारायणपुरवाली। लेखक वा कथाक सूत्रधार कनियाँक मुँहदेखाइ लेल जाइ छथि आ देखै छथि ओकर अपार रूप-राशि। लखनाक काकी बेरियाबाली ठट्ठा करै छन्हि आ ओ बहार भऽ जाइ छथि। नारायणपुरबाली एक दिन सूत्रधारक पएर जाँतऽ लगै छथि। रोपनी, डोभनी, कटनी आ कमौनी, कोनो काजमे नारायणपुरवालीक जोड़ नै। एक दिन अन्हरगरे सूत्रधार खेतमे कटनी करबऽ बिदा होइ छथि तँ आमक कलम लग नारायणपुरवालीक आतुर ठोर हुनकर गाल, माथ आ कंठपर निशान छोड़ि दै छन्हि। मुदा तखने घरैया नोकर सरजुगबाक अबाज अन्हारसँ अबै अछि आ बज्जर खसाबथुन भगवान ऐ दुसमनमापर- कहैत निराशा, लालसा आ घृणासँ कुंडाबोर नारायणपुरबाली आगाँ बढ़ि जाइ छथि। ओम्हर नारायणपुरवालीपर डाकनी सवार छै से घोल होइए, देहपरक कपड़ा-बस्तर ओ फेकि लैए। मोतिया दुसाध दारू पिबैए, बरहम बाबाक परसादी आ फेर भगता बनि सात टा काँच करची नारायणपुरवालीक देहपर तोड़ि

दैत अछि। आ डाकनीकेँ हरदुआरक श्मशान पीपर गाछपर भगा दैत अछि! भागि जाइए नारायणपुरवाली। दोसर बेर लखनाक बियाह होइ छै मुदा ऐबेर सूत्रधार एगारह गो टका अनका दिया पठा दै छथि। कनियाँक होनहारिक खबरि सुनि रामचरन प्रसन्न भेल मुदा लखना अपन कपार फोड़ि लैत अछि, कारण ओ नामरद अछि। नारायणपुरवाली... लछमी छलै, बेकसूर, बेचारी, अभागलि।

अन्हारक विरोधमे- हो हल्ला। कथाकार वा सूत्रधार बहराइ छथि आ पहुँचै छथि अलाउद्दीन लग। कहै छन्हि अलाउद्दीन, मुसलमान कुजड़ा। जनारदन चौधरी ओकर यार। ओकरे टोलमे बिकुआ ओकर ऐ यारक भाइकेँ गारि पढ़लकै। ओकर बेहुदपनीक शिकाइत लऽ कऽ जनारदनक भाइक आएब, भैया कहि सोर पारब, मुदा तखने बिकुआक मारब आ तखने ओकर घरक मौगी सभक ओकरा गारि पढ़ब शुरू भेलै। आ उनटे हिन्दू-मुसलमानक शगूफा सेहो छोड़ै रहै। कोन इज्जति रहि गेलै ऐ टोलक। आकि तखने, चारू दिस अपन डराओन छाँह पसारने अन्हारक छातीकेँ चीरैत बिजलीक जगमग इजोत दूर-दूर धरि पसरि गेल।

ढाँचा-१९९२- कथाक सूत्रधारक चिट्ठी। स्वीकारोक्ति जे, जे किछु लिखा गेल छन्हि से वातावरणक दवाबमे। हालेमे जॉन्डिस भेल छलन्हि, जीहकेँ रास लगा कऽ पड़ल छला। रौद, गरदा आ धुँआसँ अकच्छ छथि। एकटा आर विचित्र बेमारी, देहमे तेज हउहटि आ चमरापर नहुँ-नहुँ चकत्ता उभरऽ लगै छन्हि। एक दिन सहरसासँ घुरै छला आकि स्कूटर खराप भऽ गेलन्हि। मिस्त्री आधा घंटामे स्कूटर ठीक करबाक गप कहलकन्हि मुदा पाट-पुरजा खोलि कऽ छिड़िया देलकन्हि आ चारि घंटा लगलन्हि। सुपौल घुरि डॉ. दासक

क्लिनिक गेला, होमियोपैथिक दवाइक बुन्न असरि केलकन्हि मुदा घंटा लागि गेलन्हि। एक बेर सासुरसँ घुरै काल सेहो एहिना भेलन्हि। एक तँ पत्नीसँ बिछोह आ दोसर हाड़ कंपकपाबय बला ठार आ सिहकैत हबा! गोष्ठी, प्रो. राजेन्द्र, डॉ मुखर्जी आ के.के.इन्स्टीट्यूट ऑफ मैडोलॉजीक प्रिंसिपल झा। प्रो. राजेन्द्रक डॉ मुखर्जीसँ कहलापर जे इलाजक फीस पाँच टका तँ दऽ देब मुदा दबाइ देबऽ पड़त मुफ्तिया, फिजिशियन सैम्पल। तइपर मुखर्जीक कहब जे मेडिकल रिप्रेसेन्टेटिव सभ हुनका घासो नै दै छन्हि आ ऐ लेल तँ डॉ. दास लग जाए पड़त। फेर अयोध्यामे बाबरी मस्जिदक ढाँचाक ध्वस्त हएब। सूत्रधारक देहक कँपकँपी, हउहटि, चकता आ सूजन फेरसँ। कोनो प्रत्यक्ष कारण नै रहए एकर, मुदा तैयो हुनकर देह एकरा भोगने छलन्हि।

मूस- ओ आ ओकर दवाइक दोकान। नवका ड्रग इंस्पेक्टर ऐ दुर्गा पूजामे पाँच सए टाका सलामी लऽ गेलै। दोकान थसे जकाँ लेने छै। अनुज बैसै छै दोकानपर। भुमिहार पेंच भिड़ाओत आकि दोकान करत! बैंकक पुरना लोन, घरक पाँच सालक बिजलीक बिल।.. जेठका सार नागपुरमे एकाउन्टेन्ट छै, सनगर नोकरी आ सेहन्तगर कनियाँ छै। जे ओ जादूगर रहैत आ तखन *गिली-गिली फू* आ अलाउद्दीनक चिराग जे रहितै ओकरा हाथमे तखन! मुसबा तँ परेशान केने छै, खाइतो काल, मुदा एखन ओकरा एक्को रत्ती तामस नै उठै छै। ई शहर अनुमण्डलसँ जिला मुख्यालय भऽ गेल छै, जमीनक दाम बढ़ि गेल छै। जमीन बेचि सभटा कर्जा-बर्जा सधा देत। निन्नक बदलामे पारदर्शी बुनबुना आ विभिन्न आकृतिक आ रूपक मूस, कुतरैत, लड़ैत, नचैत, प्रेम करैत, पोथी पढ़ैत आ रम्मी खेलाइत मूस। दोसर बेर बड़का टा बुनबुन्ना, मूसक कारणसँ प्लेग। मेहनतकश मूस बिहरि बनबैत अछि मुदा साँप ओइमे रहैत

अछि। अचकचा कऽ ओ उठि गेल। स्वर्गीय पिताक चित्र देखैत अछि। पूर्वजक अर्जित सम्पत्तिक उपयोग साँपे जकाँ करत? केआरीमे अनेरुआ घास-पात खुरपीसँ साफ करऽ लागल।

प्रजातंत्र परिकथा- एकटा हत्या आ दू टा घरमे डकैती। कमल कुमार शर्मा ऐ खबरिकेँ देखैत अछि, सेन्सर्ड सन खबरि। ऐ गपक चर्चा नै जे ओ डॉक्टर के.पी.भगत सेवानिवृत्त छल आ मामूली फीस लै छल। ओकर घरमे डकैत सभ गरीब मरीज आ ओकर परिजन बनि पैसल छल। ओइ पत्रकारपर कालाबाजारी आ मिलावटक केस अखनो लटकल अछि से ओ कोना लिखितए जे ओइ घरसँ पुलिस थाना अगबे एक सए डेगपर आ आरक्षी महोदयक निवास अगबे साठि-सत्तरि डेगक दूरीपर छलै। फेर डॉक्टर ओइठामसँ ओ सभ, राष्ट्रपति पदक प्राप्त हालेमे रिटायर भेल शिक्षक विक्रम प्रसाद वर्माक घर पहुँचि गेल, डकैती सेहो केलक आ खेनाइ बनबाकऽ सेहो खेलक। विक्रम बाबूक भाइ गजानन बाबू आरक्षी अधीक्षकक ओइठाम नजरि बचा कऽ पहुँचि गेला। मुदा तैयो किछु नै भेल। अस्पतालक हाताक मुख्यद्वारपर लोक सभ जुटि गेल। मधुरेश किशोर द्विवेदीक केमिस्ट आ ड्रगिस्ट एसोसियेशन एकरा नेतृत्व दऽ रहल छलै। स्कूलसँ घुरैत बेदरा सभकेँ किछु भऽ जाए..। वक्ता सभ शुरू- दलाल ईश्वर चौधरी, भडुआ मुरलीधर अग्रवाल, मटिया तेल फेंटि कऽ पेट्रोल बेचनिहार पत्रकार, चोरिक माल खरीद-बिक्री केनिहार नगरपालिका चेयरमैन बुचनू बाबू, मुनीमक कृपासँ चारिटा संतानक बाप पचीस वर्षीय सेठानीक साठि वर्षीय पति कालाबजरिया सेठ कनकधारीमल- ध्वनि विस्तारक यंत्रपर ओकर हँफसबाक स्वर छोट-मोट अन्हड़क भ्रम दै छल। बार एशोसिएशनक अध्यक्ष ज्ञाननाथ सिंह जे खूनी आ डकैत सभक पैरवी करै छथि, बाढ़ि

प्रभावित इलाकाकेँ डिजनीलैण्डमे परिवर्तित करबाक मुफ्त योजना प्रस्तुत करएबला गंजेड़ी छुटभैया कृष्णानन्द तिवारी.. गोरका डाक्टर धरमचन्द सहाय जकरा बुझनुक लोक सभ डी.सी.एस. माने दारू, छौड़ी, सार-बहानचो कहै छथि.. ओकर धीपल-तबधल शब्द सभ। फेर भीड़क नेतृत्वहीन हएब, प्रतिनिधिमंडल नै जन-समूह द्वारा डाइरेक्ट वार्ता करबाक गप, आ एनामे टैरेसपर ओल्ड फॉक्सक अन्तर्राष्ट्रिय समस्या सभपर बकथोथी। तखने मोटरसाइकिलक एकटा सवार भीड़केँ नियंत्रणमे लेमऽ चाहैत अछि, ओ बंदा एकटा संप्रदायवादी दलक नव्यतम रंगरूट छल। मधुरेशजी सावधानी बरतै छथि। एकटा धग्गर आ टटका जनमल नारा कमल आ अनकर ध्यान आकृष्ट करै छन्हि। फेर अबै छथि प्रदीप क्रान्तिकारी जे समाजसेवाक वशीभूत अभियन्त्रणक पढ़ाइ छोड़ने छथि वा निशाबाजी आ बलात्कारक कारण निष्कासित कएल गेल छथि। अनुमंडलाधिकारीक जीपपर आक्रमण होइत अछि। प्रदीप क्रांतिकारी कहैत अछि- कोयला लाइसेंसमे सात हजार टका चाही हरामजदाकेँ। देखलहक तूफान। मधुरेशजी किछु आर गोटेकेँ संगमे लऽ लेने छला जेना गजेन्द्रजी- स्थानीय कॉलेजक व्याख्याता आ व्यापारी संगठनक माधवजी आ कृष्णमोहनजी। बिना अप्रिय घटनाक भीड़ गाँधी चौक आ जयप्रकाश चौक पहुँचल। तखने मिठाइ दोकानपर बैसऽबला गोल्डिया जे क्रिकेट सेहो खेलाइ छल आ तहूमे बॉलक सुविधाक ध्यान रखै छल- बैटपर आबि गेलै तँ छक्का आ नै तँ क्लीन बोल्ड- से सरकारी गाड़ीकेँ देखि मार..आगि लगा दे.. बाजि उठल। किछु लोक गाड़ी दिस दरबर मारलक, मुदा गाड़ीक चालक गाड़ी भगौलक। न्याय चौक वा नबाब चौक पर विश्व हिन्दू सेनाक सेनानी सभ बजरंगबलीक स्थापना कऽ देने छल कारण तराजू आ आँखिपर पट्टी बला मूर्ति नै लागि सकल रहए। बजरंग

चौकक बोर्ड लागि गेल रहए। प्रशासनमे ओइ समए दलित अधिकारी सभक बाहुल्य छलै आ ओ सभ चौकक नाम अम्बेदकर चौक करऽ चाहै छला से ओ सभ *बजरंगबलीकेँ गिरफ्तार कऽ थाना लऽ गेला जतऽ सुनै छिऐ आइयो हुनकर पूजा कएल जाइ छन्हि*। से ई चौक नगरपालिकाक पार्श्वमे रहलासँ आब नगरपालिका चौक कहाइत अछि। अनुमंडलाधिकारी फोर्स लऽ कऽ एतऽ आबि गेल आ सभ मिलि लाठी भाँजऽ लागल। पुलिसबला सभ दूर धरि दरबर मारि रहल छल। मुदा फेर लोक सभ गर धऽ कऽ रोड़ा फेकब प्रारम्भ केलक। पुलिस असबार भऽ भागल.. एकटा हिटलर कट मोँछबला इंस्पेक्टर आएल.. बरगाँही सभ ओकर गाड़ी लऽ भागल रहै! अनुमंडलाधिकारी आ दोसर सभ हाँइ-हाँइ जीपमे बैसि कऽ पतनुकान लऽ लेने छल। कमल नजरि खिरओने छल। गोल्डी ओकरासँ बहस केलकै तँ अमजद अली कमलक बाँहि गसिअयने ... क्रुद्ध चीता आ कूढ़मगज महिषक बीच दर्जन भरि लोक..। राजनैतिक आ सामाजिक गुटबन्दीसँ बाहरक लोक ठकुरसोहाती नै जनै छला। ने छल.. कथी लेल एकर सभक मुँह लागै छी। दू गोट गिरफ्तार संगीक रिहा करबाक माँग.. मुदा अधिकारी सभ अपन रक्षार्थ तइ लेल तैयार नै छला। लोफरकट डी.एस.पी.क मबालीकट अशिष्ट बोली..। मधुरेशजी बजला- अहाँ सभकेँ निखत्तर जेबाक सिहन्ता हुअए आकि निछक्क जयपंथीए घेरने हुअए तँ..। बन्हककेँ छोड़बापर सहमति भेल। मनुक्खक कोन कथा कोनो कागपंछी नै देखाइ छलै.. महाभारत समाप्त भेलापर की कुरुक्षेत्रो एहिना निसबध भेल हेतै। बेदरा सभक एकटा गोल क्रिकेट खेलेबाक लेल मैदानमे प्रवेश कऽ रहल छल।

अथ गिरगिट कथा- मुक्कन बाबू माने मुकुन्द जायसवाल- जनवितरण

प्रणालीक दोकानक एकटा डीलर। ऐ नामक एकटा दरोगा सेहो आएल छल आ खूब हँसोथि कऽ गेल छल। रामलखन पोद्दार, बी.एस.सी. ऑनर्स, वल्द किशन पोद्दार, चाह-पान बेचऽबला, टॉपर मुदा नोकरी लेल जुत्ता खिआ गेलै। नगर-हबाक नापबाक यंत्र-कायराना भद्रताक पचहत्तरि प्रतिशत, स्वार्थाना यारीक बीस प्रतिशत आर मिसलेनियस वाइरस पाँच प्रतिशत अनुपातमे उपस्थित रहत। एकटा गोदाम सन मकानमे अछि पुलिस फाँड़ी आ तकरे सटल दारूक भट्ठी! एक दिन अनायासे दुनूक अहं सोझाँ-सोझी होइ छन्हि जखन मुकुन्द पुलिस फाँड़ीसँ फराकैत भऽ निकलै छथि आ रामलखन भट्ठीसँ। झगड़ाक बाद पुलिसबला सभक सहानुभूति मुकुन्दक प्रति रहए आ भट्ठासँ बहराइबला सभक पोद्दारक पक्षमे। रामलखन पोद्दार गिरफ्तार भऽ गेल आ भोरमे ओकर बाप पुलिसबलाकेँ फूल-पत्ती चढ़ा कऽ ओकरा छोड़ओलक। फेर मुक्कन बाबू एक सोड़ह लोक लऽ नशा विरोधी नागरिक मंच बनेलन्हि आ भट्ठीपर धरना देलन्हि। ई सोलह गोटे छला सात गोट पितिऔत-ममिऔत-पिसिऔत-मसिऔत, दू टा हरबाहा, धनकुट्टा मशीनक आपरेटर, तीन कुख्यात मित्र आ कुलपुरोहितक दू टा लफंगा पुत्र। मुदा एम्हर पोद्दारजी अधिकार सुरक्षा हेतु ३६ गोटेक संगे आबि गेला। नशा विरोधी नागरिक मंचक सेनापति लंक लऽ पड़ेला तँ शेषकेँ धरपटांग उठा देलकन्हि। फेर मारि-पीटक क्रम शुरू भेल। रंगबाजी स्पेशलिस्ट सुब्रत मुखर्जी एकरा गैंगवार कहै छथि। मुदा तखने नगरपालिकाक चुनावक घोषणा भेल। स्वार्थाना यारीक वाइरस *शीवाज रीगलक* सोझाँ रंग धेलक। मुक्कन बाबू चेयरमैन छथि, पोद्दारजी वाइस-चेयरमैन। नगरमे शान्ति अछि।

अय्यासी- दोसराक संग बैसलमे मौज मुदा पत्नीक बोल- तरकारी लेल दसटकही.. किराना समान काल्हियो-परसू जे आबि जाए।

दोसक ओतऽ बिदा भेल, बेटाक गप नै सुनऽ चाहलक। पटेल चौक.... महात्मा गाँधी चौक पहुँचल। संगमे बिसटकही। रिक्शाबला अपन टोपर तानि कऽ सुस्ताइत रहए। रिक्शापर बैसल, रस्तामे दोस लेल दू टाकाक सिकरेट लेलक, अपन फेवरिट पत्रिका मोर बारह टाकामे, आ चारि टाका रिक्शाबलाकेँ देलक। दोसक घरमे पंखाक हबासँ किछु आफियत अनुभव भेलै। बचल दू टाका ओकरा मुँह दुसलकै, घरक तरकारी आ बेटाक किताब-कापी.. घर घुरल देह घामसँ कुंडाबोर। पत्नीक फुलल-लाल आँखि देखि लगलै जे अय्यासी कऽ घुरल हुअए।

बैकबा-फोड़बा- *मूल समाचार-* मतायल हवाक पेट्रोलकेँ स्वार्थक सलाइ देखौने छल। घटना- प्रकाश अगरवालक फर्म ‘‘वृद्धिचन्द भँवरलाल वस्त्र भंडार’’ - उधारीक रकम लाख ठेकि गेलै तँ स्वरगीय रघुनाथ झाक पुत्र अठमा फेल मातृविहीन अबंड सिकन्दर झाकेँ वसूली लेल राखलक। ऐ क्रममे ओ पहुँचल एक दिन रामचन्द मड़र लग, ओकर बेटा कालेश्वर मड़र जे आब नाममे यादव लिखै छल चारि बरख पहिने तीन हजारक थ्री-पीस सूट बनबेने छल। मुदा बाप ओकर ऋणक मादेँ मना कऽ देलकै। रस्तेमे पान खेबाक क्रममे मुन्ना ठाकुरक दोकानपर कालेश्वर यादवसँ ओकरा भेँट भेलै, कालेश्वर संगे परिवारक लोक आ कुटुम्ब सेहो छलै। पहिने सिकन्दर जे फिरंटगिरी करै छल सएह आइ काल्हि कालेश्वर करै छल से तगेदापर मारि बजड़ि गेल। सिकन्दर ओकरा छातीपर चढ़ि गेल। सिकन्दरक पुरनका संगी सभ जुटि गेल आ कालेश्वरक कुटुम्ब सभकेँ धोपलक। फेर दोसर दिन पिछड़ा एकताक जुलुस निकलल आ वस्त्र भंडारक शीसा फोड़लक। मुदा लठैत सभ आबि लाठी बरसाबऽ लागल। जकर जेने सिंग अंटलै,

ओम्हरे पड़ाएल। लूट, अराजकता..पसरि गेल। *झलकी- दृश्य एक*: जिलाध्यक्ष पुत्रऋषोत्तम मंडलक स्वर, अठारह कोठली आ दू टा बड़का-बड़का हॉलबला राजनीतिक दलक कार्यालयमे। सद्भावना जुलुस निकलत.. शिष्य चिरंजीव सिंह, पार्टीक युवा मंचक अध्यक्ष आ मंडलजीक घोर समर्थक। मुदा ओ तामसे घोर भऽ जाइत अछि- अहाँ सेहो छोट जातिक छी से ओकरा सभक पक्ष लेबे करबै। बहरा जाइत अछि। *दृश्य दू*: फूसक घर। धनीलाल, रामनारायण। बैकबा-फोड़बा की होइ छै। मटरू की जानय। किछु काल चुप रहलाक बाद आल्हा टेर देने अछि। *दृश्य तीन*: कामरेड रामसेवक साहुक चाह-नाश्ताक दोकान। बहस.. विद्यानिवासजीक भाषण, जाति नामक कोनो वस्तु नै। हुनका पागल कहि क्यो छौड़ा बहरा जाइत अछि। *दृश्य चारि*: टिफिनमे बच्चा सभक खेल: घास-फूस बला घर हमर आ हम बनब जादब। दोकान बिरजूक आ ओ बनत बाभन। दुनूमे झगड़ा हएत आ लल्लू, मोहन, नरेन आ बबलू आएत आ हमर घरमे आगि लगा देत। तखन सुरेश बनत नेता आ विनोद बनत दरोगा। सुरेश दरोगाकेँ कहत जे एकरा दुनूक घर-दोकान बनबा दियौ आ पकड़ि कऽ लाउ। सुरेश दुनुक हाथ मिलबाकऽ दोस्ती कराएत। बैकबा-फोड़बा खेल भरि टिफिन चलैत रहल।

विष-पान- वकालतखानाक कुर्सीपर बैसल गोपालजी कछमछाइ छथि। कचहरीक द्वारपर सुग्गाबला जोतखी बैसल छथि। ओतै एकटा बैनर सेहो अछि, आँखिक रोशनी बढ़बऽ बला ममीरा सुरमा। अदालतिक बरंडापरसँ अर्दली रामेसर मंडल वल्द जागेसर मंडलकेँ चिकड़ैत अछि, मोकील वकीलकेँ अगिला तारीखपर बाँकी-बकियौता देबाक गप कहै छन्हि मुदा ओ कलमक उनटा छोरसँ कान खोदैत रहै छथि। गोपाल सुनै छथि। गोपाल, एक दिन पानबला दोकानपर

चतुरानन लाठी लेने आएल आ बरसाबऽ लागल। ओ खसि पड़ला। बाबूजीक पुरान नोकर नेनिया आबि चतुराननकेँ बजाड़ि दैत अछि मुदा ओ मौका देखि भागि जाइत अछि। रामप्रसादक साठि वर्षीय माय मरौनावाली सभसँ पहिने गोपालक सुधि लेलक। फेर गोपाल अस्पताल आनल गेल। चतुरानन सेहो ओतऽ आएल रहए इलाज आ इन्जरी रिपोर्ट लेल, मुदा क्यो चीन्हि गेलै आ जरनाक चेरासँ ओकरा मारि कऽ भगा देलकै। चतुराननकेँ सभ आदि अपराधी कहै छल मुदा गोपाल ओकरा सुधारै लेल प्रयासरत छला। से आब ओ भस्मासुर बनि गेल। पुलिस चतुराननसँ पाइ असूललक आ ओ घरेमे रहै छल। प्रगतिक तारीख केसमे पड़ैत रहलन्हि आ हुनकर एक्स-रे प्लेट सेहो अस्पतालसँ निपत्ता भऽ गेल। तीन बर्खक बाद गबाही शुरू भेल आ फेर शुरू भेल जिरह, ओइ दिन भरि बाँहुक कमीज पहिरने छला, कालर आ जेबी रहै वा नै, रंग..। जे लाठी बजरलन्हि तकर लम्बाइ, बनावटि..। वकील मित्र.. मुदा एक दिन स्वरक तुर्शी नुकाएल नै रहलै, देखै छिऐ मोकील सभकेँ आखिर पाइ देने अछि तँ ओकर सभक काजकेँ प्राथमिकता तँ देबहि पड़त। आ ओइ दिन गवाही नै गुजरि सकल.. फाइलपर हाकिम विपरीत टिप्पणी कऽ देलन्हि। चतुरानन तीन हजारमे गप फिट केलक जे ओइसँ बेशी अहाँ दऽ सकी तँ..। एंटी-पार्टीक वकीलक मार्फत वकील-मित्र लग ऑफर सेहो आएल छलन्हि। मुदा गोपालक कहलापर कोर्ट ट्रांसफर करेबाक प्रक्रिया शुरू भेल। मुदा कोर्ट ट्रांसफर भेल शीलभद्र झाक कुटमैतीमे जे गोपालजीक राजनैतिक प्रतिद्वन्दी छला आ चतुरानन आइ-काल्हि हुनके छत्र-छायामे छल। मेल पेटीशनपर गोपाल दसखत कऽ दै छथि, आत्मसमर्पण जेना भारत-पाक युद्धमे एक लाख सेनाक संग जनरल नियाजी कएने

छल।

अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर- **अन्हारक विरोध मे** -क समर्पण काल- अपन कुलदेवी *काली बन्नी* क स्मरण करै छथि। गोरैया बहिन बन्दी (बन्नी) क पूजा केने रहथि, बन्नी वाकदेवी छथि, पुरुषोचित खड़ाम पहिरै छथि, छड़ी राखै छथि (खड़ाम आ छड़ी दुनू सोनाक)। हिनकर जनम रविकेँ भेल छलनि, तेँ छठिहारी शुक्रकेँ भेलन्हि। ओ काली जकाँ कखनो काल रक्त स्नान सेहो करै छथि तेँ हुनका *काली बन्नी* सेहो कहल जाइ छन्हि।
अरविन्द ठाकुर ऐ लघुकथा संग्रहक आरम्भमे जाँ जेने [Jean Genet (1910 1986)] आ अंतोन चेखव [Anton Chekhov (1860-1904)] क एक-एकटा उद्धरण राखै छथि। जाँ जेने एकटा वैश्याक पुत्र रहथि, एक सालक जखन ओ रहथि तेँ एकटा काष्ठकार परिवार हुनका गोद लऽ लेलकन्हि। शुरूमे ओ घरसँ भागि गेल करथि आ छोट-मोट चोरि करथि, फेर ओ लिखनाइ शुरू केलन्हि आ निबन्ध, कविता, उपन्यास, नाटक आदि लिखलन्हि। ओ अपन उपन्यासमे समलैंगिक सम्बन्धक संग, कुरूपतामे सौन्दर्य, अपराधीक चरित्रगत विशेषताक चर्च करै छथि, संगे ओ अपन नाटकमे सभ तरहक बहिष्कृत वर्ग आ ओकर शोषकक विश्लेषण करै छथि। जाँ जेनेक रचनाक जाँ पौल सार्त्र अस्तित्ववादी समीक्षा आ जेक्स देरीदा विखण्डनात्मक विधिसँ समीक्षा केलन्हि।
अंतोन चेखवक लेखनी हुनका मरलाक बाद अभूतपूर्व रूपमे प्रसिद्ध भेल, तकर ओ जिबैत जी अनुमान नै लगा सकला। हुनका लागै छलन्हि जे हुनकर रचना हुनका मरलाक एकाध बर्खे धरि पढ़ल जाएत।
जाँ जेनेक अरविन्द ठाकुर द्वारा उद्धृत कथन- ‘‘हम अपन भाषामे

एतेक विविध रूपाकारक सृजन ऐ लेल कऽ सकलौं जे हमरा अपन भाषासँ घृणा छल।'' -एकटा यायावरक उक्ति अछि। हुनकर अपराधक क्षमा याचना, जे फ्रेंच राष्ट्रपति द्वारा स्वीकृत भेल, पाब्लो पिकासो आ सार्त्र सहित बहुत गोटे द्वारा देल गेल छल। जाँ जेने अपन आत्म चरित्रमे अपन नेनपनक दुखद स्थितिक चर्च करै छथि, मुदा ई ओ अपन अपराधी चरित्रक रक्षार्थ करै छथि, ओ रक्षात्मक ढाल हुनकर ऐ कथनमे सेहो अबै छन्हि। अत्यधिक घृणा प्रेमक दोसर रूप तँ नै अछि जे *धैन सन* सँ विपरीत अछि, आ अरविन्द ठाकुर *अन्हारक विरोध मे* क विरोध ओइ अतिशय घृणा जे प्रेमक दोसर रूप अछि आ *धैन सन* सँ विपरीत अछि, क प्रतीक तँ नै अछि!- से आगाँ देखब।

अंतोन चेखवक अरविन्द ठाकुर द्वारा उद्धृत कथन-

''हमरा ओइ सगर लोकसभसँ बेसी भय लगैत अछि जे हमर कथा सभकेँ लोकप्रिय आ प्रचलित मान्यताक कसबट्टीपर परखबाक प्रयास करै छथि वा ओइमे कोनो प्रकारक सैद्धान्तिकता खोजबाक प्रयास करै छथि।

ने तँ हम रुढ़िवादी छी, ने उदारवादी आ ने विकासवादी। हम कोनो पादरी, उपदेशक वा निरपेक्ष व्यक्ति हेबाक स्वांग सेहो नै भरि सकै छी। हम एकटा स्वतंत्र लेखक छी आ स्वतंत्र लेखक बनल रहब टा हमर अभिलाषा अछि। हमरा लेल मनुष्यक देह, ओकर बुद्धि, ओकर ज्ञान, ओकर आशा-निराशा, ओकर प्रेम, सभ किछु पवित्र अछि मुदा ऐ सभसँ बेशी आदरणीय अछि ओकर स्वतंत्रता, जे झूठ, अहंकार, ढोंग आ क्रूरतासँ मुक्त अछि।'' -आ तँ ओ अपन भाए द्वारा अपन पत्नी संग कएल क्रूरताक विरोध करै छथि कारण से हुनका अपन पिता द्वारा (जे एकटा किरानाक दोकान चलबै छला)

अपन माता (जे भरि रूस घूमि कऽ कपड़ा बेचैबला व्यापारीक पुत्री छली आ बड़का खिस्सा कहबैका छली) पर कएल क्रूरताक स्मरण करबै छल। से अरविन्द ठाकुर अपन लघुकथा सभकेँ लोकप्रिय आ प्रचलित मान्यताक कसबट्टीपर नै कसल जेबाक पक्षमे छथि।
जाँ जेने आ अंतोन चेखव ऐ तरहेँ परस्पर विरोधी मान्यताक अनुगामी छथि!
आ अरविन्द ठाकुर ऐ दुनू प्रतिगामी मान्यताक अनुगामी बनि लघुकथा रचै छथि।

खिस्सा सियार यार : *खिस्सा सियार यार* क समर्थक, विरोधी आ मनबढ़ू शब्दावली लोकतांत्रिक राजनीतिक यथार्थक विवरण दैत अछि, एक्के व्यक्ति कोना क्रमसँ पूजित, घृणित आ हास्यरसिक भऽ जाइ छथि। प्लेटो लिखने छथि जे पढ़ल लिखल लोक राजनीतिसँ दूर रहै छथि, एकर सजा हुनका यएह छन्हि जे ओ मूर्ख द्वारा शासित होथि। नीक, अधलाक बीच रामसोगारथ मण्डलक आदर्श अडिग अछि।

पियासल पानि: नारायणपुरवाली क्षणिक आवेशमे सूत्रधारक चुम्बन करै छथि। कथामे ट्विस्ट छै, लगैए ओकरे दोख छै, ओकर पति लखनाक नै। ओकरा बच्चा नै होइ छै, भगतैक बाद ओ भागि जाइ छै। मुदा लखनाक दोसर बियाह ओकर बाप रामचरण करा दै छै, ओकरा होनिहारी छै, लखना बाहर गेल छै, घुरतै तँ बताह भऽ जेतै। मुदा घुरलै तँ ओ सत्ते बताह भऽ गेलै, ओ कहै छै जे ओकर ई बच्चा नै छिऐ। तँ नारायणपुरवाली... सूत्रधार आ रामचरन दुनूकेँ आब बुझेलै जे ओ बेकसूर छलै। भाव, प्रेम आ चरित्रक मान्य शब्दावलीकेँ तोड़ैत अछि ई कथा। चारित्रिक

अवधारणा कखनो काल सापेक्ष भऽ जाइ छै, खास कऽ तखन जखन चरित्र महिलाक हुअए।

अन्हारक विरोध मे : टाइटल कथा। अलीमुद्दीन अपन टोलमे अपन हिन्दू यारक भाइकेँ मारल जेबापर लज्जित अछि, हबोढकार भऽ कानऽ लगैत अछि। शाहबाज हुसैन, जे सुपौलसँ छथि आ आइ काल्हि भागलपुरसँ सांसद छथि, क एकटा भाषण सुनने रही, ओ कहैत रहथि जे सुपौले एकटा एहेन शहर अछि जतऽ गाइ केर वध नै कएल जाइ छै कारण मुस्लिम समुदाय ओतऽ कहियो कसाइखाना नै खुगऽ देलकै। अरविन्द ठाकुरक ई लघुकथा पढ़ि अनायास ओ गप मोन पड़ि गेल जे ऐ लघुकथाक सफलता सिद्ध करैए।

ढाँचा-१९९२- पत्र-शैलीमे लिखल ई लघुकथा। अग्निपुष्पक पत्रिकामे गुजरात दंगापर लिखबापर वर्माजीकेँ कबिलपुरक जातिवादी लेखकक (जे आब साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य छथि) गारियुक्त पत्र प्राप्त भेटलन्हि, ऐ वातावरणमे अरविन्द ठाकुर, समधानि कऽ, ई लघुकथा लिखने छथि। ढेर रास एम्हर-ओम्हरक गपक बाद क्लाइमेक्समे ढाँचा-१९९२ खसबाक खबरि टी.वी.सँ बहराइत अछि।

मूस: मूस मारबाक दवाइ भरि महाराष्ट्रमे अहाँकेँ नै भेटत, जखन प्लेग आएल रहै तहियो नै भेटैत रहै। ओतऽ गणपति बप्पाक ई वाहन पूजनीय अछि। मुदा ऐ कथाक "ओ" महाराष्ट्रमे नै रहैए। आइ साँझमे ओ मूस मारबाक दवाइ आनत। मूसक बहन्ने मनोविश्लेषण करैत ई कथा आगाँ बढ़ैए।

प्रजातंत्र परिकथा: एकटा हत्या भेलै। ई छपलै। ओ डॉक्टर छलै,

ओकर हत्या भेलै, ओ डॉक्टर बड़ड मामूली फीस लै छलै, *गरीबक डॉक्टर* नामसँ ओ ख्यात छलै, से किए नै छपलै? ओइ पत्रकारक असली रूप बुझल छै कमलकेँ। फणीश्वर नाथ रेणुक *परती परिकथा* क तर्जपर *प्रजातंत्र परिकथा* बहुत रास प्रजातांत्रिक (!!) कथाक कथा सोझाँ अनैए। ई ऐ संग्रहक सभसँ पैघ लघुकथा अछि, जइमे कोनो घटनाक राजनैतिक लाभ उठेबाक मानसिकताक सूक्ष्म विवरण भेल अछि। तइयो बात खतम नै भेलै, शुरुहो नै भेलै।

अथ गिरगिट कथा: गिरगिट रङ बदलबा लेल ख्यात अछि, मुदा जखन मनुक्ख रङ बदलैए तँ गिरगिटो लजा जाइए। पोद्दारजी आ जयसवाल जीक गैंग वार कोना एक दोसराक कम्यूनिटीक वोट बैंक राजनीति बनि गेल, तकर कथा अछि ई, एक गोटे चेयरमैन आ दोसर वाइस चेयरमैन बनि गेला आ नग्रमे पूर्ण शान्ति अछि। कारण अशान्ति हिनके दुनुक कारण छल!!

अय्यासी: सूत्रधार ''ओ'' छथि, ओ घर घुरला, पत्रिका, सिकरेटमे पाइ खर्च केलन्हि मुदा घरक लेल तरकारी आ बेटाक किताब कॉपी नै कीनि सकला। अय्यासीक अनुभव आ परिभाषा ताकि रहल अछि ई कथा।

बैकबा-फोड़बा: बैकवर्ड आ फॉरवर्डक राजनीतिक कथा अछि ई। जखन एकटा बभना उधारी ओसूलीले जाइए तँ से स्वार्थवश बैकवर्ड आ फॉरवर्डक राजनीति बनि जाइए। मूल समाचार, घटना आ झलकी (दृश्य एक-चारि) मे बँटल ई लघुकथा मैथिली लघुकथाक शिल्प आ कथाक संघर्ष सेहो देखबैत अछि। झलकी दृश्य चारिमे बाल नाटकक बहन्ने कथाकार पूर्ण घटनाक विवरण दऽ दै छथि, ई बच्चा सभक बैकबा-फोड़बा खेला बनि गेल अछि।

विष-पान: कचहरीक विवरण। तारीख, मेडिकल एक्स-रे क गाएब

हएब, मोकदमाक सुनबाइ, दोसर कोर्टमे केसक ट्रांसफर... आ सभ किछु। न्यायपालिकाक क्रिया-प्रक्रियाक विश्लेषण अछि ई कथा।

अन्हारक विरोध मे लघु कथा संग्रह अपन विषय-वस्तु, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण आ शिल्पगत प्रयोग लेल मोन राखल जाएत। चाहे ई *खिस्सा सियार यास्क* तीन तरहक शब्दावली हुअए बा *बैकबा-फोड़बाक* तीन भागमे कथाकेँ बाँटब आ तेसर भागकेँ चारि भागमे बाँटब, आ चारिम भागकेँ *लोक सभटा बुझैए*, ऐ तरहेँ बुझेबाले बाल नाटक-खेलामे परिवर्तित करब। चाहे ई *ढाँचा-१९९२* क पत्रात्मक शैली हुअए बा *मूसक* मनोविश्लेषणात्मक पद्धति। आकि *प्रजातंत्र परिकथाक* एकटा न्यूज पेपर रिपोर्ट पर केन्द्रित कथा। शिल्प आ कथ्यक मेलक ई प्रयोग, नव विषय-वस्तु आन लघुकथा लेखककेँ सेहो प्रयोग करबाक चाही।

हाथी चलए बजार - देवशंकर नवीन

देवशंकर नवीन (१९६२-) अपन भाषिक शब्दकोष लेने सोझाँ अबै छथि।

देवशंकर नवीन एक्के प्लॉट बेर-बेर सोझाँ अनै छथि, जेना ऋणखौक आ इजोतमे पुतोहुक ससुरकेँ मारबाक चर्च आ ऐ तरहक आनो क्रम, जे आभास दैत अछि जे एकेटा कथाक प्लॉटसँ कएक टा कथा बनल अछि, तँ उस्सर जमीनक उत्तरार्धक प्लॉट, जकरा कथाकार नीक जकाँ उपयोग नै कऽ सकला। उत्तरार्धक प्लॉटक

हम ऐ द्वारे चर्चा केलौं कारण ओइ प्लॉटक अनुभव सभ मैथिलकेँ छन्हि आ ओइ आधारपर कुमार पवन एकटा अविस्मरणीय कथा पइठ लिखि दै छथि जे हुनकर यश एकमात्र अही कथाक कारण अक्षय रखबामे समर्थ अछि जेना चन्द्रधर शर्मा ‘‘गुलेरी’’ केँ हुनकर हिन्दी कथा *उसने कहा था* रखलकन्हि।

हाथी चलए बजार: ऐ कथा संग्रह तीन खण्डमे अछि, *मूलधन*मे सामान्य लम्बाइक लघुकथा सभ अछि, मोटा-मोटी २००० शब्दक, जकरा अंग्रेजीमे शॉर्ट स्टोरी कहल जाइ छै। विहनि कथा, जे एक पन्नाक भीतर लिखल जाइत अछि, तकर संग्रह *ब्याजक* अन्तर्गत दोसर खण्डमे कएल गेल अछि। अन्तिम खण्ड *लोरहा-बिच्छा*मे कथाकार लघु-विहनि ओइ सभ कथाकेँ संकलित केने छथि, जे हुनका दृष्टिएँ कनेक दब कथा अछि- मुदा पढ़ला उत्तर ऐमे सँ बहुत रास कथा मूलधन आ ब्याज क अन्तर्गत संकलित हेबा योग्य अछि, संगे मूलधन आ ब्याजक बहुत रास कथा लोरहा-बिच्छा खण्डमे जाइ जोगर अछि।

मूलधन:

अन्हार- लौहार गाम बाटे जाइबला सड़क पक्की भेल छै, सरकारी जीप सभ, महिषी उग्रतारा लग बलिप्रदान देबऽ लेल खदबद करैत जाइत छागर-पारा सभ। ओलतीसँ ओलती सटल गहूमक नारीसँ छाड़ल घरसँ बहराइत नेना सभ। तेतर मुसहर। सरौनी गामक गृहस्थ लग हरबाही करै छल आ रमानन्द सिंहक सुतरी काटि रहल छल। कुलबन्त सिंहक ट्रकक पहिआ ओकर छौड़ापर चढ़ि गेलै। मुखियाजीक आगमन। छह हजार सरदार कुलवन्त सिंहसँ लेलन्हि आ दू हजार तेतराकेँ देबाक गप केलन्हि। तेतराक सौंसे देह झनकि उठलै, गनत कोना कऽ.. कतेक पचटकिया हेतै।

कनियाँ बलुआहाबालीकेँ बुझबैत अछि, हमर-तोहर जिनगी रहत तँ बाल-बच्चा फेर नै हेतै?

टैक्स फ्री- चलित्तर चिमनीपर काज करैए। साढ़े छह टाकाक बदला पाँच टका भेटै छै। डेढ़ टाका मुंशी मारि लै छै। मुदा काल्हिये बजट पास भेल छै आ जे वस्तु पौने पाँच टकामे भेटैत रहए से आब सात टाका सत्तरि पाइमे भेटतै। जकरा ओ भोट देने छल से डाक बंगलापर आएल छै, चलित्तर ओतऽ जाइए। कहैत अछि जे भोटसँ पूर्व जतेक अधपेटा भेटै छल सेहो आब नै भेटैए। मुदा ओ मंत्री बनल नेता दुत्कारि दै छन्हि, कतेक नुआ-फट्टा दिओलिऐ, टेलीविजन, भी.डी.ओ. टैक्स फ्री करबेलिऐ, तैयो जस देनिहार कियो नै। चलित्तरकेँ पुलिस बाहर कऽ दै छै। घुस्सा, थापर, चमेटा सेहो लगै छै। ओ ककरासँ टैक्स फ्रीक अर्थ बुझत?

बबूर- रौदी मरड़क महायात्रा। ओकर एक्केटा बेटा उदबा। गामक बाबू भैयासँ बाउकेँ बड़ लागि रहै। बिदा भेल बभनटोली दिस। एकहको टाक ठाढ़ि देतै तँ ढेरी भऽ जेतै। मुदा ओकरा सुनऽ पड़लै- पुरखा-पातिक मांसु तँ कुकुर कौआ खेलकनि आ रौदियाकेँ जड़बै लेल गाछ चाहियनि। उदबा समाद पठबैत अछि, लहासकेँ लऽ कऽ बान्हपर आ। तावत ओ सरकारी जमीनपर सरकारी बबूर काटि-चीरि कऽ चिता सजा दैत अछि। उदबा आगि फूकि देलक। पंडीजी एला आ पंडीजीक ई कहलापर जे बबूरक लकड़ीपर चिता केहन होइ छै, मुँहमे ऊक दऽ कऽ धारमे भसिया दितही, उदबा हुनकर पतरा छीनि लैत अछि आ ओही चितामे फेकि दैत अछि। उदबा पित्तीसँ बजैत अछि- तोरा आउरक चानन यएह बबूर छिअह।

संबंध- सुगिया आ ओकर घरबला जीबछ। जीबछक घर अही चौकक कातमे छै। झिल्ली मुरही आ चीनीपाक मिठाइ, बतासाक

उठल्लू दोकान। रतुका खाइक आ नीनसँ सुतैक बिचला अवधिमे दुनू एक दोसराक बाँहिमे पड़ल किछु गप्प करए। बुढ़िया जे ऐ बरख टा जीबैत रहितै तँ ओकर सख संग लागल नै जइतै..। सुगिया गर्भवती छल। आइ भात-परोड़ खाइत इतियौत-पितियौत सभक बापकेँ कंठ दाबि मारबाक ध्वनि सुनलक। ओ धरहड़िमे गेल मुदा ओ सभ ओकरेपर फरसा चला देलकै। फेर थाना..। ओतऽ दरोगाजी टेक्टरबलासँ सलटि रहल छला। फेर ओ सुगियासँ केसक फीस दू सए टाका मंगलन्हि। जीबछक कमीजक जेबीमे मात्र साठि टाका रहै। बाला आ हंसुली बेचऽ लेल सोनार लग गेल, ओहो मौका देखि कम पाइ लगेलक। टाकाक जोगार भेलै मुदा तावत जीबछ ढनमना गेलै। दरोगाजी कहलखिन्ह जे ई बिना किछु बजने मरि गेल। भऽ सकैए तौँ दोसर मर्दक संग संबंध रखने छँह आ एकर खून गुंडासँ करबेने हेबहीं। दरोगाजी ओकरा हाजतिमे बन्न कऽ देलखिन आ अपन डेरामे समाद दऽ देलखिन्ह जे ओ आइ राति डेरा नै आबि सकता।

अंतिम बेहोशी- कथाक सूत्रधार वा कथाकारक भौजी- माने ललिता मिश्र, प्रोफेसर समरेश मिश्र, विभागाध्यक्ष, रसायन शास्त्र विभागक धर्मपत्नी। दुनु पहिने प्रोफेसर आ शिष्या रहथि, फेर प्रेमी-प्रेमिका भेला आ तखन पति-पत्नी। उमरिमे कमसँ कम दस बर्खक अंतर हेतन्हि। तीन टा बच्चा दू टा बेटी चौदह बर्खक सुषमा आ बारह बर्खक माधुरी आ एक टा बेटा श्वेताभ दस बर्खक। भौजीक ई चारिम गर्भाधान। कारण जांघक भूख प्रबल। मुदा बेटी सभकेँ स्कूलमे लोक उपहास करऽ लगलै आ ओ सभ माइकेँ कहलक जे हमरा सभकेँ उपहाससँ माथ फटैए आ तोरा बिआइसँ छुट्टीए नै छौ। भौजी गर्भपातक प्रयास केलन्हि मुदा समरेश भाइक कोनो मदति नै भेटलन्हि। बेटी सभक गप.. पेट उनारने बैसल अछि.. बेलनाक

हूड़सँ फोड़ि ने दे पेट कऽ। भौजी मूर्छित भऽ गेली। भौजी पहिल बच्चा भेलाक बाद जे चौदह बर्खक बाद गर्भवती हेती तँ की हुनकर बेटी, ओहो शिप्रा जकाँ देवी-देवताक पूजा नै करितए। शिप्रा सूत्रधारक कॉलेजमे छात्रा, सतरह बर्खक बाद ओकरा एकटा भाइ भेल छलै। बड़ प्रसन्न छलि। डाक्टरनीक मोन उछतगर नै बुझि पड़लन्हि। भौजीक शिशु सूत्रधारक कोरामे छन्हि। भौजी चलि गेली, प्रपंचकेँ छोड़ि। छब्बीस घंटाक बच्चाकेँ लऽ कऽ सूत्रधार समरेश भाइक डेरा ढुकै छथि। भौजीक दस बर्खक बेटा खुशीसँ ओकरा संग एकतरफा बतकही कऽ रहल छल। भौजीकेँ अंतिम बेर होश आएल छलन्हि तँ ई समाद कहबा लेल। दुनू बहिनकेँ अंग्रेजी स्कूल चंडी बना देने छै। ओ सभ एकरा नै जीबऽ देतै। आब अहीं एकर माए आ बाप। कथाकार सोचमे छथि। दुनू बहिन स्कूल गेल छल। कोना भौजीक दस वर्षीय बेटाकेँ उतरी पहिरेता।
उस्सर जमीन: तेजो बाबू। कथाक सूत्रधारक दियादी पित्ती। खरहू सभ फूल कका कहै छन्हि। समर्थाइमे खेत-पथारमे काज करैवाली बोनिहारिनसँ राजी वा जबरदस्ती वासनाक पूर्ति करथि। आब दू-दू पुतोहु आ एकटा जमाएक ससुर भेला। फूल कका सूत्रधारक टेढ़ आँखिक नकल करथि आ से करैत-करैत आइ हुनकर दहिना आँखिक डीम उपरका पऽलमे ढुकि गेलनि अछि। आब अपन पोता-पोतीक *खापड़िक पेन सन मुँह, बुढ़बा परोर सन ठोर, अल्लू सन-सन नाक, बिलाड़ि सन-सन आँखि* आ *फगुआक पू सन* गाल देखै छथि तँ पश्चाताप करै छथि। हुनकर राम आ लछमन बेटाक भिनाउज लेल पंच बैसल अछि कारण राम बेटीक बाप छथि आ बेटीक बाप पहिनहिये बुढ़ा जाइत अछि- आ लछमन बेटाक बाप छथि। से लछमनक कनियाँ सिमराहावाली सोचलन्हि जे जेठ जनकेँ

परुकाँ एकटा कन्यादान हेतन्हि आ दोसरो लागले छन्हि से फूट भऽ जाइ आ ऐ लेल उड़कुन तकलन्हि। पंच, अमीन आ अन्न जोखबा लेल पल्लेदार आएल। जे फूल कका अनका घरमे पंचैती करै छला, हुनका घरमे पंचैती। सभ वस्तुक हिस्सा भेल मुदा लादि इनार एक्केटा। से लादि फोड़ि देल गेल आ इनार भथि देल गेल। मुदा माए-बापकें कोना फोड़ब आकि भथब? से रामक संग बुरहा आ लछमनक संग बुरही गेली। नूर-गोबरौर जकाँ दुनू गोटे पड़ल छथि। कारण सिमराहीवाली समाराजसँ दू बीघा जमीन बुरहा-बुरहीकें देबामे नोकसान देखलन्हि। जे छोटकाक घरमे तस्मै बनै तँ बुढ़ीक पातोपर एकाध चम्मच खसै। मुदा असगरे खाइमे हुनकर हीया सालए लागनि। आब फूल काका दार्शनिक बनि गेल छथि। बाँझ गाए, उस्सर जमीन आ कोढ़ि बड़द सेवा-बरदासिक आश किए रखैए?

पवन पुल- कथाक सूत्रधारक आइ.एस.सी.क परीक्षा भेल छन्हि, प्रैक्टिकल परीक्षा बाँचल छन्हि आ ओ ओइ अवधिमे गाम गेल छथि, कारण अल्पवेतनभोगी पिताक ऊपर बेसी जोर नै देमऽ चाहैत रहथि। मात्र तीन दिन पहिने सहरसा गेल छथि। गाममे मृत्यु सय्यापर सूत्रधारक अनुजा सरोज पड़लि छथि, तीनू अनुजामे सभसँ पैघ मुदा सूत्रधारसँ तीन बर्ख छोट, जकर दस बर्खक बएसमे विवाह भेलै आ तेरह बर्खक बएसमे द्विरागमन। सासुर गेलाक छह मासमे ओकरा टांगि कऽ नैहर आनल गेलै। हुनकर पति अज्ञानी-लफंगा छलखिन्ह, जिनका सूत्रधार कहथिन्ह जे ऑटोमेटिक घड़ीक ह्विज्जए आ इंग्लिश रेले साइकिलक निर्माणक तिथि बताउ, जँ ई दुनू चीज चाही। आ ऐ हँसी लेल सेहो सरोजकें तारणा भेटलन्हि। सूत्रधार प्रैक्टिकल परीक्षामे उत्तल तालक वक्रता नै नापि सकला मुदा प्रात भेने सरोज ओइ वक्र सीमासँ मुक्त भऽ गेली। सझिला

पित्ती, जिनका सूत्रधार बाबू कहै छथि, सूत्रधार आ सरोजकेँ जानसँ बेशी मानै छथि। समाजक लोकक लहास उठबै लेल नै आएब, सूत्रधारक काकीक ई सूचित करब जे अपने बैसि चारू दिआदनी कानी आ चारू-चारूकेँ चुप करी आ कोनटी-फटकीसँ अबाज, जे छौड़ी समर्थ होइत-होइत मरलैए, तेहेन डाकिन हेतै जे टोलमे भरि-भरि राति घोड़दौड़ करतै। मुदा भोज कालमे रंगनाथ मिश्रक कहब, जे पहिल कर के उठाएत, मात्र एक्कैस ब्राह्मण छथि बाइससँ एक कम। सूत्रधारक छोट पित्ती अपने बैसि जाइ छथि। सूत्रधार रंगनाथ मिश्रकेँ बाँहि पकड़ि उठबै छथि.. निकलि जाउ जल्दी, अन्यथा एक्को जुत्ता नीचाँ नै खसऽ देब..। जे कसाइ छथि, तिनका जाए दिअनु। हुनकर पात भिखो डोमक सूगरकेँ खोआ दिअनु..। ***चरित्र-*** घोर कम्युनिस्ट गौतमजी। जातिएँ कर्ण कायस्थ छथि- बीड़ी पीबि (तइसँ सर्वहारा छवि बनबैमे सुविधा छन्हि) मोंछक टुरनी कएल भऽ गेल छनि। कलकत्तामे बसल मैथिल। तीन टा बेटी। बेटी विवाहले अपन प्रेमिका संगे लड़का देखऽ लेल जाइ छथि। ओतऽ एक ठाम अम्बष्ठ कायस्थ रहलाक कारण आ दोसर ठाम लड़काक पिता कर्णजीक दोसर पत्नी क्रिश्चियन विधवा रहलाक कारण ओ कथा सभ हुनका सूट नै करै छन्हि। ऐ क्रिश्चियन विधवा एडलीनाक कथा बीचमे आबि जाइए.. ऐ क्रममे प्रधानाध्यापकक एडलीनाक सम्बन्धमे टिप्पणीपर एकटा नवनियुक्त शिक्षकक टिप्पणी- एडलीना अहाँक छोटकी बेटीसँ दुइए-तीन बर्ख जेठ हेती.. हुनका लेसि दै छन्हि। अस्तु, कथाक अन्त गौतम जीक माझिल बेटीक पिताकेँ देल रपटानक संग खतम होइत अछि।

इजोत- मधुकरजीक संग कथाक सूत्रधारक शतरंजक खेल चलि रहल छन्हि। शतरंजक खेलक संग सूत्रधार मधुकरजीक शतरंजक

संग जीवनमे कएल बेइमानीक संगे-संगे चरचा करै छथि। हुनका द्वारा मधुकर जीकेँ पातकी गुरुक चेला कहलापर मधुकरजी बिगड़ि जाइ छथि, कहै छथि जे ..हमहीं अहाँक घरवालीकेँ सिखबै छी जे अहाँक माए-बापकेँ मारए, अहाँक घरक फज्झति करए, अहाँक ससुरबासि बहिनकेँ घरमे नै रहऽ दिअए। मधुकरजीक विशेषताक शतरंजक बिसातपर चर्च होइत अछि- बियाहमे भांगठ करब, एकलव्य जकाँ धनुर्विद्याक प्रयोग कुकुड़क मुँह बन्द करबामे करब, सूत्रधारक कनियाँकेँ अनट-बनट पढ़ाएब। सूत्रधारक बहिनिक सासु-ससुरकेँ ओ कहि आएल छथिन्ह- दिल्लीमे जगह किनबा लेल पाइ छै आ बहिन बहनोइकेँ देबा लेल पाइ नै छै? सूत्रधारक पत्नी सासु-ससुरकेँ पाँच बाढ़नि-पाँच सुपाठ चलबिते छलखिन्ह आब बहिन लेल पाँच बाढ़नि-सुपाठक काज आरो बढ़ि गेलन्हि.. बेचारी परलोक गेली। अन्तमे सूत्रधार मधुकर जीक घोड़ा उठा कऽ पुरना जगहपर राखि दै छथि, आ चालिमे इमानदारी अनबा लेल कहै छथि।

हाथी चलए बजार- भवानी दाइ! बापक दुलारि। माएक मृत्युक बाद लालन-पालन आ विवाह। फेर कल्याणक योग्यता भेलन्हि तँ ई समाचार सुनि पिताक मृत्यु भऽ गेलन्हि, खुशीसँ। फेर भवानी दाइकेँ पुत्र भेलन्हि आ फेर हुनकर पतिक मृत्यु। फेर इनश्योरेन्स आ अनुकम्पाक नोकरी लेल हुनका दू तरहक अनुभव भेलन्हि। इनश्योरेन्स कम्पनीक मनेजर कम उमरिक लेखक, भद्र। सभटा काज मिनटमे भऽ गेलन्हि। मुदा पतिक कार्यालयक हाकिम पतित। कथाक अन्त हाकिमक बेटी गीताक पिताकेँ देल दुत्कारिसँ होइत अछि।

छगुन्ता- बैरागीजी, रामाधीन पाण्डेय ‘‘बैरागी, हुनकर बेटा कॉलेजमे प्रोफेसर भऽ गेलखिन्ह। हुनकर बेटाक अपहरणसँ कथामे तेजी अबैत अछि। पचीस हजार भविष्य निधिसँ निकालि कऽ रखलथि

आ सेहो गाएब छन्हि। हुनकर जेठ बेटा अरुण सेहो निपत्ता छथि। फेर कथामे दुखमोचनक चर्च अछि जे स्वतंत्रता सेनानी- जे पेंशन लेबासँ मना कऽ देलन्हि- क पुत्र छथि। मुदा अपराधी चरित्रक, हाइ स्कूलेसँ अपन भविष्यक परिचय देमऽ लगला, जखन जाति आ अर्थे हीन पड़ोसियाक बेटीपर हाथ साफ कऽ लेलनि। फेर बटमारी, छीना झपटी... निम्न जातीय एम.एल.ए. भगत जीक नेतृत्व पसिन्न नै पड़लन्हि तँ ओ केसमे फसा देलखिन्ह आ आब ओ फरारी राजनीतिज्ञ भऽ गेला, अपन जातिक लोकक मदति सेहो भेटलन्हि। फेर हुनकर फल्लाँ दिन आत्म-समर्पण आ शक्ति प्रदर्शन हएत। निछक्का स्वजाति, एकवर्णा गहूम जकाँ। आबालवृद्धवनिता। दुखमोचन पैघ लोक भऽ गेला। तही दुखमोचनसँ अरुणक धर्मयुद्ध। मुदा दुखमोचन जीक चीलर-चमोकनि सभ अरुण द्वारा वध भऽ रहल छला आ ओ दिल्ली-पटनामे मौज करै छथि।

गति- जगत झा, गामक बिलाड़ि। गाम मोहनपुर। भुमिहार आ डोमक अतिरिक्त सभ जातिक लोक, भुमिहारक सामाजिक लोकाचारमे कोनो प्रयोजन नै, मुदा डोमक होइ छै, से ओ अबैत अछि चन्द्रायणसँ। दु बरख दसैंया पासी लग बन्हकी लगलाक बाद फेरसँ मोहनपुर भिखो डोमक हिस्सामे आबि गेल अछि। गाममे मनोहर धानुकक बेटी चनरमा। बभनाक नेत खूब बुझै छल। बिआहक बाद सासुर बकौरसँ साँइकेँ डेनिएने चलि ऐल। कारण बकौरक राछछ सभकेँ ओकरा नै चीन्हल छलै मुदा मोहनपुरक सभटा कुकुर ओकरा चीन्हल छलै। फेर चारिटा बेटी भेलै। जगत झा तरबन्नीसँ अबैत अनिल सिंहकेँ चनिया ओकर पाइ देलकै वा नै पूछि भड़काबै छथि। टी.टी.क बेटा अनिल सिंह। फेर मारि-पीट आ पुलिस-फौदारी। मुदा फेर जखन दुनू पक्षकेँ जगत बाबूक

असलियत बुझबामे अबै छन्हि तँ फेर दुनू पक्ष मिलि कऽ..। ***मध्यांतर-*** जगतारणि आ अलकादेवी- दुनू सौतनि मुदा सौतिया डाहक कतौ लेशो नै। अलका देवीक दू टा सन्तान। तारानन्द निर्धन परिवारक आ अलका - सुखी सम्पन्न परिवारक- एक्के संगे पढ़ैत रहथि। तारानन्द लोक सेवा आयोगक परीक्षा पास केलन्हि तँ बियाह जगतारणि- करिया पाथरक बनल मुरुत मुदा व्यवहारसँ सुन्दर- सँ दहेज प्रथाक कारण भऽ गेलन्हि। फेर कुरुप जगतारणिक प्रयाससँ अलका सेहो घर आबि गेली। फेर जगतारणिक दूरक संबंधक दिअर मनोहरक पत्नी जाहिल मीराक आगमन होइत अछि। फेर मीराक दामपत्य जीवनक सूत्रक कमजोर हएब आ वकीलक आगमन। मीरा केस जीति जाइ छथि मुदा मनोहरक ओकील, आ मीराक ओकील हुनका संगे गलत कर्म करैत अछि..। फेर जगतारणि द्वारा मीराकेँ भोल भरोस देल जाएब।

ब्याज.

किराया- पूर्णियाँ गुलाबबाग, देह व्यापारक अड्डा। ..कतेको कोढ़ीकेँ रगड़ि कऽ फुला देल गेल छल। आ.. दस टाकामे होइ छौ अपनो साती आ बापोक साती.. एहन सन अबाजक बीच कथाक सूत्रधारक प्रति शब्द.. स्सालेकेँ ने जेबीमे दम रहै, ने डाँड़मे। ***पतन-*** बाढ़िक कछाछोप पानिमे चनमा द्वारा झोली मिसरक सन्दूकक वस्तु-जात निकालबाक प्रयास आ साँपक फेंच तानि ठाढ़ हएब, जेना कहि रहल हो- हम तोरासँ बेसी बिखाह नै छी।

उसांस- विधवा थानावाली, ओकर बेटी डोली बेराम रहै। हवेली गेनाइ नागा कऽ देलक। मालिक दस सटका घैंच देलकै। फेर माए रोहुआ बुआरक मोनिमे अत्याचार आ कब्बै द्वारा ओकर कंठमे काँट पसारि ओकरा मारबाक खिस्सा डोलीकेँ सुनबै छै। डोली कहै छै, ऐ मालिक लेल कोनो कब्बै नै छै?

ओटघन- मालिक-मलकाइन आ मुसबा, जितिया पाबनिमे मुसबाकेँ छुट्टी नै भेटलै। जितबाहनक तेल, मलकाइनक बच्चाकेँ माथमे लठ-लठ करैत लागै आ मुसबा ओइ तेलक एक ठोपक आस लगेने रहए। आ सपनामे जखन ओकरा माए कहै छै जे किए एलें, ओतऽ मलकाइन सुच्चा दूधक पौरल दहीसँ औटघन करबितौ, तँ ओ कहैए जे चढ़ौआ तेल तँ ओइ सिमबक्शीक हाथसँ बहरेबे नओ केलै आ ओटघन ओ की कराएत?

जागृति- एकटा कौआ राजपथक दुफेरापर बैसि रहल, सोझाँ दूधसँ नहाएल संसद भवन, दूधसँ नहाएल नवयुवती जकाँ चमकैत। आ पारम्परिक कथा- कुकुरक कौआसँ गीत गेबा लेल कहब जे ओ रोटी ओकरा खेबाक मौका भेटए। मुदा कौआ रोटीकेँ चांगुरमे राखि कऽ बजैत अछि जे खोहमे रहि बाहरी दुनियाँक गीत कोना सुनबह।

जाति- कामेश्वर बाबू आ सुगनी हुनकर घरमे काज करएवाली। शारीरिक संबंध दुनूमे। मुदा बहुत दिनुका बाद ओकर बेटी सरोसतियाकेँ कामेश्वर बाबू कामवशीभूत देखै छथि आ पुछै छथि तँ सुगनी कहै छन्हि जे हँ जुआन तँ ई भइए गेल अछि, मुदा सोचै छी जे कोन जातिक लड़का एकरा लेल ताकी, अपना जातिक वा अहाँक जातिक।

महामंत्री- अर्थशास्त्रमे एम.ए. पास विनोदक कृषि राज्य मंत्री पाण्डेयजीक चक्रचालिमे फँसि अपन धनकुटियाक धंधा खराप करब आ पाण्डेयजी द्वारा आबंटित राशिकेँ ऊपरे-ऊपर हँसोथि जेबाक खिस्सा।

एकोदिष्ट- मालिक बाबाक एकोदिष्ट। हुनकर जेठ बेटा मधु भाइ (तामसे मधुकंता कहै छथि) क नोतपर नै एलापर तामसे बिख

छथि, हुनकर कार्यालयक व्यस्ततासँ हुनका कोनो मतलब नै छन्हि आ कहै छथि जे सुनराकें एकर बदला नोत किए नै देल गेल। धरफड़ाइत अबैत मधु भाइ ई सुनि लै छथि...।

भारत- गाँधीजीक मूर्तिक खसब आ सभक ओकरा श्रद्धासँ नमन कऽ बढ़ि जाएब मुदा उठेबाक पलखति ककरो नै। एकटा भिखमंगाक ओतऽ कम भीख भेटलाक बादो ओतै भीख माँगब, ऐ आशामे जे गाँधीबाबा उठता तँ देशक दशा कहबन्हि।

कृतज्ञता- सुस्मित, अक्षयवट आ राकेश जाइत रहए गप करैत। रामनारायण सिंह प्रोफेसरक कृपासँ नीक अंक भेटल रहै। फेर प्रोफेसर साहेब सेहो सूत्रधारकेँ भेटै छथिन्ह आ फेर नीक छत्ताक उपहारक बदला देल अंकक भेद खुजैए।

विसंगति- सूत्रधार मेडिकल रिप्रेसेन्टेटिव छथि, नाथो बहिनकेँ पेट दर्द, तेजो काकाकेँ तिलकैत केसक इलाज आ अवधेश भाइ लेल भूखक गोटी.. मुदा सूबेलाल हरबाह, जकर बेटा सूत्रधारसँ पाँच बर्ख जेठ छथिन्ह, सूत्रधारकेँ मालिक कहै छथिन्ह। पेट खरापक दबाइ गोटी हुनका मुदा नै चाही, कारण जतेक अन्न पचेबाक तागति छन्हि ततेक तँ अन्नो नै जुड़ै छन्हि, भूख कम करबाक जे कोनो दबाइ होइ तँ से मँगै छथि।

बोइन- जुगो मरड़, ओकर कनियाँ धोरएवाली बिन बोइनक खेरही डेंगाबए किंकर बाबूक अंगनामे, बेटा लालमोहरा सेहो पेटेपर ओइ अंगनामे काज करए। सूत्रधारक मदतिसँ वृद्धा पेंशन भेटलै, मुदा जेकरा ओतऽ ओ काज करैए ओ जे दू दिन ओकरा काजसँ दौगत, से दू दिनुका बोइन नै देत। फेर ब्लॉकमे जखन ओकरासँ बिनु पाइ लेने हाकिम कागच राखि लै छथि तँ ओकरा होइ छै जे काज नै भेल कारण बिन बोइनक तँ गरीबे-गुरबा सभ ने काज कऽ सकैए।

पहिचान- वृखोत्सर्ग श्राद्धक क्रममे दगलासँ बाछीक मृत्यु। ***अनुत्तरित-*** दीना बाबूक काम लिप्सा आ हुनकर हरबाहक बेटी बुधनीक कहब जे ई सलवार फराक पहिरने हम हुनकर बड़की दैया सन लगै छिऐ?

योग्यता- रफीक साहेबक स्कूल खोलब आ योग्यतामे युवतीक उमरि पूछब। कथा सशक्त नै।

उद्देश्य- मुख्यमंत्री द्वारा शिक्षामंत्रीपर परीक्षामे चोरिपर प्रतिबन्धक गप आ त्यागपत्र माँगब।

बोध- राजाक नागराजक पत्नीक ढोढ़िया संग संभोग देखब आ नागराजक पत्नीक कहब, मिसिया भरि पुंसत्व, पहाड़ भरि कुलशीलसँ पैघ होइ छै?

मोल-जोल- पांकी रोड डालटनगंजमे भरत बाबूक माइक श्राद्ध आ दूध-तेल गिरै लेल कंटाहा ब्राह्मण द्वारा एक सए एकावन आ फेर आर पचास टाका भेटलोपर मोन उछितगर नै हेबाक बाद एकटा ब्राह्मण भिखमंगा द्वारा ओइ टाकाक बदला दूध-तिल पीबाक ऑफर। ***मूल्य-*** लखन बाबूक निर्देशनमे मनोरमाक पी.एच.डी. करब आ लखन बाबूक प्रणय निवेदनपर उत्तर, जे जइ आँखिए अहाँक एतेक महान छवि देखने छी, तइ आँखिए अहाँकेँ नांगट कोना देखब?

आस्था- गोदानक बदलामे पंडितजी द्वारा आपतमे एगारह टाका दऽ तिल-कुश-जौ-अक्षतसँ उसगरबाक गपपर सूत्रधार द्वारा आशंका करबापर कहब जे ओ कोनो मनुक्ख थिकै... जानवर थिकै, जानवर।

अंतिम अभिलाष- मदर दासक अंतिम इच्छा पुछलापर ओकर कहब मोन करैए.. जे अल्लू दम आ भात खाइ।

सरोकार- फूलबाबूक मृत्यु आ तखने अमेरिकामे छपल कविताक

एवजमे डॉलरमे पाइ आएब आ मदनेश्वर बाबूक पूछब- एकर कतेक टाका भारतमे भेटतै?

प्रतिबद्धता- रामशरणजीक भारतक गरीबी आ नारी-शोषणक ज्ञान विदेशी लेखकक किताब पढ़लासँ एतेक फरिच्छ छनि। ललिता एक माससँ हुनकर कामक वशीभूत अछि, मुदा फेमिनिज्म लऽ कऽ ओइ दिन जखन वार्तामे भेद खुजैए तँ ओकर दुत्कारलापर रामशरणजी फेमिनिज्मकेँ अल्हड़ छौड़ीकेँ रागतर दाबऽ बला हथियार कहै छथि। ***जोगाड़-*** कुमार गंधर्वक स्वर्गवासपर जे.एन.यू. कावेरी हॉस्टलक दू टा अखबारी समीक्षकक विवाद- ओइमेसँ एकटा तहिए सँ आलेख लिखि रहल छल जहियासँ गंधर्व दुखित भेल छला, से ओ दोसरकेँ कविता लिखबा लेल कहै छन्हि।

पिंडदान- चक्रधर बाबूक झिंगुर झाक माइक मृत्युक बाद जमीन लेने बिना पाइ नै देबाक निर्णय आ अपन पितरक पिंडदान लेल गया जेबाक भोरक रातिक स्वप्न- जीबैतकेँ नै उजाड़, मरल लोक तँ अपने बसि जाएत।

लोरहा-बिच्छा:

भूख- सूत्रधारक बाल्यकालक संगी रमकिसना। मुदा आब ओ चरबाही करैत अछि आ सूत्रधार छथि प्रोफेसर। होलीक दिन सूत्रधार द्वारा रंग देबाक प्रयासपर ओकर कहब- मैल-कुचैलमे रंग पकड़बे नै करत। पेटक चाम चारि दिनसँ जरि रहल छै ओकर। ***महगी उन्मूलन-*** मणीन्द्र अपन पिता आ परिवार संगे पटियालाक सड़कपर जा रहल अछि- एक भाषा-भाषीकेँ छोड़ि कऽ सभकेँ मुड़ै-भाटा जकाँ काटि देल जाइत अछि। मणीन्द्र बचि जाइत अछि, फेर फागुमे महामहिम लग लाशक रंगक बदला दुर्गन्धयुक्त पानिसँ होली खेलाए पहुँचैत अछि, कारण ई बेशी सस्ता छै।

कसाइ- बिलट सिंहक जमीन चौकोड़ हेबामे सुरेनमाक जमीन पड़ै

छै मुदा ओ तैयार नै अछि। मारि पड़ै छै। दरोगा पाइ मंगै छै मुदा एस.पी.क ओइठाम कहलाक बादो काज नै होइ छै, कारण दरोगा ओकरा पाइ दऽ कऽ बहाल भेल अछि।

दहेज- छोट बहिनक द्विरागमन आ ओकरा द्वारा एकटा सलाइ आ एक टीन मटिया तेल लेने बिना सासुर नै जेबाक गप।

पीढ़ीक द्वन्द्व- नियतिक चक्र आ साहेब राय आ रामदेव रायमे मतभिन्नता आ पिताक नाम रामदेवसँ चतुर्भुज राय कराएब। पहिने, आइ, आ काल्हि- गोनू बाबासँ सूत्रधारक प्रश्न आ ओ लाउर, चाउर आ रिभलबॉल लेल भूत, वर्तमान आ भविष्यमे लोक कानत से गप कहै छथि।

प्रतिफल- विज्ञानक भारती-शरत सिद्धांतक प्रतिफल। बेटा कोना हुअए, से बेटीक संख्यामे कमी भेल। आ आब स्त्री लेल युद्ध।
उपराग- कामो झाक पहिल पत्नी दिबड़ावाली आ दोसर मुरलीवाली। मुरलीवालीकेँ एक बेटा आ तीन बेटी। ओकर बेटा निरंजनकेँ साँप डसि लेलकै, से शिवलिंगकेँ छूबि कऽ पूजा केलासँ आकि सौतिनक हक्लि डइनपनासँ। कामोक पिता मुसाइ झाक पुतोहु दिबड़ावालीसँ अवैध संबंध। मुरलीवालीक मृत्युपर ओकर आगि देबा लेल ओकर बेटा इन्द्रदेवकेँ लोकसभक कहलापर मुरलीवाली रहस्य खोलै छथि जे अहाँ हुनकर बेटा नै छिअनि वरन छिअन्हि दी... दीअर!

कोउ काहू मगन- सूत्रधार आ संगबे लोकनि टहलै छथि, तखने सड़कपर एकटा दसटकही चौधरीजीकेँ भेटै छन्हि, ककर ई पाइ हएत- एक ठाम खाधि केलेपर दोसर ठाम ऊँच हेतै ने ?
ऋणखौक- नीलेश गरीब परिवारक, फेर पढ़लक-लिखलक तँ गामक लोक सभ पिताकेँ दवाबमे दऽ विवाह करा देलन्हि- कनियाँ तेहन जे पिताकेँ मारै छल। फेर नीलेशक दोसर जातिमे विवाह करबाक

निर्णय आ पड़ोसीक कहब- ई ऋणखौक अछि, पितृऋण बिना उतारनहि मरत।

हाथी चलए बजार- ई विहनि आ लघु कथा संग्रह पढ़बामे बोझिल लगैए। कथा सभ निबन्ध स्टाइलमे सम्पादित कएल गेल अछि। मूलधनक *अन्हार* कथा अखबारक कोनो रिपोर्ताज सन लगैए, टैक्स फ्री कथा शुरू होइए चिमनीपर पजेबा उघैसँ आ पाठक ओइ कथ्यकेँ आगाँ बढ़बाक उम्मेद करै छथि मुदा नेताजीक गोहारिसँ ई लघुकथा खतम भऽ जाइए। *बबूर* सए साल पुरान समस्यापर आधारित अछि, बंगालोमे दलितकेँ जरेबाक अनुमति नै देल जाइ छलै, मैथिलीमे एतेक दिन बादे सही ई कथ्य आएल मुदा देवशंकर नवीन ततेक हरबड़ीमे रहै छथि जे कथा विहनि आ लघुकथाक बीचक बौस्तु बनि जाइए आ विषयकेँ सजा नै पबै छथि। सम्बन्धमे सेहो कथा कपचा गेल अछि जखनकि अनावश्यक वस्तु बहुत रास जगह घेरने अछि।
अंतिम बेहोशीमे "सुषमा आ माधुरीकेँ अंग्रेजी स्कूल चण्डी बना देलकैक अछि" कहबा कऽ लेखक कोन दिशामे जाए चाहै छथि? किछु कथामे लगैए जे ओ नारी उत्थानक पक्षमे छथि, मुद बहुत ठाम लगैए जे से ओ मात्र फैशनक अन्तर्गत कहै छथि, हृदएसँ नै। *उस्सर जमीन* शुरू भेल तँ खलनायकक विवरणसँ मुदा आगाँ बढ़ैत-बढ़ैत कर्मक फलक सिद्धांत सिखबऽ लागल।
पवन पुल सेहो एकटा नीक प्लॉटकेँ सूत्रधारक प्रशंसामे खतम करबाक प्रयास लगैए, नैतिक शिक्षासँ अन्तक ई प्रवृत्ति *चरित्र* लघुकथामे सेहो अछि।
इजोत लघुकथामे शतरंज खेलाइत कथ्यक आगाँ बढ़ब शिल्पगत नव प्रयोग अछि, मुदा ने शीर्षकेक सार्थकता आबि सकल नहिये

कथ्य स्पष्ट रूपसँ कहल गेल।

टाइटल कथा *हाथी चलए बजार* मे धांइ-धांइ कथ्य आगाँ बढ़ैए, संघर्ष, विवाह, विधवा, अनुकम्पाक नोकरी, हाकिमक गिद्ध दृष्टि आ ओकर बेटीक बापकेँ दुत्कारब जे, जे अहाँ विधवाक संग करऽ चाहै छी हमरा संग करू, खिस्सा समाप्त।

झण्डा गारबाक ई हरबड़ी *छगुन्ता, गति* आ *मध्यांतर*मे सेहो देखा पड़ैए।

ब्याजमे विहनि कथा अछि, मुदा से मात्र आकारसँ। स्टाइल वएह हरबड़िया। प्लॉटे-प्लॉट, ने शिल्प ने भाव। जँ विहनि कथाक दृष्टिसँ देखी तँ *किराया, जाति* आ *बोइन* मुदा सुतरल विहनि कथा अछि।

लेखक स्वयं लोरहा बिच्छाक कथाकेँ दब वर्गमे रखने छथि। मुदा एतौ अधिकांश कथा हिनकर मूलधन आ ब्याजक आने कथा सन छन्हि। *भूख* विहनि कथा मुदा सुतरल छन्हि।

ऐ विहनि आ लघु कथा संग्रहमे एकटा नीरसता अछि। लघु आ विहनि कथामे प्लॉट बहुत रास अछि, कतेक चीज कथामे ढुका दिऐ से हरबड़ी, कथाकेँ निबन्ध सन, फैक्ट आ फिगरसँ भरबाक प्रवृत्ति ऐ संग्रहक सीमा बनि गेल अछि।

नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन

गद्यसँ पद्य ऐ अर्थे फराक होइत अछि जे ऐमे बिम्बक माध्यमसँ कम शब्दमे बेशी गप कहल जेबाक गुंजाएश रहैत अछि। तेँ पद्यकेँ समयाभावमे शुरू कएल गद्यक विकल्पक रूपमे देखब सम्भव नै, ओना तेहनो उदाहरण भेटत। पद्य छन्दबद्ध हुअए वा छन्द-लय विहीन, जँ ओइमे गुणवत्ता अछि तँ प्रभावित करबे टा करत। सीलिंगसँ जमीन बचेबा लेल वामपंथ वा दक्षिणपंथक प्रयोग लोक द्वारा होइत अछि। मुदा सीलिंगमे पड़ल साहित्यक लेल वामपंथ वा दक्षिणपंथक प्रयोग, छंदबद्धता-लयबद्धताक आग्रह वा अनाग्रह गोलैसीक विस्तार मात्र अछि। आ ऐ मध्य नचिकेताक तैंतीस टा कविताक संकलन अछि *मध्यमपुरुष एकवचन*।
कोनो आमुख नै, समर्पण पद्य मध्य अछि मुदा कवि किताबमे सोझे

शुचिता/
सुचरितासु (सप्तमी बहुवचन)
कहि आगाँ बढ़ि जाइ छथि। शुचिता भेल निर्मल/ स्वच्छ आ सुचरिता भेल नीक चरित्रक (रवीन्द्रनाथ ठाकुरक उपन्यासमे सुचरिता पात्रा छथि)।

मध्यमपुरुष एकवचन: (कविता पाठ)
विरोध समुद्रसँ - तोहर आ हमर बीचमे जे समुद्र अछि, जकर तटपर, ओकर परिणामपर क्यो कानि रहल अछि, बीचमे माछ आ चीलक झुण्ड अबैए आ ऐ मध्य ज्वार सभक टीककेँ धेने छथि वरुणदेव, सोचैत जे प्रेमकेँ जीतऽ देता आकि समुद्रकेँ। फेर वरुणदेवक ज्वारक टीककेँ धरब, चित्र सोझाँ अबैत अछि।
ऋतु-विशेष, पृथ्वीपर- प्रेमक ऋतु विशेष। जकर प्रारम्भेमे बरखा मासक बुन्न सुखाए लगैत अछि, शब्द लेल जाल लेने जँ आएब तँ शब्द करबे करत आत्मसमर्पण कविताक संन्यासमे। आ फेर घुरैत नदी कछेर- भोरुका मंत्रक उच्चारण लेल जे जलकेँ बनबैत अछि अकास। ऐ बिम्बक बाद- बंजर देशक बरसातिक देव जे अकासोकेँ कना सकै छै बेहिसाब! सोझाँ अबैए, माने जल बनत अकास आ अकास कानत!! भूतक नाचब लाठी बजारि-बजारि आ तरुण राजकुमारक देखब साम्यवादक स्वप्न- फुक्का उड़ाय अकासमे। शब्दसँ समझौता आ सभ आहक डूमब शब्दक चीत्कारमे। फेर आह्वान अकाससँ, कानू भोकारि पारि, जइ वज्रपातक शब्दसँ विश्वास हएत जे साओन ऐल अछि पृथ्वीपर। आ आकांक्षा, छूबि कपारक टपकैत बुन्नक सङे आ अपन लिखल पाँति पढ़बाक। पछिला बेरक हुनकर अपूर्ण कएल कार्य। आ यएह छी ऋतुविशेष- मोन पाड़ब

हुनका।

तोँ- वाक्यक हकमैत पैसब, धीपल हाथक धरब, धधकल आगि हमर, ऐमे हम तोँ, कल्पतरुक डारि, बाकी सभ छुच्छ जेना बुढ़िया नानीक कोनो खिस्सा होइत अछि। आ दशोदिशा पकैत तइमे- भ्रान्ति-पथ (भ्रमित!)। नौ मासक गर्वक, गर्भक दीर्घप्रहर। पाँचम ऋतु (!) छठम रिपु(!)- राग सेहो विलम्बित, द्रुत ताल (त्रस्त) आ भानु अस्तमित।

रातुक आ दिनक कथा- सूतल दुनियाँ कैँ छोड़ि बुद्ध बहार होइत छथि घरसँ। मुदा कविक प्रयाण कविताक भीतर। कानूनी अनुबन्धक अन्तर्गत बान्हल विवाह- विधि-प्रसव वेदनाक बाहर। कविताक भीतर छंदहीन, वर्णहीन। भांगल ग्रंथि, उघरल सिलाइ, सूचीकर्म, मर्ममे झरैत बिन्दु आ एकटा मैल मोटिया तौनी जकाँ करैत अछि झँपबाक प्रयत्न *हमर* शरीरकेँ (भीतरसँ उगैत अस्थिरता) अव्यवहृत आ जखन भूख, व्यथा-विच्छेदक कथा। ठाढ़ होइत देखबा लेल यौनता परसैत जाएत जखन, बनि सघन छत्तीसो व्यंजन *तोहर* भानसमे। मुदा *हमर* सक- मात्र कवितेक भीतरक संधान, द्व्यर्थबोध पूर्ण अछि जे, सूक्ष्म तर्क तकर, ताल-लयसँ गलल। प्राकृत-यकृतमे ठूसल, महायोनि-लिंगबोध लदने जइ शरीरपर। यएह टा सीखल उपाय- *तोहर* सपना देखैत रहब अनुखन। आ दुनियाँक जगलापर सूतब तोहर संग- *हमर* हे कविता कालरात्रि करबेटा करत, दूर करह व्यथा-विच्छेद, भूख-भय। एखने झलकि उठल उखा-किरण तेँ, आकांक्षाक आशा सन।

चक्रान्त- अकासमे हेलैत अक्षरक मिजाज-तिक्त लहराबैत आगिक प्रवाह। ओकरा बुझाओत कविक दोख नै। दुनियाँक चक्रक अन्त! मात्राक हुनका लग एबाक कोनो आस! ने हुनक कविता सजि सकती शब्द बनि बरसबाक लेल पहिने जेकाँ!

दमयंतीकेँ उपदेश- तीर लग लोकक पथरल (!) पड़ल रहब। बिना अंगक- अशक्त लोक। घास पात तकरा सभकेँ धेने आ सेमारमे सन्हिआयल-ओझरायल तक्षक। बसातमे डोलब आ झोंझमे झोंकाह आगिक सुनगब। दमयन्ती, दमयन्ती -सुन्न बोन। फूल-पातक बीचमे टुअर सुरुज(!), टुघड़ैत आ सावधानीसँ चिड़ैत हिरण्यक पेट, तैंतीस टा मूह, कुरुप, गाछ सभक एम्हर जाउ क उपदेश। दमयन्ती, जंगलपार नै होउ। अन्हारमे ईशान दिशामे देहक दलाल प्रतीक्षारत। दमयन्ती, समय। नैऋत कोणमे नुकाएल नलदेव। गाछ-बिरीछक जानब-कविताक आगमन कोना होइत अछि। जानलक इतिहास, मनुक्खक निष्ठुरता। कोना महावन निर्विचार, उजार, उच्छन्न भेल। पोसुआ (!) गाछ बिसरल भाषा। दमयन्तीकेँ चेतौनी- मनुष्यपर विश्वास नै करू, कथा-कविता-अफवाहसँ बान्हत ओ। नै पार करू बोन। आ से भेने सभ टा गाछ लिखत दमयन्तीकेँ लऽ कऽ पहिल कविता।

प्रश्नावली- अचल अन्तिम राति यएह? गीतक अंतिम पाँति यएह? आ *हमर* कविता पढ़ि सकै छी? हमर अंतिम दिवस यएह? किछु करबाक आब विवशता (!) तन भ्रमित, कोन दरिद्र (तत्क्षण अनुभूति) की? सूति सहल रहल की? हमर आखरक भवितव्य? अशान्त भ्रमर मनक विहंगम, अजर प्रेमक धार सन।

भीतर उगैत शब्द- शब्दक ध्वनि तेहन सन जेना गुफामे बैसि कियो कानि रहल। पहाड़क शिखरक ठहाका। दबले पएर एबाक आहटि, लिफाफ खोलबाक अबाज। पत्रक सभटा पाँतिसँ खदबद करैत शब्द। आ बहिनक बहैत नोर देरीसँ बूझब। वाक्यक भसिआएब, शेष आकि समास नै बनब, मोशकिलसँ बूझब टूटल रीढ़क हड्डीक मर्मर मुदा कठुआएल कविकेँ घिसिअबैत कंठ पकड़ि। कवितामे मुदा

सुनल-गमल-बुझल वस्तुक आभाष बनि आएब। अपने भीतरसँ बहराएल मुदा ऐ शब्द सभकेँ परिवर्तन करबाक अधिकार कविकेँ सेहो नै। मात्र चुम्बन प्रेमक मैथुनक अधिकार। मुदा मन्थन ग्रन्थनक आ नै कोनो घृणा क्रोधक अधिकार। आ तकरा सजा सकैत छी फूल-पातसँ, वेणी गूहि सकै छी रातुक पहर। सेउंथ चमका सकै छी पहिल सुरुजक लालीसँ, गराक सिङरहार, उष्म वृक्षक वल्कल शब्द शरीरपर घटित भेल तथ्यक सन्मान। *ई कविता कवि इलारानी सिंहकेँ कवि द्वारा समर्पित छन्हि।*
जानल-पहिचानल- शरीरकेँ पन्नाक-पन्ना पढ़ब आ जीवनक लागब जानल पहिचानल। तह आ गह्वरक गीत आ .... - हुनकर विश्वास *हमर* शब्दपर सँ हटब। आ मात्र स्पर्शक भाषा- एकटा ग्रामीण अनुभूति व्युत्पत्ति नै दऽ सकैत अछि कियो, तकरा जीबै छी।
समार्थपद- सपनाक नै बाजब, बजैत तँ अहाँक सभटा नाम सुनबैत, *कविक अनुमान*। ... ... धातुमे दुर्बलता ने उपसर्ग-प्रत्ययक अभाव। नै तँ उचरि सकैत प्रतिशब्द (चलि गेल छथि अश्वखुरक संगे अश्रव्य दर्शनक भाषा अछि तकर)। आ तइ लेल नव अमरकोष, नव कविता लिखऽ पड़त।
अंकुर- चारि टा कविताक बीआक मोनमे उगब आ तइमे प्रेमक शब्दक लिखब। आ ओकरा तेहन प्रश्नमे ने ओझरा दियौ जकर उत्तर हमरो बूझल नै अछि। सुनैत गप्प अपने एक्के संग चारि-चारि टा कविकेँ बाँटि देने शब्द सम्पदा। आ तैयो ऐ चारूकेँ मिलाकऽ गाएब आ प्रेमक आंकुरक उगब।
कत्ते बरसक बाद- ठाढ़ अहाँ सबहक अंगनापर एकटा कविता पढ़ऽ देब, नेनपनेमे भगा देने छलौं, छंदभंगक जुर्माना (!) छल। आ तइमे आन चीजक संग रहथि दुखी दाइ, छठिक नै कोनो जोगार, सालक मात्र चारिटा मासक अन्न-भुटकल अनोन अल्हुआ त्राता। हमरा एगो

कविता पढ़ऽ देब।

किऐ नहि लिखै छी?- पूर्ण विराम। नै आब एको पाँति *अहाँक* नाम। कथी ले ई जिद्द जे लिखबे करी प्रेम पत्र, अनकर बनाएल अक्षरमे, चढ़ा कऽ रंग, अर्थ, वस्त्र, व्याकुलता। सुखाइत ठोर, तरबापर खेलाइत आंगुरक भाषा, अद्भुत अन्तर्देशी शब्द सभ आ तकर विन्यास। तखन पत्र नै लिखबाक नै देब उपराग।

राजहंस- कविताक राजहंस, शरीरसँ अहाँक दूर चलि लिअए दू डेग। उल्कापात आदिक द्वारे अवकास नै भेटल अछि *ओकरा*। आ शरीरो तोहर बेबहार नै भेल छौ। ओकरा कहबै एक बेर उड़बा लेल तोरा संग। जाधरि सहि सकत तोहर ओजन। नोरक बुन्न कविक उपमा नुकाएल जे आँचर तर तरबापर कहबै राजहंसकेँ राखि दै जिज्ञासा, युवती जे बनि गेलै।

अन्हेर- चिड़ै कहलकन्हि, नै बाजू किछुओ गोपनीय, नै तँ अन्हेर भऽ जाएत। काल्हि रातुक पहर कविता आएल छली आ हेरा गेली गद्यक भीड़मे। आ गोपनीय इतिहास पाप प्रणयसँ परिणय धरिक दूरी आ एहने सन। किए घबड़ाइ छी? क्यो नै पूछत अहाँक नाम। नै पूछत, चिड़ै बता, की जनै छलैँ कवि दऽ जकर कबर एखने खोधल गेल अछि।

एक अहीं छी- कए बेर *अहाँकेँ* बजा कऽ देखने छी कवितामे। मुदा घुरियो कऽ नै देखै छी *अहाँ*। मामूली प्रेमक दस्तावेज नै जइमे लाभ-हानिक हिसाब रहत लिखल। ने साधारण निमंत्रण ने मामूली लोकक भोज्य वस्तु। *अहाँकेँ* कवितामे एकटा नाम देने छी जे चिड़ै चुनमुन उचरि सकै छल। एहन नै जकरापर सनसनाइत कथा बनि सकत। मुदा *अहाँ* किछु बजिते ने छी।

पुरातन प्रेम- मांगि रहल गीतक दाम। करैत प्रश्न-उत्तर (मुदा

प्रकृतिक पाठशालामे कत्तऽ तकर गुंजाइश?)। सीमित पुरातन प्रेम, पाठ्यपुस्तकसँ इतिहासक पाठ धरि। पुछैए प्रश्न- पुरनका शब्दक वाक्यमे प्रयोग। सभटा वाक्य सत्य अछि वा फूसि। भावार्थ कहू...। मुदा आब हम भेलौं चलाक।.. पढ़ि सकै छी मन्दाक्रान्ता छन्दक व्यथा। नापि सकै छी शुद्ध धैवत् क पातिव्रत्य। हमर शोणित चीन्हि गेल अछि जीवन-गणितक बर्बरताकेँ ठीके। कम बजै छी, बजबो करै छी तँ भूतकाल दऽ नै अनाहत-अनागत प्रेतकाल दिस। अकथित-अनूदित अनुभूति दिस बढ़ैत दर्शन हमर। मलिछाह कऽ देलक, केतारी खेतक अढ़, भुतिआएल माल-जाल आ पुरनका प्रेम।

चाह- जे हमरा किछु चाही, आ हमरा चाहबे की करी। अहाँ अनन्त, विशेषणसँ हटिकऽ, हमर मोनक गप पूर करब तत्क्षण। आ जे हम चाहब तावत् प्रत्यय ऐ प्रपंचक, हमर जिनगी सुप्तिङन्तम्, आ बान्हल पदबन्ध, घटल निघण्टु। दऽ सकै छी ह्रस्व, अति ह्रस्व, ओँकार ऋचा आकार। हमर छोट मोट आकांक्षा, भाषा भावना वेदना अनियमित, इमन-कल्याणक गमक नियंत्रित।

हमर पतिक लेल-१- अहाँक घरक चारमे भेल भूर, कठोर सर्द वायु सेरा देलक माड़ आ अकासी नोर, हमर अल्हुआकेँ झोरा देलक। भीजल ओछैन, अहाँ निस्बद्ध, ई भूर करत खतम अहाँकेँ। आ तइ विनाशक गीतो तँ लिखू अपन हाथेँ।

हमर पतिक लेल-२- ओ कहै छथि हमर स्थान हुनकर माथपर, मुदा नै रहब हतकेशी शिखा संग। हृदएमे, नै रहबाक श्वासयंत्र संगे। आँखिमे, नै रहबाक चश्माक तरक नोरक संग। ठोढ़पर, नै बनबाक पूजाक जप मोती। जीहपर (भानसक स्वाद द्वारे!), हँ ठीके, मुदा ऐसँ बहार हेबाक गर। पएरक जुत्ता तर, पृथ्वीपर, राजनीति बुझै छी। कोना जुत्ता पएर तरसँ चढ़ि अबै छै माथपर।

से जहिया बुझि जाएब तँ भेटि जाएत प्रतिवादक पहिल सबक।
हमर पतिक लेल-३- नै पुछू व्याकरणक, लिपिक मादेँ। ऐ कविताक! की करू आगिमे फेकि दी हम, नै कहू ई सभ। निरक्षर छी तँ की। जादू-छड़ी छी घुमा सकैत। हमरापर जे कियो लिखत कविता आ हमर चित्तपर व्याकरण तँ कोन आश्चर्य? नै कहब एकरा छद्माडंबर!
हिसाब- पाँच टा शब्द हिरिया दै छै झौलीकेँ भोरमे बाउग करऽ जाइ काल। अनोन अल्हुआ संग खाइत एकटा गेल, आध टा खर्च भेल जखन भुसहु बाबू बरखामे पीपरतर देह बचबैत ओकरा तीन लात दै छथि। बचल डेढ़, आ डेढ़ टा बान्हल अछि राखल चमरटोलीमे चुहड़ाक ठेकापर उधारक माल पीबा काल। आ शेष शब्द (सात गुना चौदह गो शब्द!) ओ राखैए हाटमे वस्तुजात किनबा लेल। साँझ धरि बचलै नै एकोटा शब्द हिरियाक करेजपर रखबा लेल आ तखन बिनु शब्दक हिरिया कोना खोलत करेज, रहि जाइत अछि ठाढ़ ओस तर, भरि राति, अङनेमे।
आत्मकथन- अहाँकेँ अपन मोनक विषयमे किछु बताबी, कपालकुंडल। मुदा हड़ताली बोनिहार जन-नेताक लेल ठाढ़ कएल गेलि गितहारि..। मदारी पढ़ैत हमरे कविता आ हम फराक डाँड़मे रस्सी पहिरने। तखन कविताक अतिरिक्त किछु गप करी। मुदा ने कोनो रस, ने शब्द, ने प्रहार कोनो बचल। ने हमर कोनो एहन नामे, बड्ड गद्यमय जीवन! चलू गद्यक चहरदेबारीक बाहरक किछु प्रश्न- कोन पुरुषक वचनमे ओझराएल, काल-कारकमे ओझरल अरण्यमे। अव्ययक विनाश, विशेषणक उघारब परिधेय आ विशेष्यक सिंहासनसँ उतारब। उपसर्ग देखि मनक भाव बुझबाक सामर्थ्य बला अछि कियो? बान्हल पौरुषक जटाजालमे पाणिनी अहाँक पाणि। आ

करता चित्कार महेश्वर सूत्रमे जे हम अहाँसँ किछु बाजी। आ पतंजलि आ हेमचन्द्र द्वारा कविकेँ दबारब बुझाएब *मध्यमपुरुष एकवचन*। त्वम्, त्वाम्, त्वया, तुभ्यम्, त्वत्, तव, त्वयि । कपालकुंडले, मनसिसँ जतऽसँ सभ निअम/ वर्ग/ लक्ष्य विहीन आ अहाँ मध्यमे मात्र एकवचन। टाइटल कविता अछि ई। नहिये हम पर, नै हम सभ पर, ने तोरा सभपर जोर देल गेल छै। मात्र तूँ पर जोर देल गेल अछि।

अहीं सँ प्रेम, घृणा अहीं सँ अहीं सँ प्रेम, घृणा (अहीं) सँ- अन्तिम सत्यक दिन, दिअ फाँसी तखन नै सुनि सकब हमरा। हमरा गीरि लेब तइसँ पहिने फेकि देब अहाँकेँ। दीप सभ अहाँ लगसँ हटा देने छी। प्रेम करै छी, मुदा घृणा आर बेशी। आँखि, हाथ, दुनु ठोरक अन्त कएल। मुद तैयो अहाँक हँसी अनृत शब्द बनेलक बरफ हमर दर्शनकेँ, आ फेरसँ नस-नस चलब हुनकर।

कनी टा जगह छोड़ि दियह- ऐ कोनमे छोड़ि दिअ, आखरक ढेरक नीचाँ हमर अभिलाषा। हमरे लिखने छलिऐ, अहींकेँ लऽ कऽ करऽ लेल कविता ! जगह चाही, कारण तीनटा पएर कविक, एककेँ पशुतासँ मढ़ने छी, दोसरकाक नोकमे अछि रोशनाइ सुखाएल आ तेसर नकली हृदए। जँ चाही हमरे सन कवि तँ कनेक जगह छोड़ि दिअ।

भय-१- अथर्व कवि। पोथी ने चोरि भऽ जाए। तखन भरिसक कविता तँ दोसराक नामे रहि जाए मुदा कवि छूटि जाएत इतिहाससँ। हमरा पोसबा लेल सेहो खरचा, हमर चिता सजेबा लेल सेहो तरद्दुत (गहन मंत्रसँ सजौलौं), हमर कविता कुपितापर लिखऽ पड़ल हएत कत्ते टा इतिहास!

भय-२- आबि गेल चलक ऐब, आब ककरोसँ डर नै। कारण बुझल भऽ गेल हेलबाक आ अधमतम हेबाक कला ! अश्रव्य शब्दसँ शशक

उलूकक जागब आ अस्पृश्य बालाक स्पर्शसँ भूखक जागब? आ बुझि गेल छी विनष्ट हेबाक कला! आब अदन्त नै रहलौं- दाँतक जोड़ा आबि गेल अछि! कठिन शब्द, शीतल स्तन, वृहत् वाक्य, कोमल रचना, विभीषण भाष्य आ बिखरल पाठ, अर्थ अनर्थक भावेँ विह्वल।

नामकरण- चानकेँ चन्द्रमा, तरेगणकेँ निहारिका नाम दऽ रातुक अर्थे बदलि गेल! इजोतकेँ प्रत्युष आ सुरुजकेँ मार्तण्ड्य कहबासँ आँखिक चोन्हिआएब। जंगलकेँ उपवन आ घास-फूसकेँ दूर्वाक्षत कहने आबि गेल मंत्रक उच्चारण अपने। अथक खटनीकेँ निरलस प्रयास आ बेजोड़ शब्दक जोड़ीकेँ समास कहने टूटल भाङल करेज सेराय गेल! जीवन मात्र जीवितक, आ मात्र हमर अहाँक जे कियो रूप बदलि कऽ जी रहल छी, प्रतिपदा-प्रतिपदाक बदलैत राशिफल आ गणितक भरोसे। नाम हमर दुष्यन्त आ अहाँक शकुन्तला भेने कण्व आ मृगशिशुक फिकिर लागल रहत।

आजुक कवि, बड़ उच्छृंखल कवि- आन्हल बान्हल, छंद निश्छंदक डोरीमे, फंसल फँसल, घायल आ घसल, अलंकारक व्यंजनमे रहू दहू, पकैत ढकैत, जुनि टपू पहाड़ दहाड़। धैवत रहू गबैत। कवि। अपन पंक्ति भऽ, जाइक पार! कवियारक ड्योढ़ीमे। आबि रहल छथि कविः कवी कवयः- धुन आधुनिक। कविता केँ जे करता छंदित बंधित आ वंदित सोचक आलोचक। रहऽ देता कविताकेँ आधा कविता अर्द्ध-अकविता, अर्द्धनारीश्वर अर्ध-पुरुषपर। बड़ उच्छृंखल ई आजुक कविवर हतनारीश्वर!

अहाँ नहि बजलहुँ किछु- नै बजलौं आइ धरि, दबा कऽ रखने छी शब्द-संपदा जमीन तर। मुदा जमीनक तर तँ गाड़ल जाइछ मुर्दा। मुदा हम तँ धर्मोन्माद हिन्दू प्रेमी छी, मरियो कऽ जमीन तर नै

जाएब, जरब झरकब आ आगिमे भणब अपन गीत। नह केश हएत विलीन, कोन अनुशासन शास्त्र सिखेने अछि अनुभूतिपर लगाम लगाएब- देह रहू झँपने अहंकार अलंकार तर, लगा दियौ ताला गरापर जे कोनो ध्वनि नै बजा जाइक। मुदा हम सूर्यवंशी राजपूत, हमर अस्त्र अछि शब्द अर्थ स्वर लिपि। तर्कमे हारि जँ जाइ तँ करब आत्मसमर्पण! मुदा हारी वा जीती, बाजब अवश्ये। आलोकक यंत्र बेकल पड़ल, लाल-हरियर-पीअर संकेत मूक। मोनमे हुलकी दऽ देखि रहल छी अहाँक योजना, वस्त्र-अस्त्र हरबाक, अर्द्धसत्यसँ अनृत बजेबाक, पाँतिमे बैसि अमृत चोरेबाक; द्योतक दावमे चढ़ल जिनगी शव शब्द! मुदा अखनो भरोस जे अहाँ बाजब किछु नै तँ गाबिये उठब हमरे कोनो गीत।

अपन कविता सुनाउ !- अहाँ अपन पुरातन प्रेमी माने हमरा लऽ गेलौं ओइ नवका मकानमे पहाड़क शिखरपर! अहाँक बाट पूछब मेघसँ ओइ ठामक, आ ओकर वंकिम मुस्कान, अहाँ सङे हमरा देखि! मुदा ने मेघक, ने तरेगणक, ने राशि-लग्न-अकासी ज्यामिति आ ने भाग्यक गणितक संक्रमणक कोनो गलती, जे सभ मिलि केने रहए विच्छेदक संक्रमण ! अंतिम मिलन जे भेल छल चानक गह्वरमे। ने पाथरक दोष आ ने अन्हारक भूगोलक। सूर्य आ पृथ्वीक संकेत, तरेगणक हस्ताक्षर विच्छेदक भऽ मिलि कऽ केलक चक्रान्त। जइसँ हम सभ नै बाजि सकी कोनो स्मरणीय पाँति- शब्द सभ ! दुनू गोटे। गरा दबबैत निःशब्दता। मुदा दोष ने निःशब्दताक आ ने देबारपर लिखल शिलालेखक, जकर विजातीय अक्षर सभ हम पढ़ऽ सिखनहिये नै छलौं। गह्वर भरि गेल अहाँक कवितासँ, ऊपर उठैत कविताक पाँती सभ जकर शिखरपर चढ़बाक असफल प्रयास। ओइ पाँती सभक दोषै नै छी। विश्वासघातपर अहीं टाक अधिकार नै। आब सीखि गेल छी अहींक भाषा, कामनासँ धधकैत

पहाड़पर चढ़बा लेल, पढ़ै लेल सभटा पाँति, कविता आ शिलालेख! हम सीखि गेल छी अहाँक हस्ताक्षर पढ़ब। मुदा ऐ शिलालेखपर अहाँ देखा रहल छी पजेबा, काठ, बालु आ सीमेंटक राशि, दरबज्जा, कब्जा आ फर्श सभ! मुदा हम सुनऽ चाहै छी कएक टा कविता, अहाँसँ अहाँक भाषामे, जे एखन हमरो भाषा अछि।
जीवनी- छावनीक द्रोह, तांतिया टोपे, विक्टोरिया, सरकारी कवि रवीन्द्रनाथक जन्म आ विधवा विवाहक चर्च? रंगमंचक पहिल पृष्ठ, हेराशिम लेबेडफपर एकटा पूरा पन्ना कीड़ा चाटि लेलक? मुदा आजुक रंगमंचक पुरोधाक लेल जे ओ पृष्ठ नहियो भेटै तँ हर्ज नै। ओकर दोसर दिसुका पृष्ठपर माइकल मधुसूदनपर एकटा लेख आ आधुनिक कविताक श्रीगणेशपर सेहो, मुदा १९९० ई.क बादक अनपढ़ कवि कोना जनबै गऽ! आ तँ ने पटि जाइ छी हमरा सन बहुरुपियासँ। आ १९५१ ई. ऐ शताब्दीक सरकारी कविक जन्म, नेनपनक दलिद्दर दशा, अवहेलना शिशुकालक, विवेकानन्दक फूसि-कथा आ स्तोकवाणी? हमर कथासँ पहिने गिरीश घोष, सर आशुतोष आ नेताजीक पलायन आ महात्माक कारावास एबाक चाही ? फूसि। कारण इतिहास शुरू होइछ गोडसेक आविर्भाव आ हमर जन्मक बादे? आ तखन टूटल भाङल भूगोल, हड़पक गणित आ शास्त्रीय वर्णभेद, ‘‘वेदणाक” मूर्धा। ह्निज्जए ठीक करू? अहाँ हमर सरकारी जीवनीकार ! अहाँ लेल अध्यायक अध्याय प्रारम्भ हेबाक चाही १९५१ ई.सँ। हमर विमाता कुल पितामही। मनगढ़ंत कथा, दादी-माँ दऽ, जे भऽ जाइ छली सोनबरसाक राजकन्या। कोना कविता एली आ हमर जीवनमे आएलि रमणीक मादेँ? त्यागि रहल छी, ताकू आने ककरो। अजन्मा वा अज्ञात् अनामा क्यो कवि। तावत् कविते हमर ध्यान रखती, बतेती जीवन-कथा हमर!

मध्यमपुरुष एकवचन- ऐ संग्रहक दोसर टाइटल कविता, पहिलमे टाइटिल नै कवितामे *मध्यमपुरुष एकवचन* आएल छल। अहाँकेँ छोड़ि अनके दऽ सोची -एहन आदेश ! मुदा गाछ-बृच्छ, फूल पाथरक वंचकता, विश्वासघाती व्याकरण धरि जाल पसारने ! मध्यमपुरुष एकवचन अहाँ तँ छी! राजनीति, देशक ऋणक पहाड़, भ्रष्ट नियुक्ति.. मध्यमपुरुष एकवचन अहाँ तँ छी मुदा.. लिखू नव्यन्याय-अन्याय, लिखू वैशेषिकक ढेरी, बिसरू धन-व्याकरण, मध्यमपुरुष एकवचन अहीं तँ छी मुदा.. बेकार शृंगार रस तत्व ध्वनिक, मात्र क्षणिक। आयु लऽ जटायु धरि, बचबै लेल अनकर सीता, गीता । चलति चलतः चलंती कविता ऋता वाग्धारा सन व्याकरण मध्यमपुरुष एकवचन अहाँ तँ छी मुदा... कोना किछु सोचि सकै छी अहाँकेँ छोड़ि?

नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन: ऐ पोथीक अंग्रेजी अनुवाद Second Person Singular नामसँ कवि द्वारा स्वयं रिजियो योहानन राजक संग मिलि कऽ कएल गेल अछि। *मैथिली पोथीमे कवि आमुख नै लिखने छथि मुदा एकर अंग्रेजी अनुवादमे आमुख लिखने छथि जकर मैथिली अनुवाद नीचाँ देल जा रहल अछि*। मैथिली आ अंग्रेजी दुनू वर्सनमे कविता सभक बीचमे चित्र-रेखा देल गेल अछि, मुदा दुनू वर्सनक चित्ररेखा सभ अलग-अलग अछि (किछु छोड़ि कऽ), आ किछु चित्रक स्थान बदलल अछि, जखन कि चित्रकार एक्के (संजय भट्टाचार्य) छथि। संगे शुचिता-सुचरितासुक अंग्रेजी अनुवाद नै देल गेल अछि। कविक नामसँ अंग्रेजी अनुवादमे ''नचिकेता'' उपनाम हटा लेल गेल अछि।

शुरू करैत

I

जखन-कखनो हम भारत सन बहुलवादी वातावरणमे बाजै वा लिखै

छी, श्रोतावर्गमे सँ कियो बुझऽ चाहै छथि: के बाजि रहल छथि, कृपाकऽ बुझाउ।

जखन अहाँ बहुभाषिक वातावरणमे कएक तरहक पात्र बनै छी, तखन एकटा पारिभाषिक लक्ष्मण रेखा खेचनाइ आवश्यक भऽ जाइए। मुदा हमर वैय्याकरणिक सहज वृत्ति हमर भीतरक कविकेँ कहियोकाल पराजित सेहो कऽ दैए। हमरा बुझल अछि जे जँ मौका भेटए, तँ ऐ पातर पोथीक पाठक वैय्याकरणक संग छोड़ऽ चाहता। हमरा अपन बाबा संग वाकयुद्ध मोन पड़ैए, जे *की ठीक छै आ की नै,* आ *शब्दसँ नीक काज केना लेल जाए*, पर होइ छल। खोँझा कऽ ओ कहै छला, ''कखनो वैय्याकरणक मार्गमे नै आउ!'' जखन कखनो हम एकर कारण पुछै छलियन्हि ओ विशुद्ध मैथिलीमे एकटा पुरान मोहाबरा कहै छला जकर अर्थ अछि: *''वैय्याकरणसँ भजार लगाउ आ अहाँक सभटा अक्षर गलतीक लाल रङसँ रङि जाएत, ओकरासँ झगड़ा करू आ अहाँ क्रियाभावमे गलती करब, ओकरासँ बहस करू आ अहाँ सभटा देखबैबला विशेषण बिसरि जाएब; वैय्याकरणकेँ मारू आ प्रेत कमजोर क्रियाक संग झूलत, ओकरा गारू आ ओइपर पुनरुक्तिक गाछ जनमत। अहाँ ओकरा दबा नै सकै छी, से अहाँक जँ एकटा वैय्याकरण आ साँपसँ भेँट हुअए, वैय्याकरणकेँ पहिने मारू। कोनो हालमे ओकरा मारू!''*

व्याकरण आ भाषा विज्ञानकेँ पेशा बनेनाइक सम्बन्धमे जे किछु कहल जाए, ऐमे संदेह नै अछि जे सुस्पष्ट विचार जेना *ओ शब्द (वा फ्रेज) जकर अर्थ बिना संदर्भक स्पष्ट नै होइए, पहिने बला शब्द जे अपन अर्थ बादबलाकेँ दैए* आ *कोनो अक्षरसँ समाप्त होइबला शब्द सभ* (*पुरुष-वचन-लिङ*) अखनो अनुवादकक/

द्वैभाषिकक लेल आवश्यक अछि। अखनो स्थान आ वाकशैली आवश्यक अछि (होमी भाभा- द लोकेशन ऑफ कल्चर, न्यूयॉर्क, रौटलेज, १९९४), कारण ककरो वाक समृद्धि- वा खगता ओकर स्थान निर्धारित करैए। कछेरपर स्थित मैथिली सन भाषाक लेखकसँ बेशी नीक जकाँ के ई बुझि सकैए जे, जे भाषा कोनो कालमे, तेरहम शताब्दी सँ प्रारम्भ होइत, विद्यापति, लोचनदास, चन्दा झाक अविस्मरणीय गीत आ उमापति आ ३० टा आन नाटककारक अत्यधिक लोकप्रिय नाटक देखलक, मुदा अखुनका कालमे अधिक कवि आ उपन्यास लेखक नै देखलक जे दोसर भाषायी आ सांस्कृतिक स्थलपर पाठक बना सकए। ओना नागार्जुन (यात्री) आ राजकमल चौधरी सन कवि आ हरिमोहन झा आ लिली रे दोसर भारतीय भाषामे अनूदित भेल छथि मुदा अन्तर्राष्ट्रिय पाठक धरि पहुँचबाक बड्ड क्षीण प्रयास भेल अछि।

ओना ई सत्य अछि जे पाश्चात्य उत्तर आधुनिकता सन फैशनेबल सिद्धांत छोट रूपमे उपस्थित रहल अछि, आदर्शक विखण्डन आ संकेतक विजातीयता (तकर परिणाम भेल सामाजिक प्रक्रियाक विखण्डन), ई सभ मैथिली साहित्यमे सेहो आन आधुनिक भारतीय भाषा जकाँ आएल अछि। ई सभ धारा एहन व्याख्या सभक जन्म देने अछि जे सभटा वास्तविक आ आभाषी सामाजिक समस्याक अपूर्ण वा सापेक्ष व्याख्या करैए, सम्पूर्ण व्याख्या नै। आ, निश्चये, ई सभ हमरा सभकेँ ओतऽ लऽ जाइए, जतऽ स्थान आ लौकिकता सभटा, संदर्भसँ रहित भऽ जाइए। मुदा आइयो जखन हम गतिमान क्रिया आ एतऽ सँ ओतऽ धरिक उत्तर स्थानिक गपक चर्च करै छी, तखन स्थान आ *ओ शब्द (वा फ्रेज) जकर अर्थ बिना संदर्भक अर्थ स्पष्ट नै होइए,* संदर्भ सभ लेल, लेखकक रूपमे, महत्वपूर्ण अछि।

हमर कविता जे कहत, ओइमे *पुरुष* क भेद केन्द्रमे रहत, मुदा ओइसँ हमर *लिङ* आ *वचन* क प्रति भाव कम नै होइए, जे एतुक्का बहुत रास कवितासँ सिद्ध होइए, कारण ई सभ संकल्पना अनुवाद आ व्याख्या लेल आ *दोसरक* संकल्पना लेल अमूल्य अछि। ई दोसर गप अछि जे हमरा सभमे सँ किछु ई अनुभव कऽ सकै छी जे ढेर रास मूलभूत पारिभाषिक शब्दावली संदर्भहीन भऽ गेल अछि, ई अपवाद रहत जे कवि आ ओकर संभाषण करैबला लेल, ''मध्यमपुरुष एकवचन'' सदा एकटा वास्तविक *दोसर* रहत। एतऽ हमरा लगैए जे *हम* आ *ओ* केर बहस/ वाद मे हम अपन पक्ष/ स्थान राखी, अपन पाठकक लेल, जइसँ ओ बहुसांस्कृतिक लेखकक पृष्ठभूमि बूझि सकथि। हम कविता आ नाटक मूल रूपमे मैथिली- जे उत्तर बिहार आ नेपालक तराइमे बाजल जाइए- मे लिखै छी आ बांग्लामे सेहो हम साहित्यिक निबन्ध आ गम्भीर कविता आ गीत लिखै छी। हिन्दीमे सेहो हम निबन्ध लिखने छी। हमर अंग्रेजीमे लेखन मुखतः साहित्य आ साहित्यिक अनुवादपर अछि। हम ढेर भाषामे छी आ से हमर पृष्ठभूमिक कारण अछि, हमर माँ मेमनसिंह, बांग्लादेशसँ छथि आ पत्नी मानक कोलकाता बांग्ला भाषी छथि, ओना हमर पिता मैथिलीक देशज भाषा-भाषी छलथि आ मैथिलीक लेखक-सम्पादक छलथि। हमर माता-पिता दुनू गोटे विश्वविद्यालयमे हिन्दी साहित्य पढ़बै छलथि, आ से हमरा सभकँ हिन्दी आ मैथिली साहित्यक कतेको पैघ लेखकसँ घरपर भेँट करबाक अवसर भेटल। ऐ सभक संग हमर स्कूल स्तर धरि शिक्षाक माध्यम बांग्ला छल, आ कॉलेज आ विश्वविद्यालयमे ई मात्र अंग्रेजी छल। ई बहुभाषिक पृष्ठभूमि हमर साहित्यिक प्रवृत्तिकँ पारिभाषित केलक। लेखकक रूपमे मैथिलीमे हमर किछु कविताक

पोथी आ एगारहटा नाटक प्रकाशित अछि। हमर ई संग्रह मैथिलीमे २००५ मे प्रकाशित कविता संग्रह ‘‘मध्यमपुरुष एकवचन’’ क अनुवाद छी।

बांग्लामे हमर एकटा कविता संग्रह, एकटा बाल-पद्यक पोथी आ सम्पादित साहित्यिक निबन्ध सभक संग्रह प्रकाशित अछि।

साहित्यिक अनुवादकक रूपमे हमरा लेल सभसँ संतोषप्रद काज रहल अछि अनुकृति (१९९९)- जे मैथिलीमे १९५० सँ लिखल उत्कृष्ट कविता सभक बांग्लामे अनुवाद अछि; आ १९९७ मे प्रकाशित रवीन्द्रनाथक बाल साहित्य। हमर मैथिलीसँ-बांग्ला-अंग्रेजी आ रस्तामे किछु पगक हिन्दीक यात्रा हमर लेखनमे विषय-वस्तु आ शिल्पक अभिवृद्धि केने अछि। हम विभिन्न भाषामे विभिन्न विषयपर लिखै छी, आ कविताकेँ छोड़ि ओ आन विधामे सेहो भिन्न अछि, मैथिलीमे नाटक, बांग्लामे साहित्यिक आलोचना, अंग्रेजीमे अनुवादपर निबन्ध आ हिन्दीमे भाषाक समाजशास्त्रपर लिखने छी।

II

से हम मोटामोटी तीनटा मूलभूत काज करै छी, आ अहिना हम अपनाकेँ ताकऽ चाहब: एकटा अमहत्वपूर्ण लेखक, कवितासँ निबन्ध धरि लिखैत, एकटा अनुवादक (ओतेक नीक नै, नै जानि आन कोना राखै छथि)- कएकटा भाषासँ आ कएकटा भाषामे अबैत जाइत रहनिहार, मुदा मुख्य रूपेँ अंग्रेजी, मैथिली, बांग्ला आ हिन्दी- अही क्रममे, आ एकटा भाषा विज्ञानी जे भाषाक संरचनात्मक आ सामाजिक दुनू क्षेत्रमे विशेषज्ञता प्राप्त केने अछि। ई ओना पाठक, शिक्षक आ नियोजकक रोल अछि।

लेखकक रूपमे हमर प्रारम्भिक काज, लगैए अपन व्यक्तित्वकेँ झाँपब रहल अछि। हम जखन कहियो ऐमे सँ कोनो भाषामे लिखै

छी तँ हम ओइ सभ चिन्हासीकेँ मेटेबाक प्रयास करै छी जे हमर पेशा वा बहुलतारूपी- हमर उमेर वा शारीरिक निशान सेहो जे हमर खाढ़ीक रुचिक परिचए दिअए- उपस्थितिकेँ देखबैत हुअए। ई दोसर गप जे किछु चेन्हासी अखनो देखाइत हुअए वा ताकल जा सकैत हुअए। तँ ई आश्चर्यक गप नै जे हम एकटा उपनाम मैथिलीमे राखलौं। हम ओहेन लेखक सभकेँ देखने छी आ जनै छी जे अपनाकेँ कियो आर वा किछु आर देखबै छथि, आ हम विश्वस्त छी जे हमरा सभमे सभक लग तकर कोनो ने कोनो कथा, लेखक सभक विषयमे, अछि जिनकर खेल स्वयंकेँ *दोसर* केनाइ अछि। एकरा कएक ढंगसँ कएल जाइए। किछु लोक कलछप्पन द्वारा अपन स्थान पारिभाषित करै छथि। किछु गोटे फ्रेमक निधारणमे काँट-छाँट करै छथि, जइमे टेक्स्ट फिट कएल जाइत अछि। किछु चक्षु-युगलकेँ नुकेबाक प्रयास करै छथि (समर्थकक वा कोनो कविता वा वृत्तांतक लोकप्रसिद्ध “हम”), जकर माध्यमसँ पाठकसँ घटना सभक अनावरणकेँ देखबाक अनुरोध कएल जाइत अछि। दोसर तरहक लोक सार्वजनिक बयान दै छथि, जकर माध्यमसँ समकालीन वा पुरानकेँ कूड़ा-करकट लेखक कहल जाइत अछि, वा सभ आलोचक आ शैक्षिक आलोचनाक हँसी उड़बै छथि। हम एकरा एकटा खेल बुझै छी जे सभ कियो खेलाइए। किछु गोटे ऐ खेलकेँ सोझाँ-सोझी खेलाइ छथि तँ किछु गोटे एकरा कएक विधियेँ नुका कऽ खेलाइ छथि। लेखकक रूपमे अपना लेल हमर जवाब अपन “हम” केँ पृष्ठभूमिमे ढकेलनाइ रहल अछि, आ मनोभाव, जोड़ आ तकर घर्षनाक सामाजिक भाष्यकेँ केन्द्रबिन्दुमे राखब रहल अछि। दोसर तरहेँ बुझू जे ई अपन व्यक्तिगत प्रत्यान्तकेँ प्रथम पुरुष एकवचनसँ तृतीय पुरुष एकवचन केनाइ अछि, “तोरा”सँ गप करबा

लेल- हमर *मध्यम पुरुष एकवचन*।

अनुवादकक रूपमे, हम स्वयंकेँ केन्द्रबिन्दुमे राखऽ चाहै छी, आ सभसँ आगाँ सीट लेबा लेल प्रयास करै छी आ लै छी। ओना पाठ्यपुस्तक सन अनुवाद हमरा सभकेँ अपन गौण उपस्थिति रखनाइ सिखबैए, जइसँ रचनाक मूल लेखककेँ अपना द्वारा कएल प्रक्रियासँ रेखांकित कएल जा सकए, ऐ क्रियाकलापक प्रयोक्ताक रूपमे हमर व्यवहार बराबड़ीबला रहैए- स्वतंत्रता लेनाइ जँ तकर पलखति छै, जतऽ आवश्यक होइ, कोन सभकेँ सीनाइ वा मरम्मति केनाइ, आ नीकसँ चुनल वस्त्रक नीचाँ चिप्पी लगेनाइ जतऽ ई छोड़नाइ हमरासँ सम्भव नै होइए। ऐ क्रियाकलापमे लागल लोक, जे बहुत ज्ञानी छथि, सदिखन हमरा चेतौनी दैत रहला जे हम मात्र कोनो पाठ केर, बेशीसँ बेशी, प्राप्तकर्ता छी, पाठ केर लेखकक कथोपकथन करैबला। लेखक, अपन स्पष्ट वा सचर पेरैय्या सन प्रयाससँ ओकर स्वरकेँ दबबैत, हमरा कहल गेल, केँ ओकर प्रथम पुरुषक भव्य उपस्थिति देखेबाक अवसर देबाक चाही, जे सभ शब्दपर अंकित अछि, जे ओकर पाठ केर चरित्र बाजैए वा सभटा मोड़ जे पाठ लैए।

ई सत्य अछि जे लेखक अपन पाठकसँ अपन पाठ द्वारा कथोपकथन करैए, ओइसँ एक प्रकारक प्रथम आ द्वितीय पुरुषक युग्मीय सम्बन्ध बनैए। मुदा जखन हम अनुवादक क्षेत्रमे अपनाकेँ भिजेलौं, हमरा कहल गेल जे लेखक वा ओकर उद्देश्यकेँ टोकबाक हमरा कोनो अधिकार नै, कारण हम मात्र एकटा पाठक छी। दुर्भाग्यसँ, पाठक रूपेँ सेहो हम सभ लेखक द्वारा लेल निर्णयसँ आहत होइ छी, पाठ केर भीतर जा कऽ जखन कोनो पात्र हमर अपन भऽ जाइए, तखन ओकर अभाग्यसँ हम अधीर भऽ जाइ छी। तेँ ई आश्चर्यजनक नै अछि जे पाठक लेखकक ऐ निर्णय लेल

ओकर समय-स्थानक ज्ञान, पढ़ाइ, पृष्ठभूमि आ विद्वतापर प्रश्न करत। रचनाक क्षणमे, जखन पाठक अपन निष्क्रिय भूमिका छोड़ि अनुवादक-दुभाषियाक रूपमे सक्रिय रचनात्मक भूमिकाक निर्वहण करैए, हम अनुवादक द्वारा निष्क्रिय गुंजायमान-बोर्ड नै रहबाक, असलमे रिपोर्ट भेल घटनासँ बेशी, सुस्पष्ट गुंजाइश देखै छी। ई, हमरा लगैए, ई एकटा शान्त क्रान्ति छिऐ, जे कएकटा अनुवादक पैघ काजमे भेल अछि, जेना-जेना समए बीति रहल अछि। यएह छी जकरा हम द्वितीय पुरुषसँ पहिल पुरुषमे परिवर्तित होइत देखऽ चाहब।

भाषा विज्ञानीक रूपमे, हम किछु भाषायी स्थितिमे काज केलौं जकरा विषयमे काजसँ पूर्व हमरा बेशी नै बुझल छल (लदाखी, अदी वा तेलुगु सेहो), मुदा हमर बेशी काज ओइ भाषा सभपर अछि जकरा विषयमे हमरा बेशी जानकारी अछि, आ किछु परियोजनामे हमर देशज भाषा-भाषीक सहज ज्ञान ई निर्णय लेबामे मुख्य भूमिका निर्वहण करैए जे कोन उपलब्ध समाधान सर्वश्रेष्ठ रहत। जखन कखनो हम बांग्ला, मैथिली आ हिन्दीक, तीनू भाषा जकरा हम प्राकृतिक रूपेँ प्राप्त केलौं, काज केलौं, सभसँ पैघ चुनौती जे भाषा विज्ञानक शास्त्रीय स्कूल कहलक, से छल जे हम पहिने ई जे हम ऐ भाषा सभकेँ बुझै छी, से बिसरि जाइ। ई चुनौती छल जे हमरा अपन व्यक्तिगत सापेक्षता छोड़बाक चाही, आ वस्तुनिष्ठ रूपेँ आ व्याकुलतासँ अपन भाषा दिस देखबाक चाही, से हमरा कहल गेल। भाषा विज्ञानी रूपमे *दोसर* बनब ऐ द्वारे आवश्यक बुझल गेल कारण कथनक बाद कथन, जे बिना मतलबक भऽ सकैए, किछु परिस्थितिमे सम्भावित कथन सभ भऽ सकैए। ओना ई बिनु अर्थक लगैए, हमरा सभकेँ प्राकृतिक भाषा लेल प्रशिक्षित कएल जाइ छल,

हम एकटा आश्चर्यजनक निर्णय देखै छी जतऽ सत्य जीतैए आ असत्य हारैए। जँ हमर भाषायी सहज ज्ञान दोसर सांस्कृतिक स्थलसँ कएकटा कथनकँ मथित करैए, ऐ संरचनात्मक वा कवित्वक फ्रेमक वा रचनाक परिप्रेक्ष्यमे, लोक तृतीय पुरुष सँ प्रथम पुरुषमे बदलैए।

से, हम जइ कोनो रोलमे अबै छी, हमर अपन व्यक्तिगत प्रत्यान्त किछु परिवर्तन द्वारा बदलैए। हमरा बुझल अछि आ विश्वास अछि जे जखन हम अपनो कविताक अनुवाद करै छी, अनुवादकर्म मूल भाषा आ पाठ केर हिंसाकँ जारी रखैए, से सभटा क्रिया व्याकरणक विरुद्ध विद्रोह बुझाइए, तैयो सभटा परिणामात्मक पाठ दोसर व्याकरणक निअम सभक परिणाम भऽ जाइए। एरिक चेफिट्ज (१९९७) *द पोएटिक्स ऑफ इमपीरिअलिज्म* (फिलाडेल्फिया: यूनिवर्सिटी ऑफ पेनसिलवेनिया प्रेस) मे तर्क करै छथि, निअमानुसार अनुवाद ओइ मूल पाठ पर हिंसापूर्ण शल्यचिकित्सा करैए जकरा परिवर्तित कएल जाइए, कारण ओ प्रयास मूल पाठमे अंतर्निहित विचारकँ फेरसँ महत्वपूर्ण रूपमे कहैए जे पूरापूरी बराबर नै अछि। से जखन एकटा संस्कृति दोसराकँ अनूदित करैए, ई मूलकँ बदलि दैए।

कोन सीमा धरि ई परिवर्तन ऐ पोथीक पाठककँ नीक लगतन्हि हमरा नै बुझल अछि। भाषा सभक बीच पुलक काज कऽ रहल संगठन सभमे *कथा* मुख्य संस्था अछि, ओकरा ई सभ गप निश्चित रूपेँ बुझल छै। ई हमरा पुनः आश्वस्त करैए, जखन हम ई मोन पाड़ै छी जे हमर कलाकार मित्र संजय भट्टाचार्य, जे ऐ कविता सभकँ मूल आ अनूदित दुनू रूपमे पढ़लन्हि, कएक सप्ताह अपन स्टूडियोमे लगा कऽ आकर्षक चित्र सभ बनेलन्हि, जे ऐ पोथीकँ मोन राखैबला दृश्य अनुभव सेहो बनबैए।

उदय नारायण सिंह अगस्त २००६

मध्यमपुरुष एकवचन नाम आब विश्व साहित्यमे सेहो लोकप्रिय भेल अछि। पहिने Thou (Second Person Singular) आ You (Second Person Plural) होइ छल मुदा आब You मध्यमपुरुष एकवचन आ बहुवचन दुनू अछि।
सयेद कसुआ एकटा अरब-इजराइली उपन्यासकार छथि। हुनकर हेब्रू उपन्यास २०१० मे आएल जे अंग्रेजीमे मिच गिन्सबर्ग द्वारा २०१२ मे "Second Person Singular -मध्यमपुरुष एकवचन"क रूपमे अनूदित भेल। ऐ उपन्यासमे दूटा प्लॉट अछि जकर कथा आगाँ जा कऽ मिलि जाइए।
दुनू प्लॉट इज्रायलमे रहैबला अरब-इज्राइलीक अछि, जे हिब्रू बजै छथि।
पहिल प्लॉटमे पश्चिम जेरूसलेममे एकटा वकील अछि जे एकटा पुरान पोथी किनैए, टॉल्स्टायक *द क्रुत्जर सोनाटा* (बीथोवेनक क्रुत्जर सोनाटाक नामपर नामकरण) किनैए। *द क्रुत्जर सोनाटाक* नायक ट्रेनमे अपन कथा सुनबैए जे केना ओ अपन पत्नीक एकटा वायलिन वादकक संग अवैध सम्बन्धसँ क्रोधित भऽ हत्या कऽ देने छल, ओकर पत्नी आ ओ वायलिन वादक बीथोवेनक क्रुत्जर सोनाटा संगे बजबै छलथि। *ऐ पोथीपर ओइ समएमे प्रतिबन्ध लगा देल गेल रहै।* वकीलक पत्नी ऐ पोथीक चर्च केने रहथि, कारण ऐ पोथीक चर्चा मनोविज्ञानक फ्रायडपर व्याख्यानमे अधिक काल होइ छल। ओइ पोथीमे वकीलसाहेबकँ अरबीमे हुनकर पत्नीक हाथक लिखल एकटा लेख (प्रेम-पत्र सन) भेटै छन्हि आ ओइ पोथीक पहिल पृष्ठपर ओइ पोथीक पुरान मालिकक नाम लिखल अछि-

योनाथन। ओ योनाथनकेँ सभ काज छोड़ि ताकऽ लगैए।
दोसर प्लॉट अछि आमिर, एकटा सामाजिक कार्यकर्ताक। एकटा नवप्रशिक्षु लैला संगे ओ डान्समे जाइए। ओइ राति आमिर नोकरी छोड़ि एकटा यहूदी योनाथन, जे मानसिकरूपसँ वानस्पतिक अवस्थामे अछि, क देखभालक नोकरी पकड़ैए, योनाथनसँ ओकर चेहरा-मोहरा मिलै छै आ ओम्हर लैला एकटा लेख आमीरक कार्यालमे छोड़ै छथि, जे ओ डान्स हुनका नीक लगलन्हि आ आमिरसँ ओ फोन करैले कहलखिन्ह। आमिर योनाथनक नामपर कला स्कूलमे नाम लिखा लैए आ योनाथनक मरलाक बाद स्वयं योनाथन बनि जाइए।
वकील जखन आमिरकेँ ताकि लैए तखन पता चलै छै जे लैला वकीलक पत्नी छिऐ। आमिर आ लैला दुनू कहैए जे ओ डान्स वकील आ लैलाक भेँटसँ पहिने भेल छल। वकील संतुष्ट भऽ जाइए। पुस्तकक पुनश्चमे वकील, बादमे, कला स्कूलक स्नातक सभक काज देखैले जाइए, जतऽ ओकरा योनाथन बनल आमिर द्वारा बनाएल एकटा नग्न चित्र देखाइ पड़ै छै जे एन-मेन लैला सन छै!
नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन: *त्वम्, त्वाम्, त्वया, तुभ्यम्, त्वत्, तव, त्वयि* लऽ कऽ आएल अछि नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन- *अहम्, माम्, मया, मह्यम्, मत्, मम, मयि* सँ फराक रूपमे।
बिम्बक विविधता कविताक प्राण बनल अछि, शब्द-शब्दसँ अर्थ निकलत तखने कविताक लिखल जाएब सार्थक हएत, शब्दक भाष्य लेल गद्य विधा तँ अछिये।
विरोध समुद्रसँ मे *तोहर* आ *हमर* बीच समुद्र अछि आ ज्वार सभक टीककेँ धेने छथि वरुणदेव, सोचैत जे प्रेमकेँ जीतऽ देता आकि समुद्रकेँ। पड़ल छथि सोचमे, कोनो निर्णयात्मक स्थिति नै

अछि एतऽ, पड़ल छथि सोचमे, माने ईहो ठीक ओहो ठीक मुदा जीतत एक्केटा आ ककरा जीतऽ देब से पकड़ने छथि टीक ज्वारक। ***ऋतु-विशेष, पृथ्वीपर*** मे शब्द लेल जाल अछि आत्मसमर्पण आ से अछि कविता आ से अछि संन्यास? जल बनैए अकास। अकासक बिम्ब, की अछि अकास, अनन्त एकरङाह, आ से जँ जल अछि तँ ओहो भेबे कएल ने अकास। बंजर देशक बरसातिक देव, कारण बरखा-बुन्नी हएत तँ ओ बंजर किए हएत। आ ई देव सिजनल तँ नै छथि- बरसातिक देव जे अकासोकेँ कना सकै छै बेहिसाब! शब्दसँ समझौता। आ तखने चलैए काज। शब्दसँ समझौता भेने अर्थसँ सेहो समझौता कएल जाएत, काज सेहो तखन सापेक्ष रहत। अर्थक खेल शब्दक खेलसँ हएत। ***तोँ-*** मे वाक्य हकमैत अछि, धीपल हाथकेँ धरैत अछि। अर्थसँ समझौता पछिला कवितामे भेल अछि तँ वाक्य तँ हकमबे करत, कारण शब्देसँ वाक्य बनैत अछि। ***रातुक आ दिनक कथा-*** मे सूतल दुनियाँ केँ छोड़ि बुद्ध बहार होइत छथि घरसँ मुदा तकर विपरीत कविक प्रयाण कविताक भीतर होइत अछि। ***चक्रान्त-*** मे अकासमे हेलैत अक्षर लहराबैए आगिक प्रवाह। अक्षरसँ शब्द, शब्दसँ वाक्य। घी नै अक्षर लहराबैए आगि, शब्द करैए समझौता आ वाक्य अछि हकमैत। ***दमयंतीकेँ उपदेश-*** मे गाछ-बिरीछकेँ सेहो बुझल छै जे कविताक आगमन केना होइत अछि। दमयन्ती .. नै पार करू बोन। आ से भेने सभ टा गाछ लिखत दमयन्तीकेँ लऽ कऽ पहिल कविता। अक्षर, शब्द आ वाक्य, आगि लगबैत, समझौता करैत, हकमैत... दमयन्ती जँ पार कऽ जेती बोन तँ सभटा गाछ दमयन्तीकेँ लऽ कऽ लिखत पहिल कविता कारण ओकरा सभकेँ बुझल छै, कविताक आगमन केना होइ छै। ***प्रश्नावली-*** आ *हमर*

कविता पढ़ि सकै छी? हमर अंतिम दिवस यएह? आ आब कविता बनि गेल तखन ओकरा पढ़बाक खगत, ओकरा पढ़बाक साधांश। ***भीतर उगैत शब्द***- वाक्य पहिने हकमै छल आब वाक्य भसिआइए। कवितामे मुदा अबैए सुनल-गमल-बुझल वस्तु आभाषे बनि तँ की। *ई कविता कवियित्री इलारानी सिंहकेँ कवि द्वारा समर्पित छन्हि।* ***जानल-पहिचानल***- शरीरकेँ पन्नाक-पन्ना पढ़ब आ जीवनक लागब जानल-पहिचानल। माने लिखल जाइए पन्नाक पन्ना मुदा एतऽ जीवन बढ़ैए पन्नाक पन्ना, आ जेना-जेना बढ़ैए जीवन ओ लागैए जानल-पहिचानल। ***समार्थपद***- मे नव अमरकोष, नव कविता लिखऽ पड़तन्हि। माने नव कविता लेल नव शब्दावली। आ पहिने नव शब्दावलीक संग्रह, फेर कोनो कविता। ***अंकुर***- मे चारि टा कविताक बीआक मोनमे उगब। एक्के संग चारि-चारि टा कविकेँ बाँटि देने शब्द सम्पदा। शब्दक खेल माने कविता! ***कत्ते बरसक बाद***- नेनपनेमे भगा देल छला, छंदभंग केने छला। आब पैघ भऽ गेल छथि, कतेक काल बीतल, आबो हुनका एगो कविता पढ़ऽ देबन्हि। ***किऐ नहि लिखै छी?***- मे कथी ले ई जिद्द जे लिखबे करी प्रेम पत्र। कारण सभटा तँ हएत अनकर बनाएल अक्षरमे, आ ओइपर चढ़ा कऽ रंग, अर्थ, वस्त्र, व्याकुलता। तखन फुसियाहींक ई जिद्द। ***राजहंस***- कविताक राजहंस। ओकरा कहबै एक बेर उड़बा लेल तोरा संग। ***अन्हेर***- काल्हि रातुक पहर कविता आएल छली आ हेरा गेली गद्यक भीड़मे। ***एक अहीं छी***- *अहाँकेँ* कवितामे एकटा नाम देने छी जे चिड़ै चुनमुन उचरि सकै छल। मुदा *अहाँ* किछु बजिते ने छी। ***पुरातन प्रेम***- पढ़ि सकै छी मन्दाक्रान्ता छन्दक व्यथा। नापि सकै छी शुद्ध धैवत् क पातिव्रृत्य। हमर शोणित चीन्हि गेल अछि जीवन-गणितक बर्बरताकेँ ठीके। ***चाह***- जे हमरा किछु चाही, आ हमरा चाहबे की करी। दऽ सकै छी ह्रस्व, अति

ह्रस्व, ओंकार ऋचा आकार। ***हमर पतिक लेल-१-*** अकासी नोर, हमर अल्हुआकेँ झोरा देलक। ***हमर पतिक लेल-२-*** कोना जुत्ता पएर तरसँ चढ़ि अबै छै माथपर। से जहिया बुझि जाएब तँ भेटि जाएत प्रतिवादक पहिल सबक। ***हमर पतिक लेल-३-*** हमरापर जे कियो लिखत कविता आ हमर चित्तपर व्याकरण तँ कोन आश्चर्य? ***हिसाब-*** पाँच टा शब्द हिरिया दै छै झौलीकेँ भोरमे बाउग करऽ जाइ काल। साँझ धरि बचलै नै एकोटा शब्द हिरियाक करेजपर रखबा लेल आ तखन बिनु शब्दक हिरिया कोना खोलत करेज। ***आत्मकथन-*** मदारी पढ़ैत हमरे कविता आ हम फराक डाँड़मे रस्सी पहिरने। बड़ड गद्यमय जीवन! आ पतंजलि आ हेमचन्द्र द्वारा कविकेँ दबारब बुझाएब *मध्यमपुरुष एकवचन*। लक्ष्य विहीन आ अहाँ मध्यमे मात्र एकवचन। ***अहीं सँ प्रेम, घृणा अहीं सँ-*** प्रेम करै छी, मुदा घृणा आर बेशी। ***कनी टा जगह छोड़ि दियह-*** जगह चाही, कारण तीनटा पएर कविक, एककेँ पशुतासँ मढ़ने छी, दोसरकाक नोकमे अछि रोशनाइ सुखाएल आ तेसर नकली हृदए। जँ चाही हमरे सन कवि तँ कनेक जगह छोड़ि दिअ। ***भय-१-*** हमरा पोसबा लेल सेहो खरचा, हमर चिता सजेबा लेल सेहो तरद्दुत! ***भय-२-*** आबि गेल चलक ऐब। आब अदन्त नै रहलौं- दाँतक जोड़ा आबि गेल अछि! ***नामकरण-*** जंगलकेँ उपवन आ घास-फूसकेँ दूर्वाक्षत कहने आबि गेल मंत्रक उच्चारण अपने। नाम हमर दुष्यन्त आ अहाँक शकुन्तला भेने कण्व आ मृगशिशुक फिकिर लागल रहत। नामसँ, शब्दसँ स्वभाव जन्म लैत अछि। ***आजुक कवि, बड़ उच्छृंखल कवि-*** आबि रहल छथि कविः कवी कवयः- धुन आधुनिक। कविता केँ जे करता छंदित, बंधित आ वंदित। ***अहाँ नहि बजलहुँ किछु-*** मरियो कऽ जमीन तर नै जाएब, जरब झरकब आ आगिमे भणब अपन

गीत। हम सूर्यवंशी राजपूत, हमर अस्त्र अछि शब्द अर्थ स्वर लिपि। ***अपन कविता सुनाउ!-*** अहाँ अपन पुरातन प्रेमी माने हमरा लऽ गेलौं ओइ नवका मकानमे पहाड़क शिखरपर! अंतिम मिलन भेल चानक गह्वरमे। मुदा हम सुनऽ चाहै छी कएक टा कविता, अहाँसँ अहाँक भाषामे, जे अखन हमरो भाषा अछि। ***जीवनी-*** रंगमंचक पहिल पृष्ठ, हेराशिम लेबेडफपर एकटा पूरा पन्ना कीड़ा चाटि लेलक? इतिहास शुरू होइछ गोडसेक आविर्भाव आ *हमर* जन्मक बादे? अजन्मा वा अज्ञात् अनामा क्यो कवि। तावत् कविते ध्यान रखती, बतेती जीवन-कथा! ***मध्यमपुरुष एकवचन-*** ऐ संग्रहक दोसर टाइटल कविता, पहिलमे टाइटिलमे नै वरन् कविताक बीचमे *मध्यमपुरुष एकवचन* आएल छल। देशक ऋणक पहाड़, भ्रष्ट नियुक्ति.... लिखू नव्यन्याय-अन्याय, लिखू वैशेषिकक ढेरी, बिसरू धन-व्याकरण, मध्यमपुरुष एकवचन अहीं तँ छी मुदा..
आ ई मध्यमपुरुष एकवचन एक्के संग ढेर रास बिम्बक संग आएल अछि।

मध्यमपुरुष एकवचन भेल सम्बोधित पुरुष वा महिला जे असगर हुअए। नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन उत्तर आधुनिक समाजमे रचित अछि जतऽ अक्षर-शब्दक जाल, वाक्यक विन्यास सजाओल जाइ छै, जतऽ शब्द बदलने, पर्याय बदलने सूर्य ताप देमऽ लगै छै।

मैथिलक वर्तमान समस्या

सर्वहारा मैथिल संस्कृति एकटा विप्लवक दौरसँ चलि रहल अछि। माइग्रेशन एकटा नीक गप होइत अछि मुदा जइ संस्कृतिमे एक पीढ़ीमे गामक गाम सुन्न भऽ गेल ओइमे माइग्रेशन एकटा अभिशाप बनि आएल अछि। मैथिल संस्कृतिक बीस प्रतिशत भाग नेपालमे आ अस्सी प्रतिशत भाग भारतमे पड़ैत अछि। आ ऐ माइग्रेसनसँ एतए आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक आ सांस्कृतिक संकट उत्पन्न भऽ गेल अछि।

कारण: १९६७ ई. क अकाल आ तकर बादक कएक सालक शिथिल प्रशासन आ फेर १९८७ ई.क बाढ़ि आ तकर बादक कएक

सालक शिथिल प्रशासन ई सभ मिलि कऽ एकटा आर्थिक संकट उत्पन्न केलक जइसँ माइग्रेशन अपन विकट रूपमे सोझाँ आएल आ एकटा सांस्कृतिक संकट उत्पन्न भेल। आर्थिक स्थिति खराप भेने जातिगत कट्टरता बढ़िते अछि। आ ऐ संकट लेल आ एकरासँ निकलबाक लेल मिथिलाक संस्कृतिमे बहुत रास सहायक आ विरोधी तत्व सेहो उपलब्ध अछि।

शिक्षा, जाति-पाति आ स्त्रीक दशा: जातिक भीतरक स्तरीकरण, दू जातिक बीचमे मतभेद, बहु-विवाह, बाल-विवाह, बिकौआ विवाह। बाल-विवाहक विरोध आ विधवा विवाहक पक्षमे कोनो सांकेतिक आन्दोलन धरि नै भेल। शूद्र कवि ऐलूष वैदिक ऋचा लिखलन्हि तँ ओ समाज एतेक सुदृढ़ छल जे शुद्दक गण द्वारा एलेक्जेन्डरकँ कड़गर विरोध सहए पड़लै। मिथिलाक सन्दर्भमे सेहो जखन अपन शिल्पी लोकनि आ सभटा तथाकथित समाजक निम्न स्तरक लोक सुदृढ़ छल तखन जनकक नामकरण जन सँ भेल आ फेर सिमरौनागढ़, पजेबागढ़, बलिराजगढ़, असुरगढ़ किला, जयनगर किला, नन्दनगढ़, कटरागढ़, नौलागढ़, मंगलगढ़, कीचकगढ़, बेनूगढ़, वरिजनगढ़, आदिक एकटा शृंखला मिथिलाक स्थापत्य कलाक रूपमे उद्घाटित भेल। आ ई किला सभ शत्रुकेँ मथए बला मिथिलाक नामकरणक अनुरूप रहल। बौद्ध खोह, ताराक मूर्ति आदि शिल्प कला सेहो उपस्थित अछि। मुदा ई कट्टरता बढ़ैत गेल तँ आइ मिथिलामे स्थापत्यक नामपर उपलब्धि सेहो शून्य भऽ गेल। आर्थिक स्थिति एहन भऽ गेल जे एक साँझ उपास रहऽ लागल। माइग्रेशन भुखमरी रोकलक मुदा किछु मूल्यपर। तहिना मैत्रेयीसन विदुषी सहस्त्राब्दी भरि विलुप्त रहली से जातिगत कट्टरता (जाति मध्य आन्तरिक अतरीकरण आ दू जाति मध्य- दुनु प्रकारक) कारणसँ। शिक्षाक ह्रास तँ तेहेन भेल जे षड दर्शनमे चारि टा दर्शन

मिथिलासँ निकलल मुदा आइ गामक गाम मैट्रिक परीक्षामे पास नै केनिहारसँ भरल अछि।

बाढ़ि आ अर्थव्यवस्था: मिथिलाक धरती बाढ़िक विभीषिकासँ सेहो जुझैत रहल अछि। नेपालक मिथिलांचलक संग बिहारक मिथिलांचलकेँ तहस नहस करैत अछि।

मैथिली भाषा: मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक आधारपर मैथिली सेवी संस्था सभ जे विद्यापति पर्व आ संस्थाक निर्माण आ पुरस्कारक वितरण कऽ रहल छथि ओइमे गएर मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक प्रवेश सीमित अछि मुदा एम्हर ओ बढ़ि रहल अछि। आ ई मैथिलीक लेल एकटा शुभ लक्षण अछि। साहित्यमे सेहो गएर मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ लेखक आ पाठक बढ़ल छथि। मीडिया आ शिक्षा व्यवस्था ऐ आधुनिक इन्फॉरमेशन सोसाइटीमे अपन हस्तक्षेपसँ मैथिली भाषा आ मैथिल संस्कृति लेल एकटा प्रहार सन अछि मुदा नेपालक एफ.एम. रेडियो स्टेशन सभ ऐ प्रहारकेँ सीमित रूपमे रोकलक अछि। बाल साहित्यक निर्माण सेहो बढ़ल अछि। अन्तर्जाल सेहो एकभगाह मैथिली साहित्यमे हस्तक्षेप केलक अछि।

उपाय की हुअए ? स्थानिक विशेषताक आधारपर स्त्री-शिक्षा, संगणक शिक्षा आ व्यवसाय आधारित शिक्षा देल जाए। प्राथमिक शिक्षाक माध्यम मिथिला भरिमे मैथिली भाषा द्वारा देल जाए। बाढिक समस्याक समाधान हुअए।

दिल्ली अछि दूर एखनो ! निम्न बिन्दुपर दिल्लीमे केन्द्र सरकारपर दवाब बनाएब। स्कूल कॉलेजमे गर्मी तातिलक बदलामे बाढ़िक समए छुट्टी देबामे कोन हर्ज अछि, ई निर्णय कोन तरहेँ कठिन अछि? सी.बी एस.ई आ आइ.सी.एस.ई. तँ छोड़ू बिहार बोर्ड धरि ई नै कऽ

सकल अछि। स्थानिक विशेषताक आधारपर स्त्री-शिक्षा, संगणक शिक्षा आ व्यवसाय आधारित शिक्षा आ प्राथमिक शिक्षाक माध्यम मिथिला भरिमे मैथिली भाषा द्वारा देल जाए। बैरेज बनबाक कालावधियेमे पक्की नहरि धरातलक स्लोपक अनुसारे बनाओल जाए। पक्की बान्हकेँ मोटोरेबल बनाओल जाए, बान्हक दुनू कात पर्याप्त गाछ-वृक्ष लगाओल जाए। बिहारमे सड़क परियोजना जेना स्वप्नक सत्य हुअए सन देखा पड़ि रहल अछि, तहिना सभ विघ्न-बाधा हटा कऽ, युद्ध-स्तरपर ऐ सभपर काज शुरू कएल जाए।

मिथिलासँ पड़ाइन

मिथिलामे बाहरी लोकक आगमन आ मिथिलासँ दूर देशमे पड़ाइन, ई दुनू घटना निरंतर होइत रहल अछि। मुदा आइ-काल्हिक पड़ाइन ऐ अर्थें विकट रूप लऽ लेने अछि कारण विगत तीस सालक अवधिमे भेल पड़ाइन मिथिलाक गामकेँ खाली कऽ देलक।

१९८१ ई. मे पटनापर बनल महात्मा गाँधी सेतु आ पटना दरभंगा डीलक्स कोच सभक पाँती मिथिलावासीक हेँजक–हेँज बाहर बहरेबामे योगदान केलक। तत्कालीन सरकार सभक राजनैतिक आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक, ऐ सभ क्षेत्रमे विफलता, एकटा आधार तँ बनबे कएल, भारतक स्वतंत्रताक बाद बिहार स्थित मिथिला आ नेपाल स्थित मैथिली भाषी क्षेत्रक बीचमे

एकटा विभाजक रेखा सेहो खिचा गेल। १९६० ई. मे बनल कमला बान्ह आ एखन धरि अपूर्ण कोसी परियोजना मिथिलाक ग्रामीण आर्थिक आधारकेँ तोड़ि कऽ राखि देलक। प्राचीन कालक पड़ाइन आ आइ काल्हिक पलायन मध्य एकटा मूल अंतर सेहो अछि। मिथिलाक मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ अपन विद्वत्ताक प्रदर्शन, पठन-पाठन आ दोसर राजाक दरबारमे जीविकोपार्जन निमित्त प्राचीन कालेसँ जाइ छला, तँ गएर मैथिल ब्राह्मण–कर्ण कायस्थ जाति वाणिज्य, अंगरक्षा आदि कार्य लेल दूर देशक यात्रा करै छला। प्राचीन कालमे मोरंग आ पछाति भदोही मिथिलाक बोनिहारक श्रम किनबाक केन्द्र बनल, मुदा ऐमे मोरंग नेपालक मिथिलाञ्चलमे पड़ैत अछि मुदा एकरा प्रवास ऐ लेल कहल जाए लागल कारण ओतुक्का शासक गएर मैथिल गोरखा भऽ गेल छला।

पड़ाइनक विभिन्न स्वरूपः- पड़ाइन एकटा ऐतिहासिक प्रक्रियाक अंग अछि, अहाँक क्षेत्रक भौगोलिक स्थिति कोन देशमे अहाँकेँ पटकि देने अछि, ई तइपर सेहो निर्भर अछि। से मोरंग लग रहलोसँ भारतक मिथिलाञ्चलक वासी लेल पछाति कम लोकप्रिय भेल कारण ओ दोसर देशमे अवस्थित भेलाक कारण विभिन्न कारणसँ पड़ाइन लेल अनुपयुक्त भऽ गेल। कोलकाता भारतक स्वतंत्रताक बाद निकटवर्त्ती मेट्रो नगर रहए से लोक ओइ नगरमे खूब पड़ाइन केलन्हि मुदा जखन विभिन्न राजनैतिक–आर्थिक-नीतिक संकीर्णताक कारणसँ बंगालक उद्योग–धंधा चौपट भऽ गेल, शैक्षिक केन्द्रक रूपमे ओकर महत्व कम भेल तखन पड़ाइनक केन्द्र मुम्बइ आ दिल्ली भऽ गेल। बोनिहार आब भदोही आ मोरंग नै वरन पंजाब–

हरियाणा आ पश्चिमी उत्तर-प्रदेश जाइ छथि आ बनिजार बाहरसँ मिथिलामे आबि कऽ भरि गेल छथि। दरभंगा राजक गलत आर्थिक नीतिक कारण आरा-छपराक लोक सभ भूमि आ कामतक अधिपति कोना भऽ गेला से जगदीश प्रसाद मण्डल जीक साहित्यमे पूर्ण रूपसँ देखार भेल अछि। १९३६-३७ मे बर्मासँ भोजपुर बक्सरक लोक पूर्णियाँ, अररियामे भागि कऽ एला, डुमराँवक हरि बाबू हिनका सभकँ बर्मामे बसेने छला आ बर्माक भारतसँ अलग भेलाक बाद ओ शरणार्थी बनि ऐ क्षेत्रमे आबि गेला। कतेको बर्मा टोल ऐ क्षेत्र सभमे अहाँकँ भेटि जाएत। ऐ क्षेत्रमे कृषि–वाणिज्यपर हिनको सभक दखल भेलन्हि। मिथिलामे भेल पलायनमे १९७१ ई. मे बांग्लादेशक निर्माणक लगाति ओतुक्का हिन्दूक किशनगंजमे आ बादमे ओतुक्का मुस्लिमक पूर्णियाँ-किशनगंजमे आगमन भेल। बाहर भेल पलायनक विरूद्ध भीतर आएल ई पलायन मिथिलाक बोली–वाणी सभ वस्तुकँ प्रभावित केलक। जाति–धर्म आधारित विवाह मुस्लिम, राजपूत आ भूमिहार मध्य मिथिलाक भौगोलिक परिधिसँ बाहर हुअए लागल तइसँ सेहो बोली–वाणीक अंतर दृष्टिगोचर भेल।

पड़ाइन नीक आकि अधला- पड़ाइन जे बाहर जाइबला आ भीतर आबैबला, दुनू तरहक अछि, कँ अहाँ कोनो तरहेँ नै रोकि सकै छी। मुदा एक खाढ़ी मध्य भेल ई विकट पड़ाइन मूल मैथिल बोली –वाणीक पड़ाइनक विकट समस्याकँ जन्म देलक। भुखमरी जे बाढ़ि-अकाल आनलक, तकरासँ तँ मुक्ति भेटल मुदा ई सांस्कृतिक अकाल सेहो आनलक। गामपर बोझ घटल, लोककँ बटाइ लेल जमीन नै भेटै छलै, आब से भेटै छै, मुदा तकर विपरीत मिथिलाक भीतर शैक्षिक केन्द्रक पूर्ण समापन भऽ गेल, बाहरी बनिजार एतुक्का

आर्थिक बाजारपर कब्जा कऽ लेलन्हि। विशालकाय सड़क परियोजना, आ सूचना प्रौद्योगिकी, टेलीविजन, अखबार, पत्रिका आदि ततेक पूँजी केन्द्रित भऽ गेल जे ई स्थानीय वणिकक औकातिक बाहरक वस्तु भऽ गेल। क्षेत्रक राज्य–सभा आ विधान परिषदमे जखन बाहरी पूँजीपति प्रवेश कऽ गेल छथि तखन आर कथूक चर्च की करी?

पड़ाइनक निदानः- *हा पड़ाइन* केने काज नै चलत। जेना इस्त्रायलक प्रवासी ओकर शक्ति–सिद्ध भेल छथि तहिना मैथिल प्रवासी सेहो मिथिलाक लेल, एतुक्का भाषा–संस्कृति–साहित्य आ अर्थनीति लेल सहायक सिद्ध हेता। मिथिला राज्यक मांगमे बीचक स्थिति, जेना बिहारक अंतर्गत मैथिली भाषी क्षेत्रमे प्राथमिक शिक्षाक माध्यम मैथिली हुअए, मैथिलीक रेडियो स्टेशन, टी.वी. चैनल लेल कम लाइसेंस फीस राखल जाए, मैथिली पत्र–पत्रिकाकेँ सरकारी विज्ञापन भेटए आदि मांग–आदि सेहो धोँसियेबाक चाही। राज्य जहिया भेटत तहिया भेटत उपरका २-३ बिन्दु जे भेटि जाएत तँ एकटा उपलब्धि हएत आ लोकमे तखने जागृति आएत तखने ओ मिथिला राज्य, एकर आर्थिक–शैक्षिक राजनैतिक स्थिति विचार कऽ सकता आ आंदोलनक भाग बनि सकता।

मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव

उपन्यासक आरम्भ: वाणभट्टक कादम्बरी राजा शूद्रकक विदिशा नगरीक वर्णनसँ प्रारम्भ होइत अछि। एकटा चाण्डाल अतीव सुन्दरी कन्या वैशम्पायन नाम्ना ज्ञानी सुग्गाकेँ लेने दरबार अबैत अछि आ प्रारम्भ होइत अछि सुग्गाक खिस्सा। चांडालक बस्ती पक्कणमे कियो भिखमंगा नै, कियो चोर नै, ओतुक्का राजा व्याघ्रदेव स्वयं रस्सी बँटै छथि। संस्कृतक ऐ उपन्यास नामसँ मराठीमे उपन्यासकेँ *कादम्बरी* कहल जाइत अछि। उपन्यासक बुर्जुआ प्रारम्भक अछैत ऐमे एतेक जटिलता होइत अछि जे ऐमे प्रतिभाक नीक जकाँ परीक्षण होइत अछि। उपन्यास विधाक बुर्जुआ आरम्भक कारण सर्वांतीजक *डॉन क्विक्जोट*, जे सत्रहम शताब्दीक प्रारम्भमे आबि गेल रहए, केर अछैत उपन्यास विधा उन्नैसम शताब्दीक आगमनसँ मात्र किछु समय

पूर्व गम्भीर स्वरूप प्राप्त कऽ सकल। उपन्यासमे वाद-विवाद-सम्वादसँ उत्पन्न होइत अछि निबन्ध, युवक-युवतीक चरित्र अनैत अछि प्रेमाख्यान, लोक आ भूगोल दैत अछि वर्णन इतिहासक, आ तखन नीक- खराप चरित्रक कथा सोझाँ अबैत अछि। कखनो पाठककेँ ई हँसबैत अछि, कखनो ओकरा उपदेश दैत अछि। मार्क्सवाद उपन्यासक सामाजिक यथार्थक ओकालति करैत अछि। ऐ सभक संग जीवनानुभव सेहो एक पक्षक होइत अछि आ तखन एतऽ दबाएल इच्छाक तृप्तिक लेल लेखक एकटा संसारक रचना करै छथि जइमे पाठक यथार्थ आ कल्पनाक बीचक आड़ि-धूरपर चलैत अछि।

अंग्रेजी उपन्यासक वाद: उत्तर आधुनिक, अस्तित्ववादी, मानवतावादी, ई सभ विचारधारा दर्शनशास्त्रक विचारधारा थिक। पहिने दर्शनमे विज्ञान, इतिहास, समाज-राजनीति, अर्थशास्त्र, कला-विज्ञान आ भाषा सम्मिलित रहै छल। मुदा जेना-जेना विज्ञान आ कलाक शाखा सभ विशिष्टता प्राप्त करैत गेल, विशेष कऽ विज्ञान, तँ दर्शनमे गणित आ विज्ञान मैथेमेटिकल लॉजिक धरि सीमित रहि गेल। दार्शनिक आगमन आ निगमनक अध्ययन प्रणाली, विश्लेषणात्मक प्रणाली दिस बढ़ल। मार्क्स जे दुनिया भरिक गरीबक लेल एकटा दैवीय हस्तक्षेपक समान छला, द्वन्द्वात्मक प्रणालीकेँ अपन व्याख्याक आधार बनेलन्हि।

अंगेजी उपन्यासक आरम्भ आ विकास: अंग्रेजी उपन्यास *पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस*- लेखक कथाक मुख्यपात्रक यात्राक आ ओइ यात्रा मध्य आएल संघर्ष आ उत्साहक वर्णन करै छथि।
डेनियल डिफो अपन *रॉबिन्सन क्रूसो* उपन्यासमे मुख्यपात्रक

साहसिक समुद्र यात्राक वर्णन करै छथि।

सैमुअल रिचर्डसनक *पेमेला* अंग्रेजी उपन्यासकेँ पारिभाषिक स्वरूप देलक।

एफ्रा बेनक *ओरूनोको* उपन्यासक नायक कारी रंगक दास अछि तँ हुनक *लव लैटर्स बिटवीन ए नोबल मैन एंड हिज सिस्टर* मे सामंतक प्रेम कथाक वर्णन अछि।

हैनरी फिल्डिंग *टॉम जोन्स* मे सामंतवादक आलोचना केने छथि, समाजक विकृतिक चित्रण केने छथि।

हेनरी जेम्स *द पोट्रेट ऑफ ए लेडी* मे कलात्मक प्रस्तुति लेल जिनगीक उपेक्षा करै छथि।

रिचर्डसन *कलैरिस* मे मनुष्यक मनोविज्ञानक तहमे जाइ छथि।

जोजफ कोनरेडक *द शैडोलाइन* क पात्र समाज आ जीवनक प्रति दृष्टिकोणक एक पक्षीय हेबापर सोचै छथि।

डी.एच.लॉरेन्सक *लेडी चैटर्लीज लवर* क पात्र विकृति लेल संस्कृति आधारित सभ्यताकेँ दोषी कहै छथि।

रुडयार्ड किपलिंगक उपन्यास *किम* यूरोपी साम्राज्यवाद लेल एकटा बहन्ना ताकि रहल अछि, यूरोपी सभ्यताकेँ ओ उच्च मानै छथि।

ई.एम.फोर्स्टरक *ए पैसेज टू इंडिया* मुदा शासक आ शासितक सम्बन्धकेँ व्याख्यायित करैत अछि।

मैथिली उपन्यासक आरम्भ आ विकास: हरिमोहन झाक कन्यादान आ द्विरागमन मिथिलाक बहुत रास सामाजिक व्यवस्थाकेँ सोझाँ अनैत अछि, महिला शिक्षा आ अंध-पाश्चात्यकरणक सेहो हास्य रसमे चित्रण आधुनिक अंग्रेजी उपन्यासक रीतिएँ करै छथि।

नागार्जुन-यात्रीक हिन्दी-मैथिली उपन्यास *बलचनमा* यादव जातिक बलचनमाक आत्मकथ्यक रूपमे अछि। आर्थिक समस्या एकर मूल विषए छै। बलचनमा कोना एकटा टहल करैबलासँ आगू जाइत

किसानक हक लेल जान दैत अछि ताधरिक कथा। कांग्रेस आदि पार्टीक विरुद्ध कम्यूनिस्ट पार्टीक प्रति स्पष्ट झुकाव यात्रीजीक रहल छन्हि। *पारो*, बलचनमाक आर्थिक समस्याक विपरीत सामाजिक लक्ष्य तकैत अछि। किछु दिनुका बाद ऐ उपन्यासकेँ लोक असली फिक्शनक रूपमे लेता कारण अगिला पीढ़ीकेँ विश्वास नै हेतै जे एहनो कोनो क्रूर व्यवस्था सभ मानव जातिक मध्य होइत हेतै। आ तैँ एकर महत्व आर बढ़ि जाइत अछि- ओइ सभ व्यवस्था सभकेँ पेटारमे सुरक्षित रखबाक जिम्मेदारी। मुदा जहिया यात्रीजी ओइ समस्यापर लिखने छला तहिया ओ समस्या रहै आ ई उपन्यास ओइमे सार्थक हस्तक्षेप केने छल।

रमानन्द रेणुक *दूध-फूल* उपन्यास समाजक उपेक्षित वर्गकेँ सोझाँमे रखैत अछि आ कलात्मक उपस्थापन करैत अछि।

ललितक *पृथ्वीपुत्र* सेहो समाजक उपेक्षित वर्गकेँ सोझाँमे रखैत अछि। ई उपन्यास कृषक जीवनक आर्थिक समस्यापर सेहो आंगुर धरैत अछि।

लिली रे क *पटाक्षेप* वामपंथक वर्ग-संघर्षक उत्थान आ फेर ओकर दमनक कथा कहैत अछि आ देशक समस्यासँ साहित्यकार द्वारा स्वयंकेँ तत्काल जोड़बाक मार्ग प्रशस्त करैत अछि।

धूमकेतुक *मोड़ पर* सेहो वामपंथी विचारक आलोकमे सामाजिक-आर्थिक समस्याक कथा फ्लैशबैकमे कहैत अछि।

साकेतानन्दक सर्वस्वान्त बाढ़िक आ सरकारी नीति आ राहतक कथा अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डलक *मौलाइल गाछक फूल* गामक, गामसँ पड़ाइनक आ गलल व्यवस्थाक पुनर्जीवनक लेल समाधानक उपन्यास अछि।

चतुरानन मिश्रक *कला* कलादाइक माध्यमे गलल सामाजिक व्यवस्थापर प्रहार अछि।
शेफालिका वर्माक नागफाँस अंग्रेजक धरतीपर विचरण करैत अछि।
धारा आ सीमांतक मिलन ऐ जिनगीमे कहियो हेतै, कोनो जादू हेतै की?

आ अन्तमे : से जौँ गहींर नजरिसँ देखब तँ लागत जे अंग्रेजी उपन्यासकारक कृति ओइ समएक वाद आ दृष्टिकोणकेँ संग लऽ कऽ चलबाक प्रयास अछि। मुदा सिद्धान्तसँ प्रयोगक क्रममे किछु विशेषता स्वयमेव आबि जाइ छै। तहिना मैथिली उपन्यासक सेहो स्थिति अछि। रमानन्द रेणुक उपन्यास हुअए वा शेफालिका वर्माक, ई तथ्य शिल्पमे स्पष्ट रूपसँ देखि सकै छी। लिली रे अपन कलमक धारसँ जेना अपन लग-पासक घटना, समाज आ राजनीतिक वर्णन करै छथि से अद्भुत तँ अछिये, अंग्रेजी उपन्यास सभसँ एक डेग आगाँ जाइत अछि। ललित, यात्री आ धूमकेतु आर्थिक आ सामाजिक समस्याकेँ सोझाँ रखै छथि, आ ओइ क्रममे कोनो तथ्यकेँ कोनो रूपेँ नुकबै नै छथि। साकेतानन्द बाढ़िक समस्याकेँ सोझाँ रखै छथि। हरिमोहन झा अपन शैलीमे अंग्रेजी साहित्यक धारकेँ बहबै छथि आ नायक द्वारा नायिकाकेँ देल पढ़ाइक सिलेबसमे सेहो ई तथ्य सोझाँ अनै छथि। चतुरानन मिश्र आ जगदीश प्रसाद मंडल कम्यूनिस्ट आन्दोलनसँ जुड़ल छथि, प्रायोगिक रूपमे, पार्टी स्तरपर, मुदा दुनू गोटेक उपन्यासमे, जइ रूपमे यात्री आ धूमकेतु मार्क्सवादक बैशाखी लऽ उपन्यासकेँ ठाढ़ करै छथि, मार्क्सवादक बैशाखी नै लै छथि। मार्क्सवादक असल अर्थ हिनके दुनूक रचनामे भेटत। कतौ पार्टीक नाम वा विचारधाराक चर्च नै मुदा जे असल *डायलेक्टिकल मैटेरियलिज्म* छै तकर पहिचान,

जिनगीक महत्वपर विश्वास, द्वन्द्वात्मक पद्धतिक प्रयोग आ ई तखने सम्भव हएत जखन लेखक दास कैपिटल सहित मार्क्सवादक गहन अध्ययन करत।

मैथिली उपन्यासक भविष्य : सभ जीवित भाषामे सभसँ बेसी रचना उपन्यासक होइ छै मुदा मैथिलीमे सभसँ कम उपन्यास लिखल जाइत अछि। जइ रूपमे अंग्रेजी शिक्षा आ साहित्यक अध्ययन कऽ मैथिली साहित्यमे आएल नव पीढ़ीक संख्या बढ़त, मैथिली साहित्य अपन सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक आ सांस्कृतिक अंतर्दृष्टिक विकास कऽ सकत। वीणा ठाकुरक *भारती*, आशा मिश्रक *उचाट* आ केदारनाथ चौधरीक *चमेली रानी, माहुर* आ *करार* हमर ऐ दृष्टिकोणक पुष्टि करैत अछि।

सिक्किम यात्रा (यात्रा वृत्तान्त)

सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि: राधाकृष्ण चौधरीजीक पोथीक डिजाइनमे हम जखन सिद्ध सरहपादक फोटो देलौं तँ ओकर नीचाँमे लिखल तिब्बती लिपि, जे चीनी लिपिसँ एकदम्मे फराक अछि आ सिक्किमक लेपचा आ लिम्बू (सुब्बाभाषा) सँ लग, दिस अनायास ध्यान आकृष्ट भेल। सिक्किमक राजा चोग्याल बौद्ध छला, ओ सभ आ हुनकर वंशज सभ सिक्किमी कहल जाइ छथि, जेना डेम्जोंगपा, ओ सभ भुटिया भाषा बजै छथि, मुदा जखन भूटान तिब्बत आदिसँ राजा लग भुटिया भाषी सभ एला तँ दुनूमे अन्तर देखाबए लेल

सिक्किमी आ भुटिया ई दू भेद भेल। मोटा-मोटी सिक्किमक लोकसँ गप करब तँ ओ तिब्बती आदि सभ भाषा जे नेपालीक अतिरिक्त अछि, केँ भुटिया कहि दै छथि।
गंगटोकमे भरत सुब्बा कहै छथि जे ओ शुद्ध नेपाली छथि आ सुब्बाभाषा (लिम्बू) लिपि छी, अपन दादाकेँ ओ पढ़ैत देखने छथि मुदा हुनका ई भाषा नै अबै छन्हि। लेपचाक मुदा भाषा आ लिपि दुनू अलग अछि।
दिनेश खरका नेपाली ब्राह्मण छथि, ओ कहै छथि जे सिक्किममे नेपाली पढ़ू, भुटिया पढ़ू वा लेपचा पढ़ू, कोनो रोक नै छै। लेपचा एतुक्का आदिवासी छथि। भुटिया पढ़लासँ पर्यटन विभागमे नोकरी भेटबामे आसानी होइ छै। ओ कहै छथि जे नेपालक नेपाली आ एतुक्का नेपालीमे सेहो अन्तर छै। लड़का-लड़की हम सभ कहै छी मुदा नेपालमे लड़काकेँ बाबू आ लड़कीकेँ नानी कहल जाइत अछि। कान्छा-कान्छी घरक सभसँ छोट लड़का-लड़कीकेँ (बाबू-नानीकेँ) कहल जाइत अछि। उरगेन भुटियाक माता नेपाली छथिन्ह से हुनका भुटिया नीक जकाँ नै अबै छन्हि, ओ सिक्किममे नै रहै छथि, दार्जिलिंगमे रहै छथि जे पश्चिम बंगालमे छै, से ओतुक्का शिक्षा व्यवस्था बांग्ला आ नेपालीक अतिरिक्त दोसर भाषाक विषयमे अनुदार अछि, बिहारे सभ जकाँ जकर शिक्षा व्यवस्था हिन्दीक अतिरिक्त दोसर भाषाक प्रति असहनशील अछि, से भुटिया भाषा एतऽ खतमे बुझू। सिक्किम मुदा ऐ मामिलामे उदार अछि।
छिरिंग पहिने हमरा कहै छथि जे ओ भुटिया (जकरा ओ तिब्बती कहै छथि) बजै छथि, फेर उत्तर सिक्किमक लाचुंगक रस्तामे खेनाइ खाइले एकठाम ओ रुकै छथि, महिला कहै छथि जे ओ तिब्बती छथि। हुनका लग देहरादूनसँ एकटा लामा आएल छथिन्ह जे हमरा तिब्बती लिपि सिखबै छथि। लाचुंगक बगलमे छै लाचेन। आब

छेरिंग याककेँ देखि कऽ असल भेद खोलै छथि। ओ कहै छथि जे भेड़पालककेँ डोंगपा कहल जाइ छै। लाचुंगक जे लोक अछि से लाचुंगपा उपाधि राखै छथि आ ओ बगलक लाचेनक छथि आ तेँ हुनकर नाम छन्हि छेरिंग लाचेनपा। सभ लाचुंगपा डोंगपा नै छथि मुदा बेसी डोंगपा लाचुंगपा उपाधिबला छथि। डेंगजोंगपा लोकनि गंगटोकमे रहै छथि, व्यापार करै छथि। टोक माने ऊँचपर, जेना एकटा जगह छै गणेश टोक। ओ कहै छथि जे भुटिया भाषासँ लाचेनपा आ लाचुंगपाक भाषा अलग होइत अछि। ओ बौद्ध छथि। लाचुंगपा आ लाचेनपा भाषामे शॉर्टकट/ लॉन्गकटक अन्तर अछि। लाचुंगसँ आगाँ *जीरो* धरि सड़क छै जतऽ गाछ-बृच्छ खतम भऽ जाइ छै आ ऑक्सीजनक कमी भऽ जाइ छै, मुदा एतए मइ-आरम्भक जून मास धरि बरफ देखबामे आएत। रस्तामे आ मोनेस्टरी लग सभ ठाम तिब्बती भाषामे मंत्र लिखल “प्रेयर ह्वील” देखबामे आएत। मोनेस्टरी जेबा काल एकटा बाल भिक्षु प्रेयर ह्वील घुमेबासँ मना करै छथि आ कहै छथि जे घुरबा काल एकरा घुमाएल जाइ छै आ सेहो घड़ीक सुइयाक दिशामे। रस्ता सभमे १०८ टा झण्डामे तिब्बती भाषामे मंत्र लिखल भेटत। जँ ई सभटा उज्जर रंगक अछि तँ कोनो मृतकक स्मृतिमे हुनकर परिजन लगेने छथि आ जँ ई सभ विभिन्न रंगक अछि तँ बुझू जे ग्रह शान्ति लेल ई फहराएल गेल अछि। छिरिंग कहै छथि जे जावत झण्डामे लिखल मंत्र नै मेटाइत अछि तावत हवा एकरा नै खसा सकैए, जखन ई मलिच्छ पड़ि जाइए तखने हवा एकरा उड़ा सकैए।

सांगू झील जे नाथूला (अकानैबला कानक दर्रा) क रस्तामे अछि (पूर्व सिक्किम), ओतऽ प्रदीप तमांग याकक संग भेटै छथि, पहाड़क

पाछाँ हुनकर गाम छन्हि। ओ कहै छथि जे तिब्बती आ भुटिया भाषामे अन्तर छै, मुदा समानतो छै। नाथूला चौदह हजार फीटपर अछि आ प्राचीन कालसँ भारत-तिब्बतक बीच व्यापार लेल ऐ दर्राक उपयोग होइत रहल अछि। एतौ जीरो जकाँ ऑक्सीजनक कमी अहाँकेँ बुझा पड़त। ऐ दर्रासँ आइयो तिब्बती व्यापारी रेशम लऽ कऽ शेराथांग गामक शेड लागल हाट-बजार अबै छथि आ एतऽसँ बदलामे बिस्कुट आ डलडा लऽ जाइ छथि।
दिनेश तमांग गंगटोकमे कहै छथि जे ओ नेपाली बौद्ध छथि। मुदा बंगालमे जन्म छन्हि। गोरखालैण्डक मांग नै मानल जाएत से हुनकर कहब छन्हि, कारण से मानलासँ जलपाइगुरीक कान्तापुरी (कामतापुरी) आ कूच बिहारक अलग प्रान्तक मांग सेहो मानऽ पड़तै, ओ ऐ दुनू जगहक भाषाकेँ बांग्लासँ अलग कहै छथि आ ओकरा ‘‘वाया बंगाली’’ (बाहे बंगाली- बंगाली आ बाहे बंगालीमे भाषाक अतिरिक्त शारीरिक गठन सेहो ओ बंगालीसँ भिन्न कहलन्हि, दोसर ओ ईहो कहलन्हि जे सत्य पूछी तँ यएह बाहे बंगाली असली प्रारम्भिक बंगाली छल) कहै छथि।

शब्द विचार

देवनागरीक अतिरिक्त समस्त उत्तर-भारतीय भाषा नेपाल आ दक्षिणमे (तमिलकेँ छोड़ि) सभ भाषा वर्णमालाक रूपमे स्वर आ *क च ट त प* आ *य, र, ल, व, श, स, ह* केर वर्णमालाक उपयोग करैत अछि। *ग्वाङ* हेतु संस्कृतमे दोसर वर्ण छै (छान्दोग्य एकर उच्चारण नै करै छथि मुदा वाजसनेयी खूब करै छथि- जेना छान्दोग्य कहता *सभूमि* तँ वाजसनेयी कहता *सभूमीग्वंङ*),ई ह्रस्व दीर्घ दुनू होइत अछि। सिद्धिरस्तु लेल सेहो कमसँ कम छह प्रकारक वर्ण मिथिलाक्षरमे प्रयुक्त होइत अछि। वैदिक संस्कृतमे उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित (क्रमशः क॑ क॒ क᳚) क उपयोग तँ मराठीमे ळ आ अर्द्ध ऱ् केर सेहो प्रयोग होइत अछि। मैथिलीमे ऽ (बिकारी, जफला वा अवग्रह) केर प्रयोग संस्कृत जकाँ होइत अछि आ आइ काल्हि एकर बदलामे टाइपक सुविधानुसारे द' (दऽ केर बदलामे) एहन प्रयोग सेहो होइत अछि मुदा ई प्रयोग ओइ फॉँटमे एकटा तकनीकी न्यूनताक परिचायक अछि। मुदा आकार केर बाद बिकारीक आवश्यकता नै अछि।

जेना फारसीमे *अलिफ बे से* आ रोमनमे *ए बी सी* होइत अछि तहिना मोटा-मोटी सभ भारतीय भाषामे लिपि भिन्नताक अछैत वर्णमालाक स्वरूप एके रङ अछि।

वर्णमालामे दू प्रकारक वर्ण अछि- स्वर आ व्यंजन। वर्णक संख्या अछि ६४ जइमे २२ टा स्वर आ ४२ टा व्यञ्जन अछि।

पहिने स्वरक वर्णन दै छी- जइ वर्णक उच्चारणमे दोसर वर्णक उच्चारणक अपेक्षा नै रहैत अछि, से भेल स्वर।

स्वरक तीन टा भेद अछि- ह्रस्व, दीर्घ आ प्लुत। जइमे बाजैमे एक मात्राक समए लागए से भेल ह्रस्व, जइमे दू मात्राक समए लागल से भेल दीर्घ आ जइमे तीन मात्राक समए लागल से भेल प्लुत।

मूलभूत स्वर अछि- अ इ उ ऋ लृ

पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा समानाक्षर कहै छला।

दीर्घ मिश्र स्वर अछि- ए ऐ ओ औ

पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा सन्ध्यक्षर कहै छला।

लृ दीर्घ नै होइत अछि आ सन्ध्यक्षर ह्रस्व नै होइत अछि।

अ इ उ ऋ ऐ सभक ह्रस्व, दीर्घ (आ ई ऊ ॠ) आ प्लुत (आ३ ई३ ऊ३ ॠ३) सभ मिला कऽ १२ वर्ण भेल। लृ केर ह्रस्व आ प्लुत दू भेद अछि (लॄ३) तँ २ टा ई भेल। ए ऐ ओ औ ई चारू दीर्घ मिश्रित स्वर अछि आ ऐ चारूक प्लुत रूप सेहो (ए३ ऐ३ ओ३ औ३) होइत अछि, तँ ८ टा ई सेहो भेल। भऽ गेल सभटा मिला कऽ २२ टा स्वर।

ऐ सभटा २२ स्वरक वैदिक रूप तीन तरहक होइत अछि, उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित।

ऊँच भाग जेना तालुसँ उत्पन्न अकारादि वर्ण उदात्त गुणक होइत अछि आ तँ उदात्त कहल जाइत अछि।

नीचाँ भागसँ उत्पन्न स्वर अनुदात्त आ जइ अकारादि स्वरक प्रथम

भागक उच्चारण उदात्त आ दोसर भागक उच्चारण अनुदात्त रूपेँ होइत अछि से भेल स्वरित।

स्वरक दू प्रकार आर अछि, सानुनासिक जेना *अँ* आ निरनुनासिक जेना *अ*।

दत्तेन निर्वृत्तः कूपो दात्तः। दत्त नाम्ना पुरुष द्वारा विपाट्- ब्यास धारक उतरबरिया तट पर बनबाएल, एतऽ इनार भेल दात्त। अत्र प्रत्यान्त भेलासँ *दात्त* आद्युदात्त भेल, अण् प्रत्यायान्त होइत तँ प्रत्यय स्वरसँ अन्तोदात्त होइत। रूपमे भेद नै भेलो पर स्वरमे भेद अछि। ऐ सँ सिद्ध भेल जे सामान्य कृषक वर्ग सेहो शब्दक सस्वर उच्चारण करै छला।

स्वरितकेँ दोसरो रूपमे बुझि सकै छी- जेना ऐमे अन्तिम स्वरक तीव्रस्वरमे पुनरुच्चारण होइत अछि।

आब व्यञ्जन पर आउ।

व्यञ्जन ४२ टा अछि।

क् ख् ग् घ् ङ्

च् छ् ज् झ् ञ्

ट् ठ् ड् ढ् ण्

त् थ् द् ध् न्

प् फ् ब् भ् म्

य् र् ल् व्

श् ष् स्

ह्

य् व् ल् सानुनासिक सेहो होइत अछि, यँ वँ लँ आ निरुनासिक सेहो।

एकर अतिरिक्त दू टा आर व्यञ्जन अछि- अनुस्वार आ विसर्जनीय

वा विसर्ग।
ई दुनूटा स्वरक अनन्तर प्रयुक्त होइत अछि।
विसर्जनीय मूल वर्ण नै अछि, वरन् स् वा र् केर विकार थीक।
विसर्जनीय किछु ध्वनि भेद आ किछु रूप भेदसँ दू प्रकारक अछि- जिह्वामूलीय आ उपध्मानीय। जिह्वामूलीय मात्र क आ ख सँ पूर्व प्रयुक्त होइत अछि, दोसर मात्र प आ फ सँ पूर्व।
अनुस्वार, विसर्जनीय, जिह्वामूलीय आ उपध्मानीयकँ अयोगवाह कहल जाइत अछि।
उपरोक्त वर्ण सभकँ छोड़ि ४ टा आर वर्ण अछि, जकरा यम कहल गेल अछि।
कुँ खुँ गुँ घुँ (यथा- पलिक् क्नी, चख ख्नुतः, अग् ग्निः, घ् घ्नन्ति) पञ्चम वर्ण आगाँ रहलापर पूर्व वर्ण सदृश जे वर्ण बीचमे उच्चारित होइत अछि से यम भेल।
यम सेहो अयोगवाह होइत अछि।
अ आ कवर्ग ह (असंयुक्त) आ विसर्जनीय केर उच्चारण कण्ठमे होइत अछि।
इ ई चवर्ग य श केर उच्चारण तालुमे होइत अछि।
ऋ ॠ टवर्ग र ष केर उच्चारण मूर्धामे होइत अछि।
ऌ तवर्ग ल स केर उच्चारण दाँतसँ होइत अछि।
उ ऊ पवर्ग आ उपध्मानीय केर उच्चारण ओष्ठसँ होइत अछि।
व केर उच्चारण उपरका दाँतसँ अधर ओष्ठ केर सहायतासँ होइत अछि।
ए ऐ केर उच्चारण कण्ठ आ तालुसँ होइत अछि।
ओ औ केर उच्चारण कण्ठ आ ओष्ठसँ होइत अछि।
य र ल व अन्य व्यञ्जन जेकाँ उच्चारणमे जिह्वाक अग्रादि भाग ताल्वादि स्थानकँ पूर्णतया स्पर्श नै करैत अछि। श् ष् स् ह् जकाँ

ऐमे तालु आदि स्थानसँ घर्षण सेहो नै होइत अछि।
क सँ म धरि स्पर्श (वा स्फोटक कारण जिह्वाक अग्र द्वारा वायु प्रवाह रोकि कऽ छोड़ल जाइत अछि) वर्ण र सँ व अन्तःस्थ आ ष सँ ह घर्षक वर्ण भेल।
सभ वर्गक पाँचम वर्ण अनुनासिक कहबैत अछि कारण आन स्थान समान रहितो एकर सभक नासिकामे सेहो उच्चारण होइत अछि- उच्चारणमे वायु नासिका आ मुँह बाटे बहार।
अनुस्वार आ यम केर उच्चारण मात्र नासिकामे होइत अछि- आ ई सभ नासिक्य कहबैत अछि- कारण ऐ सभमे मुखद्वार बन्द रहैत अछि आ नासिकासँ वायु बहार होइत अछि। अनुस्वारक स्थान पर न् वा म् केर उच्चारण नै हेबाक चाही।
जखन हमरा सभकेँ गप करबाक इच्छा होइत अछि, तखन संकल्पसँ जठराग्नि प्रेरित होइत अछि। नाभि लगक वायु, वेगसँ उठैत मूर्धा धरि पहुँचि, जिह्वाक अग्रादि भाग द्वारा निरोध भेलाक अनन्तर मुखक तालु आदि भागसँ घर्षित होइत अछि आ तखन वर्णक उत्पत्ति होइत अछि। कम्पन भेलासँ वायु नादवान आ यएह गुंजित होइत पहुँचैत अछि मुँहमे, आ ओकरा कहल जाइत अछि घोषवान, नादरहित भऽ पहुँचैत अछि श्वासमे आ ओकरा कहल जाइत अछि अघोषवान्।
श्वास प्रकृतिक वर्ण भेल ‘‘अघोष” , आ नाद प्रकृतिक भेल ‘‘घोषवान्” । जइ वर्णक उत्पत्तिमे प्राणवायुक अल्पता होइत अछि से अछि ‘‘अल्पप्राण” आ जकर उत्पत्तिमे प्राणवायुक बहुलता होइत अछि, से भेल ‘‘महाप्राण” ।
कचटतप केर पहिल, तेसर आ पाँचम वर्ण भेल अल्पप्राण आ दोसर आ चारिम वर्ण भेल महाप्राण। संगे कचटतप केर पहिल आ दोसर

भेल अघोष आ तेसर, चारिम आ पाँचम भेल घोषवान्। य र ल व भेल अल्पप्राण घोष। श ष स भेल महाप्राण अघोष आ ह भेल महाप्राण घोष। स्वर होइछ अल्पप्राण, उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित।

कम्प्यूटर आ मैथिली

गूगल ट्रांसलेटर टूलकिट आब सोर्स आ टार्गेट दुनू भाषाक रूपमे मैथिलीकें स्थान देलक . देखू
http://support.google.com/translate/toolkit/bin/answer.py?hl=en&answer=147837
आ
http://translate.google.com/toolkit/list?hl=en#translations/active

विदेहक विरोधक बाद गूगल बिहारी नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक गप मानि लेने अछि, "विकीपीडिया मैथिली "क स्थापना पहिनहिये विदेह

द्वारा कएल गेल आ पहिनहिये बिहारी नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक गप विकीपीडिया मानि लेने छल |

गूगल मैथिली: गूगल लैंगुएज टूल-
http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject

अपन योगदान गूगल ट्रांसलेट लेल करू, आ कएल सम्पादन बदलबा काल कारण मे (अंग्रेजीमे) "बिहारी" नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक चर्चा करू। ऐ लिंकपर अनुवाद करू; गूगल एकाउंट सँ लॉग इन केलाक बाद ।
http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh
ऐ लिंक http://www.google.co.in/language_tools?hl=en कें मैथिलीक उपलब्धता लेल चेक करैत रहू।

[सूचना: १. कैथी आ मिथिलाक्षर दुनू लिपिकें यूनीवर्सल कैरेक्टर सेट (यूनीकोड) मे एनकोड करबाक अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल आवेदन स्वीकृत भऽ गेल अछि। आब ई दुनू लिपिक यूनीकोड फॉन्ट बनेबाक क्रिया क्यूमे लागि गेल अछि आ जखन एकर सभक बेर एतै ऐ दुनू लिपिक आधारभूत फॉन्ट बनेबाक क्रिया शुरू भऽ जाएत। मिथिलाक्षरक आधारभूत फॉन्टक नाम तिरहुता रहत (जेना देवनागरीक आधारभूत फॉन्टक नाम मंगल आ बांग्लाक आधारभूत फॉन्टक नाम वृन्दा अछि)। मिथिलाक्षरक फॉन्ट लेल तेसर बेर संशोधित आवेदन देल गेल रहए, दोसर आ तेसर आवेदनमे विदेहक

योगदानक विस्तृत चर्चा भेल अछि, यथा- [TIRHUTA UNICODE: See the final UNICODE Mithilakshara Application (May 5, 2011) by Sh. Anshuman pandey
http://std.dkuug.dk/JTC1/SC2/WG2/docs/n4035.pdf at Page 23 the Videha 80th issue (Tirhuta version) is attached "Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22" and at Page 12 Videha is included in References Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/. and role of Videha's editor is acknowledged on Page 12 "Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."]।

सूचना: २. विकीपीडिया मैथिली:

मीडियाविकीक २६०० संदेश अंग्रेजीसँ मैथिलीमे विदेहक सदस्यगण द्वारा अनूदित कऽ देल गेल अछि। आब
http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai ऐ लिंकपर Group मे जा कऽ ड्रॉपडाउन मेनूसँ अ-अनूदित मैसेज अनूदित

करू। जँ अहाँ विकीपीडियाक ट्रान्सलेटर नै छी तँ http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator ऐ लिंकपर मैथिलीमे ट्रान्सलेट करबाक अनुमतिक लेल अनुरोध दियौ, ऐ सँ पहिने ओतै ऊपरमे दहिना कात लॉग-इन (जँ खाता नै अछि तँ क्रिएट अकाउन्ट) कऽ आ प्रेफरेन्समे भाषा मैथिली लऽ अपन प्रयोक्ता खाताक लिंककेँ क्लिक कऽ अपन प्रयोक्ता खात पन्ना बनाउ। किछु कालमे अहाँकेँ ट्रान्सलेट करबाक अनुमति भेट जाएत। तकरा बाद अनुवाद प्रारम्भ करू। फेर ऐ लिंक सभपर जाउ:

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator
http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili
http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai
http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai
http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

विदेहक तेसर अंक (१ फरबरी २००८) मे हम सूचित केने रही- “विकीपीडियापर मैथिलीपर लेख तँ छल मुदा मैथिलीमे लेख नै छल, कारण मैथिलीक विकीपीडियाकेँ स्वीकृति नै भेटल छल। हम बहुत दिनसँ ऐमे लागल रही आ सूचित करैत हर्षित छी जे २७.०१.२००८ केँ मैथिली भाषाकेँ विकी शुरू करबाक हेतु स्वीकृति भेटल छै, मुदा ऐ हेतु कमसँ कम पाँच गोटे, विभिन्न जगहसँ एकर एडिटरक रूपमे नियमित रूपेँ कार्य करथि तखने योजनाकेँ पूर्ण स्वीकृति भेटतै।” आ आब जखन तीन सालसँ बेशी

बीति गेल अछि आ मैथिली विकीपीडिया लेल प्रारम्भिक सभटा आवश्यकता पूर्ण कऽ लेल गेल अछि विकीपीडियाक ‘‘लैंगुएज कमेटी” आब बुझि गेल अछि जे मैथिली ‘‘बिहारी नामसँ बुझल जाएबला” भाषा नै अछि आ ऐ लेल अलग विकीपीडियाक जरूरत अछि। विकीपीडियाक गेरार्ड एम. लिखै छथि (http://ultimategerardm.blogspot.com/2011/05/bihari-wikipedia-is-actually-written-in.html)

-‘‘ई सूचना मैथिली आ मैथिलीक बिहारी भाषासमूहसँ सम्बन्धक विषयमे उमेश मंडल द्वारा देल गेल अछि- उमेश विकीपीडियापर मैथिलीक स्थानीयकरणक परियोजनामे काज कऽ रहल छथि, ...लैंगुएज कमेटी ई बुझबाक प्रयास कऽ रहल अछि जे की मैथिलीक स्थान बिहारी भाषा समूहक अन्तर्गत राखल जा सकैए ?.. मुदा आब उमेश जीक उत्तरसँ पूर्ण स्पष्ट भऽ गेल अछि जे ‘‘नै” । ”

रामविलास शर्माक लेख (मैथिली और हिन्दी, हिन्दी मासिक पाटल, सम्पादक रामदयाल पांडेय) जइमे मैथिलीकेँ हिन्दीक बोली बनेबाक प्रयास भेल छलै तकर विरोध यात्रीजी अपन हिन्दी लेख द्वारा केने छला, जखन हुनकर उमेर ४३ बर्ख छलन्हि (आर्यावर्त १४/ २१ फरबरी १९५४), जकर राजमोहन झा द्वारा कएल मैथिली अनुवाद आरम्भक दोसर अंकमे छपल छल। उमेश मंडलक ई सफल प्रयास ऐ अर्थें आर विशिष्टता प्राप्त केने अछि कारण हुनकर उमेर अखन मात्र ३० बर्ख छन्हि। जखन मैथिल सभ हैदराबाद, बंगलोर आ सिएटल धरि कम्प्यूटर साइंसक क्षेत्रमे रहि काज कऽ रहल छथि, ई विरोध वा करेक्शन हुनका लोकनि द्वारा नै वरन मिथिलाक सुदूर क्षेत्रमे रहनिहार ऐ मैथिली प्रेमी युवा द्वारा भेल से की देखबैत अछि?

उमेश मंडल मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक लोकक कण्ठक गीतकेँ फील्डवर्क द्वारा ऑडियो आ वीडियोमे डिजिटलाइज सेहो कएने छथि जे विदेह आर्काइवमे उपलब्ध अछि।

हिन्दी, बिहारी आ मैथिली:

हिन्दीक संग समस्या सेहो छै, मूलरूपसँ बजार (उर्दू बजार) मे बाजल जाएबला भाषा फारसी लिपिमे लिखल उर्दू भेल आ देवनागरीमे लिखल हिन्दी। हिन्दीक ऐतिहासिक उल्लेख तेँ बादमे भेल, आ से देखबै तँ हिन्दीक अपन एक्को धूर जमीन नै छलै। मुदा वैदिक संस्कृतसँ आगाँ बढ़ब तँ हिन्दी धरि एबा लेल जँ ओ ने ब्रजकेँ अपन पुरान मानत ने अवधीकेँ आ ने मैथिलीकेँ तँ ओकर पुरान साहित्य कोन हएत? तँ विद्यापति-मीरा, कबीर-तुलसीक पढ़ाइ हिन्दीक पुरान साहित्यमे हेबासँ अहाँ नै रोकि सकै छिऐ, आ ने विद्यापतिकेँ हिन्दी कवि कहलापर बखेराक कोनो आवश्यकता अछि। अपन घरमे मैथिली सशक्त हएत तखने ओकर अस्तित्व रहतै... हिन्दीक लोक विद्यापतिकेँ मैथिली कविक रूपमे मान्यता दैत अछि, आ ब्रज आ अवधी हिन्दीसँ पहिनेसँ साहित्यिक भाषा अछि आइ हिन्दीक बोली बनि गेल अछि, ओइमे आब साहित्यिक रचना नै होइ छै, बिहारी भाषा नाम्ना भाषाक नै जानि कतऽसँ उल्लेख आबि जाइए!

मैथिली बाजैबला ऐ भाषाकेँ नै मरऽ देतै, आ नेटिव स्पीकरसँ जे खाँटी लेखक बहरा रहल छथि, हुनकर खाँटी मैथिली मैथिलीक स्वतंत्र अस्तित्व भाषाक रूपमे सुरक्षित राखता। मुदा डर अछि भाषा-संस्कृति आ खाँटी शब्दावलीसँ परहेज राखैबला पुरस्कार लेबा लेल लिखबा लेल अपस्याँत वर्गसँ, जे सामान्य लोक आ ओकर

संस्कृतिसँ दूर अछि, मुदा सरकारी साहित्य तंत्रकेँ गछारि कऽ रखने अछि।

मैथिली नाटक आ आधुनिक रंगमंच

नाट्य शास्त्रमे वर्णन अछि जे नाटकक उत्पत्ति इन्द्रक ध्वजा उत्सवसँ भेल।

मैथिली नाटक आ रंगमंचक इतिहास ज्योतिरीश्वरक धूर्त समागम आ अंकिया नाटसँ प्रारम्भ होइत अछि।

कोलकातामे १८५० ई.क आसपास आधुनिक रंगमंच- ब्रिटिश क्लबमे शुरू भेल, मुदा बाहरी लोकक प्रवेश ओतए नै छल।

पूर्व पीठिका:

अंकिया नाटमे सेहो प्रदर्शन तत्वक प्रधानता छल। कीर्तनियाँ एक तरहेँ संगीतक छल आ एतौ अभिनय तत्वक प्रधानता छल। अंकीया नाटकक प्रारम्भ मृदंग वादनसँ होइ छल।

शास्त्रीय आधार:

मोहनजोदड़ो सभ्यतासँ प्राप्त कांस्य प्रतिमा नृत्यक मुद्राक संकेत दैत

अछि, वर्तमान कथक नृत्यक ठाठ मुद्रा सदृश, दहिन हाथ ४५ डिग्रीक कोण बनेने आ वाम हाथ वाम छाबापर, संगे वाम पएर किछु मोड़ने। ऋगवेदक शांखायन ब्राह्मणमे गीत, वाद्य आ नृत्य तीनूक संगे-संग प्रयोगक वर्णन अछि, ऐतरेय ब्राह्मणमे ऐ तीनूक गणना दैवी शिल्पमे अछि। ऋगवेद १०.७६.६ मे उषाक स्वर्णिम आभा कविकेँ सुसज्जित ऋषिक स्मरण करबै छन्हि। ऋगवेदमे लोक नृत्यक (प्रान्चो अगाम नृतये) सेहो उल्लेख अछि। महाव्रत नाम्ना सोमयागमे दासी सभक (३-६ दासीक) सामूहिक नृत्यक वर्णन अछि। शांखायन १.११.५ मे वर्णन अछि जे विवाहमे ४-८ सुहागिनकेँ सुरा पिऐल जाइ छल आ चतुर्वार नृत्य लेल प्रेरित कएल जाइ छल। वैदिक साहित्यमे विवाह विधिमे पत्नीक गायनक उल्लेख अछि। सीमन्तोन्नयन विधिमे पति वीणावादकसँ सोमदेवक वादयुक्त गान करबाक अनुरोध करैत छथि। अथर्ववेदमे वसा नाम्ना देवताक नृत्य ऋक्, साम आ गाथासँ सम्बन्धित हेबाक गप आएल अछि, सोमपानयुक्त ऐ नृत्यमे गन्धर्व सेहो होइ छलाह, से वर्णित अछि। अथर्ववेद १२.१.४१ मे गीत, वादन आ नृत्यक सामूहिक ध्वनिक वर्णन अछि। वैदिक कालमे साम संगीतक अलाबे गाथा आ नाराशंसी नाम्ना लौकिक गाथा-संगीतक सेहो प्रचलन छल। ऋक १,११५,२ मे उषाकालक सूर्योदयक बिम्ब सुन्दरीक पाछाँ जाइत युवकसँ भेल अछि। ऋक १,१२४,११ मे अरुणोदयमे लाल आभा आ बिलाइत अन्हारक संग, चूल्हिमे आगिक वर्णन अछि आ बिम्ब अछि- गामक तरुणी रक्त वर्णक गाएकेँ चरबा लेल छोड़ै छथि। अथर्ववेद ४,१५,६ मे सामूहिक नाराक वर्णन अछि। यजुर्वेद ४०,१६ मे वर्णन अछि- सूर्यमण्डल सुवर्णपात्र अछि जे सूर्यकेँ आवृत्त केने अछि। यजुर्वेद १७,३८-४१ मे संग्राम लेल बाजा संग

जाइत देवसेना आ यजुर्वेद १७,४९ मे कवचक मर्मर ध्वनि वर्णित अछि। ऋगवेद १,१६४,२ आ यास्क ४,२७ मे संवत्सर चक्रक वर्णन अछि। वृहदारण्यक उपनिषद २,२,३ मे सोमरसक उत्सक वर्णन अछि। अथर्ववेद १०,२,३१ मे शरीरकेँ अयोध्या कहल गेल अछि, गीता ५,१३ मे शरीरकेँ पुर कहल गेल अछि। वृहदारण्यक उपनिषद २,२,४ -ओकर तटपर सात ऋषि आँखि, कान आदि अछि।

यजुर्वेदमे नाट्य: यजुर्वेदमे किछु पारिभाषिक शब्दक विवरण अछि जेना सूत, शैलूष, चित्रकारिणी, ऐसँ लगैत अछि जे नाट्यमंडपक कल्पना छल।
मन्दिरक उत्सव आ राजाक प्रासादमे होइबला नाटक स्वतंत्र भऽ गेल आ एकर उपयोग वा अनुप्रयोग दोसर विषयकेँ पढ़ेबामे सेहो होमए लागल।

भरतक नाट्यशास्त्र:

नाटक दू प्रकारक लोकधर्मी आ नाट्यधर्मी, लोकधर्मी भेल ग्राम्य आ नाट्यधर्मी भेल शास्त्रीय उक्ति। ग्राम्य माने भेल कृत्रिमताक अवहेलना मुदा अज्ञानतावश किछु गोटे एकरा गाममे होइबला नाटक बुझै छथि। लोकधर्मीमे स्वभावक अभिनयमे प्रधानता रहैत अछि, लोकक क्रियाक प्रधानता रहैत अछि, सरल आंगिक प्रदर्शन होइत अछि, आ ऐ मे पात्रक, से ओ स्त्री हुअए वा पुरुष, तकर संख्या बड्ड बेसी रहैत अछि। नाट्यधर्मीमे वाणी मोने-मोन, संकेतसँ, आकाशवाणी इत्यादि, नृत्यक समावेश, वाक्यमे विलक्षणता, रागबला संगीत, आ साधारण पात्रक अलाबे दिव्य पात्र सेहो रहै छथि।

कोनो निर्जीव/ वा जन्तु सेहो संवाद करऽ लगैए, एक पात्रक डबल-ट्रिपल रोल, सुख-दुखक आवेग संगीतक माध्यमसँ बढ़ाएल जाइत अछि।

नाट्यधर्मक आधार अछि लोकधर्म। लोकधर्मीकेँ परिष्कृत करू आ ओ नाट्यधर्मी भऽ जाएत।

लोकधर्मीक दू प्रकारक- चित्तवृत्यर्पिका (आन्तरिक सुख-दुख) आ बाह्यवस्त्वनुकारिणी (बाह्य- पोखरि, कमलदह)। नाट्यधर्मी- सेहो दू प्रकारक कैशिकी शोभा (अंगक प्रदर्शन- विलासिता गीत-नृत्य-संगीत) आ अंशोपजीवनी (पुष्पक विमान, पहाड़ बोन आदिक सांकेतिक प्रदर्शन)।

सम्पूर्ण अभिनय- आंगिक (अंगसँ), वाचिक (वाणीसँ), सात्विक (मोनक भावसँ) आ आहार्य (दृश्य आदिक कल्पना साज-सज्जा आधारित)। आंगिक अभिनय- शरीर, मुख आ चेष्टासँ; वाचिक अभिनय- देव, भूपाल, अनार्य आ जन्तु-चिड़ैक भाषामे; सात्विक-स्तम्भ (हर्ष, भय, शोक), स्वेद (स्तम्भक भाव दबबैले माथ नोचऽ लागब आदि), रोमांच (सात्विकक कारण देह भुकुटनाइ आदि), स्वरभंग (वाणीक भारी भेनाइ, आँखिमे नोर एनाइ), वेपथु (देह थरथरेनाइ आदि), वैवर्ण्य (मुँह पीयर पड़नाइ), अश्रु (नोर ढब-ढब खसनाइ, बेर-बेर आदि), प्रलय (शवासन आदि द्वारा); आ आहार्य-पुस्त (हाथी, बाघ, पहाड़ आदिक मंचपर स्थापन), अलंकार (वस्त्र-अलंकरण), अंग रचना (रंग, मोंछ, वेश आ केश), संजीव (बिना पएर-साँप, दू पएर-मनुक्ख आ चिड़ै आ चारि पएरबला-जन्तु जीव-

जन्तुक प्रस्तुति) द्वारा होइत अछि।

दूटा आर अभिनय- सामान्य (नाट्यशास्त्र २२म अध्याय) आ चित्राभिनय (नाट्यशास्त्र २२म अध्याय): चतुर्विध अभिनयक बाद सामान्य अभिनयक वर्णन, ई आंगिक, वाचिक आ सात्विक अभिनयक समन्वित रूप अछि आ ऐ मे सात्विक अभिनयक प्रधानता रहैत अछि। चित्राभिनय आंगिकसँ सम्बद्ध- अंगक माध्यसँ चित्र बना कऽ पहाड़, पोखरि चिड़ै आदिक अभिनय विधान।

नाट्य-मंचन आ अभिनय: कालिदासक अभिज्ञान शाकुन्तलम् नाट्य निर्देशकक लेल पठनीय नाटक अछि। रंगमंच निर्देश, जेना, *रथ वेगं निरूप्य, सूत पश्यैनं व्यापाद्यमानं, इति शरसंधानम् नाटयति, वृक्ष सेचनम् रुपयति, कलशम् अवरजायति, मुखमस्याः समुन्नमयितुमिच्छति, शकुन्तला परिहरति नाट्येन, नाट्येन प्रसाधयतः*, कहि कऽ वास्तविकतामे नै वरन् अभिनयसँ ई कएल जाइत अछि। नाट्येन प्रसाधयतः, एतऽ अनसूया आ प्रियम्वदा मुद्रासँ अपन सखी शकुन्तलाक प्रसाधन करै छथि कारण से चाहे तँ उपलब्ध नै अछि, चाहे तँ ओतेक पलखति नै अछि। तहिना *वृक्ष सेचनम् रुपयति* सँ गाछमे पानि पटेबाक अभिनय, *कलशम् अवरजायति* सँ कलश खाली करबाक काल्पनिक निर्देश, *रथ वेगं निरूप्य* सँ तेज गतिसँ रथमे यात्राक अभिनय, *इति शरसंधानम् नाटयति* सँ तीरकेँ धनुषपर चढ़ेबाक निर्णय, *सूत पश्यैनं व्यापाद्यमानं* सँ हरिणकेँ मारि खसेबाक दृश्य देखबाक निर्देश, *मुखमस्याः समुन्नमयितुमिच्छति* सँ दुश्यन्तक शकुन्तलाक मुँहकेँ उठेबाक इच्छा, *शकुन्तला परिहरति नाट्येन* सँ शकुन्तला द्वारा दुश्यन्तक ऐ प्रयासकेँ रोकबाक अभिनयक निर्देश होइत अछि।

भरतक रंगमंच: ऐ मे होइत अछि- पाछाँक पर्दा, नेपथ्य (मेकप रूम बुझू), आगमन आ निर्गमनक दरबज्जा, विशेष पर्दा जे आगमन आ निर्गमन स्थलकेँ झाँपैत अछि, वेदिका- रंगमंचक बीचमे वादन-दल लेल बनाएल जाइत अछि, रंगशीर्ष- पाछाँक रंगमंच स्थल; मत्तवर्णी- आगाँ दिस दुनू कोणपर अभिनय लेल होइत अछि आ रंगपीठ अछि सोझाँक मुख्य अभिनय स्थल।

अभिनय मूल्यांकन: अध्याय २७ मे भरत सफलताकेँ लक्ष्य बतबै छथि, मंचन सफलतासँ पूर्ण हुअए। दर्शक कहैए, हँ, बाह, कतेक दुखद अन्त, तँ तेहने दर्शक भेलाह सहृदए, भरतक शब्दमे, से ओ नाटककार आ ओकर पात्रक संग एक भऽ जाइ छथि।

नाट्य प्रतियोगिता होइत छल आ ओतऽ निर्णायक लोकनि पुरस्कार सेहो दै छला।

भरत निर्णायक लोकनि द्वारा धनात्मक आ ऋणात्मक अंक देबाक मानदण्डक निर्धारण करैत कहै छथि जे-

१.ध्यानमे कमी, २.दोसर पात्रक सम्वाद बाजब, ३.पात्रक अनुरूप व्यक्तित्व नै हएब, ४.स्मरणमे कमी, ५.पात्रक अभिनयसँ हटि कऽ दोसर रूप धऽ लेब, ६.कोनो वस्तु, पदार्थ खसि पड़ब, ७.बजबा काल लटपटाएब, ८.व्याकरण वा आन दोष, ९.निष्पादनमे कमी, १०.संगीतमे दोष, ११.वाक् मे दोष, १२.दूरदर्शितामे कमी, १३.सामिग्रीमे कमी, १४.मेकप मे कमी, १५. नाटककार वा निर्देशक द्वारा कोनो दोसर नाटकक अंश घोसिआएब, १६.नाटकक भाषा सरल आ साफ नै हएब, ई सभ अभिनय आ मंचनक दोष भेल।

निर्णायक सभ क्षेत्रसँ होथि, निरपेक्ष होथि। नाटकक सम्पूर्ण प्रभाव, तारतम्य, विभिन्न गुणक अनुपात, आ भावनात्मक निरूपण ध्यानमे राखल जाए।

स्टेजक मैनेजर- सूत्रधार- आ ओकर सहायक परिपार्श्वक- नाटकक सभ क्षेत्रक ज्ञाता होथि। मुख्य अभिनेत्री संगीत आ नाटकमे निपुण होथि, मुख्य अभिनेता- नायक- अपन क्षमतासँ नाटककेँ सफल बनबै छथि। अभिनेता- नट- क चयन एना करू, जँ छोट कदकाठीक छथि तँ वाणवीर लेल, पातर-दुब्बर होथि तँ नोकर, बकथोथीमे माहिर होथि तँ बिपटा, ऐ तरहेँ पात्रक अभिनेताक निर्धारण करू। संगीत-दलक मुखिया- तौरिक- केँ संगीतक सभ पक्षक ज्ञान हेबाक चाही जइसँ ओ बाजा बजेनहार- कुशीलव- केँ निर्देशित कऽ सकथि।

नाट्य-मंचन आ अभिनय

बौद्ध चर्यागीतक बाद महाराज नान्यदेव सरस्वती हृदयालंकार फेर विद्यापति आ संगीतज्ञ जयटक शिव सिंहक दरबारमे हेबाक लोकोक्ति। विद्यापतिक पुरुष परीक्षाक कथा सभमे पुरुषक कला संगीतक प्रेम ओकर पुरुषार्थ सन महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। शुभङ्कर ठाकुरक *श्रीहस्तमुक्तावली* सेहो मिथिलाक ग्रन्थ मानल जाइत अछि ओना पाण्डुलिपिक उपलब्धताक आधारपर किछु विद्वान एकरा असमक रचना मानै छथि। ऐ ग्रन्थमे अभिनयसँ सम्बन्धित हस्त परिचालनक विषद विवरण उपलब्ध अछि। आइने अकबरीमे विद्यापतिक नचारीक चर्च अछि।

मैथिली नाटक: बड्ड रास भाषण मैथिली आ आन नाटकक प्राचीनसँ आधुनिक काल धरि रहल तारतम्यक विषयमे देल गेल अछि। मुदा सत्य यएह अछि जे भारत वा नेपालक कोनो कोनमे रंगमंच आ रूपकक निर्देश भरतक नाट्यशास्त्रक अनुरूपेँ उपलब्ध नै अछि, ओकर पुनः स्थापन भरिगर काज तँ अछिये, मुदा प्रयास नै भेल सेहो नै अछि। बिनु ज्ञानक कालिदासक नाटकक लघुरूप भयंकर विवाद उत्पन्न करैत अछि। लोक नाट्यक नाट्यशास्त्रक अनुरूप निरूपण कऽ उपरूपकक मंचनक सम्भावना मैथिलीमे अछि। विदेह नाट्य (आ फिल्म) उत्सव २०१२, जे बेचन ठाकुरक निर्देशनमे भेल, मैथिलीमे भरत नाट्यमंचकेँ स्थापित केलक।

विदेह नाट्य उत्सव २०१२ मे भरत नाट्य शास्त्र आधारित नाटक रंगमंच संकल्पना आधारित गजेन्द्र ठाकुर लिखित आ श्री बेचन ठाकुर निर्देशित ''उल्कामुख'' मंचित कएल गेल, जे मैथिलीमे ऐ तरहक पहिल प्रयास छल, ऐमे अभिनेत्री लोकनिक माध्यमसँ नाटक मंचन भेल, ऐमे पुरुख पात्रक अभिनय सेहो महिला कलाकार द्वारा भेल।

गजेन्द्र ठाकुर

उल्कामुख: पहिल मंचनक निर्देशक रहथि बेचन ठाकुर। जादू वास्तवितावादी ऐ नाटकमे इतिहासक एकटा षडयंत्रकेँ उघारल गेल अछि, मंच परिकल्पना रहए भरतक नाट्यशास्त्रक अनुसार। आचार्य व्याघ्र, आचार्य सिंह, आचार्य सरभ, शिष्य साही, शिष्य खिखिर, शिष्य नढ़िया, शिष्य बिज्जी, ऐमे पात्र छथि। पहिलसँ चारिम

कल्लोल धरिक पात्र बदलि जाइ छथि, दोसर रूपमे पाँचम कल्लोलसँ ४ टा स्त्री पात्र बढ़ि जाइ छथि: रुद्रमति (माधवक माए) सोहागो (गंगाधरक माता), आनन्दा (गंगाधरक बहिन), मेधा (हरिकर-सेनापतिक बेटी)। गंगेश आ वल्लभाक प्रेम ऐ नाटकक विषय अछि। मुदा पहिल दू अंकक बाद तेसर आ चारिम अंक जादू वास्तविकतावादक उदाहरण बनि जाइए। आ आबि जाइ छथि सोझाँ उदयन, दीना, भदरी, आचार्य व्याघ्र, आचार्य सिंह, आचार्य सरभ, शिष्य साही, शिष्य खिखिर, शिष्य नढ़िया, शिष्य बिज्जी। आ शुरू भऽ जाइए इतिहासक एकटा षडयंत्रक अनुपालन। मुदा चारिम कल्लोलक अन्तमे भगता कहि दै छथि अपन शिष्यकेँ एकटा रहस्य.......जे विस्मरणक बादो आबि जाएत स्मरणमे। ...बनि उल्कामुख... - पाँचम कल्लोलसँ संकेतक बदला वास्तविकता, कल्पनाक बदला सत्य... -पहिलसँ चारिम कल्लोल धरि मंचपर शतरंजक डिजाइन बनाएल घन राखल रहल, पाँचम कल्लोलसँ भूत आ कल्पनाक प्रतीक ओइ संकेतक बदला वास्तविकताक प्रतीक गोला राखल रहल। गंगेशक तत्त्वचिन्तामणिपर ढेर रास टीका उपलब्ध अछि, गंगेशकेँ कहल जाइ छन्हि तत्वचितामणिकारक गंगेश; मुदा हुनकर कविता भऽ गेल छलन्हि "उल्कामुख"!!!

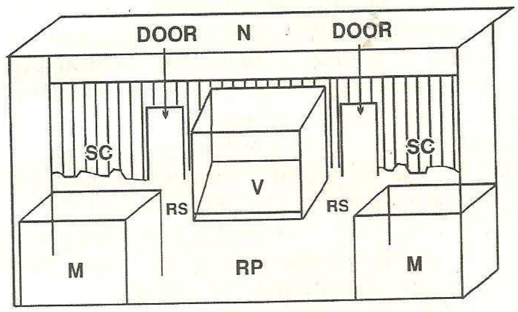
संकर्षण: ऐ नाटकमे एकटा पात्र, जे गाममे कहबैका आ दुष्ट-चलाक प्रवृत्तिक मानल जाइत अछि, दिल्ली एलापर (रस्ते सँ ओकर बुद्धि हेरेनाइ शुरू होइ छै) अपनाकेँ मूर्ख बुझैत अछि- बीचमे भारतक हरियाणाक एकटा कुकुरसँ सम्बन्धित लोककथा सेहो समाहित अछि।

भऽ जाएब छू- (बाल चौबटिया-सड़क नाटक)- पर्यावरण आ

विज्ञानकेँ सडक नाटकक माध्यमसँ पसारबाक अभियान।

भरत नाट्यशास्त्रक आधारपर रंगमंचक ड्राइंग श्रीमती एस.एस.जानकीक छल। ऐ तरहक एकटा प्रयास संस्कृत रंगमंचपर चेन्नैमे कएल गेल छल।

SIMPLIFIED STAGE OF BHARATA
(Not according to measurements)



C. Back Curtain of Theatre
N. Nepathya (make-up room)
SC. Special Curtain (to cover up entry and exit)
Doors (2) with Curtains and wall-for entry and exit
V. Vedikā (central platform meant for Kutapa or orchestra)
RS. Raṅgaśīrṣa (rear stage)
M. Mattavāraṇīs (2) (supplementary acting areas)
RP. Raṅgapīṭha (main acting area)

नाट्य रंगमंच समिति सभ

भंगिमा, पटना ; चेतना समिति, पटना, जमघट-, मधुबनी; मिथिला विकास परिषद, कोलकाता; अखिल भारतीय मिथिला संघ, कोलकाता; मिथिला कला केन्द्र, कोलकाता; मैथिली रंगमंच, कोलकाता; कुर्मी-क्षत्रिय छात्रवृत्ति कोष, कोलकाता; आल इण्डिया मैथिल संघ, कोलकाता; कर्ण गोष्ठी:जयन्त लोकमंच, कोलकाता; मिथिला सेवा संस्थान, कोलकाता; मिथि यात्रिक, कोलकाता; वैदेही कला मंच, कोलकाता; कोकिल मंच, कोलकाता; मिथिला कल्याण परिषद, रिसरा, कोलकाता (निर्देशन मुख्य रूपसँ श्री दयानाथ झा द्वारा १९८२ ई.सँ। सम्प्रति श्री रण्जीत कुमार झा निर्देशन कऽ रहल छथि, ०८.०१.२०१२ केँ हुनकर निर्देशनमे तंत्रनाथ झा लिखित ''उपनयनक भोज'' मंचित भेल।) ; झंकार, कोलकाता; मिथिला सेवा समिति बेलुर, कोलकाता; उदय पथ, कोलकाता। मिथिला नाट्य परिषद (मिनाप), जनकपुर; रामानन्द युवा क्लब, जनकपुरधाम; युवा नाट्य कला परिषद (युनाप), परवाहा, धनुषा; आकृति (उपेन्द्र भगत नागवंशी), जनकपुर; रंग वाटिका, नेपाल; चबूतरा, शिरोमणि मैथिली युबा क्लब, गांगुली, भैरब, मैथिली सांस्कृतिक युबा क्लब, बौहरबा, श्री सरस्वती सांस्कृतिक नाट्य कला परिषद, गाम तिलाठी (सप्तरी, नेपाल); अरुणोदय नाट्य मंच, राजबिराज; सरस्वती नाट्य कला परिषद, मेंहथ, मधुबनी; मैथिली लोकरंग (मैलोरंग), दिल्ली; मिथिलांगन, दिल्ली। मधुबनीक पजुआरिडीह टोलमे श्रीकृष्ण नाट्य समिति श्री कृष्णचन्द्र झा रसिक, शिवनाथ झा आ गंगा झाक निर्देशनमे मैथिली नाटक मंचित होइत रहल अछि। सांस्कृतिक मंच, लोहियानगर, पटना; चित्रगुप्त सांस्कृतिक केन्द्र, जनकपुर; गर्दनीबाग कला समिति, पटना; मिथिलाक्षर, जमशेदपुर; मैथिली कला मंच, बोकारो; उगना विद्यापति परिषद, बेगूसराय; मिथिला सांस्कृतिक परिषद, बोकारो स्टील सिटी;

भानुकला केन्द्र, विराटनगर; आंगन, पटना; नवतरंग, बेगूसराय; भारतीय रंगमंच, दरभंगा; भद्रकाली नाट्य परिषद, कोइलख, मिथिला अनुभूति दरभंगा, विदेह अंतर्राष्ट्रीय ई-जर्नलक नाट्य उत्सव, नव ज्योति ड्रामेटिक क्लब, लौकही (१९९२ मे शम्भु शंकर आदि ब्रह्मस्थान आ उगना नाटक खेलेला)। गौरी शंकर, जमुथरि (हैंठी बाली), जिला मधुबनी (शिवरात्रि दिन एतऽ सभ बर्ख उगना नाटक खेलाएल जाइए। २०१४ मे ३४म बेर ई नाटक खेलाएल गेल।)

ईशनाथ झा

उगना: ई नाटक गौरी शंकर, जमुथरि (हैंठी बाली), जिला मधुबनी मे शिवरात्रि दिन सभ बर्ख खेलाएल जाइए। २०१४ मे ३४म बेर ई नाटक खेलाएल गेल। विद्यापति शिव-भक्त, हुनकर गीत-नचारी सुनबा लेल शिव विद्यापतिक घरमे उगना नोकर बनि आबि गेला। एक बेर विद्यापति यात्रापर छला आ उगना संगमे छलन्हि। रस्तामे पियास लगलापर उगना जटाक गंगधारसँ पानि निकालि विद्यापतिकेँ पियेलन्हि मुदा विद्यापतिकेँ ओइमे गंगाजलक स्वाद भेटलन्हि आ ओ उगनाक केश भीजल देखि सभटा बूझि गेला। उगना अपन असल रूपमे एला। मुदा उगना कहलखिन्ह जे विद्यापति ई गप ककरो नै कहथि नै तँ ओ अन्तर्धान भऽ जेता। पार्वती चालि चललन्हि, विद्यापतिक पत्नी उगनाकेँ बेलपत्र अनबा लेल पठेलन्हि आ देरी भेलापर ओ उगनापर बाढ़नि उसाहलन्हि, विद्यापथि भेद खोलि देलन्हि आ उगना बिला गेला..

निर्देशन: कालीकान्त झा "बूच", कामदेव पाठक, श्री कमल नारायण कर्ण (चीनीक लड्डू-ईशनाथ झा/ चारिपहर- मूल बांग्ला किरण मैत्र, मैथिली अनुवाद- निरसन लाभ), श्री श्रीकान्त मण्डल (चन्द्रगुप्त मूल

बांग्ला डी.एल.राय, मैथिली अनुवाद- बाबू साहेब चौधरी/ पाथेय- गुणनाथ झा/ नायकक नाम जीवन- नचिकेता); श्री विष्णु चटर्जी आ श्री श्रीकान्त मण्डल (निष्कलंक- जनार्दन झा); प्रवीर मुखोपाध्याय; वीणा राय, मोहन चौधरी, बाबू राम सिंह, गोपाल दास, कुणाल, रवि देव, दयानाथ झा, त्रिलोचन झा, शम्भूनाथ मिश्र, काशी झा, अशोक झा, गंगा झा, गणेश प्रसाद सिन्हा, नवीन चन्द्र मिश्र, जनार्दन राय, श्री कृष्णचन्द्र झा रसिक, शिवनाथ झा, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अखिलेश्वर, सच्चिदानन्द, रमेश राजहंस, मोदनाथ झा, विभूति आनन्द, जावेद अख्तर खाँ, कौशल किशोर दास, प्रशान्त कान्त, अरविन्द रंजन दास, मनोज मनु, रोहिणी रमण झा, भवनाथ झा, उमाकान्त झा, लल्लन प्रसाद ठाकुर, रघुनाथ झा किरण, महेन्द्र मलंगिया, कुमार शैलेन्द्र, विनीत झा, किशोर कुमार झा, कुमार गगन, विनोद कुमार झा, के.अजय, छत्रानन्द सिंह झा, नीलम चौधरी, काजल, मनोज कुमार पाठक, आशनारायण मिश्र, श्री श्रीनारायण झा, प्रमिला झा, तनुजा शंकर, केशव नन्दन, ब्रह्मानन्द झा, संजीव तमन्ना, किसलय कृष्ण, प्रकाश झा, मुन्नाजी संजय कुमार चौधरी, कमल मोहन चुन्नू, अंशुमान सत्यकेतु, श्याम भास्कर, प्रेम कुमार, संगम कुमार ठाकुर, एल.आर.एम. राजन, भास्करानन्द झा, आशुतोष कुमार मिश्र, आनन्द कुमार झा, मनोज मनुज, संजीव मिश्र, स्वाति सिंह, स्वर्णिम, आशुतोष यादव अभिज्ञ, अशोक अश्क, दिलीप वत्स, तरुण प्रभात, माधव आनन्द, नरेन्द्र मिश्र, भारत भूषण झा, किशोर केशव, बेचन ठाकुर, उपेन्द्र भगत नागवंशी, अनिल चन्द्र झा, अंशुमान सत्यकेतु, आनंद कुमार झा, हेमनारायण साहू, रामकृष्ण मंडल छोटू, धीरेन्द्र कुमार,उत्पल झा, अभिषेक के . नारायण, चन्द्रिका प्रसाद।

मैथिलीक किछु नव पोथी

शम्भुदास- जगदीश प्रसाद मण्डल

जगदीश प्रसाद मण्डल लोकक मोनमे पैसै छथि, बरहम बाबाक मोनमे पैसै छथि। आ तैँ ने बरहम बाबा आ लोक दुनूक मोन हर्खित छै, से भाँज ओ लगा लै छथि। शम्भुआकेँ शम्भु बनैत ओ देखै छथि आ फेर दरबारी दास (शम्भुदास) बनैत सेहो। ढहैत बेबस्थाक तरमे शम्भुदासक पड़ब मिथिलाक कलाक राँइ-बाँइ हेबाक निशानी अछि। जगदीश प्रसाद मण्डलक कथाक मुख्य पात्र ने ''भैंटक लावा''मे आ ने ''बिसाँढ़''मे राँइ-बाँइ होइए तखन शम्भुदास कोना ''दरबारी'' दास भऽ गेल? की जगदीश प्रसाद मण्डलमे कोनो परिवर्तन तँ नै आबि गेलन्हि, की ओ थाकि रहल छथि आ हारि रहल छथि?

मुदा जँ गँहिकी नजरिसँ देखबै तँ शम्भुदास कोनो तरहेँ ''भैंटक लावा'' बा ''बिसाँढ़''क हीरोसँ न्यून नै अछि। तखन ओ किए हारि रहल अछि बा जगदीश प्रसाद मण्डल ओकरा किए हरबा रहल छथि? ऐँ यौ, ओ तँ लेखक छथि, ऐ पात्र सभक भगवान, ओ एकरा जितबेलथि किए नै?

जगदीश प्रसाद मण्डलक पात्र फुसियाँहीक नै होइत अछि, आ तँ

ओ आर्थिक मोर्चा पर जीति जाइत अछि, जतऽ हाथसँ काज होइ छै, मुदा कला (आ साहित्य सेहो) क शास्त्रीय घुरछी, जे आंगुरपर गानल जाएबला लोक द्वारा निर्मित अछि, मे ओ ओझरा जाइत अछि। ओकरा आर्थिक स्थितिसँ लड़बाक छलै, लड़ल आ जीतल। कलाक क्षेत्रमे ओ दरबारी बनि गेल, तखने ओकर गुजर हेतै; मुदा एतौ एकटा विद्रोहक झण्डा उठेलक शम्भुदास, घर-परिवार बिसरि बिआह नै करबाक ओकर निर्णय सिद्ध केलक जे ''दरबारी'' दास बनब ओकर सुविधावादी प्रवृत्ति नै छै, लचारी छै; आ तइ लेल ओ बिआह नै करबाक निर्णय केलक। घर-परिवार लेल ओ सुविधावादी नै बनल, आ घर-परिवार बिसरि बिआह नै करबाक ओकर निर्णय ''दरबारी'' दास बनबाक लेल कएल ओकर पश्चाताप मात्र अछि। समानान्तर परम्परा कलाकेँ दरबारी दास बनबासँ रोकत। जँ शम्भुदास हारत तँ हारत मिथिला। जगदीश प्रसाद मण्डल नै हारता, हारत मिथिला।
जँ मिथिला ऐ चेतौनीकेँ नै चिन्हत।

बजन्ता-बुझन्ता- जगदीश प्रसाद मण्डल

''बजन्ता-बुझन्ता'' विहनि कथाक सुग्गा ओहन पोसा अछि जे बिनु पिजरेक, मनुक्खक संग रहैए। ऐ विहनि कथा संग्रहमे ऐ तरहक बिम्बक संख्या कथाक संख्यासँ बेसिए अछि कम नै। ''चौकीदारी'' मे अठ-अठ महिना पेट बान्हि खटबाक बिम्ब अछि तँ मनोज कुमार कर्ण प्रसिद्ध मुन्नाजी केँ समर्पित ''पटोर'' विहनि कथामे ''जेना अन्हार घर साँपे-साँप होइ छै तहिन्ना ने दुनू बेकती छी'' विहनि कथाक कथाकेँ चौबटियासँ दोसर दिशा दिस घुसका दै छै, आगाँ बढ़बै छै।
आ ऐ विहनि कथा संग्रहक कथा सभक विषयमे समदाहीक ई

वक्तव्य चोटगर बुझाइए-
''बड़ काग भाषा सुनिनिहारि भेल छथि''।

तरेगन- जगदीश प्रसाद मण्डल

ऐ विहनि कथा सभमे ''पंच लाइन'' बा ''बिम्ब'' ऐ दुआरे नै अछि, कारण ई पोथी नेना-भुटका लेल अछि, आ एतऽ समस्त कथे बिम्ब अछि। आ तेँ जखन सुभाषचन्द्र बोसक पिता (''देश सेवाक व्रत'' कथामे) जमीने पर सुतनाइकेँ पर्याप्त नै कहै छथि तँ बाल सुभाषक मनपर ओकर असरि, पैघ भेलोपर, यथावत रहैत अछि। ''सत्य विद्या''मे भारद्वाज ज्ञानकेँ स्वर्गसँ पैघ कहै छथि।
ई संग्रह बाल साहित्य लेल महत्व तँ रखिते अछि संगे ''विहनि कथा''क क्षेत्रफलकेँ सेहो बढ़बैत अछि।

गीतांजलि- जगदीश प्रसाद मण्डल

''चलू उचितपुर'' क उचितपुरमे सभक चालि-ढालि एक्के रंगक छै, एक्के भेष छै, आगि-पानिक भेद नै छै! ''बेढ़ब रूप...'' क ''अमवसिया पूर्णिमा'' बहुत किछु कहि जाइए।
''यार यौ...'' गीत बिपतिक गीत अछि। बाढ़िमे सभ किछु दहा जेबाक विवरणमे मन, चित-चेतन सेहो दहा गेल हेबाक विवरण अछि।
राजनन्दन लालदासकेँ समर्पित ''जुग-जुग...'' गीतमे मकड़जालमे फँसि सभ केबाड़ बन्न हेबाक गप कहल गेल अछि।
प्रोफेसर उदय नारायण सिंह ''नचिकेता'' केँ समर्पित ''गीतांजलि'' गीत संग्रह गेय अछि।

राति-दिन- जगदीश प्रसाद मण्डल

बाबा बाँझीक किरदानी नै बुझलनि, तामि-कोड़ि गाछ रोपलनि, पटेलनि; आ से गाछी भुताइ भऽ गेल? जे नै कहियो माटि देखलक से फुनगी पकड़ि अकास पकड़ि लेलक!

''हल्लुक काज'' क काजक हल्लुक लूरि पाबि भेल अनुभव, कलाकारक कलाकृति पाबि कएल अनुभव तँ अछिए; भावनाक संसार केना गढ़ल जाइए तकरो विवरण अछि।

''पट्टा छीमी'' क चासनी चित्त हुअए बा ''घरक लोटिया बुड़ले अछि'' सभ ठाम मैथिली पद्यक नव आ बेछप स्वरूप दृष्टिमे अबैए।

''राति-दिन'' केँ ई विशिष्ट बनबैत अछि।

इन्द्रधनुषी अकास- जगदीश प्रसाद मण्डल

मैथिली पद्यक नव आ बेछप स्वरूप ऐ पद्यमे देखबामे अबैए, ओ ''नाचि-नाचि नचारी गबैए''। पद्यमे जे आध्यात्मिक-पारलौकिक चिन्तन अबै छै, सेहो आएल अछि- जेना ''एक सिरजन दोसर उसरन / बदलब छी मात्र खेल''।

शब्द आ विषयक चयनमे कवि सतर्क छथि। रहस्य, निराशा, प्रश्नक संग उत्तर आ आशा अबैत जाइत रहैत अछि।

तीन जेठ एगारहम माघ- जगदीश प्रसाद मण्डल

''घरे-घरे...'' मे सभ घरमे ज्योति दीपक हएब मुदा सौंसे गाममे अन्हार पसरल हएब एकटा द्वैध प्रस्तुत करैए। ''कौशल जखनि...'' मे चालि कुचालि धाड़ी-धड़िया/ भूमि बनैत रहै छै उसर'' मे कारण सेहो देल गेल छै। ''आश प्रेम संग...'' मे मुदा आस घुरि अबैए।

सरिता- जगदीश प्रसाद मण्डल

जगदीश प्रसाद मण्डलक पद्य प्रश्न उठबैत अछि। कथ्यकेँ देखने अछि, आ निष्कर्षमे प्रश्न अनैत अछि। हिनकर गद्य रचनाक हिसाबे देखी तँ आशासँ बेसी निराशा देखा पड़ैत अछि। पद्य हिनका प्रश्नकेँ बा उत्तरकेँ विश्लेषित करबाक पलखति नै दै छन्हि, तँ ओ प्रश्न उठा-उठा उत्तर तकबाक प्रेरणा अपन पद्यक माध्यमसँ दै छथि। पद्यक ई बेछप रूप मैथिली साहित्यमे पहिल बेर आएल अछि।

बसुन्धरा- राजदेव मण्डल

जखन राजदेव मंडल कविता लिखै छथि तँ से हमरा सभकेँ सिहरा दैत अछि। कोनो गोलैसीक बा पंथक सोंगर नै चाही हुनकर सम्वेदनाकेँ। हुनकर पद्यक उत्कृष्टता भाषा-संस्कृतिक आधारक कारण छन्हि, आयातित विषय-वस्तु नै छन्हि, से आयातित सम्वेदना सेहो नै भेटत। बिम्बक संप्रेषणीयता हुनकर शब्दावलीमे छन्हि ! कविता रचब राजदेव मंडलक विवशता अछि, साहित्यिक विवशता। संवेदना घुरिआइत बाहर निकलैए आ हिनकर पद्य बनि जाइए।

सखारी-पेटारी- नन्द विलास राय

''असल बेटा''क जीतन मुखियाक विषयमे ओ लिखै छथि- जातिक मलाह, मुदा माछ मारैक कोनो लूरि नै!! ''चौड़चनक दही'' मे सोमनी अधा दूध बेरमावालीकेँ दऽ दैए। ''बाबाधाम'' मे लेखक कहैए- ''हमरा लेल बाबाधाम हमर माइए-बाबू छथि''।
नन्द विलास रायक कथ्य हुनकर अड़ोस-पड़ोसमे छन्हि।
''गोबरबीछनी'' क दुखनी परतीपर गोबर बीछि चिपड़ी पाथि निर्मली बजारमे बेचि अपन गूजर-बसर करऽ लगली। गैसक प्रयोग बढ़ल

तँ चिपड़ी बिकेनाइ कमलै आ ओकर समए भारी भऽ गेलै। ‘‘सोइरी छछारब’’मे छछारबाले मारि होइ छै, बहुतोकेँ पता नै हेतनि जे ऐ ले मारि किए होइ छै, कारण छै जे ऐ सँ आमदनी होइ छै।
नन्द विलास रायक ई लघु कथा संग्रह बहुत रास सम्भावना केँ तँ नुकेनहिये अछि, जे परसल गेल अछि सेहो कम रुचिगर नै।

अंशु- शिवकुमार झा ‘‘टिल्लू’’

मैथिली साहित्यमे सार्थक समीक्षाक प्रायः अभाव रहल अछि, ई पहिल पोथी अछि जइमे समीक्षक समीक्षासँ कार्य प्रारम्भ करै छथि आ समीक्षेमे समाप्त करै छथि। मारि लाम-काफ दैत प्रारम्भ करैत समयाभाव सेहो देखबैत समीक्षक जे अति आलोचना बा अति बड़ाइ करैत आएल छथि, बिनु पढ़ने तेहन समीक्षा कऽ दइ छथि जे जँ चाहथि तँ कोनो कथा, कविता, उपन्यास, नाटकमे तकरा फिट कऽ सकै छथि, तइ सँ भिन्न ‘‘अंशु’’ मैथिली साहित्यमे आलोचनाक नव अध्यायक प्रारम्भ करैए आ पुरान जर्जर समीक्षाक अन्तक घोषणा करैए। आ समीक्षक तँ आमुखमे कहै छथि-
‘‘समालोचनामे मात्र चारूकातसँ देखब प्रासंगिक नै, एकरा दसो दिससँ देखब उचित’’। ऐ दसो दिशासँ देखि कएल समीक्षाकेँ पढ़लाक बाद सरकारी संस्था सभ द्वारा संकलित-सम्पादित पोथी सभ झुझुआन बुझाएत, आ वर्तमानमे तथाकथित स्थापित समीक्षक सभक समीक्षा अनैतिक लागत, आ सएह कारण रहल, ऐ तरहक समीक्षा ‘‘सृजनहारक रचनात्मकतामे वागीश वृद्धि’’ करबामे असफल रहल, नीक लेखक मैथिली साहित्यसँ कतिया देल गेला, जोगारी लोक ऐ तरहक समीक्षासँ कूपमंडूकताक शिकार भऽ गेला, सरकारी संस्था सभ द्वारा संकलित-सम्पादित पोथी सभ गोदाममे सड़ि गेल कारण पाठकक स्नेह ओकरा नै भेटलै।

''अंशु''क समीक्षा ऐ अर्थँ आर महत्वपूर्ण भऽ जाइए।

बाप भेल पित्ती आ अधिकार- बेचन ठाकुर

''बाप भेल पित्ती'' सामाजिक नाटक अछि, संतोष भीख मांगि मनोजकँ पढ़बैए आ घुरि कऽ घर जाइए।

''अधिकार'' सूचनाक अधिकारपर आधारित नाटक छी। ई नाटक इन्दिरा आवास योजनाक अनियमितताकँ आर.टी.आइ.सँ देखार करैबला आ रिक्शासँ झंझारपुरसँ दिल्ली जाइबला असली चरित्र मंजूरक कथा अछि जे डिलीट नै कएल जा सकल मुदा किए डिलीट कएल जा रहल छल, किनकर हितकँ ऐ नाटकसँ खतरा छन्हि /छलनि आ किए एकर विरोध एतेक तीव्र रूपमे भेल, से सभटा आब फरिच्छ भऽ गेल अछि।

बिसवासघात- बेचन ठाकुर

बिसवासघात नाटक बेचन ठाकुर जीक द्वितीय इनिंगक प्रारम्भक घोषणा करैत अछि। ई हिनकर अखन धरिक सभसँ पैघ नाटक अछि। विषय-वस्तुक चयनमे मूल धाराक नाटककार अखनो ''गोनू झा'' आ ''लोक कथा''क (बिना वर्तमान परिप्रेक्ष्यमे कथाकँ लेने) सोंगर लेनहिये छथि, मूलधाराक समीक्षक ओइमे जबर्दस्ती नारी-विमर्श आ की-की जबर्दस्ती देखबऽ लगै छथि आ नाटककारकँ इनारक बेंग बनबैत रहै छथि। ऐ परिस्थितिमे समानान्तर धाराक ई नाटककार, वर्तमान ''एन.एच.'' परियोजनाक क्षतिपूर्तिक पाइ लेल जे घटना-कुघटना घटित भऽ रहल छै, तकरा ऐ नाटकक कथा बनेलनि अछि। पुलिस-प्रशासनक कुरुप रूप सोझाँ अबैए। ऐ नाटकक मंचन नै हुअए, तइ लेल नाटककारकँ धमकी सेहो

भेटलनि, मुदा ओ अपन लेखकीय प्रतिबद्धता नै छोड़लनि आ ''विदेह नाट्य उत्सव'' मे ई नाटक ६ घण्टासँ ऊपर धरि चलल आ लोक मंत्रमुग्ध देखैत रहला।
बेचन जी भ्रूण-हत्या, अन्धविश्वास, सूचनाक अधिकार पर पहिनहिये नाटक लिखि चुकल छथि। ''एन.एच'' सड़क परियोजनापर हिनक लिखल ई नाटक ई सिद्ध करैए जे समानान्तर परम्पराक नाटककार समाजमे उठै-बैसै छथि, जुड़ल छथि।

हमर टोल- राजदेव मण्डल
यात्रीक ''पारो'' मिथिलाक ब्राह्मण जातिक तत्कालीन सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति-परिस्थितिमे लिखल ''फर्स्ट हैण्ड'' विवरण छल। राजदेव मण्डल जीक ई उपन्यास मिथिलाक धानुक जातिक सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति-परिस्थितिमे लिखल कृति अछि। अंधविश्वास, समाज सुधार, प्रेम, घृणा, आशा-निराशा सभटा एतऽ मिज्झर अछि। ललितक ''पृथ्वीपुत्र''क बाद एकटा अन्हार पसरल छल, मूलधाराक लेखक-समीक्षक बौआ रहल छला। राजदेव मण्डलक ''हमर टोल'' ''पृथ्वीपुत्र''क सेकेण्ड-हैण्ड विवरणकेँ ''फर्स्ट हैण्ड'' विवरणसँ परिष्कृत करैए, मैथिली साहित्यक धाराकेँ आगाँ बढ़बैए। लेखक उपन्यासकेँ दुखान्त बनेबा लेल विवश भेला। किछु लड़ाइ ओ नै देखै छथि, बा ओ नै देखऽ चाहै छथि आ किओ नै देखैए। मुदा ओ तकरो विवरण दै छथि।

''सभ धड़फड़ा कऽ चलि देलक।

कौआ-मैनाक लड़ाइ शुरू भऽ गेल। जेकरा कियो नै देखलक किन्तु गाछ देखलक। आर बहुत किछु देखतो गाछ चुप्पे रहल।''
ओइ चुप्पीक ओझराहटिक विवरण, नै देखलका गपक ''फर्स्ट हैण्ड'' विवरणसँ परिष्कृत ई उपन्यास मैथिली साहित्यक इतिहासमे

अपन स्थान सुरक्षित कऽ लेने अछि।

सगर राति दीप जरयक इतिहास- कथाक कथा

सगर राति दीप जरयक इतिहास जे रमानन्द झा *रमण* द्वारा परसल जा रहल अछि, ओइमे एकर प्रारम्भ केना भेलसँ लऽ कऽ अखन धरिक इतिहास मे बहुत रास विसंगति अछि। एकर प्रारम्भ केना भेलसँ लऽ कऽ अखन धरिक इतिहासमे बहुत गोटेक योगदान बढ़ा कऽ, बहुत गोटेक घटा कऽ, बहुत गोटेक परिवर्तित कऽ कऽ प्रस्तुत कएल गेल तँ बहुत गोटे निपत्ता कऽ देल गेला। कहल गेल जे ई स्वायत्त संस्था अछि मुदा चेतना समितिक दिससँ रमण आ अजित आजाद सम्मिलित होइत रहला आ जतऽ कियो माला नै उठेलक ओतऽ ई लोकनि चेतना समिति दिससँ माला उठेलन्हि आ संयोजकमे चेतना समितिक नाम नै आन नाम इतिहास बनबै लेल देल गेल। चेतना समिति (गौरीनाथक सूचनाक अनुसार) जखन गौरीनाथ, अग्निपुष्प आ प्रदीप बिहारी पर लिखित प्रतिबन्ध लगेलक तकरा बाद बिहारी द्वारा लिखित माफी ऐ मैरेज हॉल (चेतना समिति) सँ मांगल गेल, फेर हुनका रचना लेल नै, वरन ऐ कृत्य लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार देल गेल आ ओ सेहो ऐ मैरेज हॉलक प्रतिनिधि भऽ गेला। ई मैरेज हॉल साहित्य अकादेमीसँ मान्यताप्राप्त संस्था अछि! फेर ई तिकड़ी श्याम दरिहरे- प्रदीप बिहारी आ रमानन्द झा रमण- संग मिलि कऽ सगर रातिमे की सभ केलक से रमणक जातिवादी इतिहासमे नै भेटत।

की छल ओइ सगर रातिक रजिस्टरमे जकरा रमण कहि रहल

छथि जे विभारानी हेरा देलन्हि। की ई रजिस्टर हेरा गेल बा हेरा जाइ देल गेल। मुदा किछु गप जे नै रमणकेँ बुझल छन्हि ने विभा रानीकेँ से अछि जे आरती कुमारी अपन मृत्युसँ २-३ दिन पहिने ओकर फोटो स्टेट उमेश मण्डलकेँ पठा देलखिन्ह। ओ चाहितथि तँ कोने झारे झाकेँ सेहो पठा सकैत रहथि, मुदा हुनका झारेझा सभपर विश्वास नै छलन्हि, किए नै छलन्हि? कहल गेल छै जे शोनित अपन निशान छोड़िते अछि।

दरभंगा बला गोष्ठी, जे ३१ मइ २०१४ केँ दरिहरे- रमण- बिहारी द्वारा साहित्य अकादेमी आ ओकरा द्वारा मान्यता प्राप्त फर्जी मैथिली संस्था सभक संग रमण-दरिहरे-बिहारी सन-सन जातिवादी ब्राहमणवादी-कायस्थवादी तथाकथित साहित्यकार सभ द्वारा प्रायोजित रहत, आ ओ ऐ तरहक (दिल्लीक बाद) दोसर गोष्ठी रहत जकरा रमण-दरिहरे-बिहारी ८३म गोष्ठी सेहो कहता। ओतऽ "राडक़ सुख बलाय" आदि कथाक वाचन हएत। मेहथ बला गोष्ठी मे रमण-दरिहरे-बिहारी सन जातिवादी ब्राहमणवादी-कायस्थवादी प्रतिबन्धित छथि।

कहल जाइ छै जे *सगर राति दीप जरय* नव कथाकारक लेल ट्रेनिंग सदृश अछि। नव कथाकार कलमाएल जाइ छथि! मुदा सत्य की अछि? की एकर प्रवृत्ति साहित्य अकादेमीसँ भिन्न अछि? की ऐपर कब्जा लेल साहित्ये अकादमी सन छल प्रपंच नै होइ छल!

आ ७९म सगर रातिक हीरन्द्र झा आदि द्वारा बहिष्कार आ रमणक ओतै जातिवादी उद्घोष उमेश पासवानक नै, मैथिलीक विरोध छल, कब्जाक राजनीतिक प्रारम्भ ७९म सगर रातिसँ पहिनहियो छल। ७४म सगर राति -हज़ारीबागमे प्रदीप बिहारी माला उठेबाक प्रस्ताव केलन्हि आ से छल मात्र दोसराक प्रस्ताव खसेबा लेल। अपन ग्रुपक क़ब्जा लेल मात्र ई प्रस्ताव छल। ओ अपन प्रस्ताव

अपन ग्रुपक पक्षमे आपिस लऽ लेलन्हि। ओ ई नाटक ७५म सगर रातिमे सेहो केलन्हि। तँ की ऐ ब्लैकमेलिंगक धंधामे हुनकर उपयोग कएल जा रहल छन्हि आकि ओ ऐ ब्लैकमेलिंगक धंधाक मुख्य कलाकार छथि? हुनकर रचनामे जान नै छन्हि मुदा घृणित राजनीतिमे जान छन्हि। आ साहित्य अकादेमी पुरस्कार एहने गुणपर देल जाइ छै, से चेतना समितिसँ माफी मांगि पएर पकड़ि ओ निर्लज्जतापूर्वक लेलन्हि। से ओ ऐ ब्लैकमेलिंग धंधाक मुख्य कलाकार छथि जकरा बुझल छै जे नीक रचना लिखबापर ध्यान देनाइ मूर्खता छै, ओइसँ प्राइज नै भेटै छै, साहित्य अकादेमी लेल जोड़-तोड़ चाही आ ओइमे ओ मास्टर छथि, मैथिली गेल तेलहण्डामे।

आ ऐ परिस्थिति मे नव कथाकारक ट्रेनिंग नै भेलै, जतेक लोक सगर रातिसँ जुड़ला ओइसँ बेसी हतोत्साहित कऽ मैथिली साहित्यसँ दूर कऽ देल गेला, नेट रिजल्ट माइनसमे रहल!

बहिष्कारक राजनीतिसँ सुपौल, देवघर आ नरहनक गोष्ठी प्रभावित रहल तँ कब्जाक राजनीतिक अन्तर्गत काठमाण्डूक सगर रातिमे कोनो स्थानीय साहित्यकारकेँ धीरेन्द्र प्रेमर्षि हवा नै लागऽ देलखिन्ह जे एहन कोनो गोष्ठी हुअएबला अछि, मनोज मुक्ति ई सूचित करै छथि। कबिलपुरक गोष्ठीमे सोमदेव आ रमानन्द रेणुकेँ नै बजाएल गेलन्हि। राजनन्दन लालदास कहै छथि जे सएह कारण छल जे आयोजक योगानन्द झा ऐ गोष्ठीक रिपोर्ट ‘‘कर्णामृत’’ लेल नै पठेलन्हि, जखन कि दोसरा द्वारा आयोजित गोष्ठी सभक रिपोर्ट ओ पठबै छलखिन्ह। योगानन्द झापर कबिलपुरक कोन ग्रुपक प्रेसर छल? ओही ग्रुपक जे ‘‘विद्यापति टाइम्स’’ नाम्ना *अपने छापू अपने पढ़ू* पत्रमे ई न्यूज हुनका माध्यमे छपबेलक- ‘‘घरदेखियासँ आगाँ नै

बढ़ि सकला *बनैत बिगड़ैतक* लेखक सुभाष चन्द्र यादव''- मोहन भारद्वाज *मैथिली लेखक संघक बनैत बिगड़ैत*पर भेल गोष्ठीमे बजला। जखन कि नवेन्दु कुमार झा सूचित देलन्हि जे ओइ गोष्ठीमे बनैत बिगड़ैतपर मात्र अशोक आ तारानन्द वियोगीक आलेख आएल। ओना मोहन भारद्वाज आ योगानन्द झा ओइ गोष्ठीमे उपस्थित रहथि, आ आपसी गपशप-लूज टॉक भेल हेतन्हि जे गोष्ठीक कार्यक्रमक अन्तर्गत नै छल। २०१३ दिसम्बरमे साहित्य अकादेमी पुरस्कारक घोषणा भेल, योगानन्द झाकँ कबिलपुर ग्रुप जूरी बनेलकन्हि आ बनैत बिगड़ैतक लेखक सुभाष चन्द्र यादवकँ ई पुरस्कार कोना देल जइतन्हि!

***सुभाष चन्द्र यादवक "बनैत-बिगड़ैत", साहित्य अकादेमी आ ओकर पुरस्कार*:** साहित्य अकादेमीकँ सुभाष चन्द्र यादवसँ भतबड़ी छै। मनुक्खक मनुक्खसँ भतबड़ी होइ छै, मुदा जखन कोनो संस्थाक मैथिली विभाग कोनो मनुक्खक खास संकीर्ण वर्गक कब्जामे चलि जाइ छै तखन ओ संस्था सेहो मनुक्खे संग व्यवहार करऽ लगै छै। पछिला बेर नचिकेताक "नो एण्ट्री: मा प्रविश" क अन्तिम बेर छलै आ ऐ बेर सुभाष चन्द्र यादवक "बनैत-बिगड़ैत"क अन्तिम बेर। ऐ पोथीकँ आब साहित्य अकादेमी पुरस्कार नै देल जा सकतै। कारण एकटा संस्थाकँ एकटा पोथीसँ भतबड़ी भेल छै। मूल परम्परा सुखाएल इनारक बेंग छी जकर मृत्यु आसन्न छै। ने ऐसँ "नो एण्ट्री: मा प्रविश" क आ नहिये "बनैत-बिगड़ैत"क महत्व साहित्यिक रूपसँ कम हेतै। मिथिला राज्यक ढोंगी आडम्बरी नेता सभक लेल ओना ई खुशीक विषय थिक मुदा समानान्तर परम्परा लेल ई एकटा चेतौनी छी। की मिथिला राज्य सेहो समानान्तर परम्परासँ भतबड़ी करतै? की ओकरो स्वरूप साहित्ये अकादेमी सन रहतै? मिथिला राज्यक आडम्बरी सभकँ ई उत्तर देबऽ पड़तै आ नै

तँ ओकरो स्थिति सुखाएल इनारक बेंग सन हेतै!!!
मिथिला राज्यक लेल जँ अहाँकेँ क्यो धरणा दैत, सभा करैत देखाथि तँ हुनकासँ ई अवश्य पूछू जे "मिथिला यूनिवर्सिटी" "आकाशवाणी दरभंगा" आ "साहित्य अकादेमी" मे जे भऽ रहल अछि सएह "मैथिल ब्राह्मण मात्र लेल मिथिला राज्य" मांगैबलाक मिथिला राज्यमे हएत, से जे शंका सभकेँ छै से की असत्य नै छै, आ ऐ लेल मिथिला राज्य आन्दोलन कर्मी घोषणा करथु जे कहियासँ साहित्य अकादेमीक संयोजिका आ मेम्बर सभक घरक सोझाँमे आमरण अनशन करबाक घोषणा कऽ अपन प्रतिबद्धताक प्रमाण उपलब्ध करेता।

पटना, दिल्ली आ दरभंगामे प्राथमिक शिक्षामे आ दूरस्थ रूपेँ मैथिलीक पाठन लेल अनशन केनिहार सभ एकटा पैघ षडयंत्रक हिस्सा भऽ सकै छथि, मैथिलीक सिलेबसमे भऽ रहल अन्यायक प्रति हिनकर सभक चुप्पी सएह सिद्ध करैए। मैथिलीक सिलेबसमे वएह जमीन्दारक जीवनी आ चारिटा परिवारक स्तरहीन ब्राह्मणवादी कथा-कविता-नाटक देल जाइत रहतै, ओइ भूप सभ लेल अनशन केलासँ मैथिलीकेँ भऽ रहल हर्जा आर बढ़बे करतै। मैथिलीक जातिवादी सिलेबसक खिलाफ अनशन मात्रसँ मिथिला राज्यक ब्राह्मणवादी आन्दोलनी सभक कलंक मेटा सकै छन्हि। पटना, दिल्ली आ दरभंगामे प्राथमिक शिक्षामे आ दूरस्थ रूपेँ मैथिलीक पाठन लेल अनशन केनिहार सभक कार्यकलाप जाधरि स्प्ष्ट नै भऽ जाए, ओ सभ मूल धाराक एजेण्ट छथि सएह बुझबाक चाही, आ हुनका सभक प्रति ओही तरहक व्यवहार हेबाक चाही।

अशोक अविचल, श्याम दरिहरे, रमण आदि देवघरक आयोजक

ओमप्रकाश झापर साहित्य अकादेमीक गोष्ठी कें सगर रातिक मान्यता देबा लेल ब्लैकमेलिंगक कऽ ई शर्त रखलन्हि जे तखने ओ सभ ऐमे सम्मिलित हेता आ नै तँ बहिष्कार करता। मुदा आरती कुमारीक हत्याक बाद ई पहिल मौका छल बलैकमेलर सभकें हरदा बजेबाक, आ समीक्षा-प्रतिसमीक्षासँ बढ़ैत ई गोष्ठी अभूतपूर्व सफलता प्राप्त केलक, बलैकमेलर सभक बहिष्कार ओकरा आर सबल बनेलकै। दरिहरे आयोजककें कहलन्हि जे साहित्य अकादेमीक गोष्ठी कें मान्यता सगर रातिक रूपये भेटए, तइ लेल मैथिली लेखक संघ, पटनाक बैसकीमे रमणक कहलासँ ओ ऐलेल फोन केलखिन्ह। अविचल सेहो आयोजककें सएह कहलखिन्ह।

देवघर गोष्ठी ट्रेनिंग स्कूल सिद्ध भेल, रमण, दरिहरे आ बिहारी अबितथि तँ सिखितथि जे केना रचनामे ओ क्वालिटी आनि सकै छथि, मुदा ओ सभ प्रैकटिकल छथि, बुझल छन्हि प्राइज टा लेल लिखल जाइ छै आ से जोड़-तोड़सँ भेटै छै, क्वालिटीसँ नै, अविचलमे प्रतिभा लेशो मात्र नै छन्हि, हुनका कोनो ट्रेनिंग किछु नै दऽ सकतन्हि, से ओ नै आबि अपन टाइम बचेलथि आ से नीके केलथि।

सगर राति दीप जरयमे क्वालिटी आबि जाएत तँ बिहारी-दरिहरे-रमण सन मेडियोकरकें के पूछत, से ओ सभ *राड़कें सुख बलायक लेखक* (!) क संग दोसर साहित्य अकादेमी गोष्ठी करता जतऽ ब्राह्मण युवा सभकें *राड़कें सुख बलाय* सन नीक कथा केना लिखल जाए तकर ट्रेनिंग रमण-बिहारी-दरिहरे द्वारा देल जाएत। नीके अछि, मूर्ख सभक प्रवेश सगर रातिमे थम्हत। आ परोक्ष रूपेँ ऐ लेल मैथिली साहित्य रमण-बिहारी-दरिहरेक आभारी रहत।

दरिहरे-बिहारी-रमणक बहिष्कारक रणनीति द्वारा सगर रातिपर कब्जाक राजनीति आरती कुमारीक संग भागलपुरमे चलि सकल

मुदा वएह राजनीति २ सालक बाद देवघरमे तेनाकेँ फेल भेल जे ओ सभ पहिने सगर रातिसँ पड़ाइन केलन्हि आ फेर निकालि देल गेला। ब्राहम्णवादी भाषाक रूपमे विश्वमे ख्यात ऐ साहित्यमे कोन प्रक्रिया चलि रहल अछि जे ई संभव केलक? सगर राति दीप जरयक ब्राहम्णवादी अनुष्ठानकेँ एकर स्वयंभू पुरोहित सभ द्वारा आरती कुमारीक बलि देल जा चुकल छल। भयक ऐ वातावरणमे ई परिवर्तन केना भेल जे रमण-बिहारी-दरिहरे नै बूझि सकला?
मैथिली भाषाक ब्राह्मणवादी चरित्रमे भाषाक संग खूब खेल खेलाएल गेल छै। राड़क मतलब एतऽ छै (ब्राहम्णक नजरिमे) भुमिहार, राजपूत, कायस्थ सहित सभ आन जाति। अपन बच्चाकेँ *यौ* आ राड़क बुढ़बाकेँ *हौ*! कहबी मे सेहो बेइमानी, जेना- दस ब्राहम्ण दस पेट, दस राड़ एक पेट! मुदा हमर माँ कहै छथि जे ई कहबी मात्र ब्राहम्णमे छै, आन सभ कहै छथि- दस राड़ दस पेट, दस ब्राह्मण एक पेट। मुदा बिहारी सन मेडियोकर साहित्यकारकेँ ई सभ गप नै बुझल छन्हि- ओ बुझै छथि जे *राड़केँ सुख बलाय* तँ जगदीश प्रसाद मण्डलपर रमण-बिहारी-दरिहरे लिखबेने छथि। रमण आ दरिहरे तँ ठीक सोचै छथि मुदा बिहारी तँ कायस्थ छथि आ दरिहरे-रमणक परिभाषा अनुसार राड़केँ सुख बलाय जगदीश प्रसाद मण्डलक अतिरिक्त हुनके टा पर नै वरण समस्त मिथिलाक गएर ब्राहम्णकेँ देल गारि अछि।
विदेह घरे-घरे घुसि चुकल अछि, से ३१ मइ २०१४ केँ रमण-दरिहरे-बिहारीक "राड़केँ सुख बलाय" कथा गोष्ठीमे शामिल सभ ब्राहम्ण-छद्म कथाकारक लिस्ट हमरा ०१ जून २०१४ क भोरमे पठाउ।
आब आउ सगर रातिकेँ खतम करबाक साहित्य अकादेमीक मैथिली

शाखा आ ओकरा द्वारा मान्यताप्राप्त फ़र्ज़ी संस्था सभक पर।
रमण साहित्य अकादेमीक मैथिली शाखासँ लाखक लाख असाइनमेण्ट क़ताक सालसँ लऽ रहल छथि, से हुनका ई भार देल गेलन्हि जे सगर रातिपर विदेहक प्रभावकँ ओ ओहिना ख़त्म करथु जेना आरती कुमारीकँ ओ बिहारी-दरिहरे संग मिलि कऽ ख़त्म केने रहथि। मुदा हुनकर एस्टीमेट ऐबेर गड़बड़ा गेलन्हि, मैथिली लग आब पाठक छलै, शक्ति छलै, स्तर छलै, से मेडियोकर रमण-बिहारी-दरिहरे नै बुझि सकला। ख़ून रंग आनै छै, चेन्हासी छोड़ै छै .....ख़ून ख़ूनीकँ ताकि लै छै।
मिथिलामे दुर्गापूजामे मोटामोटी चन्दा ओसूलि कऽ पूजा होइ छै। बस रोकि कऽ चन्दा ओसूली सरस्वती पूजा लेल आब शुरू भऽ गेल छै, पहिने नै होइ छलै, कारण ई पर्व व्यक्तिगत निष्ठासँ सम्बन्धित छल। ओ निष्ठा यज्ञोपवीत करबा कऽ मूर्खतापूर्वक मोछैल आ क्लीन शेव (संगे पाग पहिरने!) विद्यापतिक कोनो तत्कालीन वेशभूषाक अध्ययनसँ रहित जातिवादी कलाकार द्वारा बनाओल फोटोपर माल्यार्पणक विद्यापति पर्वमे सेहो नै भेटत। ई विद्यापति पर्व सभ , जातिवादी रंगमंच, साहित्य अकादेमीक मैथिली शाखा, प्रज्ञा संस्थान, साझा प्रकाशन आ सगर राति दीप जरय मैथिलीमे कट्टरता बढ़ेलक आकि घटेलक?
विश्वकर्मा पूजा, दुर्गापूजा आदि ई दाबा नै करैए जे ओ सभ मैथिली लेल काज करै छथि। मुदा ई सभ समाजमे मिलि काज केना करी से सिखबैए। एकर विपरीत विद्यापतिकँ यज्ञोपवीत करबाकऽ जे सांस्कृतिक संस्थापर कब्जाक राजनीति सिखाएल गेल से जातिवादी रंगमंचमे पैसल, कोलकाताक कुर्मी-क्षत्रिय समाज मैथिलीसँ अलग कऽ देल गेल। छिट्टाक छिट्टा पोथी आ सम्मान मैथिल ब्राहम्ण आ कर्ण कायस्थ लेल रिज़र्व भऽ गेल। दोसर जँ हिम्मत केलक तँ

बूढ़ा सभ लफुआ युवाकेँ साहित्यकार बना कऽ हुलकाबऽ लगला। "राड़केँ सुख बलाय"क लेखक केँ श्याम दरिहरे, प्रदीप बिहारी आ रमानन्द झा रमण द्वारा हुलकाएब ऐ प्रक्रियाक टटका उदाहरण अछि। मुदा ई प्रक्रिया जे ५० सालसँ मैथिलीमे ब्राह्मणवाद आ कायस्थवादक संजीवनी बूटी छल कोना धराशायी भऽ गेल। मैथिली साहित्यमे एहन की भऽ रहल अछि, कोन ऐतिहासिक क्रिया-प्रतिक्रिया चलि रहल अछि जे ई संभव केलक, आ जे रमण-बिहारी-दरिहरे आ हुनकर सभक आका साहित्य अकादेमीक मैथिली विभाग आ जातिवादी रंगमंच नै बूझि सकल?

सगर राति दीप जरय द्वारा ब्राहम्ण युवामे जे कट्टरता ढुकाओल जा रहल छल से जखन तोड़ल गेल तँ बिहारी- रमण- दरिहरे आ आका सभ बूझि नै सकल जे की भऽ रहल अछि आ अन्ततः ओ सभ अपन पेशेन्स खतम कऽ लेलन्हि। मुदा ऐबेर तँ दुनियेँ उनटल छल।

रहुआ संग्रामक कथा गोष्ठीमे रमणजी सहित सभ निर्णय लेलन्हि जे राति भरि कियो नै सुतता, मुदा भोजनसँ पहिने जखन सभ नामी(!!) कथाकारक पाठ कऽ सुति रहला तँ भोरहरबामे जे युवा सभ नामी कथाकार लोकनिक कथा सुनने रहथि, तिनकर नम्बर एलन्हि। आशीष अनचिन्हार जखन कथा पढ़ैले एला तँ संचालक ओँघा रहल छला आ मात्र अध्यक्ष शिवशंकर श्रीनिवास जागल रहथि, नै सुतबाक निर्णय लेनहार रमणजी फोंफ काटि रहल रहथि, जकर विरोधमे अध्यक्षक कहलाक उपरान्तो आशीष अनचिन्हार कथा पाठ करबा सँ मना कऽ देलन्हि, ओ पोस्ट माडर्न कथा बादमे "विदेह लघु कथा" मे प्रिन्टमे छपल।

मुदा ब्राह्मणवादी सेंसर प्रक्रिया एतेक जब्बर छै जे ने आयोजक, ने

रमण आ ने अध्यक्ष-संचालकक फर्जी सगर रातिक इतिहासमे एकर वर्णन भेटत। अरुचिकर गपकेँ झाँपि देबाक ब्राह्मणवादी प्रवृत्ति एकर कारण अछि।

८१ टा सगर राति भेबो कएल आकि नै, लोक हमरासँ पुछै छथि। पहिने डाकसँ रचना आबै आ से नामी (!!) कथा सभ पढ़ल जाइ छलै, जे युवा सभ सदेह आबथि तिनकर नम्बर एबे नै करन्हि, एबो करन्हि तँ सुतलाहा बेरमे, मुन्नाजी जखन एकर विरोध केलन्हि तँ वएह कहल गेल, गप झाँपू, रजिस्टरमे ओइ नै एनिहार सभक सेहो उपस्थिति दर्ज भेल तँ। बहुत कथा गोष्ठीमे दसो टा कथाकार नै एला, मुदा उपस्थिति रजिस्टरमे बहुत रास उपस्थित भेटता, किछु एबे नै केला, किछु डाकसँ एला(!!) आ किछु हाजरी बना कऽ निपत्ता भऽ गेला सेहो। जेना युद्धमे ३००० सँ कम मुइने ओकरा युद्ध नै कहल जाइए, तहिना दस टा सँ कम उपस्थितिकेँ सगर राति केना कहल जा सकत? ८१ क संख्या बड्ड कम भऽ जाएत, ८१ बड्ड बेशी होइ छै, एतेमे तँ शान्त क्रान्ति भऽ जइतए, से किए नै भेल तकर कारण ऊपर देल अछि।

ऐ समानान्तर आन्दोलनमे हमरा सहयोग चाही बा विरोध, धनाकर ठाकुर आ गंगेश गुंजनक "आइडियोजिकल न्यूट्रेलिटी"क मतलब सेहो एकेटा छै, आ से छै समानान्तर धाराक विरोध।

आ इतिहास हमरो मूल्याँकन करत आ हुनको (विरोधी आ न्यूट्रल फिफ्थ कालमनिस्टक) ।

विदेहक सम्बन्धमे धीरेन्द्र प्रेमर्षिकेँ एकटा फकड़ा मोन पड़ल छलन्हि- "खस्सी-बकरी एक्कहि धोकरी"। राजा सलहेसक गाथामे जतऽ सलहेस राजा रहै छथि चूहड़मल चोर भऽ जाइ छथि आ जतऽ चूहड़मल राजा रहै छथि सलहेस चोर भऽ जाइ छथि। साहित्यक ब्राह्मणवाद जातिक आधारपर समीक्षा करैए, समानान्तर परम्पराक

उदारवाद कट्टरता विरोधी अछि। समानान्तर परम्परा मिथिला आ मैथिलीक उदार परम्पराकेँ रेखांकित करैए तँ ब्राह्मणवादी समीक्षाकेँ मिथिलाक कट्टर तत्व प्रभावित करै छै। समानान्तर परम्पराक घोड़ा ब्राह्मणवादी समीक्षामे गधा बनि जाइए, आ ब्राह्मणवादी साहित्यमे तँ गधा छैहे नै, सभ घोड़ाक खोल ओढ़ने छै। आ सएह कारण रहल जे मैथिलीक सुखाएल मुख्य धाराक साहित्य दब अछि। आ सएह कारण रहल जे अतुकान्त कविता हुअए बा तुकान्त, बहरयुक्त गजल हुअए बा आजाद गजल; रोला, दोहा, कुण्डलिया, रुबाइ, कसीदा, नात, हजल, हाइकू, हैबून बा टनका-वाका सभ ठाम समानान्तर परम्परा कतऽ सँ कतऽ बढ़ि गेल; नाटक-उपन्यास-समीक्षा, विहनि-लघु-दीर्घ कथा सभ क्षेत्रमे अद्भुत साहित्य मैथिलीक समानान्तर परम्परामे लिखल गेल मुदा ब्राह्मणवादी सुखाएल मुख्यधारा आ जातिवादी रंगमंच छल-प्रपंच आ सरकारी संस्थापर नियंत्रणक अछैत मरनासन्न अछि।

बहुत लोक ऐ तरहक कमेण्ट पछिला ६ सालसँ दऽ रहल छथि जे आब विदेह बदलि गेलै, ओकरा सभ सन भऽ गेलै। विदेहक उद्देश्य ने बदलल छै आ ने बदलतै। कोन व्याख्या ककर तुष्टीकरण छै से स्पष्ट बिनु केने ऐ तरहक कमेण्ट कएल जाइत अछि। हुनकर आशा जँ ई रहैए जे मैथिली साहित्य केँ युवाक उत्साह विदेहक माध्यमसँ नव दिशा प्राप्त करत आ से आब लागि रहल अछि जे से आब व्यक्तिगत कुण्ठाक मंचक रूपमे दुरुपयोगी भऽ गेल अछि तँ ऐ सम्बन्धमे हमर यएह कहब अछि जे सत्यक कियो उपयोग कऽ सकैए आ कियो दुरुपयोग, जे हुनका दुरुपयोग आ व्यक्तिगत कुण्ठाक तुष्टीकरण आब लागि रहल छन्हि से बहुत गोटेकेँ ६ साल पहिनहियेसँ लागि रहल छन्हि, आ तकर व्याख्या हमरा लग यएह

अछि जे ओ सभ मात्र विदेहसँ सिम्बोलिक विरोधक आशा करैत रहथि, असली परिवर्तन नै चाहनहारकेँ यएह असली ब्राह्मणवाद बुझेतन्हि, कारण बदलल पात्रसँ ब्राहम्णवादी मानसिकता उद्वेलित भऽ गेल छै, ओ गेल तँ हम अबितौं मुदा ई सभ के आबि गेल? अहाँकेँ बुझबाक चाही जे मैथिली आगाँ एलै, जकरा जतेक प्रतिभा छलै ओ विदेहक माध्यमसँ ततेक सिखलकै आ ततेक आगाँ बढ़लै आ बढ़तै। किछु लोक जँ स्वार्थक लेल विदेहसँ जुड़ला मुदा आनुवंशिक जाति श्रेष्ठता हुनकासँ विदेहक निश्छल प्रयासोक बावजूद नै गेलन्हि, आ जइ विदेहकेँ ओ साहित्य आन्दोलन बुझै छला (हृदयसँ नै) आ विदेहकेँ इमोशनल ब्लैकमेल, धमकी , हमरा आ हमरा परिवारकेँ ईमेल- फोनसँ गारि, छोड़ि कऽ जेबाक धमकी (छोड़ि कऽ जेबाक धमकी देनिहारमे संयोगसँ अखन धरि मात्र ब्राहमणे छथि जिनका लगै छन्हि जे सिमबोलिक प्रोटेस्ट धरि मात्र विदेह सीमित रहितए), जे आब अहूँ वएह (!!), बुझलौं प्राइज़ लेल, फलनाकेँ दिआबए चाहै छिऐ, अपने लिअ चाहै छी, व्यक्तिगत राजनीति, विदेहक भला नै हएत, ई सभ ६ सालसँ सुनि- सुनि हमर कान पाकि गेल अछि। रामदेव झा आ अमर पहिनेँ कहैत रहथि, हम अपन कनियाँकेँ पुरस्कार दिआबऽ चाहै छिऐ, अपने लिअ चाहै छी, सभ हँसि देलकन्हि जे साहित्य अकादेमीक मैथिली विभाग निर्वस्त्र अछि, दोसराकेँ की सम्मानित करत तँ आब कहि रहल छथि जे उमेश मण्डल ,राजदेव मण्डल, बेचन ठाकुरकेँ हम पुरस्कार दिआबऽ चाहै छिऐ। मोहन भारद्वाज देवशंकर नवीनक सोझाँ कहै छथि जे गजेन्द्र ठाकुर पागले ने छै जेना लखन झा छलै। दरिहरे सेहो लाल बुझक्कर छथि, हुनका आब बुझबामे आबि गेलन्हि जे हमरा साहित्य अकादमी सँ झगड़ा अछि तँ, व्यक्तिगत राजनीति तँ।

बिहारी मुन्नाजीकेँ फ़ोन करै छथि आ कहै छथि मात्र जगदीशे मण्डलकेँ किए आगाँ बढ़ाओल जा रहल अछि (!!) ब्राहम्णवादी मानसिकता ई छिऐ, जे जगदीश मण्डल मेरिटसँ नै, बढ़ेलासँ आगाँ बढल छथि जेना मैथिली साहित्यमे पहिने होइ छलै। प्रदीप बिहारी मुन्नाजीकेँ कहै छथि जे विदेह किए जातिवादी रंगमंचक विरोध करैए, किए समानान्तर परम्परा भऽ कऽ मूल परम्पराक गुणवत्ताक समीक्षा करैए, समानान्तर तँ मूलसँ मिलिते नै छै तँ किए हमर सभक नाम लै छी, अलग रहू, यएह छिऐ असल ब्राहम्णवाद-कायस्थवाद। चर्चे नै कर, काने बात नै दे!! आ ईहो संयोगे अछि जे जइ २-४ टा लोककेँ दिक्कत छन्हि से ब्राहम्णवादी प्रवृत्तक छथि, अनका ई दिक्कत किए नै छन्हि। पछिला ६ सालसँ विदेह जहिना छल ओहने रहत, अगिला कमसँ कम ३० साल धरि मैथिली साहित्य आब अहिना चलत। विदेहमे जकरा जे मेरिट छै ओ ओतेक बढ़त, चाहे ओ कोनो जाति, धर्म, क्षेत्रक होथि। विदेह जिनका बदलल लागि रहल छन्हि ओ स्वयंकेँ देखथु जे ओ तँ नै बदलि गेल छथि?

सगर राति दीप जरयमे अलिखित संविधानक नामपर बहुत रास खेल भेलै। ई मुख्य रूपेँ कथावाचनक गोष्ठी छिऐ मुदा एतऽ आलोचनात्मक आलेख पढ़बाक सेहो अनुमति छै आ से जँ अहाँक नाम रमण अछि तखने टा, से जखन कबिलपुर गोष्ठीमे मुन्नाजी विहनि कथा पर आलेख पढ़बाक अनुमति मांगलन्हि तँ से अनुमति नै भेटलन्हि, आ एतऽ अलिखित संविधानक सोंगर लेल गेल, आ तकर दूटा कारण, एक तँ मुन्नाजीक नाम रमण नै छियन्हि, दोसर विहनि कथाक कनसेप्ट विदेह द्वारा आगाँ बढ़ाओल जा रहल अछि से तकर विरोध, किए ने ओ कनसेप्ट कतबो

वैज्ञानिक होइ।

झंझारपुर गोष्ठी मे जे एला तिनकर कथाक पाठ नै भेलन्हि मुदा डाकसँ आएल कथाक पाठ भेल, आ जँ अहाँ अविनाश छी सुमन-अमरकेँ गारि लिखै छी यात्रीक नामपर , तँ अहूँ कथाकार, कवि सभ , नै रहितो , छी, देवघर गोष्ठीक संयोजकत्व सेहो बोनसमे अहाँकेँ भेटत। से घोंघरडीहा गोष्ठीमे जिनका सभकेँ कथा नै पढ़ऽ देल गेलन्हि, ओ सभ युवा एकर विरोध केलन्हि, किछुकेँ कथा पढ़ऽ देल गेलन्हि आ जिनका नै पढ़ऽ देल गेलन्हि से अगिला कथा गोष्ठीसँ एनाइ बन्द कऽ देलन्हि।

जे सभ मैथिली फिल्म आ डोक्यूमेण्टरीक नामपर लोकसँ पाइ ठकलन्हि से रमण-दरिहरे-बिहारीक विदेहक विरोधमे संगी छथि, जे युवा प्राइज लेल मैथिलीयोमे लिखलन्हि, जातिवादी सभसँ मिलि साहित्य अकादेमीक युवा पुरस्कार लेलन्हि ओ तँ स्वाभाविक रूपे हुनकर संगी हेता।

विदेह उमेश मण्डल आ जगदीश प्रसाद मण्डलक कान्हपर बंदूक राखने अछि, यूज़ कऽ रहल अछि, आ जँ हुनकर सभक रचना नै छपऽ देल जाइत, "तिल बहब ने" छपबासँ पहिने, सकरबाबल जाइत, तखन सभ ठीक छल। ब्राहम्णवादी सभ जकाँ विदेह कोनो काज केलासँ पहिने "तिल बहब ने" क शर्त-क़रार नै करबैए आ सएह कारण अछि , नव ब्राह्मणवादी ई नै बूझि सकला, धू, एहनो क़तौ भेलैए। बिनु जान-पहिचान, भेंट- घाँटक मात्र मैथिलीक नामपर सभ एकत्रित भऽ गेल से हुनका अजगुत लगलन्हि।

प्रदीप बिहारी मुन्नाजीकेँ कहै छथि आ ई विचार रामदेव झाक सेहो छन्हि जे जखन विदेह, साहित्य अकादेमीक समानान्तर पुरस्कार शुरू कैए देलक तखन साहित्य अकादेमी लेल शोर किए? माने ओकरा बकसि देल जाए! अशोक अविचल शिवकुमार जीकेँ कहै

छथि जे मायानाथ झा, आनन्द कुमार झा (ऐमे गुणनाथ झा जोड़ि लिअ) आदि जिनका सभक चर्चा विदेह केलक, सभकेँ साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटलै, तँ हुनका उत्तर भेटल छलन्हि, जँ हुनकर सभक नाममे झा नै मण्डल रहितन्हि तँ की ई संभव छल?
आ साहित्य अकादेमी कोनो मनुक्ख नै छिऐ जकरा संग भतबरी कएल जाएत आ ने ककरो पैतृक संपत्ति जकर उपयोग ब्राहम्ण कायस्थक तथाकथित साहित्यकारकेँ ख़ैरात बँटबा लेल आब कएल जा सकत।
आ हमरा विषयमे जखन सभकेँ बुझबामे आबि गेलन्हि जे नै रौ, ई अपना सभ सन नै अछि, विदेह अपना सभ सन नै छौ, तँ हुनका सभ केँ आर चिन्ता लागि गेलन्हि! रौ कहीन जे, ईहो सभ हमरे सभ सन, कहीं ई, ई जे अपने प्राइज़ लेब' चाहैए बा दोसराकेँ दिआबऽ चाहैए....
ब्राह्मणवाद मैथिलीकेँ गीरि गेलै, आ सभकेँ बुझल छै जे दूटा सहोदरो एक रंग नै होइए, से पूरा जाति नीक बा अधला हेतै ई कनसेप्ट विदेहक नै छै, ओ तँ ब्राह्मणवादी कनसेप्ट छिऐ।
अतुलेश्वर झा छथि ओना तँ ब्राहम्णवाादक विरोधमे रहथि मुदा पाग आ विद्यापतिक हमर लेख क बाद कष्ट भऽ गेलन्हि, हुनकर मानब रहन्हि जे पागेपरसँ मौर ओढ़ाएल रहै छै आ मौर जे गएर ब्राह्मणक विवाहमे प्रयुक्त छिऐ से पागे छिऐ। मुदा जखन हुनका हम कहलियन्हि जे मौर कोढ़िलासँ बनै छै आ पूर्णियाँक ब्राह्मणमे बरसातिमे सेहो मौर विवाहिता महिला द्वारा पहिरल जाइ छै, तँ मिथिलाक संस्कृतिसँ अपन अपरिचय सिद्ध भेलाक बादो ओ पागक साहित्यिक आ राजनैतिक सभामे प्रयोगक पक्षमे रहला। आ एहेन बहुत रास लोक छथि, प्रेम चन्द्र पंकज आ अभय दासकेँ कोनो ने

कोनो बात लऽ कऽ विदेहसँ घृणा भऽ गेलन्हि, आ ई गप ओ सभ मुन्नाजीकेँ सूचित केलन्हि जे ओ लोकनि विदेह पढ़नाइ आब छोड़ि देलन्हि, प्राय: आब ओ सभ चोरा नुका कऽ विदेह पढ़ै छथि,कारण सभ गतिविधिक जानकारी हुनका सभकेँ रहै छन्हि।
सगर रातिमे यात्री दिससँ सुमन-अमर केँ गारि देनहार आ अमर-सुमन दिससँ यात्रीकेँ गारि देनहार, मैथिली साहित्यमे ब्राहम्णवाद बचेबाक लेल विदेहक विरुद्ध दरिहरे- रमण- बिहारीक संग आबि गेल छथि अंतिम लड़ाइ लड़बा लेल।
२
रमण, बिहारी आ दरिहरेक कथा गोष्ठीक तिथि ८२ म सगर राति दीप जरयक तिथि ३१ मइ २०१४ घोषित भेलाक बाद भेल। ऐ तीनू लग मौलिकताक सर्वथा अभाव अछि। कोनो नव चीज ई लोकनि सोचि नै सकै छथि, हँ प्रतिक्रियावादी, धुरफंदी चीज करबामे ई लोकनि सभसँ आगाँ छथि। से रमण ७९ म कथा गोष्ठी ओरहामे विदेह साहित्य आन्दोलनक खिलाफ गोलैसी करबाक प्रयास केलन्हि, गोष्ठी प्रारम्भ हेबासँ पहिने सायास अही काज लेल पहुँचला, आ बजैत फिरला जे विदेह साहित्य आन्दोलन-तान्दोलन नै छिऐ, खाली गजेन्द्र ठाकुर आ जगदीश प्रसाद मण्डल अपन नाम करऽ चाहै छथि, जे उत्तर भेटलन्हि तकर बाद ओ परदाक पाछाँ चलि गेला, जातिवादी बयान देलन्हि, हीरेन्द्र झाक उसकेलासँ अशोक मेहता सेहो ओइ गोष्ठीक बहिष्कार केलन्हि, इच्छा तँ रमणोक रहन्हि बहिष्कार करबाक मुदा हुनकर गाड़ी ड्राइवर समधियौर लऽ कऽ चलि गेलन्हि, से कारण ओ मुन्नाजीकेँ कहलखिन्ह।
शंकरदेव झा बहुत पहिने सूचित केने रहथि जे, जे रमण प्रबोध नारायण सिंहकेँ प्रबोध नारायण सिंह एण्ड कम्पनी कहै छला आ

सएह आब नचिकेताक बडीगार्ड बनल छथि। ई अवसरवादिता रमणक चरित्रमे छन्हि से जखन ओ दरिहरे आ बिहारीक संग अपन साहित्य अकादेमीक मैथिली विभाग आ ओकरा द्वारा मान्यता प्राप्त फ़र्ज़ी संस्था द्वारा संपोषित कथा गोष्ठीक घोषणा केलन्हि तँ ओ सभ ३१ मइ २०१४ क तिथिये सोचि सकला, तकर दू टा कारण छलै, हुनका सभमे मौलिकताक अभाव जे हिनकर सभक रचनामे सेहो दृष्टिगोचर होइत अछि, दोसर घृणित अवसरवादिता आ जातिवादी सोच। दरिहरे कहै छथि जे सगर राति हुनकर दलान अछि, ओइमे सर्वहाराक प्रवेश हुनका लेल कष्टकर छन्हि, बिहारीक कष्ट अही बात लऽ कऽ छन्हि जे पहिने एक दू टा कम्पटीटर छल तँ अस्तित्व जोड़-तोड़सँ बनबै छला, आब तँ मामिले खत्म, रमण कतेक छल-प्रपंचसँ मोहन भारद्वाजकेँ सगर रातिसँ बाहर केलन्हि, मुदा आब नव समीक्षक सभ आबि गेला। से यात्री दिससँ अमर-सुमनकेँ गारि पढ़ऽ बला आ अमर- सुमन दिससँ यात्रीकेँ गारि पढ़ैबला, ई दुनू ब्राहम्णवादी ग्रुप मैथिली साहित्यक विदेह साहित्य आन्दोलनक विरुद्ध मैथिली साहित्यमे जातिवादितापर ऐ घोर संकटक कालमे एक होथि, ई इच्छा राखैत "रमण- बिहारी- दरिहरे" कथा गोष्ठीक घोषणा केलन्हि, मुदा गजेन्द्र ठाकुर, विदेह आदि हुनका सपनामे डरबै छलन्हि से ओ एकटा चोरि केलन्हि, तिथिक चोरि, से किछु गोटे तँ कम हेतै जे सगर रातिमे ३१ मइ २०१४ केँ "रमण- दरिहरे- बिहारी" द्वारा घृणा कएल जाएबला गजेन्द्र ठाकुरक गाममे ओइ राति नै जा सकता। बड़ा आएल छथि आन्दोलनी, ब्राह्मणवादी घुरछीमे तेनाने फँसेबनि जे रमण- बिहारी- दरिहरेकेँ मोन रखता। हौ बाबू यएह छी असली विलेन, एकरा ख़त्म करू, विदेह आन्दोलन खतम आ मैथिली साहित्यपरसँ ब्राह्मणवादक पकड़ खतम

हेबाक ख़तरा खतम, मैथिली जिबियेकेँ की फ़ायदा जँ अपना सभक वर्चस्व रहबे नै करए, अखन यात्री ग्रुप, अमर-सुमन ग्रुप नै करू, सभ ऐ संकटमे मिलि जाउ, बादमे झगड़ा करब, नै तँ गजेन्द्र ठाकुर खोप सहित कबूतराय नम: कऽ देत।
मुदा की गजेन्द्र ठाकुरकेँ खतम केने मैथिली साहित्य आन्दोलन खतम भऽ जाएत? की परिवर्तनक धारा जे भयंकर रूपेँ विदेह द्वारा छोड़ि देल गेल छै ओकर अस्तित्व गजेन्द्र ठाकुरसँ अलग नै भऽ गेल छै, गजेन्द्र ठाकुरकेँ खतम केलासँ की ओकरा रोकल जा सकत? साहित्य अकादेमीसँ फ़ोन आएल जे ओकर मैथिली विभागमे जे गड़बड़ी भऽ रहल छै ओइले साहित्य अकादेमी कोना ज़िम्मेवार अछि? किछु गोटेक फ़ोन आएल जे ओ सभ सगर रातिक अतिरिक्त रमण-दरिहरे-बिहारीक साहित्य अकादेमी संपोषित गोष्ठीमे सेहो जाए चाहै छथि कारण ओ पब्लिक फंडसँ आयोजित होइ छै, आ जँ सगर रातिक तिथि हम बदलि दी रमण-दरिहरे-बिहारी नाम्ना तिथि चोर की करता? आरती कुमारी संग कएल टॉर्चरक बाद रमण-बिहारी-दरिहरेक मोन जे बहसल से किए नै बूझि सकल ऐ परिवर्तनकेँ? मेडियोक्रिटी नै जानि कतऽ लऽ जेतनि तीनूकेँ।
मिथिला यूनिवर्सिटी आकाशवाणी दरभंगा आ साहित्य अकादेमी मे जे भऽ रहल अछि सएह "मैथिल ब्राह्मण मात्र लेल मिथिला राज्य" मांगैबलाक मिथिला राज्यमे हएत, से जे शंका लोककेँ छै से असत्य नै छै।
साहित्य अकादेमी मैथिलीक पतन लेल जे काज केलक अछि आ कऽ रहल अछि तकरा मौन आ मुखर सम्बोधन केनिहारक संख्या आंगुर पर गानल जा सकैत अछि। "सगर राति दीप जरए" समानान्तर परम्पराक बौस्तु रहए तकर प्रयास हेबाक चाही, साहित्य अकादेमी पोषित मुख्यधारा लग ने लेखक छै आ ने पाठक आ ने

प्रतिभा। ओकर इतिहास लेखनमे एहेन एहेन लोक आ पोथीक वर्णन भेटत जकर अस्तित्व नै छलै, से मूल धारा अपन इतिहास लेखनमे कोनो गनती करबा लेल स्वतंत्र अछि । राधाकृष्ण चौधरी आ सुभाष चन्द्र यादवक संग कएल छलक विरोध ओइ धारामे नै भेलै, कारण ओ "स्टेटस को" समर्थित लोकक संगठन छिऐ। साहित्य अकादेमीक गोष्ठी मूल धाराक लेल सगर रातिक गोष्ठी भऽ सकैए समानान्तर धाराक लेल नै।

मैथिली आ मिथिलासँ प्रेम करैबला अधिसंख्यक समानान्तर परम्परा सम्बन्धी वर्ग "गरिखर" मुख्यधाराक डरे साहित्य अकादेमी गोष्ठीकेँ "सगर राति दीप जरए" केर मान्यता नै दऽ सकत।

मैथिलीक मूल "गरिखर" परम्परा मे २० टा लेखक छै आ पाठक एक्कोटा नै, ई बीस गोटा बीस ग्रुपमे विभक्त अछि, सभ आपसमे कुकुड़-कटाउझ करैत रहैत अछि, मुदा विदेहक विरोधमे एक भऽ जाइत अछि आ साहित्य अकादेमीक पक्षमे भऽ जाइत अछि। "सगर राति दीप जरय" यएह एकटा संस्था छै जतऽ नन्दविलास राय सेहो जा सकै छथि आ जगदीश प्रसाद मण्डल सेहो। मूल धारा युवा ब्राह्मण साहित्यकार सभमे जातिवादिताक विष घोरि रहल अछि, आ ऐ सँ ओइ युवा सभकेँ अपने नोकसान भऽ रहल छन्हि। जइ लेखकमे प्रतिबद्धताक कमी अछि, जेना अमलेन्दु शेखर पाठक, अरुणाभ झा सौरभ आ दिलीप झा लूटन से ओइ जालमे फँसि गेला। अरुणाभ झा सौरभ आ दिलीप झा लूटन कें युवा पुरस्कार भेट गेलन्हि। मैथिलीकेँ आब की घाटा हेतै, स्वाहा तँ कइये देने रहै, सुधारक सेहो गुंजाइश नै छै, तँ ओ सभ कोनो सॉफ्टनेस डिजर्व नै करैए। मुदा ई चमचागिरी समानांतर धाराक युवा (ब्राह्मण

वा गएर ब्राह्मण) मे भेटब असम्भव (जँ ब्लैक शीपकेँ छोड़े दी), ई युवा तुर्क मंच सापेक्षीय चरित्रक निर्वाह नै करै छथि।

अमलेन्दु शेखर पाठक आ दिलीप कुमार झा लूटन क कविता संग्रह साहित्य अकादेमी प्रकाशित केलक, ई बात फराक जे ओइ समयमे ब्राह्मण आ गएर ब्राह्मण वर्गमे बहुत युवा रहथि जे बेशी प्रतिभाशाली रहथि मुदा प्रकाशन लेल हिनके दुनूकेँ साहित्य अकादेमीक मैथिली विभाग चुनलक। तथापि ई दुनू गोटे किछु कवितामे आशा जगेलथि, मुदा लेखकीय प्रतिबद्धताक अभावक कारण ओ आशा धूमिल भऽ गेल। जखन जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ गुआहाटीमे मुख्य अतिथि बनाओल गेलन्हि तँ बैजू आदिक विरोध आयोजककेँ सहऽ पड़लन्हि आ ओइ वीडियो रेकॉर्डिंगमे ब्लैकआउटक मादे जखन हम आयोजककेँ पुछलियन्हि तँ ई जानकारी भेटल, आ जखन ब्लैक आउट खतम भेल तँ अमलेन्दु शेखर पाठक निर्लज्जतापूर्वक कहैत सुनल गेला "सपनोमे नै सोचने हेतै.." इत्यादि.." आ बैजू आदि दस गोटे ओइपर निर्लज्जतापूर्वक ठहाका लगेलन्हि, ई वीडियो विदेह वीडियोमे उपलब्ध अछि। जगदीश प्रसाद मण्डल क स्टेचरक अमलेन्दु शेखरक मेण्टर सभ सेहो नै बनि सकता आ विद्यापति पर्वक मुख्य अतिथि भेनाइ जगदीश जीक नै ओइ विद्यापति पर्वक लेल सम्मान छल। खएर .. मुदा तकर बाद दरभंगाक विद्यापति पर्वपर (बैजूक विद्यापति सेवासंस्थानक विद्यापति पर्व) जखन नन्द विलास राय पहुँचला तँ अमलेन्दु हुनका अपमानित करैत मंचे पर कहलखिन्ह " अमलेन्दु अहाँकेँ पोस्टकार्ड लिखि कऽ बजेने रहथि!!!" आ ऐ गपक चर्चा नन्द विलास राय कमलेश झाक संस्थाक सम्मान समारोहमे केलन्हि जतए भीमनाथ झा आदि सभ उपस्थित रहथि। अखनो अमलेन्दु आकाशवाणी दरभंगाक मैथिली

विभाग मे जे जातिवादी स्वरक प्रचार कऽ रहल छथि से लेखकीय प्रतिबद्धताक विरुद्ध अछि। जँ समानान्तर परम्परा साहित्य अकादेमी गोष्ठीकेँ मान्यता नै दऽ रहल अछि तँ ऐ सँ मिथिलापर ई कलंक तँ दूर भेबे कएल जे हम सभ "स्टेटस कोइस्ट" छी, आब अधिसंख्यक वर्ग ओइ कुकृत्यसँ अपनाकेँ दूर राखऽ चाहैए।

मैथिली साहित्य आ इतिहास दू खण्डमे बँटि गेल अछि। लोक जेना गांधीजीक विरोध कऽ महान बनऽ चाहैए तहिना विदेहक विरोध कऽ कए सेहो। साहित्य अकादेमीक गोष्ठीकेँ "सगर राति दीप जरए" केर मान्यता भेटै ओइ लेल कमलेश झा सन "कम्यूनिस्ट" आ ढेर रास "मैथिल ब्राह्मण मात्र लेल मिथिला राज्य आ मैथिली भाषा" मांगैबला ब्राह्मणवादी (कम्यूनिस्ट ब्राह्मणवादी सेहो) अपस्यांत छथि। मुदा समानान्तर धाराक इतिहास लेखन मे साहित्य अकादेमीक गोष्ठीकेँ "सगर राति दीप जरए" केर मान्यता नै देल जा सकत। मूल धाराक इतिहास लेखन मे ओ साहित्य अकादेमीक गोष्ठी लेल संख्यामे "एक" नै "अनेक" संख्याक वृद्धि कऽ सकै छथि|

झंझ-मंझ:

Arvind Thakur

हम आएब ! अवश्य आएब ! 81/82 क चक्करक बादो आएब !

Like · · Share · February 8 at 11:05am

Umesh Mandal, रवि भूषण पाठक and 2 others like this.

Gajendra Thakur kono 81-82 ka chakkar nai chhai. ee 81 m chhiyai, sahitya akademi goshthi ke sagar raatik manyata nai del jaa sakat.

8.530|| **गजेन्द्र ठाकुर**

February 8 at 9:54pm · Like · 2

Shyam Darihare EE manyata debak adhikar kon sanstha wa vyakti ke chani. Anere ekta neek andolan ke duri karbak prayas band kayal jaybak chahi. sagar rati deep jaryak madhyame apan rajniti karab nindniy thik.

19 hours ago · Like

Gajendra Thakur श्याम दरिहरे जी। सगर राति दीप जरयकेँ साहित्य अकादेमीक बंधक बनेबाक कोनो प्रयास बा ओइ प्रयासक समर्थन क्षम्य नै छै। सगर रातिक माध्यमसँ जे राजनीति कएल जा रहल छल ओकरा ध्वस्त क' देल गेल अछि। सुपौल सगर रातिमे जातिवादी स्वरकेँ रमानन्द झा रमण जी द्वारा देल मौन समर्थनक बाद सगर राति ओरहा मे रमानन्द झा रमण जी द्वारा जे जातिवादी स्वर उठाएल गेल रहै जे ओ श्रोत्रिय रहलाक बादो पासवान ऐठाम जा क' हुनका आ सगर राति पर अहसान केलनि ई सभ गप सगर रातिमे असहनीय अछि।

19 hours ago · Like

Shyam Darihare Sagar rati deep jaraya kahiyo kakro badhak wa gulam ne chhalaik aa ne kakaro satta chhaik je ee kay sakat. Maithilik je sthiti chhaik tahi me ehan vivad uthayab ghaatak chhaik. jani bujhi kay kichhu lok ehi aandolan ke hathiyabay aa prachar payba lel apsyant chhathi. sagar raati deep jaray jahina chhaik tahina rahay del jay. Rajniti tuarat band ho. Badhiya likhbak badla rajniti karab nindniy thik.

19 hours ago · Like

Gajendra Thakur श्याम दरिहरे जी। चारि गोटे मिलि क' एक दोसराक कथाक बाहबाही करै छला, मात्र एक्के जातिक ई गोष्ठी छलै, क्वालिटीक ओत' अभाव छलै आ ओ राजनीतिक अखारा छल, सर्वहारा वर्ग एकरासँ दूर रहै,नव कथाकार नै जुड़ि रहल छला, किछु गोटे एकरा हथियेने छला, आ सएह सभ आब कब्जा छुटला पर हाक्रोश क' रहल छथि; यएह एकर स्वरूप रहै, एकर स्वरूप ओहिना रह' देल जाइ से अहाँक इच्छा अछि? मैथिली आगाँ बढ़ए आ ओकरा पर लागल जातिवादी कलंक दूर होइ ओइ सँ अहाँक कोनो सरोकार नै। सभ जाति सभ क्षेत्रक लोक मैथिलीसँ आ सगर राति सँ जुड़ि रहल छथि, ओइसँ अहाँकेँ प्रसन्नता नै अछि? आन्दोलन केँ राजनीति आ राजनीतिकेँ आन्दोलन कहिया धरि अहाँ बुझैत रहबै?

19 hours ago · Like

Shyam Darihare sagar rati deep jaray ne rajnitik manch chhaik aa ne sarkari rahat kendra. Je neek likhat takar naam hetaik. Neek rachnak prashansa hetaik. Ehi me jativad, sarvhara aadi shabdavalik prayog vaih lok kay sakait achhi jakra rachana karm sa nahi apitu matra rajniti sa matlab hoik. Kharab rachnak yadi keo godhiyanbadak adhar par wah wahi kartaik t se prabudh pathak swikar nahi kartaik. Ehi me jatik kon sawal chhaik. sawal matr rachanak gunvatta chhaik. Anere aamil pibak kono jarurati nahi. Jati aa sarvhara shabd aanika ahan lekhan kary me seho aarakshanvadi rajniti aani rahal chhi. Bhashak ehan seva lel badhai.Yadi kono truti ehi me chhaik t okar samadhan hobak chahi muda mathdukhi chhorabay lel aatmhatya ghor anuchit achhi. Hamra kon chij say sarokar achhi takar chinta me aahan kiyak parait chhi. Rajniti aa andolan me antar bujhbak hamara aahan atek abgati nahi achhi se t aab nahiye achhi.

18 hours ago · Like

Gajendra Thakur सगर राति दीप जरय राजनीतिक मंच नै छै, आ नहिये सरकारी राहत केन्द्र; मुदा साहित्य अकादेमी राजनीतिक मंच बनि गेल छै आ मैथिल ब्राह्मणक किछु कट्टर तत्त्व जकर रचनामे कोनो जान नै छै तकरा साहित्य अकादेमी राहत सेहो प्रदान करैए। आ जे ओइ साहित्य अकादेमी आदि सरकारी संस्थासँ बिनु रचनाक श्रेष्ठाक राहत लेबा लेल लालायिय छथि ओ जाति आधार पर सगर रातिकेँ ओकर बंधक बनब' चाहै छथि। सर्वहारा आ जाति शब्दक चर्चा साहित्यमे नै हेबाक चाही ई सुनैत सुनैत हमर कान पाकि गेल अछि। जकर रचनामे जान नै होइ छै, जकरा पाठक नै छै, गोधिया बना क' जे सड़ल पाकल रचनापर प्रशंसा पेबाक आदति धेने अछि, तकरा आन्दोलन राजनीति बुझेतै, जे सुखाएल इनारक बेंग छथि, हुनका मैथिली केँ पाठक भेटने सभसँ बेशी कष्ट छन्हि, कारण गोधियाँ सभपर पाठक हँसि रहल छन्हि। मात्रक एक जातिक (मैथिल ब्राह्मणक किछु कट्टर तथाकथित साहित्यकारक) आरक्षण जाधरि मैथिली लेल छलै (साहित्य अकादेमीमे अखनो धरि छै) तकर पक्षमे आ तकरा हाथे सगर रातिकेँ बेचबापर बिर्त लोक जखन "लेखनमे आरक्षण" क विरोध करै छथि तँ अपन तर्कक घुरछीमे अपने फँसि जाइ छथि, हुनका अपन जातिक सड़ल पाकल साहित्य श्रेष्ठ लगै छन्हि आ तकर विरोधकेँ ओ "मथदुक्खी छोड़ाबए लेल आत्महत्या" कहै छथि, आ जँ सत्य सोझाँ आनल जाए तँ तइपर अपन "आमिल पीबि क'" बजबाकेँ ओ दोसराक आमिल पीब कहै छथि। आ त्रुटि लेल समाधान लेल अहाँ हुनकर पएर पकड़ू, कारण मैथिलीकेँ ओ लोकनि मारि क' सुखाएल इनार रूपी साम्राज्यक मठाधीश बनल छथि, आ भाषाक तइ रूपेँ सेवा केलाक लेल ओ बधाइ सेहो चाहै छथि!! अहाँकेँ कोन चीजक सरोकार अछि से स्पष्ट अछि, आ कोन चीजक अवगति सेहो स्पष्ट अछि।

18 hours ago · Like · 1

Shyam Darihare Shyam Darihare Aahank aakrosh bharal bhasha say bujhait achi je aahan kono vyaktigat karne sahitya akadmik virudh jhanda uthene chhi. Se hamra nahi bujhal chhal aane bujhay chahait chhi. Ham baat matr Sagar rati deep jaryak kay rahal chhi. Aahan bat ke sahitya akadmi dis lay ja rahl chhi. Aahan hamara bich kono prichay seho nahi achhi tain binu janane vyaktigat tippani sa bachbak chahi. Takhan ekta baat kahab je ankar dalaan chhinikay hathiya kay chichiyabay sa badhiya je apana butta sa swayngak ekta nishkalank, aa jati varg vihin dalaanak nirman kay ohi par taal thoki se besi purusharthak baat. Hamra sa kono mathadhish galat thapri pitba let se sattha ehi duniya me kakro nahi chhaik. Ehan kono mathadhish ekhan dhari janam nahi lelkaiak achhi. Aahan ke katahu abharay t suchit karb. kono lobh lalach lel bhashai rajniti karybala lok Darihare lag thadh hobak pahine seho ek say ber sochat kiyak t hamara janayvala keo ehan himmat nahi karat. Aa agar karat t ..... Binu kono parichayak etek baat apne sunaol se dhanyvaad.

17 hours ago · Like

Gajendra Thakur अहाँकेँ बुझाइत अछि बा अहाँ सएह बुझ' चाहै छी, आ से अहाँ किए बुझ' चाहै छी से स्पष्ट अछि। अहाँकेँ अपन भाषा आक्रोशित नै बुझाइए, आ दोसराक तर्क किए आक्रोश बुझाइए सेहो स्पष्ट अछि। हम सगर राति दीप जरय क गप क' रहल छी, आ कारण सुनेलौं जे अहाँ बा कियो साहित्य अकादेमीक गोष्ठीकेँ सगर राति कोन कारणसँ बनाब' चाहै छथि, मैथिली केँ पाठक भेटलै, ओ एक जातिक घुरछीसँ बाहर निकललै,

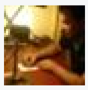
8.532|| गजेन्द्र ठाकुर

ओकर स्तर भारत आ नेपालक आन भाषाक साहित्यक समक्ष एलै, तँ ऐ सँ अहाँकेँ खुशी किए नै अछि? अहाँसँ हमरा व्यक्तिगत परिचय नै अछि आ कएक बिलियनक विश्वमे सभक सभसँ परिचय संभव नै छै तैयो अहाँ व्यक्तिगत टिप्पणी करै छी आ से आरोप दोसरा पर किए लगबै छी, सेहो स्पष्ट छै। सगर राति किछु गोटेक दलान रहै, ई स्वीकारोक्ति अहाँक विषयमे बहुत किछु कहि जाइए, आ अहाँ किए चिचिया रहल छी तकरो विषयमे टिप्पणी करैए। अहाँसँ कोनो मठाधीश थोपरी नै पिटबा रहल अछि,लोभ लालच बला अहाँ सँ सटि नै सकैए, आ जँ से सटत तँ तकरा अहाँ गरदा छोड़ा देबै; मुदा तखन अहाँ ई किए क' रहल छी। एकर कारण ई तँ नै अछि जे ओकर सभक सोच आ आइडियोलोजी अहाँक आइडियोलोजी सँ मेल खाइत अछि, आ जे से अछि तँ अहाँक ई स्वीकारोक्ति दुखद अछि आ ओइ आइडियोलोजीसँ हमर मतभिन्नता आजन्म रहत।

- Gangesh Gunjan प्रिय गजेन्द्र जी!
'उचितवक्ता ' के एक बेर फेर बाज' पड़ि गेल । माफी चाही।
अहाँक आदर हम अहाँक मिथिलाँचल-हित साधक युगीन संस्थापना कार्यक लेल करैत छी।
से अहीं, आ मात्र अहीं टा कएल अछि।अहाँक एहि कृति-लेख कें, चाहियो क' क्यो,
कोनो तुच्छ तर्क बा तथाकथित मिथिलाँचल हितैषी-प्रेमी लेख लिखि क' मेटा नहि
सकैत छथि। से निर्विवाद । से किनको बुतें अहाँ सँ पैघ काज कैये क' संभव हेतनि।
तें अहाँ सँ एखनो हमर उमीद नै खत्म भेलय । अपन ताही अग्रज-स्नेहाधिकार सँ
आग्रह करैत छी जे एहन सृजन हीन,अनुर्वर विषय ल' क' विवाद अहाँक वास्तविक
योगदानक क्षमता-प्रतिभाक बेकार मे क्षय क' रहल अछि।तकर मात्सर्य अछि हमरा।अहाँ
मैथिली आ मिथिलाँचलक " श्रेष्ठ आ कालान्तर जीवी " कार्य करबा लेल आएल छी। तें।
एहि सम्पूर्ण विवाद पर हम शायर मोमिनक एक टा अपन अति प्रिय शे-ए-र कहैत अपन
इच्छा व्यक्त करै छी-
"मर चुक कि कहीं तू ग़मे हिज्राँ से छूट जाए / कह्ते तो हैं भले की वो लेकिन
बुरी तरह।" बेशी लोक उचितो बात कें नितान्त अरुचिकर वाणी आ तेवर मे करबाक
अभ्यासी होइत छथि। हमरा जनैत एही मे मुख्य मुद्दा हेरा जाइ छैक।तें
फेर वैह -"बात जँचय हमर तं हमरा संतोष । अन्यथा मोन सँ निष्काशित क' देब ।"
सस्नेह,

2014-03-14 11:07 GMT+05:30 Gajendra Thakur <

5 hours ago · Like

- 

Gajendra Thakur गंगेश गुंजन जी। गारिक डरे भागलासँ सृजनहीन, प्रतिभाहीन लोकक वर्चस्व फेरसँ काएम भऽ जेतै।

डॉ. आरती कुमारी (१९६७-२०१२)क काल्हि रातिमे मृत्यु भऽ गेलन्हि। पति श्री अनिल कुमार रॉय आ पुत्र अनुराग कुमार आ पुत्र उज्जवल प्रकाश कें छोड़ि ओ चलि गेलीह। हुनकर मृत्युसँ मैथिली साहित्य जगत सन्न अछि। हुनकर एकटा पोथी प्रकाशित अछि "मैथिली मुक्तक काव्यमे नारी"। महिषीमे ७३म सगर राति दीप जरय क माला ओ भागलपुर लेल उठेने रहथि, आ तकरा बाद ओ अस्वस्थ भऽ गेलीह, कोलकातामे ऑपरेशन भेलन्हि। किछु सामन्ती प्रवृत्तिक लोककें हुनकर सगर राति दीप जरय क माला उठेनाइ नै अरघलन्हि आ हुनका द्वारा भागलपुरक साहित्यकारसँ माला उठेबासँ पहिने नै पुछबाक, आ "जँ भागलपुर मे सगर राति दीप जरय हएत तँ कियो नै आएत" आदि गप कहि मानसिक वेदना पहुँचा कऽ दीप आ रजिस्टर लऽ लेल गेल, आ सगर राति दीप जरय भागलपुरमे नै भऽ सकल। आ सगर राति दीप जरय पर जे ग्रहण लागल से अखन धरि लागले अछि। हम सभ

कहनहियो रहियन्हि जे जँ अहाँ भागलपुरमे सगर राति दीप जरय करय चाहै छी तँ निश्चिन्त भऽ करू, सभ पहुँचत, मुदा ओ कहने रहथि जे ओ सगर राति दीप जरय करय चाहै छथि, मुदा विवादमे नै पड़य चाहै छथि। स्व. आरती कुमारीकेँ कृतघ्न समाज दिससँ श्रद्धांजलि।

Shyam Darihare 74wa SAGAR RATI DEEP JARAY-- 10 SEPT 2011. Sthan:- HAZARIBAGH. (Patna ke taraf sa Hazaribagh me pravesh sa pahile N.H. par Vinoba Vhave University Gate chhaik. University gate sa ek minat baab dahina me ekta barka maidan chhaik waih chhaik HOME GUARDS TRAINING CENTRE. Ohi Gate par sipahi sa puchhari karu o hall dhari pahuncha det. SAB MAITHILI KATHAKAR aa KATHPREMI LOKaNIKE SADAR HAKAR. Like · · Unfollow Post · August 11, 2011 at 3:48am Shefalika Verma and Kislay Krishna like this. **Arvind Thakur** बढियां खबर ! बधाइ !रोमन लिपि मे लिखबाक अनेक खतरा छै,एकटा एतहु देखाइत अछि -कथाप्रेमी कें कठप्रेमी पढय मे बेसी सुविधा बुझाइ छै|सभ गोटे देवनागरी मे लिखबाक हिस्सक बनाबी त नीक |हम गोष्ठी मे आयब,दरिहरे जी| August 11, 2011 at 7:29am · Like · 2 **Hirendra Kumar Jha** Bhagalpurak arth ahzaribag hit chhaik ? August 13, 2011 at 1:13am via · Unlike · 2 Hirendra Kumar Jha Bhagalpurak arth Hazaribagh kona bhay sakait chaik ? ehi san ta prathak samapti bhay jayat. punarbichar karu. Hirendra August 13, 2011 at 1:15am via · Unlike · 1 **Ajit Azad** aarti ji goshthi karba me saksham nai chhaith. hunke se puchhla par ee bha rahal chhaik. aarti ji gambhir roop se bimar chhaith aa kolkata me 3 maas se ilaaj kara rahlih achhi. August 13, 2011 at 6:10am · Like **Kislay Krishna** ee ektaa vikalp rup me sojha aayal achhi.... August 13, 2011 at 8:07am · Like **Gajendra Thakur** आरती जी २४ सितम्बर कें गोष्ठी करबा लेल तैयार छथि तकरा बादो हुनका सँ मौका छीन कऽ मात्र दस दिन पहिने गोष्ठीकें हजारीबाग लऽ जेबाक की प्रयोजन..? Hirendra Kumar Jha जी सँ हम सहमत छी..आब जखन १० सितम्बर तिथि घोषित भऽ गेल तखन आब ओ पाछाँ हटि जाथि से अलग बात, मुदा की हुनका ई भरोस देल गेलन्हि जे अगिला गोष्ठी वएह करेतीह? हम पहिनहियो कहने रही जे हुनकासँ बिना पुछने कोनो निर्णय नै लेबाक चाही..यदि हजारीबागमे गोष्ठी हुअए तँ सशर्त हुअए जे अगिला गोष्ठी आरती जी करेतीह..ई दवाब जे अहाँक अहठाम २४ सितम्बर कें कियो नै आएत/ अहाँ भागलपुरमे ककरोसँ नै पुछलिऐ..आदि बना कऽ हुनकासँ जबरदस्ती हँ कहेबाक कोनो मतलब नै.. August 17, 2011 at 7:39am · Like **Ajit Azad** jahiya 10 setamber ke ghoshna bhel...tahi se ek ghanta pahine tak aarti ji lag date final naih rahain. ham fon kayliyai ta o kahlih je AAI RAIT ME HAM AHAN KE KAHAB...KARAN JE EK GOTE HAMRA AARTHIK SAHYOG KARBA LEL CHHAITH...YADI O GACHHI LETAH TA HAM 19 YA 20 SEPTEMBER KE KARAB. ham puchhaliyain 19 ke ya 20 ke? o kahalain EHI DOONU TITHI ME SE JAHIYA SHAIN PARTAIK TAHIYA. ham kahaliyain je ehi doonu tarikh ke shain nai parait chhaik. takhan o garbara gelih. hamhi kahaliyain je 24 ke bha sakait achhi muda durga puja 28 se chhaik...ki ahan 3 september ya 10 september me se kono din kara sakait chhi? o taiyar nai bhelih. ham kahaliyain je takhan ahan 24 ke kareba lel swatantra chhi...aa ham aybo karab muda besi lok nai autah...dosar gap je ekhno tak ahank date final nai achhi (karan, o takhno ber-ber kahait chhalih je ham ek gote se baat karab takhan date ghoshit karab). ham hunak swasthya aa aarthik sthiti ke dekhait kahaliyain je ahan baad me jahiya thik bha jayab tahiya karab. o kahalain JE HAM SANJH ME AHANKE FINALLY KAHAB. baad me o ohi samay pradip bihari ji ke sabhta baat kahalkhin. pradip ji hunka bujhelkhin je ahan ekra

8.534|| **गजेन्द्र ठाकुर**

presstige issue nai banau...sabh ahank heet me kaih rahlah achhi. o maini lelkhin aa register hunke patheba lel sahmat bhelkhin. ekar baad pradip bihari ji turat hamra fon kaylain je aarti ji taiyar chhith je agila goshthi hazaribagh me hoiek. pradip ji hunka eeho kahalkhin je ahan ee gap ajit ji ya raman ji ke seho kaih diyoun muda o kahalkhin je ham VIDEHA me kaih dait chhiyaik, sabhke khabar bha jaytaik. ham aai tak videha me hunak kono statement nai parhal. hamra lagait achhi je ehi mamla ke tool nai del jai...o yadi agila goshthi karay chahait chhaith ta o karaith, ehi me kakro kiyaik kono aapatti hetaik. ee goshthi june me hebak rahaik...arthat may me date ghoshit bha jaybak chahi chhal. o june me 10 aa 11 ke saharsa me sahitya acsdemik seminar me aayal chhalih...ham takhno hunaka puchhaliyain je kahiya karbaik goshthi...o july me karbak baat kahlain. tabat tak hunak mon kharab bala baat nai rahaik. julu me kolkata me o kavita path karba lel bimarik avastha me aayal chhlih. takhno ham puchhne rahiyain je kahiya karab goshthi? o kahalain je september tak ta ham kolkate me rahab (under treatment). takar baade karab.
August 17, 2011 at 10:55am · Like **Ajit Azad** ek ber ehi tarhak ghatna aar bhel chhaik. dr dhirendra ji janakpur me karbaik prastav darbhanga goshthi me delkhin muda 4-5 maas tak o nai kara saklah takhan pt. govind jha daman kant jha jik sahyog se patna me karoune rahaith. aarti jik paksha me sabh achhi muda hunak sthiti thik nai chhain...ehi mamila me bhagalpurak lok besi nik se kaih sakait chhaith.

-चोर रोशन कुमार झा अखनो नै हटेलक जगदीश प्रसाद मण्डलक ओकरा (चोर रोशन कुमार झा) द्वारा कएल चोरिक लघुकथा सभ अपन ई-पत्रिका (ब्लॉग)सँ- साहित्यिक जगतमे ऐ सँ घोर क्षोभ अछि- -चोर रोशन कुमार झाक चोरिक सबूत नीचाँ लिंकमे अछि जे ओ अखन धरि अपन ई-पत्रिका (ब्लॉग) सँ डिलीट नै केलक अछि।
http://mithlakgaamghar.blogspot.in/2012/05/rikshaavala.html
http://mithlakgaamghar.blogspot.in/2012/05/jivika.html
http://mithlakgaamghar.blogspot.in/2012/05/blog-post_7993.html
http://mithlakgaamghar.blogspot.in/2012/05/blog-post_9212.html
http://mithlakgaamghar.blogspot.in/2012/05/blog-post_4646.html
http://mithlakgaamghar.blogspot.in/2012/05/blog-post_691.html
http://mithlakgaamghar.blogspot.in/2012/05/blog-post_88.html
http://mithlakgaamghar.blogspot.in/2012/05/blog-post_7693.html
http://mithlakgaamghar.blogspot.in/2012/05/blog-post_4876.html
http://mithlakgaamghar.blogspot.in/2012/05/blog-post_31.html

ई धूर्त रोशन कुमार झा ई सभ रचना जगदीश प्रसाद मण्डलक "गामक जिनगी" सँ चोरा कऽ अपन ई-पत्रिकामे छपने अछि जेकर लिंक ऊपर देल गेल अछि। गामक जिनकीकेँ मैथिलीक पहिल टैगोर पुरस्कार भेटल छै। पहिनहियो एकर संगी रणजीत चौधरी मुन्नाजीक रचनाक लगातार चोरिमे पकड़ाएल अछि, जे अजित आजादक मिथिलाक अबाज ग्रुपपर अखनो अछि। अजित आजाद मुन्नाजीकेँ कहने रहथिन्ह जे ओ रणजीत चौधरीकेँ बैन करता आ चोरिक रचनाकेँ डिलीट करता, मुदा हुनकर कार्यालसँ से अखन धरि से नै भेल तावत ओही कार्यालयसँ ई नबका चोर रोशन कुमार झा आबि गेल।
"राड़केँ सुख बलाय" क लेखक अछि ई रोशन कुमार झा आब रौशन मैथिल!!) ई कथा ओकर मूल ब्राह्मणवादी शुद्ध वर्तनीमे नीचाँ देल जा रहल अछि-

राअर के सुख बले

पढुआ काका किछु काज स दरभंगा आयल छलाह . जखन सव काज भ गेलैन त बस पकर्बाक लेल बस स्टैंड गेलाह , मुदा गामक बस छुट्टी गेलैन .

पधुआ काका हमरा फ़ोन केलैने ? रोशन कतय छ: ? हम आकाशवाणी लग ठाढ़ छि ? हाउ हम तोहर घरे बिसरी गेलिय . तो आबी क हमरा ल जा .

जखन हम पढुआ काका क ल के घर पर आप्लाहू त घर पर लाइन छल .चुकी गर्मी काफी छल ताहि कारने पंखा चला हुनका लग बैसी गेलहु आ हुनका अपन कंप्यूटर पर फसबूक के खोली हुनका देखाबय लाग्लाहू ?

अचानक ललका पाग केर देखैत देरी हुनक मन गडद-गडद भ गेलैने . ओ कह्लैने जे की " इ थिक मिथिला वासी केर पहचान , आ पाग पहिर्ला स बाढ़ी जाइत अछि मान "

हम कहलियैक , काका किछू लोक केर कथन अछि जे की पाग मात्र उपनयन , विवाह में पहिरे वाला एक टा परिधान अछि जे की बाभन आ लाला सब मे पहिरल जाइत अछि ?

ओ कह्लैने हौ जे इ गप करैत अछि ओ पागल हेताह ?

हम कहलियैक , कका ओ सब पढ़ल लिखल आ पैघ-पैघ साहित्यकार छैथ आ विदेह सनक पत्रिका सेहो निकालैत छैथ ?

किछु काल केर उपरान्त पढुआ कका कह्लैने जे की एकटा , दूटा ओही महानुभाव केर नाम त कहक जे सब पाग केर मिथिला केर मान नहीं बुझैत अछि आ मात्र ओकरा जातिगत स जोरी रहल अछि ?

हम कहलियैक आशीष अनचिन्हार , उमेश मंडल , पूनम मंडल प्रियंका झा आ विदेह केर सम्पादक गजेन्द्र ठाकुर .

कका कह्लैने हौ अहि मे त कोनो पैघ साहित्य कार लोकनि केर नाम कहा अछि ?

कका आजुक समय केर इ सब करता धर्ता छैथ साहित्य जगत के .

हौ यदि आजुक साहित्य केर करता एहन छैथ त नहीं जानी की होयत भविष्य मे ?

हमरा सब केर समर में हरिमोहन झा , नागार्जुन , दिनकर सब सनक महान रचना कार लोकिन छलाह . से इ सब कोनो हुनका स पैघ छैथ जखन ओ लोकिन पाग पहिर अपना केर गौरवान्वित बुझैत छलाह तखन आजुक नौसिखुआ सब के की औकात ?

ओ कह्लैने हौ बाऊ ब्रह्मण एकर विरोध किअक क रहल अछि से नहीं जानी मुदा जिनकर बाप दादा कहियो पहिर्बे नहीं केने हैथ हुनका त अवस्य ने असोहाथ बुझेतैन .

ओहुना मिथिलाक गाम घर मे कहल जाइत अछि जे की " राअर केर सुख बले "

विदेह सम्पादकीयसँ

मोबाइलपर जखन हम मैथिलीमे गप करै छी तँ हमर सहकर्मी गौरी भोला कहै छथि- ‘‘बड्ड मीठ भाषा अछि।’’ गायत्री व्यंकट कहै छथि- ‘‘अहाँक भाषा मैथिली अछि आ हम सभ अपन बेटीक नाम मैथिली राखै छी।’’

ऐ मिठासक भितुरका खटास हम हुनका बुझा नै पबै छियन्हि।

२०१२ विभिन्न कारणसँ मैथिली भाषा आ साहित्यक इतिहासमे मोन राखल जाएत। ऐ वर्षक शुरुमे चनौरागंज (झंझारपुर) मे बेचन ठाकुर जीक नेतृत्वमे जातिवादी रंगमंचक विरुद्ध समानान्तर मैथिली रंगमंचक ‘‘पहिल विदेह मैथिली नाट्य उत्सव’’ २०१२ क प्रारम्भमे सम्पन्न भेल। बेचन ठाकुर विगत २५-३० वर्षसँ मैथिली नाटकक निर्देशक रहल छथि, दर्जन भरि नाटक ओ लिखने छथि, जे अनेकानेक बेर मंचित आ प्रशंसित भेल अछि। ऐ बेरुका नाट्य उत्सवक थीम रहए ‘‘भरतक नाट्य शास्त्रक परिप्रेक्ष्यमे मैथिली नाटक आ रंगमंच’’। दू दिनक ऐ दिन-रातिक महोत्सवमे जगदीश प्रसाद मण्डलक नाटक ‘‘वीरांगना’’, बेचन ठाकुरक नाटक ‘‘विश्वासघात’’ आ गजेन्द्र ठाकुरक नाटक ‘‘उल्कामुख’’ मंचित भेल। एकर अलाबे नारी सशक्तिकरण/ लोकगाथा आधारित एकाङ्कीक प्रदर्शन सेहो भेल। मैथिली कवि सम्मेलन भेल आ विदेह सम्मान देल गेल।

समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध विदेह भाषा सम्मान साहित्य अकादेमीमे एक जाति विशेषक फर्जी साहित्यिक (!) संस्था सभक साहित्य अकादेमी मैथिली विभागपर ४५ वर्षक कब्जाक विरुद्ध प्रतिक्रियाक रूपमे सोझाँ आएल। ४४ सालमे मैथिल ब्राह्मण -३६ बेर, कायस्थ-६ बेर, राजपूत-२ बेर आ गएर सवर्ण- ० बेर ऐ पुरस्कारकेँ प्राप्त कऽ सकला। ब्राह्मणमे नीक लेखक जेना ललित, धूमकेतु, धीरेन्द्र ऐ पुरस्कारसँ वंचित रहला आ हरिमोहन झा केँ ई पुरस्कार जिबैत जी नै देल गेलनि। प्रतिक्रियावादी लेखक सभसँ ऐ पुरस्कारक लिस्ट भरल पड़ल अछि। सुभाष चन्द्र यादव, मेघन प्रसाद, बिन्देश्वर मण्डल, जगदीश प्रसाद मण्डल, नचिकेता आदि गएर ब्राह्मण लेखक जिनका मैथिली साहित्यमे अपार आदर प्राप्त छन्हि, ब्राह्मणवादी साहित्य अकादेमीक कोपक शिकार छथि। मिथिला राज्यक आन्दोलनी लोक सभ द्वारा गुआहाटीमे विद्यापति पर्व (दिसम्बर २०१२) क अवसरपर जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ मुख्य अतिथि बनाओल जएबाक विरोध भेल, जकर घोर भर्त्सना कएल गेल।

विद्यापति:

विद्यापति मैथिलीक महाकवि छथि। परम्पराक अनुसार ओ एकटा हाजाम ठाकुर परिवारक छथि। ज्योतिरीश्वर ठाकुर हुनकर विवरण ‘‘वर्ण रत्नाकर’’ मे केने छथि आ श्रीधर दास हुनकर पदावलीक उल्लेख उदाहरण सहित ‘‘सदुक्ति कर्णामृत’’ मे केने छथि। श्रीधर दास आ ज्योतिरीश्वरक परवर्ती संस्कृत आ अवहट्टक लेखक विद्यापतिक उल्लेख मैथिल ब्राह्मणक पंजीमे भेल अछि। परन्तु किछु

ब्राह्मणवादी संस्था सभ द्वारा ज्योतिरीश्वरपूर्व विद्यापति कें ब्राह्मण बना देबाक आ हुनका ‘‘पाग’’ पहिरा ‘‘यज्ञोपवीत संस्कार’’ करबाक प्रयास मैथिलीक यज्ञोपवीत संस्कार करबाक षडयंत्रक रूपमे देखल जा रहल अछि। साहित्यिक जगतमे सम्पूर्ण साल ऐपर चर्चा होइत रहल आ ई मामिला सालक अन्तमे भेल ‘‘इण्डिया हैबीटेट सेन्टर भारतीय भाषा महोत्सव’’ मे सेहो उठल। विद्यापति पर्वक माध्यमसँ मैथिल ब्राह्मणक एकटा कट्टरवादी ग्रुप जातिवादी रंगमंचक साथ मिलि कऽ मैथिली पर कब्जाक कोशिशमे लागल रहल आ तँए सामान्य लोक ऐसँ दूर भऽ रहल छथि।

टैगोर लिटरेचर अवार्ड:

मैथिलीक लेल पहिल टैगोर लिटरेचर अवार्ड श्री जगदीश प्रसाद मण्डलकें ‘‘गामक जिनगी’’ लघुकथा संग्रह पर देल गेल। परन्तु एकर चर्चा दरभंगा सहित मिथिलांचलक कोनो हिन्दी अखबार नै केलक, आकाशवाणी दरभंगा सेहो पूर्ण चुप्पी साधने रहल आ अपन जातिवादी चरित्र लोक सभक सोझाँ राखलक।

गूगल विदेह बुक्स:

विदेह द्वारा गूगलक सहयोगसँ ४०० सँ बेशी मैथिली किताब गूगल बुक्स पर १००% ब्राउज आ डाउनलोडक सुविधाक संग ऑनलाइन कएल गेल। अंग्रेजी-मैथिली शब्दकोषकें *कॉमन क्रिएटिव शेयर अलाइक* लाइसेन्सक अन्तर्गत रिलीज कएल गेल।

साहित्य अकादेमीमे मैथिली समन्वयकक मनोनयन आ साहित्य अकादेमीक पुरस्कारक राजनीति:

साहित्य अकादेमीमे मैथिली समन्वयकक चयनक लेल ६ टा जातिवादी संगठनकेँ साहित्य अकादेमी मान्यता देने अछि। ई संगठन सभ मैथिलीक ८ म समन्वयकक मनोनयन केलक अछि। ई संयोग अछि बा दुर्योग कि आइ धरि एकर सभ समन्वयक मैथिल ब्राह्मण भेल छथि, ऐ बेर सेहो ई क्रम जारी रहल। युवा पुरस्कार देबामे सभ निअम खतम करैत रेफरी द्वारा नाम देल सभ पुस्तकपर विचार करबासँ मना कऽ देलनि आ एक साधारण पुस्तककेँ ई पुरस्कार देलनि जकर लेखक मूलतः हिन्दीमे लिखै छथि।

की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?

यदि साहित्य अकादेमी आ जातिवादी संस्था सभक वश चलितै तँ उत्तर हँ रहितै। परन्तु समानान्तर विचारधारा आ समानान्तर रंगमंच ऐ धारणाकेँ ध्वस्त कऽ देलक। ऐ लिंक https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/ पर विदेह मैथिली विहनि कथा, विदेह मैथिली लघुकथा, विदेह मैथिली पद्य, विदेह मैथिली नाट्य उत्सव, विदेह मैथिली शिशु उत्सव, विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना ऑनलाइन उपलब्ध अछि। विनीत उत्पलक आर.टी.आइ. क जे उत्तर साहित्य अकादेमी देलक अछि ओ साहित्य जगतकेँ लज्जित करैत अछि। समन्वयक आ ओकर एडवाइजरी बोर्डक सदस्य सभ जइ तरहेँ सभटा असाइनमेन्ट स्वयं आ सर-सम्बन्धीकेँ दऽ देलनि ओ ऐ संस्था सभक ब्राह्मणवादी प्रवृत्तिकेँ सोझाँ अनैत अछि।

राजदेव मंडल, रामविलास साहु, उमेश पासवान, रामदेव प्रसाद मण्डल झारूदार, जगदीश प्रसाद मंडल, उमेश मंडल, सुभाष चन्द्र यादव, प्रेमशंकर सिंह, डॉ. उदय नारायण सिंह "नचिकेता", मेघन प्रसाद, सन्दीप कुमार साफी, विन्देश्वर ठाकुर आदि लेखक निःस्वार्थ भावसँ मैथिलीकेँ प्राणवायु दऽ रहल छथि।

पागक राजनीति:

ब्राह्मणवादी पागक राजनीतिकेँ तखन बड्ड पैघ धक्का लागल जखन खरौआमे महाकवि लालदास जयन्तीक अवसरपर पहिल बेर आयोजक लोकनि ई मानलनि जे ई जाति विशेषक परिधान मिथिला मैथिलीक मंचपर प्रयोग नै कएल जएबाक चाही आ ओ सएह केलनि। एकरा समानान्तर विचारधाराक बड़ पैघ विजयक रूपमे देखल जा रहल अछि।

प्राथमिक आ मध्य विद्यालयमे शिक्षाक माध्यम मैथिली माध्यमसँ:

सुप्रीम कोर्टक निर्णयक बादो अखनो मिथिलामे शिक्षाक माध्यम मैथिली नै अछि। ऐ सम्बन्धमे एकटा बैठक निर्मलीमे भेल जइमे जगदीश प्रसाद मण्डल, राम विलास साहु, राजदेव मण्डल, वीरेन्द्र यादव आदिक उपस्थितिमे राहुल कुमार जीक संयोजकत्वमे विदेह विचार गोष्ठी सम्पन्न भेल आ हस्ताक्षर अभियान भेल। परन्तु ई चिन्ता सेहो प्रकट कएल गेल जे मैथिली साहित्यक वर्तमान जातिवादी आ प्रतिक्रियावादी सिलेबसकेँ बदलल जाए, आततायी जातिवादी जमीन्दारक जीवनी कोन गुलाम मानसिकताक अन्तर्गत सिलेबसमे राखल गेल अछि? कोसी पुलक उद्घाटनक अवसर पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमारकेँ ऐ सम्बन्धमे स्मार पत्र देल गेल।

एकर अलाबे विदेह गोष्ठी (परिचर्चा/ प्रैक्टिकल लैबोरेटरी प्रदर्शन) साहित्यक विभिन्न आयामपर सम्पन्न भेल।

नेपाल मे मैथिली:

डेनमार्क एम्बैसीक सहयोगसँ "बुधियार छौड़ा आ राक्षस" (रमेश रञ्जन लिखित नाटक) कएक दर्जन स्थानपर मंचित भेल। विद्यापति पुरस्कारक घोषणा भेल, दू लाखक पुरस्कार रामभरोस कापड़ि भ्रमरकेँ भेटलनि।

रंगमञ्च आयोजनामे जनकपुरमे मैथिली नाटक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न भेल। सांस्कृतिक कार्यक्रममे गीत एवं नृत्य प्रस्तुत भेल।

जानकी नवमी पर जनकपुरमे बम विस्फोट भेल, झगड़ू मण्डल सहित कई संस्कृतिकर्मीक हत्या भेलनि। परमेश्वर कापड़ि घाइल भेला।

स्वस्थ्य महिला स्वस्थ्य परिवार- स्वस्थ्य समाज मूल नाराक संग यदुकोहा आ माची झिटकहियामे सड़क नाटक प्रदर्शन भेल। परिवार नियोजनपर आधारित जंगलमे मंगल नामक मैथिली भाषाक सड़क नाटक पिसिआइ नेपालक सहयोगसँ प्रतिविम्ब रंगमञ्च जनकपुर प्रदर्शित केलक।

युवा नाट्यकला परिषद परवाहा देउरी द्वारा बिक्रमी शम्वत २०६९ क पूर्व सन्ध्यामे अन्तरराष्ट्रिय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजित

भेल, उदघाटन गणतन्त्र नेपालक पहिल राष्ट्रपति डा.रामवरण यादव केलनि। महोत्सवमे नेपाल आ भारतक आठ नाट्य समूह भाग लेलक।

नचिकेता क "एक छल राजा"क मंचन सरस्वती पूजनोत्सव तथा वसन्त पंचमी मेला २०६८ क अवसर पर तिलाठी मे भेल।

हम जखन बच्चा रही तँ गाममे ‘‘देशी कौआ’’ आ ‘‘कार कौआ’’ दुनू देखाइ पड़ैत छल, ‘‘कार कौआ’’ चकमक आ कर्कश, ‘‘देशी कौआ’’ हल्लुक रंगक आ मधुर आवाजबला। लोक ककरो कर्कश बोलीकेँ सुनि बजै छला- ‘‘केना कार कौआ सन बजै छँ।’’ एम्हर किछु बर्खसँ ‘‘देशी कौआ’’ विलुप्त भऽ गेल अछि, लोक सभकेँ एकर दुख छै। चारू दिस कार कौआक साम्राज्य व्याप्त अछि।

टॉमस ट्रांसट्रोमर

स्वीडनक कवि टॉमस ट्रांसट्रोमरकेँ २०११क साहित्य लेल १.५ मिलियन डॉलरक नोबल पुरस्कार देबाक घोषणा कएल गेल अछि। स्वेडिश एकेडमी कहलक "ओ अपन घनगर पारदर्शी बिम्बसँ सत्यक एकटा नव द्वारक परिचय करेलनि"। हुनकर पोथी सबहक अंगरेजी अनुवाद रहनि "द ग्रेट एनिग्मा", "द हाफ फिनिश्ड हेवेन", ‘‘द डिलीटेड वर्ल्ड"। ओ अस्सी बरखक छथि, १५ सँ बेशी कविता संग्रह लिखने छथि जे अंगरेजी आ ६० आन भाषामे अनूदित भेल अछि। हुनकर जन्म स्टोकहोममे भेलनि। ओ मनोचिकित्सक रहथि आ हुनकर कवितामे मानवताक गहन मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भेटैत अछि। हुनकर कविता गूढ़ मुदा सोझ होइत अछि। हुनकर कविता वैयक्तिक आ सार्वत्रिक दुनू अछि। हुनकर कविता एहेन गूढ़ नै

होइए जइपर चिंता करैत रहू, वरन ओ धरातलसँ अस्तित्वक उच्च शिखर दिस लऽ जाइए। स्वेडनक नम्हर शीतकालक विवरण, ऋतुक लय, आ प्रकृतिक सौन्दर्य वातावरणक अद्भुत विवरण हुनकर कवितामे भेटैत अछि। हुनकर माता स्कूल शिक्षिका आ पिता पत्रकार रहथिन आ ओ साहित्य, इतिहास, धर्मशास्त्र आ मनोविज्ञान पढ़ेने छथि। १९९० सँ ओ एकटा आघातक बाद बजबामे सक्षम नै छथि। १९९३ क बाद अमेरिकाक कोनो लेखककेँ साहित्यक नोबल नै भेटल छै। १९७४ क बाद आब जा कऽ कोनो स्वेडिशकेँ ई पुरस्कार भेटल छै। नोबल समिति आब गएर यूरोपीय भाषाक बेशी साहित्यिक पोथीपर विचार करत।

विदेह साहित्य उत्सव २०१२

विदेह साहित्य उत्सव २०१२ आ विदेह साहित्य सम्मान समारोह १४ जनवरी २०१२ केँ सम्पन्न भेल जतऽ विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार देल गेल आ कवि सम्मेलन सम्पन्न भेल। लोकक स्वतः–स्फूर्त सहयोग आ सहभागिता विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलनक सफलताक रूपमे मोन राखल जाएत।

मैथिली

मुस्लिम आ गएर सवर्ण (आब सवर्ण सेहो) सरकारी-मैथिलीसँ दूर भागल आ उर्दू-हिन्दीक संग गेल। मुस्लिमक संग ई तमिल, मलयालम आ बांग्लाक (आ काश्मीरीक) अतिरिक्त सभ भाषामे भेल। काश्मीरमे तँ लोक बजैए काश्मीरी आ पढ़ाओल जाइ छै उर्दू- (बिहार मे जेना पढ़ाओल जाइ छै हिन्दी) , मुदा एकटा छोट राज्य

सिक्किममे नेपालीक दबदबा छै मुदा तकर अतिरिक्त लेपचा/ भुटिया सेहो ओ पढ़बै छै, ऐ छोट भाषा सभकेँ कोनो खतरा नै छै, लेपचा लिपि सेहो सुरक्षित छै आ नेपाली भाषाकेँ ऐसँ बल भेटै छै। ओकर कारण अछि सिक्किमक भाषायी उदारता जे बिहारमे (आइये नै जमीन्दारीये राजसँ) मैथिली आ मिथिलाक्षरक विरुद्ध अछि/ छल। मुदा बगलेमे दार्जिलिंगमे (जे बंगालमे छै आ बंगालमे दार्जिलिंग छोड़ि शेष ठाम बांग्लाक आ दार्जिलिंगमे नेपाली भाषाक दबदबा ओहिना छै जेना बिहारमे हिन्दीक दबदबा छै), से उदारता नै छै। **विदेह समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११**

समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन

दिनांक ९ जुलाइ २०११ केँ सायं ४.४५ बजेसँ राति ७.४५ बजे धरि विदेह द्वारा आयोजित पहिल समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११ निर्मली (जिला सुपौल)मे सम्पन्न भेल। साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कोलकाता मैथिली कवि सम्मेलन मे २१म शाताब्दीक पहिल दशकक सर्वश्रेष्ठ मैथिली कविता संग्रह "अम्बरा"क लेखक राजदेव मंडल आ आन श्रेष्ठ कविकें नै बजाओल गेल आ ने कोनो सूचना देल गेल। साहित्य अकादेमीक प्रवेश निषेधक ऐ कृत्यक सुधार लेल विदेह द्वारा पहिल समानांतर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११ दिनांक ०९ जुलाइ २०११ केँ निर्मली (जिला सुपौल) मे असर्फी दास साहू समाज महिला इन्टर महाविद्यालय परिसर (निर्मली- जिला सुपौल वार्ड नम्बर ७) मे आयोजित कएल गेल। ऐ मे ककरो प्रवेश निषेध नै छल। समारोहक उद्घाटन हरिनारायण कामत आ श्री रामजी मण्डल द्वारा दीप प्रज्वलित कऽ कएल गेल। समारोहक अन्तमे श्री राजदेव

मण्डलक २०१० ई. मे प्रकाशित कविता संग्रह "अम्बरा", जे २१म शाताब्दीक पहिल दशकक सर्वश्रेष्ठ मैथिली कविता संग्रह मानल जा रहल अछि, क लोकार्पण सम्मिलित रूपेँ ६ गोटे (डॉ. बचेश्वर झा, श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, श्री रामजी प्रसाद मण्डल, श्री रौशन कुमार गुप्ता, श्री हरिनारायण कामत, श्री नन्द विलास राय) द्वारा सम्पन्न भेल। ऐ काव्य संध्यामे कविता पाठ केलन्हि- १.श्री राधाकान्त मण्डल (स्वागत गीत), २. उमेश पासवान (गेलहे घर छी, हाल, कबाड़ी), ३. श्री रामकृष्ण मण्डल छोटू (माइ), ४. श्री रामदेव प्रसाद मण्डल "झाड़ूदार" (५ टा गीत), ५. श्री नन्द विलास राय (इन्दिरा आवास), ६.श्री कपिलेश्वर साहु (कोसी), ७.श्री रामविलास साहु (३ टा कविता), ८. श्री उमेश मण्डल (२ टा कविता), ९. श्री राजदेव मण्डल (३ टा कविता), १०. श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (२ टा कविता)। सभ कविताक बाद कवितापर दुटप्पी समीक्षा सेहो भेल। कवि-सम्मेलनक अध्यक्षता श्री डॉ. बचेश्वर झा केलनि आ कार्यक्रमक संचालन श्री दुर्गानन्द मण्डल केलनि।

ऐ कवि सम्मेलनक विशेषता ई रहल जे ऐ इलाकामे ऐ तरहक कार्यक्रम पहिले बेर आयोजित भेल, से श्रोता लोकनिक कहब छलन्हि। मुख्य अतिथि श्री जगदीश प्रसाद मण्डल कार्यक्रम बीचमे कहलनि जे ऐ कार्यक्रमकेँ एतेक हलतलबीमे आयोजित करबाक कारण ई भऽ गेल जे आइ साहित्य अकादेमी द्वारा कोलकातामे मैथिली कवि गोष्ठी कराओल जा रहल अछि, जे हमरा सभक लेल लाजिमीक बात थिक जे हमरा-अहाँक गाममे होमएबला कार्यक्रम कोलकातामे होइए आ हमरा-अहाँकेँ बुझलो नै अछि।

लोक सभ ईहो कहलनि जे आइ धरि ऐ इलाकामे कार्यक्रम सभक संचालन हिन्दीमे होइ छल, ई पहिल बेर भेल अछि जे कोनो कार्यक्रमक संचालन ऐ इकाकामे मैथिलीमे भेल।

राजेश रंजन आ संगीता कुमारीक मैथिली फेडोरा प्रोजेक्ट/ फ्यूल प्रोजेक्ट

http://maithili.sourceforge.net/

http://ansiss.org/

http://fedoraproject.org/

https://fedorahosted.org/fuel/wiki/fuel-maithili

http://l10n.gnome.org/teams/mai

http://translate.fedoraproject.org/languages/mai

राजेश रंजन आ संगीता कुमारीक मैथिली स्पेलचेकर

http://extensions.services.openoffice.org/project/dict-mai

मैथिलीमे संपूर्ण कंप्यूटर सहित ऐ प्रसिद्ध ब्राउजरकेँ मैथिली जनसमूहक उपयोग लेल एक स्वैच्छिक समूह (मधेपुराक राजेश रंजन आ संगीता कुमारी) तैयार केलनि।

http://www.mozilla.org/en-US/firefox/all.html

आब फायरफॉक्सक अन्तिम मैथिली वर्सन जारी- संगीता कुमारी आ मैथिली टीमक प्रयाससँ भेल ई सफल, फायरफॉक्स-मोजिला अपन जालवृत्त

http://blog.mozilla.org/l10n/2012/08/28/maithili-localization/ पर २८ अगस्त २०१२ केँ ई घोषणा केलक।

विदेह गोष्ठी: (६ आ ७ दिसम्बर २००८ आ फेर १३ आ १४ दिसम्बर २००८/ फेर ५ आ ६ दिसम्बर २००९ आ १२ आ १३ दिसम्बर २००९/ फेर ४ आ ५ दिसम्बर २०१० आ ११ आ १२ दिसम्बर २०१०/ फेर अन्तिम परिचर्चा १७ आ १८ दिसम्बर २०११ आ २४ आ २५ दिसम्बर २०११ केँ मैथिली लेल गूगल ट्रांसलेटर टूलकिट, गूगल लैंगुएज टूल, कैथी आ मिथिलाक्षर दुनू लिपिकेँ यूनीवर्सल कैरेक्टर सेट (यूनीकोड) मे एनकोड करबाक आवेदनक स्वीकृतपर आ विकीपीडिया मैथिली पर परिचर्चा आ तकर सन्दर्भमे प्रैक्टिकल लैबोरेटरीक प्रदर्शन निर्मली, जिला सुपौलमे भेल। ओतए ढेर रास सम्बन्धित एक्सपर्ट उपस्थित रहथि। तकर बाद किछु आलेख आ रचना डाक आ ई मेलसँ सेहो आएल। तकर संक्षिप्त विवरण नीचाँ देल जा रहल अछि।)

गूगल ट्रांसलेटर टूलकिट आब सोर्स आ टार्गेट दुनू भाषाक रूपमे मैथिलीकें स्थान देलक, देखू http://support.google.com/translate/toolkit/bin/answer.py?hl=en&answer=147837

आ

http://translate.google.com/toolkit/list?hl=en#translations/active

विदेहक विरोधक बाद गूगल बिहारी नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक गप मानि लेने अछि, "विकीपीडिया मैथिली"क आवेदन पहिनहिये विदेह

द्वारा देल गेल आ पहिनहिये बिहारी नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक गप विकीपीडिया मानि लेने छल।

गूगल मैथिली: गूगल लैंगुएज टूल-

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject

एतए अंग्रेजीमे भाषामे Bihari चुनू आ अपन योगदान गूगल ट्रांसलेट लेल करू, आ कएल सम्पादन बदलबा काल कारण मे (अंग्रेजीमे) "बिहारी" नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक चर्चा करू; ऐ लिंकपर अनुवाद करू; गूगल एकाउंटसँ लॉग इन केलाक बाद ।

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh

ऐ लिंक http://www.google.co.in/language_tools?hl=en कें मैथिलीक उपलब्धता लेल चेक करैत रहू।

विदेहक एकटा आर सफलता- गूगल सर्च इन्जिन आब मैथिलीमे- गूगल सर्च इन्जिन आब मैथिलीमे- पहिने गूगल एकरा बिहारी भाषा मानै छल, मुदा विदेहक विरोधक बाद गूगल मानि लेलक जे मैथिली भाषाक अलग सर्च इन्जिन देल जाए। विदेहक विरोधक बाद विकीपीडिया ई पहिनहिये मानि लेने अछि। https://www.google.com/webhp?hl=bh अछि लिंक। [गूगल कम्पनी "बिहारी" नामसँ सर्च इन्जिनक प्रारम्भ केलक, मुदा बिहारी नाम्ना कोनो भाषा अछिये नै। एक गोटे बिहारीक अनुवाद अंगिका कऽ देलन्हि (जेना विकीपीडियामे bh कोडमे बिहारी भाषाक बदला भोजपुरी कियो कऽ देलन्हि) आ से गूगल अंगिका कऽ कए सर्च इन्जिन आबि गेल। फेर विदेहक विनीत उत्पल पत्र लिखलन्हि

आ विदेह द्वारा समस्त अनुवाद वोलन्टीयर रूपमे कएल गेल, लोक सभसँ अपील कएल गेल मुदा बाहरी लोकक योगदान शून्य रहल, जे एकाध केबो केलन्हि से रोमनमे, ओकरा ठीक कएल गेल। आब गूगल मैथिली रूपमे सर्च इन्जिन देखा रहल अछि, मुदा अखनो ढेर रास काज बाकी अछि, अखनो विकीपीडिया/ गूगलमे bh अछिये आ ऐ कोडकेँ हटेबा लेल प्रयास कएल जा रहल अछि।- ऐ विषयपर विदेह गोष्ठीक चर्चा देखू http://esamaad.blogspot.in/2012/01/blog-post_08.html लिंकपर।]

अनुवाद पूर्ण भेलाक बाद मैथिली एतऽ आओत:

http://www.google.com/language_tools?hl=bh

http://www.google.com/language_tools

VINIT UTPAL's LETTER- http://groups.google.com/group/google-translate-general/browse_thread/thread/65656d86716ddf18/a9bdfbc9eac5a7a1?lnk=gst&q=maithili#a9bdfbc9eac5a7a1

सूचना: १. कैथी आ मिथिलाक्षर दुनू लिपिकेँ यूनीवर्सल कैरेक्टर सेट (यूनीकोड) मे एनकोड करबाक अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल आवेदन स्वीकृत भऽ गेल अछि। आब ई दुनू लिपिक यूनीकोड फॉन्ट बनेबाक क्रिया क्यूमे लागि गेल अछि आ जखन एकर सभक बेर एतै ऐ दुनू लिपिक आधारभूत फॉन्ट बनेबाक क्रिया शुरू भऽ जाएत। मिथिलाक्षरक आधारभूत फॉन्टक नाम तिरहुता रहत (जेना

देवनागरीक आधारभूत फॉन्टक नाम मंगल आ बांग्लाक आधारभूत फॉन्टक नाम वृन्दा अछि)। मिथिलाक्षरक फॉन्ट लेल तेसर बेर संशोधित आवेदन देल गेल रहए, दोसर आ तेसर आवेदनमे विदेहक योगदानक विस्तृत चर्चा भेल अछि, यथा- [Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22; Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/ ."Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."-Anshuman Pandey.] ।

यूनीकोड पर साहित्य अकादेमीक दिल्ली कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण: डॉ. रमानन्द झा रमण जी द्वारा यूनीकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण कएल गेल। ऐसँ मात्र ई स्पष्ट भेल जे पर्चा लिखिनिहारकेँ नहिये यूनीकोडक विषयमे कोनो जानकारी छन्हि आ नहिये वेस्टर्न वा यूनीकोड दुनू फॉन्टक निर्माणक कोनो प्रारम्भिक ज्ञान छन्हि। हँ ऐ परचाक ओइ सभ लोक लेल महत्व छै जे सीखए चाहै छथि जे पूर्वाग्रहपूर्ण आ पक्षपातपूर्ण मैथिली साहित्यक इतिहास कोना लिखल जाए। ऐसँ पहिने चेतना समितिक स्मारिकामे यूनीकोड लेल चेतना समितिक योगदानक चर्चा देखैत छी! तिरहुता यूनीकोड आवेदनकर्ता अंशुमन पाण्डेय जखन पटना गेल रहथि तँ हम हुनका कहने रहियन्हि जे विद्यापति भवनमे शिव

कुमार ठाकुरक दोकान छन्हि, ओतऽ सँ अहाँ मैथिलीक किताब कीनि सकै छी, मुदा दू तीन दिन ओ दोकान आ समिति बन्द रहलाक कारण ओतऽ सँ घुरि गेला, बादमे ओतए एक गोटे कहलकन्हि जे सभ दिन अहाँ अबै छी, से ई समिति अखन कमसँ कम १४-१५ दिन आर बन्द रहत कारण दू ग्रुपमे झगड़ा-झाँटी भऽ गेल छै। ई अनुभव लऽ कऽ ओ घुरल रहथि आ से समिति अपन स्मारिकामे यूनीकोड लेल ओ जे योगदान देलक तकर चर्चा करैत अछि! गोविन्द झा जीक पता मँगलापर एक गोट विद्वान् (!) हुनका कहलखिन्ह जे धुर ओ की बतेता, आ गोविन्द झा जीक पता नै देलखिन्ह आ तखन दोसर ठामसँ हुनका पता उपलब्ध करबाओल गेल।

सूचना: २. विकीपीडिया मैथिली:

मीडियाविकीक २६०० संदेश अंग्रेजीसँ मैथिलीमे विदेहक सदस्यगण द्वारा अनूदित कऽ देल गेल अछि। आब http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai ऐ लिंकपर Group मे जा कऽ ड्रॉपडाउन मेनूसँ अ-अनूदित मैसेज अनूदित करू। जँ अहाँ विकीपीडियाक ट्रान्सलेटर नै छी तँ http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator ऐ लिंकपर मैथिलीमे ट्रान्सलेट करबाक अनुमतिक लेल अनुरोध दियौ, ऐ सँ पहिने ओतै ऊपरमे दहिना कात लॉग-इन (जँ खाता नै अछि तँ क्रिएट अकाउन्ट) कऽ आ प्रेफरेन्समे भाषा मैथिली लऽ अपन प्रयोक्ता खाताक लिंककेँ क्लिक कऽ अपन प्रयोक्ता खात पन्ना बनाउ। किछु कालमे अहाँकेँ ट्रान्सलेट करबाक अनुमति भेट

जाएत। तकरा बाद अनुवाद प्रारम्भ करू।
http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator
http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili
http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai
http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai
http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai
सूचना ३: TWITTER IN MAITHILI क्लिक करू: http://translate.twttr.com/welcome आ नीचाँ जाउ [Don't see your language? We're continually reviewing the list of languages we support, and would love your feedback] फीडबैक क्लिक करू आ मैथिली लेल अधिकसँ अधिक संख्यामे आवेदन करू, कारण सेहो निर्धारित स्थानमे लिखू।

विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध)

बाल साहित्य लेल विदेह सम्मान २०१२ श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जी कँ हुनकर बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह "तरेगन" लेल देल जा रहल अछि। ई पुरस्कार विदेह नाट्य उत्सव २०१३ क समारोहमे देल जाएत। ''तरेगन'' कँ सभसँ बेशी वोट भेटलै। तीनटा पोथी १.जगदीश प्रसाद मण्डलक तरेगन, २. जीवकान्तक ''खिखिरक बीअरि'' आ ३.मुरलीधर झा क ''पिलपिलहा गाछ'' कँ विदेह www.videha.co.in पर भऽ रहल ऑनलाइन वोटिंगमे राखल गेल छल। विशेषज्ञक मतानुसार ''पिलपिलहा गाछ''मे बहुत

रास कथा अछि जकरा बाल कथा नै कहल जा सकैए, तइ दुआरे ऐ पोथीकेँ लिस्टसँ हटा देल गेल कारण ई पुरस्कार बाल साहित्य लेल अछि, ओनाहितो ऐ पोथीकेँ सभसँ कम वोट भेटल रहै। ऐ पोथी सभक अतिरिक्त आन पोथी सभपर विचार नै कएल गेल कारण ओ सभ पोथीक आकारक नै वरन् बुकलेटक आकारक छल।

टैगोर लिटरेचर अवार्ड २०११

साहित्य अकादेमीक टैगोर लिटरेचर अवार्ड २०११ मैथिली लेल श्री जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ हुनकर लघुकथा संग्रह "गामक जिनगी" लेल देल गेल। कार्यक्रम कोच्चिमे १२ जून २०१२केँ भेल। मैथिली लेल विवादक अन्तक कोनो सम्भावना नै देखबामे आबि रहल अछि। ऐ पुरस्कारक ग्राउण्ड लिस्ट बनेबा लेल एकटा तथाकथित साहित्यकारकेँ चुनल गेल जे प्राप्त सूचनाक अनुसार जातिक आ संकीर्णताक आधारपर पोथीक नाम देलन्हि जइमे नहिये नचिकेताक पोथी रहए, नहिये सुभाष चन्द्र यादवक आ नहिये जगदीश प्रसाद मण्डलक; संगे ई ग्राउण्डलिस्ट बनौनिहार तथाकथित साहित्यकार अजित आजाद विदेहक सहायक सम्पादक मुन्नाजीकेँ कहलन्हि जे जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ ऐ जिनगीमे टैगोर साहित्य पुरस्कार नै देल जेतन्हि!। रेफरी जखन ७ टा पोथीक नाम पठेलन्हि तखन ओइमे चन्द्रनाथ मिश्र "अमर"क अतीत मंथन सेहो रहए जखन कि ओ पोथी निर्धारित अवधि २००७-२००९ मे छपले नै अछि, तँ की बिनु देखने पोथी अनुशंसित कएल गेल? ऐ तरहक ग्राउण्ड लिस्ट बनेनिहार आ बिनु पढ़ने पोथी अनुशंसित केनिहार रेफरीकेँ साहित्य अकादेमी चिन्हित करए, आ नाम सार्वजनिक कऽ

स्थायी रूपसँ प्रतिबन्धित करए, से आग्रह; तखने मैथिलीक प्रतिष्ठा बाँचल रहि सकत। एतए ईहो तथ्य अछि जे साहित्य अकादेमीक मैथिली विभागक समन्वयक श्री विद्यानाथ झा विदित अखन धरि ने पुरस्कार भेटबाक सूचने आ ने पुरस्कार लेल बधाइये श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी कँ देलन्हि अछि जखनकि मण्डल जी पुरस्कार लऽ कऽ घुरि कऽ आबियो गेल छथि। संगहि टैगोर साहित्य पुरस्कार मैथिली लेल पहिल बेर श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जीकेँ देल जएबा सम्बन्धमे दरभंगा आकाशवाणी कोनो प्रकारक सूचना प्रसारित नै केलक आ दरभंगा, मधुबनी आदिक हिन्दी समाचार-पत्र सेहो ऐ सम्बन्धमे कोनो समाचार प्रकाशित नै केलक जखनकि देशक सभ राष्ट्रीय अंग्रेजी पत्र (http://esamaad.blogspot.in/2012/06/tagore-literature-awards-national-media.html) एकर सूचना बिनु कोनो अपवादक प्रकाशित केलक। साहित्य अकादेमीक मैथिली विभागक, आकाशवाणी दरभंगाक आ दरभंगा-मधुबनीक हिन्दी समाचार पत्रक पत्रकार लोकनिक संकीर्ण जातिवादी चेहरा नीक जेकाँ सोझाँ आबि गेल। श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जीक "गामक जिनगी" मैथिली साहित्यक इतिहासक सर्वश्रेष्ठ लघु कथा संग्रह अछि। जगदीश प्रसाद मण्डल जीकेँ बधाइ।

समानान्तर परम्पराक विद्यापति आ पाग

मौर कोढ़िलाक बनैत अछि आ पागसँ फराक अछि। कर्ण कायस्थमे सेहो सिद्धान्त कुमरम आदिमे मात्र पाग पहीरि कऽ विध होइत अछि, ओहो सभ बियाह करऽ पाग नै मौर पहीरि कऽ जाइ छथि। पूर्णियाँक ब्राह्मणमे नव-विाहिता बरसाइतमे मौर पहीरि कऽ

वटवृक्ष धरि जाइ छथि। पाग मात्र आ मात्र मैथिल ब्राह्मणक बियाहक विध-बाधक प्रतीक अछि। विद्यापतिक संस्कृत ग्रन्थमे ठक्कुर विद्यापति कृता लिखल अछि/ आ ओ विद्यापति ब्राह्मण छथि। हमर उद्देश्य मैथिली पदावली बला विद्यापतिसँ अछि, हुनका किए पाग पहिरा कऽ "हम्मर विद्यापति" बना लेल गेल। ई तखन नै भेल जखन बिदापत नाचक माध्यमसँ आठ सए बर्ख गएर ब्राह्मण समुदाय विद्यापतिकेँ जिएने रखलक, मुदा तखन भेल जखन बंगाल विद्यापति आ गोविन्ददासक पदावलीकेँ अपन बना लेलक मुदा बंगालेक विद्वान राजकृष्ण मुखोपाध्याय सर्वप्रथम १८७५ ई. मे कहलन्हि जे विद्यापति मिथिलाक कवि छथि आ बंगालेक नगेन्द्रनाथ गुप्त सर्वप्रथम कहलन्हि जे गोविन्ददास सेहो मिथिलाक कवि छथि आ जखन ई तथ्य सोझाँ उठल तँ पहिने तँ सगर बंगाल हुनकापर मार-मार कऽ उठल आ बादमे मानि गेल। राजकृष्ण मुखोपाध्याय जइ विद्यापतिकेँ मिथिलाक कहने रहथि ओ पदावलीक विद्यापतिक सन्दर्भमे छल, संस्कृत आ अवहट्टक विद्यापति ठक्कुरः केँ बंगाल कहियो अपन नै कहने छल। ज्योतिरीश्वरक संस्कृत धूर्तसमागम नाटक आ संस्कृत आ अवहट्टबला विद्यापतिक गोरक्षविजय नाटक मध्य देल मैथिली गीत सेहो पदावलीक पुरान परम्पराक द्योतक अछि आ ऐ दुनू लेखकपर मैथिली पदावलीक प्रभाव देखबैत अछि। फेर मिथिलाक विद्वानकेँ सोह एलन्हि आ विद्यापतिक संस्कृत-अवहट्ट ग्रन्थ, गोविन्ददास नाम्ना आ विद्यापति नाम्ना पञ्जीमे उपलब्ध विवरण दऽ विद्यापति ठाकुर आ गोविन्ददास झा (!!!) निकालल गेल, एतऽ रमानाथ झाक पञ्जीक सतही ज्ञान आ सीमित दृष्टिकोण नोकसान पहुँचेलक। फेर अनचोक्के पाग पहिरा कऽ (मिथिला सांस्कृतिक परिषद- ई संस्था भारतक स्वतंत्रताक बाद विद्यापतिकेँ पाग पहिरा

कऽ हुनका ब्राह्मण घोषित करबाक कुकृत्य केलक) विद्यापति (मैथिली बला, संस्कृत बला नै) केँ "हम्मर विद्यापति" ब्राह्मण वर्ग द्वारा बना लेल गेल। मुदा कवीश्वर ज्योतिरीश्वर सन बहुत रास कवि पञ्जीमे उपलब्ध छथि। आ जे नामक अन्तर विद्यापतिमे आबि जाइ छन्हि (जखन कि सभ काज प्लानिंगसँ भेलै तैयो एकटा सबूत बचि गेलै) से ज्योतिरीश्वरमे किए नै अबैए। पूर्णियाँमे ग्रामदेवताक पूजामे हम गेल छी आ राम ठाकुर (भगवान)केँ देवता रूपमे ढेपाबला खेतमे हम देखने छी, कियो जोति देने रहै। मिथिलासँ छत्तीसगढ़ मध्य प्रदेशमे बरही (काष्ठकार) मिथिलासँ गेला तँ मैथिली भाषी हेबाक कारण लोक हुनका झाजी कहए लागल, आ ओ सभ आब झा टाइटिल रखै छथि। बंगालक मालदह जिलामे ४-५ गाममे मैथिल ब्राह्मणक टाइटिल ओझा छै, आ अलीगढ़मे मैथिल ब्राह्मण (ब्रजस्थ मैथिल)क शर्मा। पञ्जीमे कतेक विद्यापतिक विवरण उपलब्ध अछि, आरम्भक कोनो विद्यापतिमे झा आ ठाकुर नै लागल छै (पता नै रमानाथ झाकेँ कोना भेटि गेलन्हि!)।

विद्यापतिक कोनो पदावलीक रचनामे अपन संस्कृत/ अवहट्ट लेखक हेबाक चर्च नै केने छथि। मुदा हुनकर रचना (संस्कृत आ अवहट्टक विरुद्ध, जे दोसर विद्यापतिक रचना छी, जे ब्राह्मण रहथि) सर्वहाराक लेल जे दर्द अछि से संस्कृत आ अवहट्टक विद्यापतिमे किए नै अछि? संस्कृत आ अवहट्टक विद्यापति तँ सर्वहारासँ घृणा करै छथि आ लिखित रूपमे कट्टर ब्राह्मण छथि। मुदा पदावलीक विद्यापति तँ निश्छल छथि, किछु कट्टर पद कट्टर ब्राह्मणवादी सम्पादक लोकनि द्वारा घोसोआओल गेल अछि (हास्यास्पद रूपमे)।

पिआ देसान्तर (विद्यापतिक बिदेसिया)क कन्सेप्ट आब सुधीगणक

समक्ष अछि आ मैथिल बिदेसिया लोकनिक वर्तमान दुर्दशाक बीच ई महाकवि विद्यापतिक प्रति ससम्मान अर्पित अछि। की ई दर्द अवहट्ठ आ संस्कृतक विद्यापतिमे छन्हि?

मैथिली प्रतिभा पुरस्कारसँ ७ गोटे राजबिराजमे सम्मानित

मैथिली कवि परिषद (मैथिली साहित्य परिषदक शाखा) द्वारा ई पहिने मैथिली बाल प्रतिभा पुरस्कार रूपेँ देल जाइ छल। ई पुरस्कार मैथिली कवि परिषदक अध्यक्ष श्री महेन्द्र मण्डल बनबारी द्वारा प्रारम्भ कएल गेल रहए। ऐ बेरसँ एकर नाम मैथिली प्रतिभा पुरस्कार राखल गेल अछि। कवि सागर वीर कादरी, रेडियो नाटक कलाकार जीबछ दास, भूपेन्द्र मण्डल, गायक देवेन्द्र साहा सोनी आ शिवशंकर यादव, मैथिली संगीतक क्षेत्रमे राम अधीन साहा आ प्रीति अधिकारीकेँ ई पुरस्कार देल गेलन्हि।

सुभाष चन्द्र यादवक "बनैत- बिगड़ैत"

सुभाष चन्द्र यादवक "बनैत-बिगड़ैत" सँ जातिवादी मानसिकताक मैथिली साहित्यकारक कष्टक कारण स्पष्ट अछि। सुभाष चन्द्र यादव जै कम्यूनिटीसँ आबै छथि ओकरा धोखा नै दै छथि, ओकर समस्या, ओकर भाषा लेल संघर्षरत छथि, समझौता नै करै छथि, आइडियोलोजीमे स्थिरता छन्हि (जे तारानन्द वियोगीमे नै छन्हि), आ सएह कारण अछि जे ओ ओइ जातिवादी मानसिकताक मोहन भारद्वाज, योगानन्द झा, रामदेव झा आदिक कोपक शिकार छथि (जखन कि तारानन्द वियोगी आ महेन्द्र नारायण राम स्वीकृत)। यएह कारण अछि जे जखन मैथिली लेखक संघमे सुभाषचन्द्र

यादवक "बनैत बिगड़ैत"पर परिचर्चा आयोजित भेल तखन अशोक आ तारानन्द वियोगी अपन आलेख रखबाक हिम्मत जुटेलन्हि मुदा योगानन्द झा आ मोहन भारद्वाज मौन धारण केने रहलाह (नवेन्दु कुमार झा ओइ परिचर्चामे उपस्थित रहथि)। मुदा जखन कबिलपुरक ब्लैकमेलर सभक पत्र "विद्यापति टाइम्स" हम देखलौं तँ चकित रहि गेलौं- एकटा हेडिंग रहै - "घरदेखियासँ आगाँ नै बढ़ि सकला बनैत-बिगड़ैत केर लेखक- मोहन भारद्वाज"!!! -मैथिली लेखक संघक परिचर्चाक रिपोर्ट!!! योगानन्द झाक घृणित मानसिकता सोझाँ आएल छल हमरा लग। मोहन भारद्वाज ओइ खबरिक आइ धरि खण्डन नै केलनि, माने हुनकर सहमतिसँ ई झूठ प्रकाशित भेल। घर-बाहरमे आ मिथिला दर्शनमे कमल मोहन चुन्नूक "महेन्द्र मलंगिया" आ "मोहन भारद्वाज" सन जातिवादी मानसिकताक लोक लेल साहित्य अकादेमी पुरस्ककार वकालति जखन लगातार प्रारम्भ भेल तखन अनायास हमरा "विद्यापति टाइम्स" मोन पड़ि गेल आ पूरा साजिश सोझाँ आबि गेल। की ई सुभाष चन्द्र यादवक बनैत-बिगड़ैतक विरुद्ध साजिश नै अछि? जखन नचिकेताक "नो एण्ट्री मा प्रविश"क विरुद्ध अमरेश पाठक, चन्द्रनाथ मिश्र अमर आ मायानन्द मिश्र एकजुट भऽ गेला आ प्रतिक्रियावादी कवि उदयचन्द्र झा विनोदकेँ पछिला साल अकादेमी पुरस्कार दिया देल गेल तखनो सभ किछु स्पष्ट छल। पढ़ू बनैत-बिगड़ैत http://sites.google.com/a/shruti-publication.com/shruti-publication/Home/Banait_Bigrait_SubhashChandraYadav.pdf?attredirects=0

३

राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ (सुभाष चन्द्र यादव) जे साहित्य अकादेमी द्वारा रामदेव झा आ मोहन भारद्वाजक कृपासँ प्रकाशित नै भऽ सकल।

https://docs.google.com/a/videha.com/viewer?a=v&pid=sites&srcid=dmlkZWhhLmNvbXx2aWRlaGEtcG90aGl8Z3g6NDNiMmVhYThlOTNiMDA5Zg

राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ (सुभाष चन्द्र यादव) download link https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/Home/Rajkamal_Monograph.pdf?attredirects=0&d=1

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/Home/Rajkamal_Monograph.pdf?attredirects=0&d=1

dbb13891-a-96a2f0ab-s-sites.googlegroups.com

Gangesh Gunjan राजकमल जी (विनिबंध)क प्रकरण कान मे पडल तं छल, से कतोक वर्ख भ गेलै आब| मुदा से एहन कुरूप छैक से अहींक एहि फेस बुकिया समाद मे स्पष्ट भेलय| तें एकर धन्यवाद अहीं कें दैत छी गजेन्द्र जी |... ओना वास्तविक तं ई जे सम्पूर्ण पढबा सं पहिने मोन "विरक्त" भ' गेल | नै पढि भेल आगाँ

! नीक केलौहें नेट पर द' क'| समकालीन आ आगत पीढ़ी सेहो बुझओ ई कारी-कथा! हमरा सन लोकक विडम्बना देखू जे पूरा प्रकरण अपन अनुज- मित्र- अग्रज सं जुडल अछि| से एहन ऐतिहासिक दुर्घटना भ' गेल अछि ! उत्तरदायी व्यक्तिगत हम कतहु सं नै | मुदा साहित्यिक पीढ़ीक नैतिकता सं "अपराध बोध" सहबा लेल अभिशप्त छी| उपाय ? सस्नेह, 11 सितम्बर 2012 11:26 pm

साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी (ब्लैक मार्केटिंग)- एकटा रिपोर्ट

साहित्य अकादेमी दिल्लीक मैथिली समन्वयक चुनाव लेल जे संस्था सभ निर्धारित अछि ओकर नाम अछि:- विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा; सचिव वैद्यनाथ चौधरी ‘‘बैजू’’ आ अध्यक्ष- पं. चन्द्रनाथ मिश्र अमर। अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा; सचिव डा. गणपति मिश्र, अध्यक्ष रहथि स्व. जयमन्त मिश्र। चेतना समिति, पटना, सचिव श्री विवेकानन्द ठाकुर, अध्यक्ष श्रीमति प्रमीला झा। राँटी मधुबनीक कोनो संस्था, सम्भवतः वर्तमान अध्यक्ष श्री हेतुकर झा। किशोरीकान्त मिश्रक मिथिला सांस्कृतिक परिषद (जे संस्था विद्यापतिकेँ पाग पहिरा कऽ हुनका ब्राह्मण घोषित करबाक कुकृत्य केलक), वर्तमान अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र नारायण झा आ सचिव गंगाधर झा। पंचानन मिश्रक अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, इलाहाबाद। ऐ मे सँ किछु संस्थाक नाम आ वर्तमान अध्यक्ष आदिमे परिवर्तन सम्भव अछि। ऐ मे सँ अधिकतर संस्था कागजी अछि वा साहित्यिक नै राजनैतिक अछि आ जातिवाद, क्षेत्रवाद आ आनुवंशिक आधारपर संचालित अछि।

घर-बाहरक जातिवादी रंगमंचसँ जुड़ल वा सहिष्णु सम्पादक मण्डलक (वासुकीनाथ झा, रमानन्द झा रमण आ कमल मोहन चुन्नू) कृत्य: घर-बाहर जुलाई २०१२: ब्राह्मणवादी तेवर, माने चोरिक खुलेआम समर्थन। पंकज पराशर नामक चोरकेँ जुग-जुग जीबथु कॉलममे स्थान देल गेल अछि, जै मिथिलाक समाजमे बारहो वर्ण चोरकेँ खेहारि कऽ बाहर कऽ दै छै, ओतै मैथिली साहित्यक ब्राह्मणवादी सम्पादक मण्डल चोरक खुलेआम समर्थक बनि गेल, कारण चोर ओकर जातिक अछि। दोसर ऐ चित्र मे आनन्द कुमार झाकेँ युवा नाटककार सम्मान भेटलापर ऐ जातिवादी रंगमंचक सम्पादक लोकनिकेँ कष्ट छन्हि, चयन प्रक्रियापर की सवाल उठल छल से अनुत्तरित अछि, माने ब्राह्मणवादी ब्लैकमेलिंग, जातिवादी रंगमंचसँ जुड़ु, सहयोगी बनू आ नै तँ ब्लैकमेलिंग सहू।

विजयदेव झा वा शंकरदेव झा (चन्द्रनाथ मिश्र अमर-रामदेव झाक तेसर पीढ़ी)क गारियुक्त पोस्टकार्ड-ई-मेल

ऐ बेरुका बाल साहित्य पुरस्कार मैथिलीमे अ-बाल साहित्य, मुरलीधर झाक "पिलपिलहा गाछ", केँ देल गेल, मुरलीधर झा निर्लज्जतापूर्वक फूल-माला-पाग पहीरि रहल छथि आ किछु जातिवादी लोक निर्लज्जतापूर्वक ई सभ हुनका पहिरा रहल अछि। प्रस्तुत अछि ऐ अंकमे ऐपर रिपोर्ट आ चन्द्रनाथ मिश्र अमर-रामदेव झाक तेसर पीढ़ीक गारिक अपशब्द। किछु मेल आ एस.एम.एस. सँ आएल गारिक संकलन ओइ रिपोर्टमे अछि। जिनका विजयदेव झा वा शंकरदेव झा (चन्द्रनाथ मिश्र अमर-रामदेव झाक तेसर पीढ़ी)क गारियुक्त पोस्टकार्ड-ई-मेल (वा अखबार-पत्रिकामे ब्लैकमेलिंगबला

न्यूज) वा अपशब्दयुक्त एस.एम.एस. भेटल छन्हि ओ हमर ई-मेल ggajendra@videha.com पर स्कैन कॉपी अग्रसारित करथु वा मेल फॉरवार्ड करथु। ई सभ व्यक्ति जकर स्थान जेल छिऐ ओ नपुंशक जातिवादी साहित्यिक (!!) लोक सभक चलैत साहित्य अकादेमीक माध्यमसँ मैथिली साहित्यकेँ पछिला ४५ सालसँ ब्लैकमेल करैत रहल, मुदा तकर आइ अन्तिम दिन छल। एकटा अखबारमे ब्लैकमेलिंगबला न्यूज-रिपोर्टमे ई सभ ब्लैकमेलर नचिकेताकेँ मैथिल नै मानैए। नचिकेता, भीमनाथ झा आदि सेहो ऐ सभ लेल परोक्ष रूपसँ जिम्मेवार छथि, जे ऐ तरहक गारि-गरौअलि सुनैत रहला आ एकर सभक मोन बढ़ैत रहलै। मैथिलीक ब्राह्मणवादी आ कायस्थवादी (यएह दूटा वाद मे मैथिलीक पत्र-पत्रिका सभ बँटल अछि) पत्र-पत्रिकामे आपसमे घोर मतविभिन्नता छै, मारि-काटि छै मुदा विदेहक विरुद्ध ई सभ एक भऽ जाइए। नचिकेता जीक "मिथिला दर्शन" सेहो आब ब्राह्मणवादी पत्रिका भऽ गेल अछि, आ प्रधान सम्पादक जिम्मेवारीसँ बचि नै सकै छथि, हुनकर ई कर्तव्य छन्हि जे ओ अपन सम्पादक मण्डलमे सुधार करथु आ ओइमे किछु गोटेमे साहसक संचार करथु।

सुकान्त सोमक अघोषित जातिवाद

सुकान्त सोमक एकटा लेख आएल छन्हि मिथिला दर्शनमे। ओइ आलेखमे बहुत रास गलत तथ्य अछि। अतीत मंथन २००७ सँ २००९ मे छपले नै छै से हुनका नै बुझल छन्हि। गामक जिनगी मैथिली साहित्यक सर्वश्रेष्ठ लघुकथा संग्रह छै ई तथ्य ओ स्वीकार नै कऽ सकला। मैथिलीमे कोहुना कोनो पोथीकेँ पुरस्कार भेटौ ई घुमा कऽ कहि अपन मंशा ओ प्रकट कऽ देलन्हि। भगलपुरिया

जूरीकेँ ओ दरभंगिया जूरी सन बना कऽ प्रस्तुत केलन्हि, आ अहूमे हुनकर निरपेक्षता घास चरै लेल गेल बुझाइत अछि। सुकान्त सोमकेँ बुझल छन्हि जे कार्यक्रम बंगलोर मे भेलै! जखनकि कार्यक्रम कोच्चिमे भेल रहै। सुकान्त सोम टैगोर साहित्य सम्मानकेँ रवीन्द्र पुरस्कार कहि रहल छथि!! सुकान्त सोमक अघोषित जातिवाद बहुत किछु कहि जाइत अछि।

की मैथिली साहित्य अपन मूल स्वरमे ब्राह्मणवादी अछि?

(समन्वय २०१२ इण्डिया हैबीटेट सेन्टर भारतीय भाषा महोत्सव, दिल्लीक बहसक आधारपर)

की मैथिली साहित्य अपन मूल स्वरमे ब्राह्मणवादी अछि?

हमर उत्तर दुनू अछि- हँ आ नै। जँ अहाँ मिथिला दर्शन, अंतिका, पागबला विद्यापति पर्व समारोह केनिहार चेतना समितिक घर-बाहर, झारखण्डक सनेस वा जखन-तखनक लेखकक जातिक प्रोफाइल देखि कऽ कहि रहल छी, जातिवादी रंगमंचक मात्र दू जातिक कट्टर दर्शकक अहंकेँ संतुष्ट करबा लेल प्रयुक्त कएल जा रहल आपत्तिजनक शब्दावलीक निर्लज्जतापूर्ण प्रयोगक आधारपर कहि रहल छी, साहित्य अकादेमीमे आइ धरि सभटा आठो समन्वयक जातिक प्रोफाइलक आधारपर कहि रहल छी, सी.आइ.आइ.एल, एन.बी.टी., बा साहित्य अकादेमीक दुब्बर-पीअर कपीश संकलन आ कार्यक आधारपर कहि रहल छी, आकाशवाणी दरभंगा वा हिन्दी अखबारक दरभंगा संस्करणक आधारपर कहि रहल छी तँ उत्तर हँ अछि।

मुदा जँ ज्योतिरीश्वर पूर्व/ श्रीधर दास पूर्व बिन पागबला गएर ब्राह्मण विद्यापति, बा पिताक मृत्युक पाँच बर्ख बाद जन्म आ चर्मकारिणीसँ विवाह केनिहार तत्वचिन्तामणिकारक गंगेश जिनकर प्रेमकविता विलुप्त कऽ देल गेल, भोरुकवा एफ.एम. चैनल, फुलप्रास लगक पकड़िया गाम (पोस्ट रतनसारा) क रामलखन साहुजी पुत्र स्व. खुशीलाल साहुजी जे २५ सालसँ नाच पार्टी कम्पनी खोलने छथि आ दसो बिगहा बोहा देलनि, बा ऐ बेर दुर्गापूजामे नै किछु तँ सए नाच पार्टी नाच केलक; ई सभ देखी तँ उत्तर नै अछि। आ जँ आकाशवाणी दरभंगा, दरभंगाक हिन्दी अखबार, आ मैथिलीक ऊपरवर्णित पत्रिका ओकरा समाचार नै बुझैए आ कोनो साधारण नाटककारक/ लेखकक सालाना उर्सक न्यूजक आधारपर मैथिली नाटककेँ मृत घोषित करैत साक्षात्कार छपैए तँ ई ओकर समस्या छै।

विद्यापतिक पदावलीक आधारपर भऽ रहल बिदापत, आ ओही पदावलीक पिआ-देशांतर (माइग्रेशन)क आधारपर भऽ रहल पिआ देशान्तरक पार्टी सभमे सेहो कमी आएल अछि, मुदा जँ अनुपात देखल जाए तँ मुख्य आ समानान्तरक बीच अखनो अन्तर एक आ निनानबे केर छै तखन तँ ई गएर ब्राह्मणवादी ने भेल।

पर्वत ऊपर भमरा सूतल मालिन बेटी सूतल फुलवारि हे

उठू-उठू मालिन बेटी गाँथू गिरमल हार हे।

जँ *शब्दशास्त्रम्* केर ऐ गीतमे धीरेन्द्र प्रेमर्षिकेँ सर्वहाराक गीत नै शास्त्रीय गीत देखबामे अबै छन्हि तँ ई गीत विदेह ऑडियोमे अपलोड छै, आ ओ ओही पात्रक टोल (चर्मकार टोल) सँ रेकॉर्ड

कएल गेल छै जकर ई कथा छिऐ, आ यएह गएर-ब्राह्मणवादी परम्पराक जीत अछि। विद्यापतिक कोन परंपरा- जतऽ ओ वर्णाश्रम व्यवस्थाक समर्थन करै छथि बा स्त्रीक दर्दकेँ भोगैत: *कौन तप चुकलहुँ भेलहुँ जननी गे* बा गरीबक व्यथा -*सुख सपनेहुँ नहिं भेल*, गबै छथि- एतौ उत्तर वएह अछि। समानान्तर परम्परा मुख्यधारा लेल सर्वदा फैशनक रूपमे छै। ज्योतिरीश्वर आ संस्कृत आ अवहट्टबला विद्यापति सेहो धूर्तसमागम आ गोरक्षविजय नाटकमे क्रमशः एकरा फैशनक रूपमे लेलन्हि। अवहट्ट सेहो साहित्यिक भाषा रहै, आ समानान्तर परम्पराकेँ मुख्य धाराक प्रगतिशील लोक द्वारा फैशनक रूपमे प्रयोग कएल गेलै। जन कवि वा एक्टीविस्ट २-४-१०-२५-५० धरि पद्य लिखि कऽ संतुष्ट नै होइ छै, मुदा जँ ई फैशनक रूपमे प्रयुक्त हुअए तँ से ज्योतिरीश्वर आ संस्कृत आ अवहट्टबला विद्यापतिक संग यात्री-नागार्जुनक फैशनपरस्त प्रगतिशील मैथिली कवितामे अबै छै। मुदा ज्योतिरीश्वर पूर्वक बिनु पागबला गएर ब्राह्मण विद्यापतिक परम्परा तँ बिदापत, पिआ देशान्तर आ रामदेव प्रसाद मण्डल झारुदारक झारू/ महाझारूमे देखा पड़त, हजारक हजार झारू लिखि कऽ बोहा देलनि, हमरा सन लोक जँ ओइमेसँ किछुओ लिखि कऽ टाइप कऽ लै छी तँ तकरो संख्या सए-दू सए ओहिना भऽ जाइ छै। जँ तरौनीक लोकनाथ झाक घरपर बैसि वर्णाश्रम धर्म बला कविता पदावलीमे घोसिया दियौ, शिव सिंह, लखिमाक नाम घोसिया दियौ तँ ज्योतिरीश्वर पूर्व पदावलीक लय टूटि जाइए, आ बिदापत आ पिआ देशान्तर पार्टी ओकर मंचन गायन नै कऽ पबैए आ ई षडयंत्र बिनु परिश्रमेक खतम भऽ जाइए।

'डायसपोरा कम्यूनिटी' धरि पहुँचबाक उद्देश्यमे कनेक असहमति

अछि, जे काज अखन हेबाक चाही से अछि नेटिव स्पीकर जतए रहि रहल छथि ओतुक्का दुष्प्रचारक लेल ई सूचना समाज आगाँ आबए। वंचित, महिला आ समानान्तर परम्पराक *स्पोक्सपर्सनक* रूपमे। जहाँ धरि मैथिली प्रिन्ट मीडियाक गप अछि, ओतौ समानान्तर लेखन क्वालिटी आ क्वान्टिटी दुनूमे ९०% स्थानपर अछि। इन्टरनेट तँ बोनस छिऐ, ४-५ सए मैथिली पोथी, दस हजार मैथिली ताल-पत्र पीडी.एफ. कैमरा रेडी कॉपीक रूपमे विदेह आर्काइवमे मुफ्त डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि। ओइमे देवनागरीक अतिरिक्त तिरहुता आ ब्रेलमे सेहो मैथिली अछि। गूगल आ विदेहक सौजन्यसँ चारि सएसँ ऊपर पोथी गूगल बुक्समे १००% ब्राउज आ डाउनलोड लेल उपलब्ध छै; ऐमे सँ मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी-मैथिली डिक्शनरीक सात टा पोथी/ फाइल क्रिएटिव कॉमन्स (एट्रीब्यूशन-शेयर अलाइक)लाइसेन्सक अन्तर्गत १००% ब्राउज आ डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि, माने कियो एकर उपयोग क्रेडिट दऽ कऽ (माने साभार लिखि कऽ) आ अही तरहेँ आगाँ लाइसेन्स वितरित करबाक शर्त स्वीकार कऽ कए कऽ सकै छथि, एकरामे वृद्धि कऽ एकर संवर्धन आ व्यावसायिक उपयोग कऽ सकै छथि। 'डायसपोरा कम्यूनिटी' नेटिव कम्यूनिटीक प्रति अपन कर्ज उतारि रहल अछि। नेटिव स्पीकर बड्ड आगाँ बढ़ि गेल अछि, ओकर सोच आगाँ छै, ओ समानान्तर परम्पराक लेखनसँ अपनाकेँ आइडेन्टिफाइ कऽ रहल अछि, मुदा सुखाएल मुख्यधारा समाजसँ सकारात्मक दिशा आ समए दुनू क्षेत्रमे पाछाँ अछि।

की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?

सेन्टर फॉर स्टडी ऑफ इण्डियन ट्रेडिशन्स- मैथिली साहित्यसँ ऐ

संस्थाक की सरोकार छै? विद्यापति सेवा संस्थान आ चेतना समिति राजनैतिक संस्था अछि- पागबला संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापतिक सालाना विद्यापति पर्व करबाक अतिरिक्त एकर सभक की काज छै? ऑल इण्डिया मैथिली साहित्य समितिक पड़ोसिसीयोकेँ पता नै छै जे ई संस्था छैहो बा नै, जयकान्त मिश्रक मृत्युक बाद ऐ संस्थाक मान्यता बरकरार किए छै, की जयकान्त मिश्रक मैथिली लेल कएल अहसानक पारिश्रमिक हुनकर बेटी-जमाए लऽ रहल छथि। अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद की अछि आ एम.बी.बी.एस. डॉक्टर, जिनका साहित्यसँ कोनो सरोकार नै छन्हि, किए वोटक अधिकार लेल ऐ मुइल संस्थाक पता अपन नामसँ दै लेल तैयार भेल छथि। मिथिला सांस्कृतिक परिषद तँ विद्यापतिकेँ पागबला फोटो पहिरा कऽ विद्यापतिक नै मैथिलीक यज्ञोपवीत संस्कार करबाक दोषी अछिये। तँ की ई मैथिल ब्राह्मणक खाँटी संस्था सभ मैथिलीकेँ मैथिल ब्राह्मणक भाषा बनबै लेल (साहित्य अकादेमी दिल्लीमे) मात्र वोट आ कब्जाक राजनीतिक अन्तर्गत साहित्य अकादेमीक मैथिली कन्वीनर चुनबाक लेल संस्थाक रूपमे काज कऽ रहल अछि, आ तँ अस्तित्वमे अछि?

की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा अछि?
साहित्य अकादेमी, दिल्लीक पुरस्कारक बँटवारा (!!!) देखी तँ उत्तर की अछि?
(कुल बँटवारा ४३ बेर- २०११ धरि) मैथिल ब्राह्मण -३६ बेर!!
कायस्थ-५ बेर

राजपूत-२ बेर गएर सवर्ण- 0000 बेर!!!!

चीनक लेखक मो यान

चीनक लेखक मो यान (लेखकीय नाम मो यान, वास्तविक नाम गुआन मोये) केँ साहित्य लेल २०१२ क नोबल पुरस्कार देल जेतन्हि, स्वेडिश एकेडमी ११ अक्टूबर २०१२केँ ई घोषणा केलक। प्रेस कॉनफेरेन्समे कहल गेल जे "मो यान" लोकगाथा, इतिहास आ समकालीन घटनाक मिलनसँ जागल अवस्थाक आभासी (जागल अवस्थाक स्वप्न) वास्तविकताकेँ चित्रित करै छथि। मो यान पहिल चीनक नागरिक छथि जिनका साहित्य लेल नोबल पुरस्कार देल जेतन्हि। पूर्वी चीनक शाण्डोंग प्रान्तमे हिनकर जन्म भेलन्हि, मो यान (१९५५-) क माता-पिता किसान छलखिन्ह। जखन ओ १२ बर्खक रहथि तखन सांस्कृतिक क्रान्तिक बाद हुनका स्कूल छोड़ि पहिने खेती आ फेर फैक्ट्रीमे काज करऽ पड़लन्हि। फेर ओ ‘‘जन स्वतंत्रता सेना’’मे चलि गेला, हुनकर पहिल लघुकथा १९८१ ई. मे प्रकाशित भेलन्हि।

ओ अपन लेखनमे अपन युवावस्था आ अपन जन्मस्थलीक वर्णन करै छथि, जेना ‘‘रेड सोर्घम- लाल ज्वार’’ मे, ऐपर फिल्म सेहो बनल, डकैती, जापानी कब्जा आ बोनिहारक दुखद स्थितिक ऐमे विवरण अछि।

उपन्यासक अतिरिक्त हुनकर लघुकथा सभक संग्रह प्रकाशित छन्हि। मो यानक कहब छन्हि जे एकटा महान उपन्यास लिखल जाएब अखन बाकी अछि।

मैथिली

मैथिलीकेँ बी.पी.एस.सी.सँ हटाबै लेल लालू प्रसाद जिम्मेवार वा मैथिलीक कट्टरपंथी प्रोफेसर सभ जिम्मेवार? जखन लालू प्रसाद पहिल बेर मुख्यमंत्री बनल रहथि तखन बी.पी.एस.सी. नाम आ टाइटिलक संग बिहार प्रशासनिक/ आर्थिक/ (आ सम्भवतः वन आदि) सेवाक रिजल्ट सभ हिन्दी अखबारमे छापने रहए। मैथिल ब्राह्मण सफल उम्मीदवारसँ ई लिस्ट भरल रहए, झा-झा देखि लोक घबड़ा गेल रहए। की ९०% मार्क्स हिसाब छोड़ि मैथिली लिटेरेचरमे आबि सकैत अछि? बी.पी.एस.सी. मे एल.एस.डब्लू., भूगोल आदिक मार्क्स सेहो कोनो कोनो साल बहुत अबै छलै, मुदा एना नै, आ ओइमे कोनो एक टाइटिलकेँ फाएदा नै होइ छलै। मैथिलीक प्रोफेसर सभक मूल्यांकनमे देखाओल गेल मूर्खतासँ लालू प्रसादपर चारू दिससँ दवाब पड़लन्हि, हुनकर सामाजिक न्यायक हँसी उड़ाओल गेल आ अन्ततः हुनका बी.पी.एस.सी.सँ मैथिलीकेँ हटाबऽ पड़लन्हि। आ तखन हुनका ज्ञात भेलन्हि जे ई तँ मैथिल ब्राह्मणोक ९०% लोकक हृदएमे कोनो शूल उत्पन्न नै कऽ सकल। जे २-४ सए गोटे प्रशासनिक/ आर्थिक/ (आ सम्भवतः वन आदि) सेवामे मैथिलीक कारणसँ गेलथि, वएह मात्र जँ कोनो मैथिली पत्रिकाक ग्राहक बनि जाथि तँ मैथिली पत्रिका सभक ई स्थिति नै रहत। मुदा ऐमेसँ ९९% केँ आइ मैथिलीसँ कोनो सरोकार नै अछि। मैथिलीक कट्टरपंथी मूर्खाधिराज प्रोफेसर सभ जातिवादिताक कारण मैथिलीक जे नोकसान पहुँचेलन्हि, से इतिहास हुनका सभकेँ क्षमा नै करत।

विदेह सम्मान

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान

१.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१०-११

२०१० श्री गोविन्द झा (समग्र योगदान लेल)

२०११ श्री रमानन्द रेणु (समग्र योगदान लेल)

२.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११-१२

२०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (गामक जिनगी, कथा संग्रह)

२०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)

२०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (कलह, नाटक)

२०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (पद्मानदीक माझी, बांग्ला- मानिक बंद्योपाध्याय, उपन्यास बांग्लासँ मैथिली अनुवाद)

विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

1.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार 2012

2012 श्री राजनन्दन लाल दास (समग्र योगदान लेल)

2.विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१२ बाल साहित्य पुरस्कार - श्री जगदीश प्रसाद मण्डल कँ ‘‘तरेगन’’ बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह

२०१२ मूल पुरस्कार - श्री राजदेव मण्डलकँ "अम्बरा" (कविता संग्रह) लेल।

2012 युवा पुरस्कार- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक ‘‘अर्चिस’’ (कविता संग्रह)

2013 अनुवाद पुरस्कार- श्री नरेश कुमार विकल "ययाति" (मराठी उपन्यास श्री विष्णु सखाराम खाण्डेकर)

विदेह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१३ बाल साहित्य पुरस्कार श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी- ‘‘देवीजी’’ (बाल निबन्ध संग्रह) लेल।

२०१३ मूल पुरस्कार - श्री बेचन ठाकुरकेँ "बेटीक अपमान आ छीनरदेवी" (नाटक संग्रह) लेल।

२०१३ युवा पुरस्कार- श्री उमेश मण्डलकेँ ‘‘निश्तुकी’’ (कविता संग्रह)लेल।

२०१४ अनुवाद पुरस्कार- श्री विनीत उत्पलकेँ ‘‘मोहनदास’’ (हिन्दी उपन्यास श्री उदय प्रकाश)क मैथिली अनुवाद लेल।

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१२ क घोषणा

अभिनय- मुख्य अभिनय ,

सुश्री शिल्पी कुमारी, उम्र- 17 पिता श्री लक्ष्मण झा

श्री शोभा कान्त महतो, उम्र- 15 पिता- श्री रामअवतार महतो,

हास्य-अभिनय

सुश्री प्रियंका कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री वैद्यनाथ साह

श्री दुर्गानंद ठाकुर, उम्र- 23, पिता- स्व. भरत ठाकुर

नृत्य

सुश्री सुलेखा कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री हरेराम यादव

श्री अमीत रंजन, उम्र- 18, पिता- नागेश्वर कामत

चित्रकला

श्री पनकलाल मण्डल, उमेर- ३५, पिता- स्व. सुन्दर मण्डल, गाम छजना

श्री रमेश कुमार भारती, उम्र- 23, पिता- श्री मोती मण्डल

संगीत (हारमोनियम)

श्री परमानन्द ठाकुर, उम्र- 30, पिता- श्री नथुनी ठाकुर

संगीत (ढोलक)

श्री बुलन राउत, उम्र- 45, पिता- स्व. चिल्टू राउत

संगीत (रसनचौकी)

श्री बहादुर राम, उम्र- 55, पिता- स्व. सरजुग राम

शिल्पी-वस्तुकला

श्री जगदीश मल्लिक,५० गाम- चनौरागंज

मूर्ति-मृत्तिका कला

श्री यदुनंदन पंडित, उम्र- 45, पिता- अशर्फी पंडित

काष्ठ-कला

श्री झमेली मुखिया,पिता स्व. मूंगालाल मुखिया, ५५, गाम- छजना

किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति

श्री लछमी दास, उमेर- ५०, पिता स्व. श्री फणी दास, गाम वेरमा

विदेह मैथिली पत्रकारिता सम्मान
-२०१२ श्री नवेन्दु कुमार झा
नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१३ क घोषणा
मुख्य अभिनय-
(1) सुश्री आशा कुमारी सुपुत्री श्री रामावतार यादव, उमेर- १८, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)
(2) मो. समसाद आलम सुपुत्र मो. ईषा आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(3) सुश्री अपर्णा कुमारी सुपुत्री श्री मनोज कुमार साहु, जन्म तिथि- १८-२-१९९८, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

हास्य अभिनय-

(1) **श्री ब्रह्मदवे पासवान उर्फ रामजानी पासवान** सुपुत्र- स्व. लक्ष्मी पासवान, पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) टॉसिफ आलम सुपुत्र मो. मुस्ताक आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (मांगनि खबास समग्र योगदान सम्मान)

शास्त्रीय संगीत सह तानपुरा :

श्री रामवृक्ष सिंह सुपुत्र श्री अनिरूद्ध सिंह, उमेर- ५६, गाम- फुलवरिया, पोस्ट- बाबूबरही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मांगनि खबास सम्मान: मिथिला लोक संस्कृति संरक्षण:

श्री राम लखन साहु पे. स्व. खुशीलाल साहु, उमेर- ६५, पता, गाम- पकड़िया, पोस्ट- रतनसारा, अनुमंडल- फुलपरास (मधुबनी)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (समग्र योगदान सम्मान):

नृत्य -

(1) श्री हरि नारायण मण्डल सुपुत्र- स्व. नन्दी मण्डल, उमेर- ५८, पता- गाम+पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **सुश्री संगीता कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव पासवान, उमेर- १६,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

चित्रकला-

(1) जय प्रकाश मण्डल सुपुत्र- श्री कुशेश्वर मण्डल, उमेर- ३५, पता- गाम- सनपतहा, पोस्ट___बौरहा, भाया- सरायगढ़, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री चन्दन कुमार मण्डल सुपुत्र श्री भोला मण्डल, पता- गाम- खड़गपुर, पोस्ट- बेलही, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार) संप्रति, छात्र स्नातक अंतिम वर्ष, कला एवं शिल्प महाविद्यालय- पटना।

हरिमुनियाँ / हारमोनियम

(1) **श्री महादेव साह सुपुत्र रामदेव साह, उमेर- ५८,** गाम- बेलहा, वार्ड- नं. ०९, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री जागेश्वर प्रसाद राउत** सुपुत्र स्व. रामस्वरूप राउत, उमेर **६०,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

ढोलक/ ठेकैता/ ढोलकिया

(1) **श्री अनुप सदाय** सुपुत्र स्व. , पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री कल्लर राम** सुपुत्र स्व. खट्टर राम, उमेर- ५०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

रसनचौकी वादक-

(1) वासुदेव राम सुपुत्र स्व. अनुप राम, गाम+पोस्ट- निर्मली, वार्ड न. ०७ , जिला- सुपौल (बिहार)

शिल्पी-वस्तुकला-

(1) श्री बौकू मल्लिक सुपुत्र दरबारी मल्लिक, उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री राम विलास धरिकार सुपुत्र स्व. ठोढ़ाइ धरिकार, उमेर- ४०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

मूर्तिकला-मृर्तिकार कला-

(1) **घूरन पंडित सुपुत्र-** श्री मोलहू पंडित, पता- गाम+पोस्ट बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री प्रभु पंडित सुपुत्र स्व.** , पता- गाम+पोस्ट- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

काष्ठ-कला-

(1) **श्री जगदेव साहु** सुपुत्र शनीचर साहु, उमेर- ३६, गाम- निर्मली-पुरर्वास, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री योगेन्द्र ठाकुर सुपुत्र स्व. बुद्धू ठाकुर उमेर- ४५,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

किसानी- आत्मनिर्भर संस्कृति-

(1) श्री राम अवतार राउत सुपुत्र स्व. सुबध राउत, उमेर- ६६, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) श्री रौशन यादव सुपुत्र स्व. कपिलेश्वर यादव, उमेर- ३५, गाम+पोस्ट बनगामा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

अल्हा/महराइ-

(1) **मो. जीबछ** सुपुत्र मो. बिलट मरहूम, उमेर- ६५, पता- गाम- बसहा, पोस्ट- बड़हारा, भाया- अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०१

जोगिरा-

श्री बच्चन मण्डल सुपुत्र स्व. सीताराम मण्डल, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री रामदेव ठाकुर सुपुत्र स्व. जागेश्वर ठाकुर, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार आ खजरी/ खौजरी वादक-

(1) श्री सुकदेव साफी

सुपुत्र श्री ,

पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार - (अगहनसँ माघ-फागुन तक गाओल जाइत)

(1) **सुकदेव साफी** सुपुत्र स्व. बाबूनाथ साफी, उमेर- ७५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **लेल्हु दास** सुपुत्र स्व. सनक मण्डल पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

झरनी-

(1) **मो. गुल हसन** सुपुत्र अब्दुल रसीद मरहूम, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **मो. रहमान साहब** सुपुत्र...., उमेर- ५८, गाम- नरहिया, भाया- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाल वादक-

(1) **श्री जगत नारायण मण्डल** सुपुत्र स्व. खुशीलाल मण्डल, उमेर- ४०, गाम+पोस्ट- ककरडोभ, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री देव नारायण यादव सुपुत्र श्री कुशुमलाल यादव, पता- गाम- बनरझुला, पोस्ट- अमही, थाना- घोघड़डीहा, जिला- मधुबनी (बिहार)

गीतहारि/ लोक गीत-

(1) **श्रीमती फुदनी देवी** पत्नी श्री रामफल मण्डल, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **सुश्री सुविता कुमारी** सुपुत्री श्री गंगाराम मण्डल, उमेर- १८, पता- गाम- मछधी, पोस्ट- बलियारि, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

खुरदक वादक-

(1) **श्री सीताराम राम** सुपुत्र स्व. जंगल राम, उमेर- ६२, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री लक्ष्मी राम सुपुत्र स्व. पंचू मोची, उमेर- ७०, पता-

गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

काँरनेट-

(1) **श्री चन्दर राम** सुपुत्र- स्व. जीतन राम, उमेर- ५०, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **मो. सुभान**, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

बेन्जू वादक-

(1) श्री राज कुमार महतो सुपुत्र स्व. लक्ष्मी महतो, उमेर- ४५, गाम- निर्मली वार्ड नं. ०४, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री घुरन राम, उमेर- ४३, गाम+पोस्ट- बनगामा, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

भगैत गवैया-

(1) **श्री जीबछ यादव** सुपुत्र स्व. रूपालाल यादव, उमेर- ८०, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री शम्भु मण्डल** सुपुत्र स्व. लखन मण्डल, पता- गाम- बढियाघाट-रसुआर, पोस्ट__मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

खिस्सकर- (खिस्सा कहैबला)-

(1) श्री छुतहरू यादव उर्फ राजकुमार, सुपुत्र श्री राम खेलावन

यादव, गाम- घोघरडिहा, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल, पिन- ८४७४५२

(2) बैजनाथ मुखिया उर्फ टहल मुखिया-

(2)सुपुत्र स्व. ढोंगाइ मुखिया,

पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मिथिला चित्रकला-

(1) सुश्री मिथिलेश कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्रीमती वीणा देवी पत्नी श्री दिलिप झा, उमेर- ३५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

खजरी/ खौजरी वादक-

(2) श्री किशोरी दास सुपुत्र स्व. नेबैत मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

तबला-

श्री उपेन्द्र चौधरी सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री देवनाथ यादव सुपुत्र स्व. सर्वजीत यादव, उमेर- ५०, गाम- झाँझपट्टी, पोस्ट- पीपराही, भाया- लदनियाँ, जिला- मधुबनी (बिहार)

सारंगी- (घुना-मुना)

(1) श्री पंची ठाकुर, गाम- पिपराही।

झालि- (झलिबाह)

(1) **श्री कुन्दन कुमार कर्ण** सुपुत्र श्री इन्द्र कुमार कर्ण पता- गाम- रेबाड़ी, पोस्ट- चौरामहरैल, थाना- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०४

(2) **श्री राम खेलावन राउत** सुपुत्र स्व. कैलू राउत, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

बौसरी (बौसरी वादक)

श्री रामचन्द्र प्रसाद मण्डल सुपुत्र श्री झोटन मण्डल, उमेर- ३०, बौसरी/बौसली/बासुरी बजबै छथि।

पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री विभूति झा सुपुत्र स्व. कनटीर झा, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- कछुबी, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

लोक गाथा गायक

श्री रविन्द्र यादव सुपुत्र सीताराम यादव, पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री पिचकुन सदाय सुपुत्र स्व. मेथर सदाय, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

मजिरा वादक (छोकटा झालि...)

श्री रामपति मण्डल सुपुत्र स्व. अर्जुन मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

मृदंग वादक-

(1) **श्री कपिलेश्वर दास सुपुत्र स्व. सुन्नर दास,** उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)
(2) **श्री खखर सदाय** सुपुत्र स्व. बंठा सदाय, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

तान्पुरा सह भाव संगीत

(1) **श्री रामविलास यादव** सुपुत्र स्व. दुखरन यादव, उमेर- ४८, गाम- सिमरा, पोस्ट- सांगि, भाया- घोघड़डीहा, थाना- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

तरसा/ तासा-

श्री जोगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)
श्री राजेन्द्र राम सुपुत्र कालेश्वर राम, उमेर- ५८, गाम- मझौरा, पास्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक-

श्री सैनी राम सुपुत्र स्व. ललित राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री जनक मण्डल सुपुत्र स्व. उचित मण्डल, उमेर- ६०, रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक, १९७५ ई.सँ रमझालि बजबै छथि। पता- गाम- बढियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

गुमगुमियाँ/ ग्रुम बाजा

श्री परमेश्वर मण्डल सुपुत्र स्व. बिहारी मण्डल उमेर- ४१, १९८० ई.सँ गुमगुमियाँ बजबै छथि।

श्री जुगाय साफी सुपुत्र स्व. श्री श्रीचन्द्र साफी, उमेर- ७५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

डंका/ ढोल वादक

श्री बदरी राम, उमेर- ५५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री योगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

डंफा (होलीमे बजाओल जाइत...)

श्री जग्रनाथ चौधरी उर्फ धियानी दास सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री महेन्द्र पोद्दार, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

नडेरा/ डिगरी-

श्री राम प्रसाद राम सुपुत्र स्व. सरयुग मोची, उमेर- ५२, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

गजल कमला-कोसी-बगमती-महानंदा सम्मान

अनचिन्हार आखर (http://anchinharakharkolkata.blogspot.com) द्वारा प्रायोजित "गजल कमला-कोसी-बगमती-महानंदा सम्मान" बर्ख 2011 लेल ओस्ताद **सदरे आलम गौहर** जीकेँ प्रदान कएल गेलैन्ह। एहि बेरुक मुख्यचयनकर्ता ओस्ताद सियाराम झा"सरस" छलखिन्ह।..

अनचिन्हार आखर (http://anchinharakharkolkata.blogspot.com) द्वारा प्रायोजित " गजल कमला-कोसी-बागमती-महानंदा सम्मान" बर्ख

2012 (गजल) ओस्ताद पंकज चौधरी (नवल श्री) जीकेँ देल गेल। एहि बेरुक मुख्यचयनकर्ता श्री जगदीश चंद्र ठाकुर " अनिल" जी छलखिन्ह।

अनचिन्हार आखर (http://anchinharakharkolkata.blogspot.com) द्वारा प्रायोजित " गजल कमला-कोसी-बागमती-महानंदा सम्मान" बर्ख 2012 (बाल गजल) विदुषी इरा मल्लिक जीकेँ देल गेल। एहि बेरुक मुख्यचयनकर्ती श्री मती प्रीति ठाकुर जी छलखिन्ह।

अनचिन्हार आखर (http://anchinharakharkolkata.blogspot.com) द्वारा प्रायोजित " गजल कमला-कोसी-बागमती-महानंदा सम्मान" बर्ख 2012 (आलोचना-समीक्षा) ओमप्रकाश जीकेँ देल गेल। एहि बेरुक मुख्यचयनकर्ता श्री राजदेव मंडल जी छलखिन्ह।

कथा वाचन- लेखन पाठशाला (बाल कथाक विशेष संदर्भमे)

१

मैथिलीमे कथा वाचन, विशेष कऽ नेना भुटका लेल बाल कथा वाचनक परम्परा बड्ड पुरान रहल अछि। लोक गाथाक रातिक राति, दिनक दिन प्रदर्शन, बाल सुलभ मोन लेल ओकर छोट वर्जनक

गद्य-पद्य मिश्रित एक आ बेशी राति चलैबला दादी-नानीक कथा, दादी-नानी आ बाबा-बाबूक सुनाएल आन लोककथा एकर विभिन्न रूप अछि जे मिथिलाक बालक-बालिकाक मोन मोहने अछि। ऐसँ विपरीत सप्ता डोरासँ लऽ कऽ मधुश्रावणी आ बिहुलाक कथाक जानकारी मात्र बालिके धरि सीमित अछि, एक्के घरमे रहितो किछुए बालक मौगियाहा संज्ञा भेटबाक डरक संग ऐ कथापाठमे सम्मिलित हेबाक साहस करै छथि।

कथाक बीच गीत, कहबी, खेल सेहो होइए। खेल कथाक बालक-बालिका सभ द्वारा वाचन-गायन होइत अछि, आ खेला सेहो चलिते रहैत अछि, कोनो दादी-नानीक प्रवेश नै, कोनो बाबू-बाबा, बेदराक खेलमे घुसि नै सकै छथि।

२

कथापाठक एतेक सुन्दर परम्पराक अछैत मैथिली बालकथा किए असफल भऽ गेल, बा अखन धरि असफल अछि। जँ लिली रे केँ छोड़ि दी तँ ई कहैत कनियो संकोच नै जे साहित्य अकादेमी पोषित, से ओ छपाई हुअए बा पुरस्कार, मैथिली बाल कथा साहित्य , बाल साहित्य अछिये नै। आ जँ अहाँमे प्रतिभा नै अछि तँ अनुवाद करू, मुदा प्रायोजित अनुवादक स्तर एहन जे बच्चाक बापक दिन नै छिऐ जे एक्को पैराग्राफ़ पढ़ि लिअए, तते ने मुँह कोचिआबए पड़ै छै।

३

साहित्य अकादेमीसँ २४ भाषासँ संकलित बाल कथा निकालल गेल। मैथिलीयोक कोटा छै आ रामदेव झा दुनू बापुतक बालकथा कोना नै रहत, नाटक संग्रह एतै तँ फट नाटक तैयार, तही तर्जपर। लिली रे क कथा मुदा सुन्नर अछि। मैथिलीक ऐसँ बदनामी होइ छै, दुनियाँ बुझैए जे मैथिलीक कथाकार बाल कथाक

माने बुझबे नै करै छथि।

८२ म सगर राति दीप जरय बालकथा केन्द्रित रहत। ओइ संदर्भमे बाल कथा वाचन-लेखन पाठशालाक आरम्भ कएल जा रहल अछि।

४

विदेह शिशु उत्सवमे जगदानन्द झा *मनु* क चोनहा आएल छलन्हि। बाल मनोविज्ञानपर आधारित ई उपन्यास बाल कथा लिखनहार लेल पाठ्यक्रमक समान अछि, केना कथा आगाँ बढ़ाओल जाए, आ समाप्त कएल जाए, कथा वस्तुक नवीनता एकरा विशिष्ट बनबैए। विदेह शिशु उत्सव ऐ लिंकपर उपलब्ध अछि:-

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/

५

से बालकथाक लेखन एना हुअए जे ओ पढ़ै आ सुनै, दुनूमे नीक लागए। ई क्लोजेट नाटक सन हेबाक चाही, जे मंचन लेल नै, असगरे पढ़बाले बा किछु गोटे संग ज़ोर-जोरसँ सुनबा-सुनेबा लेल लिखल जाइए।

सरल विचार, सरल शब्दावली आ सरल भाषा श्रेष्ठ बाल कथा लेखनक चाभी अछि।

जेना ऋगवेदक जल प्रलय, मनु आ महामत्स्यक कथा, सरस्वती नदी, अरायुक्त रथक विवरण, ई सभ आरम्भिक बाल कथाक आकृति देखबैत अछि तहिना अवेस्ताक गिलगमेशक कथा सेहो। ऋगवेदोसँ पहिने गाथा, नाराशंसी आदिक मौखिक साहित्य छल आ ओइ लेल ऋगवेदमे गाथापति, गाथिन आदिक प्रयोग अछि।

"पंचतंत्र" आ ओकर किछु कथाक पुनर्लेखन "हितोपदेश" सँ बहुत पहिने जातक कथा बाल कथा कहलक आ सेहो चिड़ै चुनमुनीक संग मालजाल आ जानवरक माध्यमसँ, ओना जातकक उद्देश्य बौद्ध

धर्मक प्रचार सेहो रहै। अही तरहेँ पंचतंत्र बाल कथा कहैत कहैत स्त्री-शूद्रक प्रति पूर्वाग्रह कथामे पैसेलक, आ तेँ ओकर पुनर्लेखनक आवश्यकता अनुभूत भेल। ऋगवेदक आख्यान संवादकेँ जन्म दै छल, जे पौराणिक कथा ख़त्म कऽ देलक आ तेँ ओइ पौराणिक कथा सभक पुनर्लेखन अखुनका हिसाबे हेबाक चाही।

६

आधुनिक बाल कथा केहुन हुअए?

ओइमे आधुनिक विज्ञान द्वारा पसारल नीक तत्वक संग पर्यावरण चेतना सेहो हेबाक चाही। माने कथा बुद्धिपरक नै व्यवहारपरक हेबाक चाही।

बालकथामे मनोरंजन आ ज्ञानक समावेश लेल विज्ञान, समाज विज्ञान परक कथा लिखबाक आवश्यकता अछि। बच्चा अपन धरोहरिकेँ बुझए, तेँ लोक कथा, परीकथा, जादू कथा कहल जा सकैए मुदा ई अंधविश्वास नै बढ़बए तइ तरहेँ ओकर लेखन पुनर्लेखन हेबाक चाही।

संदर्भ

(कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक आ कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक भाग-२) ***खण्ड १-८***

रामविलास शर्माक इतिहासबोध सम्बन्धी सभटा पोथी- दिल्ली विश्वविद्यालय। आर्यभट/ शंकराचार्य/ बासवाचार्य/ अम्बेदकरपर आ आन व्यक्तिपर आ संस्कृतिपर पर- प्रकाशन विभाग/ ने.बु.ट./ साहित्य अकादेमी/ कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत वि.वि./ मिथिला रिसर्च इंस्टीट्यूट/ का.सि. संस्कृत वि.वि./ दिल्ली वि.वि./ संस्कृत भारती/ अरविन्द आश्रम/ चौखम्बा/ मोतीलाल बनारसीदास/ राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानक अनेक पोथी। बलदेव उपाध्याय, कपिलदेव द्विवेदी, भारतेन्दु द्विवेदी, राधावल्लभ त्रिपाठीक संस्कृत आ संस्कृति सम्बन्धी सभटा पोथी। चारुदेव शास्त्रीक संस्कृत सम्बन्धी पोथी। किशोर

कुणाल, बच्चा यादव, रवीन्द्र भारती, मणिपद्म, वीरेन्द्र झा, मनोज कुमार मिश्र, माखन झा, ओमप्रकाश भारती, विशेश्वर मिश्र, महेन्द्र नारायण राम, बुचरू पासवान आदिक लोकगाथा/ संस्कृति सम्बन्धी आलेख/ पोथी/ भारत-नेपालक लोककथा-गाथा आ मिस्टिक कथा (जेना संकर्षण नाटक लेल हरियाणाक एकटा कारी कुकुरबला लोककथा)/ भरत नाट्य शास्त्र, विश्विद्यालय प्रकाशन, वाराणसी आ विश्वभारती अनुसन्धान परिषद ज्ञानपुर (वाराणसी) आदिक पोथी सभ।

Author acknowledges: Kapileshwar Raut, Kapileshwar Sahu, Hemnarayan Sahu, Madan Prasad Sahu, Rajdeo Mandal, Durganand Mandal, Yoganand Jha, Smt. Kamla Chaudhary, Smt. Lalita Jha, Umesh Mandal, Umesh Paswan, Jagdish Prasad Mandal, Mahendra Narayan Ram, Om Prakash Bharati, Shiv Kumar Jha, Manoj Kumar Karn (Munnaji), Poonam Mandal, Priyanka Jha, Bechan Thakur, Nand Vilas Roy, Jagdish Mallik, Ram Vilas Sahu, Jhameli Mukhiya, Lakshmi Das, Indrakant Mishra (Bauwa Kakka), Direndra Kumar, Shashikant Jha, Shiv Kumar Mishra, Ramdeo Prasad Mandal 'Jharudar', Bacheshwar Jha, Bahadur Ram, Yadunandan Pandit, Bulan Raut, Parmanand Thakur, Manoj Kumar Mandal, Jitendra Yadav, Mohammed Gul Hasan, Umesh Kumar Mahto, Keshav Mahto, Sanjay Kumar Mandal, Sanjeev Kumar Shama, Mihir Jha, Phulo Paswan, Om Prakash Jha, Chandan Jha, Amit Mishra, Sandeep Kumar Safi, Anand Kumar Jha, Kashyap Kamal, Dinesh Mishra, Preeti Thakur, Laxmi Thakur, Swastika Thakur, Madhulika Chaudhary, Buchru Paswan, Tulika Choudhary, Neelima Choudhary, Shreemohan Choudhary, Dukhiya (Durganand) Chaudhary, Panjikar Vidyanand Jha, Vinit Utpal, Jyoti Sunit Chaudhary and others whose oral/ written collections of Maithili Folk Tales/ music/ cultural diaspora; and the discussions held with some of them and many others helped author understand the economy, society and culture of Mithila in detail. The author acknowledges the contribution of folktellers like Jayram Thakur, Saryug Thakur, Currant Lal, Vishnudev Paswan, Bindeshwar Paswan, Ramdev Ram, Shivan Paswan, Shivchandra Paswan, Beli Roy, Anil Sada, Rajo Sada, Suresh Sada, Rajendra Sada, Jagdish Sada, Chhotelal Sada, Nirmal Sada, Pawan Singh Paswan, Jage Mahto, Jage Raut, Yogendra Yadav, Ganga Ram Mallick, Rambabu Paswan, Ghuran Paswan, Bablu, Shrawan, Dinesh, Lalu, Shanti Devi and numerous other unsung personalities/ philosophy books/ authors who are the real torch bearers of Mithila's rich tradition; and; Bihar Rashtrabhasha Parishad journal/ books, national and international news magazines/ newspapers/ ancient Samskrit Literature, the kuntapa hymns, Vedas, Upanishads,

Brahmins, and Rg Vedic, Later Vedic, Post-Vedic and Jaina and Buddhist Literature. Books on Philosophy and Religion by Y. Masih/ Motilal Banarasi Dass/ Chaukhambha Orientalia and other publishers/ IGNOU/IIM/ Bihar State Textbook publishing Corporation/ Bihar/ Uttar Pradesh/ Mafhya Pradesh/ Rajasthan Hindi Granth akademi/ Bihar Samskrit Akademi/ Faculty courseware/ NBT/ CIIL books regarding literature/ society/ labour/ business studies/ international relations/ humanities/ Text books of India and Nepal; Audio-video-books archive of Sangeet Natak Akademi, Delhi and IGNCA, books on music by Ramashraya Jha Ramrang..